गणधर श्री सुधर्मा स्वामि प्रणीत तृतीय अंग

सचित्र
श्री स्थानांगसूत्र
(द्वितीय भाग)

मूल पाठ-हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, विवेचन एवं रंगीन चित्रों सहित

* प्रधान सम्पादक *

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक जैनधर्म दिवाकर

श्री अमर मुनि जी महाराज

* सह-सम्पादक *

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

पद्म प्रकाशन

पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. सा. द्वारा सम्प्रेरित सचित्र आगममाला का सोलहवाँ पुष्प

- सचित्र श्री स्थानागसूत्र (भाग २)

- **प्रधान सम्पादक**
  प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी

- **सह-सम्पादक**
  श्रीचन्द सुराना 'सरस'

- **अग्रेजी अनुवादक**
  सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

- **सशोधन**
  राजकुमार जी जैन, दिल्ली

- **प्रथमावृत्ति**
  वि स २०६१, चैत्र
  ईस्वी सन् २००४, अप्रैल

- **चित्रांकन**
  डॉ त्रिलोक शर्मा

- **प्रकाशक एव प्राप्ति-स्थान**
  पद्म प्रकाशन
  पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

- **मुद्रण-व्यवस्था**
  सजय सुराना
  श्री दिवाकर प्रकाशन
  ए-७, अवागढ हाउस, एम जी रोड, आगरा-२८२ ००२
  दूरभाष (०५६२) २१५११६५

- **मूल्य**
  छह सौ रुपया मात्र (६००/- रुपये)

THE THIRD ANGA WRITTEN BY GANADHAR
SHRI SUDHARMA SWAMI

ILLUSTRATED

SHRI STHAANANGA SUTRA

(SECOND PART)

Original Text with Hindi and English Translations, Elaboration and Multicolored Illustrations

* EDITOR-IN-CHIEF *

Uttar Bharatiya Pravartak Jain Dharma Diwakar

Shri Amar Muni ji Maharaj

* ASSOCIATE-EDITORS *

Srichand Surana 'Saras'

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

THE SIXTEENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES
INSPIRED BY UTTAR BHARATIYA PRAVARTAK GURUDEV BHANDARI
SHRI PADMACHANDRA JI M S

- ILLUSTRATED SHRI STHAANANGA SUTRA (PART 2)

- *Editor-in-Chief*
  Pravartak Shri Amar Muni ji

- *Associate-Editor*
  Srichand Surana 'Saras'

- *English Translator*
  Surendra Bothara, Jaipur

- *Copy Editing*
  Raj Kumar Jain, Delhi

- *First Edition*
  Chaitra, 2061 V
  April, 2004 A D

- *Illustrator*
  Dr Trilok Sharma

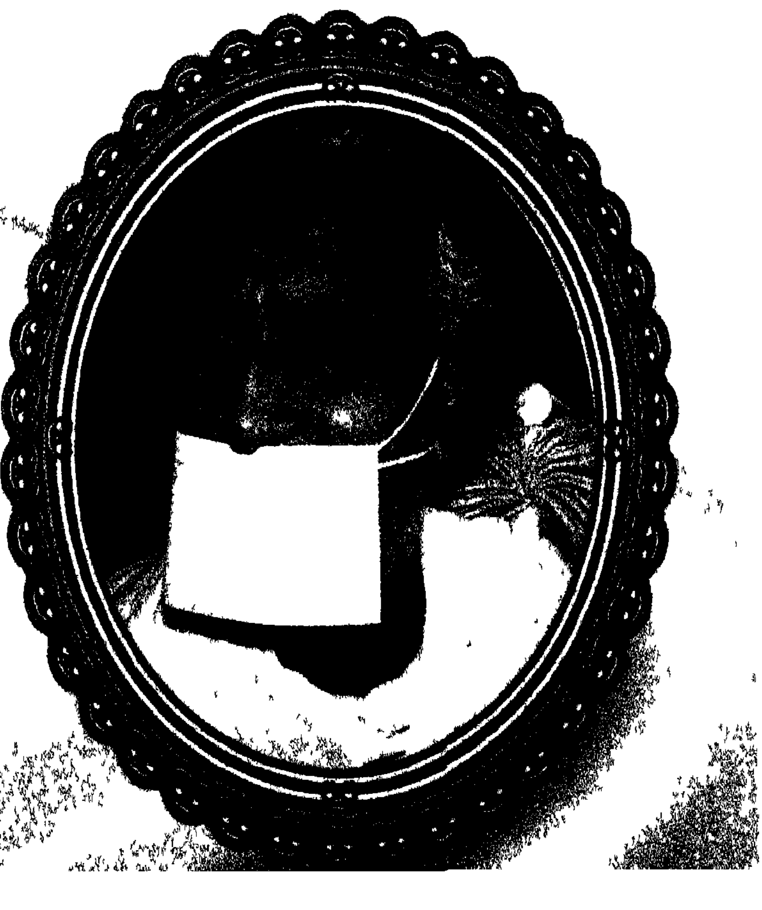
- *Publisher and Distributor*
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- *Printer*
  Sanjay Surana
  Shri Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M G Road, Agra-282 002
  Phone (0562) 2151165

- *Price*
  Six Hundred Rupees only (Rs 600/-)



राष्ट्र सन्त अनन्त उपकारी
उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव
भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी
महाराज
की पुण्य–स्मृति में
सादर सविनय भेंट



जैन धर्म दिवाकर प्रवर्तक
श्री अमर मुनि जी महाराज

श्रुत सेवा में सहयोग दाता



परम विदुषी उपप्रवर्तिनी महासती श्री आज्ञावती जी महाराज



श्री उग्रसैन जी सुन्दरी देवी जैन
विवेक विहार, दिल्ली



श्री जय भगवान जी विद्या देवी जैन
योजना विहार, दिल्ली



श्री सुभाष चन्द शशि जैन
विवेक विहार, दिल्ली



श्री सुशील कुमार कौशल्या देवी जैन
योजना विहार, दिल्ली

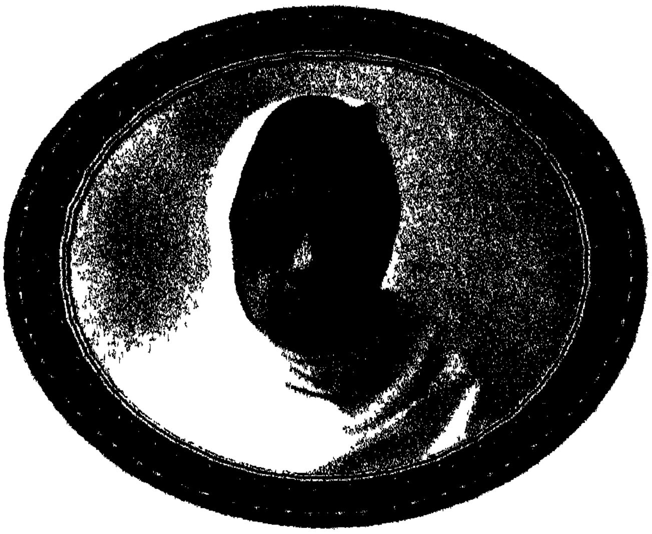
श्रुत सेवा में सहयोग दाता



श्री अभय कुमार रेणु जैन
शास्त्री नगर, दिल्ली



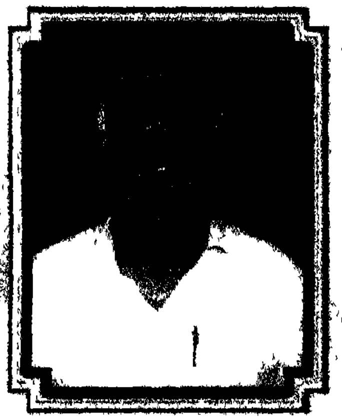
श्री सतपाल जी प्रेमलता गोयल
पेहवा निवासी



बहन सुशीला जैन (लोहटिया) लुधियाना



श्री बोधराज सन्तोष रानी जैन
घरौंडा मण्डी



श्री श्यामलाल जी जैन
शास्त्री नगर, दिल्ली

श्रुत सेवा में सहयोग दाता



श्री सुभाष सुलोचना जैन
हुड्डा कॉलोनी, पानीपत



श्री रमेशभाई जैन (शाह) मालती बेन शाह
गुजरात विहार, दिल्ली



श्री मोती लाल जैन
(बनूड वाले) लुधियाना



श्री राजपाल जैन
सोनीपत



श्री अनिल मंजु जैन
विरवा अपार्टमैंट, दिल्ली



डॉ. मोजीराम जी जैन श्रीमती पुष्पा जैन
सैनिक फार्म, दिल्ली

प्रकाशकीय

श्रुत-सेवा के महान् कार्य मे हम निरन्तर असीम उत्साह के साथ आगम-भक्तिपूर्वक आगे बढ रहे है और शासनदेव तथा स्व गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म का आशीर्वाद हमारा पथ प्रशस्त कर रहा है।

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म जैसे दृढ अध्यवसायी, सकल्पबली, गुरुभक्त और आगम ज्ञाता सत वर्तमान समय मे बहुत कम मिलेगे। देखा जाता है, अधिकतर विद्वानो मे अपनी रचित-निर्मित कृति के प्रकाशन की उत्कठा रहती है और उसे ही वे सबसे अधिक महत्त्व देते है तथा हर जगह सबसे आगे अपने नाम को ही प्रतिष्ठापित करने को उत्सुक रहते है। प्रचार व ख्याति की प्रतिस्पर्धा के इस युग मे प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म एक अलग किस्म के सत है। इन्हे न अपने नाम के प्रचार की भूख है, न ही अपनी रचनाओ को प्रकाशित करने की उत्सुकता। प्रवर्त्तकश्री जी के प्रवचनो व भजनो की २-३ पुस्तकें सम्पादित हो प्रकाशन के लिए तैयार रखी है, किन्तु प्रवर्त्तकश्री जी का मानना है, पहले मुझे जिनवाणी का प्रकाशन करना है, इसी मे समूचे ससार का लाभ कल्याण निहित है। अत श्रुत-सेवा मे ही मुझे पूरी निष्ठा व शक्ति का सदुपयोग करना है।

उन्हीं की इस विस्मयकारक प्रेरक श्रुत-भक्ति का यह परिणाम है कि हम अब तक धीरे-धीरे सचित्र आगमो की १५ पुस्तको मे १७ आगमो का प्रकाशन करने मे सफल हुए है और हम निरन्तर इसी श्रुत-सेवा मे सलग्न रहकर अपनी शक्ति व धन का सदुपयोग करने के लिए कृतसकल्प है।

हमे प्रसन्नता है, सचित्र आगममाला की इस शृखला मे इस वर्ष हम श्री स्थानागसूत्र जैसे विशालकाय आगम को दो भागो मे प्रकाशित कर पाठको के हाथो मे पहुँचा रहे है।

प्रथम भाग मे लुधियाना निवासी धर्मवीर दानवीर सुश्रावक श्री त्रिलोकचन्द जी जैन 'भगत' जी के परिवार ने बहुत ही उदार हृदय से सहयोग प्रदान किया। इस दूसरे भाग के प्रकाशन मे पूज्य गुरुदेव के भक्तगण जो प्रतिवर्ष ही जिनवाणी के प्रति असीम श्रुत-भक्ति और गुरु-भक्ति का परिचय देते हुए सहयोग प्रदान करते है, इस वर्ष भी उन गुरु-भक्तो का उदार अर्थ सौजन्य प्राप्त हुआ है। हम उन सबके प्रति हार्दिक धन्यवाद देते है और आशा करते है अगले वर्ष जैन आगम साहित्य की महामूल्यवान निधि श्री भगवतीसूत्र के प्रकाशन मे भी हमे इसी प्रकार सबका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

पूज्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म की हार्दिक भावना है कि जिनवाणी का यह सुन्दर सर्वोपयोगी प्रकाशन निर्विघ्न सम्पन्न होता रहे। हम इस श्रुत-सेवा मे सभी धर्म-प्रेमी बधुओ का हार्दिक सहयोग आमन्त्रित करते है।

महेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
पद्म प्रकाशन

PUBLISHER'S NOTE

We are steadily progressing in the great mission of promoting the scriptures with boundless enthusiasm and devotion for *Agams* The blessings of the Protective Deity and late Gurudev Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra Ji M. acts as a beacon on our path

In modern times assiduous, unwaveringly resolute, devout and saintly ascetic scholars of *Agams* like Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni ji M are rare to find It is common that most of the scholars are eager to get their work published and that is what they consider to be of prime importance They crave to put their name at the fore front always In this age of competitive publicity and fame Pravartak Shri Amar Muni ji M is a sage with a difference He neither has the hunger for publicity nor the eagerness to get his works published Two-three compilations of his discourses and *Bhajans* are lying ready for publication but Pravartak Shri ji believes that his primary mission is to get *Jinavani* (Sermon of the *Jina*) published because that embodies the uplift and beatitude of the whole world Thus, he says that, he has to devote all his faith and energy to the mission of service to the *Shrut* (Sermon of the *Jina*)

As a result of his astonishingly inspiring devotion for the *Shrut* we have, in due course, published seventeen *Agams* in fifteen volumes of this Illustrated Agam Series and we are committed to put our energy and wealth to a noble cause by remaining ever involved in this mission of service to the *Shrut*

We are pleased to bring a voluminous *Agam* like *Shri Sthaananga Sutra* this year to our readers in two volumes

For the first part of this book we got liberal donations from the family of Dharmavira Daanvira Sushravak Shri Trilok Chand ji Jain 'Bhagat ji' For this second part contributions have come once again from many devout guru-devotees who year after year continue to display their devotion for the Guru and scriptures through their financial assistance towards publication of the pious sermon of the Jina; and the process continues We express our sincere gratitude for them all and hope that they will extend their help for the publication of Shri Bhagavati Sutra, he great and invaluable treasure of Agam literature

It is the heartfelt desire of respected Pravartak Shri Amar Muni ji that this beautiful and useful project of publication of Jinavani continues unabated We solicit co-operation of all devout friends in this mission of Shrut Seva

—Mahendra Kumar Jain
PRESIDENT
Padma Prakashan

स्व-कथ्य

श्री स्थानागसूत्र का यह दूसरा भाग है। प्रथम भाग मे स्थान एक से चतुर्थ स्थान के तृतीय उद्देशक तक की सामग्री है। चतुर्थ स्थान के चौथे उद्देशक से दशम स्थान तक का सम्पूर्ण आगम इस द्वितीय भाग मे है।

यो तो स्थानागसूत्र स्वय ही बहुत विशाल और विस्तृत है। इसमे इतने विविध विषय है कि उन पर सक्षिप्त विवेचन किया जाय तब भी कम से कम तीन भाग तो हो ही जाते। फिर सूत्र रूप मे आये अनेक विषयो पर विवेचन की अपेक्षा भी है। जैसे न्यायदर्शन के अन्तर्गत हेतु-अहेतु का वर्णन, सात नयो का वर्णन, सात निन्हवो का वर्णन, दस आचार्यों का वर्णन तथा अन्य भी अनेक ऐसे विषय है।

सूत्र मे आये हुए विषयो पर टीकाकार श्री अभयदेव सूरि ने प्राचीन परम्परा के अनेक उदाहरण व दृष्टान्त भी दिये है, जो ज्ञानवर्धक होने के साथ ही विषय को विशद रूप मे उजागर करते है।

इसी के साथ जैन, बौद्ध व वैदिक ग्रन्थो के साथ तुलनात्मक दृष्टि से इसका अनुशीलन भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। बौद्ध ग्रन्थ अगुत्तर निकाय, अट्ठकथा और वैदिक ग्रन्थ महाभारत आदि मे भी अनेक विषय स्थानागसूत्र से बहुत ही समानता रखते है और उस वर्णन मे ऐसा अनुमान होता है कि लोक, स्वर्ग-नरक-आरोग्य व नीति सम्बन्धी, पुरुष-परीक्षा सम्बन्धी बहुत से विषय उस समय सभी धर्माचार्यो द्वारा अपनी-अपनी शैली मे उक्त रूप मे कथन किये जाते थे। उन विषयो पर तुलनात्मक शोधपरक अध्ययन अपेक्षित है। किन्तु ऐसे कार्यो मे समय और श्रम शक्ति के साथ विविध ग्रन्थो की उपलब्धता तथा विद्वानो का सहयोग भी नितात अपेक्षित है। अस्तु

प्रस्तुत सम्पादन मे तो हमने अपने स्तर पर तथा अपनी समय व शक्ति की सीमा मे रहकर कार्य किया है और मुझे विश्वास है यह आगमो के आधारभूत ज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

स्थानागसूत्र के सम्बन्ध मे प्रथम भाग की प्रस्तावना मे विस्तार से लिखा जा चुका है। अत यहाँ पुनरुक्ति नही करके पाठको से यही अनुरोध है कि आगमो का स्वाध्याय करते समय अनाध्याय काल का वर्जन करके पूर्ण शुद्ध उच्चारण व शुद्ध भावपूर्वक पाठ करे। जिनवाणी अत्यन्त ही पवित्र धर्मग्रन्थ है, धर्मग्रन्थो की अपनी विशेष मर्यादा और महत्त्व होता है। असावधानी व अशातनापूर्वक पढा हुआ शास्त्र भी शस्त्र का काम कर देता है। अत शास्त्र को शास्त्र के बहुमानपूर्वक ही पढे।

हमने अगले वर्ष पचम अग व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र (श्री भगवतीसूत्र) के सम्पादन कार्य मे जुटने का सकल्प किया है, कार्य आरम्भ भी हो चुका है। जिनेश्वर देव की भक्ति, जिनवाणी की श्रद्धा और गुरुदेव की शक्ति तथा आप सबके सहयोग की भावना से हम अपना सकल्प पूर्ण करने मे समर्थ होगे, यह पूर्ण विश्वास है।

विशेषकर मै श्रुत-सेवा मे सहयोग प्रदान करने वाले सभी उदारमना सद्‌गृहस्थो को पुन धन्यवाद देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

-प्रवर्तक अमर मुनि

FROM THE EDITOR'S PEN

This is the second part of Shri Sthaananga Sutra The first part contained matter starting from the first Sthaan to the third lesson of the fourth Sthaan The remaining matter from the fourth lesson of the fourth Sthaan to the tenth Sthaan is included in this second part

Sthaananga Sutra itself is a voluminous work It contains so many subjects that had we given even brief elaborations it would have taken three such volumes Many topics stated in aphoristic style, indeed, require elaborations Some examples are—description of Hetu and Ahetu from logic, seven Nayas, seven Nihnavas, ten Acharyas and many other important topics

On many topics Abhayadev Suri, the commentator (Tika), has quoted many examples and incidents from ancient tradition These references are enlightening and edifying to a great extant

Besides this a comparative study of this work with Jain, Buddhist and Vedic literature is also important Buddhist works like Anguttara Nikaya and Atthakatha as well as Vedic works like Mahabharat have many topics that have great similarity with similar descriptions in Sthaananga Sutra These passages indicate that during that period each religious preceptors discussed numerous topics like universe, heaven and hell, health and ethics, and attributes of humans in his individual and unique style A comparative and research oriented study on those topics is very much desired But such task requires considerable time and labour besides availability of variety of books and co-operation of many scholars As such

In this edition we have worked with limitations of means, time and resources but we are confident that this would be very useful for acquiring the basic knowledge of the Agams

Much has been written about the Sthaananga Sutra in the preface of the first part A repetition of that introduction is not required I would only advise the readers to read the Agams at

the right time (avoiding the proscribed periods) with correct pronunciation and pious feelings. Jinavani is compiled in pious religious books having their own importance and discipline of study Careless and negligent reading turns a Shaastra (scripture) into a shastra (weapon) Therefore, read a scripture giving it the due respect

We have resolved to take up the editing of the fifth Anga, Vyakhya Prajnapti (Bhagavati Sutra) next year, in fact, the work has already begun I am sure that with the devotion for Jineshvar Deva, faith in Jinavani, blessings of Gurudev and your co-operation this mission will be accomplished

I consider it my duty to once again thank all those generous and pious householders who liberally contribute towards the pious mission of Shrut Seva

—Pravartak Amar Muni

अनुक्रमणिका

चतुर्थ स्थान : चतुर्थ उद्देशक १–८६

पंचम स्थान : प्रथम उद्देशक ८७–१३७

पंचम स्थान : द्वितीय उद्देशक १३८–१७८

पंचम स्थान : तृतीय उद्देशक १७९–२१४

षष्ठ स्थान २१५–२७१

सप्तम स्थान २७२–३४८

अष्टम स्थान ३४९–४०८

CONTENTS

Fourth Sthaan : Fourth Lesson 1-84

Fifth Sthaan : First Lesson 87-137

Fifth Sthaan : Second Lesson 138--178

Fifth Sthaan : Third Lesson 179-214

Sixth Sthaan 215-271

Seventh Sthaan	272-348

Eighth Sthaan 349-408

Ninth Sthaan 409-461

Tenth Sthaan 462-566

ॐ नमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

Om Namo Samanassa Bhagavao Mahavirassa

पंचमगणहर–सिरिसुहम्मसामिविरइयं तइयं अंगं

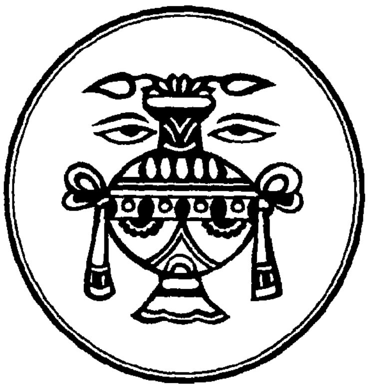
ठाणं

पंचमगणधर–श्रीसुधर्मास्वामिविरचिततृतीयअंग

स्थानांग

The third Anga Agam by the fifth Ganadhar, Shri Sudharma Swami

THANAM



चतुर्थ स्थान : चतुर्थ उद्देशक
FOURTH STHAAN (Place Number Four) : FOURTH LESSON

प्रसर्पक–पद **PRASARPAK-PAD (SEGMENT OF ITINERANT)**

५०९. चत्तारि पसप्पगा पण्णत्ता, तं जहा–(१) अणुप्पण्णाणं भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए, (२) पुव्वुप्पण्णाणं भोगाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए, (३) अणुप्पण्णाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए, (४) पुव्वुप्पण्णाणं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए।

५०९. प्रसर्पक चार प्रकार के होते है–(१) कोई अप्राप्त भोगो को प्राप्त करने के लिए देश-विदेश मे भ्रमण करता है, (२) कोई भोग जनित प्राप्त भोगो के सरक्षण के लिए, (३) कोई अप्राप्त सुखो को प्राप्त करने के लिए, और (४) कोई प्राप्त सुखो के सरक्षण के लिए प्रयत्न करता रहता है।

509. *Prasarpak* (itinerants) are of four kinds—(1) Someone takes to itinerant life (moving around within and outside the country) in order to seek unobtained *bhogas* (enjoyments) (2) Someone takes to itinerant life in order to sustain obtained experiences (3) Someone takes to itinerant life in order to seek unavailable happiness (through gratifying experiences) (4) Someone takes to itinerant life in order to sustain available happiness

आहार–पद **AHAR-PAD (SEGMENT OF FOOD)**

५१०. णेरइयाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा–इंगालोवमे, मुम्मुरोवमे, सीतले, हिमसीतले।

५१०. नारकीय जीवो का आहार चार प्रकार का है–(१) **अंगारोपम**–अगार के समान अल्पकालीन दाह उत्पन्न करने वाला, (२) **मुर्मुरोपम**–मुर्मुर भोभर की अग्नि के समान दीर्घकाल तक दाह उत्पन्न करने वाला, (३) **शीतल**–शीत वेदना उत्पन्न करने वाला, और (४) **हिमशीतल**–अत्यन्त शीत वेदना उत्पन्न करने वाला आहार।

510. The *ahar* (food) of *naarakiya jivas* (infernal beings) is of four kinds—**(1) angaropam (spark-like)**—that which gives spark-like short lived suffering of burn, **(2) murmuropam (oven-like)**—that which gives sustained suffering of burn like hot ash of a oven, **(3) sheetal (cold)**—which gives suffering of cold and **(4) himasheetal (ice-like cold)**—which gives extreme suffering of intense cold

विवेचन–जिन नरको मे उष्णवेदना निरन्तर रहती है, वहाँ के नारक अगारोपम और मुर्मुरोपम मृत्तिका का आहार करते है और जिन नरको मे शीतवेदना निरन्तर रहती है वहाँ के नारक शीतल

और हिमशीतल मृत्तिका का आहार करते है। पहले नरक से लेकर तीसरे नरक तक उष्णवेदना और चौथे से आगे सातवे तक शीतवेदना उत्तरोत्तर अधिक-अधिक पाई जाती है।

Elaboration—The infernal beings of hells, where heat-suffering is a norm, eat spark-like and ember-like clay The infernal beings of hells, where cold-suffering is a norm, eat cold and icy clay From first hell to the third hell there is a gradual increase in heat-suffering and from fourth to seventh hell there is a gradual increase in cold-suffering

५११. तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा-कंकोवमे, बिलोवमे, पाणमंसोवमे, पुत्तमंसोवमे।

५११. तिर्यक्योनिक जीवो का आहार चार प्रकार का है-(१) **कंकोपम**-कक[१] पक्षी के आहार के समान सुभक्ष्य और सुपाच्य आहार, (२) **बिलोपम**-बिना चबाये निगला जाने वाला आहार। जैसे-सर्प, मछली आदि, (३) **पाण-मांसोपम**-चण्डाल के मास के समान घृणित आहार, और (४) **पुत्र-मासोपम**-पुत्र के मास-सदृश निन्द्य और कठिनाई से खाया जाने वाला आहार।

511. The *ahar* (food) of *tiryakyonik jivas* (animal beings) is of four kinds—**(1) kankopam (kank-like)**—food that is easy to eat and digest like the food of bird Kank[1] (white kite or heron), **(2) bilopam (swallowed food)**—food that is swallowed without chewing (as done by snake and fish), **(3) paan-masopam**—detestable meat like that of a low born (*chandal*) and **(4) putra-mamsopam (like son's flesh)**—detestable and unpalatable food like son's flesh

५१२. मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा-असणे, पाणे, खाइमे, साइमे।

५१२. मनुष्यो का आहार चार प्रकार का है (१) **अशन**-चौबीस प्रकार के धान्यादि से बनी रोटी, दाल आदि का भोजन, (२) **पान**-पानी आदि पेय पदार्थ, (३) **खाद्य**-गुड, शक्कर, मेवा, फल, मिष्ठान आदि, और (४) **स्वाद्य**-लोग, इलायची, पान-सुपारी औषध आदि सुगन्धित पदार्थ।

512. The *ahar* (food) of *manushyas* (human beings) is of four kinds—**(1) Ashan**—staple food made from twenty four kinds of grains including wheat, rice, pulses, etc **(2) Paan**—That which is drunk, such as water, juice, etc **(3) Khadya**—all other eatables including jaggery, sugar, dry-fruits, fruits, sweets etc **(4) Svadya**—Cardamom, clove, beetle-leaf, and suchlike fragrant things

---

१ कक नामक पक्षी दुष्पाच्य आहार को भी सुख से खाता है और सुख से पचा लेता है- टीका पत्र, २५१।

1 *Kank* (white kite) conveniently eats and digests unpalatable and indigestible food (*Tika*, leaf 251)

५१३. देवाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते।

५१३. देवो का आहार चार प्रकार का होता है—(१) **वर्णवान्**—उत्तम वर्ण (रग) वाला, (२) **गन्धवान्**—उत्तम सुगन्ध वाला, (३) **रसवान्**—उत्तम मधुर रस वाला, और (४) **स्पर्शवान्**—मृदु और स्निग्ध स्पर्श वाला।

513. The *ahar* (food) of *devas* (divine beings) is of four kinds—**(1) Varnavaan**—of good colour, **(2) gandhavaan**—of excellent smell, **(3) rasavaan**—of good and sweet taste and **(4) sparshavaan**—having soft and smooth touch

विवेचन—देव और नारक जीव कवलाहार नही करते है, वे मन से ही पुद्गलो का आकर्षण कर रोमाहार करते है। तिर्यंच तथा मनुष्य कवलाहार करते है।

Elaboration—Divine and infernal beings do not eat morsels through mouth They mentally draw particles and ingest through body-pores Animals and human beings eat morsels through mouth

आशीविष-पद ASHIVISH-PAD (SEGMENT OF THE POISONOUS)

५१४. चत्तारि जातिआसीविसा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मंडुक्कजातिआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे।

विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ?

पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव णं संपत्तीए करेसु वा करेति वा करिस्संति वा।

मंडुक्कजातिआसीविसस्स [णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते] ?

पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे 'भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं' [करित्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा करेति वा] करिस्संति वा।

उरगजाति [आसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते] ?

पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवपमाणमेत्तं बोदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव णं (संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा) करिस्संति वा।

मणुस्सजाति (आसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते) ?

पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणतं विसट्टमाणिं करेत्तए। विसए से विसट्टताए, णो चेव णं (संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा) करिस्संति वा।

५१४. चार प्रकार के जीव जाति (जन्म) से आशीविष होते है, जैसे-(१) वृश्चिक, (२) मेढक, (३) सर्प, और (४) मनुष्य।

प्रश्न-भगवन् ! जाति-आशीविष वृश्चिक के विष मे कितना सामर्थ्य होता है ?

उत्तर-गौतम ! जाति-आशीविष वृश्चिक अपने विष के प्रभाव से आधे भरत क्षेत्र प्रमाण क्षेत्र मे रहने वाले शरीरो को विष-परिणत (व्याप्त) और विदलित कर सकता है। उसके विष मे इतना सामर्थ्य है, किन्तु कार्य रूप मे न कभी उसने अपने इस सामर्थ्य-शक्ति का उपयोग किया है, न वर्तमान मे करता है और न भविष्य मे कभी करेगा।

प्रश्न-भगवन् ! जाति-आशीविष मेढक के विष मे कितना सामर्थ्य है ?

उत्तर-गौतम ! जाति-आशीविष मेढक अपने विष के प्रभाव से भरत क्षेत्र-प्रमाण प्रदेश मे रहने वाले शरीरो को विष से व्याप्त और विष विदलित करने के लिए समर्थ है। उसके विष मे इतना सामर्थ्य है, किन्तु न कभी उसने अपने इस सामर्थ्य का उपयोग किया है, न वर्तमान मे करता है और न भविष्य मे करेगा।

प्रश्न-भगवन् ! जाति-आशीविष सर्प के विष का कितना सामर्थ्य है ?

उत्तर-गौतम ! जाति-आशीविष सर्प अपने विष के प्रभाव से जम्बूद्वीप प्रमाण (एक लाख योजन वाले) प्रदेश मे रहने वाले शरीरो को विष-परिणत और विदलित करने मे लिए समर्थ है। उसके विष मे इतना सामर्थ्य मात्र है, किन्तु न कभी उसने इस सामर्थ्य का उपयोग किया है, न करता है और न कभी करेगा।

प्रश्न-भगवन् ! जाति-आशीविष मनुष्य के विष का कितना सामर्थ्य है ?

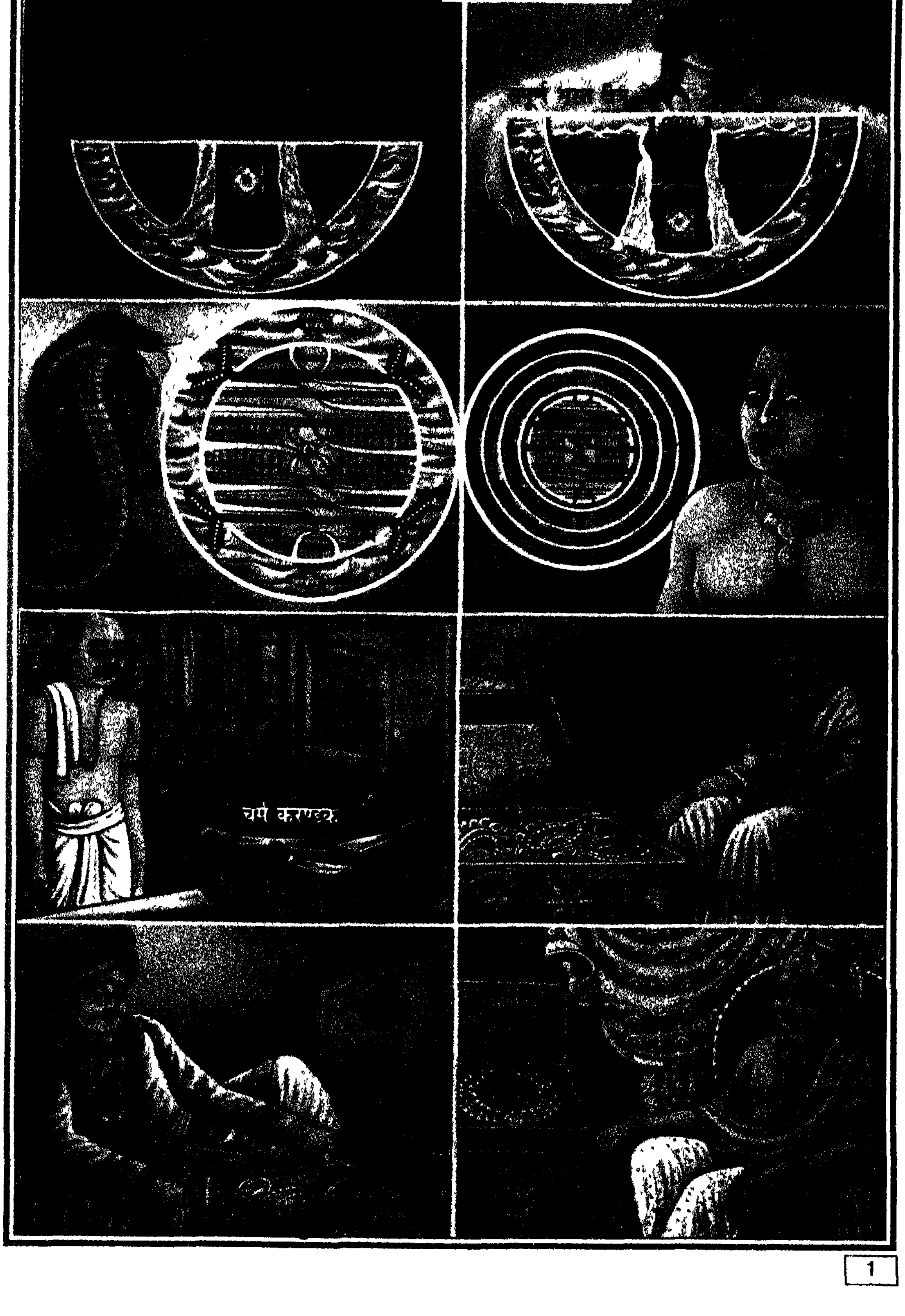
उत्तर-गौतम ! जाति-आशीविष मनुष्य अपने विष के प्रभाव से समय क्षेत्र-प्रमाण (पैतालीस लाख योजन) क्षेत्र मे रहने वाले शरीरो को विष-परिणत और विदलित करने मे लिए समर्थ है। उसके विष मे इतना सामर्थ्य मात्र है, किन्तु न कभी उसने इस सामर्थ्य का उपयोग किया है, न करता है और न कभी करेगा।

514. Four kinds of beings are *jati-ashivish* (poisonous by birth—(1) *vrishchik* (scorpion), (2) *mendhak* (frog), (3) *sarp* (snake) and (4) *manushya* (man)

(Question) *Bhagavan* ! How strong is the venom of *jati-ashivish vrishchik* (venomous breed of scorpion) ?

(Answer) Gautam ! A *jati-ashivish vrishchik* can harm bodies living in half the area of Bharat Its venom is as strong as that but it did not, does not and will not ever employ all that strength

(Question) *Bhagavan* ! How strong is the venom of *jati-ashivish mendhak* (venomous breed of frog) ?


चर्म करण्डक

चित्र परिचय-१ **Illustration No. 1**

जाति आशीविष

दृश्य–१

जिसके जन्म से ही दाढो मे अथवा जन्मजात विष होता है उसे जाति आशीविष कहा जाता है।

(१) बिच्छू की पूँछ मे जहर होता है। अति विशालकाय बिच्छू के विष मे इतनी उत्कृष्ट सामर्थ्य होती है कि वह क्रमशः फैलता हुआ आधे भरत क्षेत्र तक फैल सकता है।

(२) मेढक की दाढो मे रहे विष का उत्कृष्ट प्रभाव सम्पूर्ण भरत खण्ड भरत क्षेत्र तक व्याप्त हो सकता है।

(३) सर्प जाति के विष का उत्कृष्ट प्रभाव सम्पूर्ण जम्बूद्वीप तक फैल सकता है।

(४) मनुष्य अपने मुख (दाढो) के विष से सम्पूर्ण ढाई द्वीप तक को प्रभावित कर सकता है। किन्तु आज तक किसी ने इतनी सामर्थ्य का उपयोग नही किया है। स्थान ४ सू० ५११

करण्डक

दृश्य–२

(१) **चर्मकार करण्डक**–जिसमे चमड़े के टुकड़े व चमड़ा छीलने के औजार रखे रहते है।

(२) **वेश्या करण्डक**–वेश्या अपनी पेटी मे लाख, पीतल, चाँदी आदि के साधारण आभरण भर कर रखती है।

(३) **गृहपति करण्डक**–श्रेष्ठी अपने बक्स मे सोने, मोती आदि के कीमती आभूषण रखता है।

(४) **राज–करण्डक**–राजा अपने बक्स मे अत्यन्त मूल्यवान हीरे आदि के आभूषण रखता है।

ये चारो क्रमशः एक दूसरे से श्रेष्ठ माने गये है।

JATI-ASHIVISH

First Illustration

A *jati ashivis* being is poisonous by birth

(1) A scorpion has poison in its tail. The poison of a giant scorpion is so strong that *spreading gradually* it can harm bodies living in half the area of Bharat.

(2) The venom of a frog can harm bodies living in the whole area of Bharat.

(3) The venom of a snake can harm bodies living in the whole area of Jambu Dweep.

(4) The venom *of a man* can harm bodies living in the whole area of Adhai Dweep. However *no one* has ever employed all that strength.

Sthaan 4 Sutra 511

KARANDAK

Second Illustration

(1) Box of a shoemaker—contains leather cutting tools *and pieces of leather*.

(2) Box of a prostitute—contains ordinary ornaments made of silver, brass, shellac etc.

(3) Box of householder—contains costly ornaments made of real pearls and gold.

(4) Box of a king contains invaluable diamond studded ornaments.

Each *one of these* is better than the preceding one.

– *Sthaan 4 Sutra 511*

(Answer) Gautam ! A *jati-ashivish mendhak* can harm bodies living in the whole area of Bharat Its venom is as strong as that but it did not, does not and will not ever employ all that strength

(Question) *Bhagavan* ! How strong is the venom of *jati-ashivish sarp* (venomous breed of snake) ?

(Answer) Gautam ! A *jati-ashivish sarp* can harm bodies living in the whole area of Jambu Dveep (one hundred thousand *Yojans*). Its venom is as strong as that but it did not, does not and will not ever employ all that strength

(Question) *Bhagavan* ! How strong is the venom of *jati-ashivish manushya* (venomous breed of man) ?

(Answer) Gautam ! A *jati-ashivish manushya* can harm bodies living in the whole area of *Samaya Kshetra* (fourty five hundred thousand *Yojans*) Its venom is as strong as that but it did not, does not and will not ever employ all that strength

विवेचन—आशी का अर्थ दाढ है। जाति अर्थात् जन्म से ही जिनकी दाढो मे विष होता है, उन्हे जाति-आशीविष कहा जाता है। यद्यपि वृश्चिक (बिच्छू) की पूँछ मे विष होता है, किन्तु जन्म-जात विषवाला होने से उसकी भी गणना जाति-आशीविषो के साथ की गई है।

प्रस्तुत सूत्र मे जिन चार प्रकार के आशीविष जीवो के विष के सामर्थ्य का निरूपण किया है, वे सभी जीव आगम-प्ररूपित उत्कृष्ट शरीरावगाहना वाले जानने चाहिए। मध्यम या जघन्य अवगाहना वालो के विष मे इतना सामर्थ्य नही होता। इसका एक भाव यह भी हो सकता है कि ये जीव इतने क्षेत्र मे ही पाये जाते है। इसलिए उनका क्षेत्र सूचित किया हो।

हिन्दी टीकाकार ने इन सूत्रो का स्पष्टीकरण करते हुए कहा है बिच्छू के डक मे सखिया विष होता है। बिच्छू ने किसी को डक मारा, उस प्राणी का शव किसी मासाहारी जीव ने खाया तो वह भी विषाक्त होता जायेगा। इस प्रकार परम्परा मे वह विष फैलता हुआ आधे भरत क्षेत्र तक फैल सकता है।

बिच्छू व उरग जाति के प्राणियो मे विष होता है, यह तो सभी जानते है, किन्तु मनुष्य जाति के दाढो मे इतना उग्र विष होता है, यह सर्व ज्ञात नही है। कहा जाता है जिस मनुष्य ने जीवनभर खटाई, मिठाई और नमक नही खाया हो उसके रक्त मे अत्यधिक तेज विष होता है, वह कुपित होकर किसी को काट ले तो उसके सम्पूर्ण शरीर मे विष व्याप्त हो जायेगा। विषैले जीव भी मनुष्य को काटने से मर जाते है। मनुष्य के विष का प्रभाव सम्पूर्ण मनुष्य क्षेत्र तक व्याप्त हो सकता है। साथ ही शास्त्रकार यह भी कहते है कि उनके विष मे इतनी शक्ति तो है, परन्तु आज तक ऐसा किसी प्राणी ने प्रयोग नही किया। *(हिन्दी टीका भाग १ पृष्ठ १०२५)*

Elaboration—*Ashi* means molar teeth *Jati-ashivish* are beings having venomous teeth or fangs by birth Although scorpion has poison in its tail it has been included here because it is also poisonous by birth

This aphorism describes the strength of the venom of four kinds of beings that are poisonous by birth The body size of the beings mentioned here should be taken to be the maximum mentioned in *Agams* The venom of those with medium and minimum size is not so potent Another interpretation of these statements could be that the area covered refers to the availability of the poisonous beings referred therein

The commentator (*Tika*), explaining these aphorisms states—"Sting of a scorpion contains arsenic If a scorpion stings an animal the arsenic kills it This toxic dead body when consumed by some carnivore transfers the toxicity into the body of the flesh eater If this process continues in progression, the toxicity may spread in an area equivalent to half the area of Bharat

The fact that scorpion and reptiles are poisonous is universally known but the molars of human beings also contain so strong a poison is a lesser known fact It is said that the blood of a person who strictly avoids sour, sweet, and salty things becomes highly toxic If such person bites someone in a fit of anger this poison will spread throughout his body Even poisonous beings die when they bite such person The area where this toxicity may spread is said to be the whole area inhabited by human beings However, the author also adds that although their poison is so strong no being has ever used the poison to that effect *(Hindi Tika, part 1 p 1025)*

व्याधि-चिकित्सा-पद VYADHI CHIKITSA-PAD (SEGMENT OF TREATMENT OF AILMENTS)

५१५. चउव्विहे वाही पण्णत्ते, तं जहा—वातिए, पित्तिए, सिंभिए, सण्णिवातिए।

५१५. व्याधियाँ चार प्रकार की होती है-(१) **वातिक**-वायु के विकार से उत्पन्न होने वाली, (२) **पैत्तिक**-पित्त शास्त्र विकार से उत्पन्न होने वाली, (३) **श्लेष्मिक**-कफ के विकार से उत्पन्न होने वाली, और (४) **सान्निपातिक**-वात, पित्त और कफ के सम्मिलित विकार से उत्पन्न होने वाली व्याधि।

515. *Vyadhis* (ailments) are of four kinds—(1) *vatik*—caused due to disturbed *vaayu* (air), (2) *paittik*—caused due to disturbed *pitta* (bile), (3) *shleshmik*—caused due to disturbed *kaf* (phlegm) and (4) *sannipatik*—caused due to combined disturbance of all the three said body humours

५१६. चउव्विहा तिगिच्छा पण्णत्ता, तं जहा—विज्जो, ओसधाइं, आउरे, परियारए।

५१६. चिकित्सा के चार अग है–(१) वैद्य, (२) औषध, (३) आतुर (रोगी), और (४) परिचारक (परिचर्या करने वाला)।

516. There are four organs of *chikitsa* (treatment)—(1) *vaidya* (doctor), (2) *aushadh* (medicine), (3) *aatur* (patient) and (4) *paricharak* (nurse)

५१७. चत्तारि तिगिच्छगा पण्णत्ता, तं जहा–आततिगिच्छए णाममेगे णो परतिगिच्छए, परतिगिच्छए णाममेगे णो आततिगिच्छए, एगे आततिगिच्छएवि परतिगिच्छएवि, एगे णो आततिगिच्छए णो परतिगिच्छए।

५१७. चिकित्सक (वैद्य) चार प्रकार के होते है–(१) कोई वैद्य अपनी चिकित्सा करता है, दूसरे की नही करता, (२) कोई दूसरे की चिकित्सा करता है, अपनी नही करता, (३) कोई अपनी भी चिकित्सा करता है और दूसरे की भी करता है, तथा (४) कोई न अपनी चिकित्सा करता है और न दूसरे की ही करता है।

517. *Chikitsak* (doctors) are of four kinds—(1) some doctor cures himself and not others, (2) some doctor cures others and not himself, (3) some doctor cures himself as well as others and (4) some doctor neither cures himself nor others

व्रणकर–पद **VRANKAR-PAD**

५१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–वणकरे णाममेगे णो वणपरिमासी, वणपरिमासी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणपरिमासीवि, एगे णो वणकरे णो वणपरिमासी।

५१८. व्रण (ऑप्रेशन या शल्यचिकित्सा) करने वाले पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई चिकित्सक व्रण–(घाव) करता है, किन्तु उसका **परिमर्श**–अच्छी प्रकार सफाई आदि नही करता, (२) कोई व्रण (घाव) का **परिमर्श**–(सफाई) करता है, किन्तु व्रण नही करता, (३) कोई व्रण भी करता है और व्रण–परिमर्श भी करता है, तथा (४) कोई न व्रण करता है और न व्रण का परिमर्श करता है।

518. There are four kinds of men who do surgery (*vran*)—(1) some doctor incises but does not clean the wound (*vran-parimarsh*), (2) some doctor cleans the wound but does not incise, (3) some doctor incises as well as cleans the wound and (4) some doctor neither incises nor cleans the wound

५१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी, वणसारक्खी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणसारक्खीवि, एगे णो वणकरे णो वणसारक्खी।

५१९. व्रण करने वाले पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई व्रण करता है, किन्तु व्रण पर पट्टी आदि बाँधकर उसकी रक्षा नही करता, (२) कोई व्रण का सरक्षण करता है, किन्तु व्रण नही करता,

(३) कोई व्रण करता है और उसका सरक्षण भी करता है, तथा (४) कोई न व्रण करता है और न उसका सरक्षण करता है।

519. There are four kinds of men who do surgery (*vran*)—(1) some doctor incises but does not protect the wound by bandaging (*vran-samrakshan*), (2) some doctor protects the wound by bandaging but does not incise, (3) some doctor incises as well as protects the wound by bandaging and (4) some doctor neither incises nor protects the wound by bandaging

५२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वणकरे णाममेगे णो वणसंरोही, वणसंरोही णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणसंरोहीवि, एगे णो वणकरे णो वणसंरोही।

५२०. व्रणकर करने वाले पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) **व्रण कर, न व्रणसंरोही**–कोई व्रण करता है, किन्तु व्रणसरोही नही होता अर्थात् घाव भरने के लिए औषधि नही देता, (२) कोई व्रणसरोही होता है (घाव भरने की दवा देता है), किन्तु व्रण नही करता, (३) कोई व्रण भी करता है और व्रणसरोही भी होता है, तथा (४) कोई न व्रणकर होता है और न व्रणसरोही ही होता है।

520. There are four kinds of men who do surgery (*vran*)—(1) some doctor incises but does not administer healing medicine (*vran-samrohi*), (2) some doctor administers healing medicine but does not incise, (3) some doctor incises as well as administers healing medicine and (4) some doctor neither incises nor administers healing medicine

अन्त–र्बहिर्व्रण–पद ANTARBAHIRVRAN-PAD (SEGMENT OF INNER AND OUTER INFECTION)

५२१. चत्तारि वणा पण्णत्ता, तं जहा—अंतोसल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले, बाहिंसल्ले णाममेगे णो अंतोसल्ले, एगे अंतोसल्लेवि बाहिंसल्लेवि, एगे णो अंतोसल्ले णो बाहिंसल्ले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंतोसल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले, बाहिंसल्ले णाममेगे णो अंतोसल्ले, एगे अंतोसल्लेवि बाहिंसल्लेवि, एगे णो अंतोसल्ले णो बाहिंसल्ले।

५२१. व्रण चार प्रकार के होते है–(१) **अन्तःशल्य, न बहिःशल्य**–कुछ घावो मे भीतर शल्य होता है, पर बाहर दिखाई नही देता, (२) कुछ घावो के बाहरी सतह पर ही शल्य होता है, भीतर नही, (३) कुछ घावो का शल्य बाहर दिखाई देता है और भीतर भी गहरा होता है, तथा (४) कुछ घावो मे शल्य न बाहर होता है और न भीतर।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई भीतरी शल्य वाला (गूढ कपट वाला) होता है, किन्तु बाहरी शल्य वाला नहीं, (२) कोई बाहरी शल्य वाला होता है, भीतरी शल्य वाला नही; (३) कोई भीतरी शल्य वाला भी होता है और बाहरी शल्य वाला भी तथा (४) कोई न भीतरी शल्य वाला होता है और न बाहरी शल्य वाला।

521. There are four kinds of *vran* (wounds)—(1) some *vran* (wound) has infection (*shalya*) inside but it is not visible on the surface, (2) some wound has infection on the surface and not inside, (3) some wound has infection inside as well as on the surface and (4) some wound has infection neither inside nor the surface

Men are also of four kinds—(1) some man is crooked (*shalya*) inside but not in appearance, (2) some man is deceitful in appearance and not inside, (3) some man is deceitful inside as well as in appearance and (4) some man is deceitful neither inside nor in appearance

५२२. चत्तारि वणा पण्णत्ता, तं जहा—अंतोदुट्ठे णाममेगे णो बाहिंदुट्ठे, बाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अंतोदुट्ठे, एगे अंतोदुट्ठेवि बाहिंदुट्ठेवि, एगे णो अंतोदुट्ठे णो बाहिंदुट्ठे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंतोदुट्ठे णाममेगे णो बाहिंदुट्ठे, बाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अंतोदुट्ठे, एगे अंतोदुट्ठेवि बाहिंदुट्ठेवि, एगे णो अंतोदुट्ठे णो बाहिंदुट्ठे।

५२२. व्रण चार प्रकार के होते है-(१) **अन्तर्दुष्ट, न बहिर्दुष्ट**—कोई व्रण भीतर से दुष्ट (विकृत सडा-गला) होता है, किन्तु बाहर से दुष्ट नही होता, (२) कोई व्रण बाहर से दुष्ट होता है, किन्तु भीतर से दुष्ट नही होता, (३) कोई व्रण भीतर से भी दुष्ट होता है और बाहर से भी, तथा (४) कोई व्रण न भीतर से दुष्ट होता है और न बाहर से।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई अन्दर से (मन से) दुष्ट होता है, किन्तु बाहर से दुष्ट नही होता (दीखने मे सौम्य दिखता है), (२) कोई बाहर (आकृति, वाणी व व्यवहार) से दुष्ट होता है, किन्तु भीतर से नही होता, (३) कोई अन्दर से भी दुष्ट होता है और बाहर से भी, तथा (४) कोई न अन्दर से दुष्ट होता है और न बाहर से।

522. There are four kinds of *vran* (wounds)—(1) some *vran* (wound) has virulent (*dusht*) infection (*shalya*) inside but not on the surface, (2) some wound has virulent infection on the surface and not inside, (3) some wound has virulent infection inside as well as on the surface and (4) some wound has no virulent infection either inside or on the surface

Men are also four kinds—(1) some man is evil (*dusht*) inside but not in appearance (appears good), (2) some man is evil in appearance (speech and disposition) and not inside, (3) some man is evil inside as well as in appearance and (4) some man is evil neither inside nor in appearance.

विवेचन—व्रण अर्थात् घाव। व्रण दो प्रकार के होते है-(१) बाह्य व्रण-शरीर के किसी अंग मे चाकू, सुई, काँटा, काँच आदि नुकीले पदार्थ चुभने से घाव हो जाते है, ऐसे घाव बाह्य व्रण कहे जाते है। (२) फोडा, फुसी आदि के रूप मे फूटकर जो भीतर मे घाव का रूप धारण कर लेते है, वे अन्तर्व्रण (अन्त शल्य) कहे जाते है।

द्रव्य-भाव भेद से भी व्रण के दो भेद है--शरीर के घाव द्रव्य व्रण है, तथा स्वीकृत व्रतो मे दोष, अतिचार आदि भाव व्रण है। भाव व्रण की चिकित्सा आलोचना, निदा, प्रतिक्रमण आदि से होती है। शास्त्र मे भावशल्य तीन प्रकार के बताये है-(१) माया शल्य, (२) निदान शल्य, और (३) मिथ्यादर्शन शल्य। इन चौभंगियो को द्रव्य, भाव दोनो पक्षो मे घटित कर समझना चाहिए। *(संस्कृत वृत्ति भाग २ पृष्ठ ४५४)*

Elaboration—*Vran* means wound They are of two types—(1) *bahya vran* (outer wound)—the wound made by a sharpe edged thing like knife, needle, thorn, glass etc (2) *Antar vran*—boil, tumour and other such inner infections that burst open

There are two classes of wound from the angles of *dravya* (physical) and *bhaava* (mental) Wounds on the body are *dravya-vran* (physical wounds) and transgressions or faults in accepted vows are *bhaava-vran* (mental wounds) The cure of mental wounds is effected through self-criticism, self-reproach and critical review In scriptures there is a mention of three classes of *bhaava-shalya* (mental thorn)—(1) *maaya shalya* (thorn of deceit), (2) *nidaan shalya* (thorn of desires) and (3) *mithyadarshan-shalya* (thorn of unrighteousness) All these quads should be interpreted both ways, physical and mental

श्रेयस्–पापीयस्–पद SHREYAS-PAAPIYAS-PAD (SEGMENT OF NOBLE AND IGNOBLE)

५२३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसे, सेयंसे णाममेगे पावंसे, पावंसे णाममेगे सेयंसे, पावंसे णाममेगे पावंसे।

५२३. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष ज्ञान व सदभाव की अपेक्षा श्रेयान्-श्रेष्ठ/प्रशसनीय होता है और आचरण की अपेक्षा भी श्रेष्ठ होता है, (२) कोई ज्ञान की अपेक्षा तो श्रेयान् होता है, किन्तु आचरण की अपेक्षा पापीयान् (अत्यन्त निकृष्ट) होता है, (३) कोई मिथ्या-ज्ञान की अपेक्षा पापीयान् होता है, किन्तु आचार की अपेक्षा श्रेयान्, तथा (४) कोई मिथ्या-ज्ञान की अपेक्षा भी पापीयान् और कदाचार की अपेक्षा भी पापीयान् होता है।

523. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some person is shreyan (noble) in terms of right knowledge and good disposition and also in terms of *aachar* (conduct) (2) Some person is *shreyan* (noble) in terms knowledge but *paapiyan* (ignoble) in terms of conduct (3) Some person is ignoble in terms of false knowledge and noble in terms of conduct (4) Some person is ignoble in terms of false knowledge as well as conduct

५२४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए, सेयंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए, पावंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए, पावंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए।

५२४. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष ज्ञान की दृष्टि से श्रेयान् (श्रेष्ठ) होता है, किन्तु आचरण की दृष्टि से श्रेयान्सदृश अर्थात् श्रेष्ठ के समान होता है, (२) कोई ज्ञान की अपेक्षा तो श्रेयान्, किन्तु आचरण की अपेक्षा पापीयान् सदृश होता है, (३) कोई ज्ञान की अपेक्षा पापीयान् किन्तु आचरण की अपेक्षा श्रेयान्सदृश होता है, तथा (४) कोई कु-ज्ञान की अपेक्षा पापीयान् और कदाचरण की अपेक्षा पापीयान् सदृश होता है।

524. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some person is *shreyan* (noble) in terms of knowledge and *shreyan-sadish* (noble-like) in terms of *aachar* (conduct) (2) Some person is noble in terms knowledge but *paapiyan-sadrish* (ignoble-like) in terms of conduct (3) Some person is ignoble in terms of knowledge and noble-like in terms of conduct (4) Some person is ignoble in terms of knowledge and ignoble-like in terms of conduct

५२५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति मण्णति, सेयंसे णाममेगे पावंसेत्ति मण्णति, पावंसे णाममेगे सेयंसेत्ति मण्णति, पावंसे णाममेगे पावंसेत्ति मण्णति।

५२५. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष श्रेष्ठ होता है और दूसरो द्वारा भी श्रेष्ठ माना जाता है, (२) कोई श्रेष्ठ होता है, किन्तु दूसरो द्वारा पापात्मा माना जाता है, (३) कोई पापात्मा होता है, किन्तु दूसरो द्वारा श्रेष्ठ माना जाता है, तथा (४) कोई पापात्मा होता है और दूसरो द्वारा भी पापात्मा माना जाता है।

525. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some person is *shreyan* (noble) and accepted as noble by others (2) Some person is noble but accepted as *paapiyan* (ignoble) by others (3) Some person is ignoble but accepted as noble by others (4) Some person is ignoble but accepted as ignoble by others

५२६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए मण्णति, सेयंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए मण्णति, पावंसे णाममेगे सेयंसेत्तिसालिसए मण्णति, पावंसे णाममेगे पावंसेत्तिसालिसए मण्णति।

५२६. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) **श्रेयान्, श्रेयान्-सदृशम्मन्य**-कोई पुरुष श्रेष्ठ होता है और लोगो द्वारा श्रेष्ठ के समान माना जाता है, (२) **श्रेयान् और पापीयान्-सदृशम्मन्य**-कोई श्रेष्ठ होता है, किन्तु पापात्मा के समान माना जाता है, (३) कोई पापात्मा होता है, किन्तु श्रेष्ठ के समान माना जाता है, तथा (४) कोई पापात्मा होता है और पापात्मा के समान ही माना जाता है।

526. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some person is *shreyan* (noble) and is accepted as *shreyan-sadrish* (noble-like) by others (2) Some person is noble but accepted as *paapiyan-sadrish* (ignoble-like) by others

(3) Some person is ignoble and is accepted as noble-like by others (4) Some person is ignoble and is accepted as ignoble-like by others

विवेचन—श्रेयान् का अर्थ है—श्रेष्ठ अथवा प्रशसा योग्य। पापीयान् का अर्थ है—पापात्मा और निन्दनीय। श्रेयान्मन्य का अर्थ है- दूसरो द्वारा ऐसा माना जाता है अथवा स्वय को ऐसा मानता है। वास्तव मे वह कुछ और होता है, परन्तु लोगो मे ऐसा माना जाता है। श्रेयान्सदृश का अर्थ है—सर्वथा श्रेष्ठ नही है, किन्तु श्रेष्ठ के समान। कुछ आशिक श्रेष्ठ होते है, किन्तु अपने आपको अधिक श्रेष्ठ मानते है। कुछ अल्प पापी होते है, परन्तु अपने आपको बहुत अधिक पापी मानते है। यह सब कथन द्रव्य और भाव की अपेक्षा , अन्तर और बाह्य की अपेक्षा से अनेक चौभगियो द्वारा कहा जा सकता है। *(हिन्दी टीका, पृ १०४०-४१)*

Elaboration—*Shreyan* means noble, good or praiseworthy *Paapiyan* means ignoble, sinner or reprehensible *Shreyanmanya* means accepted by himself or others as noble In fact such a person is different than what he is considered Shreyan-sadrash means noble-like but not exactly noble Some people are partially noble but believe themselves to be more noble than what they are Some are partially sinful but believe themselves to be more ignoble than they are All these statements can be elaborated into many quads from physical and mental or outer and inner angles *(Hindi Tika pp 1040-1041)*

आख्यायक–पद AKHYAYAK-PAD (SEGMENT OF COMMENTATOR)

५२७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आघवइत्ता णाममेगे णो पविभावइत्ता, पविभावइत्ता णाममेगे णो आघवइत्ता, एगे आघवइत्तावि पविभावइत्तावि, एगे णो आघवइत्ता णो पविभावइत्ता।

५२७. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष प्रवचन का **आख्यायक** (कथन करने वाला) होता है, किन्तु **प्रभावक** (शासन की प्रभावना करने वाला) नही होता, (२) कोई प्रभावक तो होता है, किन्तु आख्यायक नही, (३) कोई आख्यायक भी होता है और प्रभावक भी, तथा (४) कोई न (श्रमण) आख्यायक होता है और न प्रभावक ही।

527. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some person is *akhyayak* (commentator of scriptures) but not *prabhavak* (popularizer of religious order) (2) Some person is *prabhavak* but not *akhyayak* (3) Some person is *akhyayak* as well as *prabhavak* (4) Some person is neither *akhyayak* nor *prabhavak*

५२८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आघवइत्ता णाममेगे णो उंछजीविसंपण्णे, उंछजीविसंपण्णे णाममेगे णो आघवइत्ता, एगे आघवइत्तावि उंछजीविसंपण्णेवि, एगे णो आघवइत्ता णो उंछजीविसंपण्णे।

५२८. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष आख्यायक (शास्त्र व्याख्याता) तो होता है, किन्तु **उञ्छजीविकासम्पन्न** (निर्दोष भिक्षाचरी करने वाला) नही होता है, (२) कोई उञ्छजीविकासम्पन्न तो होता है, किन्तु आख्यायक नही, (३) कोई आख्यायक भी होता है और उञ्छजीविकासम्पन्न भी, तथा (४) कोई न आख्यायक ही होता है और न उञ्छजीविकासम्पन्न।

528. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some person (ascetic) is *akhyayak* (commentator of scriptures) but not *unchhajivika sampanna* (faultless in alms-seeking) (2) Some person is *unchhajivika sampanna* but not *akhyayak* (3) Some person is *akhyayak* as well as *unchhajivika sampanna* (4) Some person is neither *akhyayak* nor *unchhajivika sampanna*

वृक्ष–विक्रिया–पद VRIKSHA-VIKRIYA-PAD (SEGMENT OF DEVELOPMENT OF A TREE)

५२९. चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा–पवालत्ताए, पत्तत्ताए, पुप्फत्ताए, फलत्ताए।

५२९. वृक्षो की विक्रिया (विकास) चार प्रकार की होती है (१) प्रवाल (कोपल) के रूप से, (२) पत्र के रूप से, (३) पुष्प के रूप से, और (४) फल के रूप से।

529. *Vriksha-vikriya* (development of a tree) is of four kinds—(1) in context of *praval* (sprouts), (2) in context of *patra* (leaves), (3) in context of *pushp* (flowers) and (4) in context of *phal* (fruits)

वादि–समवसरण–पद VAADI-SAMAVASARAN-PAD (SEGMENT OF SECTS)

५३०. चत्तारि वादिसमोसरणा पण्णत्ता, तं जहा–किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियावादी, वेणइयावादी।

५३०. वादियो के चार समवसरण (समुदाय) है–(१) **क्रियावादि–समवसरण**–पुण्य-पाप रूप क्रियाओ को मानने वाले आस्तिको का समुदाय, (२) **अक्रियावादि–समवसरण**–पुण्य-पापरूप क्रियाओ को नही मानने वाले नास्तिको का समवसरण, (३) **अज्ञानवादि–समवसरण**–अज्ञान को ही शान्ति या सुख का कारण मानने वालो का और (४) **विनयवादि–समवसरण**–सभी जीवो की विनय करने से मुक्ति मानने वालो का समुदाय।

530. *Vadi-samavasaran* (gathering of schools of thought, sects) are of four kinds—(1) *Kriyavadi-samavasaran*—those who believe in salvation through righteous and unrighteous activity (*astik*), (2) *Akriyavadi-samavasaran*—those who do not believe in salvation through righteous and unrighteous activity (*nastik*), (3) *Ajnanavadi-samavasaran*—those who consider ignorance to be the cause of bliss and peace and

(4) *Vinayavadi-samavasaran*—those believe that salvation can be achieved only through modest behaviour towards all beings

५३१. णेरइयाणं चत्तारि वादिसमोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी, जाव (अकिरियावादी, अण्णाणियावादी) वेणइयावादी। ५३२. एवमसुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं। एवं—विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।

५३१. नारको के चार समवसरण है–(१) क्रियावादि–समवसरण, (२) अक्रियावादी–समवसरण, (३) अज्ञानवादि–समवसरण, और (४) विनयवादि–समवसरण। ५३२. इसी प्रकार असुरकुमारो से लेकर स्तनितकुमारो तक चार–चार वादिसमवसरण कहे है। इसी प्रकार विकलेन्द्रियो को छोडकर वैमानिक–पर्यन्त सभी दण्डको के चार–चार समवसरण जानना चाहिए।

531. *Naaraks* (infernal beings) have four *vadi-samavasaran* (sects)—(1) *Kriyavadi-samavasaran*, (2) *Akriyavadi-samavasaran*, (3) *Ajnanavadi-samavasaran* and (4) *Vinayavadi-samavasaran* **532.** In the same way divine beings from Asur Kumars to Stanit Kumars have four *vadi-samavasaran* (sects) each In the same way except *vikalendriya* (two to four sensed) beings all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik* gods have four *vadi-samavasaran* (sects) each

विवेचन—जहाँ पर विभिन्न मत वाले एकत्र हो, उस स्थान को समवसरण कहते है। भगवान महावीर के समय मे सूत्रोक्त चारो प्रकार के वादियो के समवसरण (समुदाय) थे और उनके भी उत्तर भेद बहुत थे, जैसे (१) क्रियावादियो के १८०, (२) अक्रियावादियो के ८४, (३) अज्ञानवादियो के ६७, और (४) विनयवादियो के ३२ उत्तरभेद।

इस प्रकार भगवान महावीर के समय मे तीन सौ तिरेसठ वादियो के होने का उल्लेख श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनो सम्प्रदाय के ग्रन्थो मे पाया जाता है।

Elaboration—A place where people belonging to different schools of thought (vaadi) congregate is called *samavasaran* During the period of Bhagavan Mahavir aforesaid four sects existed These four sects had numerous branches each—(1) Kriyavadis—180 sub-sects, (2) Akriyavadi-84 sub-sects, (3) Ajnanavadi—67 sub-sects and (4) Vinayavadi—32 sub-sects The mention of these three hundred sixty three *vaadis* (sects) contemporary to Bhagavan Mahavir is available in both Digambar as well as Shvetambar scriptures

मेघ–पद MEGH-PAD (SEGMENT OF CLOUDS)

५३३. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता।

५३३. मेघ चार प्रकार के होते है–(१) कोई मेघ (बादल) गरजता है, किन्तु बरसता नही, (२) कोई मेघ बरसता है, किन्तु गरजता नही, (३) कोई मेघ गरजता भी है और बरसता भी है, तथा (४) कोई मेघ न गरजता है और न बरसता ही है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष गरजता है, किन्तु बरसता नही। अर्थात् बडे-बडे कामो को करने की उदघोषणा व प्रतिज्ञाएँ करता है, किन्तु उन कामो को पूरा नही करता है, (२) कोई बरसता है, कार्यो को पूर्ण करता है, किन्तु गरजता नही, उद्घोषणा नही करता, (३) कोई कार्यो को करने की गर्जना भी करता है और उन्हे पूरा भी करता है, तथा (४) कोई कार्यों को करने की न घोषणा करता है और न उन्हे पूरा करता ही है।

533. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud thunders but does not rain (2) Some cloud rains but does not thunder (3) Some cloud thunders as well as rains (4) Some cloud neither rains nor thunders

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some man thunders but does not rain In other words he boasts and promises about great deeds but does not accomplish them (2) Some man rains but does not thunder In other words he acts and does not boast (3) Some man thunders as well as rains In other words he acts as well as boasts (4) Some man neither rains nor thunders In other words he neither acts nor boasts

५३४. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा–गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो विज्जुयाइत्ता।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो विज्जुयाइत्ता।

५३४. मेघ चार प्रकार के होते है–(१) कोई मेघ गरजता है, किन्तु चमकता नही है, (२) कोई मेघ चमकता है, किन्तु गरजता नही है, (३) कोई मेघ गरजता भी है और चमकता भी है, और (४) कोई मेघ न गरजता है न चमकता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष दानादि करने की घोषणा गर्जना–तो करता है, किन्तु चमकता नही अर्थात् देता नही है, (२) कोई दानादि देकर चमकता तो है, किन्तु घोषणा नही करता, (३) कोई गर्ज कर घोषणाएँ भी करता है और देकर चमकता भी है, तथा (४) कोई न घोषणा करता है और न देकर के चमकता ही है।

534. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud thunders but does not flash (flash of lightening) (2) Some cloud flashes but does not thunder (3) Some cloud thunders as well as flashes (4) Some cloud neither flashes nor thunders

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some man thunders (boasts of donating) but does not flash (donate) (2) Some man flashes (donates) but does not thunder (boast of donating) (3) Some man thunders (boasts of donating) as well as flashes (donates) (4) Some man neither flashes (boasts of donating) nor thunders (donates)

५३५. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो वासित्ता, एगे वासित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो वासित्ता णो विज्जुयाइत्ता।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो वासित्ता, एगे वासित्तावि विज्जुयाइत्तावि, एगे णो वासित्ता णो विज्जुयाइत्ता।

५३५. मेघ चार प्रकार के होते है–(१) कोई मेघ बरसता है, किन्तु चमकता नही, (२) कोई मेघ चमकता है, किन्तु बरसता नही, (३) कोई मेघ बरसता भी है और चमकता भी है, तथा (४) कोई मेघ न बरसता है और न चमकता ही है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष दानादि देता है, किन्तु उसका दिखावा या प्रदर्शन नही करता (२) कोई दानादि देने की बडी-बडी बाते करता है, किन्तु देता कुछ नही, (३) कोई दानादि की वर्षा भी करता है और उसका दिखावा कर चमकता भी है, तथा (४) कोई न दानादि की वर्षा करता है और न देकर के चमकता ही है।

535. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud rains but does not flash (flash of lightening) (2) Some cloud flashes but does not rain (3) Some cloud rains as well as flashes (4) Some cloud neither flashes nor rains

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some man rains (donates) but does not flash (flaunt about his donation) (2) Some man flashes (flaunts about donating) but does not rain (donate) (3) Some man rains (flaunts about donating) as well as flashes (donates) (4) Some man neither flashes (flaunts about donating) nor rains (donates)

५३६. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी, एगे कालवासीवि अकालवासीवि, एगे णो कालवासी णो अकालवासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी, एगे कालवासीवि अकालवासीवि, एगे णो कालवासी णो अकालवासी।

५३६. मेघ चार प्रकार के होते है-(१) कोई मेघ समय पर बरसता है, किन्तु असमय मे नही बरसता, (२) कोई मेघ असमय मे बरसता है, किन्तु समय पर नही बरसता, (३) कोई मेघ समय पर भी बरसता है और असमय मे भी बरसता है, तथा (४) कोई मेघ न समय पर ही बरसता है और न असमय मे ही बरसता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष समय पर (अवसर आने पर) दानादि देता है, किन्तु असमय मे नही देता, (२) कोई असमय मे, (बिना प्रसग के) दानादि देता है, किन्तु समय पर (प्रसग पर) नही देता, (३) कोई समय पर भी दानादि देता है और असमय मे भी देता है, तथा (४) कोई न समय पर ही देता है और न असमय मे ही देता है।

536. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud rains timely and does not rain untimely (2) Some cloud rains untimely but does not rain timely (3) Some cloud rains timely as well as untimely (4) Some cloud neither rains timely nor untimely

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some man rains timely (donates at the right opportunity) but does not rain untimely (donate without right opportunity) (2) Some man rains untimely (donates without right opportunity) but does not rain timely (donate at the right opportunity) (3) Some man rains timely as well as untimely (donates at and also without right opportunity) (4) Some man neither rains timely nor untimely (does not donate at or without right opportunity)

५३७. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा–खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी, अखेत्तवासी णाममेगे णो खेत्तवासी, एगे खेत्तवासीवि अखेत्तवासीवि, एगे णो खेत्तवासी णो अखेत्तवासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी, अखेत्तवासी णाममेगे णो खेत्तवासी, एगे खेत्तवासीवि अखेत्तवासीवि, एगे णो खेत्तवासी णो अखेत्तवासी।

५३७. मेघ चार प्रकार के होते है-(१) कोई मेघ क्षेत्र-(उपजाऊ भूमि) पर बरसता है, किन्तु अक्षेत्र-(ऊसरभूमि) पर नही बरसता है, (२) कोई अक्षेत्र पर बरसता है, किन्तु क्षेत्र पर नही बरसता, (३) कोई क्षेत्र पर भी बरसता है और अक्षेत्र पर भी बरसता है, तथा (४) कोई न क्षेत्र पर बरसता है और न अक्षेत्र पर बरसता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष क्षेत्र पर बरसता (दया और दान के पात्र को दान देता है), किन्तु अक्षेत्र (अपात्र) पर नही बरसता, (२) कोई अक्षेत्र (अपात्र) पर बरसता है, किन्तु क्षेत्र (सुपात्र) पर नही बरसता, (३) कोई क्षेत्र पर भी बरसता है और अक्षेत्र पर भी बरसता है, एव (४) कोई न क्षेत्र पर बरसता है और न अक्षेत्र पर बरसता है।

537. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud rains on *kshetra* (deserving area, fertile land) and does not rain on *akshetra* (unsuitable area, sterile land) (2) Some cloud rains on unsuitable area but does not rain on deserving area (3) Some cloud rains on deserving area as well as unsuitable area (4) Some cloud neither rains on deserving area nor on unsuitable area

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some man rains on deserving area (donates to the deserving) and does not rain on unsuitable area (donate to the undesreving) (2) Some man rains on unsuitable area (donates to non-deserving) but does not rain on deserving area (donate to the right person) (3) Some man rains on deserving area as well as unsuitable area (donates to both) (4) Some man neither rains on deserving area nor on unsuitable area

अम्बा–पितृ–पद AMBA-PITRA-PAD (SEGMENT OF PARENTS)

५३८. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा–जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, एगे जणइत्तावि णिम्मवइत्तावि, एगे णो जणइत्ता णो णिम्मवइत्ता।

एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पण्णत्ता, तं जहा–जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, एगे जणइत्तावि णिम्मवइत्तावि, एगे णो जणइत्तावि णो णिम्मवइत्ता।

५३८. मेघ चार प्रकार के होते है - (१) कोई मेघ अन्न का **जनयिता**–जन्म दाता, (अकुरित करने वाला) होता है, किन्तु **निर्मापक**–(पकाकर फसल देने वाला) नही होता, (२) कोई अन्न की फसल को पकाता है, किन्तु अकुरित नही करता, (३) कोई अन्न को अकुरित भी करता है और फसल तैयार भी करता है, और (४) कोई न अन्न का जनक होता है और न निर्मापक।

इसी प्रकार माता–पिता भी चार प्रकार के होते है - (१) कोई माता–पिता सन्तान के **जनयिता**–(जन्म देने वाले) होते है, किन्तु **निर्मापक** (भरण–पोषण अथवा शिक्षण कर उनका जीवन–निर्माण करने वाले) नही होते, (२) कोई सन्तान के निर्मापक होते है, किन्तु जनक नही होते, (३) कोई सन्तान के जनक भी होते है और निर्मापक भी, तथा (४) कोई न सन्तान के जनक ही होते है और न निर्मापक ही।

538. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud is *janayita* (which causes sprouting) of *anna* (grain) but not *nirmaapak* (which causes ripening) (2) Some cloud is *nirmaapak* of *anna* (helps in ripening) but not *janayita* (helps in sprouting) (3) Some cloud is *janayita* as well as *nirmaapak* of grain (4) Some cloud is neither *nirmaapak* nor *janayita* of grain

In the same way *ammapiyaro* (parents) are of four kinds—(1) Some parents are *janayita* (who give birth) of *santaan* (offspring) but not

nirmaapak (who bring up a child by feeding, nursing and educating) (2) Some parents are *nirmaapak* of *santaan* but not *janayita* (3) Some parents are *janayita* as well as *nirmaapak* of *santaan* (4) Some parents are neither *nirmaapak* nor *janayita* of *santaan*

राज-पद RAAJ-PAD (SEGMENT OF KINGS)

५३९. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, तं जहा—देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी, सव्ववासी णाममेगे णो देसवासी, एगे देसवासीवि सव्ववासीवि, एगे णो देसवासी णो सव्ववासी।

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता, तं जहा—देसाधिवती णाममेगे णो सव्वाधिवती, सव्वाधिवती णाममेगे णो देसाधिवती, एगे देसाधिवतीवि सव्वाधिवतीवि, एगे णो देसाधिवती णो सव्वाधिवती।

५३९. मेघ चार प्रकार के होते है- (१) **देशवर्षी, न सर्ववर्षी**—कोई मेघ किसी एक देश (क्षेत्र) मे बरसता है, किन्तु सब देशो (क्षेत्रो) मे नही बरसता, (२) **सर्ववर्षी, न देशवर्षी**—कोई सब देशो मे बरसता है, किन्तु किसी एक देश मे नही, (३) कोई किसी एक देश मे भी बरसता है और सब देशो मे भी, तथा (४) कोई न किसी एक देश मे बरसता है और न सब देशो मे ही बरसता है।

इसी प्रकार राजा भी चार प्रकार के होते है--(१) कोई राजा **देशाधिपति**—किसी एक देश का ही स्वामी होता है, **न सर्वाधिपति**—सब देशो का स्वामी नही होता (जैसे–सामान्य राजा), (२) कोई राजा सब देशो का स्वामी होता है, किन्तु किसी एक देश विशेष का नही, (३) कोई राजा किसी एक देश का स्वामी भी होता है और सब देशो का भी (जैसे-वासुदेव चक्रवर्ती), तथा (४) कोई राजा न किसी एक देश का स्वामी होता है और न सब देशो का, ही स्वामी होता है (जैसे–राज्य से भ्रष्ट हुआ राजा)।

539. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) Some cloud is *deshavarshi* (which rains in one state or in a specific area) but not *sarvavarshi* (which rains in all states or a very wide area) (2) Some cloud is *sarvavarshi* but not *deshavarshi* (3) Some cloud is *deshavarshi* as well as *sarvavarshi* (4) Some cloud is neither *sarvavarshi* nor *deshavarshi*

In the same way *rajas* (kings) are of four kinds—(1) Some king is *deshadhipati* (one who rules over one state) but not *sarvadhipati* (one who rules over all states) (for example an ordinary king) (2) Some king is *sarvadhipati* but not *deshadhipati* (3) Some king is *deshadhipati* as well as *sarvadhipati* (for example a Vasudev or a Chakravarti) (4) Some king is neither *sarvadhipati* nor *deshadhipati* (for example a dethroned king)

मेघ-सूत्र MEGH-PAD (SEGMENT OF CLOUDS)

५४०. चत्तारि मेहा पण्णत्ता, —पुक्खलसंवट्टए, पज्जुण्णे, जीमूते, जिम्हे।

पुक्खलसंवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेति। पज्जुण्णे णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेति। जीमूते णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेति। जिम्हे णं महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेति वा णं वा भावेति।

५४०. मेघ चार प्रकार के होते है–(१) पुष्कलसवर्तक मेघ (पुष्कलावर्त), (२) प्रद्युम्न मेघ, (३) जीमूत मेघ, और (४) जिम्ह मेघ। (१) **पुष्कलसवर्तक महामेघ**–एक वर्षा से दश हजार वर्ष तक भूमि को जल से स्निग्ध (उपजाऊ) कर देता है, (२) **प्रद्युम्न महामेघ**–एक वर्षा से एक हजार वर्ष तक भूमि को जल से स्निग्ध कर देता है, (३) **जीमूत महामेघ**–एक वर्षा से दश वर्ष तक भूमि को जल से स्निग्ध कर देता है, और (४) **जिम्ह महामेघ**–बहुत बार बरस कर भी एक वर्ष तक भूमि को जल से स्निग्ध करता है और नही भी करता है।

540. *Megh* (clouds) are of four kinds—(1) *Pushkalasmavartak megh*, (2) *Pradyumna megh*, (3) *Jeemut megh* and (4) *Jimha megh* (1) *Pushkalasmavartak megh*—with just one rain this cloud makes the land fertile for ten thousand years (2) *Pradyumna megh*—with just one rain it makes the land fertile for one thousand years (3) *Jeemut megh*—with just one rain it makes the land fertile for ten years (4) *Jimha megh*—with numerous rains it may or may not make the land fertile even for one year

विवेचन–टीकाकार ने उक्त चारो प्रकार के मेघो के समान पुरुषो के भग स्वय जान लेने की सूचना की है। जिसे इस प्रकार से जानना चाहिए (१) कोई दानी या उपदेशक पुष्कलसवर्तक मेघ के समान एक बार के दान से या उपदेश से बहुत लम्बे काल तक याचको को और जिज्ञासुओ को तृप्त कर देता है, (२) कोई दानी या उपदेशक प्रद्युम्न मेघ के समान बहुत काल तक दान या उपदेश देकर अर्थी और जिज्ञासुओ को तृप्त कर देता है, (३) कोई दानी या उपदेशक जीमूत मेघ के समान कुछ वर्षो के लिए दान या उपदेश देकर तृप्त करता है, एव (४) कोई दानी या उपदेष्टा जिम्ह मेघ के समान अनेक बार दिये गये दान या उपदेश से एक वर्ष के लिए तृप्त करता भी है और कभी नही कर पाता है।

Elaboration—The commentator informs that like clouds the aforesaid quads should be applied to men It would read as follow—(1) Like *Pushkalasmavartak megh* some donor or preacher satisfies seekers for a very long period with just one donation or sermon (2) Like *Pradyumna megh* some donor or preacher satisfies seekers for a long period with just one donation or sermon (3) Like *Jeemut megh* some donor or preacher satisfies seekers for a few years with just one donation or sermon (4) Like *Jimha megh* some donor or preacher may or may not satisfy seekers for one year even with many donations or sermons

आचार्य–सूत्र ACHARYA-PAD (SEGMENT OF PRECEPTOR)

५४१. चत्तारि करंडगा पण्णत्ता, तं जहा–सोवागकरंडए, वेसियाकरंडए, गाहावतिकरंडए, रायकरंडए। एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा–सोवागकरंडगसमाणे, वेसियाकरंडगसमाणे, गाहावतिकरडंगसमाणे, रायकरंडगसमाणे।

५४१. करण्डक चार प्रकार के होते है–(१) श्वपाककरण्डक, (२) वेश्याकरण्डक, (३) गृहपतिकरण्डक, और (४) राजकरण्डक। इसी प्रकार आचार्य भी चार प्रकार के होते है–(१) श्वपाक–करण्डक समान, (२) वेश्या–करण्डक समान, (३) गृहपति–करण्डक समान, और (४) राज–करण्डक समान।

541. *Karandak* (box) are of four kinds—(1) *shvapaak karandak* (shoemaker's box), (2) *veshya karandak* (prostitute's box), (3) *grihapati karandak* (householder's box) and (4) *raj karandak* (king's box) In the same way *acharya* (preceptor) are of four kinds—(1) like *shvapaak karandak*, (2) like *vesnya karandak*, (3) like *grihapati karandak* and (4) like *raj karandak*

विवेचन–करण्डक का अर्थ पिटारा, या सन्दूक है। वह बास व बैत की शलाकाओ से बनाया जाता है। यहाँ पर 'करण्डक' की उपमा देकर उसके समान आचार्यो के गुण, महत्त्व आदि बताये है। जैसे–

(१) **श्वपाक** (चाण्डाल, चर्मकार) के करण्डक मे चमडे को छीलने–काटने आदि के उपकरणो और चमडे के टुकडो आदि रखे रहने से वह असार या निकृष्ट कोटि का माना जाता है, उसी प्रकार जो आचार्य सामान्य ज्ञानी होता है और गण या सघ मे शिथिलाचार व सयमहीनता को बढावा देता है, वह आचार्य श्वपाक–करण्डक के समान है।

(२) साधारण वेश्या का करण्डक लाख भरे सोने के दिखाऊ आभूषणो से भरा होता है, वैसे ही जो आचार्य अल्पज्ञानी होने पर भी अपने वचनचातुर्य व लोक लुभावन क्रियाओ से साधारण जनो को आकर्षित करते है, वे वेश्या–करण्डक के समान है।

(३) किसी गृहपति या सम्पन्न गृहस्थ का करण्डक (पेटी) सोने–मोती आदि के आभूषणो से भरा रहता है, वैसे ही जो आचार्य बहश्रुत और चारित्रसम्पन्न होते है, उन्हे गृहपति–करण्डक के समान कहा है।

(४) राजा का करण्डक मणि–माणिक आदि बहुमूल्य रत्नो से भरा होता है, उसी प्रकार जो आचार्य अपने पद के योग्य सर्वगुणो से सम्पन्न होते है, उन्हे राज–करण्डक के समान कहा है।

Elaboration—*Karandak* means bag or box It used to be made of bamboo or cane Here the virtues and importance of preceptors have been explained using *karandak* as a metaphor For example—

(1) Like *shvapaak karandak*—As the box of a shoemaker contains leather cutting tools and pieces of leather it is considered to be of worst

type Therefore an *acharya* with ordinary knowledge who encourages lax conduct and indiscipline is said to be like the loose of a shoemaker

(2) Like *veshya karandak*—The box of a prostitute contains ornaments made of gold foil filled with shellac (like costume jewellery) Therefore an *acharya* with little knowledge who attracts ordinary people with his clever speech and crowd pulling antics is said to be like the box of a prostitute

(3) Like *grihapati karandak*—The box of a well to do householder contains ornaments made of real pearls and gold Therefore a scholarly *acharya* steadfast in his ascetic conduct is said to be like a householder's box

(4) Like *raj karandak*—The box of a king contains invaluable ornaments and gems Therefore an *acharya* endowed with all virtues befitting his status is said to be like a king's box

वृक्ष-पद VRIKSHA-PAD (SEGMENT OF TREES)

५४२. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरियाए, साले णाममेगे एरंडपरियाए, एरंडे णाममेगे सालपरियाए, एरंडे णाममेगे एरंडपरियाए।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरियाए, साले णाममेगे एरंडपरियाए, एरंडे णाममेगे सालपरियाए, एरंडे णाममेगे एरंडपरियाए।

५४२. वृक्ष चार प्रकार के होते है–(१) **शाल और शाल–पर्याय**–कोई वृक्ष शाल जाति का होता है और शाल–पर्याय– (सघन छाया वाला व पूर्ण विकसित) होता है, (२) **शाल और एरण्ड–पर्याय**–कोई वृक्ष शाल जाति का होता है, किन्तु एरण्ड–पर्याय–(एरण्ड के वृक्ष के समान अल्प छायावाला व पतझड मे पत्रहीन होने वाला) होता है, (३) **एरण्ड और शाल–पर्याय**–कोई वृक्ष एरण्ड के समान छोटा, किन्तु शाल के समान सघन छाया वाला होता है, तथा (४) **एरण्ड और एरण्ड–पर्याय**–कोई वृक्ष एरण्ड के समान छोटा और उसी के समान अल्प छाया वाला होता है।

इसी प्रकार आचार्य भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई आचार्य शाल के समान उत्तम जाति व रूप वाले और उसी के समान उत्तम ज्ञान व आचार आदि से प्रभावशाली होता है, (२) कोई आचार्य शाल के समान उत्तम जाति व रूपवान होकर भी ज्ञान, आचार और प्रभाव से शून्य होते है, (३) कोई आचार्य एरण्ड के समान रूप हीन, किन्तु ज्ञान, आचार आदि से प्रभावशाली होते है, एव (४) कोई आचार्य एरण्ड के समान रूप हीन और उसी के समान ज्ञान, आचार से भी हीन होते है।

542. *Vriksha* (trees) are of four kinds—**(1) Shaal and shaal-paryaya**—some tree is of Shaal species and also has qualities of a Shaal tree (fully grown and with thick foliage providing dense shade), **(2) Shaal and Erand-paryaya**—some tree is of Shaal species but has qualities of an

Erand (castor-oil plant) tree (with sparse foliage and no leaves in autumn season providing no shade), **(3) Erand and Shaal-paryaya—** some tree is of Erand species but has qualities of a Shaal tree and **(4) Erand and Erand-paryaya—**some tree is of Erand species and also has qualities of an Erand tree

In the same way *acharya* (preceptor) are of four kinds—(1) Some *acharya* is of high class and good appearance like a Shaal tree, and impressive as well due to excellent knowledge and conduct (2) Some *acharya* is of high class and good appearance like a Shaal tree but unimpressive like an Erand tree due to absence of knowledge and conduct (3) Some *acharya* is of ordinary appearance like an Erand tree but impressive like a Shaal tree due to excellent knowledge and conduct (4) Some *acharya* is of ordinary appearance like an Erand tree and equally unimpressive due to absence of knowledge and conduct

५४३. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरिवारे, साले णाममेगे एरंडपरिवारे, एरंडे णाममेगे सालपरिवारे, एरंडे णाममेगे एरंडपरिवारे।

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—साले णाममेगे सालपरिवारे, साले णाममेगे एरंडपरिवारे, एरंडे णाममेगे सालपरिवारे, एरंडे णाममेगे एरंडपरिवारे।

सालदुममज्झयारे, जह साले णाम होइ दुमराया।
इय सुंदरआयरिए, सुंदरसीसे मुणेयव्वे॥१॥

एरंडमज्झयारे, जह साले णाम होई दुमराया।
इय सुंदरआयरिए, मंगुलसीसे मुणेयव्वे॥२॥

सालदुममज्झयारे, एरंडे णाम होइ दुमराया।
इय मंगुलआयरिए, सुंदरसीसे मुणेयव्वे॥३॥

एरंडमज्झयारे, एरंडे णाम होइ दुमराया।
इय मंगुलआयरिए, मंगुलसीसे मुणेयव्वे॥४॥ (संग्रहणी-गाथा)

५४३. वृक्ष चार प्रकार के होते है-(१) **शाल और शालपरिवार**-कोई वृक्ष शाल जाति और शालपरिवार वाला-(शाल के अनेक वृक्षो से घिरा हुआ) होता है, (२) **शाल और एरण्डपरिवार**-कोई शाल जाति का, किन्तु एरण्डपरिवार वाला (छोटे वृक्षो से घिरा हुआ) होता है, (३) कोई जाति से एरण्ड, किन्तु शालपरिवार वाला होता है, तथा (४) कोई जाति से एरण्ड और एरण्डपरिवार वाला होता है।

इसी प्रकार आचार्य भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई आचार्य शाल के समान स्वय गुणवान और शालपरिवार के समान उत्तम शिष्य-परिवार वाले होते है, (२) कोई आचार्य शाल के समान स्वय

तो सुयोग्य, किन्तु एरण्डपरिवार के समान अयोग्य शिष्य-परिवार वाले होते है, (३) कोई स्वय तो एरण्ड के समान हीन जाति व सयम आदि से साधारण होते हैं, किन्तु शाल के समान उत्तम शिष्य-परिवार वाले होते है, तथा (४) कोई आचार्य एरण्ड के समान हीन व हीन आचार वाले और एरण्डपरिवार के समान अयोग्य शिष्य-परिवार वाले होते है।

संग्रहणी गाथार्थ

(१) जिस प्रकार शाल वृक्ष शालवृक्षो के मध्य मे वृक्षराज होता है, उसी प्रकार उत्तम आचार्य उत्तम शिष्यो के परिवार वाला आचार्यराज होता है। (२) जिस प्रकार शाल वृक्ष एरण्ड वृक्षो के मध्य मे वृक्षराज होता है, उसी प्रकार उत्तम आचार्य मगुल (अधम) शिष्यो के परिवार वाला होता है। (३) जिस प्रकार एरण्ड वृक्ष शाल वृक्षो के मध्य मे वृक्षराज होता है, उसी प्रकार सुन्दर शिष्यो के परिवार वाला मगुल आचार्य होता है। (४) जिस प्रकार एरण्ड वृक्ष एरण्ड वृक्षो के मध्य मे वृक्षराज होता है, उसी प्रकार मगुल शिष्यो के परिवार वाला मगुल आचार्य होता है।

543. *Vriksha* (trees) are of four kinds—(1) Shaal and *Shaal-parivar*—some tree is of Shaal species and also *Shaal-parivar* (surrounded by many Shaal trees), (2) Shaal and *Erand-parivar*—some tree is of Shaal species but *Erand-parivar* (surrounded by many Erand trees), (3) Erand and *Shaal-parivar*—some tree is of Erand species but *Shaal-parivar* (surrounded by many Shaal trees) and (4) Erand and *Erand-parivar*—some tree is of Erand species and also *Erand-parivar* (surrounded by many Erand trees)

In the same way *acharya* (preceptor) are of four kinds—(1) Some acharya is highly endowed like a Shaal tree, and *Shaal-parivar* (surrounded by many Shaal-like well endowed disciples) as well (2) Some *acharya* is highly endowed like a Shaal tree but *Erand-parivar* (surrounded by many Erand-like poorly endowed disciples) (3) Some *acharya* is poorly endowed like an Erand tree but *Shaal-parivar* (surrounded by many Shaal-like well endowed disciples) (4) Some *acharya* is poorly endowed like an Erand tree and *Erand-parivar* (surrounded by many Erand-like poorly endowed disciples) as well

COLLATIVE VERSE

(1) Like the appearance of a grand Shaal tree amongst many Shaal trees, an endowed *acharya* among well endowed disciples is a great *acharya* (2) Like the appearance of a grand Shaal tree amongst many Erand trees, an endowed *acharya* among *mangul* (lowly) disciples is a great *acharya* (3) Like the appearance of a king Erand tree amongst many Shaal trees, a *mangul* (poor) *acharya* among well endowed

disciples is a poor *acharya* (4) Like the appearance of a grand Erand tree amongst many Erand trees, a *mangul* (lowly) *acharya* among well endowed disciples is a poor *acharya*

भिक्षाक-पद **BHIKSHAAK-PAD (SEGMENT OF ALMS EATER)**

५४४. चत्तारि मच्छा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अंतचारी, मज्झचारी।

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अंतचारी, मज्झचारी।

५४४. मत्स्य चार प्रकार के होते है—(१) **अनुस्रोतचारी**—जल-प्रवाह के अनुकूल चलने वाला, (२) **प्रतिस्रोतचारी**—जल-प्रवाह के प्रतिकूल चलने वाला, (३) **अन्तचारी**—जल-प्रवाह के किनारे-किनारे चलने वाला, और (४) **मध्यचारी**—जल-प्रवाह के मध्य मे चलने वाला।

इसी प्रकार भिक्षुक भी चार प्रकार के होते है—(१) **अनुस्रोतचारी**—उपाश्रय से निकलकर सीधी गली मे स्थित घरो से सीधा जाते हुए भिक्षा लेने वाला, (२) **प्रतिस्रोतचारी**—वापस लौटते हुए गली के अन्त से लगाकर उपाश्रय तक स्थित घरो से भिक्षा लेने वाला, (३) **अन्तचारी**—नगर-ग्राम-मोहल्ला आदि के अन्त भाग मे स्थित घरो से भिक्षा लेने वाला, और (४) **मध्यचारी**—नगर-ग्रामादि के मध्य मे स्थित घरो से भिक्षा लेने वाला।

544. Matsya (fish) are of four kinds—**(1) anusrotachari**—one that moves with the flow of water, **(2) pratisrtochari**—one that moves against the flow of water, **(3) antachari**—one that moves at the brink and **(4) madhyachari**—one that moves in the middle

In the same way *bhikshaak* (alms-dependent ascetics) are of four kinds—**(1) anusrotachari**—one that moves on a straight lane from the *upashraya* (place of stay) and collects alms from houses on that lane, **(2) pratisrtochari**—one that moves on a straight lane from the *upashraya* (place of stay) and collects alms from houses on that lane but only from the end while returning, **(3) antachari**—one who collects alms from the houses located at the end of a city, village, or a section of a city and **(4) madhyachari**—one who collects alms from the houses located in the middle of a city, village, or a section of a city

विवेचन—अभिग्रहधारी मुनि चार प्रकार के अभिग्रहो मे से किसी एक प्रकार का अभिग्रह लेकर भिक्षा लेने के लिए निकलते है और अपने अभिग्रह के अनुसार ही भिक्षा ग्रहण करते है।

Elaboration—An ascetic observing *abhigraha* (special resolve) selects one of the aforesaid resolves and collects alms accordingly

गोल–पद GOL-PAD (SEGMENT OF BALL)

५४५. चत्तारि गोला पण्णत्ता, तं जहा—मधुसित्थगोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टियागोले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—मधुसित्थगोलसमाणे, जउगोलसमाणे, दारुगोलसमाणे, मट्टियागोलसमाणे।

५४५. गोले चार प्रकार के होते है–(१) मधुसिक्थगोला, (२) जतुगोला, (३) दारुगोला, और (४) मृत्तिकगोला। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) मधुसिक्थ (मोम) के बने गोले के समान मृदु व कोमल हृदय वाला, (२) लाख के गोले के समान किंचित् कठोर व कोमल दृढ हृदय वाला, जैसे अग्नि के ताप से जतुगोला शीघ्र पिघल जाता है, इसी प्रकार शीघ्र कोमल होने वाला, (३) जैसे लाख के गोले से लकडी का गोला अधिक कठिन होता है, उसी प्रकार कठिनतर व दृढतर हृदय वाला, तथा (४) जैसे मिट्टी का गोला (आग मे पकने पर) लकडी से भी अधिक कठिन होता है, उसी प्रकार कठिनतम व दृढतम हृदय वाला।

545. *Golas* (balls) are of four kinds—(1) *madhusiktha gola* (ball of wax), (2) *jatu gola* (ball of shellac), (3) *daru gola* (ball of wood) and (4) *mrittika gola* (ball of baked clay) In the same way men are also of four kinds—(1) having tender and gentle temperament like *madhusiktha gola* (ball of wax), (2) having tender but slightly hard (but easy to melt) temperament like *jatu gola* (ball of shellac), (3) having comparatively hard and tough temperament like *daru gola* (ball of wood) and (4) having even harder and tougher temperament like *mrittika gola* (ball of baked clay)

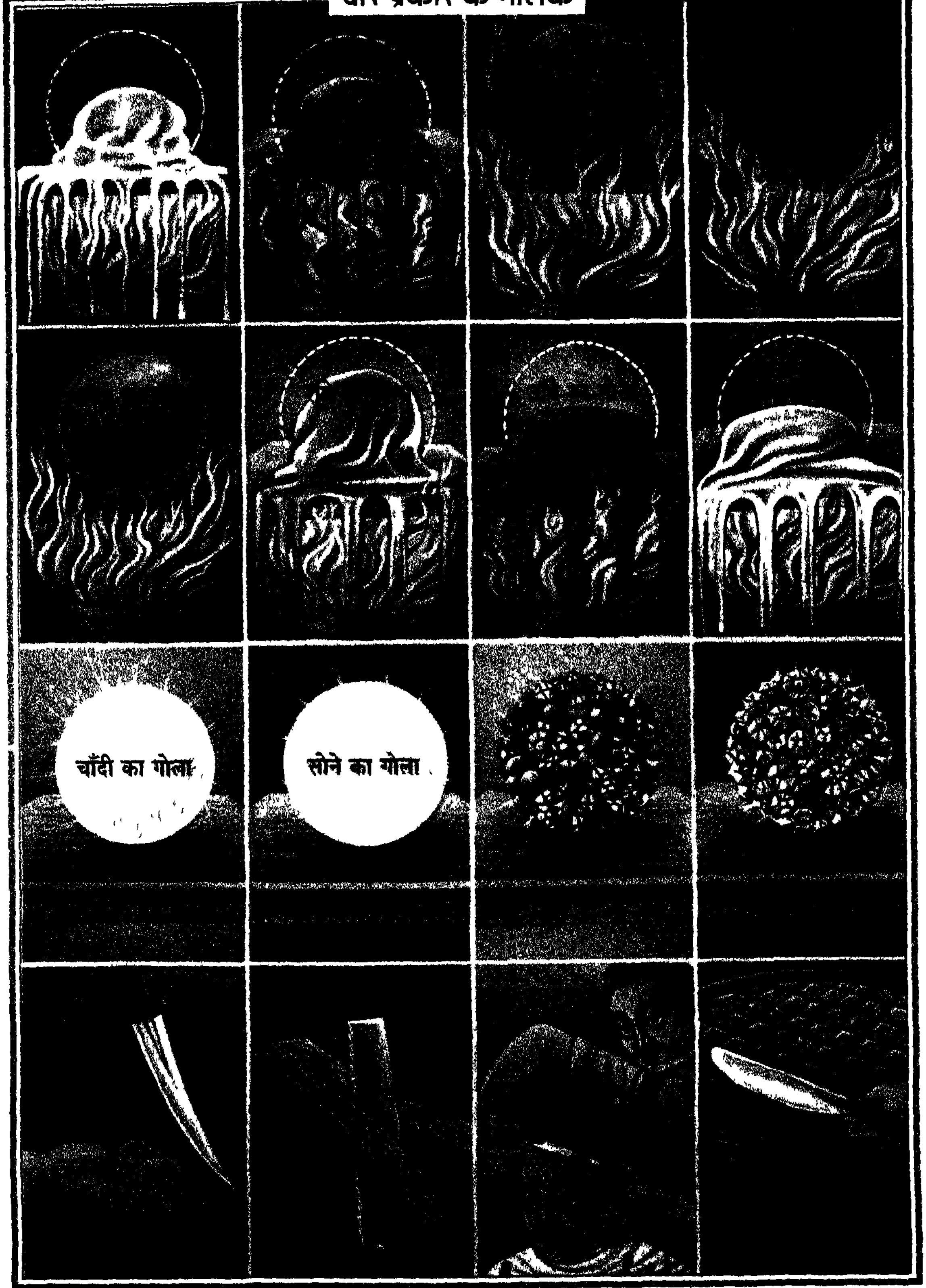
५४६. चत्तारि गोला पण्णत्ता, त जहा—अयगोले, तउगोले, तंबगोले, सीसगोले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अयगोलसमाणे, जाव (तउगोलसमाणे, तंबगोलसाणे), सीसगोलसमाणे।

५४६. गोले चार प्रकार के होते है–(१) अयोगोल (लोहे का गोला), (२) त्रपुगोल (रागे का गोला), (३) ताम्रगोल (ताबे का गोला), और (४) शीशगोल (सीसे का गोला)। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) लोहे के गोले के समान गुरु (भारी) कर्म वाला, (२) रागे के गोले के समान गुरुतर कर्म वाला, (३) ताबे के गोले के समान अधिक गुरुतर कर्म वाला, और (४) सीसे के गोले के समान गुरुतम कर्म वाला।

546. *Golas* (balls) are of four kinds—(1) *ayo gola* (ball of iron), (2) *trapu gola* (ball of tin), (3) *tamra gola* (ball of copper) and (4) *sheesh gola* (ball of lead) In the same way men are also of four kinds—(1) having heavy bondage of *karmas* like *ayo gola* (ball of iron), (2) having heavier bondage

चार प्रकार के गोलक



चित्र परिचय-२	Illustration No. 2

चार प्रकार के गोलक (गोला)

१ **मोम का गोला**—सबसे अधिक मुलायम होता है और ताप लगते ही पिघल जाता है।
लाख का गोला—मोम की अपेक्षा कुछ कठोर, ताप लगने पर धीरे-धीरे पिघलता है।
लकड़ी का गोला—दोनों की अपेक्षा अधिक कठोर, ताप सहने में कुछ अधिक सक्षम।
मिट्टी का गोला—आग में पकने पर कठोरतर हो जाता है।

२ **लोहे का गोला**—वजन में भारी किन्तु ताप सहने में अधिक सामर्थ्य रखता है।
रांगे का गोला—लोहे की अपेक्षा अधिक भारी किन्तु ताप सहने में कमजोर।
तांबे का गोला—वजन में उससे अधिक भारी किन्तु ताप सहने में पर्याप्त कमजोर।
शीशे का गोला—वजन में इन सबसे भारी किन्तु ताप सहने में सबसे कमजोर।
ताप लगने पर ये एक दूसरे से जल्दी-जल्दी पिघल जाते हैं।

३ **हिरण्य गोला**—चांदी का गोला भार व मूल्य में सामान्य।
सोने का गोला—भार व मूल्य में उससे अधिक श्रेष्ठ।
रत्न-गोला—भार व मूल्य में इन दोनों से अधिक श्रेष्ठ।
वज्र रत्न-गोला—भार में सर्वाधिक और मूल्य में भी सर्वाधिक श्रेष्ठ।

पत्र

४ **असिपत्र**—तलवार की अन्तिम धार पर सिरा अति तीक्ष्ण होता है।
करपत्र—करौत में तलवार की अपेक्षा छेदन शक्ति कम होती है।
क्षुरपत्र (छुरा)—छुरे की धार करौत से भी कम धार होती है।
कदम्बचीरिका (नोकीली नाक वाला घास का पत्ता)—इसकी धार चारों में भी अल्प होती है।

FOUR STRUCTURE OF BALL

1 (1) **Ball of wax**—softest of all and melts at once on heating
(2) **Ball of shellac**—harder than wax and melts slowly on heating
(3) **Ball of wood**—harder than the preceding two and with a higher melting point
(4) **Ball of fired clay**—becomes harder when fired

2 (1) **Ball of iron**—high density and with high melting point
(2) **Ball of tin**—higher density than iron but with lower melting point
(3) **Ball of copper**—still higher density but with much lower melting point
(4) **Ball of lead**—highest density among the four and with lowest melting point

3 (1) **Ball of silver**—ordinary in weight and price
(2) **Ball of gold**—comparatively heavy in weight and higher in price
(3) **Ball of gems**—still heavy in weight than the aforesaid two and still higher in price
(4) **Ball of diamond**—heaviest in weight and highest in price among the four

Sthaan 4 Sutra 515 to 517

PATRA

4 (1) **Asipatra**—edge of a sword is very sharp
(2) **Karapatra**—edge of a saw-blade is less sharp as compared to that of a sword
(3) **Kshurapatra**—edge of a razor is less sharp as compared to that of a saw blade
(4) **Kadamb-chirika patra**—grass like blunt edge is least sharp among the four

—Sthaan 4 Sutra 518

of *karmas* like *trapu gola* (ball of tin), (3) having still heavier bondage of *karmas* like *tamra gola* (ball of copper) and (4) having heaviest bondage of *karmas* like *sheesh gola* (ball of lead)

विवेचन—इस सूत्र मे गोले के दृष्टान्त से दो बाते सूचित की है। ये चारो गोले घनत्व की अपेक्षा क्रमश एक-दूसरे से अधिक भारी होते है, किन्तु ताप सहने की क्षमता की अपेक्षा एक-दूसरे से उत्तरोत्तर कमजोर होते है। अर्थात् लोहे के गोले से रागा, रागा से ताबा व ताबा से सीसा बहुत भारी होता है। उसी प्रकार साधको की चार स्थिति होती है। लोहे के गोले के समान सामान्य कर्म भार वाला और सीसे के गोले के समान सबसे अधिक सघन कर्मो वाला। जिसको जितना अधिक सघन कर्मबध होगा, वह आत्मा उतना ही अधिक शीघ्र उत्तेजित होने वाला, अधीर, असहनशील होगा। इस प्रकार गोलो की ताप सहने की क्षमता से तुलना करना चाहिए। *(हिन्दी टीका, पृ १०६६, टीका पत्र २५९)*

Elaboration—With the analogy of a ball this aphorism informs of two things The four types of balls are of increasingly higher density but have melting points in decreasing order This means that a tin ball is heavier than an iron ball, a copper ball is heavier than a tin ball, and a lead ball is heavier than a copper ball Aspirants are also of these four kinds, with least density of *karmas* like an iron ball to highest density of *karmas* like a lead ball Higher the density of *karmas*, easier the person gets excited, impatient and intolerant These attributes should be compared with the melting points of the said balls *(Hindi Tika p 1066, Tika leaf 259)*

५४७. चत्तारि गोला पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णगोले, सुवण्णगोले, रयणगोले, वयरगोले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णगोलसमाणे जाव (सुवण्णगोलसमाणे, रयणगोलसमाणे), वयरगोलसमाणे।

५४७. गोले चार प्रकार के होते है-(१) हिरण्य-(चाँदी) गोला, (२) सुवर्ण-गोला, (३) रत्न-गोला, और (४) वज्र-गोला। इसी प्रकार पुरुष भी चार के होते है- (१) हिरण्यगोल समान, (२) सुवर्णगोल समान, (३) रत्नगोल समान, और (४) वज्रगोल समान।

547. *Golas* (balls) are of four kinds—(1) *hiranya gola* (ball of silver), (2) *suvarna gola* (ball of gold), (3) *ratna gola* (ball of gems) and (4) *vajra gola* (ball of diamond) In the same way men are also of four kinds—(1) like *hiranya gola* (ball of silver), (2) like *suvarna gola* (ball of gold), (3) like *ratna gola* (ball of gems) and (4) like *vajra gola* (ball of diamond)

विवेचन—टीकाकार ने इस सूत्र की व्याख्या अनेक प्रकार से करने की सूचना की है। जैसे-चाँदी के गोले के बराबर आकार वाला सोने का गोला अधिक मूल्य और भार वाला, उससे भी रत्न और वज्र

(हीरा) का गोला उत्तरोत्तर अधिक मूल्य एव भार वाला होता है। वैसे ही चारो गोलो के समान पुरुष भी गुण, समृद्धि, हृदय की निर्मलता और पूज्यता सन्मान आदि की अपेक्षा उत्तरोत्तर श्रेष्ठ होते है। कहते है चाँदी का पात्र जल से धोने मात्र से शुद्ध हो जाता है। स्वर्णपात्र पर किसी खट्टे-मीठे पदार्थ का प्रभाव चाँदी से भी कम होता है। रत्नपात्र पर किसी भी दूषित पदार्थ का प्रभाव नही पडता। हीरा अपनी कठोरता व सुदृढता के लिए प्रसिद्ध है। एरण पर रखकर घन का प्रहार करने पर भी वह टूटता नही, लोहे मे गड जाता है, किन्तु दूध और दूब से छिल जाता है। अर्थात् अति कठोरता होते हुए भी कोमल स्पर्श मात्र से कट जाता है। श्रेष्ठ पुरुष मे इसी प्रकार उत्तरोत्तर गुणो की श्रेष्ठता होती है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ १०६७)*

Elaboration—The commentator (*Tika*) has informed of many interpretations of this aphorism For example—For the same size of a silver ball a gold ball is heavier and costlier A gem ball and a diamond ball are progressively higher in weight and cost In the same way men similar to these four balls are increasingly better in virtues, wealth, inner purity, respect, honour and other such qualities It is said that a silver bowl gets clean when washed with water The effect of sour and sweet things on gold is even less than silver A gem-bowl is not effected by any contaminated thing Diamond is known for its hardness and toughness When placed on an iron base and hammered it does not shatter but dents the iron But it can be ground by milk and grass indicating that although hard it can be cut by soft touch A noble person has qualities in a similar fashion in ascending order *(Hindi Tika, p 1067)*

पत्र–पद PATRA-PAD (SEGMENT OF SHARP EDGE)

५४८. चत्तारि पत्ता पण्णत्ता, तं जहा–असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलंबचीरियापत्ते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–असिपत्तसमाणे, जाव (करपत्तसमाणे, खुरपत्तसमाणे), कलंबचीरियापत्तसमाणे।

५४८. पत्र–(धार वाले फलक) चार प्रकार के होते है–(१) **असिपत्र**–(तलवार का धारदार पतला भाग), (२) **करपत्र**– (लकडी चीरने वाली करोत का पत्र), (३) **क्षुरपत्र**–(छुरा का धारदार भाग), और (४) कदम्बचीरिका पत्र।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है- (१) असिपत्र समान, (२) करपत्र समान, (३) क्षुरपत्र समान, और (४) कदम्बचीरिका-पत्र समान।

548. *Patra* (sharp edges) are of four kinds—(1) **asipatra** (edge of a sword), (2) **karapatra** (edge of a saw-blade), (3) **kshurapatra** (edge of a razor) and (4) **Kadamb-chirika patra** (grass-like blunt edge)

In the same way men are of four kinds—(1) like *asipatra*, (2) like *karapatra*, (3) like *kshurapatra* and (4) like *Kadamb-chirika patra*

विवेचन—(१) असिपत्र (तलवार) एक ही प्रहार से शत्रु का शिरोच्छेदन कर देता है, उसी प्रकार जो पुरुष एक ही बार मे कुटुम्बादि से स्नेह का छेदन कर देता है, वह असिपत्र समान है। जसे जम्बूकुमार व धन्नाजी जैसे।

(२) करपत्र (करोत) बार-बार इधर से उधर आ-जाकर काठ का छेदन करता है, उसी प्रकार बार-बार की भावना से धीरे-धीरे जो क्रमश स्नेह का छेदन करता है, वह करपत्र के समान है। शालिभद्र की तरह।

(३) क्षुरपत्र (छुरा) सिर के बाल धीरे-धीरे अल्प-अल्प मात्रा मे काट पाता है, उसी प्रकार जो कुटुम्ब का स्नेह धीरे-धीरे छेदन कर पाता है, वह क्षुरपत्र के समान है। आर्द्रककुमार की तरह।

(४) कदम्बचीरिका का अर्थ है कुठित धार वाला शस्त्र या तीखी नोक वाला एक प्रकार का घास। उसकी धार के समान जो पुरुष होता है, वह बहुत धीमी गति से और कठिनाई से कुटुम्ब का स्नेह-छेदन करता है, वह पुरुष कदम्बचीरिका-पत्र समान है। जैसे-अविरति सम्यग्दृष्टि।

Elaboration—(1) A sword beheads an enemy in one stroke In the same way a person who can shear his family ties at once is said to be like *asipatra* For example Jambu Kumar and Dhanna

(2) A saw cuts wood after continued to and fro movement In the same way a person who shears his family ties slowly and gradually after repeated resolves is said to be like *karapatra* For example *Shalibhadra*

(3) A razor removes hair from head slowly and in bits In the same way a person who shears his family ties slowly and in bits is said to be like *kshurapatra* For example Ardra Kumar

(4) A blade with blunt edge cuts things slowly and with difficulty In the same way a person who shears his family ties slowly and with difficulty is said to be like *Kadamb-chirika patra* For example *Avirat Samyagdrishti* (a righteous person with attachments)

कट-पद CUT-PAD (SEGMENT OF MATTRESS)

५४९. चत्तारि कडा पण्णत्ता, तं जहा—सुंबकडे, विदलकडे, चम्मकडे, कंबलकडे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुंबकडसमाणे, जाव (विदलकडसमाणे, चम्मकडसमाणे), कंबलकडसाणे।

५४९. कट (चटाई) चार प्रकार का होता है-(१) शुम्बकट-खजूर से बनी चटाई या घास से बना आसन, (२) विदलकट-बास की पतली खपच्चियो से बनी चटाई, (३) चर्मकट-चमडे की पतली धारियो

से बनी चटाई या आसन, और (४) **कम्बलकट**—ऊन, सूत, रेशम या सन आदि के रेशो से बना बैठने या बिछाने का वस्त्र।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) शुम्बकट समान, (२) विदलकट समान, (३) चर्मकट समान, और (४) कम्बलकट समान।

549. *Cut* (mattresses) are of four kinds—**(1) shumb-cut** (pine mattress)—mattress woven from pine-wood strip or grass, **(2) vidal-cut** (bamboo mattress)—mattress made of thin bamboo sticks or cane, **(3) charma-cut** (leather mattress)—mattress made of leather strips **(4) kambal-cut** (mattress made of yarn)—mattress made up of any type of yarn including wool, cotton, silk, hessian etc

In the same way men are of four kinds—(1) like *shumb-cut*, (2) like *vidal-cut*, (3) like *charma-cut* and (4) like *Kambal-cut*

विवेचन—शुम्बकट (खजूर या घास-निर्मित बैटने का आसन) अत्यल्प मूल्य वाला होता है, अत उसमे रागभाव कम होता है। उसी प्रकार जिसका धन व पुत्रादि मे राग या मोह अत्यल्प होता है, वह पुरुष शुम्बकट के समान है। शुम्बकट की अपेक्षा विदलकट अधिक मूल्य वाला होता है, अत उसमे रागभाव अधिक होता है। विदलकट से चर्मकट और भी अधिक मूल्यवान होने से उसमे रागभाव भी और अधिक होता है। चर्मकट से कम्बलकट अधिक मूल्यवान होता है, अत उसमे रागभाव भी अधिक होता है। इसी प्रकार पुत्रादि मे अधिक, गाढ और गाढतम रागभाव वाले पुरुष को क्रमश विदलकट, चर्मकट व कम्बलकट के समान कहा गया है। आवश्यक निर्युक्ति टीका, पृ ३८७ मे प्रसग है-गौतम स्वामी जब मोक्ष प्राप्ति के लिए अधीर हो गये तब भगवान ने कहा-गौतम ! तुम्हारा राग मेरे प्रति कम्बलकट जैसा अनेक जन्म-जन्मान्तरो से चलता आया प्रगाढ राग है।

Elaboration—There is minimum attachment for a pine mattress because it is very cheap Therefore a person having least attachment for wealth or family is said to be like *shumb-cut* As compared to a pine mattress a bamboo mattress is costly, thus it inspires more attachment A leather mattress is costlier than a bamboo mattress, thus it inspires even more attachment A yarn mattress is even more costly than a leather mattress, thus it inspires still greater attachment Therefore this metaphor has been used to classify individuals according to the degree of attachment they have. In *Avashyak Churni Tika* we find a mention on p 387—'When Gautam Swami became worried and impatient to attain liberation, Bhagavan Mahavir said—Gautam ! your attachment for me comes from many past births and is very intense like *kambal-cut*'

तिर्यक्–पद **TIRYAK-PAD (SEGMENT OF ANIMALS)**

५५०. चउव्विहा चउप्पया पण्णत्ता, तं जहा–एगखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सणप्फया।

५५०. चतुष्पद (चार पैर वाले) तिर्यंच जीव चार प्रकार के होते है–(१) **एक खुर वाले**–घोडे, गधे आदि, (२) **दो खुर वाले**–गाय, भैस, भेड, बकरी आदि, (३) **गण्डीपद**–सुनार की एरण की तरह कठोर चर्ममय गोल पैर वाले हाथी, ऊँट, गैडा आदि, और (४) **स–नख–पद**–लम्बे तीक्ष्ण नाखून वाले शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली आदि।

550. *Chatushpad tıryanch* (quadruped anımals) are of four kınds—**(1) egakhura** (wıth sıngle hoof)—horse, donkey etc , **(2) dokhura** (wıth two hooves)—cow, buffalo, lamb, goat etc , **(3) gandipad** (wıth large round anvıl shaped feet wıth hard skın)—elephant, camel, rhınocerous etc and **(4) sanapphaya** (wıth long sharp claws)—lıon, leopard, dog, cat etc

५५१. चउव्विहा पक्खी पण्णत्ता, तं जहा–चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विततपक्खी।

५५१. पक्षी चार प्रकार के होते है–(१) **चर्मपक्षी**–चमडे के पाखो वाले चमगादड आदि, (२) **रोमपक्षी**–रोममय पाखो वाले हस, तोते, कौए आदि, (३) **समुद्‌गपक्षी**–जिसके पख पेटी के समान खुलते और बन्द होते है, और (४) **विततपक्षी**–जिसके पख सर्वदा फैले रहते है।

551. *Pakshı* (bırds) are of four kınds—**(1) charmapakshi**—havıng wıngs of skın, lıke a bat, **(2) romepakshı**—havıng fibrous or feathery wıngs lıke swan, parrot and crow, **(3) samudgpakshi**—havıng wıngs that open close lıke a box, and **(4) vitatpakshı**—havıng wıngs that remaın spread always

विवेचन–चर्म पक्षी और रोम पक्षी तो मनुष्य क्षेत्र मे पाये जाते है, किन्तु समुद्‌गपक्षी और विततपक्षी मनुष्य क्षेत्र से बाहरी द्वीपो और समुद्रो मे पाये जाते है। *(सस्कृत टीका पत्र २५९)*

Elaboratıon—*Charmapakshı* and *romepakshı* are avaılable ın the area ınhabıted by humans and *samudgpakshı* and *vıtatpakshı* are avaılable ın ıslands and seas beyond the area ınhabıted by humans *(Sanskrıt Tıka, leaf 259)*

५५२. चउव्विहा खुड्डपाणा पण्णत्ता, तं जहा–बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, संमुच्छिम–पंचिंदिय–तिरिक्खजोणिया।

५५२. क्षुद्र प्राणी (छोटे प्राणी अथवा जिनकी अगले भव मे मुक्ति सम्भव नही हो) चार प्रकार के होते है–(१) द्वीन्द्रिय जीव, (२) त्रीन्द्रिय जीव, (३) चतुरिन्द्रिय जीव, और (४) सम्मूर्च्छिम पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव।

552. *Kshudra prani* (lower animals) (or beings that cannot attain liberation in the next birth) are of four kinds—(1) *dvindriya jiva* (two sensed beings), (2) *trindriya jiva* (three sensed beings), (3) *chaturindriya jiva* (four sensed beings) and (4) *sammurchhim panchendriya tiryagyonik jiva* (five-sensed animals of asexual origin)

भिक्षुक-पद BHIKSHUK-PAD (SEGMENT OF ALMS-SEEKER)

५५३. चत्तारि पक्खी पण्णत्ता, तं जहा—णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाममेगे णो णिवतित्ता, एगे णिवतित्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवतित्ता णो परिवइत्ता।

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—णिवतित्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाममेगे णो णिवतित्ता, एगे णिवतित्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवतित्ता णो परिवइत्ता।

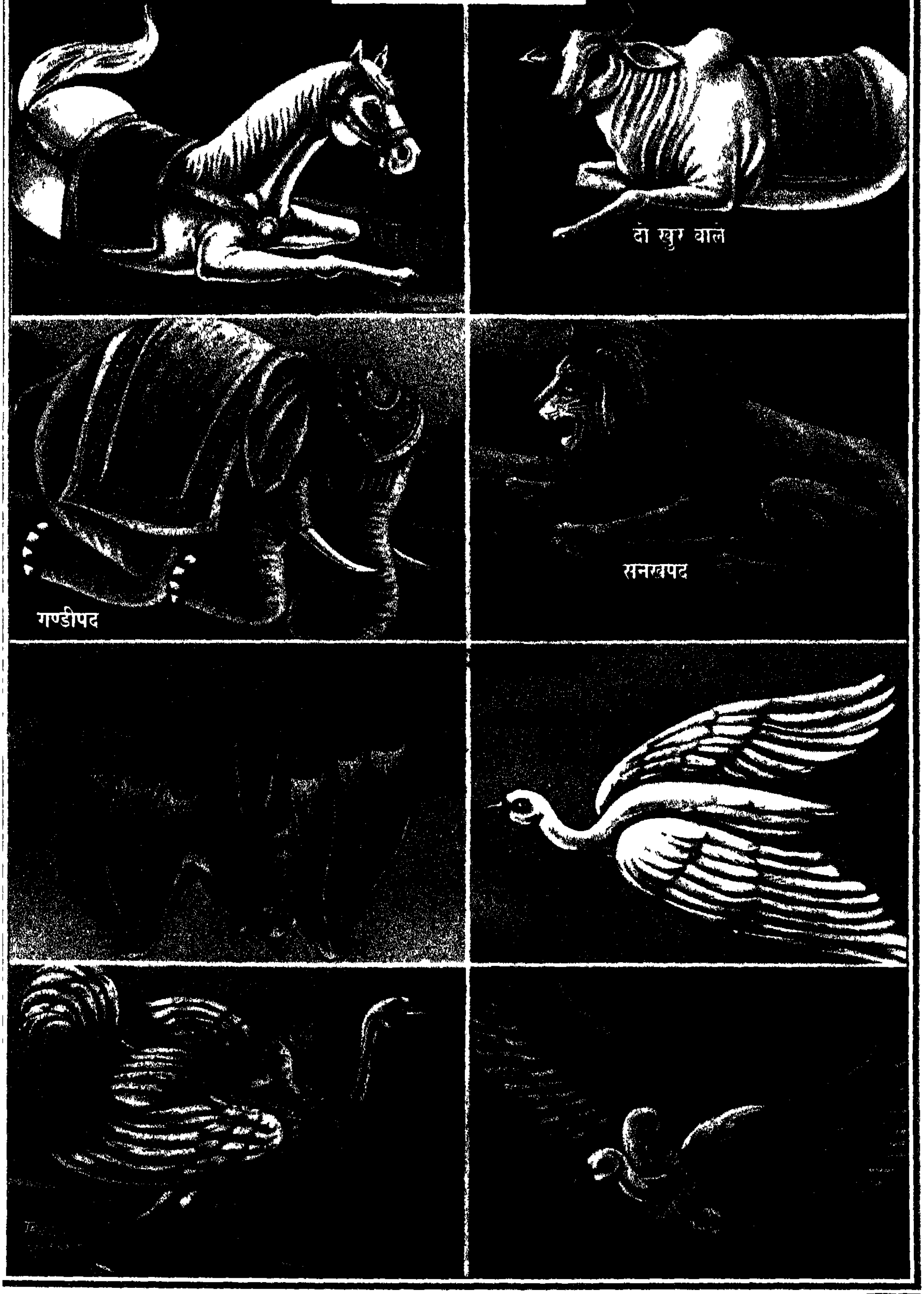
५५३. पक्षी चार प्रकार के होते है–(१) **निपतिता, न परिव्रजिता**–कोई पक्षी अपने घोसले से नीचे उतर सकता है, किन्तु (अक्षम होने से) इधर-उधर उड नही सकता, (२) **परिव्रजिता, न निपतिता**–कोई पक्षी अपने घोसले से उड सकता है, किन्तु (भीरु होने से) नीचे नही उतर सकता, (३) **निपतिता, परिव्रजिता**–कोई समर्थ पक्षी अपने घोसले से नीचे भी उतर सकता है और ऊपर भी उड सकता है, तथा (४) **न निपतिता, न परिव्रजिता**–कोई पक्षी (अतीव बाल्यावस्था होने के कारण) अपने घोसले से न नीचे ही उतर सकता है और न ऊपर ही उड सकता है।

इसी प्रकार भिक्षुक भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई भिक्षु भिक्षा के लिए निकलता है, किन्तु रुग्णता आदि कारणो से अधिक घूम नही सकता, (२) कोई भिक्षु भिक्षा के लिए घूम सकता है, किन्तु स्वाध्याय ध्यानादि मे सलग्न रहने के कारण भिक्षा के लिए निकल नही सकता, (३) कोई समर्थ भिक्षु भिक्षा के लिए निकलता भी है और घूमता भी है, (४) कोई भिक्षु नवदीक्षित या अल्पवयस्क होने के कारण भिक्षा के लिए न निकलता है और न घूमता ही है।

553. *Pakshi* (birds) are of four kinds—**(1) Nipatita, na parivrajita**—some bird can come out of its nest but cannot fly around (due to weakness) **(2) Parivrajita, na nipatita**—some bird can fly but does not come out of its nest (out of fear) **(3) Nipatita, parivrajita**—some bird can come out of its nest and fly around as well **(4) Na nipatita, na parivrajita**—some bird can neither come out of its nest nor fly around (due to immature age)

In the same way *bhikshu* (alms seekers or ascetics) are of four kinds—(1) *Nipatita, na parivrajita*—some ascetic can go out for alms-seeking but cannot move around much due to sickness (2) *Parivrajita, na nipatita*—some ascetic can move around to seek alms but being busy in studies and meditation does not go out (3) *Nipatita, parivrajita*—

चार प्रकार के चौपाये



चित्र परिचय-३

Illustration No. 3

चौपायो के पाँवो की चतुर्विध रचना

(१) **एक खुर वाले पशु**, जैसे घोडा आदि। इनके पॉव का तलभाग एक खुरा होता है।

(२) **दो खुर वाले पशु** गाय आदि। इनके पांव का तलभाग बीच मे से छिदा हुआ होता है।

(३) **गण्डीपद**–जिनका पजा कठोर चर्ममय होता है, जैसे हाथी का पजा।

(४) **स–नख पद**–लम्बे तीखे नाखूनो वाला पजा जैसे शेर आदि का।

स्थान ४ सूत्र ५५०

चार प्रकार के पक्षी

(१) **चर्म पक्षी**–चमडे के पखो वाले, जैसे चमगादड आदि।

(२) **रोम पक्षी**–राम मय पखो वाले जैसे हस आदि।

(३) **समुद्ग पक्षी**–पेटी की तरह जिसके पख खुलते बन्द होते है जैसे शुतुरमुर्ग।

(४) **वितत पक्षी**–जिसके पख सदा फैले रहते हो जैसे भारड पक्षी।

स्थान ४ सूत्र ५५१

FOUR STRUCTURES OF ANIMAL FEET

(1) Animals with single hoof—horse, donkey etc

(2) Animals with two hooves or split hoof—cow, buffalo, lamb, goat etc

(3) Animals with large round anvil shaped feet with hard skin—elephant, camel, rhinocerous etc

(4) Animals with long sharp claws—lion, leopard, dog, cat etc

Sthaan 4 Sutra 550

FOUR KINDS OF FEATHERS OF BIRDS

(1) Charmapakshi—having wings of skin like a bat

(2) Romepakshi—having fibrous or feathery wings like a swan

(3) Samudgpakshi—having wings that open close like a box like an ostrich

(4) Vitatpakshi—having wings that remain spread always like a Bharand bird

—Sthaan 4 Sutra 551

some ascetic can go out to seek alms and move around as well. (4) *Na nipatita, na parivrajita*—some ascetic can neither go out to seek alms nor move around (due to immature age or being neo-initiate)

कृश–अकृश–पद KRISH-AKRISH-PAD (SEGMENT OF WEAK AND NOT WEAK)

५५४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–णिक्कट्टे णाममेगे णिक्कट्टे, णिक्कट्टे णाममेगे अणिक्कट्टे, अणिक्कट्टे णाममेगे णिक्कट्टे, अणिक्कट्टे णाममेगे अणिक्कट्टे।

५५४. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) **निष्कृष्ट और निष्कृष्ट**–कोई पुरुष शरीर से कृश (क्षीण) होता है और कषाय से भी कृश होता है, (२) **निष्कृष्ट और अनिष्कृष्ट**–कोई शरीर से कृश होता है, किन्तु कषाय से कृश नही होता, (३) कोई शरीर से कृश नही होता, किन्तु कषाय से कृश होता है, तथा (४) कोई न शरीर से कृश होता है और न कषाय से ही कृश होता है।

554. *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Nishkrishta* (weak) and *nishkrishta* (weak)—some man is weak in body and mild in passions as well (2) *Nishkrishta* (weak) and *anishkrishta* (not weak)—some man is weak in body and not mild in passions (3) *Anishkrishta* (not weak) and *nishkrishta* (weak)—some man is not weak in body but mild in passions (4) *Anishkrishta* (weak) and *anishkrishta* (weak)—some man is neither weak in body nor mild in passions

५५५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–णिक्कट्टे णाममेगे णिक्कट्टप्पा, णिक्कट्टे णाममेगे अणिक्कट्टप्पा, अणिक्कट्टे णाममेगे णिक्कट्टप्पा, अणिक्कट्टे णाममेगे अणिक्कट्टप्पा।

५५५. पुरुष चार प्रकार के होते है- (१) **निष्कृष्ट और निष्कृष्टात्मा**–कोई पुरुष शरीर से कृश होता है और कषायो की मन्दता के कारण निर्मल आत्मा होता है, (२) कोई शरीर से तो कृश होता है, किन्तु कषायो की प्रबलता से मलिन–आत्मा होता है, (३) कोई शरीर से अकृश (स्थूल) होता है, किन्तु कषायो के अभाव से निर्मल–आत्मा होता है, तथा (४) कोई शरीर से अकृश (स्थूल) और आत्मा से भी अकृश (अनिर्मल) होता है।

555. *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Nishkrishta* (weak) and *nishkrishtatma* (weak)—some man is weak in body and spiritually pure due to mild passions (2) *Nishkrishta* (weak) and *anishkrishtatma* (not weak)—some man is weak in body and spiritually impure due to strong passions (3) *Anishkrishta* (not weak) and *nishkrishtatma* (weak)—some man is not weak in body and spiritually pure due to mild passions (4) *Anishkrishta* (not weak) and *anishkrishtatma* (not weak)—some man is not weak in body and spiritually impure due to strong passions

बुध–अबुध–पद BUDHA-ABUDHA-PAD
(SEGMENT OF PRUDENT AND IMPRUDENT)

५५६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–बुधे णाममेगे बुधे, बुधे णाममेगे अबुधे, अबुधे णाममेगे बुधे, अबुधे णाममेगे अबुधे।

५५६. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष ज्ञान से बुध (विवेकी) होता है और आचरण व व्यवहार कुशलता से भी बुध (विवेकी) होता है(२) कोई ज्ञान से तो बुध होता है, किन्तु आचरण से अबुध (अविवेकी) होता है, (३) कोई ज्ञान से तो अबुध (अल्पज्ञ) होता है, किन्तु आचरण से बुध (कुशल), और (४) कोई ज्ञान से भी अबुध होता है और आचरण से भी अबुध।

556. *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Budha* (prudent) and *budha* (prudent)—some man is prudent in knowledge and prudent in conduct as well (2) *Budha* (prudent) and *abudha* (imprudent)—some man is prudent in knowledge and imprudent in conduct (3) *Abudha* (imprudent) and *budha* (prudent)—some man is imprudent in knowledge and prudent in conduct (4) *Abudha* (imprudent) and abudha (imprudent)—some man is imprudent in knowledge and imprudent in conduct

५५७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–बुधे णाममेगे बुधहियए, बुधे णाममेगे अबुधहियए, अबुधे णाममेगे बुधहियए, अबुधे णाममेगे अबुधहियए।

५५७. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) बुध और बुधहृदय–कोई पुरुष आचरण से बुध (विद्वान व सत्-क्रिया वाला) होता है और हृदय से भी बुध (विवेकशील) होता है, (२) कोई आचरण से बुध होता है, किन्तु हृदय से अबुध (अविवेकी) होता है, (३) कोई आचरण से अबुध होता है, किन्तु हृदय स बुध होता है, और (४) कोई आचरण से भी अबुध और हृदय से भी अबुध होता है।

557. *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Budha* (prudent) and *budhahridaya* (prudent in sentiment)—some man is prudent in conduct (learned and immaculate in conduct) and prudent in sentiment as well (2) *Budha* (prudent) and *abudhahridaya* (imprudent in sentiment)—some man is prudent in conduct and imprudent in sentiment (3) *Abudha* (imprudent) and *budhahridaya* (prudent in sentiment)—some man is imprudent in conduct and prudent in sentiment (4) *Abudha* (imprudent) and *abudhahridaya* (imprudent in sentiment)—some man is imprudent in body and imprudent in sentiment as well

अनुकम्पक–पद ANUKAMPAK-PAD

५५८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–आयाणुकंपए णाममेगे णो पराणुकंपए, पराणुकंपए णाममेगे णो आयाणुकंपए, एगे आयाणुकंपएवि पराणुकंपएवि, एगे णो आयाणुकंपए णो पराणुकंपए।

५५८. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) **आत्मानुकम्पक, न परानुकम्पक**-कोई पुरुष अपनी आत्मा पर अनुकम्पा (दया) करता है, किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा नही करता (जैसे, जिनकल्पी, प्रत्येकबुद्ध या निर्दय स्वार्थी पुरुष), (२) परानुकम्पक, न आत्मानुकम्पक-कोई दूसरे पर तो अनुकम्पा करता है, किन्तु अपने ऊपर अनुकम्पा नही करता। (मेतार्य मुनि के समान अथवा तीर्थंकर, जो स्वय कृतकार्य होते है,) (३) कोई आत्मानुकम्पक भी होता है और परानुकम्पक भी (स्थविरकल्पी साधु के समान), तथा (४) कोई न आत्मानुकम्पक होता है और न परानुकम्पक (कालशौकरिक के समान)।

558. *Manushya* (men) are of four kinds—**(1) Atmanukampak, na paranukampak**—some man has compassion for himself but does not have compassion for others (like a *Jinakalpi*, a *Pratyek-buddha* or a cruel selfish person) **(2) Paranukampak, na atmanukampak**—some man has compassion for others but does not have compassion for him self (like Ascetic Metarya or a *Tirthankar* who has attained the blissful state) **(3) Atmanukampak, paranukampak**—some man has compassion for himself as well as for others (like a *Sthavir-kalpi* ascetic) **(4) Na atmanukampak, na paranukampak**—some man has compassion neither for himself nor for others (like Kaal Shaurik)

सवास-पद **SAMVAS-PAD (SEGMENT OF SEXUAL GRATIFICATION)**

५५९. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा-दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे।

५६०. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा-देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, देवे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति।

५६१. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा-देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, देवे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति।

५६२. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा-देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, देवे णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति।

५५९. सवास (स्त्री-पुरुष का सहवास) चार प्रकार का कहा है-(१) दिव्य-सवास, (२) आसुर-सवास, (३) राक्षस-सवास, और (४) मानुष-सवास।

५६०. सवास चार प्रकार का होता है-(१) कोई देव देवियो के साथ सवास करता है, (२) कोई देव असुरियों के साथ, (३) कोई असुर देवियो के साथ, और (४) कोई असुर असुरियो के साथ सवास करता है।

५६१. सवास चार प्रकार का होता है--(१) कुछ देव देवियो के साथ, (२) कुछ देव राक्षसियो के साथ, (३) कुछ राक्षस देवियो के साथ, और (४) कुछ राक्षस राक्षसियो के साथ सवास करते है।

५६२. सवास चार प्रकार का होता है-(१) कुछ देव देवियो के साथ, (२) कुछ देव मानुषी के साथ, (३) कुछ मनुष्य देवी के साथ, और (४) कुछ मनुष्य मानुषी स्त्री के साथ सवास करता है।

559. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) *divya-samvas* (divine copulation), (2) *aasur-samvas* (aasur copulation), (3) *rakshas-samvas* (rakshas copulation) and (4) *maanush-samvas* (human copulation)

560. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some *deva* (god) copulates with *devis* (goddesses) (2) Some god copulates with *asuris* (*asur* females or a kind of lower goddesses) (3) Some *asur* (a kind of lower god) copulates with goddesses (4) Some *asur* copulates with *asuris*

561. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some *deva* (god) copulates with *devis* (goddesses) (2) Some god copulates with *rakshasis* (*rakshas* females or a kind of lower goddesses) (3) Some *rakshas* copulates with goddesses (4) Some *rakshas* copulates with *rakshasis*

562. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some *deva* (god) copulates with *devis* (goddesses) (2) Some god copulates with a *manushis* (women) (3) Some *manushya* (man) copulates with goddesses (4) Some *manushya* copulates with *manushis*

५६३. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं सवासं गच्छति, असुरे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवास गच्छति, रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति।

५६४. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा—असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, असुरे णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति।

५६३. सवास चार प्रकार का कहा है-(१) कुछ असुर असुरियो के साथ, (२) कुछ असुर राक्षसियो के साथ, (३) कुछ राक्षस असुरियो के साथ, और (४) कुछ राक्षस राक्षसियो के साथ सवास करते है।

५६४. सवास चार प्रकार का कहा है-(१) कुछ असुर असुरियो के साथ, (२) कुछ असुर मानुषी स्त्रियो के साथ, (३) कुछ मनुष्य असुरियो के साथ, और (४) कुछ मनुष्य मानुषी स्त्रियो के साथ सवास करते है।

563. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some *asur* copulates with *asuris* (2) Some *asur* copulates with *rakshasis* (3) Some *rakshas* copulates with *asuris* (4) Some *rakshas* copulates with *rakshasis*

564. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some *asur* (asur) copulates with *asuris* (2) Some *asur* copulates with *manushis* (3) Some *manushya* (man) copulates with *asuris* (4) Some *manushya* copulates with *manushis*

५६५. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा–रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, रक्खसे णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति, मणुस्से णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति।

५६५. सवास चार प्रकार का कहा है–(१) कुछ राक्षस राक्षसियो के साथ, (२) कुछ राक्षस मानुषी स्त्रियो के साथ, (३) कुछ मनुष्य राक्षसियो के साथ, और (४) कुछ मनुष्य मानुषी स्त्रियो के साथ सवास करते है।

565. *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some *rakshas* copulates with *rakshasis* (2) Some rakshas copulates with *manushis* (3) Some *manushya* (man) copulates with *rakshasis* (4) Some *manushya* copulates with *manushis*

विवेचन–वैमानिक व ज्योतिष देवो के सवास को दिव्यसवास। असुरकुमार भवनवासी देवो के सवास को आसुरसवास। राक्षस व्यन्तर देवो के सवास को राक्षससवास और मनुष्यो के सवास को मानुषसवास कहते है।

उपरोक्त सूत्रो मे देव, असुर, राक्षस और मनुष्य शब्द का भाव प्रतीकात्मक भी लिया जा सकता है।

देव–भौतिक दृष्टि से सम्पन्न तथा प्रेम उदारता स्नेह, मृदुता, मर्यादा पालन और क्षमाशीलता आदि गुणो का प्रतीक है। असुर–उग्र स्वभाव, मनमौजीपन, अहकार, राजसी स्वभाव, कठोरता आदि का। राक्षस–क्रूरता, निर्दयता, निकृष्टता, भक्ष्याभक्ष्य अविवेक आदि स्वभाव का प्रतीक है। मनुष्य मे उक्त तीनो के गुण व स्वभाव का मिश्रण रहता है। देव–देवी के सवास का भाव है, श्रेष्ठ पुरुष और श्रेष्ठ स्त्री। इसी प्रकार अन्य के स्वभाव के अनुसार प्रतीकार्थ लिया जा सकता है। *(हिन्दी टीका, पृ १०८३)*

Elaboration—The sexual gratification of Vaimanik and Jyotishk gods is called *divya-samvas* (divine copulation), that of Asur Kumar abode dwelling gods is called *aasur-samvas* (*aasur* copulation), that of *rakshas* interstitial gods is called *rakshas-samvas* (*rakshas* copulation) and that of human beings is called *maanush-samvas* (human copulation)

The terms *deva, asur, rakshas* and *manushya* used in this aphorism may also be interpreted symbolically—

Deva represents virtues like physical health and wealth, love, generosity, sweet nature, discipline, and forgiveness etc *Asur* represents attributes like anger, wantonness, conceit, extravagance, callousness etc *Rakshas* represents attributes like cruelty, absence of compassion, meanness, unrestricted eating habits etc *Manushya* represents mixture of all these attributes in different proportions Combination of god and goddess indicates copulation of a virtuous man with a virtuous woman Other classifications can be interpreted in the same way

अपध्वंस-पद APADHVANS-PAD (SEGMENT OF DECLINE)

५६६. चउव्विहे अवद्धंसे पण्णत्ते, तं जहा—आसुरे, आभिओगे, संमोहे, देवकिब्बिसे।

५६६. अपध्वस (पतन या चारित्र का विनाश) चार प्रकार का होता है। जैसे--(१) असुर-अपध्वस, (२) आभियोग-अपध्वस, (३) सम्मोह-अपध्वस, और (४) देवकिल्विष-अपध्वस)।

566. *Apadhvans* (decline) is of four kinds—(1) *Asur-apadhvans*, (2) *Abhiyoga-apadhvans*, (3) *Sammoha-apadhvans* and (4) *Devkilvish-apadhvans*

विवेचन– शुद्ध भावपूर्वक की गई तपस्या का फल निर्वाण की प्राप्ति तथा शुभ भावपूर्वक की गई तपस्या का फल स्वर्ग की प्राप्ति है। किन्तु जिस तपस्या मे किसी प्रकार की आकाक्षा या फल-प्राप्ति की वाच्छा जुडी रहती है, उस तप साधना के फल से प्राणी देवयोनि मे तो उत्पन्न होता है, किन्तु मन मे आकाक्षा रहने के कारण नीच जाति के भवनवासी आदि देवो मे उत्पन्न होता है। जिन अनुष्ठानो, आचरणो को करने से साधक असुरत्व का उपार्जन करता है, वह **आसुरी भावना** है। जिन अनुष्ठानो व आचरणो से साधक आभियोग जाति--(देवताओ मे सेवक तुल्य) के देवो मे उत्पन्न होता है, वह **आभियोगी-भावना** है, जिन अनुष्ठानो से साधक सम्मोहक देवो मे उत्पन्न होता है, वह **सम्मोही भावना** है और जिन अनुष्ठानो से साधक किल्विष देवो (चण्डालपना) मे उत्पन्न होता है वह **देवकिल्विषी भावना** है। वस्तुत ये चारो ही भावनाएँ चारित्र के अपध्वस (विनाशरूप) है, अत अपध्वस के चार प्रकार बताये है। चारित्र का पालन करते हुए भी व्यक्ति जिस प्रकार की हीन भावना मे निरत रहता है, वह उस प्रकार के हीन देवो मे उत्पन्न हो जाता है। आगे के सूत्रो मे चारो प्रकार की भावना पर प्रकाश डाला है।

Elaboration—Austerities observed with spiritual purity lead to liberation and those done with pious feelings lead to birth in higher divine realms But austerities connected with some aspirations or desire of attainments, although lead to birth in divine realm but of lower levels like abode dwelling gods The rituals and conduct that lead to *Asur* realm are included in *asuri bhaavana* attitude The rituals and conduct that lead to birth as *Abhiyogik* gods (servant gods) are included in *abhiyogi bhaavana* The rituals and conduct that lead to birth as

Sammohak gods (another kind of lower gods) are included in *sammohi bhaavana* The rituals and conduct that lead to birth as *Kilvish* gods (clown gods) are included in *Devkilvishi bhaavana* In fact all these four bhaavanas (sentiments) cause moral decline and therefore they are included here as four kinds of decline Even while observing ascetic conduct an aspirant gets destined to birth as a lower god depending on the sentiment he is involved in The following aphorisms throw more light on these four kinds of sentiments

आसुरी भावना AASURI BHAAVANA

५६७. चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताए कम्मं पगरेति, तं जहा—कोवसीलताए, पाहुडसीलताए, संसत्ततवोकम्मेणं णिमित्ताजीवयाए।

५६७. चार स्थानो से जीव असुरो मे जन्म लेने योग्य कर्म का उपार्जन करते है - (१) **कोपशीलता** से—चारित्र का पालन करते हुए क्रोधयुक्त प्रवृत्ति से, (२) **प्राभृतशीलता से**—कलह-स्वभावी होने से, (३) **संसक्त तप.कर्म से**—आहार, पात्रादि की प्राप्ति के लिए तपश्चरण करने से, और (४) **निमित्ताजीविता** से—हानि-लाभ आदि से सम्बन्धित निमित्त बताकर आहारादि प्राप्त करने से।

567. Four *sthaans* (activities) enable beings to acquire *karmas* leading to birth as *Asurs*—**(1) Kopeshilata**—by indulging in anger inspired activity while observing ascetic conduct **(2) Prabhritashilata**—by having quarrelsome nature **(3) Samsakt tapahkarma**—by observing austerities to acquire food, bowls and other things **(4) Nimittajivita**—by acquiring food and other things on the pretext of banes and boons of alms-giving

आभियोगी भावना AABHIYOGI BHAAVANA

५६८. चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—अत्तुक्कोसेणं, परपरिवाएणं, भूतिकम्मेणं, कोउयकरणेणं।

५६८. चार स्थानो से जीव आभियोगत्व कर्म का उपार्जन करते है-(१) **आत्मोत्कर्ष से**—अपने गुणो का अभिमान तथा आत्मप्रशसा करने से, (२) **पर-परिवाद से**—दूसरो की निन्दा करने और दोष कहने से, (३) **भूतिकर्म से**—ज्वर, भूतावेश आदि को दूर करने के लिए भस्म, लेप, ताबीज आदि देने से, और (४) **कौतुक करने से**—मन्त्रित जलादि से स्नान व होम आदि करने से।

568. Four *sthaans* (activities) enable beings to acquire *karmas* leading to birth as *Abhiyogik* gods—**(1) Atmotkarsh**—by self praise and conceit of one's virtues **(2) Paraparivad**—by slandering and criticizing others **(3) Bhutikarma**—by applying ash, giving totems and doing other such superstitious things to cure fever and other ailments **(4) Kautuk**—by taking bath with mantra-consecrated water or offering sacrifice in fire.

सम्मोही भावना SAMMOHI BHAAVANA

५६९. चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—उम्मग्गदेसणाए, मग्गंतराएणं, कामासंसप्पओगेणं, भिज्जाणियाणकरणेणं।

५६९. चार स्थानो से जीव सम्मोहत्व कर्म का उपार्जन करते है-(१) **उन्मार्गदिशना से**-जिन-वचनो से विरुद्ध मिथ्या मार्ग का उपदेश देने से, (२) **मार्गान्तराय से**-मुक्ति के मार्ग मे प्रवृत्त व्यक्ति को विघ्न, बाधा उपस्थित करने से, (३) **कामाशसाप्रयोग से**-तपस्या करते हुए काम-भोगो की अभिलाषा रखने से, और (४) **भिध्यानिदानकरण से**-भोगो की तीव्र लालसा-वश बार-बार निदान करने से।

569. Four *sthaans* (activities) make beings acquire *karmas* leading to birth as *Sammohi* gods—**(1) Unmarg deshana**—to preach against the sermon of *Jina* or the right path **(2) Margantaraya**—by obstructing or creating hurdles in the path of a person heading towards liberation **(3) Kamashamsa prayog**—by having desire for carnal pleasures while indulging in austerities **(4) Mithyanidaanakaran**—to hope and wish time and again for satiation of intense carnal cravings

देवकिल्विषी भावना DEVAKILVISHI BHAAVANA

५७०. चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिब्बिसियत्ताए कम्मं पगरेति, तं जहा—अरहंताणं अवण्णं वदमाणे, अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणमवण्णं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स अवण्ण वदमाणे।

५७०. चार स्थानो से जीव देवकिल्विषिकत्व कर्म का उपार्जन करते है-(१) अर्हन्तो का अवर्णवाद करने से, (२) अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म का, (३) आचार्य और उपाध्याय का, और (४) चतुर्विध सघ का अवर्णवाद करने से।

570. Four *sthaans* (activities) make beings acquire *karmas* leading to birth as *Devakilvishi* gods—by slandering and criticizing (1) *Arhants*, (2) religion propagated by *Arhats*, (3) *acharya* and *upadhyaya*, and (4) *Chaturvidh Sangh* (four limbed religious organization)

विवेचन-इन अशुभ भावनाओ का उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ मे तथा बृहत्कल्पभाष्य भाग २ मे विस्तार पूर्वक वर्णन है।

हिन्दी मे देखे भावना योग (आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी) खण्ड -२

Elaboration—Detailed discussion on the sentiments at the back of the aforesaid activities is available in chapter 36 of *Uttaradhyayan* and part 2 of *Brihatkalpabhashya* Also refer to the Hindi book *Bhaavana Yoga*, part-2 by Acharya Shri Anand Rishi ji

प्रव्रज्या-पद PRAVRAJYA-PAD (SEGMENT OF ASCETIC INITIATION)

५७१. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहओलोगपडिबद्धा, अप्पडिबद्धा।

५७१. प्रव्रज्या (निर्ग्रन्थ दीक्षा) चार प्रकार की कही है-(१) **इहलोकप्रतिबद्धा**-इस लोक-सम्बन्धी सुख-कामना से युक्त, (२) **परलोकप्रतिबद्धा**-परलोक-सम्बन्धी सुख-कामना युक्त, (३) **लोकद्वयप्रतिबद्धा**-दोनो लोको की सुख-कामना से युक्त, और (४) **अप्रतिबद्धा**-किसी भी प्रकार के सासारिक सुख की कामना से रहित।

571. *Pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—(1) **Ihalokapratibaddha**—with a wish for happiness during this birth (2) **Paralokapratibaddha**—with a wish for happiness during the next birth (3) **Lokadvyapratibaddha**—with a wish for happiness during the said two births (4) **Apratibaddha**—with no wish at all for any kind of mundane happiness

५७२. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—पुरओपडिबद्धा मग्गओपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, अप्पडिबद्धा।

५७२ प्रव्रज्या चार प्रकार की कही है- (१) **पुरतःप्रतिबद्धा**-आहार अथवा शिष्यपरिवारादि की कामना (भावी आकाक्षा) से ली जाने वाली, (२) **मार्गत (पृष्ठतः) प्रतिबद्धा**-वश, कुल और कुटुम्बादि की प्रतिष्ठा बढाने की कामना से ली जाने वाली, (३) **द्वयप्रतिबद्धा**-उक्त दोनो प्रकार की कामना से ली जाने वाली, और (४) **अप्रतिबद्धा**-उक्त दोनो प्रकार की कामनाओ से रहित।

572. *Pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—(1) **Puratah-pratibaddha**—with a wish for getting food, disciples, and other things (2) **Margatah (Prishtatah) pratibaddha**—with a wish for enhancing honour of clan, lineage, family etc (3) **Dvayapratibaddha**—with a wish for the two aforesaid things (4) **Apratibaddha**—with no wish at all for the said two things

५७३. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ओवायपव्वज्जा, अक्खातपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा।

५७३. प्रव्रज्या चार प्रकार की कही है-(१) **अवपात प्रव्रज्या**-गुरु आदि की सेवा के निमित्त ली जाने वाली दीक्षा, (२) **आख्यात प्रव्रज्या**-दूसरो के कहने से या उनसे प्रेरणा पाकर ली जाने वाली दीक्षा, (३) **संगर प्रव्रज्या**-तुम दीक्षा लोगे तो मै भी दीक्षा लूँगा, इस प्रकार परस्पर प्रतिज्ञाबद्ध होने से या किसी सकेत से ली जाने वाली, और (४) **विहगगति प्रव्रज्या**-एकाकी होकर देशान्तर मे जाकर ली जाने वाली दीक्षा।

573. *Pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—**(1) Avapaat pravrajya**—initiation for the purpose of serving the teacher and others **(2) Akhyat pravrajya**—initiation at the behest of or inspiration by others **(3) Sangar pravrajya**—Initiation to honour commitment or direction such as 'If you get initiated I will also follow suit' **(4) Vihagagati pravrajya**—initiation taken alone after going away from the country

५७४. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुआवइत्ता, परिपुयावइत्ता।

५७४. प्रव्रज्या चार प्रकार की कही है-(१) **तोदयित्वा**—रोग आदि उत्पन्न करने का भय बताकर या कष्ट देकर दी जाने वाली दीक्षा, (२) **प्लावयित्वा**—जन्मस्थान से अन्यत्र ले जाकर दी जाने वाली दीक्षा, (३) **वाचयित्वा**—बातचीत करके अथवा **मोचयित्वा**—पाठान्तर मानने पर किसी को ऋण मुक्त कराकर दी जाने वाली दीक्षा, और (४) **परिप्लुतयित्वा**—स्निग्ध, मिष्ट आहार का प्रलोभन देकर दी जाने वाली दीक्षा। *(संस्कृत टीका भाग २ पृष्ठ ४७४ मे इनके उदाहरण भी दिये है)*

574. *Pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—**(1) Todayitva**—initiation enforced by coercion such as fear of causing some ailment **(2) Plavayitva**—initiation given by taking one away from his birth place **(3) Vachayitva**—initiation given after convincing (another reading *mochayitva*—initiation given after clearing one's debts **(4) Pariplutayitva**— initiation given by promising rich and tasty food as enticement *(Examples of all these are given in Sanskrit Tika, part-2 p 474)*

५७५. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, त जहा—णडखइया, भडखइया, सोहखइया, सियालखइया।

५७५ प्रव्रज्या चार प्रकार की कही है (१) **नटखादिता**—सवेग-वैराग्य से रहित नट की तरह मात्र मनोरजन के लिए धर्मकथा कहकर भोजनादि के उद्देश्य से ली गई। (२) **भटखादिता**—सुभट के समान बल-प्रदर्शन कर या सेवा करके, विद्याबल दिखाकर जीवन निर्वाह के लिए ली गई, (३) **सिंहखादिता**—सिह के समान दूसरो को शाप आदि से भयभीत कर जीवन निर्वाह कराने वाली और (४) **शृगालखादिता**—सियाल के समान दीन-वृत्ति से लोगो की खुशामद कर जीवन निर्वाह कराने वाली।

575. *Pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—**(1) Natakhadita**—acrobat-like, taken for entertainment and not out of detachment **(2) Bhatakhadita**—warrior-like, for earning livelihood by display of learning and extending services **(3) Simhakhadita**—lion-like, taken for earning livelihood by terrorizing others with threat of casting evil spell etc **(4) Shrigalakhadita**—jackal-like, taken for earning livelihood by invoking pity through flattery

५७६. चउव्विहा किसी पण्णत्ता, तं जहा—वाविया, परिवाविया, णिंदिता, परिणिंदिता।

एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—वाविता, परिवाविता, णिंदिता, परिणिंदिता।

५७६. कृषि (खेती) चार प्रकार की कही है–(१) **वापिता**–गेहूँ आदि की तरह एक बार बीजाई करने वाली, (२) **परिवापिता**–एक बार स्थान से उखाडकर अन्य स्थान पर रोपण की जाने वाली, (३) **निदाता**–बोये गये धान्य के साथ उगी हुई विजातीय घास को बीन कर तैयार होने वाली, और (४) **परिनिदाता**–दो-तीन बार गुडाई करके की जाने वाली कृषि।

इसी प्रकार प्रव्रज्या भी चार प्रकार की कही है–(१) **वापिता प्रव्रज्या**–सामायिक चारित्र मे आरोपित करना (छोटी दीक्षा), (२) **परिवापिता प्रव्रज्या**–महाव्रतो मे आरोपित करना (बडी दीक्षा), (३) **निदाता प्रव्रज्या**–अतिचारो की एक बार आलोचना कर से शुद्ध होने वाली, और (४) **परिनिदाता प्रव्रज्या**–जिसमे बार-बार अतिचारो की आलोचना करनी पडती हो, वह दीक्षा।

576. *Krishi* (farming) is of four kinds—**(1) Vapita**—done with one sowing, like wheat crop **(2) Parivapita**—done with transplantation **(3) Nidata**—done with removal of weeds from the sown crop once **(4) Parinidata**—done with hoeing two three times

In the same way *pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—**(1) Vapita pravrajya**—to initiate in Samayik *Charitra* (*chhoti diksha* or the primary initiation) **(2) Parivapita pravrajya**—to initiate into great vows (*badi diksha* or final initiation) **(3) Nidata pravrajya**—involving just one reproachment for transgressions **(4) Parinidata pravrajya**—involving repeated reproachment for transgressions

५७७. चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा—धण्णपुंजितसमाणा, धण्णविरल्लितसमाणा, धण्णविक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टितसमाणा।

५७७. प्रव्रज्या चार प्रकार की कही है- (१) **पुजितधान्यसमाना**–खलिहान मे रखे साफ किये गये धान्य-पुज के समान दोष व अतिचारो से रहित, (२) **विरेल्लितधान्यसमाना**–साफ किये गये, किन्तु खलिहान मे बिखरे हुए भूसे से मिश्रित धान्य के समान अल्प-अतिचारो वाली, (३) **विक्षिप्तधान्यसमाना**–खलिहान मे बैलो आदि के द्वारा कुचले गए ककर-भूसे से मिश्रित धान्य के समान अतिचारो की बहुलता वाली, और (४) **संकट्टितधान्यसमाना**–खेत से काटकर खलिहान मे लाये गये कूडे-ककर आदि से मिश्रित धान्य-पूलो के समान अत्यधिक अतिचारो से युक्त प्रव्रज्या।

577. *Pravrajya* (ascetic initiation) is of four kinds—**(1) Punjitadhanyasamana**—free of faults and transgression like cleaned grain heaps in a granary **(2) Virellitadhanyasamana**—with some faults and transgressions like cleaned but chaff mixed scattered grain in a granary **(3) Vikshiptadhanyasamana**—with more faults and

transgressions like chaff and pebble mixed grain trampled by oxen (4) **Sankattitadhanyasamana**—with excessive faults and transgressions like freshly brought grain from farm that is mixed with pebbles and dirt

संज्ञा-पद SANJNA-PAD (SEGMENT OF DESIRE)

५७८. चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा।

५७८. सज्ञाएँ चार प्रकार की कही है–(१) आहारसज्ञा, (२) भयसज्ञा, (३) मैथुनसज्ञा, और (४) परिग्रहसज्ञा।

578. *Sanjna* (desires) are of four kinds—(1) *ahar-sanjna* (desire for food), (2) *bhaya-sanjna* (desire to run away from fear), (3) *maithun-sanjna* (desire for sex) and (4) *parigraha-sanjna* (desire for possessions)

५७९. चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—ओमकोट्ठताए, छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं।

५७९. चार कारणो से आहारसज्ञा उत्पन्न होती है- (१) पेट खाली होने से, (२) क्षुधा वेदनीय कर्म के उदय से, (३) आहार सम्बन्धी बाते सुनने या भोज्य पदार्थ दीखने से, और (४) बार-बार आहार सम्बन्धी चिन्तन करने से।

579. There are four reasons for *ahar-sanjna* (desire for food)—(1) stomach being empty, (2) fruition of *kshudha vedaniya karma* (*karma* responsible for suffering hunger), (3) hearing about or seeing eatables and (4) continued thinking about food

५८०. चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—हीणसत्तताए, भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए तदट्ठोवओगेणं।

५८०. चार कारणो से भयसज्ञा उत्पन्न होती है–(१) सत्त्व (शक्ति) की हीनता से, (२) भय मोहनीय कर्म के उदय से, (३) भय की बाते सुनने व भयानक दृश्य देखने से (४) बार-बार भय का सोच-विचार करते रहने से।

580. There are four reasons for *bhaya-sanjna* (desire to run away from fear)—(1) deficiency of *sattva* (strength), (2) fruition of *bhaya mohaniya karma* (*karma* responsible for feeling of fear), (3) hearing about fearful things and seeing terrifying scenes, and (4) continued thinking about fearful things

५८१. चउहिं ठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—चितमंससोणिययाए, मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं।

५८१. मैथुनसज्ञा चार कारणो से उत्पन्न होती है-(१) शरीर मे माँस, रक्त, वीर्य का अधिक सचय होने से, (२) वेद मोहनीय कर्म के उदय से, (३) मैथुन की बाते सुनने व विकारोत्पादक दृश्य देखने से, (४) बार-बार मैथुन सम्बन्धी चिन्तन स्मरण से।

581. There are four reasons for *maithun-sanjna* (desire for sex)—(1) excess accumulation of flesh, blood, and semen in the body, (2) fruition of *veda mohaniya karma* (*karma* responsible for sexual feelings), (3) hearing about sex and seeing erotic scenes and (4) continued thinking about sex

५८२. चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसण्णा समुप्पज्जति, तं जहा—अविमुत्तयाए, लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए तदट्ठोवओगेणं।

५८२. परिग्रहसज्ञा चार कारणो से उत्पन्न होती है-(१) परिग्रह या इच्छा-तृष्णा का त्याग न होने से, (२) लोभ मोहनीय कर्म के उदय से, (३) परिग्रह को देखने तथा धन का महत्त्व बताने वाली बातो से, (४) बार-बार परिग्रह सम्बन्धी चिन्तन करते रहने से।

582. There are four reasons for *parigraha-sanjna* (desire for possessions)—(1) not renouncing the desire and craving for possessions, (2) fruition of *lobha mohaniya karma* (*karma* responsible for feeling of greed), (3) hearing about importance of wealth and possessions and seeing things worth possessing and (4) continued thinking about possessing things

विवेचन—उक्त सूत्रो मे 'सज्ञा' शब्द एक विशेष अर्थ है-"तत्सम्बन्धी विशेष प्रकार के कर्मोदय से जागृत होने वाली विकृत चेतना या भावना।" आहार सज्ञा मे असाता वेदनीय, भय सज्ञा मे भय वेदनीय, मैथुन संज्ञा मे वेद मोहनीय और परिग्रह सज्ञा मे लोभ मोहनीय कर्मों का उदय अन्तरग कारण है। शेष तीन-तीन बहिरग कारण है।

Elaboration—The term *sanjna* has been used in a special sense—pervert feelings of desire rising due to fruition of related *karmas Ahar-sanjna, bhaya-sanjna, maithun-sanjna* and *parigraha-sanjna* rise due to fruition of *asata vedaniya, bhaya vedaniya, veda mohaniya* and *lobha mohaniya karma* respectively This is the intrinsic cause The remaining three causes are extrinsic

काम-पद KAAM-PAD (SEGMENT OF CARNALITY)

५८३. चउव्विहा कामा पण्णत्ता, तं जहा—सिंगारा, कलुणा, बीभच्छा, रोद्दा। सिंगारा कामा देवाणं, कलुणा कामा मणुयाणं, बीभच्छा कामा तिरिक्खजोणियाणं, रोद्दा कामा णेरइयाणं।

५८३. काम-भोग चार प्रकार का होता है-(१) शृगार काम, (२) करुण काम, (३) बीभत्स काम, (४) रौद्र काम।

(१) देवो का काम शृगार-रस-प्रधान। (२) मनुष्यो का काम करुण-रस-प्रधान। (३) तिर्यग्योनिक जीवो का काम बीभत्स-रस-प्रधान। (४) नारक जोवो का काम रौद्र-रस-प्रधान।

583. *Kaam* (gratification of carnal desires) is of four kinds—(1) *shringar kaam* (carnal indulgence resulting in amatory sentiment), (2) *karun kaam* (carnal indulgence resulting in sentiment of pathos), (3) *bibhatsa kaam* (carnal indulgence resulting in sentiment of disgust) and (4) *raudra kaam* (carnal indulgence resulting in sentiment of rage)

(1) *Kaam* of gods is *shringar kaam* (carnal indulgence resulting in amatory sentiment), (2) *Kaam* of humans is *karun kaam* (carnal indulgence resulting in sentiment of pathos), (3) *Kaam* of animals is *bibhatsa kaam* (carnal indulgence resulting in sentiment of disgust) and (4) *Kaam* of infernal beings is *raudra kaam* (carnal indulgence resulting in sentiment of rage)

विवेचन—टीकाकार ने बताया है, देवताओ के काम चित्त मे प्रसन्नता व रति उत्पन्न करने वाले है, **रति रूपो हि शृगार**। मनुष्यो के काम भोगने के पश्चात् मन मे शोक व पश्चात्ताप उत्पन्न करते है **करुणो हि रस शोक स्वभाव**। अधिक कामासक्ति रोग भी उत्पन्न कर देती है। तिर्यंचो के काम घृणास्पद होते है, अत उन्हे बीभत्स कहा है। नारकियो मे शारीरिक मैथुन (काम) नही होता। प्रश्न होता है वे मैथुन सज्ञा की पूर्ति कैसे करते है ? उत्तर मे बताया है, उनमे आसेवनकाम तो नही होता, किन्तु इच्छाकाम होता है। इच्छाकाम की पूर्ति मे वे अत्यन्त रौद्र होकर परस्पर लडने लग जाते है। रोद्र क्रोध प्रकृति, *(हिन्दी टीका पृष्ठ ११०१)*

Elaboration—The commentator (*Tika*) informs that the sexual gratification of gods produces erotic sentiment and feeling of joy The sexual gratification of human beings results in sentiment of pathos and pensive state of mind Excessive lust also causes ailments The sexual act of animals is repulsive therefore it is classified as source of sentiment of disgust The infernal beings are deprived of the ability of physical sex A question naturally rises—how do they satisfy their sexual desire ? The answer is that though they are deprived of physical sex still they have sexual desires For gratification of this desire they indulge in fierce fight with each other, therefore it is classified as source of sentiment of rage *(Hindi Tika, p 1101)*

उत्तान–गंभीर–पद UTTAN-GAMBHIR-PAD (SEGMENT OF SHALLOW AND DEEP)

५८४. चत्तारि उदगा पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदए, गंभीरे णाममेगे गंभीरोदए।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहिदए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरहिदए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणहिदए, गंभीरे णाममेगे गंभीरहिदए।

५८४. उदक (जल) चार प्रकार का होता है- (१) **उत्तान और उत्तानोदक**—कोई जल उत्तान—छिछला होता है और छिछला दिखाई देता है तथा उसका भीतरी भाग दिखाई देता है)। (२) **उत्तान और गम्भीरोदक**—कोई जल छिछला होता है, किन्तु गम्भीर दिखाई देता है। मलीन होने से इसका भीतरी भाग दिखाई नही देता। (३) कोई जल गम्भीर (गहरा) होता है किन्तु स्वच्छ दिखाई देता है और (४) कोई जल गम्भीर (गहरा) होता है और गम्भीर दिखाई देता है

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है। (१) कोई पुरुष बाहर से सीधा सरल और हृदय से भी सीधा–सरल स्वभाव का होता है। (२) कोई बाहर से सीधा सरल किन्तु हृदय मे गम्भीर, (३) कोई बाहर से गम्भीर और हृदय से भी सरल, सहज तथा (४) कोई बाहर से गम्भीर हृदय से भी गम्भीर होता है।

584. *Udak* (water) is of four kinds—(1) *Uttan* and *uttanodak*—some water is shallow and looks shallow (clear with visible bottom) (2) *Uttan* and *gambhirodak*—some water is shallow but looks deep (dirty with invisible bottom) (3) *Gambhir* and *uttanodak*—some water is deep and looks shallow (clear with visible bottom) (4) *Gambhir* and *Gambhirodak*—some water is deep and looks deep (dirty with invisible bottom)

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) some man is simple in looks and simple in mind also (2) Some man is simple in looks but serious or complex in mind (3) Some man is serious or complex in looks but simple in mind (4) Some man is serious or complex in looks and serious or complex in mind also

५८५. चत्तारि उदगा पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी।

५८५. उदक चार प्रकार का होता है–(१) **उत्तान और उत्तानावभासी**—कोई जल उथला होता है और उथला जैसा ही प्रतीत होता है। (२) **उत्तान और गम्भीरावभासी**—कोई जल उथला होता है, किन्तु

स्थान की विशेषता से गहरा जैसा प्रतीत होता है। (३) कोई जल गहरा होता है, किन्तु उथला जैसा प्रतीत होता है। (४) कोई जल गहरा होता है और गहरा ही प्रतीत होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष उथला (तुच्छ) होता है और तुच्छ कार्य करने से तुच्छ प्रतीत होता है। (२) कोई तुच्छ होता है, किन्तु गम्भीर जैसा प्रतीत होता है। (३) कोई गम्भीर होता है, किन्तु तुच्छ कार्य करने से उथला जैसा प्रतीत होता है। (४) कोई गम्भीर होता है और गम्भीर ही प्रतीत होता है।

585. *Udak* (water) is of four kinds—(1) *Uttan* and *uttanavabhasi*—some water is shallow and seems to be shallow (2) Uttan and *gambhiravabhasi*—some water is shallow but seems to be deep (3) *Gambhir* and *uttanavabhasi*—some water is deep and seems to be shallow (4) *Gambhir* and *Gambhiravabhasi*—some water is deep and seems to be deep

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) some man is simple (ordinary) and seems to be simple (2) Some man is simple but seems to be serious (profound) (3) Some man is serious but seems to be simple (4) Some man is serious and seems to be serious also

५८६. चत्तारि उदही पण्णत्ता, तं जहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदही, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदही, गम्भीरे णाममेगे गंभीरोदही।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरहियए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणहियए, गंभीरे णाममेगे गंभीरहियए।

५८६. समुद्र चार प्रकार के कहे है-(१) **उत्तान और उत्तानोदधि**-कोई समुद्र पहले उथला होता है और बाद मे भी उथला रहता है (क्योकि अढाई द्वीप से बाहर के समुद्रो मे ज्वार नही आता)। (२) कोई समुद्र पहले तो उथला होता है, (ज्वार भाटे से पहले) किन्तु बाद मे ज्वार आने पर गहरा हो जाता है। (३) कोई समुद्र पहले गहरा होता है, किन्तु बाद मे ज्वार उतर जाने पर उथला हो जाता है। (४) कोई समुद्र (मध्य भाग मे) पहले भी गहरा होता है और बाद मे भी गहरा होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है-(१) **उत्तान और उत्तानहृदय**-कोई पुरुष व्यवहार मे अनुदार या उथला होता है और उसका हृदय भी अनुदार होता है। (२) कोई व्यवहार मे अनुदार या उथला होता है, किन्तु हृदय गम्भीर या उदार होता है। (३) कोई गम्भीर किन्तु अनुदार हृदय वाला, और (४) कोई गम्भीर और गम्भीरहृदय वाला होता है।

586. *Udadhi* (sea) is of four kinds—(1) *Uttan* and *uttanodadhi*—some sea is shallow initially and remains shallow later as well (the seas outside Adhai Dveep are free of tides) (2) *Uttan* and *gambhirodadhi*—some sea is shallow initially but deep later (before and after a tide)

(3) *Gambhir* and *uttanodadhi*—some sea is deep initially and shallow later (after and before a tide) (4) *Gambhir* and *Gambhirodadhi*—some sea is deep initially and remains deep later as well (the middle part of the sea)

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) some man is puerile in behaviour and puerile in mind also (2) Some man is puerile in looks but solemn or generous in mind (3) Some man is solemn in behaviour but puerile in mind (4) Some man is solemn in behaviour and solemn in mind also

५८७. चत्तारि उदही पण्णत्ता, तं जहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोभासी, गंभीरे णाममेगे गंभीरोभासी।

५८७. समुद्र चार प्रकार के होते है (१) कोई समुद्र उथला होता है और उथला जैसा ही लगता है। (२) कोई समुद्र उथला होता है, किन्तु गहरा जैसा लगता है। (३) कोई समुद्र गहरा होता है, किन्तु उथला जैसा लगता है। (४) कोई समुद्र गहरा होता है और गहरा ही लगता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष उथला (तुच्छ) होता है और उथला ही लगता है। (२) कोई उथला होता है, किन्तु गम्भीर लगता है। (३) कोई गम्भीर होता है, किन्तु उथला लगता है। (४) कोई गम्भीर होता है और गम्भीर ही लगता है।

587. *Udadhi* (sea) is of four kinds—(1) *Uttan* and *uttanavabhasi*—some sea is shallow and seems to be shallow (2) *Uttan* and *gambhiravabhasi*—some sea is shallow but seems to be deep (3) *Gambhir* and *uttanavabhasi*—some sea is deep and seems to be shallow (4) *Gambhir* and *Gambhiravabhasi*—some sea is deep and seems to be deep

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) some man is puerile and seems to be puerile as well (2) Some man is puerile but seems to be solemn (3) Some man is solemn but seems to be puerile (4) Some man is solemn and seems to be solemn also

तरक–पद TARAK-PAD (SEGMENT OF A SWIMMER)

५८८. चत्तारि तरगा पण्णत्ता, तं जहा–समुद्दं तरामीतेगे समुद्दं तरति, समुद्दं तरामीतेगे गोप्पयं तरति, गोप्पयं तरामीतेगे समुद्दं तरति, गोप्पयं तरामीतेगे गोप्पयं तरति।

५८८. तैराक (तैरने वाले) चार प्रकार के होते है-

(१) कोई तैराक समुद्र को तैरने का सकल्प करता है और समुद्र को तैर जाता है।

(२) कोई समुद्र को तैरने का सकल्प करता है, किन्तु गोष्पद (अल्प जल वाले स्थान) को तैरता है।

(३) कोई गोष्पद को तैरने का सकल्प करता है और समुद्र को तैर जाता है।

(४) कोई गोष्पद को तैरने का सकल्प करता है गोष्पद को ही तैरता है।

588. *Tarak* (swimmers) are of four kinds—(1) Some *tarak* (swimmer) resolves to swim a sea and actually swims a sea (2) Some *tarak* (swimmer) resolves to swim a sea but actually swims a *goshpad* (a small water body, pond) (3) Some *tarak* (swimmer) resolves to swim a pond but actually swims a sea (4) Some *tarak* (swimmer) resolves to swim a pond and actually swims a pond

५८९. चत्तारि तरगा पण्णत्ता, तं जहा—समुद्दं तरेत्ता णाममेगे समुद्दे विसीयति, समुद्दं तरेत्ता णाममेगे गोप्पए विसीयति, गोप्पयं तरेत्ता णाममेगे समुद्दे विसीयति, गोप्पयं तरेत्ता णाममेगे गोप्पए विसीयति।

५८९. तैराक चार प्रकार के होते है। (१) कोई एक बार समुद्र को पार करके पुन समुद्र को पार करने मे विषादग्रस्त हो जाता है। (२) कोई समुद्र को पार करके गोष्पद को पार करने मे विषादग्रस्त हो जाता है। (३) कोई गोष्पद को पार करके समुद्र को पार करने मे विषादग्रस्त हो जाता है। (४) कोई गोष्पद को पार करके पुन गोष्पद को पार करने मे विषादग्रस्त हो जाता है।

589. *Tarak* (swimmers) are of four kinds—(1) After crossing a sea once, some *tarak* (swimmer) gets dejected to cross a sea again (2) After crossing a sea once, some swimmer gets dejected to cross a pond (3) After crossing a pond once, some swimmer gets dejected to cross a sea (4) After crossing a pond once, some swimmer gets dejected to cross a pond again

पूर्ण–तुच्छ–पद PURNA-TUCHCHHA-PAD (SEGMENT OF FULL AND EMPTY)

५९०. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णे, पुण्णे णाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे णाममेगे पुण्णे, पुण्णे णाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे।

५९०. कुम्भ (घट) चार प्रकार के है-(१) कोई कुम्भ आकार से परिपूर्ण (सम्पूर्ण) होता है और घी आदि द्रव्य से भी पूर्ण होता है। (२) कोई कुम्भ आकार से परिपूर्ण होता है और घी आदि द्रव्यो से तुच्छ खाली होता है। (३) कोई कुम्भ आकार से अपूर्ण, किन्तु घृतादि द्रव्यो से परिपूर्ण होता है। (४) कोई कुम्भ घृतादि से भी तुच्छ (रिक्त) और आकार से भी तुच्छ (अपूर्ण) होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है-(१) कोई सभी अवयवो से पूर्ण होता है और धन, विद्या आदि गुणो से भी पूर्ण होता है। (२) कोई आकार से पूर्ण, किन्तु विद्या आदि गुणो से तुच्छ होता है। (३) कोई आकार से तुच्छ होता है, किन्तु ज्ञानादि गुणो से पूर्ण। (४) और कोई आकार आदि से भी तुच्छ और ज्ञानादि गुणो से भी तुच्छ होता है।

590. *Kumbh* (pitchers) are of four kinds—(1) Some *kumbh* (pitcher) is *purna* (complete) in form and *purna* (filled) with butter or other things (2) Some *kumbh* (pitcher) is *purna* (complete) in form but *tuchchha* (empty) of butter or other things (3) Some *kumbh* (pitcher) is *tuchchha* (incomplete) in form but *purna* (filled) with butter or other things (4) Some *kumbh* (pitcher) is *tuchchha* (incomplete) in form and *tuchchha* (empty) of butter or other things as well

Manushya (men) are of four kinds—(1) Some man is *purna* (complete) in body and *purna* (endowed) with virtues like wealth, learning, piety and other such attributes (2) Some man is *purna* (complete) in body but *tuchchha* (empty) of virtues (3) Some man is *tuchchha* (incomplete) in body but *purna* (endowed) with virtues (4) Some man is *tuchchha* (incomplete) in body and *tuchchha* (empty) of virtues as well

५९१. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे णाममेगे पुण्णोभासी, तुच्छे णाममेगे तुच्छोभासी।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी, तुच्छे णाममेगे पुण्णोभासी, तुच्छे णाममेगे तुच्छोभासी।

५९१. कुम्भ (घट) चार प्रकार के कहे है- (१) **पूर्ण और पूर्णावभासी**–कोई कुम्भ आकारसे पूर्ण होता है और पूर्ण ही दीखता है। (२) **पूर्ण और तुच्छावभासी**–कोई कुम्भ आकार से पूर्ण किन्तु अपूर्ण–सा दीखता है। (३) कोई कुम्भ आकार से अपूर्ण किन्तु पूर्ण- सा दीखता है। (४) कोई कुम्भ आकार से अपूर्ण और अपूर्ण ही दीखता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है। (१) कोई पुरुष सम्पत्ति -श्रुत आदि से पूर्ण, और उसका यथोचित सदुपयोग करने से भी पूर्ण होता है। (२) कोई श्रुत आदि से पूर्ण होता है, किन्तु यथोचित सदुपयोग न करने से अपूर्ण–सा दीखता है। (३) कोई श्रुत आदि से अपूर्ण होता है, किन्तु उनका किचित उपयोग करने से पूर्ण–सा दीखता है। (४) कोई श्रुत आदि से अपूर्ण होता है और उनका उपयोग न करने से अपूर्ण ही दीखता है।

591. *Kumbha* (pitcher) is of four kinds—(1) *Purna* and *purnaavabhasi*—some pitcher is complete and seems to be complete (2) *Purna* and *tuchchhaavabhasi*—some pitcher is complete but seems to be incomplete

(3) *Tuchchha* and *purnaavabhasi*—some pitcher is incomplete but seems to be complete (4) *Tuchchha* and *Tuchchhaavabhasi*—some pitcher is incomplete and seems to be incomplete

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) *Purna* and *purnaavabhasi*—some man is complete (endowed with wealth and knowledge) and seems to be complete (due to proper use) (2) *Purna* and *tuchchhaavabhasi*—some man is complete but seems to be incomplete (due to improper use) (3) *Tuchchha* and *purnaavabhasi*—some man is incomplete but seems to be complete (due to some use) (4) *Tuchchha* and *Tuchchhaavabhasi*—some man is incomplete and seems to be incomplete (due to absence of any use).

५९२. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे, तुच्छा णाममेगे पुण्णरूवे, तुच्छे णाममेगे तुच्छरूवे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे, तुच्छे णाममेगे पुण्णरूवे, तुच्छे णाममेगे तुच्छरूवे।

५९२. कुम्भ (घट) चार प्रकार के कहे है-(१) कोई कुम्भ जल आदि से पूर्ण (भरा) होता है और उसका आकार आदि भी पूर्ण (सुन्दर) होता है। (२) कोई पूर्ण होता है, किन्तु उसका रूप पूर्ण (सुन्दर) नही होता है। (३) कोई अपूर्ण होता है, किन्तु उसका रूप पूर्ण होता है। (४) कोई अपूर्ण होता है और उसका रूप भी अपूर्ण ही होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है-(१) कोई धन-श्रुत आदि से भी पूर्ण होता है और वेषभूषादि रूप से भी पूर्ण होता है-(२) कोई धन-विद्या आदि से पूर्ण, किन्तु वेषभूषादि रूप से अपूर्ण होता है। (३) कोई विद्या आदि से अपूर्ण, किन्तु वेष-भूषादि रूप से पूर्ण। (४) कोई श्रुतादि से भी अपूर्ण, और वेष-भूषादि रूप से भी अपूर्ण होता है।

592. *Kumbha* (pitcher) is of four kinds—(1) *Purna* and *purnarupa*—some pitcher is *purna* (filled) and *purnarupa* (beautiful in appearance) (2) *Purna* and *tuchchharupa*—some pitcher is filled but *tuchchharupa* (not beautiful in appearance) (3) *Tuchchha* and *purnarupa*—some pitcher is not beautiful but filled (4) *Tuchchha* and *Tuchchharupa*—some pitcher is neither filled nor beautiful

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) *Purna* and *purnarupa*—some man is *purna* (endowed with wealth and knowledge) and *purnarupa* (well dressed) (2) *Purna* and *tuchchharupa*—some man is endowed but *tuchchharupa* (not well dressed) (3) *Tuchchha* and

purnarupa—some man is *tuchchha* (not endowed) but well dressed (4) *Tuchchha* and *tuchchharupa*—some man is neither endowed nor not well dressed

५९३. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णेवि एगे पियट्टे, पुण्णेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियट्टे, तुच्छेवि एगे अवदले।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णेवि एगे पियट्टे, पुण्णेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियट्टे, तुच्छेवि एगे अवदले।

५९३. कुम्भ चार प्रकार के कहे है। (१) **पूर्ण और प्रियार्थ**–कोई कुम्भ जल आदि से पूर्ण होता है और श्रेष्ठ गुण वाला होता है। (२) **पूर्ण और अपदल**–कोई कुम्भ जल आदि से पूर्ण होने पर भी अपदल (अधपका या कुत्सित मिट्टी का बना) होता है। (३) कोई कुम्भ जलादि से अपूर्ण होने पर भी श्रेष्ठ होता है। (४) कोई कुम्भ जलादि से भी अपूर्ण और अपदल (असार) भी होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है–(१) कोई सम्पत्ति व श्रुत आदि से पूर्ण होता है और परोपकारी होने से लोकप्रिय भी होता है। (२) कोई सम्पत्ति–श्रुत आदि से पूर्ण होता है, किन्तु (परोपकारादि न करने से) अपदल होता है। (३) कोई सम्पत्ति–श्रुत आदि से अपूर्ण होने पर भी परोपकारादि करने से प्रियार्थ होता है। (४) कोई सम्पत्ति–श्रुत आदि से भी अपूर्ण और परोपकारादि न करने से अपदल भी होता है।

593. *Kumbha* (pitcher) is of four kinds—(1) *Purna* and *priyarth*—some pitcher is *purna* (filled with water) and *priyarth* (good in quality, made of good material) (2) *Purna* and *apadal*—some pitcher is filled with water but *apadal* (bad in quality, not properly fired or made of bad material) (3) *Tuchchha* and *priyarth*—some pitcher is empty but of good quality (4) *Tuchchha* and *Apadal*—some pitcher is empty as well as of bad quality

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) *Purna* and *priyarth*—some man is *purna* (endowed with wealth and knowledge) and *priyarth* (altruist and popular) (2) *Purna* and *apadal*—some man is endowed but *apadal* (selfish and unpopular) (3) *Tuchchha* and *priyarth*—some man is *tuchchha* (not endowed) but popular (4) *Tuchchha* and *apadal*—some man is neither endowed nor popular

५९४. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णेवि एगे विस्संदति, पुण्णेवि एगे णो विस्संदति, तुच्छेवि एगे विस्संदति, तुच्छेवि एगे णो विस्संदति।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–पुण्णेवि एगे विस्संदति, (पुण्णेवि एगे णो विस्संदति, तुच्छेवि एगे विस्संदति, तुच्छेवि एगे णो विस्संदति।)

५९४. कुम्भ चार प्रकार के कहे है-(१) **पूर्ण और विष्यन्दक**-कोई कुम्भ जल आदि से पूर्ण होता है और झरता भी है। (२) कोई कुम्भ जल आदि से पूर्ण, होता है किन्तु झरता नही है। (३) कोई कुम्भ तुच्छ होता है और झरता भी है। (४) कोई कुम्भ तुच्छ होता है और झरता भी नही है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है-(१) कोई पुरुष सम्पत्ति-श्रुतादि से पूर्ण होता है और उनका उपकारादि मे उपयोग करता रहता है। ((२) कोई श्रुतादि से पूर्ण होने पर भी उसका उपकारादि मे उपयोग नही करता। (३) कोई श्रुतादि से अपूर्ण होने पर भी प्राप्त अर्थ का उपकारादि मे उपयोग करता है। (४) कोई श्रुतादि से अपूर्ण होता है और उनसे परोपकार भी नही करता।)

594. *Kumbha* (pitcher) is of four kinds—(1) *Purna* and *vishyandak*—some pitcher is *purna* (filled) and *vishyandak* (dripping) (2) *Purna* and *no vishyandak*—some pitcher is filled but *no vishyandak* (not dripping) (3) *Tuchchha* and *vishyandak*—some pitcher is not filled (fully) but dripping (4) *Tuchchha* and *no vishyandak*—some pitcher is neither filled nor dripping

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) *Purna* and *vishyandak*—some man is *purna* (well endowed with wealth and knowledge) and *vishyandak* (puts them to benevolent use) (2) *Purna* and *no vishyandak*—some man is well endowed but *no vishyandak* (does not put them to benevolent use) (3) *Tuchchha* and *vishyandak*—some man is *tuchchha* (not well endowed) but puts whatever he has to benevolent use (4) *Tuchchha* and *no vishyandak*—some man is neither well endowed nor puts anything to benevolent use

चारित्र-सूत्र CHAARITRA-PAD (SEGMENT OF ASCETIC-CONDUCT)

५९५. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा-भिण्णे, जज्जरिए, परिस्साई, अपरिस्साई।

एवामेव चउव्विहे चरित्ते पण्णत्ते, तं जहा-भिण्णे, (जज्जरिए, परिस्साई), अपरिस्साई।

५९५. कुम्भ चार प्रकार के होते है-

(१) भिन्न (फूटा), (२) जर्जरित (पुराना) , (३) परिस्रावी (झरने वाला), (४) अपरिस्रावी (नही झरने वाला)।

इसी प्रकार चारित्र भी चार प्रकार का कहा है (१) **भिन्न चारित्र**-मूल प्रायश्चित्त के योग्य, (२) **जर्जरित चारित्र**-छेद प्रायश्चित्त के योग्य, (३) **परिस्रावी चारित्र**-सूक्ष्म अतिचार वाला, (४) (**अपरिस्रावी चारित्र**-निरतिचार -सर्वथा निर्दोष चारित्र।)

595. *Kumbha* (pitchers) are of four kinds—(1) *bhinna* (broken), (2) *jarjarit* (decrepit), (3) *parisravi* (dripping) and (4) *aparisravi* (not dripping)

In the same way *chaaritra* (ascetic-conduct) is of four kinds—(1) *bhinna chaaritra* (broken ascetic-conduct)—requiring total atonement, (2) *jarjarit chaaritra* (decrepit ascetic-conduct)—requiring partial atonement, (3) *parisravi chaaritra* (dripping ascetic-conduct)—with minute transgressions and (4) *aparisravi chaaritra* (non-dripping ascetic-conduct)—complete absence of transgressions

मधु–विष–कुम्भ पद MADHU-VISH-KUMBH-PAD (SEGMENT OF HONEY, POISON AND PITCHER)

५९६. चत्तारि कुंभा पण्णत्ता, तं जहा–महुकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, महुकुंभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, विसकुभे णाममेगे विसपिहाणे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–महुकुंभे णाममेगे महुपिहाणे, महुकुंभे णाममेगे विसपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे, महुपिहाणे, विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे।

हिययमपावमकलुसं, जीहाऽवि य महुरभासिणी णिच्चं।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से मधुकुंभे मधुपिहाणे॥१॥

हिययमपावमकलुसं, जीहाऽवि य कडुयभासिणी णिच्चं।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से मधुकुंभे विसपिहाणे॥२॥

जं हिययं कलुसमयं जीहाऽवि य मधुरभासिणी णिच्चं।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से विसकुंभे महुपिहाणे॥३॥

जं हिययं कलुसमयं, जीहाऽवि य कडुयभासिणी णिच्चं।
जम्मि पुरिसम्मि विज्जति, से विसकुंभे विसपिहाणे॥४॥ (संग्रहणी–गाथा)

५९६. कुम्भ चार प्रकार के कहे है–(१) **मधुकुम्भ, मधुपिधान**–कोई कुम्भ मधु से भरा होता है और उसका पिधान (ढक्कन) भी मधुमय होता है। (२) **मधुकुम्भ, विषपिधान**–कोई कुम्भ विष से भरा, किन्तु उसका ढक्कन विष लिप्त होता है। (३) **विषकुम्भ, मधुपिधान**–कोई कुम्भ विष से भरा, किन्तु उसका ढक्कन मधु लिप्त होता है। (४) **विषकुम्भ, विषपिधान**–कोई कुम्भ विष से भरा, और उसका ढक्कन भी विष लिप्त होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे है। (१) कोई पुरुष हृदय से मधु जैसा मिष्ट व पापरहित होता है और उसकी जिह्वा भी मिष्टभाषिणी होती है। (२) कोई हृदय से तो मधु जैसा मिष्ट होता है, किन्तु उसकी जिह्वा विष जैसी कटुभाषिणी होती है। (३) किसी के हृदय मे तो विष भरा होता है, किन्तु जीभ से मधुरभाषी होता है। (४) किसी के हृदय मे विष भरा होता है और जीभ से विष जैसी कटु भाषा बोलता है।

संग्रहणी गाथा

(१) जिस पुरुष का हृदय पाप और कलुषता से रहित होता है तथा जिह्वा भी सदा मधुरभाषिणी होती है, वह मधु से भरे और मधु के ढक्कन वाले कुम्भ के समान है।

(२) जिस पुरुष का हृदय पाप एव कलुषता से रहित होता है, किन्तु जिह्वा सदा कटु-भाषिणी होती है, वह मधु से भरा, किन्तु विष ढक्कन वाले कुम्भ के समान है।

(३) जिसका हृदय कलुषता से भरा, किन्तु जिह्वा सदा मधुरभाषिणी है वह विष-भृत और मधु-ढक्कन वाले कुम्भ के समान है।

(४) जिसका हृदय कलुषता से भरा है और जिह्वा भी सदा कटुभाषिणी है, वह विष-भृत और विष पिधान वाले कुम्भ के समान है।

596. *Kumbha* (pitcher) is of four kinds—**(1) Madhukumbha and madhupidhan**—some pitcher is *madhukumbha* (filled with honey) and *madhupidhan* (has honey saturated cover) **(2) Madhukumbha and vishapidhan**—some pitcher is filled with honey but *vishapidhan* (has poison saturated cover) **(3) Vishakumbha and madhupidhan**—some pitcher is filled with poison but has honey saturated cover **(4) Vishapidhan and Vishapidhan**—some pitcher is filled with poison and has poison saturated cover

In the same way *manushya* (man) is of four kinds—(1) Some man is sweet and pious like honey and has sweet voice too (2) Some man is sweet and pious like honey but has poison-like bitter voice (3) Some man is bitter and harmful like poison but has honey-like sweet voice (4) Some man is bitter and harmful like poison and has poison-like bitter voice

COLLATIVE VERSE

(1) A man whose mind is free of sin and perversion and who also has a sweet tongue is like a pitcher filled with honey having a honey saturated cover

(2) A man whose mind is free of sin and perversion but who has a bitter tongue is like a pitcher filled with honey having a poison saturated cover

(3) A man whose mind is filled with sin and perversion but who has a sweet tongue is like a pitcher filled with poison having a honey saturated cover

(4) A man whose mind is filled with sin and perversion and who also has a bitter tongue is like a pitcher filled with poison having a poison saturated cover

विवेचन—यहाँ 'मधु' व 'विष' शब्द प्रतीकात्मक है। मधु से, शहद, मिश्री, मकरद, अमृत, सद्भाव आदि और 'विष' से उग्रता, कटुता, कलुषता, पापमय विचार आदि समझना चाहिए।

Elaboration—Here the terms *madhu* and *vish* have been used as metaphors *Madhu* means honey, crystal sugar, pollen, ambrosia, benevolence and other such sweet and pious things and virtues Similarly *vish* means poison, aggression, bitterness, perversion, sinful thoughts and other such bitter things and vices

उपसर्ग-पद **UPASARG-PAD (SEGMENT OF AFFLICTION)**

५१७. चउव्विहा उवसग्गा पण्णत्ता, तं जहा—दिव्वा, माणुसा, तिरिक्खजोणिया, आयसंचेयणिज्जा।

५१७. उपसर्ग चार प्रकार के कहे है-(१) **दिव्य-उपसर्ग**—देवो द्वारा किया जाने वाला। (२) **मानुष-उपसर्ग**—मनुष्यो के द्वारा किया जाने वाला। (३) **तिर्यग्योनिक उपसर्ग**—तिर्यंचयोनिक जीवो के द्वारा किया जाने वाला। (४) **आत्मसचेतनीय उपसर्ग**—स्वय अपने द्वारा किया गया उपसर्ग।

597. *Upasarg* (affliction) is of four kinds—(1) *divya-upasarg*—affliction caused by gods, (2) *manush-upasarg*—affliction caused by humans, (3) *tiryagyonik-upasarg*—affliction caused by animals and (4) *atmasanchetaniya-upasarg*—affliction caused by self

विवेचन—सयम से डिगाने वाली और चित्त को चलायमान करने वाली बाधा को **'उपसर्ग'** कहते है। वे दो प्रकार के होते है, **अनुकूल उपसर्ग**—जो मन, इन्द्रिय व शरीर को प्रिय लगते हो। **प्रतिकूल उपसर्ग**—जो इनको अप्रिय लगते हो। ऐसी बाधाएँ देव, मनुष्य और तिर्यचकृत तो होती है, कभी-कभी आकस्मिक भी होती है, उनको यहाँ आत्म-सचेतनीय कहा है।

Elaboration—A hurdle or impediment that weakens resolve and forces one to abandon ascetic-discipline is called *upasarg* or affliction They are of two types—*anukool upasarg* (favourable to and liked by senses and mind) and *pratikool upasarg* (unfavourable to and disliked by senses and mind) Such afflictions are generally caused by gods, human beings, and animals The accidental afflictions without any apparent cause are included here in *atmasanchetaniya* or self inflicted afflictions

५९८. दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—हासा, पाओसा, वीमंसा, पुढोवेमाता।

५९८. दिव्य उपसर्ग चार प्रकार के कहे है-(१) **हास्य-जनित**—कुतूहल-वश हँसी-मजाक से किया गया। (२) **प्रद्वेष-जनित**—पूर्व भव के वैर से प्रेरित होकर किया गया। (३) **विमर्श-जनित**—परीक्षा लेने के लिए किया गया। (४) **पृथग्-विमात्र**—हास्य, द्वेषादि मिले-जुले अनेक कारणो से किया गया।

598. *Divya-upasarg* (divine affliction) is of four kinds—(1) *Hasya-janit*—caused jovially for amusement, (2) *pradvesh-janit*—caused out of animosity from earlier birth, (3) *vimarsh-janit*—caused for testing and (4) *prithag-vimatra*—caused due to mixed reasons including hilarity and antagonism

५९९. माणुसा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—हासा, पाओसा, वीमंसा, कुसीलपडिसेवणया।

५९९. मनुष्य सम्बन्धी उपसर्ग चार प्रकार के कहे है-(१) हास्य-जनित, (२) प्रद्वेष-जनित, (३) विमर्श-जनित, (४) कुशील प्रतिसेवन-ब्रह्मचर्य से भ्रष्ट करने के लिए किया गया उपसर्ग। *(सस्कृत टीका भाग २ पृष्ठ ४८२ पर इनके उदाहरण भी दिये है।)*

599. *Manush-upasarg* (human affliction) is of four kinds—(1) *Hasya-janit*, (2) *pradvesh-janit*, (3) *vimarsh-janit* and (4) *kusheel pratisevan*—caused for violating celibacy *(for examples see Sanskrit Tika, p 482)*

६००. तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भया, पदोसा, आहारहेउं अवच्चलेण—सारक्खणया।

६००. तिर्यंचो के द्वारा किया जाने वाला उपसर्ग चार प्रकार का कहा है।

(१) **भय—जनित**, जैसे गाय, भैस, कुत्ता आदि के द्वारा। (२) प्रद्वेष- जनित उपसर्ग पूर्व भव के वैरादि के स्मरण से। (३) आहार के लिए किया गया उपसर्ग जैसे-चीटी, मच्छर आदि का। (४) अपने बच्चो के एव गुफा, घोसला आदि आवास स्थान के सरक्षणार्थ किया गया।

600. *Tiryagyonik-upasarg* (animal affliction)—is of four kinds—(1) *Bhaya-janit*—caused out of fear such as those caused by cow, buffalo, dog, etc (2) *Pradvesh-janit* (3) Caused out of need of food such as those caused by carnivores and insects like ant, mosquito etc (4) Caused for protecting offspring and dwelling place such as a cave, nest etc

६०१. आयसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—घट्टणता, पवडणता, थंभणता, लेसणता।

६०१. आत्मसचेतनीय उपसर्ग चार प्रकार का कहा है-(१) **घट्टनता—जनित**—ऑख मे रज-कण आदि जाने से या किसी से टकरा जाने से। (२) **प्रपतन—जनित**—मार्ग मे चलते हुए असावधानी से गिर पडने के कारण। (३) **स्तम्भन—जनित**—हस्त-पाद आदि के शून्य हो जाने या मल-मूत्र रुक जाने से उत्पन्न कष्ट। (४) **श्लेषणता—जनित**—वात- पित्त आदि के कारण सन्धिस्थलो के जुड जाने से होने वाला कष्ट।

601. *Atmasanchetaniya-upasarg* (accidental affliction)—is of four kinds—(1) *Ghattanata-janit*—caused due to falling of sand particles in

eyes or colliding with something (2) *Prapatan-janit*—caused by falling while walking carelessly (3) *Stambhan-janit*—caused due to numbness in limbs or inability to pass urine or stool. (4) *Shlesh-janit*—caused by stiffness in joints due to disturbed body humours

कर्म-पद KARMA-PAD (SEGMENT OF KARMAS)

६०२. चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा–सुभे णाममेगे सुभे, सुभे णाममेगे असुभे, असुभे णाममेगे सुभे, असुभे णाममेगे असुभे।

६०२. कर्म चार प्रकार का कहा है–(१) शुभ और शुभ। (२) शुभ और अशुभ। (३) अशुभ और शुभ। (४) अशुभ और अशुभ।

602. *Karmas* are of four kinds—(1) good and good, (2) good and bad, (3) bad and good, and (4) bad and bad

विवेचन–कर्मो के मूल भेद आठ है, उनमे चार घातिकर्म तो अशुभ या पापरूप ही कहे गये है। शेष चार अघातिकर्मो के दो विभाग है। उनमे सातावेदनीय, शुभ आयु, उच्च गोत्र और पचेन्द्रिय जाति, उत्तम सस्थान, स्थिर, सुभग, यश कीर्ति आदि नाम कर्म की ६८ प्रकृतियाँ पुण्य रूप और शेष पापरूप कही है।

सूत्र मे जो चार भग कहे गये है, उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

(१) कोई पुण्यकर्म वर्तमान मे भी शुभ फल देता है और शुभानुबन्धी होने से आगे भी सुख देने वाला होता है। जब पुण्य भोग मे आसक्ति नही होती तो मूढता उत्पन्न नही होती। पुण्यानुबधी पुण्य। जैसे भरत चक्रवर्ती आदि का पुण्यकर्म।

(२) कोई पुण्यकर्म वर्तमान मे तो शुभ फल देता है, किन्तु पापानुबन्धी होने से आगे दु ख देने वाला होता है। पापानुबन्धी पुण्य। जो पुण्य आसक्त भाव से भोगा जाता है, वह मूढ बना देता है। जैसे ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती आदि का पुण्यकर्म। जैसे कहा है-

पुण्णेण होइ विहवो, विहवेण मओ, मएण मई मोहो।
मई मोहेण य पावं ता पुण्ण अम्ह मा होउ।

पुण्य से वैभव होता है, वैभव से मद, मद से मति-मोह, मति-मोह से पाप। पाप मुझे इष्ट नही है। इसलिए ऐसा पुण्य भी मुझे इष्ट नही है।

(३) कोई पापकर्म वर्तमान मे तो दु ख देता है, किन्तु आगे सुखानुबन्धी होता है। जो अशुभ कर्म तीव्र मोह से अर्जित नहीं होते, वे भोगते समय मूढता उत्पन्न नही करते, वे शुभ कर्म के निमित्त बन जाते है। जैसे दु ख से संतप्त व्यक्ति शुभ की ओर प्रवृत्त होता है। पुण्यानुबन्धी पाप।

(४) कोई पापकर्म वर्तमान मे भी दु.ख देता है और पापानुबन्धी होने से आगे भी दु ख देता है। जैसे–मछली मारने वाले धीवरादि का पापकर्म। (पापानुबन्धी पाप)

Elaboration—There are eight basic categories of *karmas*. Out of these the four *Ghati karmas* (vitiating karmas) are said to be bad or sinful The other four *Aghati karmas* (non-vitiating karmas) have two sections Out of these *satavedaniya* (pleasure causing), *shubh aayu* (good life span), *uchcha gotra* (high status), *panchendriya jati* (five sensed class of beings), *uttam samsthan* (good body constitution), *sthir* (stability), *shubha* (nobility), *yashah kirti* (fame) and other 68 species of *Naam karma* are said to be *punya rupa* (meritorious) and the rest are *paap rupa* (demeritorious)

The four alternatives mentioned in the aphorism are explained as follows—

(1) Good and good—Some *punya karma* (meritorious *karma*) gives good fruits in the present and being cause of further bondage of meritorious *karmas* it gives good fruits in future births also When there is no attachment in enjoying fruits of meritorious *karmas* stupor is absent *Punyanubandhi punya* (merit-bonding meritorious *karma*) for example the meritorious *karmas* of Bharat Chakravarti and other such noble souls

(2) Good and bad—Some *punya karma* (meritorious *karma*) gives good fruits in the present but being cause of further bondage of demeritorious *karmas* it gives bad fruits or misery in future births *Paapanubandhi punya* (demerit-bonding meritorious karma)—when there is attachment in enjoying fruits of meritorious *karmas* it leads to stupor For example the meritorious *karmas* of Brahmadatt Chakravarti etc There is a verse highlighting this—Meritorious *karma* begets grandeur Grandeur is source of ego Ego results in illusive attachment and illusive attachment causes bondage of demeritorious *karmas* I do not prefer demerit therefore I do not require such meritorious *karma*

(3) Bad and good—Some *paap karma* (demeritorious *karma*) causes misery in the present but is cause of bondage of meritorious *karmas* for the future *Punyanubandhi paap* (merit-bonding demeritorious karma)—the bad karmas not acquired through intense attachment do not lead to stupor, they turn into cause of bondage of good *karmas* For example a person suffering misery gets inspired towards goodness

(4) Bad and bad—Some *paap karma* (demeritorious *karma*) causes misery in the present and being cause of bondage of demeritorious *karmas* is source of misery in future as well *Paapanubandhi paap* (demerit-bonding demeritorious *karma*) For example the sin of a fisherman who kills fish

६०३. चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा–सुभे णाममेगे सुभविवागे, सुभे णाममेगे असुभविवागे, असुभे णाममेगे सुभविवागे, असुभे णाममेगे असुभविवागे।

६०३. कर्म चार प्रकार के कहे है। (१) **शुभ और शुभविपाक**–कुछ कर्म शुभ रूप मे बँधते है और उनका फल भी शुभ ही होता है। (२) **शुभ और अशुभविपाक**–कुछ कर्म शुभ परिणामो से बँधते है, किन्तु सक्रमण से फल अशुभ होते है। (३) **अशुभ और शुभविपाक**–कुछ कर्म अशुभ परिणामो से बँधते है, किन्तु सक्रमण से शुभ फल देते है। (४) **अशुभ और अशुभविपाक**–कुछ कर्म अशुभ भावो से बँधते है और अशुभ फल ही देते है।

603. *Karmas* are of four kinds—(1) *Shubh* and *shubh-vipaak*—some *karmas* are acquired through noble thoughts and their fruits are also good (2) *Shubh* and *ashubh-vipaak*—some *karmas* are acquired through noble thoughts but due to transformation their fruits are bad (3) *Ashubh* and *shubh-vipaak*—some *karmas* are acquired through ignoble thoughts but due to transformation their fruits are good (4) *Ashubh* and *ashubh-vipaak*—some *karmas* are acquired through ignoble thoughts and their fruits are also bad

विवेचन–कर्म सिद्धान्त का सामान्य नियम है-शुभ कर्म का शुभफल, अशुभ कर्म का अशुभ फल। इस नियम के अनुसार प्रथम व चतुर्थ भग स्पष्ट है। द्वितीय-तृतीय भग मे सक्रमण-सिद्धान्त का प्रतिपादन है। सक्रमण का अर्थ है एक कर्म प्रकृति का दूसरे कर्म मे बदल जाना। मूल प्रकृतियो मे सक्रमण नही होता, उत्तर प्रकृतियो मे ही होता है। वेदनीय कर्म की दो उत्तर प्रकृतियाँ है, सात (शुभ) वेदनीय और असात (अशुभ) वेदनीय। तदनुसार-

(२) कोई जीव पहले सातवेदनीय आदि शुभकर्म को बाँधता है और पीछे तीव्र कषाय से प्रेरित होकर असातवेदनीय आदि अशुभकर्म का तीव्र बन्ध करता है, तो उसका पूर्व-बद्ध सातवेदनीयादि शुभकर्म भी असातवेदनीय पापकर्म मे सक्रान्त (परिवर्तित) हो जाता है अत वह बन्धन काल का शुभ कर्म सक्रमण द्वारा अशुभ विपाक देता है।

(३) कोई जीव पहले असातावेदनीय आदि अशुभकर्म को बाँधता है, किन्तु पीछे शुभ परिणामो की प्रबलता से सातावेदनीय आदि उत्तम अनुभाग वाले कर्म को बाँधता है। ऐसे जीव का पूर्व-बद्ध अशुभ कर्म भी शुभकर्म के रूप मे सक्रान्त हो जाता है, अत वह शुभ विपाक को देता है।

Elaboration—The general rule of *Karma* theory is—good *karmas* give good fruits and bad *karmas* give bad fruits The first and fourth alternatives of the aforesaid aphorism follow this rule Second and third alternative relates to the theory of transformation (*sankraman*) *Sankraman* means transformation of one species (*prakriti*) of *karma* into another Transformation is applicable only to secondary species not the

primary species *Vedaniya karma* has two secondary species—*saata vedaniya* (good suffering or pleasant experience) and *asaata vedaniya* (bad suffering or unpleasant experience) Accordingly—

(2) Some being first acquires good *karmas* including *saata vedaniya* and later, driven by intense passion, acquires bad *karmas* including *asaata vedaniya* In this state his already acquired *saata vedaniya karmas* also get transformed into *asaata vedaniya karmas* Consequently the *karma* that was good at the time of acquisition gives bad fruits through this transformation

(3) Some being first acquires bad *karmas* including *asaata vedaniya* and later, driven by noble thoughts, acquires good *karmas* including *saata vedaniya* In this state his already acquired *asaata vedaniya karmas* also get transformed into *saata vedaniya karmas* Consequently the *karma* that was bad at the time of acquisition gives good fruits through this transformation

६०४. चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा–पगडीकम्मे, ठितीकम्मे, अणुभावकम्मे, पदेसकम्मे।

६०४. कर्म चार प्रकार का है। (१) **प्रकृतिकर्म**–ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुणो को रोकने का स्वभाव। (कर्मो की मूल व उत्तर प्रकृतियाँ) (२) **स्थितिकर्म**–बँधे हुए कर्मो की काल मर्यादा। (जघन्य, उत्कृष्ट आदि स्थिति) (३) **अनुभावकर्म**–बँधे हुए कर्मो की फलदायक शक्ति। (तीव्र-मद रस) (४) **प्रदेशकर्म**–कर्म-परमाणुओ का सचय। सघनता-विरलता। (अल्पप्रदेशी–बहुप्रदेशी कर्मदलिक)

604. *Karma* is of four kinds—(1) *Prakriti karma*—the process of blocking virtues like *jnana* (knowledge), *darshan* (perception/faith), and *chaaritra* (conduct) (2) *Sthiti karma*—duration of influence of the bonded *karmas* (minimum, average, maximum duration etc) (3) *Anubhaava karma*—the potency of the bonded *karmas* (in terms of strength of its fruits, intense, mild etc) (4) *Pradesh karma*—collective density of acquired *karma* particles (dense and loose, *karma* aggregates with more or less number of particles)

संघ-पद SANGH-PAD (SEGMENT OF RELIGIOUS ORGANIZATION)

६०५. चउव्विहे संघे पण्णत्ते, तं जहा–समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ।

६०५. सघ चार प्रकार का कहा है (१) श्रमण सघ, (२) श्रमणी सघ, (३) श्रावक सघ, (४) श्राविका सघ।

605. *Sangh* (religious organization) is of four kinds—(1) *Shraman Sangh* (organization of male ascetics), (2) *Shramani Sangh* (organization

of female ascetics), (3) *Shravak Sangh* (organization of male householders or laymen) and (4) *Shravika Sangh* (organization of female householders or laywomen)

बुद्धि-पद BUDDHI-PAD (SEGMENT OF WISDOM)

६०६. चउव्विहा बुद्धी पण्णत्ता, तं जहा—उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया।

६०६. बुद्धि चार प्रकार की कही है-(१) **औत्पत्तिकी बुद्धि**—प्रश्न सामने आते ही, स्वत स्फुरणा से उसका समाधान देने वाली अतिशायिनी प्रतिभा। (२) **वैनयिकी बुद्धि**—गुरुजनो की विनय और सेवा शुश्रूषा से उत्पन्न व विकसित होने वाली बुद्धि। (३) **कार्मिकी बुद्धि**—कार्य करते-करते स्वत बढने वाली बुद्धि-कुशलता। (४) **पारिणामिकी बुद्धि**—अवस्था-उम्र तथा अनुभव बढन के साथ बढने वाली परिपक्व बुद्धि। *(चारो बुद्धि का विस्तृत वर्णन सचित्र नन्दीसूत्र पृष्ठ १६७ से ३०३ पर देखे।)*

606. *Buddhi* (wisdom) is of four kinds—(1) *Autpattiki buddhi* (intuitive wisdom)—that which is self inspired and activated spontaneously to provide answer in response to a question (2) *Vainayiki buddhi* (acquired wisdom)—that which is acquired and developed through devotion for teachers and elders or seniors by serving them with modesty (3) *Karmiki buddhi* (wisdom confirmed through experience)—that which is acquired and perfected practically through working and regular practice (4) *Parinamiki buddhi* (deductive wisdom)—that which is acquired and enhanced as a consequence of maturity and experience *(for detailed discussion on four kinds of wisdom refer to Illustrated Nandi Sutra, pp 167-303)*

मति-पद MATI-PAD (SEGMENT OF INTELLIGENCE)

६०७. चउव्विहा मई पण्णत्ता, तं जहा—उग्गहमती, ईहामती, अवायमती, धारणामती।

अहवा—चउव्विहा मती पण्णत्ता, तं जहा—अरंजरोदगसमाणा, वियरोदगसमाणा, सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा।

६०७. मति चार प्रकार की है-(१) **अवग्रहमति**—वस्तु के सामान्य अवलोकन से पहली बार मे ही उसके स्वरूप को जानना। (२) **ईहामति**—अवग्रह से जाने हुए विषय को विशेष पर्यालोचन से जानने की आकाक्षा। (३) **अवायमति**—जानी हुई वस्तु के विशेष निश्चयात्मक या निर्णयात्मक स्वरूप का ज्ञान। (४) **धारणामति**—अवाय से प्राप्त ज्ञान को बुद्धि मे दृढ सस्कार रूप मे धारण करना।

अथवा-मति (बुद्धि) चार प्रकार की है। (१) **अरंजरोदकसमाना**—अरजर (घट) के पानी के समान अल्प ज्ञान को धारण करने वाली बुद्धि। (२) **विदरोदकसमाना**—विदर (नदी किनारे का गड्ढा या कुण्ड) के पानी के समान अधिक ज्ञान को धारण करने वाली अधिक उपकारक बुद्धि। (३) **सरउदकसमाना**—

सरोवर के पानी के समान बहुत अधिक विस्तृत ज्ञान युक्त अधिक उपकारक बुद्धि। (४) **सागरोदकसमाना**—समुद्र के पानी के समान असीम अक्षीण ज्ञान सम्पन्न बुद्धि।

607. *Mati* (intelligence) is of four kinds—(1) *Avagraha mati*—to know cursorily a thing by simply seeing it for the first time (2) *Iha mati*—the process of acquiring more information through contemplation about the thing or subject known through *avagraha*, (3) *Avaya mati*—the process of reaching definite conclusion through analytical deduction of information acquired through *iha* (4) *Dhaarana mati*—the process of transferring the conclusion arrived at through *avaya* to memory in the form of a resolve

Also *Mati* (intelligence) is of four kinds—(1) *Aranjarodak samaana* (like water in a pitcher)—lowest capacity of intelligence capable of acquiring minimum knowledge like water in an *Aranjak* (pitcher) (2) *Vidarodak samaana* (like water in a ditch)—limited capacity of intelligence like water in a *vidar* (a ditch near a river) (3) *Sarodak samaana* (like water in a pond)—higher capacity of intelligence like water in a pond (4) *Saagarodak samaana* (like water in a sea)—unlimited capacity of intelligence like water in a sea

जीव-पद JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING BEINGS)

६०८. चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइया तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा, देवा।

६०८. ससारी जीव चार प्रकार के कहे है- (१) नारक, (२) तिर्यग्योनिक, (३) मनुष्य, (४) देव।

608. *Samsari jiva* (worldly beings) are of four kinds—(1) *naarak* (infernal beings), (2) *tiryagyonik* (animals), (3) *manushya* (human beings) and (4) *deva* (divine beings)

६०९. चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगी, वइजोगी, कायोजोगी, अजोगी।

अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुंसकवेयगा, अवेयगा। अहवा—चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी, केवलदंसणी। अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—संजया, असंजया, संजयासंजया, णोसंजया—णोअसंजया।

६०९. सब जीव चार प्रकार के कहे है-(१) मनोयोगी, (२) वचनयोगी, (३) काययोगी, (४) अयोगी। अथवा सब जीव चार प्रकार के कहे है-(१) स्त्रीवेदी, (२) पुरुषवेदी, (३) नपुसकवेदी, (४) अवेदी। अथवा सब जीव चार प्रकार के कहे है। (१) चक्षुदर्शनी, (२) अचक्षुदर्शनी,

(३) अवधिदर्शनी, (४) केवलदर्शनी। अथवा सब जीव चार प्रकार के कहे है-(१) सयत, (२) असयत, (३) सयतासयत, (४) नोसयत-नोअसयत।

609. All beings are of four kinds—(1) *mano yogi*, (2) *vachan yogi*, (3) *kaya yogi* and (4) *ayogi*

Also all beings are of four kinds—(1) *stree vedi*, (2) *purush vedi*, (3) *napumsak vedi* and (4) *avedi*

Also all beings are of four kinds—(1) *chakshu darshani*, (2) *achakshu darshani*, (3) *avadhi darshani* and (4) *Keval darshani*

Also all beings are of four kinds—(1) *samyat*, (2) *asamyat*, (3) *samyatasamyat* and (4) *no samyat-no asamyat*

विवेचन—मन, वचन, काय की प्रवृत्ति 'योग' है। तेरहवे गुणस्थान तक सभी जीव **सयोगी** होते है। चौदहवे गुणस्थान मे जीव **अयोगी** होता है। जिसमे काम भावना विद्यमान हो वह **वेदक**। काम वासना से सर्वथा मुक्त जीव **अवेदक**। वेद भावना आठवे गुणस्थान तक रहती है। ऊपर के सभी जीव अवेदक कहलाते है।

नेत्रो द्वारा होने वाला ज्ञान–**चक्षुदर्शन**, अन्य इन्द्रियो से होने वाला ज्ञान–**अचक्षुदर्शन**। अवधिज्ञानी का दर्शन अवधिदर्शन तथा केवलज्ञान के पूर्व होने वाला दर्शनोपयोग केवल दर्शन है। एकेन्द्रिय से त्रीन्द्रिय तक के जीव अचक्षुदर्शनी, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय, सज्ञी जीव अवधि दर्शनी भी होते है। मुक्तात्मा केवलदर्शनी ही होते है। सब प्रकार का सयम करने वाले सयत, श्रमण। गृहस्थ श्रावक सयतासयत, किसी प्रकार का त्याग नही करने वाले असयत तथा सिद्ध आत्मा नोसयत–नो असयत है।

Elaboration—Activity of mind, speech and body is *yoga* Up to the thirteenth *Gunasthan* (level of spiritual uplift) all beings are *sayogi* (indulging in the said activities) At the fourteenth *Gunasthan* a being becomes *ayogi* (all these activities cease) A being with carnal sentiment or sexual desire is *vedak* or *vedi* A being free of sexual desires is *avedi* This sexual desire is active up to the eighth *Gunasthan*, beyond that all beings are *avedi*

Perception through eyes is *chakshu darshan* and that through other sense organs is *achakshu darshan* The perception of *avadhi-jnani* is *avadhi darshan* and that prior to *Keval jnana* is *Keval darshan* One to three sensed beings are *achakshu darshani* Besides being *chakshu darshani*, four, five sensed and sentient beings can also be *avadhi darshani* Liberated souls are only *Keval darshani*

A person observing every discipline is *samyat*, a *Shraman* An indoctrinated householder or *shravak* is *samyatasamyat* A person

renouncing nothing is asamyat and a liberated soul or Siddha is *no-samyat-no asamyat*

मित्र–अमित्र–पद MITRA-AMITRA-PAD (SEGMENT OF FRIEND AND NON-FRIEND)

६१०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–मित्ते णाममेगे मित्ते, मित्ते णाममेगे अमित्ते, अमित्ते णाममेगे मित्ते, अमित्ते णाममेगे अमित्ते।

६१०. पुरुष चार प्रकार के है–(१) कोई व्यवहार से मित्र और हृदय से भी मित्र होता है। (२) कोई व्यवहार से मित्र, किन्तु हृदय से मित्र नही होता। (३) कोई व्यवहार से मित्र नही होता, किन्तु हृदय से मित्र होता है। (४) कोई न व्यवहार से मित्र होता है और न हृदय से मित्र होता है।

610. *Purush* (men) are of four kinds—(1) Someone behaves like a friend and is friend by heart also, (2) someone behaves like a friend but is non-friend by heart, (3) someone does not behave like a friend but is friend by heart, and (4) someone does not behave like a friend and is also not a friend by heart

विवेचन–चारो प्रकार के मित्रो की व्याख्या अनेक प्रकार से की जा सकती है (१) लोक एव परलोक दोनो का उपकारी होने से। जैसे–सद्‌गुरु आदि। (२) कोई लोक का उपकारी, किन्तु परलोक के साधक सयमादि मे बाधक होने से जैसे पत्नी आदि। (३) कोई प्रतिकूल व्यवहार करते है, किन्तु वैराग्य उत्पत्ति मे सहायक बनते है। जैसे कलहकारिणी स्त्री आदि। (४) कोई इस लोक मे प्रतिकूल व्यवहार करते है उनके सक्लेश पैदा करने से दुर्गति के भी कारण होते है।

Elaboration—All these four kinds of friends can be explained many ways For example—(1) Being helpful both for this life as well as the next, such as a spiritual teacher (2) Being helpful for this life but damaging for the next life by way of creating hurdles on the path of ascetic-discipline, such as loving wife (3) Being detrimental for this life but helpful for next by way of pushing towards renunciation, such as quarrelsome wife (4) Being detrimental for this life and the next as well by way of causing torment and inspiring retaliation such as a foe

६११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–मित्ते णाममेगे मित्तरूवे, मित्ते णाममेगे अमित्तरूवे, अमित्ते णाममेगे मित्तरूवे, अमित्ते णाममेगे अमित्तरूवे।

६११. पुरुष चार प्रकार के है–(१) कोई मित्र होता है और मित्र के समान व्यवहार करता है। (२) कोई मित्र होता है, किन्तु अमित्र के समान व्यवहार करता है। (३) कोई अमित्र होता है, किन्तु मित्र के समान व्यवहार करता है। (४) कोई अमित्र होता है और अमित्र के समान व्यवहार करता है।

611. *Purush* (men) are of four kinds—(1) someone is a true friend and also appears to be a friend, (2) someone is friend but appears to be not a

friend, (3) someone is non-friend but appears to be friend and (4) someone is non-friend and also appears to be a non-friend

मुक्त–अमुक्त–पद MUKTA-AMUKTA-PAD (SEGMENT OF LIBERATED AND NON-LIBERATED)

६१२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–मुत्ते णाममेगे मुत्ते, मुत्ते णाममेगे अमुत्ते, अमुत्ते णाममेगे मुत्ते, अमुत्ते णाममेगे अमुत्ते।

६१२. पुरुष चार प्रकार के है -(१) कोई पुरुष द्रव्य से भी मुक्त होता है और भाव से भी मुक्त होता है। (२) कोई द्रव्य से मुक्त, किन्तु भाव से मुक्त नही होता। (३) कोई द्रव्य से अमुक्त, किन्तु भाव से मुक्त होता है। (४) कोई न द्रव्य से ही मुक्त होता है और न भाव से मुक्त होता है।

612. *Purush* (men) are of four kinds—(1) some person is liberated physically and also liberated mentally, (2) some person is liberated physically but not liberated mentally, (3) some person is not liberated physically but liberated mentally and (4) some person is not liberated physically and also not liberated mentally

विवेचन–द्रव्य से मुक्त मे परिग्रह एव परिवार से मुक्त तथा भाव से मुक्त मे आसक्ति, मूर्च्छा आदि से मुक्त समझना चाहिए। इसके प्रथम भग मे श्रमण, दूसरे भग मे दरिद्र या भिक्षु वेषधारी, तीसरे भग मे भरत चक्रवर्ती जैसे और चौथे भग मे सामान्य गृहस्थ समझना चाहिए।

Elaboration—Liberated physically means liberated from possessions and family ties Liberated mentally means liberated from cravings, obsessions and other such mental perversions The four alternatives mentioned here point at ascetic, destitute or beggar, Bharat Chakravarti and ordinary householder respectively

६१३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे, मुत्ते णाममेगे अमुत्तरूवे, अमुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे, अमुत्ते णाममेगे अमुत्तरूवे।

६१३. पुरुष चार प्रकार के है (१) **मुक्त और मुक्तरूप**–कोई पुरुष परिग्रहादि से मुक्त होता है और बाह्य स्वरूप से भी मुक्त जैसा होता है। जैसे–साधना व ध्यान निष्ठ श्रमण (२) कोई परिग्रहादि से मुक्त होता है, किन्तु बाह्यरूप से अमुक्त के समान होता है। जैसे गृहस्थ–दशा मे महावीर स्वामी आदि। (३) कोई परिग्रहादि से मुक्त नही, किन्तु बाह्य रूप मे मुक्त के समान होता है। जैसे धूर्त्त साधु आदि। (४) कोई न परिग्रहादि से मुक्त है और न ही बाह्यरूप मे मुक्त जैसा होता है। जैसे सामान्य गृहस्थ

613. *Purush* (men) are of four kinds—(1) some person is liberated from desire of possessions etc and also appears to be liberated (an ascetic involved in spiritual practices), (2) some person is liberated from desire of possessions etc but does not appear to be liberated (people like Bhagavan Mahavir as householder), (3) some person is not liberated

from desire of possessions etc but appears to be liberated (a charlatan) and (4) some person is neither liberated from desire of possessions etc nor appears to be liberated (an ordinary householder)

गति-आगति-पद GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF REINCARNATION AND INCARNATION)

६१४. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया पण्णत्ता, तं जहा— पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा, तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा। से चेव णं से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा, जाव (तिरिक्खजोणियत्ताए वा, मणुस्सत्ताए वा), देवत्ताए वा गच्छेज्जा।

६१४. पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव चार गति तथा चार आगति वाले होते है

पचेन्द्रिय तिर्यच जीव, पचेन्द्रिय तिर्यंच गति मे नरक से, तिर्यचगति से, मनुष्य गति से और देव गति से आकर उत्पन्न होता है। पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव, पचेन्द्रिय तिर्यचयोनि को छोडता हुआ (मर कर) नारकियों मे, तिर्यचयोनिको मे, मनुष्यो मे या देवो मे (आठवे देवलोक तक) जाकर उत्पन्न होता है।

614. Panchendriya Tiryagyonik *jivas* (five sensed animals) have four *gati* (reincarnation from this birth to the next birth) and four *aagati* (incarnation from previous birth to the present birth)—

A five sensed animal incarnates into the genus of five sensed animals coming from *narak gati* (genus of infernal beings), *tiryanch gati* (animal genus), *manushya gati* (genus of human beings) and *deva gati* (divine genus) A five sensed animal leaving the genus of five sensed animals (on death) reincarnates into *narak gati* (genus of infernal beings), *tiryanch gati* (animal genus), *manushya gati* (genus of human beings) and *deva gati* (divine genus up to eighth Devalok)

६१५. मणुस्सा चउगइया चउआगइया (पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्से मणुस्सेसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा, तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा।)

से चेव णं से मणुस्से मणुस्सत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा, तिरिक्खजोणियत्ताए वा, मणुस्सत्ताए वा, देवत्ताए वा गच्छेज्जा)।

६१५ मनुष्य चार गति तथा चार आगति वाले होते है—

(१) मनुष्य मनुष्यो मे उत्पन्न होता हुआ नारकियो से, या तिर्यंचयोनि से मनुष्यो से, या दवो से आकर उत्पन्न होता है। (२) मनुष्य मनुष्यपर्याय को छोडता हुआ नारकियो मे तिर्यंचयोनियो मे, मनुष्यो मे, या देवो मे उत्पन्न होता है।)

615. *Manushyas* (human beings) have four *gati* and four *aagati*—

A human being incarnates into the genus of human beings coming from *narak gati, tiryanch gati, manushya gati* and *deva gati* A human being leaving the genus of human beings (on death) reincarnates into *narak gati, tiryanch gati, manushya gati* and *deva gati*

संयम–असंयम–पद SAMYAM-ASAMYAM-PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

६१६. बेइंदियाणं जीवा असमारभमाणस्स चउव्विहे संजमे कज्जति, तं जहा–जिब्भामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति, फासमएणं दुक्खेणं असंजोगित्ता भवति।

६१६. द्वीन्द्रिय जीवो की हिसा नही करने वाले पुरुष को चार प्रकार का सयम होता है–

(१) वह जीवो के जिह्वामय सुख का घात नही करता है। (२) वह जीवो के जिह्वामय दु ख का सयोग नही करता है। (३) वह जीवो के स्पर्शमय सुख का घात नही करता है। (४) वह जीवो के स्पर्शमय दु ख का सयोग नही करता है।

616. A person not harming two sensed beings accomplishes four kinds of discipline—

(1) He does not terminate the pleasure derived through *jihva* (tongue or sense organ of taste) by these beings (2) He does not enforce the misery experienced through *jihva* on these beings (3) He does not terminate the pleasure derived through *sparsh* (sense organ of touch) by these beings (2) He does not enforce the misery experienced through *sparsh* on these beings

६१७. बेइंदिया णं जीवा समारभमाणस्स चउविहे असंजमे कज्जति, तं जहा–जिब्भामयातो सोक्खातो ववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति, फासामयातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, (फासामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति)।

६१७. द्वीन्द्रिय जीवो की हिसा करने वाले पुरुष को चार प्रकार का असयम होता है–

(१) जीवो के जिह्वामय सुख का घात करता है। (२) जीवो के जिह्वामय दु ख का सयोग करता है। (३) जीवो के स्पर्शमय सुख का घात करता है। (४) जीवो के स्पर्शमय दु ख का सयोग करता है।

617. A person harming two sensed beings accomplishes four kinds of indiscipline—

(1) He destroys the pleasure enjoyed through *jihva* (tongue or sense organ of taste) by these beings (2) He enforces the misery experienced through *jihva* on these beings (3) He terminates the pleasure derived through *sparsh* (sense organ of touch) by these beings (2) He enforces the misery experienced through *sparsh* on these beings

क्रिया–पद **KRIYA-PAD (SEGMENT OF ACTIVITY)**

६१८. सम्मद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया।

६१८. सम्यग्दृष्टि नारकियो के चार क्रियाएँ है–(१) आरम्भिकी क्रिया, (२) पारिग्रहिकी क्रिया, (३) मायाप्रत्ययिकी क्रिया, (४) अप्रत्याख्यान क्रिया।

618. *Samyagdrishti naarakis* (righteous infernal beings) have four *kriyas* (activities)—(1) *arambhiki kriya* (act of violence), (2) *paarigrahiki kriya* (act of possession and hoarding), (3) *mayapratyayiki kriya* (activity involved in indulgence in deceit) and (4) *apratyakhyan kriya* (indisciplined action in absence of resolve of abstainment)

६१९. सम्मद्दिट्ठियाणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–(आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया)। ६२०. एवं–विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।

६१९. सम्यग्दृष्टि असुरकुमारो मे चार क्रियाएँ है -(१) आरम्भिकी क्रिया, (२) पारिग्रहिकी क्रिया, (३) मायाप्रत्ययिकी क्रिया, (४) अप्रत्याख्यान क्रिया।

६२०. इसी प्रकार विकलेन्द्रियो को छोडकर सभी सम्यग्दृष्टिसम्पन्न दण्डको मे चार–चार क्रियाएँ जाननी चाहिए। (विकलेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि होने से उनमे पाँचवी मिथ्यादर्शनक्रिया नियम से होती है।

619. *Samyagdrishti* Asur Kumars (righteous among a kind of lower gods) have four *kriyas* (activities)—(1) *arambhiki kriya*, (2) *paarigrahiki kriya*, (3) *mayapratyayiki kriya* and (4) *apratyakhyan kriya*

620. In the same way four activities each should be read for beings of all *dandaks* (places of suffering) except *vikalendriyas* (one to four sensed beings) (As *vikalendriyas* are unrighteous, as a rule, they have the fifth activity of unrigteousness also)

गुण–पद **GUNA-PAD (SEGMENT OF VIRTUES)**

६२१. चउहिं ठाणेहिं संते गुणे णासेज्जा, तं जहा–कोहेणं, पडिणिवेसेणं, अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिणिवेसेणं।

६२१. चार कारणो से विद्यमान गुणो का भी विनाश होता है। (१) क्रोध से, (२) प्रतिनिवेश से–अहकार या ईर्ष्या वश–दूसरो की पूजा–प्रतिष्ठा न सह सकने से, (३) अकृतज्ञता से (कृतघ्न होने से), (४) मिथ्याभिनिवेश (दुराग्रह) से।

621. For four reasons even the existing virtues are destroyed—(1) *krodh* (by anger), (2) *pratinivesh* (by not tolerating worship or honour of others out of ego or jealousy), (3) *akritajnata* (by being ungrateful) and (4) *mithyabhinivesh* (by being perversely dogmatic)

६२२. चउहिं ठाणेहिं असंते गुणे दीवेज्जा, तं जहा–अब्भासवत्तियं, परच्छंदाणुवत्तियं, कज्जहेउं, कतपडिकतेति वा।

६२२. चार कारणो से अविद्यमान (अप्रकट) गुणो का भी दीपन (प्रकाशन) होता है - (१) **अभ्यासवृत्ति** से–गुण–ग्रहण का स्वभाव, या गुणो का निरन्तर अभ्यास करते रहने से। (२) **परच्छन्दानुवृत्ति से**–गुणियो व गुरुजनो के अनुकूल आचरण करने से, (३) **कार्यहेतु** से–अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए दूसरो के अनुकूल व्यवहार से, (४) उपकारी के प्रति कृतज्ञता का भाव रखने से।

622. For four reasons even the non-existing virtues come to light—(1) *abhyas vritti* (by tendency of acquiring virtues and continued practice thereof), (2) *parachchhandanuvritti* (by following conduct prescribed and liked by the virtuous and seniors), (3) *karyahetu* (by favourable behaviour to accomplish the desired) and (4) *kritajnata* (by being grateful for favours)

शरीर–पद **SHARIRA-PAD (SEGMENT OF BODY)**

६२३. णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया, तं जहा–कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। ६२४. एवं जाव वेमाणियाणं।

६२३. चार कारणो से नारक जीवो के शरीर की उत्पत्ति होती है–(१) क्रोध से, (२) मान से, (३) माया से, (४) लोभ से। ६२४. इसी प्रकार वैमानिकपर्यन्त सभी दण्डको के जीवो के शरीरो की उत्पत्ति के उक्त चार–चार कारण होते है।

623. Infernal beings acquire (*utpatti*) a body due to four reasons—(1) *krodh* (anger), (2) *maan* (conceit), (3) *maaya* (deceit) and (4) *lobh* (greed) **624.** In the same way all beings of all *dandaks* acquire a body due the said four reasons

६२५. णेरइयाणं चउट्ठाणणिव्वत्तिते सरीरे पण्णत्ते, तं जहा–कोहणिव्वत्तिए, जाव (माणव्वित्तिए, मायाणिव्वत्तिए), लोभणिव्वत्तिए। ६२६. एवं जाव वेमाणियाणं।

६२५. नारक जीवो के शरीर चार कारणो से निवृत्त (निष्पन्न) होते है-(१) क्रोधजनित कर्म से, ((२) मान-जनित कर्म से, (३) माया-जनित कर्म से,) (४) लोभ-जनित कर्म से। ६२६. इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त सभी दण्डको के शरीरो की निवृत्ति (निष्पत्ति) उक्त चार कारणो से होती है।

625. The body of an infernal being matures (*nishpatti*) due to four reasons—(1) *krodh janit karma* (*karma* acquired through anger), (2) *maan janit karma* (*karma* acquired through conceit), (3) *maaya janit karma* (*karma* acquired through deceit) and (4) *lobh janit karma* (*karma* acquired through greed) **626.** In the same way bodies of all beings of all *dandaks* mature due the said four reasons

धर्मद्वार-पद DHARMADVAR-PAD (SEGMENT OF DOORS OF RELIGION)

६२७. चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता, तं जहा-खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे।

६२७. धर्म के चार द्वार कहे है- (१) क्षान्ति (क्षमा या तितिक्षा), (२) मुक्ति (निर्लोभता या सन्तोषवृत्ति), (३) आर्जव (निष्कपटता, मन की पवित्रता), (४) मार्दव (मृदुता या विनम्रता)।

627. There are four *dvars* (traits) of *dharma* (religion)—(1) *kshanti* (forgiveness), (2) *mukti* (contentment or absence of greed), (3) *arjava* (honesty or purity of mind) and (4) *maardava* (modesty or gentleness)

नरकायु-पद NARAKAYU-PAD (SEGMENT OF INFERNAL LIFE)

६२८. चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयाउयत्ताए कम्मं पकरेति, तं जहा-महारंभताए, महापरिग्गहयाए, पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं।

६२८. चार कारणो से जीव नरक आयुष्य के योग्य कर्म उपार्जन करते है -(१) महा आरम्भ से (जिस क्रिया मे घोर हिंसा की जाती है), (२) महा परिग्रह से (धन के प्रति अत्यासक्ति से), (३) पचेन्द्रिय जीवो का वध करने से, (४) कुणप आहार से (मॉसभक्षण करने से)।

628. For four reasons a being acquires *karmas* determining infernal life span—(1) through *maha arambh* (great sin or extremely violent act), (2) through *maha parigraha* (extreme covetousness), (3) through *panchendriya vadh* (killing five sensed beings) and (4) through *kunap ahar* (meat eating)

तिर्यंचायु-पद TIRYANCHAYU-PAD (SEGMENT OF ANIMAL LIFE SPAN)

६२९. चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा-माइल्लताए, णियडिल्लताए, अलियवयणेणं, कूडतुल-कूडमाणेणं।

६२९. चार कारणो से जीव तिर्यंचगति के योग्य कर्मों का उपार्जन करते है-(१) मायाचार (मन-वचन कर्म की कुटिलता) से, (२) निकृतिमत्ता से अर्थात् कपट जाल फैलाने से। (३) असत्य वचन से, (४) कूटतुला-कूटमान से (घट-बढ तोलने-नापने से)।

629. For four reasons a being acquires *karmas* determining animal life span—(1) through *mayachar* (crooked action through mind, speech and body), (2) through *nikritimatta* (spreading web of deception), (3) through *asatya vachan* (telling a lie) and (4) through *kootatula* (deceit in weights and measures)

मनुष्यायु-पद MANUSHYAYU-PAD (SEGMENT OF HUMAN LIFE SPAN)

६३०. चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्साउयत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा-पगतिभद्दताए, पगतिविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरिताए।

६३०. चार कारणो से जीव मनुष्यायुष्क कर्म का उपार्जन करते है-(१) प्रकृति-भद्रता (स्वभाव की सरलता) से, (२) प्रकृति विनीतता--(स्वभावजन्य विनीतता) से, (३) सानुक्रोशता से (दयालुता और सहृदयता से), (४) अमत्सरित्व से (मत्सर व ईर्ष्या भाव न रखने से)

630. Due to four reasons a being acquires *karmas* determining human life span—(1) through *prakriti bhadrata* (natural simplicity), (2) through *prakriti vinitata* (natural modesty), (3) through *saanukroshata* (generosity and kindness) and (4) through *amatsaritva* (absence of jealousy and hostility)

देवायुष्य-पद DEVAAYU-PAD (SEGMENT OF DIVINE LIFE SPAN)

६३१. चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा-सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए।

६३१. चार कारणो से जीव देवायुष्क कर्म का उपार्जन करते है-(१) सरागसयम से (रागसहित दशा मे सयम पालन करना। (२) सयमासयम से, (श्रावक धर्म पालने से)। (३) बालतप अज्ञान पूर्वक तप करने से, (४) अकामनिर्जरा से-(निर्जरा की भावना के बिना तप, ब्रह्मचर्य आदि पालने से)।

631. Due to four reasons a being acquires *karmas* determining divine life span—(1) through *saraag samyam* (observing ascetic discipline with attachment), (2) through *samyamasamyam* (observing householder's code), (3) through *baal tap* (observing austerities without knowledge) and (4) through *akaam nirjara* (observing ascetic code and austerities without a desire to shed *karmas*)

विवेचन-हिंसादि प्रवृत्तियो के सर्वथा त्याग को सयम कहते है। उसके दो भेद है-सरागसयम और वीतरागसयम। जहाँ तक सूक्ष्म राग रहता है-ऐसे दसवे गुणस्थान तक का सयम सरागसयम है और

उसके ऊपर के गुणस्थानो का सयम वीतरागसयम है। यद्यपि सरागसयम छठे गुणस्थान से लेकर दसवे गुणस्थान तक होता है, किन्तु सातवे गुणस्थान से ऊपर के सयमी देवायु का बन्ध नही करते है, क्योकि वहाँ आयु का बन्ध ही नही होता। अत छठे-सातवे गुणस्थान का सरागसयम ही देवायु के बन्ध का कारण होता है।

श्रावक के अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रत रूप एकदेशसयम को सयमासयम कहते है। यह पचम गुणस्थान मे होता है। मिथ्यात्वी जीवो का तप 'बालतप' कहा जाता है। पराधीन होने से भूख-प्यास के कष्ट सहना, पर-वश दशा मे ब्रह्मचर्य पालना, इच्छा के बिना कर्म-निर्जरा के कारणभूत कार्यों को करना अकामनिर्जरा है। इन चार कारणो मे से आदि के दो कारण अर्थात् सराग-सयम और सयमासयम आराधक होने से वैमानिक-देवायु के कारण है और अन्तिम दो कारण भवनपति, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवो मे उत्पत्ति के कारण जानना चाहिए। यहाँ इतना और विशेष ज्ञातव्य है कि इन चार कारणो मे से किसी एक कारण के होने पर ही आयु बन्ध होता है।

Elaboration—To completely abandon violence and other sinful activities is called *samyam* (ascetic-discipline) It is of two kinds—*saraag samyam* (ascetic-discipline with attachment) and *vitaraag samyam* (ascetic-discipline without attachment) The ascetic-discipline up to the level of tenth *Gunasthan*, where minute traces of attachment are present, is called *saraag samyam* Beyond that level it is called *vitaraag samyam* Although *saraag samyam* is applicable from sixth to tenth *Gunasthan*, at levels beyond seventh *Gunasthan* there is total absence of bonding of life-span determining *karmas*, therefore there is no question of acquiring divine life span determining *karmas* Thus the *saraag samyam* of sixth and seventh *Gunasthan* is the cause of bondage of divine life span *karmas*

The partial *samyam* (ascetic-discipline) of a householder in the form of *anuvrat* (minor vows), *gunavrat* (restraints that reinforce the practice of *anuvrats*) and *shikshavrat* (instructive or complimentary vows of spiritual discipline) is called *samyamasamyam* This is at the level of fifth *Gunasthan* The austerities observed by unrighteous person is called *baal tap* To endure pain of hunger and thirst under duress, to observe forced celibacy, or to indulge unwillingly in other practices aimed at shedding of *karmas* is *akaam nirjara* Of these four the first two lead to rebirth as Vaimanik gods and the latter two lead to birth as Bhavanpati, Vyantar, and Jyotishk gods It should be noted that bondage of life span defining *karma* is possible where any one of the said four causes is in existence

वाद्य–नृत्यादि–पद VADYA-NRITYADI-PAD (SEGMENT OF MUSIC, DANCE ETC.)

६३२. चउव्विहे वज्जे पण्णत्ते, तं जहा–तते, वितते, घणे, झुसिरे।

६३२. वाद्य (बाजे) चार प्रकार के है- (१) **तत** (वीणा आदि), (२) **वितत** (ढोल आदि), (३) **घन** (कास्य ताल आदि), (४) **शुषिर** (बासुरी आदि)

632. *Vadya* (musical instruments) are of four kinds—(1) *tat* (stringed instruments like Veena), (2) *vitat* (percussion instruments like drum), (3) *ghan* (percussion instruments like cymbal) and (4) *shushir* (wind pipes like flute)

६३३. चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते, तं जहा–अंचिए, रिभिए, आरभडे, भसोले।

६३३. नाट्य (नृत्य) चार प्रकार के है–(१) **अचित नाट्य**–ठहर ठहर कर या रुक रुक कर मद मद नाचना। (२) **रिभित नाट्य**–सगीत के साथ नाचना। (३) **आरभट नाट्य**–गाते हुए भावाभिव्यक्ति करना। (४) **भषोल नाट्य**–झुक कर या लेट कर भाव भगिमा प्रदर्शित करके नाचना।

633 *Natya* or *nritya* (dances) are of four kinds—(1) *anchit natya*—to dance slowly and with breaks, (2) *ribhit natya*—to dance with music, (3) *aarbhat natya*—to express feelings with gestures and poses while singing, and (4) *bhashol natya*—to dance with bending and prostrate gestures and poses

६३४. चउव्विहे गेए पण्णत्ते, तं जहा–उक्खित्तए, पत्तए, मंदए, रोविंदए।

६३४. गेय (गायन) चार प्रकार का है–(१) **उत्क्षिप्तक गेय**–नाचते हुए या आरम्भ मे मधुर स्वर से गायन करना। (२) **पत्रक गेय**–पद्य-छन्दो का गायन करना, उच्च स्वर से छन्द बोलना। (३) **मन्दक गेय**–मन्द-मन्द स्वर से गायन करना। (४) **रोविन्दक गेय**–शनै शनै स्वर को तेज करते हुए गायन करना।

634. *Geya* or *gayan* (singing) is of four kinds—**(1) utkshiptak geya**—to sing in sweet voice at the beginning of or during a dance, **(2) patrak geya**—to sing or recite metric verses loudly, **(3) mandak geya**—to sing in low pitch, and **(4) rovindak geya**—to sing with gradually rising pitch

६३५. चउव्विहे मल्ले पण्णत्ते, तं जहा–गंथिमे, वेढिमे, पूरिमे, संघातिमे।

६३५. माल्य (माला) चार प्रकार की है-(१) **ग्रन्थिम**–फूलो आदि को सूत के धागे से गूँथ कर बनाई जाने वाली माला। (२) **वेष्टिम**–चारो ओर फूलो को लपेट कर मुकुटाकार बनाई गई माला। (३) **पूरिम**–फूल भर कर बनाई जाने वाली माला। (४) **संघातिम**–एक फूल की नाल आदि से दूसरे फूल आदि को जोडकर बनाई गई माला।

635. *Malya* (garlands) are of four kinds—(1) **granthim**—made by stringing flowers in cotton thread, (2) **veshtim**—made by wrapping flowers into a specific shape of a crown (3) **poorim**—made by braiding or filling flowers, and (4) **sanghatim**—made by interweaving or entwining flowers

६३६. चउव्विहे अलंकारे पण्णत्ते, तं जहा—केसालंकारे, वत्थालंकारे, मल्लालंकारे, आभरणालंकारे।

६३६. अलकार चार प्रकार के है–(१) **केशालकार**–शिर के बालो को सजाना। (२) **वस्त्रालकार**–सुन्दर वस्त्रो को धारण करना। (३) **माल्यालकार**–मालाओ को धारण करना। (४) **आभरणालकार**–सुवर्ण-रत्नादि के आभूषणो को धारण करना।

636. *Alankar* (embellishments) are of four kinds—(1) **keshalankar**—to embellish hair, (2) **vastralankar**—to adorn body with beautiful dresses, (3) **malyalankar**—to embellish with garlands and bead strings, and (4) **aabharanalankar**—to embellish with gold and gem ornaments

६३७. चउव्विहे अभिणए पण्णत्ते, तं जहा—दिट्ठंतिए, पाडिसुते, सामण्णओविणिवाइय, लोगमज्झावसिने।

६३७. अभिनय (नाटक) चार प्रकार का होता है (१) **दार्ष्टान्तिक**–किसी घटना-विशेष का अभिनय। (२) **प्रातिश्रुत**–रामायण, महाभारत आदि का अभिनय। (३) **सामान्यतोविनिपातिक**–राजा-मत्री आदि का अभिनय अथवा हँसी, रुदन आदि मनोभावो का प्रदर्शन। (४) **लोकमध्यावसित**–मानवजीवन की विभिन्न अवस्थाओ व वेष-भूषाओ का अभिनय।

637. *Abhinaya* (acting) is of four kinds—(1) **darshtantik**—dramatic presentation of a specific event, (2) **praatishrut**—dramatic presentation of an epic like *Ramayana* and *Mahabharat*, (3) **samanyatovinipatik**—acting of a king, minister or other such characters, also dramatic presentation of different moods like laughter and weeping, and (4) **lokamadhyavasit**—dramatic presentation of different states of human life and different cultures and dresses

***विमान–पद* VIMAAN-PAD (SEGMENT OF CELESTIAL VEHICLES)**

६३८. सणंकुमार–माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा चउवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—णीला, लोहिता, हालिद्दा, सुक्किल्ला।

६३८. सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पो मे चार वर्ण वाले विमान है–(१) नील, (२) लोहित (रक्त), (३) हारिद्र (पीत), (४) शुक्ल (श्वेत) वर्ण वाले।

638. The *vimaans* (celestial vehicles) in Sanatkumar and Mahendra Kalps (specific divine realms) are of four colours—(1) *nila* (blue), (2) *lohit* (red), (3) *haridra* (yellow) and (4) *shukla* (white)

६३९. महासुक्क–सहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

६३९. महाशुक्र और सहस्रारकल्पो मे देवो के भवधारणीय (जन्मजात शरीर) शरीर की उत्कृष्ट ऊँचाई चार रत्नि–प्रमाण (चार हाथ) प्रमाण होती है।

639. The maximum height of the *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining body or normal body) of the gods in Mahashukra and Sahasrar Kalps is four *Ratni* (cubits)

गर्भ–पद GARBH-PAD (SEGMENT OF WOMB)

६४०. चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता, तं जहा–उस्सा, महिया, सीता, उसिणा।

६४०. उदक के चार गर्भ (जलवर्षा के कारण) कहे है (१) ओस, (२) मिहिका (कुहरा, धूँवर), (३) अति शीतलता, (४) अति उष्णता।

640. There are four *garbh* (wombs or sources) of *udak* (water or rain)—(1) *os* (dew), (2) *mihika* (fog), (3) *sheet* (excessive cold) and (4) *ushna* (excessive heat)

६४१. चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता, तं जहा–हेमगा, अब्भसंथडा, सीतोसिणा, पंचरूविया।

माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसंथडा।
सीतोसिणा उ चित्ते, वइसाहे पंचरूविया॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

६४१. उदक के चार गर्भ कहे है–(१) हिमपात, (२) आकाश का मेघो से आच्छादित रहना, (३) अति शीतोष्णता, (४) पचरूपिका।

(१) माघ मास मे हिमपात से। फाल्गुन मास मे आकाश बादलो से आच्छादित रहने से। चैत्र मास मे अतिशीत और अति उष्णता से, तथा वैशाख मास मे पचरूपिका से उदक–गर्भ रहता है। वायु, बादल गरज, बिजली और जल इन्हे पचरूपिका कहते है।

641. There are four *garbh* (wombs or sources) of *udak* (water or rain)—(1) *himapaat* (snowfall), (2) cloud covered sky, (3) *ati sheetoshnata* (excess of cold and heat), and (4) *pancharupika* (five signs—air, clouds, thunder, lightening and water)

Rain is caused by snowfall in the month of Magh, by cloud covered sky in the month of Phalgun, by excessive cold and heat in the month of

Chaitra, and by five things (air, clouds, thunder, lightening and water) in the month of Vaishakh (1) (Collative Verse)

६४२. चत्तारि मणुस्सीगब्भा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए, णपुंसगत्ताते, बिंबत्ताए।

अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थी तत्थ पजायति।
अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ जायति॥१॥

दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे णपुंसओ।
इत्थी ओय—समायोगे, बिंबं तत्थ पयायति॥२॥ (संग्रहणी—गाथा)

६४२. मनुष्य स्त्री के गर्भ चार प्रकार के होते है (१) स्त्री के रूप मे, (२) पुरुष के रूप मे, (३) नपुसक के रूप मे, (४) बिम्ब रूप मे।

(१) जब गर्भ काल मे पुरुष का शुक्र (वीर्य) अल्प और स्त्री का ओज (रज) अधिक होता है, तब उस गर्भ से स्त्री उत्पन्न होती है। जब ओज अल्प और शुक्र अधिक होता है, तो उस गर्भ से पुरुष उत्पन्न होता है।

(२) जब रक्त (रज) और शुक्र इन दोनो की समान मात्रा होती है, तब नपुसक उत्पन्न होता है। वायु विकार के कारण स्त्री के ओज (रक्त) के समायोग से (जम जाने से) बिम्ब उत्पन्न होता है।

642. The human embryo in the womb of a woman is of four kinds—(1) as female, (2) as male, (3) as eunuch and (4) as image (lump)

When at the time of conception the number of sperms is less than that of ova a female embryo is formed in the womb When the number of sperms is more than that of ova a male embryo is formed (1)

When the number of sperms and ova is same an eunuch embryo is formed When ova fuse and solidify due to disturbed air (one of the body humours) an image or lump is formed (2) (Collative Verse)

विवेचन—पुरुष-सयोग के बिना भी स्त्री का रज वायु विकार से पिण्ड रूप मे गर्भ-स्थित होकर बढने लगता है, वह गर्भ के समान बढने से बिम्ब या प्रतिबिम्बरूप गर्भ कहा जाता है, पर उससे सन्तान का जन्म नही होता। किन्तु एक गोल-पिण्ड निकल कर फूट जाता है। आयुर्वेद के ग्रन्थ भी इस बात का समर्थन करते है।

Elaboration—Without being fertilized by a sperm ova combine and start growing into a lump due to disturbed humours As it continues to grow like a fetus but does not form into a child it is called a mirror image like fetus It comes out as a large lump and disintegrates Ayurveda confirms this

पूर्ववस्तु–पद PURVAVASTU-PAD (SEGMENT OF PURVAVASTU)

६४३. उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि चूलवत्थु पण्णत्ता।

६४३. उत्पाद पूर्व (चतुर्दश पूर्वगत श्रुत का प्रथम भेद) के चूलावस्तु नामक चार अधिकार है, अर्थात् उसमे चार चूलाएँ थी।

643. *Utpaad Purva* (the first volume of the fourteen volume subtle canon) has four sections named Chulavastu In other words it had four *Chulas* (appendices)

काव्य–पद KAVYA-PAD (SEGMENT OF POETRY)

६४४. चउव्विहे कव्वे पण्णत्ते, तं जहा–गज्जे, पज्जे, कत्थे, गेए।

६४४. काव्य चार प्रकार के कहे है–(१) गद्य-काव्य, (२) पद्य-काव्य, (३) कथ्य-काव्य (कथा प्रधान, (४) गेय-काव्य (गीति-प्रधान)

644. *Kavya* (poetry) is of four kinds—(1) *gadya-kavya* (prose-poetry), (2) *padya-kavya* (poetry), (3) *kathya-kavya* (narrative poetry) and (4) *geya-kavya* (song)

समुद्घात–पद SAMUDGHAT-PAD (SEGMENT OF SAMUDGHAT)

६४५. णेरइयाणं चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा–वेयणासमुग्घाते, कसायसमुग्गघाते, मारणंतियसमुग्घाते, वेउव्वियसमुग्घाते। ६४६. एवं–वाउक्काइयाणवि।

६४५. नारक जीवो के चार समुद्घात होते है (१) वेदना–समुद्घात, (२) कषाय-समुद्घात, (३) मारणान्तिक-समुद्घात (मृत्यु काल मे), (४) वैक्रिय-समुद्घात। ६४६. इसी प्रकार वायुकायिक जीवो के भी चार समुद्घात होते है।

645. *Naarak jivas* (infernal beings) have four kinds of *Samudghat* (bursting, the process employed for transmutation and transformation)—(1) *Vedana Samudghat*, (2) *Kashaya Samudghat*, (3) *Maranantik Samudghat* and (4) *Vaikriya Samudghat* **646.** In the same way air-bodied beings also have four kinds of *Samudghat*

विवेचन–मूल शरीर को नही छोडते हुए किसी कारण–विशेष से जीव के कुछ आत्म प्रदेशो का शरीर से बाहर निकलना समुद्घात है। समुद्घात के सात भेद आगे सातवे स्थान सूत्र १३८ मे कहे गये है। उनमे से नारक और वायुकायिक जीवो मे केवल चार समुद्घात होते है।

(१) वेदना की तीव्रता से जीव के कुछ प्रदेशो का बाहर निकलना **वेदनासमुद्घात** है।

(२) कषाय की तीव्रता से जीव के कुछ प्रदेशो का बाहर निकलना **कषायसमुद्घात** है।

(३) मारणान्तिक दशा मे मरण के अन्तर्मुहूर्त पहले, जीव के कुछ प्रदेश निकल कर जहाँ उत्पन्न होना है, वहाँ तक फैलते चले जाते है और उस स्थान का स्पर्श कर वापिस शरीर मे प्रविष्ट हो जाते है। इसे **मारणान्तिक समुद्घात** कहते है। इसके कुछ क्षण के बाद जीव का मरण होता है।

(४) शरीर के छोटे-बडे आकारादि बनाने को **वैक्रिय समुद्घात** कहते है। नारक जीवो के समान वायुकायिक जीवो के भी निमित्त विशेष से शरीर छोटे-बडे रूप मे सकुचित-विस्तृत होते रहते है। अत उनके वैक्रिय समुद्घात बताया है।

Elaboration—The process of bursting forth of some soul-space-points for some specific purpose and without completely abandoning the body is called *Samudghat* Seven classes of *Samudghat* are mentioned in aphorism 138 of the Seventh Sthaan of this book Out of these, infernal beings and air-bodied beings have only four types

(1) Bursting forth of some soul-space-points due to intensity of pain is called *Vedana Samudghat*

(2) Bursting forth of some soul-space-points due to intensity of passions is called *Kashaya Samudghat*

(3) One *Antarmuhurt* before the moment of death some soul-space-points burst forth and shrink back after spreading and touching the place of rebirth This process is called *Maranantik Samudghat* A few moments after this the being dies

(4) Employing the said process to create small or large bodies is called *Vaikriya Samudghat*

Like infernal beings, air-bodied beings also continue to expand and shrink into large and small bodies under specific conditions Therefore they are capable of undergoing *Vaikriya Samudghat*

चतुर्दशपूर्वि-पद CHATURDASH PURVI-PAD (SEGMENT OF CHATURDASH PURVI)

६४७. अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसण्णिवाईणं जिणो इव अवितथं वागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था।

६४७. अरहन्त अरिष्टनेमि के शासन मे चतुर्दश-पूर्व-वेत्ता मुनियो की चार सौ उत्कृष्ट सपदा थी। वे जिन नही होते हुए भी जिनके समान **सर्वाक्षरसन्निपाती**-(सभी अक्षरो के सयोग से बने सयुक्त पदो के और उनसे निर्मित बीजाक्षरो के ज्ञाता) थे, तथा 'जिन' के समान ही सत्य कथन करने वाले थे। यह अरिष्टनेमि के शासन मे चौदह पूर्वियो की उत्कृष्ट सम्पदा थी।

647. During the *shaasan* (period of influence) of Arhant Arishtanemi the number of ascetic scholars of fourteen *Purvas* was four hundred Although not *Jina*, they were *sarvakshar-sannipati* (a scholar who knows all the innumerable permutations and combinations of all the sixty four letters of the alphabet) like a *Jina* and uttered truth just like a *Jina* This was the maximum number of *Chaturdash Purvis* during the period of influence of Arishtanemi

वादि–पद VAADI-PAD (SEGMENT OF VADI)

६४८. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिता वादिसंपयां हुत्था।

६४८. श्रमण भगवान महावीर के सघ मे चार सौ वादी मुनियो की उत्कृष्ट सम्पदा थी। वे देव-मनुज और असुरो की परिषद् मे सर्वथा अपराजित और अजेय थे।

648. In the *sangh* (religious organization) of Shraman Bhagavan Mahavir the maximum number of *vaadi munis* (debater ascetics) was four hundred They were absolutely undefeated and unconquerable in any assembly of gods, men and *Asurs* (demons or lower gods)

कल्पविमान–पद KALP-VIMAAN-PAD (SEGMENT OF DIVINE REALMS)

६४९. हेठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे, ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे। ६५०. मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—बंभलोगे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे। ६५१. उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—आणते, पाणते, आरणे, अच्चुते।

६४९. अधस्तन (नीचे के) पहले चार कल्प अर्धचन्द्र आकार वाले है–(१) सौधर्मकल्प, (२) ईशानकल्प, (३) सनत्कुमारकल्प, (४) माहेन्द्रकल्प। ६५०. मध्यवर्ती चार कल्प पूर्ण चन्द्र के आकार वाले है–(१) ब्रह्मलोककल्प, (२) लान्तककल्प, (३) महाशुक्रकल्प, (४) सहस्रारकल्प। ६५१. ऊपर के चार कल्प अर्ध चन्द्र के आकार वाले है–(१) आनतकल्प, (२) प्राणतकल्प, (३) आरणकल्प, (४) अच्युतकल्प।

649. The four lowest *kalps* (divine realms) are half-moon in shape—(1) Saudharma *kalp*, (2) Ishan *kalp*, (3) Sanatkumar *kalp* and (4) Maahendra *kalp* **650.** The four middle *kalps* (divine realms) are full-moon shaped—(1) Brahmalok *kalp*, (2) Lantak *kalp*, (3) Mahashukra *kalp* and (4) Sahasrar *kalp* **651.** The four highest *kalps* (divine realms) are half-moon in shape—(1) Aanat *kalp*, (2) Praanat *kalp*, (3) Aaran *kalp* and (4) Achyut *kalp*

समुद्र-पद SAMUDRA-PAD (SEGMENT OF SEAS)

६५२. चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता, तं जहा—लवणोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घतोदे।

६५२. चार समुद्र प्रत्येक रस (भिन्न-भिन्न रस) वाले है-(१) लवणोदक—लवण-रस के समान खारा (नमकीन) पानी। (२) वरुणोदक—मदिरा-रस के समान नशीला पानी। (३) क्षीरोदक—दुग्ध-रस के समान श्वेत, मधुर पानी। (४) घृतोदक—घृत-रस के समान स्निग्ध पानी।

652. There are four seas having different *rasa* (taste or quality)—**(1) Lavanodak**—with salt-like salty water, **(2) Varunodak**—with wine-like intoxicating water, **(3) Kshirodak**—with milk-like white and sweet water and **(4) Ghritodak**—with butter-like oily water

कषाय-पद KASHAYA-PAD (SEGMENT OF PASSIONS)

६५३. चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता, तं जहा—खरावत्ते, उण्णतावत्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते।

एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—खरावत्तसमाणे कोहे, उण्णतावत्तसमाणे माणे, गूढावत्तसमाणा माया, आमिसावत्तसमाणे लोभे।

(१) खरावत्तसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति।

(२) (उण्णतावत्तसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति।

(३) गूढावत्तसमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उवजति)।

(४) आमिसावत्तसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववजति।

६५३. चार आवर्त (भँवर-गोलाकार घुमाव) कहे है-(१) खरावर्त—अतिवेगशाली जल-तरगो के मध्य होने वाला गोलाकार भँवर। (२) उन्नतावर्त—पर्वत-शिखर के ऊपर चढने का घुमावदार मार्ग, या वायु का गोलाकार बवडर। (३) गूढावर्त—गेद व वनस्पतियो के भीतर की गाँठ के समान एक के भीतर एक छिपे गोलाकर आवर्त। (४) आमिषावर्त—माँस के लिए मँडराने वाले गिद्ध आदि पक्षियो का आकाश मे चक्कर काटना।

इसी प्रकार कषाय भी चार प्रकार के कहे है-(१) खरावर्त-समान-क्रोध कषाय। (२) उन्नतावर्त-समान-मान कषाय। (३) गूढावर्त-समान-माया कषाय। (४) आमिषावर्त-समान-लोभ कषाय।

इन चार कषायो मे फँसा जीव काल करके नारको मे उत्पन्न होता है।

653. There are four kinds of *aavart* (spirals)—**(1) Kharavart**—whirlpool like spiral **(2) Unnatavart**—whirlwind like spiral or one like a winding path uphill **(3) Goodhavart**—spiral like concealed layers inside a ball or a knot in a plant **(4) Amishavart**—spiral resembling the path of a vulture hovering over a carcass

In the same way *kashaya* (passions) are of four kinds—(1) anger is like *kharavart*, (2) conceit is like *unnatavart*, (3) deceit is like *goodhavart* and (4) greed is like *amishavart* A being trapped in these four passions goes to hell after death

नक्षत्र–पद **NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)**

६५४. अणुराहाणक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते। ६५५. पुव्वासाढा (णक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते)। ६५६. एवं चेव उत्तरासाढा (णक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते)।

६५४. अनुराधा नक्षत्र के चार तारे है। ६५५. पूर्वाषाढा नक्षत्र के चार तारे है। ६५६. इसी प्रकार उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे है।

654. Anuradha (Delta Scorpii) constellation has four stars **655.** Purva Ashadha (Delta Sagittarii, the) constellation has four stars **656.** In the same way Uttara Ashadha (Sigma Sagittarii, the) constellation has four stars

पापकर्म–पद **PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMA)**

६५७. जीवा णं चउट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा–णेरइयणिव्वत्तिते, तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिते, मणुस्सणिव्वत्तिते, देवणिव्वत्तिते। ६५८. एवं–उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा। एवं–चिण–उवचिण–बंध–उदीर–वेय तह णिज्जरा चेव।

६५७. अतीत मे सभी जीवो ने इन चार कारणो से उपार्जित कर्म-पुद्गलो को पाप कर्म रूप मे सचित किया है, वर्तमान मे सचित कर रहे है और भविष्य मे सचित करेगे। जैसे-(१) नैरयिक निर्वर्त्तित, (२) तिर्यग्योनिक निर्वर्त्तित, (३) मनुष्य निर्वर्त्तित, (४) देवनिर्वर्तित। ६५८. इसी प्रकार जीवो ने उक्त नैरयिक आदि चारो स्थानो से उपार्जित कर्म पुद्गलो का उपचय, बध, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, कर रहे है और करेगे।

657. All beings did, do and will acquire (*sanchit*) *karma* particles in the form of demeritorious *karmas* in the past, present and future respectively four ways—(1) *nairayik nirvartit* (earned as infernal beings), (2) *tiryagyonik nirvartit* (earned as animals), (3) *manushya nirvartit* (earned as human beings) and (4) *deva nirvartit* (earned as divine beings) **658.** In the same way all beings did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the acquired *karma* particles in the past, present and future respectively in aforesaid four ways

पुद्गल–पद **PUDGAL-PAD (SEGMENT OF**

६५९. चउपदेसिया खंधा अणंता पण्णत्ता। ६६०. चउपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। ६६१. चउसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता पण्णत्ता। ६६२. चउगुणकालगा पोग्गला अणंता जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

६५९. चार प्रदेश वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। ६६०. आकाश के चार प्रदेशो मे अवगाहना वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। ६६१. चार समय की स्थिति वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। ६६२. चार काले गुण वाले पुद्गल अनन्त है।

इसी प्रकार सभी वर्ण, सभी गन्ध, सभी रस और सभी स्पर्शो के चार–चार गुण वाले पुद्गल अनन्त है।

659. There are infinite *chaturpradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of four ultimate particles) **660.** There are infinite *chaturpradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate' particles occupying four space-points) **661.** There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with stability of four *Samayas* **662.** There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with four units of the attribute of black appearance

In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with four units each of attribute of appearance, smell, taste, and touch

॥ चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

● END OF THE FOURTH LESSON ●

॥ चतुर्थ स्थान समाप्त ॥

● END OF THE FOURTH STHAAN ●

पंचम स्थान

प्राथमिक परिचय

इस स्थान मे पाँच की सख्या से सम्बन्धित विषयो का सकलन है। इस वर्गीकरण मे सैद्धान्तिक, तात्त्विक, आचार प्रधान, दार्शनिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, ज्योतिष्क और योग आदि अनेक विषयो से सम्बन्धित वर्णन है। सभी विषय ज्ञानवर्धक होने के साथ ही रोचक तथा व्यावहारिक जीवन मे उपयोगी भी है। जैसे-

(१) सैद्धान्तिक सन्दर्भ मे-इन्द्रियो के विषय, शरीरो का वर्णन, तीर्थभेद, आर्जवस्थान, देवो की स्थिति, क्रियाओ का वर्णन, शरीरावगाहनादि विषयो का वर्णन।

(२) चारित्र-सम्बन्धी चर्चा मे-पाँच अणुव्रत-महाव्रत, पाँच प्रतिमा, गोचरी के भेद, वर्षावास, राजान्त पुरप्रवेश, निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी का एकत्र निवास, पाँचप्रकार की परिज्ञाएँ, पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी-अवलम्बनादि।

(३) तात्त्विक चर्चा मे-कर्मनिर्जरा के कारण, आस्रव-सवर के द्वार, पाँच प्रकार के दण्ड, सवर-असवर, सयम-असयम, बन्ध आदि पदो के द्वारा अनेक विषयो को सकलन।

(४) भौगोलिक चर्चा मे-महानदी, वक्षस्कार-पर्वत, महाद्रह, जम्बूद्वीपादि अढाईद्वीप, महानरक, महाविमान आदि।

ऐतिहासिक चर्चा मे-राजचिह्न, पचकल्याणक, ऋद्धिमान् पुरुष, कुमारावस्था मे प्रव्रजित तीर्थंकर आदि की चर्चा।

इनके अतिरिक्त गेहूँ, चने आदि धान्यो की उत्पादनशक्ति, स्त्री-पुरुषो की प्रवीचारणा, देवो की सेना के प्रकार और उसके सेनापतियो के नाम, गर्भ-धारण के प्रकार, गर्भ के अयोग्य स्त्रियो का निरूपण, सुप्त-जागृत सयमी-असयमी अन्तर और सुलभ-दुर्लभ बोधि का विवेचन भी पठनीय तथा मननीय है। इस स्थान के तीन उद्देशक है।

विषय की ज्ञानवर्धकता और उपयोगिता की दृष्टि से एव वर्णन की सरस शैली का एक उदाहरण देखे-

पाँच प्रकार का शौच है-(१) **मिट्टी**-(बर्तन आदि की शुद्धि के लिए), (२) **जल**-(वस्त्र, पात्र आदि की शुद्धि के लिए), (३) **अग्नि**-(धातु आदि की शुद्धि के लिए), (४) **मत्र**-(मन एव वायुमण्डल की शुद्धि के लिए), (५) **ब्रह्मचर्य**-(आत्मा की शुद्धि के लिए)। (उद्देशक ३, सूत्र १९४) इसी प्रकार अन्य विषय भी ज्ञानवर्धक है।

FIFTH STHAAN (PLACE NUMBER FIVE)

INTRODUCTION

This *Sthaan* contains subjects related to numeral five This numerical classification includes a wide range of subjects including metaphysics, ontology, conduct, philosophy, geography, history, astrology and yoga All the topics discussed are edifying as well as interesting and useful in normal mundane life For example—

(1) In metaphysical context topics like subjects of sense organs, description of bodies, organizational differences, places of simplicity, state of divine beings, description of activities, space occupied by different bodies are included

(2) In discussion about conduct many interesting topics have been covered under titles like five minor and great vows, five self restraints, kinds of alms collection, monsoon stay, entry into palace, stay of male and female ascetics at same place, five kinds of awareness, and five kinds of supports related to ascetics

(3) In ontological context topics like causes of inflow and blockage of *karmas*, five kinds of punishments, blockage and non-blockage of *karmas*, discipline and indiscipline, and *karmic* bondage are included

(4) The geographic topics include great rivers, *Vakshaskar* mountains, great lakes, Jambu continent, Adhai dveep, most dingy hells, and great divine dimensions

(5) The historical topics include state insignia, five auspicious events, grand individuals, and *Tirthankars* initiated before marriage

Besides these, other interesting topics discussed are—cereals like wheat and gram, sexual gratification of men and women, types of divine armies with names of their commanders, kinds of conceptions, description of women incapable of conceiving, difference between states of awakening and stupor as well as discipline and indiscipline, and easy and difficult understanding of true knowledge This *Sthaan* has three lessons

An example of interesting style and informative and useful narration is—

Cleansing is of five kinds—(1) *mitti* (earth for cleansing utensils), (2) *jal* (water for clearing clothes, bowls etc), (3) *agni* (for metals), (4) mantra (for purifying mind and environment) and (5) *brahmacharya* (for soul) (lesson 3, aphorism 194) In the same way other topics are also extremely informative

●●

पंचम स्थान : प्रथम उद्देशक
FIFTH STHAAN (Place Number Five) : FIRST LESSON

महाव्रत–अणुव्रत पद **MAHAVRAT-ANUVRAT-PAD**
(SEGMENT OF MINOR AND GREAT VOWS)

१. पंच महव्वया पण्णत्ता, तं जहा–सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं जाव [सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं], सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।

१. महाव्रत पाँच है-(१) सर्व प्रकार के **प्राणातिपात** (जीव-घात) से विरमण-(निवृत्ति) (२) सर्व प्रकार के **मृषावाद** (असत्य-भाषण) से विरमण। (३) सर्व प्रकार के **अदत्तादान** (चोरी) से विरमण। (४) सर्व प्रकार के **मैथुन** से विरमण। (५) सर्व प्रकार के **परिग्रह** से विरमण।

1. There are five *mahavrats* (great vows)—(1) *Sarva Pranatipat viraman* (to abstain completely from harming or destroying life) (2) *Sarva Mrishavad viraman* (to abstain completely from falsity) (3) *Sarva Adattadan viraman* (to abstain completely from acts of stealing) (4) *Sarva Maithun viraman* (to abstain completely from indulgence in sexual activities) (5) *Sarva Parigraha viraman* (to abstain completely from acts of possession of things)

२. पंचाणुव्वया पण्णत्ता, तं जहा–थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे।

२. अणुव्रत पॉच है-(१) स्थूल **प्राणातिपात** (त्रस जीव-घात) से विरमण। (२) स्थूल **मृषावाद** (लोक विरुद्ध असत्य भाषण) से विरमण। (३) स्थूल **अदत्तादान** (राज-दण्ड, लोक दण्ड देने वाली चोरी) से विरमण। (४) स्वदारसन्तोष-(पर-स्त्री सेवन से विरमण व स्वपत्नी मे सन्तोष)। (५) इच्छापरिमाण-(इच्छा-परिग्रह का सीमाकरण।

2. There are five *anuvrats* (great vows)—(1) *Sthula Pranatipat viraman* (to abstain from harming or destroying gross life or mobile beings) (2) *Sthula Mrishavad viraman* (to abstain from gross falsity or defying social norms of truthfulness) (3) *Sthula Adattadan viraman* (to abstain from gross acts of stealing or those inviting social or state punishment) (4) *Svadaar santosh* (to abstain from extramarital sexual activities) (5) *Ichchha parimaan* (to restrict desires)

इन्द्रिय विषय-पद INDRIYA VISHAYA-PAD (SEGMENT OF SUBJECTS OF SENSE ORGANS)

३. पंच वण्णा पण्णत्ता, तं जहा–किण्हा, णीला, लोहिता, हालिद्दा, सुक्किल्ला।

३. वर्ण-(चक्षु इन्द्रिय का विषय) रंग पाँच है (१) कृष्ण, (२) नील, (३) लोहित (लाल), (४) हरिद्र (पीला), (५) शुक्ल।

3. There are five *varnas* (subject of eyes, colours)—(1) *krishna* (black), (2) *neel* (blue), (3) *lohit* (red), (4) *haridra* (yellow) and (5) *shukla* (white)

४. पंच रसा पण्णत्ता, तं जहा–तित्ता (कडुया, कसाया, अंबिला), मधुरा।

४. रस पाँच है-(रसनेन्द्रिय का विषय) (१) तिक्त (तीखा), (२) कटु, (३) कषाय (कसैला), (४) आम्ल (खट्टा), (५) मधुर।

4. There are five *rasas* (subject of tongue, taste)—(1) *tikta* (bitter), (2) *katu* (pungent), (3) *kashaya* (astringent), (4) *amla* (sour) and (5) *madhur* (sweet)

५. पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा–सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा।

५. कामगुण पाँच है-(१) शब्द, (२) रूप, (३) गन्ध, (४) रस, (५) स्पर्श।

5. *Kamaguna* (physical desires) are of five kinds—(1) *shabd* (sound), (2) *rupa* (form or appearance), (3) *gandh* (smell), (4) *rasa* (taste) and (5) *sparsh* (touch)

विवेचन–काम–का अर्थ है अभिलाषा और गुण का अर्थ है, पुद्गल का स्वभाव या परिणति। *(विशेष वर्णन व चित्र देखे अनुयोग द्वार भाग २ पृष्ठ २७०)*

Elaboration—*Kama* means desires and *guna* means physical attributes and transformations *(for more details refer to illustration in Illustrated Anuyogadvar Sutra Part-2, p 270)*

६. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति, तं जहा–सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं।

६. पाँच स्थानो (विषयो) मे जीव आसक्त होते है-(१) शब्दो मे, (२) रूपो मे, (३) गन्धो मे, (४) रसों मे, (५) स्पर्शों मे।

6. Beings have cravings for five *sthaans* (subjects)—(1) for *shabd* (sound), (2) for *rupa* (form or appearance), (3) for *gandh* (smell), (4) for *rasa* (taste) and (5) for *sparsh* (touch)

७. एवं रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अज्झोववज्जंति। (पंचेहिं ठाणेहिं जीवा रज्जंति, तं जहा–सद्देहिं, जाव (रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं) फासेहिं। ८. पंचहिं ठाणेहिं जीवा मुच्छंति, तं जहा–सद्देहिं,

रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं। ९. पंचहिं ठाणेहिं जीवा गिज्झंति, तं जहा–सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं। १०. पंचहिं ठाणेहिं जीवा अज्झोववज्जंति, तं जहा–सद्देहिं, रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं, फासेहिं। ११. पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति, तं जहा–सद्देहिं, जाव (रूवेहिं, गंधेहिं, रसेहिं), फासेहिं।

७. इन पाँच स्थानो मे जीव अनुरक्त होते है–(१) शब्दो मे, (२) रूपो मे, (३) गन्धो मे, (४) रसो मे, (५) स्पर्शों मे। ८. पाँच स्थानो मे जीव मूर्च्छित होते है–(१) शब्दो मे, (२) रूपो मे, (३) गन्धो मे, (४) रसो में, (५) स्पर्शो मे। ९. पाँच स्थानो मे जीव गृद्ध होते है–(१) शब्दो मे, (२) रूपो मे, (३) गन्धो मे, (४) रसो मे, (५) स्पर्शों मे। १०. पाँच स्थानो मे जीव अध्युपपन्न (अत्यासक्त) होते है–(१) शब्दो मे, (२) रूपो मे, (३) गन्धो मे, (४) रसो मे, (५) स्पर्शों मे। ११. पाँच स्थानो से जीव विनिघात (मरण या विनाश) को प्राप्त होते है–(१) शब्दो से, (२) रूपो से, (३) गन्धो से, (४) रसो से, (५) स्पर्शों से।

7. Beings get attracted (*anurakt*) to five *sthaans* (subjects)—(1) to *shabd* (sound), (2) to *rupa* (form or appearance), (3) to *gandh* (smell), (4) to *rasa* (taste) and (5) to *sparsh* (touch) **8.** Beings get fond of (*murchchhit*) in five *sthaans* (subjects)—(1) of *shabd* (sound), (2) of *rupa* (form or appearance), (3) of *gandh* (smell), (4) of *rasa* (taste) and (5) of *sparsh* (touch) **9.** Beings get infatuated with (*griddha*) five sthaans (subjects)—(1) with *shabd* (sound), (2) with *rupa* (form or appearance), (3) with *gandh* (smell), (4) with *rasa* (taste) and (5) with *sparsh* (touch) **10.** Beings get obsessed with five *sthaans* (subjects)—(1) with *shabd* (sound), (2) with *rupa* (form or appearance), (3) with *gandh* (smell), (4) with *rasa* (taste) and (5) with *sparsh* (touch) **11.** Beings get destroyed (*vinighaat*) by five *sthaans* (subjects)—(1) by *shabd* (sound), (2) by *rupa* (form or appearance), (3) by *gandh* (smell), (4) by *rasa* (taste) and (5) by *sparsh* (touch)

विवेचन–सग, राग, मूर्च्छा आदि पाँचो शब्द मन की आसक्ति की क्रामिक तीव्रता के सूचक है। जैसे–(१) संग–इन्द्रिय विषयो के साथ सम्बन्ध, (२) राग–इन्द्रिय विषयो से गहरा लगाव। (३) मूर्च्छा–इन्द्रिय विषयो के सेवन से उत्पन्न दोषो को नही देखना तथा उनके सरक्षण के लिए चिन्तन करना। (४) गृद्धि–प्राप्त विषयो के प्रति असतोष और अप्राप्त विषयो की आकाक्षा, (५) अध्युपपन्नता–विषयो के सेवन मे एकचित्त हो जाना तथा उनकी प्राप्ति के लिए व्यग्र होकर चिन्तन करना *(वृत्ति भाग २ पृष्ठ ५०२)*

Elaboration—The five terms including *sang* (contact), *raag* (attachment) and *murchchha* (fondness) present the gradual increase in intensity of obsession For example—(1) *Sang* is contact with subjects of sense organs (2) *Raag* is attachment with them (3) *Murchchha* is to

ignore the setbacks due to indulgence and to think of perpetuating the experience (4) *Griddhi* is discontent with the acquired and wish to acquire more (5) *Adhyupapannata* is to get fully absorbed in indulgence and intensely think for more *(Vritti Part-2, p 502)*

१२. पंच ठाणा अपरिण्णाता जीवाणं अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेस्साए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा–सद्दा जाव (रूवा, गंधा, रसा), फासा। १३. पंच ठाणा सुपरिण्णाता जीवाणं हिताए सुभाए, जाव (खमाए णिस्सेस्साए) आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा–सद्दा, जाव (रूवा, गंधा, रसा), फासा।

१२. पाँच स्थान अपरिज्ञात होने से जीवो के अहित के लिए, अशुभ के लिए, अक्षमता के लिए, अनि श्रेयस् के लिए और अननुगामिता के लिए होते है-(१) शब्द, (२) रूप, (३) गन्ध, (४) रस, (५) स्पर्श। १३. ये ही शब्द आदि पाँच स्थान सुपरिज्ञात होने से जीवो के हित के लिए, शुभ के लिए, क्षमता के लिए, नि श्रेयस् के लिए और अनुगामिता के लिए होते है।

12. When aparijnat (not properly known and not consciously renounced) five sthaans (subjects) entail *ahit* (harm), *ashubh* (demerit), *akshamata* (shortcomings), *anihshreyas* (misfortune) and *ananugamita* (dereliction)—(1) *shabd* (sound), (2) *rupa* (form or appearance), (3) *gandh* (smell), (4) *rasa* (taste) and (5) *sparsh* (touch) **13.** When *suparijnat* (known and renounced) these very five *sthaans* (subjects) entail *hit* (benefit), *shubh* (merit), *kshamata* (ability), *nihshreyas* (fortune) and *anugamita* (endowment)

विवेचन–अपरिज्ञात का भाव है–इनको जाने बिना और त्याग किये बिना। **सुपरिज्ञात** का अर्थ है-जाने और प्रत्याख्यान करे। (१) **अहित**–अपाय या अनिष्ट। (२) **अशुभ**–पुण्य रहित। (३) **अक्षम**–असामर्थ्य या अनौचित्य, (४) **अनिःश्रेयस**–अकल्याण, (५) **अननुगामिता**–परलोक आदि मे उपकार की दृष्टि से साथ नही देने वाला। वैसे प्रतिपाद्य विषय पर अधिक बल देने के लिए इन शब्दो का प्रयोग किया गया है। *(वृत्ति भाग २ पृष्ठ ५०३)*

Elaboration—*Aparijnat* indicates—without knowing and renouncing these *Suparijnat* indicates—to know and renounce these *Ahit*—harm or injury *Ashubh*—devoid of *punya* or merit *Akshamata*—inability or shortcomings *Anihshreyas*—misfortune or detriment *Ananugamita*—state of being deserted by virtues that lead to future beatitude These terms have been used here for special emphasis on the subject under reference *(Vritti Part-2, p 503)*

१४. पंच ठाणा अपरिण्णाता जीवाणं दुग्गतिगमणाए भवंति, तं जहा–सद्दा, जाव (रूवा, गंधा, रसा), फासा। १५. पंच ठाणा सुपरिण्णाता जीवाणं सुगतिगमणाए भवंति, तं जहा–सद्दा, जाव (रूवा, गंधा, रसा), फासा।

१४. निम्न पाँच स्थान जब अपरिज्ञात होते है तो जीवो के दुर्गतिगमन के कारण होते है– (१) शब्द, (२) रूप, (३) गन्ध, (४) स्पर्श। १५. उक्त शब्द आदि पाँच स्थान सुपरिज्ञात होने पर जीवो के सुगतिगमन के कारण होते है।

14. If *aparijnat* (not known and not renounced) five *sthaans* (subjects) cause *durgati* (bad rebirth)—(1) *shabd* (sound), (2) *rupa* (form or appearance), (3) *gandh* (smell), (4) *rasa* (taste) and (5) *sparsh* (touch) **15.** If *parijnat* (known and renounced) these very five *sthaans* (subjects) cause *sugati* (good rebirth)

आस्रव–संवर–पद ASRAVA-SAMVAR-PAD (SEGMENT OF INFLOW AND BLOCKAGE OF KARMAS)

१६. पंचहिं ठाणेहिं जीवा दोग्गतिं गच्छति, तं जहा–पाणातिवातेणं जाव (मुसावाएणं, अदिण्णादाणेणं, मेहुणेणं), परिग्गहेणं। १७. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सोग्गतिं गच्छंति, तं जहा–पाणातिवातवेरमणेणं जाव (मुसावायवेरमणेणं, अदिण्णादाणवेरमणेणं,) परिग्गहवेरमणेणं।

१६. निम्न पॉच कारणो से जीव दुर्गति को प्राप्त होते है–(१) प्राणातिपात से, (२) मृषावाद से, (३) अदत्तादान से, ४ मैथुन से, (५) परिग्रह से। १७. पॉच कारणो- प्राणातिपातन आदि यावत् परिग्रह के विरमण से जीव सुगति मे जाते है।

16. Five reasons for bad rebirth of beings are—(1) *Pranatipat* (harming or destroying life) (2) *Mrishavad* (falsity) (3) *Adattadan* (stealing) (4) *Maithun* (indulgence in sexual activities) (5) *Parigraha* (acts of possession of things) **17.** Five reasons cause good rebirth of beings—*viraman* (abstaining) from the said five acts including *Pranatipat* (harming or destroying life)

प्रतिमा–पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)

१८. पंच पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वतोभद्दा, भद्दुत्तरपडिमा।

१८. प्रतिमाएँ–(तप साधना की विशिष्ट विधियाँ) पाँच है–(१) भद्रा प्रतिमा, (२) सुभद्रा प्रतिमा, (३) महाभद्रा प्रतिमा, (४) सर्वतोभद्रा प्रतिमा, (५) भद्रोत्तर प्रतिमा। इनका विवेचन दूसरे स्थान के सूत्र २४३ पर किया जा चुका है।

18. There are five *pratimas* (special codes of austesities)—(1) *bhadraa pratima*, (2) *subhadraa pratima*, (3) *mahabhadraa pratima*, (4) *sarvatobhadraa pratima* and (5) *bhadrotar pratima* (for details refer to *Sthaan* two aphorism 243)

स्थावरकाय-पद STHAVARAKAYA-PAD (SEGMENT OF IMMOBILE BODIED BEINGS)

१९. पंच थावरकाया पण्णत्ता, तं जहा–इंदे थावरकाए, बंभे थावरकाए, सिप्पे थावरकाए, सम्मति थावरकाए, पायावच्चे थावरकाए।

१९. पाँच स्थावरकाय है–(१) इन्द्रस्थावरकाय–पृथ्वीकाय, (२)ब्रह्मस्थावरकाय -अप्काय, (३) शिल्पस्थावरकाय–तेजस्काय, (४) सम्मतिस्थावरकाय -वायुकाय, (५) प्रजापत्यस्थावरकाय–वनस्पतिकाय।

19. There are five *sthavarakaya* (immobile bodied beings)—(1) *Indrasthavarakaya—prithvikaya* (earth-bodied beings), (2) *Brahmasthavarakaya—apkaya* (water-bodied beings), (3) *Shilpasthavarakaya—tejaskaya* (fire-bodied beings), (4) *Sammatisthavarakaya—vayukaya* (air-bodied beings) and (5) *Prajapatyasthavarakaya—vanaspatikaya* (plant-bodied beings)

२०. पंच थावरकायाधिपती पण्णत्ता, तं जहा–इंदे थावरकायाधिपती, जाव (बंभे थावरकायाधिपती, सिप्पे थावरकायाधिपती, सम्मती थावरकायाधिपती), पायावच्चे थावरकायाधिपती।

२०. पाँच स्थावरकायो के अधिपति है–(१) पृथ्वी स्थावरकायाधिपति–इन्द्र। (२) अप्स्थावरकायाधिपति–ब्रह्मा। (३) तेजस् स्थावरकायाधिपति–-शिल्प। (४) वायु स्थावरकायाधिपति–सम्मति। (५) वनस्पति स्थावरकायाधिपति–प्राजापत्य।

20. There are five *adhipati* (overlords or ruling deities) of *sthavarakaya* (immobile bodied beings)—(1) *prithvi sthavarakayadhipati*—Indra, (2) *ap sthavarakayadhipati*—Brahma, (3) *tejas sthavarakayadhipati*—Shilpa, (4) *vayu sthavarakayadhipati*—Sammati and (5) *vanaspati sthavarakayadhipati*—Prajapatya

विवेचन–जिस प्रकार दिशाओ के अधिपति इन्द्र, अग्नि आदि है, नक्षत्रो के अधिपति अश्विव, यम आदि है, उसी प्रकार इन्द्र आदि पाँचों स्थावरकायो के अधिपति है। *(वृत्ति भाग २ पृष्ठ ५०४)*

Elaboration—Indra, Agni, Yama and others are overlords or ruling deities of cardinal directions and constellations, in the same way there are ruling deities of five classes of immobile bodied beings as listed above *(Vritti Part-2, p 504)*

अतिशेषज्ञान दर्शन-पद ATISHESH JNANA-DARSHAN-PAD

२१. पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए खंभाएज्जा, तं जहा–

(१) अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा।

(२) कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा।

(३) महतिमहालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा।

(४) देवं वा महिड्ढियं जाव (महज्जुइयं महाणुभागं महायसं महाबलं) महासोक्खं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा।

(५) पुरेसु वा पोराणाइं उरालाइं महतिमहालयाइं महाणिहाणाइं पहीणसामियाइं पहीणसेउयाइं पहीणगुत्तागाराइं; उच्छिण्णसामियाइं उच्छिण्णसेउयाइं उच्छिण्णगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागर–णगर–खेड–कब्बडमंडब–दोणमुहपट्टणासम–संबाह–सण्णिवेसेसु सिंघाडगतिग–चउक्क–चच्चर–चउम्मुह–महापह पहेसु णगर–णिद्धमणेसु सुसाण–सुण्णागार–गिरिकंदर–संति–सेलोवट्ठावण–भवण–गिहेसु संणिक्खित्ताइ चिट्ठंति, ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खंभाएज्जा।

२१. पाँच कारणो से अवधि–(ज्ञान–) दर्शन उत्पन्न होता हुआ अपने प्रारम्भिक क्षणो मे ही स्तम्भित–(विचलित) हो जाता है–

(१) पृथ्वी को छोटी या अल्पजीव वाली देख कर, (विक्षोभ व विस्मय के कारण) (२) कुथु जैसे अति क्षुद्र (सूक्ष्म) जीवराशि से भरी हुई पृथ्वी को देखकर, (दया के कारण) (३) बडे-बडे महोरगो–(साँपो) के शरीरो को देखकर, (भय के कारण) (४) महाऋद्धि वाले, महाद्युति वाले, महानुभाव, महान् यशस्वी, महान् बलशाली और महान् सुख वाले देवो को देखकर, (लालसा वश)

(५) पुरो मे, ग्रामो मे, आकरो मे, नगरो मे, खेटो मे, कर्वटो मे, मडम्बो मे, द्रोणमुखो मे, पत्तनो मे, आश्रमो मे, सबाधो मे, सन्निवेशो मे, नगरो के शृगाटको, तिराहो, चौको, चौराहो, चौमुहानो और छोटे–बडे मार्गों मे, गलियो मे, नालियो मे, श्मशानो मे, शून्य गृहो मे, गिरिकन्दराओ मे, शान्तिगृहो मे, शैलगृहो मे, उपस्थापनगृहो और भवन गृहो मे दबे हुए एक से एक बडे महानिधानो (धन के भण्डारो या खजानो को) को जिनके कि स्वामी मर चुके है, जिन तक पहुँचने के मार्ग प्राय नष्ट हो चुके है, जिनके नाम और सकेत भुला दिये गये है और जिनके उत्तराधिकारी कोई नही है।

उक्त पाँच कारणो से उत्पन्न होता हुआ अवधि–(ज्ञान–)–दर्शन अपने प्राथमिक क्षणो मे ही स्तम्भित अथवा चलित हो जाता है।

21. For five reasons emerging *avadhi* (*jnana* and) *darshan* gets *stambhit* (arrested) during the initial moments of its emergence—

(1) by seeing the earth to be infested with minute organisms (out of dejection and surprise) (2) by seeing the earth abounding in small worm-like beings (out of compassion) (3) by seeing the bodies of giant snake-like reptiles (out of fear) (4) by seeing gods with supreme wealth,

supreme radiance, supreme qualities, supreme fame, supreme power and supreme happiness (out of craving)

(5) Seeing the lost, forgotten and unclaimed immense treasures left by deceased owners buried at places like *pur* (towns), *gram* (villages), *aakar* (settlement near a mine), *nagar* (city), *khet* (kraal), *karbat* (market), *madamb* (borough), *dronmukh* (hamlet), *pattan* (harbour), *ashram* (hermitage), *samvah* (settlement in a valley), and *sannivesh* (temporary settlement), *shringatak* (triangular plaza), *trikpath* (trisection), *chatushkapath* (crossing), *chaturmukh* (square), *mahapath* (highway), *path* (street), *nagar-nirdhaman* (drains and gutters in the city), *smashan* (cremation ground), *shunya griha* (abandoned house), *giri-kandara* (cave), *shanti-griha* (house for rituals), *shailagriha* (hill-abode), *upasthapan griha* (assembly hall), and *bhavan griha* (servants quarters)

For the aforesaid five reasons emerging *avadhi* (*jnana* and) *darshan* gets *stambhit* (arrested) during the initial moments of its emergence

विवेचन–विशिष्ट ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति या विभिन्न ऋद्धियो की प्राप्ति निश्चल ध्यानावस्थित साधु को होती है। ध्यानावस्था मे व्यक्ति की दृष्टि नासाग्र पर स्थिर रहती है, अत विशिष्ट ज्ञान-दर्शन उत्पन्न होने पर उसे सर्वप्रथम पृथ्वीगत जीव दृष्टिगोचर होते है। तदनन्तर पृथ्वी पर विचरने वाले कुन्थु आदि अत्यन्त छोटे-छोटे जन्तु विपुल परिमाण मे दिखाई देते है। तत्पश्चात् भूमिगत बिलो आदि मे बैठे विभिन्न रग व विचित्र शरीर वाले सापराज, नागराज आदि दिखाई देते है। फिर महावैभवशाली देव दृष्टिगोचर होते है और ग्राम-नगरादि की भूमि मे दबे गडे हुए खजाने भी दिखने लगते है। इन सबको देखकर सर्वप्रथम उसे विस्मय होता है कि यह मै क्या देख रहा हूँ ! पुन सूक्ष्म जीवो से व्याप्त पृथ्वी को देखकर उनके प्रति दया व करुणाभाव भी जागृत हो सकता है। बडे-बडे सॉपो को देखने से भयभीत भी हो सकता है और भूमिगत खजानो/विपुल धन भण्डारो को देखकर वह लोभ से भी अभिभूत हो सकता है। इस प्रकार विस्मय, दया, लोभ, और भय की भावना के कारण अथवा इनमे से किसी एक-दो या सभी कारणो से ध्यानावस्थित व्यक्ति का चित्त चलायमान होना स्वाभाविक है।

यदि वह उस समय चल-विचल न हो तो तत्काल उसे विशिष्ट अतिशय सम्पन्न ज्ञान-दर्शना आदि उत्पन्न हो जाते है और यदि उक्त कारणो के निमित्त से चल-विचल हो जाता है, तो ज्ञान-दर्शन उत्पन्न होते हुए भी रुक जाते है-उत्पन्न नही होते।

वृत्तिकार का कथन है, अवधिज्ञान दर्शन उत्पन्न होने से पूर्व साधक के मन मे पृथ्वी व जीव राशि के विषय मे कुछ भिन्न प्रकार की कल्पना होती है, जब वह अपनी कल्पना के विपरीत देखता है तो उसका ज्ञान क्षुब्ध हो जाता है।

सूत्रोक्त ग्राम–नगरादि का अर्थ दूसरे स्थान के सूत्र ३९० के विवेचन मे किया जा चुका है। शृगाटक आदि कुछ नवीन शब्द आये है, उनका अर्थ इस प्रकार है–**शृंगाटक**–सिघाडे के आकार वाला तीन मार्गों का मध्य भाग। **त्रिकपथ**–तिराहा, तिगड्डा–जहाँ पर तीन मार्ग मिलते हैं। **चतुष्कपथ**–चौराहा, चौक–जहाँ पर चार मार्ग मिलते है या अनेक छोटे रास्ते मिलते है। **चतुर्मुख**–चौमुहानी–जहाँ पर चारो दिशाओ के मार्ग निकलते है। अथवा चार द्वार वाला देव मन्दिर। **पथ**–सामान्य मार्ग, गली आदि। **महापथ**–राजमार्ग–चौडा रास्ता। **नगर–निर्द्धमन**–नगर की नाली, नाला आदि। **शान्तिगृह**–शान्ति कर्म, हवन आदि करने का स्थान। **शैलगृह**–पर्वत को काट कर या खोद कर बनाया हुआ घर। **उपस्थानगृह**–सभामडप। **भवनगृह**–नौकर–चाकरो आदि के रहने का मकान।

विशेष शब्दों के अर्थ–पहीणसामियाइं–जिन भूमिगत निधानो का कोई स्वामी नही है, **पहीणसेउयाइं**–जिनका कोई उत्तराधिकारी भी नही है, **पहीणगुत्तागाराइ**–जिनके नाम, गोत्र व चित्र आदि चिन्ह भी नष्ट हो चुके है।

Elaboration—An ascetic involved in unwavering meditation is in a position to acquire higher knowledge and perception as well as different special powers In such state of meditation eyes are focussed on the tip of his nose Therefore the first thing he sees on emergence of special knowledge and perception is living organisms inside the earth After that he sees abundance of worm-like minute beings crawling on the earth Then he sees a variety of serpents and other reptiles in their holes After this he sees extremely glorious divine beings and great treasures hidden or buried at various places On seeing these first of all he may get astonished about what he saw After this he may get overwhelmed with a feeling of pity He may also be filled with fear on seeing large serpents and swept by greed on seeing immense treasures Thus it is natural that a meditating person may get distracted due to any one or more of the sentiments of surprise, pity, fear and greed

If he does not get distracted or moved he at once acquires special knowledge and perception If he gets moved for the said reasons these qualities are arrested before they have a chance to emerge

The commentator adds that prior to emergence of *avadhi jnana* and *darshan* the aspirant has a different concept about the earth and beings When he sees that the reality is different than what he believed he gets disturbed

Meanings of the terms for places occurring in the text have been given in the parenthesis Other technical terms are—*Pahinasamiyaim*—buried treasure without known owners *Pahinaseuyaim*—those without

any claimants *Pahinaguttagaraim*—those whose name, class, sketch and other signs have been lost

२२. पंचहिं ठाणेहिं केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा, तं जहा—

(१) अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा। (२) सेसं तहेव जाव (कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा)। (३) महतिमहालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा। (४) देवं वा महिड्ढियं महज्जुइयं महाणुभागं महायसं महाबलं महासोक्खं पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा। (५) (पुरेसु वा पोराणाइं उरालाइं महतिमहालयाइं महाणिहाणाइं पहीणसामियाइं पहीणसेउयाइं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिण्णसामियाइं उच्छिण्णसेउयाइं उच्छिण्णगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागर–णगर–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणासम–संबाह–सण्णिवेसेसु सिंघाडग–तिगचउक्क–चच्चर–चउम्मुह–महापहपहेसु–णगर–णिद्धमणेसु–सुसाण–सुण्णागार–गिरिकंदर–संति सेलोवट्ठावण) भवन–गिहेसु सण्णिक्खित्ताइं चिट्ठंति, ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए णो खंभाएज्जा।

सेसं तहेव। इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव (केवलवरणाणदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए) जाव णो खंभाएज्जा।

२२. पाँच कारणो से उत्पन्न होता हुआ केवल–ज्ञान–दर्शन अपने प्रारम्भिक क्षणो मे स्तम्भित या क्षुब्ध नही होता है -(१) पृथ्वी को छोटी या अल्पजीव वाली देखकर, (२) कुथु आदि सूक्ष्म जीव–राशि से भरी हुई पृथ्वी को देखकर, (३) बडे–बडे महोरगो के शरीरो को देखकर, (४) महा ऋद्धि वाले, महाद्युति वाले, महानुभाव, महान् यशस्वी, महान् बलशाली और महान् सुख वाले देवो को देख कर, (५) पुरो मे, ग्रामो मे, आकरो मे, नगरो मे, खेटो मे, कर्वटो मे, मडम्बो मे, द्रोणमुखो मे, पत्तनो मे, आश्रमो मे, सबाधो मे, सन्निवेशो मे, शृगाटको, तिराहो, चौको, चौराहो, चौमुहानो और छोटे बडे मार्गो मे गलियो मे, नालियो मे, श्मशानो मे, शून्य गृहो मे, गिरिकन्दराओ मे, शान्तिगृहो मे, शैलगृहो मे, उपस्थानगृहो मे और भवन-गृहो मे दबे हुए एक से एक बडे महानिधानो को, जिन तक पहुँचने के मार्ग प्राय नष्ट हो चुके है, जिनके नाम और सकेत विस्मृत प्राय हो चुके है और जिनके उत्तराधिकारी कोई नही है, उन्हे-देखकर।

वृत्तिकार के अनुसार उनके चलायमान नही होने के मुख्य चार हेतु है (१) यथार्थ वस्तु दर्शन, (२) मोहनीय कर्म का क्षीण हो जाना, (३) भय, विस्मय व लोभ का सर्वथा अभाव ४ अति गम्भीरता।

इन पाँचो कारणो से उत्पन्न होता हुआ केवल ज्ञान–दर्शन अपने प्रारम्भिक क्षणो मे स्तम्भित नही होता।

22. For five reasons emerging *Keval* (*jnana* and) *darshan* does not get *stambhit* (arrested) during the initial moments of its emergence—

(1) by seeing the earth to be infested with minute organisms (out of alarm and surprise) (2) by seeing the earth abounding in small worm-like beings (out of pity) (3) by seeing the bodies of giant snake-like reptiles (out of fear) (4) by seeing gods with supreme wealth, supreme radiance, supreme qualities, supreme fame, supreme power and supreme happiness (out of craving) (5) by seeing the lost, forgotten and unclaimed immense treasures left by deceased owners buried at places like *pur* (towns), *gram* (villages), *aakar* (settlement near a mine), *nagar* (city), *khet* (kraal), *karbat* (market), *madamb* (borough), *dronmukh* (hamlet), *pattan* (harbour), *ashram* (hermitage), *samvah* (settlement in a valley), and *sannivesh* (temporary settlement), *shringatak* (triangular plaza), *trikpath* (trisection), *chatushkapath* (crossing), *chaturmukh* (square), *mahapath* (highway), *path* (street), *nagar-nirdhaman* (drains and gutters in the city), *smashan* (cremation ground), *shunya griha* (abandoned house), *giri-kandara* (cave), *shanti-griha* (house for rituals), *shailagriha* (hill-abode), *upasthapan griha* (assembly hall), and *bhavan griha* (servants quarters)

According to the commentator there are four reasons for the *Avadhi-darshan* not being impeded—(1) perceiving the realty, (2) shedding of *Mohaniya karma*, (3) complete absence of fear, surprise and greed and (4) perfect serenity

For these five reasons emerging *Keval jnana* and *darshan* does not get *stambhit* (arrested) during the initial moments of its emergence

विवेचन—पूर्व सूत्र मे जो पाँच कारण बताये गये थे, वे ही पाँच कारण केवल ज्ञान-दर्शन के उत्पन्न होने मे बाधक नही होते। क्योकि अवधिज्ञान तो हीन सहनन और हीन सामर्थ्य वाले मनुष्यो को भी उत्पन्न हो सकता है, किन्तु केवलज्ञान और केवलदर्शन तो वज्रऋषभनाराचसहनन वाले, उसमे भी जो घोरातिघोर परीषह और उपसर्गो से भी चलायमान नही होते, उन्ही को होता है। उनके विस्मय, भय और लोभ का कोई कारण ही शेष नही रहा है। ऐसे परमवीतरागी क्षीण मोह बारहवे गुणस्थान वाले पुरुष को विघ्न-बाधाओ वाले कारण उत्पन्न होते हुए केवलज्ञान और केवलदर्शन को नही रोक सकते है।

Elaboration—The five reasons mentioned in the preceding aphorism have been repeated as not causing arrest in emergence of *Keval jnana* and *darshan* (omniscience) This is because *avadhi jnana* can emerge even in a person with lesser strength and capacity of physical constitution but *Keval jnana* and *Keval darshan* can emerge only in the persons having *Vajrarishabhanarach samhanan* (the toughest body constitution) That too in only those who remain unmoved even in the

face of extreme afflictions and torments They are left with no reason for surprise, fear and greed No such impediments or obstruction can arrest the emergence of *Keval jnana* and *darshan* in such completely detached individuals at the twelfth *Gunasthan* who are totally devoid of any trace of fondness

शरीर–पद SHARIRA-PAD (SEGMENT OF BODY)

२३. णेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा पंचरसा पण्णत्ता, तं जहा–किण्हा जाव [णीला, लोहिता, हालिद्दा], सुक्किल्ला। तित्ता, जाव [कडुया,कसाया, अंबिला], मधुरा। २४. एवं–णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।

२३. नारकी जीवो के शरीर पाँच वर्ण और पॉच रस वाले होते है-(१) कृष्ण, यावत् [नील, लोहित, हारिद्र] और श्वेत वर्ण वाले। (२) तिक्त, [कटुक, कषाय, अम्ल] और मधुर रस वाले।

२४. इसी प्रकार वैमानिक तक के सभी दण्डको वाले जीवो के शरीर पाँचो वर्ण और पाँचो रस वाले है।

23. The bodies of infernal beings are of five varna (colours) and five *rasa* (tastes)—(1) *Krishna* (black), and so on up to [*neel* (blue), *lohit* (red), *haridra* (yellow)] and *shukla* (white) (2) *Tikta* (bitter), and so on up to [*katu* (pungent), *kashaya* (astringent), *amla* (sour)] and *madhur* (sweet)

24. In same way bodies of all beings belonging to all *dandaks* up to Vaimanik gods are of five *varna* (colours) and five *rasa* (tastes)

२५. पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा–ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए।

२५. शरीर पाँच प्रकार के होते है-(१) औदारिक, (२) वैक्रिय, (३) आहारक, (४) तैजस, (५) कार्मण।

25. *Sharira* (bodies) are of five kinds—(1) *audarik sharira* (gross physical body), (2) *vaikriya sharira* (transmutable body), (3) *aharak sharira* (telemigratory body), (4) *taijas sharira* (fiery body) and (5) *karman sharira* (karmic body)

२६. ओरालियसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा–किण्हे, जाव [णीले, लोहिते, हालिद्दे], सुक्किल्ले। तित्ते, जाव [कडुए, कसाए, अंबिले], महुरे। २७. एवं जाव कम्मगसरीरे। [वेउव्वियसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा–किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, मुहरे। २८. आहारयसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा–

किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे। २९. तेययसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा–किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे। ३०. कम्मगसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते, तं जहा–किण्हे, णीले, लोहिते, हालिद्दे, सुक्किल्ले। तित्ते, कडुए, कसाए, अंबिले, महुरे।

२६. औदारिक शरीर पाँच वर्ण और पाँच रस वाला होता है–(१) कृष्ण, (२) नील, (३) लोहित, (४) हारिद्र और (५) श्वेत वर्ण वाला। (१) तिक्त, (२) कटुक, (३) कषाय, (४) अम्ल और (५) मधुर रस वाला। २७. इसी प्रकार वैक्रिय शरीर पाँच वर्ण और पाँच रस वाला होता है। २८. आहारक शरीर पाँच वर्ण और पाँच रस वाला होता है। २९. तैजस् शरीर पाँच वर्ण और पाँच रस वाला होता है। ३०. कार्मण शरीर पाँच वर्ण और पाँच रस वाला होता है।

26. *Audarik sharira* is of five *varna* (colours) and five *rasa* (tastes)—(1) *krishna* (black), (2) *neel* (blue), (3) *lohit* (red), (4) *haridra* (yellow) and (5) *shukla* (white) colours (1) *tikta* (bitter), (2) *katu* (pungent), (3) *kashaya* (astringent), (4) *amla* (sour) and (5) *madhur* (sweet) tastes **27.** In the same way *vaikriya sharira* (transmutable body) is of five colours and five tastes **28.** *Aharak sharira* (telemigratory body) is of five colours and five tastes **29.** *Taijas sharira* (fiery body) is of five colours and five tastes **30.** *Karman sharira* (*karmic* body) is of five colours and five tastes

३१. सव्वेवि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा।

३१. सभी बादर (स्थूल) शरीर के धारक कलेवर पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले होते है। *(पाँच शरीर का विशेष वर्णन व चित्र देखे अनुयोग द्वार भाग–२ पृष्ठ २२५)*

31. All beings having *badar sharira* (gross body) have five colours, five tastes, two smells and eight touches *(for more information about five bodies see Illustrated Anuyogadvar Sutra, part-2, p 225)*

तीर्थभेद–पद TIRTHABHED-PAD (SEGMENT OF DIFFERENCE IN RELIGIOUS ORDERS)

३२. पंचहिं ठाणेहिं पुरिम–पच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवति, तं जहा–दुआइक्खं, दुव्विभज्जं, दुपस्सं, दुतितिक्खं, दुरणुचरं। ३३. पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुग्गमं भवति, तं जहा–सुआइक्खं, सुविभज्जं, सुपस्सं, सुतितिक्खं, सुरणुचरं।

३२. प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरो के शासन मे ये पाँच स्थान दुर्गम (दुर्बोध्य/कठिन) होते है–(१) दुराख्येय–धर्मतत्त्व का व्याख्यान करना। (२) दुर्विभाज्य–तत्त्व को अपेक्षा दृष्टि से समझाना। (३) दुर्दर्श–तत्त्व का युक्तिपूर्वक निदर्शन करना। (४) दुस्तितिक्ष–उपसर्ग–परीषहादि का सहन करना।

(५) दुरनुचर-धर्म का परिपूर्ण आचरण करना। ३३. मध्यवर्ती (बाईस) तीर्थंकरो के शासन मे उक्त पाँच स्थान सुगम (सुबोध्य/सरल) होते है-(१) स्वाख्येय-धर्मतत्त्व का व्याख्यान करना। (२) सुविभाज्य-तत्त्व को अपेक्षा दृष्टि से समझना। (३) सुपश्य-तत्त्व का युक्तिपूर्वक निदर्शन करना। (४) सुतितिक्ष-उपसर्ग-परीषहादि का सहन करना। (५) स्वनुचर-धर्म का आचरण करना।

32. During the period of influence of the first and last *Tirthankar* these five *sthaans* (matters) are *durgam* (abstruse and difficult)—(1) *Durakhyeya*—to preach religious fundamentals (2) *Durvibhajya*—to properly explain fundamentals from different angles (3) *Durdarsh*—to logically elaborate fundamentals (4) *Dustitiksha*—to endure afflictions and torments (5) *Duranuchar*—to perfectly follow religious conduct **33.** During the period of influence of the intervening twenty two *Tirthankars* the said five *sthaans* (matters) are *sugam* (easy and simple)—(1) *Svakhyeya*—to preach religious fundamentals (2) *Suvibhajya*—to properly explain fundamentals (3) *Supashya*—to logically elaborate fundamentals (4) *Sutitiksha*—to endure afflictions and torments (5) *Svanuchar*—to perfectly follow religious conduct

विवेचन-प्रथम तीर्थंकर के शासन मे साधु ऋजु जड सरल और मन्दबुद्धि होते है। अन्तिम तीर्थंकर के समय के साधु वक्र (कुटिल) और आग्रही होते है, इसलिए उन दोनो को तत्त्व समझाना आदि दुर्गम होता है। प्रथम तीर्थंकर के समय के पुरुष अधिक सुकुमार होते है, उन्हे परीषहादि सहना कठिन होता है और अन्तिम तीर्थंकर के समय के पुरुष चचल मनोवृत्ति वाले होते है, उनमे तितिक्षा और अनुपालन की शक्ति कम होती है। इस कारण उन्हे परीषहादि सहना कठिन होता है।

मध्यवर्ती बाईस तीर्थंकरो के समय के पुरुष ऋजु प्राज्ञ (सरल और बुद्धिमान्) होते है, अत उनको धर्मतत्त्व समझाना, परीषहादि सहन करना और धर्म का पालन करना सभी सुगम होते है।

Elaboration—During the period of influence of the first *Tirthankar* ascetics are *riju* and *jad* (simple and dull) During the period of influence of the last *Tirthankar* ascetics are crooked and dogmatic Therefore it is difficult to teach and explain them the fundamentals During the first *Tirthankar's* age people are comparatively delicate to be able to endure afflictions During the last *Tirthankar's* period people are unstable and as a result they have lesser degree of tolerance and resolve Thus it is difficult for them to endure afflictions

During the periods of the intervening twenty two *Tirthankars* people are simple and intelligent Therefore, for them it is easy to understand fundamentals, endure afflictions and follow religious conduct

भिक्षाभिग्रह–पद BHIKSHABHIGRAHA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL RESOLVES FOR ALMS COLLECTION)

३४. पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चमब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा–खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे। ३५. पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं जाव (समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तियाइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा–सच्चे संजमे, तवे, चियाए, बंचेरवासी।

३४. श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पाँच स्थान सदा वर्णित किये है, कीर्त्तित किये है, व्यक्त किये है, प्रशसित किये है और अभ्यनुज्ञात किये है–(१) क्षान्ति (क्षमा), (२) मुक्ति (निर्लोभता), (३) आर्जव (सरलता), (४) मार्दव (मृदुता) और (५) लाघव (लघुता)। ३५. श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण–निर्ग्रन्थो के लिए पाँच स्थान सदा वर्णित किये है, कीर्त्तित किये है, व्यक्त किये है, प्रशसित किये है और अभ्यनुज्ञात किये है–(१) सत्य, (२) सयम, (३) तप, (४) त्याग और (५) ब्रह्मचर्य।

34. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described (*varnit*), glorified (*kirtit*), explained (*vyakta*), praised (*prashansit*), and commanded (*abhyanujnat*) five *sthaans* (virtues)—(1) *kshanti* (forgiveness), (2) *mukti* (freedom from greed), (3) *arjava* (simplicity), (4) *mardava* (gentleness) and (5) *laghava* (humbleness) **35.** For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described (*varnit*), glorified (*kirtit*), explained (*vyakta*), praised (*prashansit*), and commanded (*abhyanujnat*) five *sthaans* (virtues)—(1) *satya* (truth), (2) *samyam* (discipline), (3) *tap* (austerities), (4) *tyag* (detachment) and (5) *brahmacharya* (celibacy)

विवेचन–इन दो सूत्रो मे १० श्रमण धर्म का कथन है। वर्णित आदि शब्दो के अर्थ–**वर्णित**–फल की दृष्टि से वर्णन किया है। **कीर्तित**–नाम रूप से उल्लेख किया है। **व्यक्त**–**स्वरूप का कथन किया है। प्रशसित**–प्रशसा की है। **अभ्यनुज्ञात**–पालन करने का निर्देश दिया है। *(वृत्ति, भाग २ पृष्ठ ५११)*

Elaboration—These two aphorisms state the ten virtues included in ascetic conduct The words laying emphasis on these are explained here *Varnit*—described with reference to the fruits thereof *Kirtit*—included in the list of the glorious Vyakta—explained the meaning and form *Prashansit*—praised *Abhyanujnat*—commanded to observe them *(Vritti part-2, p 511)*

३६. पंच ठाणाइं समणेणं जाव (भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं, णिच्चं कित्तिताइं, णिच्चं बुइयाइं, णिच्चं पसत्थाइं, णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा–उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, अंतचरए, पंतचरए, लूहचरए।

३६. श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पॉच (अभिग्रह) स्थान सदा वर्णित किये है, कीर्त्तित किये है, व्यक्त किये है, प्रशसित किये है और अभ्यनुज्ञात किये है--(१) **उत्क्षिप्तचरक**–राधने के पात्र मे से पहले ही बाहर निकाला हुआ निर्दोष आहार ग्रहण करने वाला अभिग्रहधारी। (२) **निक्षिप्तचरक**–यदि गृहस्थ राँधने के पात्र मे से आहार दे तो मै ग्रहण करूँगा, ऐसा अभिग्रह करने वाला। (३) **अन्तचरक**–गृहस्थ-परिवार के भोजन करने के पश्चात् बचा-खुचा आहार ग्रहण करने वाला अभिग्रहधारी। (४) **प्रान्तचरक**–तुच्छ या वासी आहार लेने का अभिग्रहधारी। (५) **रूक्षचरक**–सर्व प्रकार के रसो से रहित रूखा आहार ग्रहण करने का अभिग्रहधारी।

36. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Utkshiptacharak*—having resolved to accept only the portion taken out from the cooking pot in advance (2) *Nikshiptacharak*—having resolved to accept only if served directly from the cooking pot (3) *Antacharak*—having resolved to accept only if offered leftovers after the family has eaten (4) *Prantacharak*—having resolved to accept only if the food is insipid or stale (5) *Rukshacharak*—having resolved to accept only if the food is dry and tasteless

विवेचन–प्रथम दो भाव-अभिग्रह है, इनका सम्बन्ध भिक्षाचरी से है। शेष तीन द्रव्य-अभिग्रह है। इनका कथन रस परित्याग के अन्तर्गत है।

Elaboration—First two statements are related to alms seeking and the remaining three are resolves about content of alms indicating abstainment of tasty food

३७. पंच ठाणाइं जाव (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तियाइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा— अण्णातचरए, अण्णइलायचरए, मोणचरए, संसट्ठकप्पिए, तज्जातसंसट्ठकप्पिए।

३७. श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पाँच (अभिग्रह) स्थान सदा वर्णित, कीर्त्तित, व्यक्त, प्रशसित और अभ्यनुज्ञात किये है-(१) **अज्ञातचरक**–अपनी जाति-कुलादि को बताये बिना भिक्षा लेने वाला। (२) **अन्यग्लायकचरक**–दूसरे रोगी मुनि के लिए भिक्षा लाने वाला अथवा भूख लगने पर ही भिक्षाचरी करने वाला। (३) **मौनचरक**–मौनपूर्वक भिक्षा लाने वाला। (४) **संसृष्टकल्पिक**–भोजन से लिप्त हाथ या कडछी आदि से भिक्षा लेने वाला। (५) **तज्जात–संसृष्टकल्पिक**–देय द्रव्य से लिप्त हाथ आदि से भिक्षा लेने वाला।

37. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Ajnatacharak*—having resolved to seek

alms without revealing his caste and family (2) *Anyaglayakacharak*—having resolved to seek alms only for some ailing ascetic or only when one is hungry (3) *Maunacharak*—having resolved to seek alms silently (4) *Samsrishtakalpik*—having resolved to accept alms only when hands or serving spoon is soiled with food (5) *Tajjat-samsrishtakalpik*—having resolved to accept alms only when hands or serving spoon is soiled with the food offered

३८. पंच ठाणाइं जाव (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा— उवणिहिए, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए, दिट्ठलाभिए, पुट्ठलाभिए॥

३८. श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए पॉच (अभिग्रह) स्थान सदा वर्णित, कीर्त्तित व्यक्त प्रशसित और अभ्यनुज्ञात किये है-(१) **औपनिधिक**–उपाश्रय के समीपवर्ती घरो से या अन्य स्थान से लाकर गृहस्थ के समीप रखे आहार को लेने वाला। (२) **शुद्धैषणिक**– एषणा के ४२ दोषो से रहित निर्दोष आहार की गवेषणा करने वाला। (३) **सख्यादत्तिक**–सीमित सख्या मे दत्तियो की सख्या का नियम करके आहार लेने वाला। (४) **दृष्टलाभिक**–सामने प्रत्यक्ष दीखने वाला आहार–पानी लेने वाला। (५) **पृष्टलाभिक**–'क्या भिक्षा लोगे ?' ऐसा पूछे जाने पर ही भिक्षा लेने वाला।

38. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Aupanidhik*—having resolved to accept alms only from nearby houses or food brought near the donor from some other place (2) *Shuddhaishanik*—having resolved to seek pure alms free of all the 42 faults of alms-seeking (3) *Sankhyadattik*—having resolved to accept specific number of servings only (4) *Drishtilabhik*—having resolved to accept only out of the visible food (5) *Prishtalabhik*—having resolved to accept alms only when asked—"Would you please accept alms ?"

३९. पंच ठाणाइं जाव (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा— आयंबिलिए, णिव्विइए, पुरिमड्ढिए, परिमितपिंडवातिए, भिण्णपिंडवातिए॥

३९. श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पाँच (अभिग्रह) स्थान सदा वर्णित, कीर्त्तित, व्यक्त, प्रशसित और अभ्यनुज्ञात किये है-(१) **आचाम्लिक**–'आयबिल' करने वाला। (२) **निर्विकृतिक**–घी आदि विकृतियो का त्याग करने वाला। (३) **पूर्वार्धिक**–दिन के पूर्वार्ध (प्रथम दो प्रहर मे) भोजन नही करने के नियम वाला। (४) **परिमितपिण्डपातिक**–परिमित घरो या परिमित वस्तुओ की भिक्षा लेने वाला। (५) **भिन्नपिण्डपातिक**–खण्ड-खण्ड किये आहार की भिक्षा लेने वाला।

39. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Achamlik*—having resolved to observe *ayambil* (eating only once in a day food cooked or roasted comprising of single ingredient and that also without any salt or other condiments) (2) *Nirvikritik*—having resolved to abstain from eating all proscribed things including butter (3) *Purvardhik*—having resolved not to eat food during first two quarters of the day (4) *Parimitapindapatik*—having resolved to accept only a limited number of things or only from a limited number of houses (5) *Bhinnapindapatik*—having resolved to accept food only in small portions

४०. पंच ठाणाइं जाव (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा— अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे॥

४०. श्रमण भगवान महावीर ने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पाँच (अभिग्रह) स्थान सदा वर्णित, कीर्त्तित, व्यक्त, प्रशसित और अभ्यनुज्ञात किये है- (१) **अरसाहार**—हीग आदि के बघार व मसालो से रहित भोजन लेने वाला। (२) **विरसाहार**—पुराने धान्य का भोजन लेने वाला। (३) **अन्त्याहार**—बचा-खुचा आहार लेने वाला। (४) **प्रान्ताहार**—तुच्छ आहार लेने वाला। (५) **रूक्षाहार**—रूखा-सूखा आहार लेने वाला।

40. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Arasahar*—having resolved to accept food free of any or all condiments and flavours (2) *Virasahar*—having resolved to accept food made from fetid grains (3) *Antyahar*—having resolved to accept only leftover food (4) *Prantahar*—having resolved to accept only insipid or stale food (5) *Rukshahar*—having resolved to accept dry and tasteless food

४१. पंच ठाणाइं जाव (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तियाइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं) अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं जहा— अरसजीवी, विरसजीवी, अंतजीवी, पंतजीवी, लूहजीवी।

४१. श्रमण भगवान महावीर ने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पाँच (अभिग्रह) स्थान सदा वर्णित, कीर्त्तित, व्यक्त, प्रशसित और अभ्यनुज्ञात किये है- (१) **अरसजीवी**—रस रहित आहार लेने वाला। (२) **विरसजीवी**—रसरहित पुराना धान्य, भात आदि लेने वाला। (३) **अन्त्यजीवी**—बचा-खुचा आहार लेने वाला। (४) **प्रान्तजीवी**—तुच्छ आहार लेने वाला। (५) **रूक्षजीवी**—रूखा-सूखा आहार लेने वाला।

41. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Arasajivi*—having resolved to survive only on food free of all condiments and flavours (2) *Virasajivi*—having resolved to survive only on food made from fetid grains (3) *Antyajivi*—having resolved to survive only on leftover food (4) *Prantajivi*—having resolved to survive only on insipid or stale food (5) *Rukshajivi*—having resolved to survive only on dry and tasteless food

विवेचन—सूत्र ४० व ४१ मे अन्तर यह है कि-प्रथम विकल्प मे सीमित काल के लिए तथा दूसरे मे जीवनभर के लिए रसादि का त्याग किया जाता है।

Elaboration—The difference between aphorisms 40 and 41 is that first is for a limited period and the second is lifelong

ध्यान मुद्रा-पद DHYANAMUDRA-PAD (SEGMENT OF MEDITATIONAL POSTURES)

४२. पंच ठाणाइं (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइ णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं अब्भणुण्णाताइं) भवंति, तं जहा—ठाणातिए, उक्कुडुआसणिए, पडिमट्ठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए॥

४२. श्रमण भगवान महावीर ने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पॉच स्थान सदा वर्णित, कीर्त्तित, व्यक्त, प्रशसति और अभ्यनुज्ञात किये है। (१) **स्थानायतिक**—कायोत्सर्ग मुद्रा से खडे रहकर ध्यान करना। (२) **उत्कुटुकासनिक**—उकडू बैठकर स्वाध्याय करना। (३) **प्रतिमास्थायी**—प्रतिमा -मूर्ति के समान पद्मासन से बैठना वाला अथवा एकरात्रिक आदि भिक्षुप्रतिमा को धारण करना। (४) **वीरासनिक**—वीरासन से बैठना। (५) **नैषधिक**—पालथी लगाकर बैठना।

42. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Sthanayatik*—having resolved to meditate in kayotsarg posture (standing), (2) *Utkatukasanik*—having resolved to meditate in *Utkatukasan* (squatting with feet straight on the ground) (3) *Pratimasthaayi*—having resolved to meditate in lotus pose like an idol (or to observe special austerities like *Ekaratrik*—meditating throughout the night) (4) *Virasanik*—having resolved to meditate in *Virasan* (posture resembling sitting on a chair without a chair) (5) *Naishadyik*—having resolved to meditate sitting cross-legged

४३. पंच ठाणाइं (समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वण्णिताइं णिच्चं कित्तिताइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं अब्भणुण्णाताइं) भवंति, तं जहा—दंडायतिए, लगंडसाई, आतावए, अवाउडए, अकंडूयए॥

४३. श्रमण भगवान महावीर ने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पाँच स्थान सदा वर्णित, कीर्तित, व्यक्त, प्रशंसित और अभ्यनुज्ञात किये है-(१) **दण्डायतिक**-दण्ड के समान सीधे पैर पसार कर चित्त सोना। (२) **लगंडशायी**-एक करवट से या जिसमे मस्तक और एडी भूमि मे लगे और पीठ भूमि से ऊपर उठी रहे, इस प्रकार से सोना। (३) **आतापक**-शीत-ताप आदि को सहना। (४) **अपावृतक**-वस्त्र-रहित होकर रहना। (५) **अकण्डूयक**-शरीर को नही खुजलाना।

43. For *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) Shraman Bhagavan Mahavir has described, glorified, explained, praised and commanded five *sthaans* (special resolves)—(1) *Dandanayik*—having resolved to sleep flat on the back with legs straight like a rod (2) *Lagandashayik*—having resolved to sleep on the side or to adopt the posture where head and heal touch the floor and the back is raised (3) *Atapak*—having resolved to tolerate heat and cold (4) *Apavritak*—having resolved to remain nude (5) *Akanduyak*—having resolved not to scratch body on itching

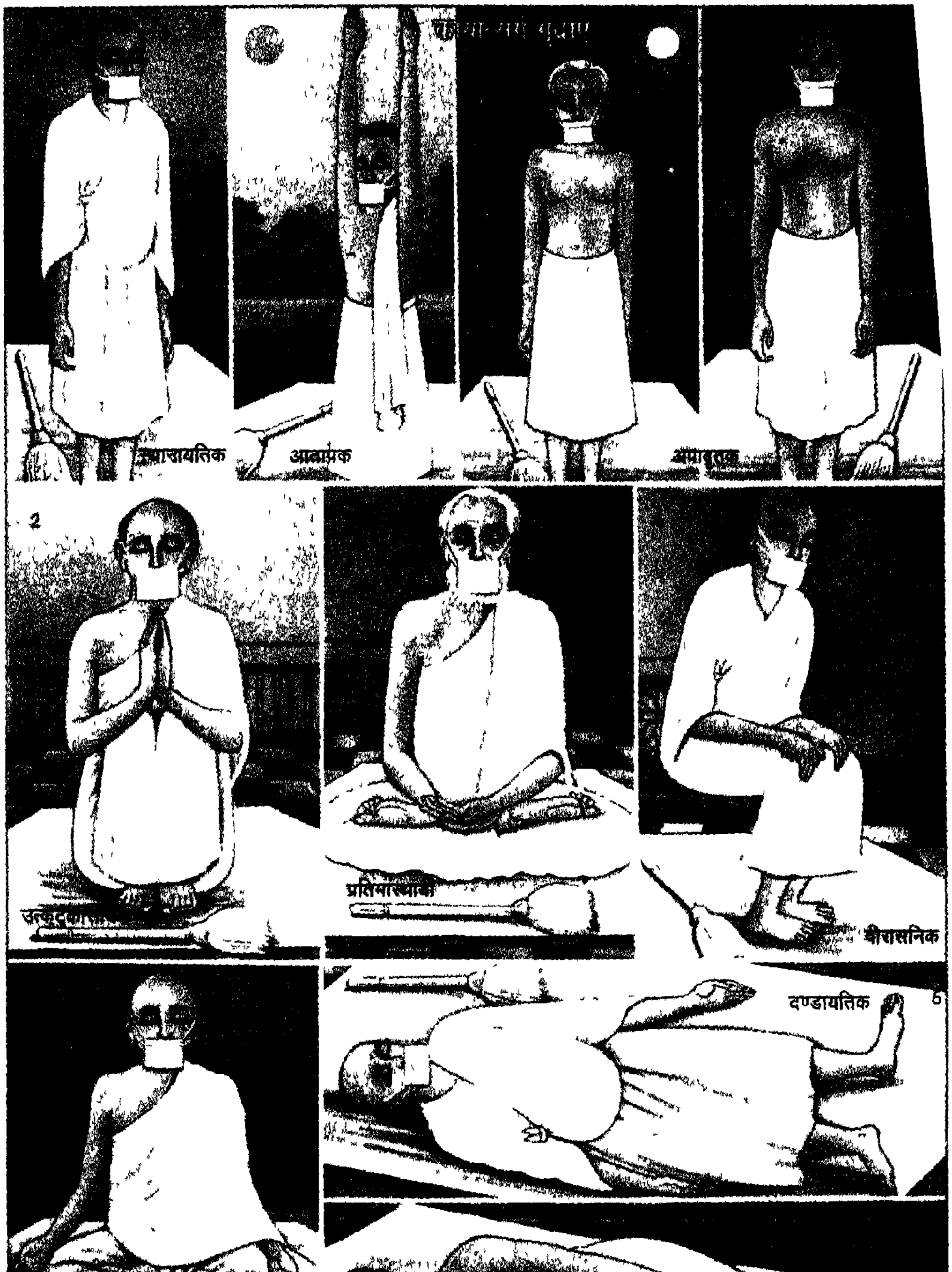
महानिर्ज्जरा-पद MAHANIRJARA-PAD (SEGMENT OF GREAT KARMA-SHEDDING)

४४. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा-अगिलाए आयरियवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए उवज्झाय वेया वच्चं करेमाणे, अगिलाए थेरवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए तवस्सिवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए गिलाणवेयावच्चं करेमाणे।

४४. पाँच स्थानो से श्रमण-निर्ग्रन्थ महान् कर्म-निर्जरा करने वाला और महापर्यवसान (कर्म निर्जरा से कर्मों का अन्त कर मोक्ष पद पाने वाला) होता है। (१) अग्लान भाव से (बिना खिन्न हुए बहुमान पूर्वक) आचार्य की वैयावृत्य करता हुआ। (२) अग्लान भाव से उपाध्याय की वैयावृत्य करता हुआ। (३) अग्लान भाव से स्थविर की वैयावृत्य करता हुआ। (४) अग्लान भाव से तपस्वी की वैयावृत्य करता हुआ। (५) अग्लान भाव से ग्लान (रोगी मुनि) की वैयावृत्य करता हुआ।

44. In five ways a *Shraman Nirgranth* accomplishes *maha karma-nirjara* (great *karma*-shedding) and *Mahaparyavasan* (attaining liberation by shedding all *karmas*)—(1) By serving *acharya* without a feeling of dejection (2) By serving *upadhyaya* without a feeling of dejection (3) By serving *sthavirs* without a feeling of dejection (4) By serving ascetics observing austerities without a feeling of dejection (5) By serving ailing ascetics without a feeling of dejection

४५. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा-अगिलाए सेहवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए कुलवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए गणवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए संघवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए साहम्मियवेयाच्चं करेमाणे।



2
प्रतिमास्थायी
वीरासनिक
दण्डायतिक
लगडशायी
4

चित्र परिचय ४	Illustration No. 4

ध्यान की मुद्राएँ

(१) **स्थानायतिक**—कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े रहकर ध्यान करना।

(२) **उत्कुटुकासनिक**—उकडू या गोदोहासन से बैठकर ध्यान करना।

(३) **प्रतिमास्थायी**—मूर्ति के समान पद्मासन से बैठकर ध्यान करना।

(४) **वीरासनिक**—वीरासन जैसे कुर्सी पर बैठने पर नीचे से कुर्सी हटा देने पर उसी आसन में बैठकर ध्यान करना।

(५) **नैषधिक**—पालथी मारकर या अन्य आसन पर बैठकर ध्यान करना।

(६) **दण्डायतिक**—दण्ड के समान सीधे चित्त लेटकर ध्यान करना।

(७) **लगडशायी**—एक करवट से पीठ भूमि से ऊपर रखकर सोकर ध्यान।

(८) **आतापक**—सूर्य की धूप में खड़े रहकर ध्यान करना अथवा शीत काल में रात में वस्त्र उतारकर ध्यान करना।

(९) **अपावृतक**—वस्त्ररहित होकर शीत व दंशमशक परीषह सहते हुए ध्यान करना।

—स्थान ५, उ. १, सूत्र ४२-४३

सातवें स्थान में सूत्र ४९ कायक्लेश के सात भेद में ... का इनका वर्णन है।

MEDITATIONAL POSTURES

(1) Sthanayatik—to meditate in *kayotsarg* posture (standing)

(2) Utkutukasanik—to meditate in Godoh asan or squatting with feet straight on the ground

(3) Pratimasthaayi—to meditate in lotus pose like an idol

(4) Virasanik—to meditate in *Virasan* a posture resembling sitting on a chair without a chair

(5) Naishadyik—to meditate sitting cross-legged

(6) Dandayatik—to sleep flat on the back with legs straight like a rod

(7) Lagandashayi—to adopt a posture where head and heal touch the floor and the back is raised

(8) Atapak—to meditate standing in sun or standing nude during a winter night

(9) Apavritak—to meditate nude tolerating cold

—Sthaan 5, Lesson 1, Sutra 42-43

४५. पाँच स्थानो से श्रमण-निर्ग्रन्थ महान् कर्म-निर्जरा और महा पर्यवसान वाला होता है। (१) अग्लान भाव से शैक्ष-(नवदीक्षित मुनि) की वैयावृत्य करता हुआ। (२) अग्लान भाव से कुल-(एक आचार्य के शिष्य-समूह) की वैयावृत्य करता हुआ। (३) अग्लान भाव से गण-(अनेक कुल-समूह) की वैयावृत्य करता हुआ। (४) अग्लान भाव से संघ-(अनेक गण-समूह) की वैयावृत्य करता हुआ। (५) अग्लान भाव से साधर्मिक-(समान समाचारी वाले) की वैयावृत्य करता हुआ।

45. In five ways a *Shraman Nirgranth* accomplishes *maha karma-nirjara* (great karma-shedding) and *Mahaparyavasan* (attaining liberation by shedding all *karmas*)—(1) By serving *shaiksha* (neo-initiates) without a feeling of dejection (2) By serving *kula* (disciples of one *acharya*) without a feeling of dejection (3) By serving *gana* (group of many *kulas*) without a feeling of dejection (4) By serving *sangh* (group of many *ganas*) without a feeling of dejection. (5) By serving *sadharmik* (ascetics following the same praxis) without a feeling of dejection

विसंभोग-पद **VISAMBHOG-PAD (SEGMENT OF OSTRACIZATION)**

४६. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मियं संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा-(१) सकिरियट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति। (२) पडिसेवित्ता णो आलोएइ। (३) आलोइत्ता णो पट्ठवेति। (४) पट्ठवेत्ता णो णिव्विसति। (५) जाइं इमाइं थेराणं ठितिपकप्पाइं भवंति ताइं अतियंचिय-अतियंचिय पडिसेवेति, से हंदऽहं पडिसेवामि किं मं थेरा करेस्संति ?

४६. पाँच स्थानो (कारणो) से श्रमण निर्ग्रन्थ अपने साधर्मिक साम्भोगिक को विसभोगिक करे तो भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता-(१) जो सक्रिय स्थान-(अशुभ कर्म का बन्ध करने वाले अकृत्य कार्य) का प्रतिसेवन करता है। (२) जो आलोचना करने योग्य दोष का प्रतिसेवन कर आलोचना नही करता है। (३) जो आलोचना कर प्रस्थापना-(गुरु-प्रदत्त प्रायश्चित्त का प्रारम्भ) नही करता है। (४) जो प्रस्थापना कर निर्वेशन-(प्रायश्चित्त का पूर्ण रूप से पालन) नही करता। (५) जो स्थविरो के स्थितिकल्प-(साधु समाचारी की मर्यादाएँ) होते है, उनमे से एक के बाद दूसरे का अतिक्रमण कर प्रसिसेवना करता है तथा दूसरो के समझाने पर कहता है-"लो, मै दोष का प्रतिसेवन करता हूँ, स्थविर मेरा क्या करेगे ?"

46. A *Shraman Nirgranth* does not defy the word of *Bhagavan* if he ostracizes (*visambhogik*) a *sadharmik sambhogik* (a co-relgionist team-mate) for five reasons—(1) When he performs (*pratisevan*) a proscribed act entailing bondage of demeritorious *karmas* (*sakriya sthaan*) (2) When he does not do self-criticism after committing a mistake worth repenting (3) When he does not accept atonement after criticizing his mistake (4) When he does not conclusively perform atonement after

commencing it (5) When he continues to perform proscribed acts transgressing the ascetic codes of discipline one after another and, on being admonished, insolently replies—"So what! I will defy the codes What can the seniors do to me ?"

विवेचन—साधु-मण्डली मे एक साथ बैठकर भोजन और स्वाध्याय आदि करने वाले साधुओ को 'साम्भोगिक' कहते है। जब कोई साम्भोगिक साधु सूत्रोक्त पाँच कारणो मे से किसी एक-दो या सब ही स्थानो का प्रतिसेवन करता है, तब उसे आचार्य साधु-मण्डली से पृथक् कर देते है। ऐसे साधु को 'विसम्भोगिक' कहा जाता है।

Elaboration—The ascetics who study collectively and eat together in a group are called *sambhogik* When a *sambhogik* ascetic indulges in one two or all of the five proscribed acts, the *acharya* ostracizes him from that group Such ostracized ascetic is called *visambhogik*

पारचित-पद PARANCHIT-PAD (SEGMENT OF EXPULSION)

४७. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मिय पारंचितं करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा—(१) कुले वसति कुलस्स भेदाए अब्भुट्टित्ता भवति। (२) गणे वसति गणस्स भेदाए अब्भुट्टेत्ता भवति। (३) हिंसप्पेही। (४) छिद्दप्पेही। (५) अभिक्खणं अभिक्खणं पसिणायतणाइं पउंजित्ता भवति।

४७. पाँच कारणो से श्रमण-निर्ग्रन्थ अपने साधर्मिक को पाराचित करता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। (१) जो साधु जिस कुल मे रहता है, उसी मे भेद (फूट) डालने का प्रयत्न करता है। (२) जो साधु जिस गण मे रहता है, उसी मे भेद डालने का प्रयत्न करता है। (३) जो हिसाप्रेक्षी होता है (कुल या गण के साधु का घात करना चाहता है)। (४) जो कुल या गण के सदस्यो को एव अन्य जनो को हानि पहुँचाने के लिए छिद्रान्वेषण करता है। (५) जो बार-बार प्रश्नायतनो का प्रयोग करता है।

47. A *Shraman Nirgranth* does not defy the word of *Bhagavan* if he expels (*paranchit*) a *sadharmik sambhogik* (a co-relgionist team-mate) for five reasons—(1) When he conspires to breed dissension within the *kula* (group of disciples of one *acharya*) he lives in (2) When he conspires to breed dissension within the *gana* (group of *kulas*) he lives in (3) When he turns to be a *himsaprekshi* (desires to harm or kill a member of his *kula* or *gana*) (4) When he resorts to fault-finding in order to harm members of his *kula* and *gana* as well as outsiders (5) When he repeatedly indulges in *prashnayatan* (indiscipline)

विवेचन—अगुष्ठ, भुजा आदि मे देवता को बुलाकर लोगो के प्रश्नो का उत्तर देकर उन्हे चमत्कृत करना, सावद्य अनुष्ठान के प्रश्नो का उत्तर देना और अम्यम के आयतनो (स्थानो) का प्रतिसेवन करना

प्रश्नायतन कहलाता है। सूत्रोक्त पाँच कारणो से साधु का वेष छुडा कर उसे संघ से पृथक् करना **पारांचित प्रायश्चित्त**—सबसे बडा प्रायश्चित्त कहलाता है।

Elaboration—*Prashnayatan* means indulging in acts of indiscipline including invoking gods in thumb, arm or other parts of the body and provide answers about sinful rituals in order to *astonish* people Expulsion from the *sangh* by depriving of the ascetic garb for atonement of the aforesaid five faults is called *paaranchit prayashchit*. It is the highest degree of atonement

व्युद्ग्रहस्थान–पद **VYUDGRAHASTHAAN-PAD (SEGMENT OF CAUSE OF DISPUTE)**

४८. आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–

(१) आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा णो सम्मं पउंजित्ता भवति। (२) आयरियउवज्झाए णं गणंसि आहारातिणियाए कितिकम्मं णो सम्मं पउंजित्ता भवति। (३) आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले–काले णो सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति। (४) आयरियउवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति। (५) आयरियउवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी यावि हवइ, णो आपुच्छियचारी।

४८. आचार्य और उपाध्याय के लिए गण मे पॉच व्युद्ग्रहस्थान (विग्रह के हेतु) है–(१) आचार्य और उपाध्याय गण मे आज्ञा तथा धारणा का सम्यक् प्रयोग न करे। (२) आचार्य और उपाध्याय गण मे यथारात्निक कृतिकर्म का सम्यक् प्रयोग न करे। (३) आचार्य और उपाध्याय जिन-जिन सूत्र–पर्यवजातो (सूत्र के अर्थ-प्रकारो) को धारण करते है–जानते है, उनकी समय-समय पर गण को सम्यक् वाचना न दे। (४) आचार्य और उपाध्याय गण मे रोगी और नवदीक्षित साधुओ की वैयावृत्य करने के लिए समुचित व्यवस्था न करे। (५) आचार्य और उपाध्याय गण को पूछे बिना ही अन्यत्र विहार आदि करे।

48. For an *acharya* or *upadhyaya* there are five vyudgrahasthaans (causes of dispute)—(1) *Acharya* or *upadhyaya* fails to properly assert his command (*ajna* and *dharana*) (2) *Acharya* or *upadhyaya* fails to properly instruct about and implement *yatharatnik kritikarma* (codes of protocol and conduct) (3) *Acharya* or *upadhyaya* fails to properly recite and teach the *sutra paryavajat* (meaning and interpretations of *sutras*) he has mastered. (4) *Acharya* or *upadhyaya* fails to make proper arrangements for care of neo-initates and ailing ascetics (5) *Acharya* or *upadhyaya* fails to inform the *gana* (group) before leaving for other places

विवेचन—कलह के कारण को व्युद्‌ग्रहस्थान अथवा विग्रहस्थान कहते है। कुछ विशिष्ट शब्दो का अर्थ इस प्रकार है—**आज्ञा**—'हे साधो ! आपको यह करना चाहिए' इस प्रकार के विधेयात्मक आदेश। **धारणा**—'हे साधो ! आपको ऐसा नही करना चाहिए', इस प्रकार का निषेधात्मक आदेश। अथवा—बार-बार आलोचना के द्वारा प्राप्त प्रायश्चित्त-विशेष के अवधारण करने को भी टीकाकार ने धारणा कहा है। जैसे—आचार्य या उपाध्याय अपने गण के साधुओ को उचित कार्यों के करने का विधान और अनुचित कार्यों का निषेध न करे, तो सघ मे कलह उत्पन्न हो जाता है।

यथारात्निक कृतिकर्म—दीक्षा पर्याय मे छोटे-बडे साधुओ के क्रम से वन्दनादि कर्त्तव्यो के निर्देश करना। इसीप्रकार यथारात्निक साधुओ के विनय-वन्दनादि का सघस्थ साधुओ को निर्देश करना भी उनका आवश्यक कर्त्तव्य है, उसका उल्लघन होने पर भी कलह हो सकता है।

सूत्र-पर्यवजातो की यथाकाल वाचना न देना। आचार्य या उपाध्याय को जितने भी श्रुत के पाठी है, दीक्षापर्याय के अनुसार अपने उन शिष्यो को यथाकाल यथाविधि वाचना देनी चाहिए। यदि वह ऐसा नही करता है, या व्युत्क्रम से वाचना देता है तो उसके ऊपर पक्षपात का दोषारोपण करके कलह खडा हो सकता है।

Elaboration—The cause of dispute or strife is called *vyudgrahasthaan* or *vigrahasthaan* Explanations of other terms are as follows—

Ajna—An assertive command, such as—'O ascetic ! You must do this ' *Dharana*—a prohibitive command such as—'O ascetic ! You must not do this ' According to the commentator (*Tika*) *dharana* also means to observe specific atonement by repeated self reproachment of the committed fault If an *acharya* or a *upadhyaya* fails to properly give assertive and prohibitive commands to the ascetics of the group about right and wrong acts it would lead to a strife in the organization

Yatharatnik kritikarma—to instruct about following the protocol of period of initiation while paying homage or greeting senior and junior ascetics If the code of protocol is not taught to the ascetics they may fail to follow the same and that can lead to a strife

Sutra-paryavajat—to recite and teach the *sutra paryavajat* (meaning and interpretations of *sutras*) timely An *acharya* or *upadhyaya* is supposed to lecture his student disciples properly following a set time-table based on the period of initiation If he fails to follow the programme he may be charged of favouritism and a strife may ensue

४९. आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंचावुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

(१) आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति। (२) एवमाहारातिणिताए (आयरियउवज्झाए णं गणंसि) आहारातिणिताए सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता

भवति। (३) आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले सम्मं अणुपवाइत्ता भवति। (४) आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं सम्मं अब्भुट्ठित्ता भवति। (५) आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति, णो अणापुच्छियचारी।

४९. आचार्य और उपाध्याय के लिए गण मे पाँच अव्युद्-ग्रहस्थान (कलह न होने के कारण) है-(१) आचार्य और उपाध्याय गण मे आज्ञा तथा धारणा का सम्यक् प्रयोग करे। (२) आचार्य और उपाध्याय गण मे यथारात्निक कृतिकर्म (बडो का वन्दना व्यवहार आदि) का प्रयोग करे। (३) आचार्य और उपाध्याय जिन-जिन सूत्र-पर्यवजातो को धारण करते है, उनकी यथासमय गण को सम्यक् वाचना दे। (४) आचार्य और उपाध्याय गण मे रोगी तथा नवदीक्षित साधुओ की वैयावृत्त्य कराने के लिए सम्यक् प्रकार से सावधान रहे। (५) आचार्य और उपाध्याय गण को पूछकर अन्यत्र विहार करे, बिना पूछे न करे। उक्त पाँच स्थानो का पालन करने वाले आचार्य या उपाध्याय के गण मे कभी कलह उत्पन्न नही होता है।

49. For an *acharya* or *upadhyaya* there are five *avyudgrahasthaans* (causes of indispute or harmony)—(1) *Acharya* or *upadhyaya* properly asserts his command (*ajna* and *dharana*) (2) *Acharya* or *upadhyaya* properly instructs about and implement *yatharatnik kritikarma* (codes of protocol and conduct) (3) *Acharya* or *upadhyaya* properly recites and teaches the *sutra paryavajat* (meaning and interpretations of *sutras*) he has mastered (4) *Acharya* or *upadhyaya* makes proper arrangements for care of neo-initates and ailing ascetics (5) *Acharya* or *upadhyaya* informs the *gana* (group) before leaving for other places There is never a strife in the *gana* of the *acharya* or *upadhyaya* who observes these five *sthaans*

निषद्या-पद **NISHADYA-PAD (SEGMENT OF METHOD OF SITTING)**

५०. पंच णिसिज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-उक्कुडुया, गोदोहिया, समपायपुता, पलियंका, अद्धपलियंका।

५०. निषद्या (आसन अथवा बैठने की विधि) पाँच प्रकार की है-(१) **उत्कुटुका**-उत्कुटासन से बैठना (उकडू बैठना)। (२) **गोदोहिका**-गाय को दुहने के आसन से बैठना। (३) **समपाद-पुता**-दोनो पैरो और पुतो (पुट्ठो) से भूमि का स्पर्श करके बैठना। (४) **पर्यंका**-पद्मासन से बैठना। (५) **अर्ध-पर्यंका**-अर्धपद्मासन से बैठना।

50. *Nishadya* (method of sitting) is of five kinds—(1) *Utkatuka*—to sit in *utkatuka* (squatting) posture (2) *Godohika*—to sit in a posture resembling that taken when milking a cow (3) *Samapada-puta*—to sit with hump and feet touching the ground (4) *Paryanka*—to sit in lotus pose (5) *Ardha-paryanka*—to sit in half-lotus pose

आर्जवस्थान-पद **ARJAVA-STHAAN-PAD (SEGMENT OF PURITY)**

५१. पंच अज्जवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–साधुअज्जवं, साधुमद्दवं, साधुलाघवं, साधुखंती, साधुमुत्ती।

५१. पाँच आर्जव स्थान कहे है (१) **साधु आर्जव**–मायाचार का सर्वथा निग्रह करना। (२) **साधु मार्दव**–अभिमान का सर्वथा निग्रह करना। (३) **साधु लाघव**–गौरव का सर्वथा निग्रह करना। (४) **साधु क्षान्ति**–क्रोध का सर्वथा निग्रह करना। (५) **साधु मुक्ति**–लोभ का सर्वथा निग्रह करना।

51. There are five *sthaans* (methods) of *arjava* (purity of mind)—(1) *sadhu arjava*—complete control over deception, (2) *sadhu mardava*—complete control over conceit, (3) *sadhu laghav*—complete control over exhibitionism, (4) *sadhu kshanti*—complete control over anger and (5) *sadhu mukti*—complete control over greed

विवेचन–प्रस्तुत सूत्र मे आर्जव का प्रतीकात्मक अर्थ अशुभ कर्मों का निरोधरूप सवर है। सवर उसी को होता है जो सम्यग्दर्शन पूर्वक क्रिया करता है। अत साधु आर्जव आदि का अर्थ होता है सम्यग् ज्ञान पूर्वक ऋजुता आदि का आचरण करना व कषायो को जीतना।

Elaboration—In this aphorism *arjava* conveys the meaning of *samvar* (blockage of inflow of *karmas* *Samvar* can only be achieved by a person who acts righteously Therefore, *arjava* and other terms signify the conduct of simplicity (etc) followed with right knowledge

ज्योतिष्क-पद **JYOTISHK-PAD (SEGMENT OF STELLAR GODS)**

५२. पंचविहा जोइसिया पण्णत्ता, तं जहा–चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, ताराओ।

५२. ज्योतिष्क देव पाँच प्रकार के है–(१) चन्द्र, (२) सूर्य, (३) ग्रह (मगल आदि ग्रह), (४) नक्षत्र, (अश्विनी भरणी आदि), (५) तारा।

52. *Jyotishk deva* (stellar gods) are of five kinds—(1) Chandra (the moon), (2) Surya (the sun), (3) *Graha* (planets like Mars), (4) *Nakshatra* (constellations like Ashvini) and (5) *Tara* (stars)

देव-पद **DEVA-PAD (SEGMENT OF GODS)**

५३. पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा–भवियदव्वदेवा, णरदेवा, धम्मदेवा, देवाहिदेवा, भावदेवा।

५३. देव पाँच प्रकार के है। (१) **भव्य-द्रव्य देव**–भविष्य मे होने वाला देव। (२) **नरदेव**–राजा, महाराजा चक्रवर्ती आदि। (३) **धर्मदेव**–आचार्य, उपाध्याय आदि। (४) **देवाधिदेव**–अर्हन्त तीर्थंकर। (५) **भावदेव देव**–पर्याय मे वर्तमान देव।

53. *Deva* (gods) are of five kinds—(1) *Bhavya-dravya deva*—those destined to be gods, (2) *nara deva*—kings, emperors and other rulers,

(3) *dharma deva*—*acharya, upadhyaya* and other religious leaders, (4) *Devadhideva*—*Tirthankars*, and (5) *bhaava deva*—god presently in divine state

परिचारणा-पद PARICHARANA-PAD (SEGMENT OF SEXUAL GRATIFICATION)

५४. पंचविहा परियारणा पण्णत्ता, तं जहा—कायपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा।

५४. परिचारणा पाँच प्रकार की है-(१) **काय-परिचारणा**—मनुष्यो के समान शरीर से मैथुन सेवन। (२) **स्पर्श परिचारणा**—स्त्री-पुरुष का परस्पर शरीरालिंगन। (३) **रूपपरिचारणा**—स्त्री-पुरुष का काम-भाव से परस्पर रूप देखना। (४) **शब्दपरिचारणा**—काम-भाव से स्त्री-पुरुष के परस्पर शब्द सुनना। (५) **मन·परिचारणा**—स्त्री-पुरुष का काम-भाव से परस्पर चिन्तन।

54. *Paricharana* (sexual gratification) is of five kinds—(1) *Kaya paricharana*—sexual gratification through body as the humans do, (2) *sparsh paricharana*—sexual gratification through touch (embracing), (3) *rupa paricharana*—sexual gratification through vision or to look at each other with lust, (4) *shabd paricharana*—sexual gratification through sound or to listen to each other with lust and (5) *manah paricharana*—sexual gratification through thoughts or to think of each other with lust

विवेचन—देवो मे भी काम वासना होती है। उनकी काम प्रवृत्ति रूप मैथुन सेवन को **'परिचारणा'** कहा जाता है।

भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क तथा सौधर्म, ईशान कल्प तक के देवो मे काय परिचारणा होती है। स्पर्शपरिचारणा तीसरे, चौथे देवलोक तक। रूपपरिचारणा, पाँचवे, छठे कल्प तक, शब्दपरिचारणा सातवे, आठवे कल्प तक तथा मन परिचारणा-शेष नवे से बारहवे देवलोक तक है। इनसे ऊपर के देवलोक मे किसी प्रकार की परिचारणा नही होती। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५२२ प्रज्ञापना सूत्र ३४वाँ पद)*

Elaboration—This aphorism is specifically about sexual gratification of divine beings, which is called *paricharana* Gods belonging to *Bhavanapati, Vaanavyantar, Jyotishk, Saudharma* and *Ishan* realms have *kaya paricharana* *Sparsh paricharana* is applicable in third and fourth *Devalok* *Rupa paricharana* is applicable to fifth and sixth *kalp*, *shabd paricharana* to seventh and eighth *kalp* and *manah paricharana* to the remaining *kalps* (heavenly abodes) from ninth to twelfth Beyond this there is no *paricharana* or sexual gratification *(Vritti, part-2, p 522, Prajnapana Sutra, verse 34)*

अग्रमहिषी-पद AGRAMAHISHI-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS)

५५. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काली, राती, रयणी, विज्जू, मेहा।

५६. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुंभा-णिसुंभा, रंभा, णिरंभा, मदणा।

५५. असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर की पाँच अग्रमहिषियाँ है-(१) काली, (२) रात्रि, (३) रजनी, (४) विद्युत्, (५) मेघा।

५६. वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि की पाँच अग्रमहिषियाँ है-(१) शुम्भा, (२) निशुम्भा, (३) रम्भा, (४) निरम्भा, (५) मदना।

55. Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods has five *agramahishis* (chief queens)—(1) Kaali, (2) Ratri, (3) Rajani, (4) Vidyut and (5) Megha

56. Vairochanendra Bali, the king of *Virochana* gods has five *agramahishis* (chief queens)—(1) Shumbha, (2) Nishumbha, (3) Rambha, (4) Nirambha and (5) Madana

अनीक-अनीकाधिपति-पद ANIKA-ANIKADHIPATI-PAD (SEGMENT OF ARMY AND COMMANDER)

५७. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमारण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाधिवती पण्णत्ता तं जहा—पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए।

दुमे पायत्ताणियाधिवती, सोदामे आसराया पीढाणियाधिवती, कुथू हत्थिराया कुंजराणियाधिवती, लोहितक्खे महिसाणियाधिवती, किण्णरे रथाणियाधिवती।

५७. असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के सग्राम करने वाले पाँच अनीक (सेनाएँ) और पाँच अनीकाधिपति (सेनापति) है, जैसे- **अनीक—(१) पादातानीक**—पैदल चलने वाली सेना। (२) **पीठानीक**—अश्वारोही सेना। (३) **कुंजरानीक**—गजारोही सेना। (४) **महिषानीक**—महिषारोही (भैसा-पाडा पर बैठने वाली) सेना। (५) **रथानीक**—रथारोही सेना।

इनके सेनापति इस प्रकार है-(१) द्रुम पादातानीक का अधिपति। (२) अश्वराज सुदामा—पीठानीक का अधिपति। (३) हस्तिराज कुन्थु—कुजरानीक का अधिपति। (४) लोहिताक्ष—महिषानीक का अधिपति। (५) किन्नर—रथानीक का अधिपति।

57. Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies—** (1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders,

(3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Mahishanika*—buffalo riders and (5) *Rathanika* —charioteers

The commanders of these armies are as follows—(1) Drum—commander of foot soldiers, (2) Ashvaraj Sudama—commander of horse riders, (3) Hastiraj Kunthu—commander of elephant riders, (4) Lohitaksh—commander of buffalo riders and (5) Kinnar—commander of charioteers

५८. बलिस्स णं वइरोणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच संगामियाणिया, पंच संगामियाणियाधिवती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए, (पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए), रथाणिए।

महद्दुमे पायत्ताणियाधिवती, महासोदामे आसराया पीढाणियाधिवती, मालंकारे हत्थिराया कुंजराणियाधिपती, महालोहिअक्खे महिसाणियाधिपती, किंपुरिसे रथाणियाधिपती।

५८. वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के सग्राम करने वाले पाँच अनीक (सेना) और पाँच अनीकाधिपति (सेनापति) है- **अनीक**–(१) पादातानीक, (२) पीठानीक, (३) कुजरानीक, (४) महिषानीक, (५) रथानीक।

पॉच अनीकाधिपति–(१) **महाद्रुम**–पादातानीक-अधिपति। (२) **अश्वराज–महासुदामा**–पाठानीक-अधिपति। (३) **हस्तिराज मालंकार**–कुजरानीक-अधिपति। (४) **महालोहिताक्ष**–महिषानीक-अधिपति। (५) **किंपुरुष**–रथानीक-अधिपति।

58. Vairochanendra Bali, the king of *Virochana* gods has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders, (3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Mahishanika*—buffalo riders and (5) *Rathanika*—charioteers

The commanders of these armies are as follows—(1) Mahadrum—commander of foot soldiers, (2) Ashvaraj Mahasudama—commander of horse riders, (3) Hastiraj Malankar—commander of elephant riders, (4) Mahalohitaksh—commander of buffalo riders and (5) Kimpurush—commander of charioteers

५९. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमारण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामियाणियाधिपति पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए जाव रहाणिए।

भद्दसेणे पायत्ताणियाधिपती, जसोधरे आसराया पीढाणियाधिपती, सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाधिपती, णीलकंठे महिसाणियाधिपती, आणंदे रहाणियाहिवई।

५९. नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण के सग्राम करने वाले पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है-**अनीक**-(१) पादातानीक, (२) पीठानीक, (३) कुजरानीक, (४) महिषानीक, (५) रथानीक।

अनीकाधिपति-(१) **भद्रसेन**-पादातानीक-अधिपति। (२) अश्वराज-**यशोधर**-पीठानीक-अधिपति। (३) हस्तिराज-**सुदर्शन**-कुजरानीका-अधिपति। (४) **नीलकण्ठ**-महिषानीक-अधिपति। (५) **आनन्द**-रथानीक-अधिपति।

59. Naagkumarendra Dharan, the king of *Naag Kumar* gods has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies—** (1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders, (3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Mahishanika*—buffalo riders and (5) *Rathanika*—charioteers

The commanders of these armies are as follows—(1) Bhadrasen—commander of foot soldiers, (2) Ashvaraj Yashodhar—commander of horse riders, (3) Hastiraj Sudarshan—commander of elephant riders, (4) Nilakanth—commander of buffalo riders and (5) Anand—commander of charioteers

६०. भूयाणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो पंच सगामियाणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा-पायत्ताणिए जाव रहाणिए।

दक्खे पायत्ताणियाहिवई, सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई, सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, सेयकंठे महिसाणियाहिवई, णदुत्तरे रहाणियाहिवई।

६०. नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज भूतानन्द के सग्राम करने वाले पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है-**अनीक**-(१) पादातानीक, (२) पीठानीक, (३) कुजरानीक, (४) महिषानीक, (५) रथानीक।

अनीकाधिपति-(१) **दक्ष**-पादातानीक-अधिपति। (२) **सुग्रीव** अश्वराज-पीठानीक-अधिपति। (३) **सुविक्रम** हस्तिराज-कुजरानीक-अधिपति। (४) श्वेतकण्ठ-महिषानीक अधिपति। (५) **नन्दोत्तर**-रथानीक-अधिपति।

60. Naagkumarendra Bhootanand, the king of *Naag Kumar* gods has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies—** (1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders, (3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Mahishanika*—buffalo riders and (5) *Rathanika*—charioteers

The commanders of these armies are as follows—(1) Daksh—commander of foot soldiers, (2) Ashvaraj Sugriva—commander of horse riders, (3) Hastiraj Suvikram—commander of elephant riders,

(4) Shvetakanth—commander of buffalo riders and (5) Nandottar—commander of charioteers

६१. वेणुदेवस्स णं सुवण्णिंदस्स सुवण्णुकमारण्णो पंच संगामियाणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए, एवं जधा धरणस्स तथा वेणुदेवस्सवि। वेणुदालियस्स जहा भूताणंदस्स।

६१. सुपर्णेन्द्र सुपर्णकुमारराज वेणुदेव के सग्राम करने वाले पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति धरण के समान है–अनीक–(१) पादातानीक आदि।

अनीकाधिपति–(१) भद्रसेन–पादातानीक–अधिपति आदि। जैसे धरण के पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है, उसी प्रकार सुपर्णकुमारराज सुपर्णकुमारेन्द्र, वेणुदालि के भी पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है।

61. Suparnendra Venudeva, the king of *Suparna Kumar* gods has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, etc

The commanders of these armies are as follows—(1) Bhadrasen, etc

As Dharan has five armies and five commanders in the same way Venudali Suparnendra, the king of *Suparna Kumar* gods has also five armies and five commanders

६२. जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स। ६३. जहा भूताणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स।

६२. जिसप्रकार धरण के पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है, उसी प्रकार सभी दक्षिणदिशाधिपतियो–हरिकान्त, अग्निशिख, पूर्ण, जलकान्त, अमितगति, वेलम्ब और घोष के भी सग्राम करने वाले पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति–क्रमश –भद्रसेन, अश्वराज यशोधर, हस्तिराज सुदर्शन, नीलकण्ठ और आनन्द है। ६३. जिस प्रकार भूतानन्द के पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है, उसी प्रकार उत्तरादिशाधिपति शेष सभी भवनपतियो के अर्थात् वेणुदालि, हरिस्सह, अग्निमानव, विशिष्ट, जलप्रभ, अमितवाहन, प्रभजन और महाघोष के पाँच–पाँच अनीक और पाँच–पाँच अनीकाधिपति उन्ही नाम वाले है।

62. As Dharan has five armies and five commanders in the same way all *Dakshinadhipatis* (the overlords of south) namely Harikant, Agnishikh, Purna, Jalakant, Amit-gati, Velamb and Ghosh also have five armies and five commanders—Bhadrasen, Ashvaraj Yashodhar, Hastiraj Sudarshan, Nilakanth and Anand **63.** As Bhootanand has five armies and five commanders in the same way all *Uttarendras* (the overlords of north) namely Venudali, Harissaha, Agnimanav, Vishisht, Jalaprabh,

Amit-vahan, Prabhanjan and Mahaghosh also have five armies and five commanders with the same names

६४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामियाणियाधिवती पण्णत्ता, तं जहा–पायत्ताणिए, (पीढाणिए, कुंजराणिए), उसभाणिए, रधाणिए।

हरिणेगमेसी पायत्ताणियाधिवती, वाऊ आसराया पीढाणियाधिवती, एरावणे हत्थिराया कुंजराणियाधिपती, दामड्ढी उसभाणियाधिपती, माढरे रधाणियाधिपती।

६४. देवराज देवेन्द्र शक्र के सग्राम करने वाले पॉच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है। **अनीक–** (१) पादातानीक, (२) पीठानीक, (३) कुजरानीक, (४) वृषभानीक, (५) रथानीक।

अनीकाधिपति–(१) **हरिनैगमेषी**–पादातीनक-अधिपति। (२) **अश्वराज वायु**–पीठानीक-अधिपति। (३) **हस्तिराज ऐरावण**–कुजरानीक-अधिपति। (४) **दामर्धि**–वृषभानीक-अधिपति। (५) **माठर**–रथानीक-अधिपति।

64. Shakra Devendra, the king of gods of first heaven has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders, (3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Vrishabhanika*—bull riders and (5) *Rathanika*—charioteers

The commanders of these armies are as follows—(1) Harinaigameshi—commander of foot soldiers, (2) Ashvaraj Vayu—commander of horse riders, (3) Hastiraj Airavan—commander of elephant riders, (4) Daamardhi—commander of bull riders and (5) Mathar—commander of charioteers

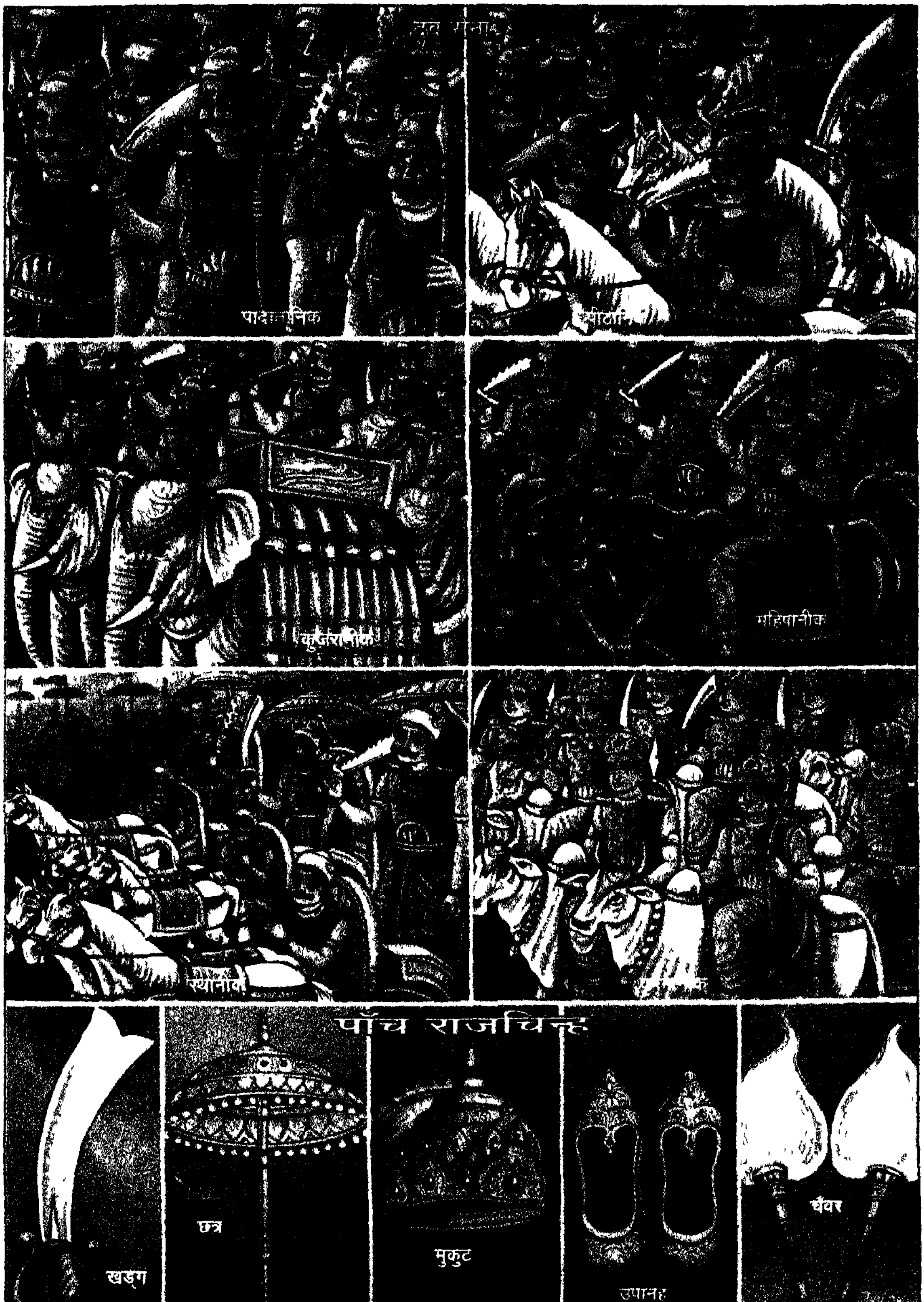
६५. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया अणिया जाव पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, उसभाणिए, रधाणिए।

लहुपरक्कमे पायत्ताणियाधिवती महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवती, पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवती, महादामड्ढी उसभाणियाहिवती, महामाढरे रहाणियाहिवती।

६५. देवराज देवेन्द्र ईशान के सग्राम करने वाले पाँच अनीक और पॉच अनीकाधिपति है। **अनीक–**(१) पादातानीक, (२) पीठानीक, (३) कुजरानीक, (४) वृषभानीक, (५) रथानीक।

अनीकाधिपति–(१) **लघुपराक्रम**–पादातानीक-अधिपति। (२) **अश्वराज महावायु**–पाठानीक-अधिपति। (३) **हस्तिराज पुष्पदन्त**–कुजरानीक-अधिपति। (४) **महादामर्धि**–वृषभानीक-अधिपति। (५) **महामाठर**–रथानीक-अधिपति।

65. Ishan Devendra, the king of gods of second heaven has five *anikas* (armies) and five *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders,


कुंजरानीक
महिषानीक
रथानीक
पाँच राजचिह्न
खड्ग
छत्र
मुकुट
उपानह
चँवर
5

चित्र परिचय ५

Illustration No. 5

देव सेना और राजचिह्न

असुर सेना पाच प्रकार की होती है-(१) **पादातानिक**–पैदल सैनिक, (२) **पीठानिक**–अश्वारोही सेना, (३) **कुंजरानीक**–गजारोही सेना (४) **महिषानीक**–महिषारोही सेना तथा (५) **रथानीक**–रथारोही सेना।

देव सेना में प्रथम चार तो उसी प्रकार की सेना रहती है महिष के स्थान पर उनकी सेना वृषभारोही होती है।

—स्थान ५ उ. १ सूत्र ५७-६५

पॉच राज चिह्न–

(१) **खड्ग**–वीरता का प्रतीक, (२) **छत्र**–प्रजा रक्षा का प्रतीक (३) **मुकुट**–वैभव का प्रतीक (४) **उपानह**–कठोर शासन का प्रतीक तथा (५) **चवर**–सुन्दरता तथा पर आक्रमण से रक्षा का प्रतीक।

—स्थान ५ उ. १ सूत्र ७२

ARMIES OF GODS AND ROYAL SYMBOLS

Asur army is of five kinds—(1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders, (3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Mahishanika*—buffalo riders, and (5) *Rathanika*—charioteers.

In *Deva* army the only difference is that in place of buffalo riders there are *Vrishabh* (bull) riders.

—*Sthaan 5 Lesson 1 Sutra 57-65*

FIVE RAJACHINHA (REGAL SYMBOLS)—

(1) *Khadga* (sword, sign of bravery), (2) *Chhatra* (umbrella, sign of protecting people), (3) *Mukut* (crown, sign of grandeur), (4) *Upanah* (shoes, sign of strict rule), and (5) *Chamar* (fanning whisks, sign of beauty and security).

—*Sthaan 5 Lesson 1 Sutra 72*

(3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Vrishabhanika*—bull riders and (5) *Rathanika*—charioteers

The commanders of these armies are as follows—(1) Laghuparakram—commander of foot soldiers, (2) Ashvaraj Mahavayu—commander of horse riders, (3) Hastiraj Pushpadant—commander of elephant riders, (4) Mahadamardhi—commander of bull riders and (5) Mahamathar—commander of charioteers

६६. जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स। ६७. जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुतस्स।

६६. जिस प्रकार देवराज देवेन्द्र शक्र के पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है, उसी प्रकार आरणकल्प तक के सभी दक्षिणेन्द्रो के भी सग्राम करने वाले पाँच-पाँच अनीक और पाँच-पाँच अनीकाधिपति है। ६७. जिस प्रकार देवराज देवेन्द्र ईशान के पाँच अनीक और पाँच अनीकाधिपति है। उसी प्रकार अच्युतकल्प तक के सभी उत्तरेन्द्रो के भी सग्राम करने वाले पाँच-पाँच अनीक और पाँच-पाँच अनीकाधिपति है।

66. As Shakra Devendra, the king of gods of first heaven has five armies and five commanders in the same way all overlords of south up to *Aran kalp* also have five armies and five commanders each **67.** As Ishan Devendra, the king of gods of second heaven has five armies and five commanders in the same way all overlords of north up to *Achyut kalp* also have five armies and five commanders each

विवेचन—सूत्र ५७ से ६७ तक के सूत्रो मे असुरो और वैमानिक देवो की सेना व सेनापतियो का वर्णन है। देव और असुर परस्पर विरोधी स्वभाव वाले है। उनमे जन्मना द्वेष भाव रहता है। जहाँ द्वेष व सत्ता-मोह होता है, वहाँ युद्ध भी होता है। युद्ध के लिए सेना और सेनापति भी रखे जाते है। यहाँ जिज्ञासा है, देवताओ मे हाथी-घोडे आदि पशु होते है क्या ? समाधान है, देव ही हाथी-घोडे आदि के रूप धारण करके परस्पर युद्ध करते है। इसमे महत्त्व की बात ध्यान देने की है। असुरो मे जहाँ **'महिष सेना'** बताई है, वहाँ देवो मे **वृषभ** सेना कही है। महिष-आलस्य, उन्माद, शक्ति की प्रबलता व तमोगुण का प्रतीक है, जबकि वृषभ-शक्ति, स्फूर्ति, श्रेष्ठता और सत्वगुण का प्रतीक है। उन्मादी असुर महिषरूप और स्फूर्तिमय देव वृषभ रूप धारण कर युद्ध मे भाग लेते है। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ६२)*

Elaboration—Aphorisms 57-67 describe armies and commanders of *Asura* and *Vaimanik* gods *Devas* and *Asurs* are of mutually opposite nature They have mutual antagonism since birth Aversion and ambition for power lead to wars It is necessary to have armies and commanders to fight a war Here a question arises—Do gods have horses, elephants and other animals ? The answer is that the gods

themselves transform to animals and fight It should be noted that among *Asuras* we find a mention of buffalo and at the same place among *Devas* we find bull Buffalo represents vices like lethargy, stupor and strength whereas bull represents virtues like strength, agility, and excellence Mad *Asuras* transform to buffalos and fight with agile *Devas* transformed to bulls *(Hindi Tika, part-2, p 62)*

देवस्थिति-पद DEVASTHITI-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN OF GODS)

६८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भंतरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।
६९. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भंतरपरिसाए देवीणं पंच पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।

६८. देवराज देवेन्द्र शक्र की अन्तरग परिषद् के देवो की स्थिति पॉच पल्योपम है। ६९. देवराज देवेन्द्र ईशान की अन्तरग परिषद् की देवियो की स्थिति पॉच पल्योपम है।

68. The life span of gods of inner assembly of Shakra Devendra, the king of gods of first heaven is five *Palyopam* (a conceptual unit of time) **69.** The life span of goddesses of inner assembly of Ishan Devendra, the king of gods of second heaven is five *Palyopam* (a conceptual unit of time)

प्रतिघात-पद PRATIGHAT-PAD (SEGMENT OF IMPEDIMENT)

७०. पंचविहा पडिहा पण्णत्ता, तं जहा—गतिपडिहा, ठितिपडिहा, बंधणपडिहा, भोगपडिहा, बल-वीरिय-पुरिसयार-परक्कमपडिहा।

७०. प्रतिघात (अवरोध या स्खलन) पाँच प्रकार के होते है -(१) **गति-प्रतिघात**—अशुभ प्रवृत्ति के द्वारा शुभगति का अवरोध। (२) **स्थिति-प्रतिघात**—उदीरणा के द्वारा कर्मस्थिति का अल्पीकरण। (३) **बन्धन-प्रतिघात**—शुभ औदारिक शरीर-बन्धनादि की प्राप्ति का अवरोध। (४) **भोग-प्रतिघात**—भोग्य सामग्री के भोगने का अवरोध। (५) बल, वीर्य, पुरुष और पराक्रम की प्राप्ति का अवरोध।

70. *Pratighat* (impediments or falls) are of five kinds—(1) *Gati pratighat*—impeding the *shubh-gati* (good rebirth) through bad attitude or action (2) *Sthiti pratighat*—reduction of duration of *karma* through fruition (3) *Bandhan pratighat*—impeding the bonding of good *karmas* leading to good *audarik sharira* (gross physical body) (4) *Bhog pratighat*—impeding the enjoyment of available means of pleasure (5) Impeding the acquisition of strength, potency, prowess and valour

विवेचन—सामान्यत प्रतिघात का अर्थ है, अवरोध, अन्तराय या रुकावट। किन्तु यहाँ अध्यात्म दृष्टि से वर्णन है, अत यहाँ अशुभ भावो व अशुभ प्रवृत्तियो द्वारा शुभ गति, शुभ-स्थिति, शुभबधन, शुभभोग और सुबल-वीर्य मे अवरोध या प्रतिहनन होना अपेक्षित है।

शारीरिक शक्ति–**बल**, आत्म शक्ति–**वीर्य**, पुरुष होने का अभिमान–**पुरुषकार** और इन सबका सम्मिलित रूप–**पराक्रम** कहा जाता है। *(वृत्ति भाग–२ पृष्ठ ५२३)*

Elaboration—The general meaning of *avarodh* is impediment, blockage or hurdle But here the statement is in spiritual context Therefore here it indicates impediment or blocking of good rebirth, good life-span, good *karmic* bondage, good association, and good power and potency through bad attitude and action *Parakram* or valour is said to be the combination of *bal* (strength), *virya* (spiritual potency), and *purushkar* (ego of being a man, prowess) *(Vritti part-2, p 523)*

आजीव–सूत्र **AJIVA-PAD (SEGMENT OF SUBSISTENCE)**

७१. पंचविहे आजीवे पण्णत्ते, तं जहा–जातिआजीवे, कुलाजीवे, कम्माजीवे, सिप्पाजीवे, लिंगाजीवे।

७१. आजीवक (आजीविका करने वाले पुरुष) पाँच प्रकार के होते है–(१) **जात्याजीवक**–अपनी ब्राह्मणादि जाति बताकर आजीविका करने वाला। (२) **कुलाजीवक**–अपना क्षत्रिय कुल आदि बताकर आजीविका करने वाला। (३) **कर्माजीवक**–कृषि मजदूरी आदि से आजीविका करने वाला। (४) **शिल्पाजीवक**–शिल्प आदि कला से आजीविका करने वाला। (५) **लिगाजीवक**–साधुवेष आदि धारण कर आजीविका करने वाला।

71. *Ajivak* (those who subsist on something) is of five kinds—(1) *Jatyajivak*—those who acquire means of subsistence by revealing their caste, such as Brahmin (2) *Kulajivak*—those who acquire means of subsistence by revealing their clan, such as *Kshatriya* (3) *Karmajivak*—those who acquire means of subsistence by working or doing physical labour (4) *Shilpajivak*—those who acquire means of subsistence through art and craft (5) *Lingajivak*—those who acquire means of subsistence through appearance or by dressing in the garb of a monk or other such people

राजचिह्न–सूत्र **RAJACHINHA-PAD (SEGMENT OF REGAL SYMBOLS)**

७२. पंच रायककुधा पण्णत्ता, तं जहा–खग्गं, छत्तं, उप्फेसं, पाणहाओ, बालवीअणे।

७२. राजचिह्न पाँच प्रकार के होते है–(१) खड्ग (वीरता का प्रतीक), (२) छत्र (प्रजा रक्षा का प्रतीक), (३) उष्णीष मुकुट (वैभव का प्रतीक), (४) उपानह–पाद–रक्षक, जूते (कठोर शासन का प्रतीक)–(५) बाल व्यजन–चवर (सुन्दरता व पर आक्रमण से रक्षा का प्रतीक)।

72. *Rajachinha* (regal symbols) are of five kinds—(1) *Khadga* (sword, sign of bravery), (2) *Chhatra* (umbrella, sign of protecting people),

(3) *Ushnisha* (crown, sign of grandeur), (4) *Upanah* (shoes, sign of strict rule) and (5) *Baal vyajan* (fanning whisks, sign of beauty and security).

उदीर्णपरीषहोपसर्ग–सूत्र UDIRNAPARISHAHOPASARG-PAD (SEGMENT OF PRECIPITATED AFFLICTIONS AND TORMENTS)

७३. पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे णं उदिण्णे परिस्सहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेजा अहियासेज्जा, तं जहा–

(१) उदिण्णकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूते। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबल वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा अवहरति वा।

(२) जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति (अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा) अवहरति वा।

(३) ममं च ण तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवति। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति (अवहसति वा णिच्छोडति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा) अवहरति वा।

(४) ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणधियासमाणस्स किं मण्णे कज्जति ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति।

(५) ममं च णं सम्मं सहमाणस्स जाव (खममाणस्स तितिक्खमाणस्स) अहियासेमाणस्स कि मण्णे कज्जति ? एगंतसो मे णिज्जरा कज्जति।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव (खमेज्जा तितिक्खेज्जा) अहियासेज्जा।

७३. पाँच कारणो से छद्मस्थ पुरुष उदीर्ण–(उदय को प्राप्त) परीषहो और उपसर्गो को सम्यक् प्रकार से अविचल भाव के साथ सहता है, क्षान्ति रखता है, तितिक्षा रखता है और उनसे विचलित नही होता है।

(१) यह पुरुष उदीर्णकर्मा है, इसलिए यह उन्मत्त (पागल) जैसा हो रहा है। इसी कारण यह मुझ पर आक्रोश करता है, या मुझे गाली देता है, या मेरा उपहास करता है, या मुझे बाहर निकालने की धमकी देता है, या मेरी निर्भर्त्सना (झिडकियाँ देना) करता है, या मुझे बाँधता है, या रोकता है, या

छविच्छेद (अग का छेदन) करता है, या पमार (मूर्च्छित या मरणासन्न) करता है, या उपद्रव करता है, वस्त्र, पात्र, कम्बल, पादप्रोछन आदि छीनता है, या दूर फैकता है, या तोडत्ता-फोडता है, या चुराता है।

(२) **यह पुरुष अवश्य ही यक्षाविष्ट**–(भूत-प्रेतादि से ग्रस्त) है, इसलिए यह मुझ पर आक्रोश करता है, या मुझे गाली देता है, या मेरा उपहास करता है, या बाहर निकालने की धमकी देता है, या मेरी निर्भर्त्सना करता है, या बाँधता है, या रोकता है, या छविच्छेद करता है, या मूर्च्छित करता है, या उपद्रुत करता है, वस्त्र, पात्र, कम्बल या पादप्रोछन का छेदन करता है, या विच्छेदन करता है, या भेदन करता है, या अपहरण करता है

(३) मेरे इस भव मे वेदना भोगने योग्य कर्म उदय मे आ रहा है, इसलिए यह पुरुष मुझ पर आक्रोश करता है, मुझे गाली देता है, या मेरा उपहास करता है, या मुझे बाहर निकालने की धमकी देता है, या निर्भर्त्सना करता है, या बाँधता है, या रोकता है, या छविच्छेद करता है, या मूर्च्छित करता है, या उपद्रुत करता है, वस्त्र, पात्र, कम्बल, या पादप्रोछन का छेदन करता है, या विच्छेदन करता है, या भेदन करता है, या अपहरण करता है।

(४) यदि मै इन्हे सम्यक् प्रकार अविचल भाव से सहन नही करूँगा, क्षान्ति नही रखूँगा, तितिक्षा नही रखूँगा और उनसे प्रभावित हो जाऊँगा, तो मुझे क्या होगा? मुझे एकान्त रूप से पापकर्म का सचय होगा।

(५) यदि मै इन्हे सम्यक् प्रकार अविचल भाव से सहन करूँगा, क्षान्ति रखूँगा, तितिक्षा रखूँगा और उनसे प्रभावति नही होऊँगा, तो मुझे क्या होगा? एकान्त रूप से कर्म-निर्जरा होगी।

इन पाँच कारणो से छद्मस्थ पुरुष उदय मे आये परीषहो और उपसर्गो को सम्यक् प्रकार अविचल भाव से सहता है, क्षान्ति रखता है, तितिक्षा रखता है और उनसे अप्रभावित रहता है।

73. For five reasons a *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) properly and resolutely endures the precipitated (*udirna*) afflictions and torments with forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) remaining unmoved—

(1) The *karmas* of this person have undergone fruition, therefore he is crazy That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or makes me unconscious or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(2) This person is under the influence of bad spirits That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or makes me unconscious or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(3) My *karmas* responsible for suffering of pain are coming to fruition during this life time That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or makes me unconscious or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(4) What will happen to me if I do not properly and resolutely endure these with forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) and get moved ? I will singularly acquire demeritorious *karmas* (*paap karma*)

(5) What will happen to me if I properly and resolutely endure these with forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) and remain unmoved ? I will singularly shed *karmas* (*karma nirjara*)

For the above said five reasons a *chhadmasth* person properly and resolutely endures the precipitated afflictions and torments with forbearance and forgiveness, remaining unmoved

७४. पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव (खमेज्जा तितिक्खेज्जा) अहियासेज्जा, तं जहा–

(१) खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे। तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव (अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा) अवहरति वा।

(२) दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे। तेण मे एस पुरिसे जाव (अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा) अवहरति वा।

(३) जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे। तेण मे एस पुरिसे जाव (अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा) अवहरति वा।

(४) ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवति। तेण मे एस पुरिसे जाव [अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधेति वा रुंभति वा छविच्छेदं करेति वा, पमारं वा णेति, उद्दवेइ वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणमच्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा] अवहरति वा।

(५) ममं च णं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहियासेमाणं पासेत्ता बहवे अण्णे छउमत्था समणा णिग्गंथा उदिण्णे–उदिण्णे परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव [खमिस्संति तितिक्खस्संति] अहियासिस्संति।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव (खमेज्जा तितिक्खेज्जा) अहियासेज्जा।

७४. पाँच कारणो से केवली उदय मे आये परीषहो और उपसर्गों को सम्यक् प्रकार अविचल भाव से सहते है, क्षान्ति रखते है, तितिक्षा रखते है, और उनसे अप्रभावित रहते है। जैसे -

(१) यह पुरुष अवश्य **विक्षिप्तचित्त है**–शोक आदि से बेभान है, इसलिए यह मुझ पर आक्रोश करता है, (मुझे गाली देता है या मेरा उपहास करता है, या मुझे बाहर निकालने की धमकी देता है या मेरी निर्भर्त्सना करता है या मुझे बाँधता है या रोकता है या छविच्छेद करता है या वधस्थान मे ले जाता है या उपद्रुत करता है, वस्त्र या पात्र या कम्बल या पादप्रोछन का छेदन करता है या विच्छेदन करता है या भेदन करता है) या अपहरण करता है।

(२) यह पुरुष अवश्य **दृप्तचित्त** (अहकार आदि के उन्माद–ग्रस्त) है, इसलिए यह मुझ पर आक्रोश करता है [मुझे गाली देता है या मेरा उपहास करता है या मुझे बाहर निकालने की धमकी देता है या मेरी निर्भर्त्सना करता है या मुझे बाँधता है या रोकता है या छविच्छेदन करता है या वधस्थान मे ले जाता है या उपद्रव करता है, वस्त्र या पात्र या कम्बल या पादप्रोछन का छेदन करता है या भेदन करता है] या अपहरण करता है।

(३) यह पुरुष अवश्य **यक्षाविष्ट** (यक्ष से प्रेरित) है, इसलिए यह मुझ पर आक्रोश करता है, [मुझे गाली देता है, उपहास करता है, बाहर निकालने की धमकी देता है, निर्भर्त्सना करता है, या बाँधता है, या रोकता है, या छविच्छेद करता है, या वधस्थान मे ले जाता है, या उपद्रुत करता है, वस्त्र, या पात्र, या कम्बल, या पादप्रोछन का छेदन करता है, या विच्छेदन करता है, या भेदन करता है,] या अपहरण करता है।

(४) मेरे इस भव मे वेदन करने योग्य कर्म उदय मे आ रहा है, इसलिए यह पुरुष मुझ पर आक्रोश करता है–[गाली देता है, या उपहास करता है, या बाहर निकालने की धमकी देता है, या निर्भर्त्सना करता है, या बाँधता है, या रोकता है, या छविच्छेद करता है, या वधस्थान मे ले जाता है, या उपद्रुत करता है, वस्त्र,या पात्र,या कम्बल, या पादप्रोछन का छेदन करता है, या विच्छेदन करता है, या भेदन करता है] या अपहरण करता है।

(५) मुझे सम्यक् प्रकार अविचल भाव से परीषहो और उपसर्गो को सहन करते हुए, क्षान्ति रखते हुए, तितिक्षा रखते हुए और उनसे अप्रभावित रहते हुए देखकर बहुत से अन्य छद्मस्थ श्रमण-निर्ग्रन्थ उदय मे आये परीषहो और उपसर्गों को सम्यक् प्रकार अविचल भाव से सहन करेगे, क्षान्ति रखेगे, तितिक्षा रखेगे और उनसे अप्रभावित रहेगे।

इन पाँच कारणो से केवली उदयागत परीषहो और उपसर्गों को सम्यक् प्रकार अविचल भाव से सहन करते हैं, क्षान्ति रखते है, तितिक्षा रखते है और अप्रभावित रहते है।

74. For five reasons a *Kevali* (omniscient) properly and resolutely endures the precipitated (*udirna*) afflictions and torments with forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) remaining unmoved—

(1) This person is, indeed, *vikshipt chitt* (not in his senses due to grief or other such problem) That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or takes me to the killing ground or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(2) This person is, indeed, *driptachitt* (crazy due to bloated ego or other such vice) That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or takes me to the killing ground or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(3) This person is, indeed, *yakshavisht* (under the influence of a *Yaksha* or bad spirits) That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or takes me to the killing ground or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(4) My *karmas* responsible for suffering of pain are coming to fruition during this life time That is why he is angry at me or abuses me or threatens me to throw out or rebukes me or ties me or stops me or pierces my body or takes me to the killing ground or torments me or snatches, throws away, breaks, shatters or steals my garb, bowls, ascetic-broom and other equipment

(4) What will happen to me if I do not properly and resolutely endure these with forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) and get moved ? I will singularly acquire demeritorious *karmas* (*paap karma*)

(5) When I properly and resolutely endure these with forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) and remain unmoved, many *chhadmasth nirgranth shramans* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) will see that and get inspired to properly and resolutely endure precipitated (*udirna*) afflictions and torments with

forbearance (*titiksha*) and forgiveness (*kshama*) and remain unmoved I will singularly shed *karmas* (*karma nirjara*)

For these five reasons a *Kevali* properly and resolutely endures the precipitated afflictions and torments with forbearance and forgiveness remaining unmoved

विवेचन—वृत्तिकार के अनुसार यहाँ केवली शब्द से श्रुत केवली, अवधिज्ञानी, मन पर्यवज्ञानी और केवल ज्ञानी सभी अभीष्ट है। वे इन पाँच कारणो मे से किसी एक कारण से परीषहोपसर्ग सहन करते है। पाँचो कारण एक साथ कभी उपस्थित नही होते। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ७४)*

Elaboration—According to the author of the *Vritti* the term *Kevali* here includes *Shrut Kevali, Avadhi jnani, Manahparyav jnani* and *Keval jnani* The endure afflictions caused due to any one of these five reasons All the five reasons are never effective at once *(Hindi Tika, part-2, p 74)*

हेतु–पद HETU-PAD (SEGMENT OF CAUSE)

७५. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउं ण जाणति, हेउं ण पासति, हेउं ण बुज्झति, हेउं णाभिगच्छति, हेउं अण्णाणमरणं मरति। ७६. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउणा ण जाणति, जाव (हेउणा ण पासति, हेउणा ण बुज्झति, हेउणा णाभिगच्छति), हेउणा अण्णाणमरणं मरति

७५. हेतु पाँच है–(१) हेतु को (सम्यक्) नही जानता है। (२) हेतु को (सम्यक्) नही देखता है। (३) हेतु को (सम्यक) नही समझता है–श्रद्धा नही करता है। (४) हेतु को प्राप्त-(सम्यक् रूप से ग्रहण) नही करता है। (५) हेतु–पूर्वक अज्ञानमरण से मरता है। ७६. हेतु पाँच है–(१) हेतु से असम्यक् जानता है। (२) हेतु से असम्यक् देखता है। (३) हेतु से असम्यक् समझता है, असम्यक् श्रद्धा करता है। (४) हेतु से असम्यक् प्राप्त करता है। (५) सहेतुक अज्ञानमरण से मरता है।

75. *Hetu* (cause/one who knows cause) is of five kinds—(1) does not (properly) know *hetu* (the cause), (2) does not (properly) see *hetu* (the cause), (3) does not have (proper) faith on *hetu*, (4) does not (properly) accept *hetu* and (5) embraces death of an ignorant with *hetu* **76.** *Hetu* (cause/one who knows cause) is of five kinds—(1) does not (properly) know through *hetu*, (2) does not (properly) see through *hetu*, (3) does not have (proper) faith or understand through *hetu*, (4) does not (properly) accept through *hetu* and (5) embraces death of an ignorant through *hetu*

७७. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउं जाणइ, जाव (हेउं पासइ, हेउं बुज्झइ, हेउं अभिगच्छइ), हेउं छउमत्थमरणं मरति। ७८. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा–हेउणा जाणइ जाव (हेउणा पासइ, हेउणा बुज्झइ, हेउणा अभिगच्छइ), हेउणा छउमत्थमरणं मरइ।

७७. पाँच हेतु है-(१) हेतु को (सम्यक्) जानता है। (२) हेतु को (सम्यक्) देखता है। (३) हेतु की (सम्यक्) श्रद्धा करता है। (४) हेतु को (सम्यक्) प्राप्त करता है। (५) हेतु-पूर्वक छद्मस्थमरण मरता है। ७८. पुन पाँच हेतु है-(१) हेतु से (सम्यक्) जानता है। (२) हेतु से (सम्यक्) देखता है। (३) हेतु से (सम्यक्) श्रद्धा रखता है। (४) हेतु से (सम्यक्) प्राप्त करता है। (५) हेतु से (सम्यक्) छद्मस्थमरण मरता है।

77. *Hetu* (cause/one who knows cause) is of five kinds—(1) does (properly) know *hetu*, (2) does (properly) see *hetu*, (3) does have (proper) faith on *hetu*, (4) does (properly) accept *hetu* and (5) embraces death of a *chhadmasth* with *hetu* **78.** *Hetu* (cause/one who knows cause) is of five kinds—(1) does (properly) know through *hetu*, (2) does (properly) see through *hetu*, (3) does have (proper) faith through *hetu*, (4) does (properly) accept through *hetu* and (5) embraces death of a *chhadmasth* through *hetu*

अहेतु-पद AHETU-PAD

७९. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा-अहेउं ण जाणति, जाव (अहेउं ण पासति, अहेउं ण बुज्झति, अहेउं णाभिगच्छति), अहेउं छउमत्थमरण मरति। ८०. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा-अहेउणा ण पासति, (अहेउणा ण बुज्झति, अहेउणा णाभिगच्छति), अहेउणा छउमत्थमरणं मरति।

७९. पाँच अहेतु है-(१) अहेतु को नही जानता है। (२) अहेतु को नही देखता है। (३) अहेतु की श्रद्धा नही करता है। (४) अहेतु को प्राप्त नही करता है। (५) अहेतुक छद्मस्थमरण से मरता है। ८०. पुन पाँच अहेतु है- (१) अहेतु से नही जानता है। (२) अहेतु से नही देखता है। (३) अहेतु से श्रद्धा नही करता है। (४) अहेतु से प्राप्त नही करता है। (५) अहेतुक छद्मस्थमरण से मरता है।

79. *Ahetu* (non-cause) is of five kinds—(1) does not know *ahetu*, (2) does not see *ahetu*, (3) does not have faith on *ahetu* (4) does not accept *ahetu* and (5) embraces death of a *chhadmasth* with ahetu **80.** *Ahetu* is of five kinds—(1) does not know through *ahetu*, (2) does not see through *ahetu*, (3) does not have faith or understand through *ahetu*, (4) does not accept through *ahetu* and (5) embraces death of a *chhadmasth* through *ahetu*

८१. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा-अहेउं जाणति, जाव (अहेउं पासति, अहेउं बुज्झति, अहेउं अभिगच्छति), अहेउं केवलिमरणं मरति। ८२. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा-अहेउणा जाणति, जाव (अहेउणा पासति, अहेउणा बुज्झति, अहेउणा अभिगच्छति), अहेउणा केवलिमरणं मरति।

८१. पाँच अहेतु है (१) अहेतु को जानता है। (२) अहेतु को देखता है। (३) अहेतु की श्रद्धा करता है। (४) अहेतु को प्राप्त करता है। (५) अहेतुक केवलि-मरण मरता है। ८२. पुन पाँच अहेतु

है-(१) अहेतु से जानता है। (२) अहेतु से देखता है। (३) अहेतु से श्रद्धा करता है। (४) अहेतु से प्राप्त करता है। (५) अहेतुक केवलि-मरण मरता है।

81. *Ahetu* (non-cause) is of five kinds—(1) does know *ahetu*, (2) does see *ahetu*, (3) does have faith on *ahetu*, (4) does accept *ahetu* and (5) embraces death of a *Kevali* with *ahetu* **82.** *Ahetu* is of five kinds—(1) does know through *ahetu*, (2) does see through *ahetu*, (3) does have faith through *ahetu*, (4) does accept through *ahetu* and (5) embraces death of a *Kevali* through *ahetu*

विवेचन—उपर्युक्त आठ सूत्रो मे से आरम्भ के चार सूत्र हेतु-विषयक है और अन्तिम चार सूत्र अहेतु-विषयक है। जिससे साध्य का स्पष्ट ज्ञान हो उसे 'हेतु' कहते है। जैसे धुएँ से दूरस्थ अग्नि का ज्ञान होता है। धुआँ हेतु है, अग्नि साध्य है।

जो हेतु तो नही, किन्तु हेतु जैसा लगता है उसे अहेतु कहा जाता है। हेतु और अहेतु दोनो का ज्ञान अनिवार्य है।

पदार्थ दो प्रकार के होते है-हेतुगम्य और अहेतुगम्य। परोक्ष या दूरस्थित होने के कारण जो पदार्थ हेतु से जाने जाते है, उन्हे हेतुगम्य कहते है। जैसे-दूर प्रदेश मे स्थित अग्नि धूम के कारण जानी जाती है। किन्तु जो पदार्थ सूक्ष्म है, दूर प्रदेश मे स्थित है किन्तु बहुत काल पूर्व के है जैसे-(राम-रावण आदि) जिनका हेतु से ज्ञान सम्भव नही है, जो केवल ज्ञानी पुरुषो के वचनो से ही जाने जा सकते है, उन्हे अहेतुगम्य अर्थात् आगमगम्य कहा जाता है। जैसे-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि अरूपी पदार्थ केवल आगम-गम्य है, हमारे लिए वे हेतुगम्य नही है।

प्रस्तुत सूत्रो मे हेतु और हेतुवादी (हेतु का प्रयोग करने वाला) ये दोनो ही हेतु शब्द से बताये गये है। जो हेतुवादी असम्यग्दर्शी होता है, वह कार्य को जानता-देखता तो है, परन्तु उसके हेतु को नही जानता-देखता है। वह हेतु-गम्य पदार्थ को हेतु के द्वारा जानता-देखता। जो हेतुवादी सम्यग्दर्शी होता है, वह कार्य के साथ-साथ उसके हेतु को भी जानता-देखता है। वह हेतु-गम्य पदार्थ को हेतु द्वारा जानता-देखता है।

परोक्ष ज्ञानी (श्रुतज्ञानी) जीव हेतु के द्वारा परोक्षा वस्तुओ को जानते-देखते है। प्रत्यक्षज्ञानी (अवधि ज्ञानी आदि) प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओ को जानते-देखते है। उन्हे हेतु की अपेक्षा नही रहती। प्रत्यक्षज्ञानी भी दो प्रकार के होते है-देशप्रत्यक्षज्ञानी और सकलप्रत्यक्षज्ञानी। देशप्रत्यक्षज्ञानी धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो की स्वाभाविक परिणतियो को आशिकरूप से ही जानता-देखता है, पूर्णरूप से नही जानता-देखता। वह अहेतु (प्रत्यक्ष ज्ञान) के द्वारा अहेतुगम्य पदार्थों को सर्वभावेन नही जानता-देखता। किन्तु जो सकल प्रत्यक्षज्ञानी सर्वज्ञ केवली होता है, वह धर्मास्तिकाय आदि अहेतुगम्य पदार्थों की स्वाभाविक परिणतियो को सम्पूर्ण रूप से जानता-देखता है। वह प्रत्यक्षज्ञान के द्वारा अहेतुगम्य पदार्थों को सर्वभाव से जानता-देखता है।

उक्त विवेचन का निष्कर्ष यह है कि प्रारम्भ के दो सूत्र असम्यग्दर्शी हेतुवादी की अपेक्षा से और तीसरा-चौथा सूत्र सम्यग्दर्शी हेतुवादी की अपेक्षा से है। पाँचवा-छठाँ सूत्र देशप्रत्यक्षज्ञानी छद्मस्थ की अपेक्षा से और सातवा-आठवा सूत्र सकलप्रत्यक्षज्ञानी सर्वज्ञ केवली की अपेक्षा से है।

उक्त आठो सूत्रो का पाँचवा भेद मरण से सम्बन्ध रखता है। मरण दो प्रकार का होता है-सहेतुक (सोपक्रम) और अहेतुक (निरुपक्रम)। शस्त्राघात आदि बाह्य हेतुओ से होने वाला मरण सहेतुक, सोपक्रम या अकालमरण है। जो मरण शस्त्राघात आदि बाह्य हेतुओ के बिना आयुष्य कर्म के पूर्ण होने पर होता है, वह अहेतुक, निरुपक्रम या यथाकाल मरण है। असम्यग्दर्शी हेतुवादी का अहेतुक मरण अज्ञानमरण कहलाता है और सम्यग्दर्शी हेतुवादी का सहेतुकमरण छद्मस्थमरण कहलाता है, देशप्रत्यक्षज्ञानी का सहेतुकमरण भी छद्मस्थमरण कहा जाता है। सकलप्रत्यक्षज्ञानी सर्वज्ञ का अहेतुक मरण केवलि-मरण कहा जाता है।

वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि कहते है कि हमने उक्त सूत्रो का यह अर्थ भगवती सूत्र के पचम शतक के सप्तम उद्देशक की चूर्णि के अनुसार लिखा है, जो कि सूत्रो के पदो की गमनिका मात्र है। इन सूत्रो का वास्तविक अर्थ तो बहुश्रुत आचार्य ही जानते है। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५२८)*

Elaboration—Of the eight aforesaid aphorisms first four are regarding *hetu* and last four are regarding *ahetu* *Hetu* means causative phrase or statement that proves a point For example smoke conclusively informs about a distant fire Smoke is *hetu* and fire is the point proved

That which is not *hetu* but appears like *hetu* is called *ahetu* (non-cause) Knowledge of both *hetu* and *ahetu* is essential

Things are of two kinds—inferred through *hetu* (*hetugamya*) and inferred through *ahetu* (*ahetugamya*) Things that are known through cause (*hetu*) due to being distant and not directly perceivable are called *hetugamya* For example a distant fire is known due to presence of visible smoke But things that are subtle, remote in terms of time as well as space, cannot be known through *hetu* and can only be known through the words of *Keval jnanis* (omniscients) are called *ahetu gamya* (inferred through *ahetu*) or *Agam gamya* (known through *Agam*) For example—*Dharmastikaya, Adharmastikaya* and other formless things are known only through *Agam* and are not *hetugamya* for us

In the aforesaid aphorisms the term *hetu* means both *hetu* (cause) and *hetuvadi* (one who uses the cause) A *hetuvadi* who is *asamyagdarshi* (does not properly know) sees and knows the thing or act but does not see and know its cause He does not see and know a *hetu gamya* thing through *hetu* A *hetuvadi* who is *samyagdarshi* (properly

knows) sees and knows the thing or act as well as its cause He sees and knows a *hetu gamya* thing through *hetu*

Paroksh jnani (who perceives indirectly) sees and knows things that are not directly visible through *hetu* *Pratyaksh jnani* (who perceives directly) sees things directly They are not dependent on *hetu* *Pratyaksh jnanis* are also of two types—*desh pratyaskh jnani* (having partial direct perception) *sakal pratyaskh jnani* (having complete direct perception) *Desh pratyaskh jnani* sees and knows the natural transformations of entities like *Dharmastikaya* only partially and not completely Through his direct perception (*ahetu*) he cannot fully know the *ahetu gamya* things But *Sakal pratyaskh jnani* or omniscient sees and knows the full spectrum of natural transformations of entities like *Dharmastikaya* Through his direct perception (*ahetu*) he fully sees and knows the *ahetu gamya* things

In conclusion it can be said that the first two aphorism are for an imperfect *hetuvadi* and third and fourth aphorisms are for perfect *hetuvadi* Fifth and sixth aphorisms are for *Desh pratyaskh jnani chhadmasth* and seventh and eighth aphorisms are for *Sakal pratyaskh jnani* omniscient

The fifth alternative of these eight aphorism relates to death which is of two types—*sahetuk* (with a cause) and *ahetuk* (without a cause). Death caused by external causes like being hit by a weapon is *sahetuk* or untimely death Death on conclusion of *ayushya karma* (life span determining *karma*) and not due to any external cause is *ahetuk* or timely death The *ahetuk* death of an imperfect *hetuvadi* is called *ajnana maran* (an ignorant death) The *sahetuk* death of a *hetuvadi* with right perception is called *chhadmasth maran* The *sahetuk* death of a *Desh pratyaskh jnani* is also called *chhadmasth maran* The *sahetuk* death of a *Sakal pratyaskh jnani* omniscient is called *Kevali maran*

Shri Abhayadev Suri, the commentator (*Vritti*), informs that he has interpreted these aphorism on the basis of the *Churni* of *Bhagavati Sutra* (5/7), which is only superficial The actual and all embracing meaning of these is known only to expert scholarly *acharyas* *(Vritti, part-2, p 288)*

अनुत्तर-पद ANUTTAR-PAD (SEGMENT OF SUPERLATIVES)

८३. केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा पण्णत्ता, तं जहा–अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दंसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए।

८३. केवली के पाँच स्थान अनुत्तर (सर्वोत्तम -अनुपम) होते है-(१) अनुत्तर ज्ञान, (२) अनुत्तर दर्शन, (३) अनुत्तर चारित्र, (४) अनुत्तर तप, (५) अनुत्तर वीर्य।

83. *Kevali* has five *anuttar* (superlative or unparalleled) *sthaans* (virtues)—(1) *Anuttar jnana* (supreme knowledge), (2) *Anuttar darshan* (supreme perception), (3) *Anuttar chaaritra* (supreme conduct), (4) *Anuttar tap* (supreme austerities) and (5) *Anuttar virya* (supreme potency)

पंच कल्याणक-पद PANCH KALYANAK-PAD (SEGMENT OF FIVE AUSPICIOUS EVENTS)

८४. पउमप्पहे णं अरहा पंचचित्ते हुत्था, तं जहा-(१) चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। (२) चित्ताहिं जाते। (३) चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारित पव्वइए। (४) चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे। (५) चित्ताहिं परिणिव्वुते।

८४. पद्मप्रभ (छठे) तीर्थंकर के पॉच कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए (१) चित्रा नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। (२) चित्रा नक्षत्र मे जन्म हुआ। (३) चित्रा नक्षत्र मे मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हुए। (४) चित्रा नक्षत्र मे अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, सम्पूर्ण, परिपूर्ण केवल ज्ञान-दर्शन समुत्पन्न हुआ। (५) चित्रा नक्षत्र मे निर्वाण हुआ।

84. The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Padmaprabh (sixth Tirthankar) occurred in *Chitra Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Chitra Nakshatra* (2) He was born in *Chitra Nakshatra* (3) He tonsured his head, renounced his household and got initiated in *Chitra Nakshatra* (4) He attained infinite, unmatched, unrestricted, unveiled, perfect and supreme *Keval-jnana* and *keval-darshan*) in *Chitra Nakshatra* (5) He got *nirvana* in *Chitra Nakshatra*

८५. पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था, तं जहा-मूलेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कते एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो-

८५. पुष्पदन्त (नौवे) तीर्थंकर के पॉच कल्याणक मूल नक्षत्र मे हुए-(१) मूल नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये।

85. The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Pushpadant (ninth Tirthankar) occurred in *Mool Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Mool Nakshatra* (and so on)

८६. पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स।
पुव्वाइं आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता॥१॥
रेवतिता अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी।
कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवतीतो य॥२॥
मुणिसुव्वयस्स सवणो, आसिणि णमिणो य णेमिणो चित्ता।
पासस्स विसाहाओ, पंच य हत्थुत्तरे वीरो॥३॥

[सीयले णं अरहा पंचपुव्वासाढे हुत्था, तं जहा—पुव्वासाढाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते।

८७. विमले णं अरहा पंचउत्तराभद्दवए हुत्था, तं जहा—उत्तराभद्दवयाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ८८. अणंते णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा—रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ८९. धम्मे णं अरहा पंचपूसे हुत्था, तं जहा—पूसेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ९०. संती णं अरहा पंचभरणीए हुत्था, तं जहा—भरणीहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ९१. कुंथू णं अरहा पंचकत्तिए हुत्था, तं जहा—कत्तियाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ९२. अरे णं अरहा पंचरेवतिए हुत्था, तं जहा—रेवतिहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ९३. मुणिसुव्वए णं अरहा पंचसवणे हुत्था, तं जहा—सवणेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ९४. णमी णं अरहा पंचआसिणीए हुत्था, तं जहा—आसिणीहिं चुते चइत्ता गब्भ वक्कंते। ९५. णेमी णं अरहा पंचचित्ते हुत्था, तं जहा—चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। ९६. पासे णं अरहा पंचविसाहे हुत्था, तं जहा—विसाहाहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते।]

८६. शीतलनाथ (दसवे) तीर्थकर के पाँच कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र मे हुए। (१) पूर्वाषाढा नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि।

८७. विमल (तेरहवे) तीर्थकर के पॉच कल्याणक उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे हुए। (१) उत्तराभाद्र पद नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ८८. चौदहवे अनन्तनाथ तीर्थंकर के पॉच कल्याणक रेवती नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) रेवती नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ८९. धर्म तीर्थकर (१५) के पाँच कल्याणक पुष्य नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) पुष्य नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ९०. शान्ति तीर्थंकर (१६) के पाँच कल्याणक भरणी नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) भरणी नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ९१. कुन्थु तीर्थकर (१७) के पाँच कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) कृत्तिका नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ९२. अर तीर्थंकर (१८) के पॉच कल्याणक रेवती नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) रेवती नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ९३. मुनिसुव्रत तीर्थंकर (२०) के पाँच कल्याणक श्रवण नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) श्रवण नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। ९४. नमि तीर्थंकर (२१) के पॉच कल्याणक अश्विनी नक्षत्र मे हुए, जैसे-(१) अश्विनी नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और

च्युत होकर गर्भ में आये। इत्यादि। १५. नेमि तीर्थंकर (२२) के पाँच कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए, जैसे-(१) चित्रा नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि। १६. पार्श्व तीर्थंकर (२३) के पाँच कल्याणक विशाखा नक्षत्र मे हुए, जैसे -(१) विशाखा नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। इत्यादि।

86. The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Shital Naath (tenth Tirthankar) occurred in *Purvashadh Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Purvashadh Nakshatra* (and so on)

87. The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Vimal Naath (thirteenth) occurred in *Uttarabhadrapad Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Uttarabhadrapad Nakshatra* (and so on) **88.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Anant Naath (fourteenth Tirthankar) occurred in *Revati Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Revati Nakshatra* (and so on) **89.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Dharma Naath (fifteenth Tirthankar) occurred in *Pushya Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Pushya Nakshatra* (and so on) **90.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Shanti Naath (sixteenth) occurred in *Bharani Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Bharani Nakshatra* (and so on) **91.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Kunthu Naath (seventeenth) occurred in *Krittika Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Krittika Nakshatra* (and so on) **92.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Ara Naath (eighteenth) occurred in *Revati Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Revati Nakshatra* (and so on) **93.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Munisuvrat Naath (twentieth) occurred in *Shravan Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Shravan Nakshatra* (and so on) **94.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Nami Naath (twenty first) occurred in *Ashvini Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Ashvini Nakshatra* (and so on) **95.** The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Nemi Naath (twenty second) occurred in *Chitra Nakshatra*—(1) He descended from

heaven into the womb of his mother in *Chitra Nakshatra* (and so on)

96. The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Tirthankar Parshva Naath (twenty third) occurred in *Vishakha Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Vishakha Nakshatra* (and so on)

९७. समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था, तं जहा—(१) हत्थुत्तराहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते। (२) हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिते। (३) हत्थुत्तराहिं जाते। (४) हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता (अगाराओ अणगारितं) पव्वइए। (५) हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे (णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे) केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे।

९७. (२४) श्रमण भगवान् महावीर के पाँच कल्याणक हस्तोत्तर (उत्तरा फाल्गुनी) नक्षत्र मे हुए, जैसे—(१) हस्तोत्तर नक्षत्र मे स्वर्ग से च्युत हुए और च्युत होकर गर्भ मे आये। (२) हस्तोत्तर नक्षत्र मे देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला के गर्भ मे साहरण हुआ। (३) हस्तोत्तर नक्षत्र मे जन्म लिया। (४) हस्तोत्तर नक्षत्र मे अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हुए। (५) हस्तोत्तर नक्षत्र मे अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, सम्पूर्ण, परिपूर्ण केवल वर ज्ञान-दर्शन समुत्पन्न हुआ।

97. The *panch kalyanaks* (five auspicious events) in the life of Shraman Bhagavan Mahavir occurred in *Hastottara* (*Uttaraphalguni*) *Nakshatra*—(1) He descended from heaven into the womb of his mother in *Hastottara Nakshatra* (2) He was transplanted from the womb of Devananda to that of Trishala in *Hastottara Nakshatra* (3) He was born in *Hastottara Nakshatra* (4) He tonsured his head, renounced his household and got initiated in *Hastottara Nakshatra* (5) He attained infinite, unmatched, unrestricted, unveiled, perfect and supreme *Keval-jnana* and *keval-darshan*) in *Hastottara Nakshatra*

विवेचन—भगवान महावीर का निर्वाण स्वाति नक्षत्र मे हुआ था। जबकि अन्य तीर्थकरो के च्यवन से निर्वाण तक एक ही नक्षत्र मे हुए।

Elaboration—Bhagavan Mahavir got nirvana in *Swati Nakshatra* whereas all other above said *Tirthankars* got their descent to nirvana in the same nakshatra

॥ पंचम स्थान का प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

● END OF THE FIRST LESSON ●

पंचम स्थान : द्वितीय उद्देशक
FIFTH STHAAN (Place Number Five) : SECOND LESSON

महानदी–उत्तरण–पद MAHANADI-UTTARAN-PAD (SEGMENT OF CROSSING GREAT RIVERS)

९८. णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वियंजियाओ पंच महण्णवाओ महाणदीओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, तं जहा–गंगा, जउणा, सरउ, एरवती, मही।

पंचहिं ठाणेहिं कप्पति, तं जहा–(१) भयंसि वा, (२) दुब्भिक्खंसि वा, (३) पव्वहेज्ज वा णं कोई, (४) दओघंसि वा एज्जमाणंसि महता वा, (५) अणारिएसु।

९८. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को महानदी के रूप मे कही गई, गिनी गई, प्रसिद्ध और बहुत जलवाली (१) गगा, (२) यमुना, (३) सरयू, (४) ऐरावती (रावी), (५) मही। ये पाँच महानदियाँ एक मास के भीतर दो बार या तीन बार से अधिक उतरना या नौका से पार करना नही कल्पता है

किन्तु इन पॉच कारणो से इन महानदियो का उतरना या नौका से पार करना कल्पता है (१) शरीर व उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर। (२) दुर्भिक्ष होने पर। (३) किसी द्वारा उत्पीडित या नदी मे प्रवाहित किये जाने पर। (४) बाढ आ जाने पर। (५) अनार्य पुरुषो द्वारा उपद्रव किये जाने पर।

98. *Nirgranth* and *nirganthis* (male and female ascetics) are not allowed to cross (on boat or otherwise) five great rivers more than two or three times in a month These five rivers with great flow of water and called, counted, and famous as *mahanadis* (great rivers) are—(1) Ganga, (2) Yamuna, (3) Sarayu, (4) Airavati (Ravi) and (5) Mahi

However, they are allowed to cross these *mahanadis* for five reasons—(1) If there is a fear of being deprived of body and equipment (2) If there is a famine (3) On being tormented or thrown into the river by someone (4) If there is a flood (5) If disturbance is created by *anarya* people (ignoble people like aborigines)

विवेचन–सूत्र मे नदियो के लिए **'महार्णव और महानदी'** ये दो विशेषण दिये गये है। जो बहुत गहरी हो उसे महानदी और जो समुद्र के समान बहुत जल वाली या समुद्र मे मिलने वाली हो उसे **महार्णव** कहते है। गगा आदि पाँचो नदियाँ गहरी भी है और समुद्रगामिनी भी है, बहुत जलवाली भी है।

वृत्तिकार ने बृहत्कल्पभाष्य की एक प्राचीन गाथा को उद्धृत कर नदियो मे उतरने या पार करने के व्यावहारिक दोष बताये है–(१) इन नदियो मे बडे-बडे मगरमच्छ रहते है, उनके द्वारा खाये जाने का

भय रहता है। (२) इन नदी मार्गों मे अनेक चोर-डाकू नौकाओ मे घूमते रहते है, जो मनुष्यो को मार कर उनके वस्त्रादि लूट ले जाते है। (३) इसके अतिरिक्त नदी पार करने मे जलकायिक जीवो की तथा जल मे रहने वाले अन्य छोटे-छोटे जीव-जन्तुओ की विराधना होती है। (४) स्वय के डूब जाने से आत्म-विराधना की भी सभावना रहती है।

गगादि पाँच ही महानदियो के उल्लेख से ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान् महावीर के समय मे निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो का विहार पूर्व व उत्तर भारत मे ही अधिक हो रहा था, क्योकि दक्षिण भारत मे बहने वाली नर्मदा, गोदावरी, ताप्ती आदि किसी भी महानदी का उल्लेख प्रस्तुत सूत्र मे नही है। भाष्यकार ने **सेसा वि सूईया महासलिला**-शेष महा जलवाली नदियाँ भी इसी मे समझना चाहिए। कहकर अन्य नदियाँ सम्मिलित की है।

Elaboration—Two adjectives have ben used in this aphorism for great rivers—*maharnava* and *mahanadi* A deep river is called *mahanadi* and a river with great expanse and flow of water or one that flows into a sea is called *maharnava* The aforesaid five rivers including Ganga are deep as well as expansive and they fall into the sea

Quoting an ancient verse from *Vrihatkalpabhashya*, the commentator (*Vritti*) has mentioned practical reasons for not crossing rivers—(1) These rivers are infested with crocodiles and other marine animals and there are chances of being devouvered by them (2) Pirates and bandits ply around in boats on these rivers and there are chances of being robbed and killed by them (3) While crossing the river harm comes to water-bodied beings as well as small marine beings (4) Besides these there are chances of drowning, which amounts to causing harm to the self

The mention of the names of only five great rivers including Ganga and none of the rivers from south India, including Narmada, Godavari and Tapti, indicates that during the period of Bhagavan Mahavir the popular area of movement of Jain ascetics was eastern and northern India However, the author of the *Bhashya* has included other rivers by mentioning 'remaining great rivers should be read with these '

प्रथम प्रावृष्-विहार पद PRATHAM PRAVRIT-VIHAR-PAD (SEGMENT OF MOVEMENT DURING EARLY MONSOON SEASON)

९९. णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण व पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए।

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं जहा-(१) भयंसि वा, (२) दुब्भिक्खंसि वा, (३) (पव्वहेज्ज वा णं कोई, (४) दओघंसि वा एज्जमाणंसि, महता वा, (५) अणारिएहिं।

९९. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को प्रथम प्रावृट् मे ग्रामानुग्राम विहार करना नही कल्पता है। किन्तु पाँच कारण उपस्थित होने पर विहार करना कल्पता है। जैसे-(१) शरीर, उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर, (२) दुर्भिक्ष होने पर, (३) किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर या ग्राम से निकाल दिये जाने पर, (४) बाढ आ जाने पर, (५) अनार्यो के द्वारा उपद्रव किये जाने पर।

99. *Nirgranth* and *nirgranthis* (male and female ascetics) are not allowed to move from one village to another during *pratham pravrit* (first part of the monsoon season) However, they are allowed to do so for five reasons—(1) If there is a fear of being deprived of body and equipment (2) If there is a famine (3) On being tormented or expelled out of the village (4) If there is a flood (5) If disturbance is created by *anarya* (ignoble) people

वर्षावास-विहार पद VARSHAVAS-VIHAR-PAD (SEGMENT OF MOVEMENT DURING MONSOON-STAY)

१००. वासावासं पज्जोसविताणं णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा गामाणुगामं दूइज्जित्तए। पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं जहा-(१) णाणट्ठयाए, (२) दंसणट्ठयाए, (३) चरित्तट्ठयाए, (४) आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा, (५) आयरिय-उवज्झायाण वा बहिया वेआवच्चकरणयाए।

१००. वर्षावास मे पर्युषणाकल्प करने वाले निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को ग्रामानुग्राम विहार करना नही कल्पता है। किन्तु पॉच कारणो से विहार करना कल्पता है, जैसे-(१-२) विशेष ज्ञान औरदर्शन की प्राप्ति के लिए। (३) चारित्र की रक्षा के लिए। (४) आचार्य या उपाध्याय की मृत्यु हो जाने पर अथवा उनका कोई अति महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए। (५) वर्षाक्षेत्र से बाहर रहने वाले आचार्य या उपाध्याय की वैयावृत्त्य करने के लिए।

100. *Nirgranth* and *nirgranthis* (male and female ascetics) observing the *Paryushanakalp* (special code of conduct observed annually during monsoon-stay) are not allowed to move from one village to another during their *varshavas* (monsoon-stay of four months) However, they are allowed to do so for five reasons—If it is (1) for the purpose of acquiring special *jnana* (knowledge), (2) for the purpose of acquiring special *darshan* (perception/faith), (3) for the purpose of protecting ascetic conduct, (4) on death of an *acharya* or *upadhyaya* or for some special mission entrusted by them, and (5) for serving some *acharya* or *upadhyaya* stationed away from the place of monsoon-stay

विवेचन-वर्षाकाल मे एक स्थान पर रहने को वर्षावास कहते है। यह तीन प्रकार है-जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट। (१) **जघन्य वर्षावास**-सावत्सरिक प्रतिक्रमण के दिन से लेकर कार्तिकी पूर्णमासी तक ७०

दिन का। (२) **मध्यम वर्षावास**–श्रावणकृष्णा प्रतिपदा से कार्तिकी पूर्णमासी तक चार मास या १२० दिन का। (३) **उत्कृष्ट वर्षावास**–आषाढ से लेकर मगसिर तक छह मास का।

प्रथम सूत्र के द्वारा प्रथम प्रावृष् मे विहार का निषेध किया गया है और दूसरे सूत्र के द्वारा वर्षावास मे विहार का निषेध किया गया है। इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि पर्युषणकल्प को स्वीकार करने के पूर्व जो वर्षा का समय है उसे 'प्रथम पावृष्' कहा जाता है। अत प्रथम प्रावृट् का अर्थ है आषाढ मास मे विहार न किया जाये। प्रावृट् का अर्थ वर्षाकाल लेने पर अर्थ होगा–भाद्रपद शुक्ला पचमी से कार्तिकी पूर्णिमा तक का समय। इस समय मे विहार का निषेध किया गया है। चातुर्मास मे विहार करने का निषेध दो सूत्रो द्वारा कहने का अभिप्राय यह लगता है कि तीन ऋतुओ की गणना मे 'वर्षा' एक ऋतु है। किन्तु छह ऋतुओ की गणना करने से उसके दो भेद हो जाते है, जिसके अनुसार श्रावण और भाद्रपद ये दो मास प्रावृष् ऋतु मे तथा आश्विन और कार्तिक ये दो मास 'वर्षा ऋतु' मे गिने जाते है। इस प्रकार दोनो सूत्रो का सम्मिलित अर्थ है कि श्रावण से लेकर कार्तिक मास तक चार मासो मे साधु और साध्वियो को विहार नही करना चाहिए। यह उत्सर्ग मार्ग है। हाँ, सूत्रोक्त पाँच कारण-विशेषो की अवस्था मे विहार किया भी जा सकता है, यह अपवाद मार्ग है।

छह मास के उत्कृष्ट वर्षावास का अभिप्राय यह है कि यदि आषाढ के प्रारम्भ से ही पानी बरसने लगे और मगसिर मास तक भी बरसता रहे तो छह मास का उत्कृष्ट वर्षावास होता है। इस काल मे श्रमण एक स्थान पर रहता है।

Elaboration—To stay at a place during the monsoon season is called *varshavas* or monsoon-stay This is of three kinds—minimum, medium and maximum (1) *Jaghanya varshavas* (minimum monsoon-stay)—It is of 70 days from *Samvatsarik pratikraman* to *Kartik Purnima* (2) *Madhyam varshavas* (medium monsoon-stay)—It is of 120 days from *Shravan Krishna Pratipada* to *Kartik Purnima* (3) *Utkrisht varshavas* (maximum monsoon-stay)—It is of 6 months from *Ashadh* to *Mangsir*

The first of these two aphorism proscibes movement during *pratham pravrit* (first part of monsoon season) and the second during monsoon-stay This confirms that *pratham pravrit* is the part of monsoon season before *Paryushan kalp* is accepted This means that there should be no movement during the month of *Ashadh* If *Pravrit* is interpreted just as monsoon season it would include the period between *Bhadrapad Shukla panchami* to *Kartik Purnima* Movement is, indeed, prohibited during this period Splitting this negation into two parts appears to have the purpose of including both popular ways of counting seasons In the counting based on three seasons in a year monsoon is one long season but in the counting based on six seasons in a year monsoon season is split into two—*Shravan-Bhadrapad* are called *Pravrit Ritu* and *Ashvin-*

Kartik are called *Varsha Ritu* The combined meaning of these two aphorisms is that ascetics should not move around during the four months, *Shravan* to *Kartik* This is the ideal norm Under special conditions mentioned in these aphorisms they are allowed to move but that is an emergency measure

The reason for the provision of a maximum period of six months is to cover one month on each side in case of early or late monsoon During the monsoon ascetics are supposed to stay at one place

अनुद्घात्य-पद ANUDGHATYA-PAD (SEGMENT OF SERIOUS ATONEMENT)

१०१. पंच अणुग्घातिया पण्णत्ता, तं जहा–हत्थकम्मं करेमाणे, मेहुणं पडिसेवेमाणे, रातीभोयणं भुंजेमाणे, सागारियपिंडं भुंजेमाणे, रायपिंडं भुंजेमाणे।

१०१. पॉच अनुद्घात्य (गुरु-प्रायश्चित्त के योग्य) होते है। (१) हस्तकर्म-(मैथुन-) करने वाला। (२) मैथुन की प्रतिसेवना (स्त्री सभोग) करने वाला। (३) रात्रि-भोजन करने वाला। (४) सागारिक-(शय्यातर-) पिण्ड का आहार करने वाला। (५) राज-पिण्ड का भोजन करने वाला।

101. There are five *anudghatya* (reasons for serious atonement)—One who indulges in—(1) *hastakarma* (masturbation), (2) *maithun pratisevana* (copulation), (3) *ratri bhojan* (eating during the night), (4) eating *sagarik-pind* (food offered by host) and (5) eating *raj-pind* (food offered by the king)

विवेचन–दोष की शुद्धि के लिए दो प्रकार के प्रायश्चित्त बताये गये है (I) लघु प्रायश्चित्त और (II) गुरु-प्रायश्चित्त। लघु-प्रायश्चित्त को उद्घातिक (उपवास आदि का छोटा) और गुरु-प्रायश्चित्त को अनुद्घातिक (दीक्षा छेद) प्रायश्चित्त कहते है। यह किसी भी दशा मे कम नही किया जा सकता है। यह भी दो प्रकार का होता है -गुरु मासिक-एक मास की दीक्षा का छेद। गुरु चौमासी प्रायश्चित्त- चार मास की दीक्षा का छेद।

सागारिक-पिण्ड–गृहस्थ श्रावक को सागारिक कहते है। जिस मकान मे साधु ठहरते है, उस भवन का स्वामी 'शय्यातर' कहा जाता है। शय्यातर के घर का भोजन, वस्त्र, पात्रादि लेना साधु के लिए निषिद्ध है, क्योकि उसके ग्रहण करने पर तीर्थकरो की आज्ञा का उल्लघन, अधिक निकट परिचय के कारण ऐषणा सम्बन्धी अनेक दोष उत्पन्न होते है।

राजपिण्ड–जिसका विधिवत् राज्याभिषेक किया गया हो, जो सेनापति, मत्री, पुरोहित, श्रेष्ठी और सार्थवाह इन पॉच पदाधिकारियो के साथ राज्य करता हो, उसे राजा कहते है। उसके घर का भोजन राज-पिण्ड कहलाता है। राज-पिण्ड ग्रहण करने मे अनेक दोष है। जैसे-तीर्थकरो की आज्ञा का अतिक्रमण, राज्याधिकारियो के आने-जाने के समय होने वाला व्याघात, चोर आदि की आशका

आदि। इनके अतिरिक्त राजाओ का भोजन प्राय राजस और तामस होता है, ऐसा भोजन करने पर साधु को दर्प, कामोद्रेक आदि भी हो सकता है। इन कारणो से राजपिण्ड के ग्रहण करने का निषेध है।

Elaboration—Two kinds of atonement have been prescribed for faults committed—(a) *laghu-prayashchit* (simple atonement and (b) *guru-prayashchit* (serious atonement) Simple atonement includes fasting (etc) and is called *udghatik prayashchit* Serious atonement includes termination from the ascetic organisation for a specific period and is called *anudghatik prayashchit* There is no provision of curtailment in serious atonement It is also of two types—*guru masik* or termination for one month and *guru chaumasi* or termination for four months

Sagarik-pind—A lay *shravak* is caled *sagarik* The person in whose house ascetics are staying is called *shayyatar* (host) Accepting any alms including food, garb and bowls from him is prohibited for an ascetic This is because it involves defying the order of *Tirthankars* and many other faults related to code of seeking due to intimacy

Raj-pind—A king is one who has been formally crowned and rules with the help of five classes of functionaries—commander, minister, priest, merchant and caravan chief Food from his kitchen is called *raj-pind* Accepting *raj-pind* involves numerous faults—defying the order of *Tirthankars*, disturbance caused by frequency of movement of state employees and officers, chances of confronting theives and bandits etc Besides this the food made for kings is generally *rajas* (passion provocating) and *tamas* (malice enhancing) in quality Eating such food may magnify conceit, passion and other vices in an ascetic For these reasons accepting such food is prohibited for ascetics

राजान्त पुर–प्रवेश–पद RAJANTAHPUR-PRAVESH-PAD (SEGMENT OF ENTERING THE PALACE)

१०२. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे रायंतेउरमणुपविसमाणे णाइक्कमति, तं जहा–

(१) णगरे सिया सव्वतो समंता गुत्ते गुत्तदुवारे, बहवे समणमाहणा णो संचाएंति भत्ताए वा पाणाए वा णिक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तेसिं विण्णवणट्ठयाए रायंतेउरमणुपविसेज्जा। (२) पाडिहारियं वा पीढ–फलग–सेज्जा–संथारगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरमणुपविसेज्जा। (३) हयस्स वा गयस्स वा दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीते रायंतेउरमणुपविसेज्जा। (४) परो व णं सहसा वा बलसा वा बाहाए गहाय रायंतेउरमणुपवेसेज्जा। (५) बहिया व णं आरामगयं उज्जाणगयं वा रायंतेउरजणो सव्वतो समंता संपरिक्खिवित्ता णं सण्णिवेसिज्जा।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे (रायंतेउरमणुपविसमाणे) णातिक्कमइ।

१०२. पाँच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ राजा के अन्त पुर (रणवास) मे प्रवेश करता हुआ तीर्थंकरो की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। जैसे–(१) यदि नगर चारो ओर से परकोटे से घिरा हो, उसके द्वार बन्द कर दिये गये हो, बहुत–से श्रमण–माहन भक्त–पान के लिए नगर से बाहर न निकल सके, या प्रवेश न कर सके, तब उस स्थिति को बतलाने के लिए राजा के अन्त पुर मे प्रवेश कर सकता है। (२) **प्रातिहारिक**–(वापस करने को कहकर लाये गये) पीठ, फलक, शय्या, सस्तारक को वापस देने के लिए। (३) मार्ग चलते हुए दुष्ट घोडे या हाथी के सामने आने पर भयभीत साधु राजा के अन्त पुर मे प्रवेश कर सकता है। (४) कोई अन्य व्यक्ति सहसा बल–पूर्वक बाहु पकडकर ले जाये। (५) कोई साधु बाहर आराम–पुष्पोद्यान या उद्यान–वृक्षोद्यान मे ठहरा हो और वहाँ (क्रीडा करने के लिए राजा का अन्त पुर आ जावे), राजपुरुष उस स्थान को चारो ओर से घेर ले और निकलने के द्वार बन्द कर दे, तब वह वहाँ रह सकता है।

इन पाँच कारणो से श्रमण–निर्ग्रन्थ राजा के अन्त पुर मे प्रवेश करता हुआ तीर्थंकरो की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है।

102. A *Shraman nirgranth* does not defy the order of *Tirthankars* if he enters the *antah-pur* (inner quarters of a king) for five reasons—(1) If the city is surrounded by a parapet wall, its gates are closed and it is not possible for many ascetics to go out of or enter the city to seek alms An ascetic is allowed to enter the *antah-pur* to inform about that situation (2) For returning the *pratiharik* (borrowed) things including *peeth* (stool), *falak* (plank), *shayya* (bed) and *samstarak* (bed of hay) (3) A frightened ascetic is allowd to enter the *antah-pur* for safety when affronted by wild horse or elephant while walking on the way (4) If someone takes an ascetic physically into the *antah-pur* by force (5) If an ascetic is staying in the orchard or garden and the royal family comes to the garden for entertainment, the gaurds surround the garden and close the gates In such a situation the ascetic is allowed to remain there

A *Shraman nirgranth* does not defy the order of *Tirthankars* if he enters the *antah-pur* for the said five reasons

विवेचन–मुनि दो प्रकार की वस्तुएँ ग्रहण करता है- **अप्रातिहारिक**–जो वापस लौटाई नही जाती हो, जैसे–वस्त्र, पात्र, भोजन, कम्बल आदि। **प्रातिहारिक**–जो लौटाई जा सकती है–जैसे–पट्ट, फलक, शय्या, संस्तारक आदि।

[वृत्तिकार ने निशीथभाष्य की गाथाएँ उद्धृत करके अन्त पुर प्रवेश के अनेक दोष बताये है। (वृत्ति भाग–२, पृष्ठ ५३७)]

Elaboration—An ascetic accepts two kinds of things—(1) *Apratiharik* or not to be returned, such as garb, bowls, food and blanket *Pratiharik* or returnable, such as *patta* (bench), *falak* (plank), *shayya* (bed) and *samstarak* (bed of hay)

[Qoting verses from *Nisheeth Bhashya* the commentator (*Vritti*) has listed many more faults of entering *antah-pur* (*Vritti*, part-2, p 537)]

गर्भ–धारण–पद GARBH-DHARAN-PAD (SEGMENT OF CONCEPTION)

१०३. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं धरेज्जा, तं जहा—

(१) इत्थी दुव्वियडा दुण्णिसण्णा सुक्कपोग्गले अधिट्ठिज्जा। (२) सुक्कपोग्गलसंसिट्ठेव से वत्थे अंतो जोणीए अणुपवेसेज्जा। (३) सइं वा से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा। (४) परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा। (५) सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं (इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं) धरेज्जा।

१०३. पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास नही करती हुई भी गर्भ को धारण कर सकती है। जैसे -(१) अनावृत (नग्न) और दुर्निषण्ण (विवृत योनिमुख) रूप से बैठी हो, अर्थात् पुरुष-वीर्य से ससृष्ट स्थान पर बैठी हुई स्त्री द्वारा शुक्र-पुद्गलो को आकर्षित कर लेने पर। (२) शुक्र-पुद्गलो से ससृष्ट वस्त्र स्त्री की योनि मे प्रविष्ट हो जाने पर। (३) स्त्री स्वय ही शुक्र-पुद्गलो को योनि मे प्रविष्ट कर ले तो। (४) दूसरा कोई शुक्र-पुद्गलो को उसकी योनि मे प्रविष्ट कर दे तो। (५) नदी-तालाब आदि मे स्नान करती हुई स्त्री की योनि मे यदि (बहकर आये) शुक्र-पुद्गल प्रवेश कर जावे तो।

इन पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास नही करती हुई भी गर्भ धारण कर सकती है।

103. For five reasons a woman can conceive even without having an intercourse with a man—(1) If she is sitting *anavrat* (naked) and *durnishanna* (with open vagina) (at a spot soiled with male semen) and draws in semen molecules (2) If a piece of cloth wet with male semen enters her vagina (3) If she herself puts semen molecules into her vagina (4) If some other person pushes semen molecules into her vagina (5) If floating semen enters her vagina while she is taking her bath in a river or pond

विवेचन—प्रस्तुत आगम वचन अनुसार शुक्र पुद्गलो के स्त्री-योनि मे प्रविष्ट होने पर ही गर्भ धारण होता है, भले ही वह किसी अन्य कृत्रिम या प्रासगिक साधन से हो। वर्तमान मे पशुओ के कृत्रिम गर्भाधान की प्रणाली इसी आधार पर विकसित की गई है।

प्रस्तुत सूत्र के प्रथम कारण को ध्यान मे रखकर ही आगमो मे स्थान-स्थान पर ऐसे उल्लेख किए गये है कि जहाँ स्त्रियाँ बैठी हो, उस स्थान पर मुनि को तथा जहाँ पुरुष बैठे हो उस स्थान पर साध्वी

को एक अन्तर्मुहूर्त तक नही बैठना चाहिए। यदि आवश्यकतावश बैठना ही पडे तो भूमि का भलीभाँति साफ कर बैठना चाहिए।

दूसरे कारण मे शुक्रपुद्गल से ससृष्ट वस्त्र का योनि के मध्य मे प्रवेश होने पर भी गर्भधारण की स्थिति हो जाती है। वस्त्र ही नही, दूसरे-दूसरे पदार्थों से भी ऐसा हो सकता है। वृत्तिकार ने यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। केशीकुमार की माता ने अपनी योनि की खुजली मिटाने अथवा रक्त-प्रवाह को रोकने के लिए केश को योनि मे प्रविष्ट किया। वह केश शुक्र-पुद्गलो से ससृष्ट था। उसके फलस्वरूप वह गर्भवती हो गई।

तीसरे कारण का अभिप्राय यह है कि यदि किसी स्त्री का पति नपुसक है और वह स्त्री पुत्र-प्राप्ति की इच्छा रखती है किन्तु शील भग होने के भय से पर-पुरुष के साथ काम-क्रीडा नही कर सकती। अत वह स्वय शुक्र-पुद्गलो को एकत्रित कर अपनी योनि मे प्रविष्ट कर देती है। इससे भी गर्भधारण कर सकती है।

चौथे कारण के प्रसग मे वृत्तिकार ने 'पर' का अर्थ 'श्वसुर आदि' किया है। इसका तात्पर्य यह है कि पति के नपुसक होने पर पुत्र प्राप्ति की प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर स्त्री अपने श्वसुर आदि ज्ञातिजनो द्वारा अपनी योनि मे शुक्र पुद्गलो का प्रवेश करवाती है। प्राचीन समय मे इस प्रकार की पद्धति प्रचलित थी। इसे **नियोग-विधि** कहा जाता है।

Elaboration—According to the aforesaid statement from *Agam* a woman conceives when semen molecules enter her vagina irrespective of the fact that it is accidental or by artificial means In modern times the process of artificial insemination has also been developed on the same basis

Keeping in mind the aforesaid first reason it has been widely mentioned in *Agams* that male ascetics should avoid sitting for one *antar-muhurt* (a period of less than forty eight minutes) at a spot where women were sitting and female ascetics should avoid sitting for one *antar-muhurt* at a spot where men were sitting If at all it is essential to do so they should first clean the spot properly

According to the second reason a woman conceives if a piece of cloth soiled with semen enters her vagina This is true for things other than cloth also The commentator (*Vritti*) has mentioned an example Keshi Kumar's mother had put a bunch of hair in her vagina either for pacifying itching or to stop flow of blood That bunch of hair was soiled with semen and as a consequence she became pregnant

The third reason can be explained as—A woman, whose husband is impotent, wants to have a child but cannot have sex with some other

person due to fear of violating her chastity Such a woman somehow collects semen and puts it in her vagina This way she can be pregnant

In the forth reason the commentator (*Vritti*) has interpreted *par* (other) as father-in-law etc This means that if her husband is impotent a woman with intense desire for a child gets pregnant by having intercourse with her father-in-law or some other member of the family or clan Such practice was prevalent in ancient times and it was called *niyog vidhi*

१०४. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं णो धरेज्जा, तं जहा–

(१) अप्पत्तजोव्वणा। (२) अतिकंतजोव्वणा। (३) जातिवंझा। (४) गेलण्णपुट्ठा। (५) दोमणंसिया, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं (इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं) णो धरेज्जा।

१०४. पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास करती हुई भी गर्भ को धारण नही करती। जैसे– (१) **अप्राप्तयौवना**–पूर्ण युवती न होने पर। (२) **अतिक्रान्तयौवना**–जिसकी युवावस्था बीत गई, ऐसी अरजस्क वृद्धा। (३) **जातिवन्ध्या**–जन्म से ही मासिक धर्म रहित बाँझ स्त्री। (४) **ग्लानस्पृष्टा**–ेग से पीडित स्त्री। (५) **दौर्मनस्यिका**–शोकादि से व्याप्त चित्त वाली स्त्री। इन पाँच कारणो से पुरुष के साथ सवास करती हुई भी स्त्री गर्भ को धारण नही करती है।

104. For five reasons a woman does not conceive even on having an intercourse with a man—**(1) apraptayauvana—**if she is minor, **(2) atikrantayauvana—**if she has reached her menopause, **(3) jativandhya—**if she is congenitally sterile, **(4) glan-sparsha—**if she is sick and **(5) daurmanasyika—**if she is grief stricken or upset for other reasons For these five reasons a woman does not conceive even on having an intercourse with a man ileus

विवेचन–वृत्तिकार ने बारह वर्ष तक की कुमारी को अप्राप्तयौवना तथा पचास या पचपन वर्ष के ऊपर की उम्र वाली स्त्री को अतिक्रान्तयौवना माना है। उनकी मान्यता है कि बारह वर्ष के पश्चात् पचास वर्ष की उम्र तक स्त्री के गर्भधारण की अवस्था होती है। सोलह और बीस वर्ष से कम अवस्था मे सहवास होने पर सन्तान की प्राप्ति नही होती और यदि होती है तो वह रोगी, अल्पायु और अभागी होती है। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५३९)*

Elaboration—According to the commentator (*Vritti*) a girl is *apraptayauvana* up to the age of twelve years and *atikrantayauvana* after the age of fifty to fifty five years It is believed that the child-bearing age of a woman is between 12 to 50 years There are little chances of a woman getting pregnant if she has intercourse before 16 to 20 years of age. Even if she gets pregnant it results in a weak, sick, short lived and unfortunate child *(Vritti part-2, p 539)*

१०५. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि णो गब्भं धरेज्जा, तं जहा–

(१) णिच्चोउया। (२) अणोउया। (३) वावण्णसोया। (४) वाविद्धसोया। (५) अणंगपडिसेवणी–इच्चेतेहिं (पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं) णो धरेज्जा।

१०५ पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास करती हुई भी गर्भ को धारण नही करती, जैसे– (१) **नित्य ऋतुका**–सदा ऋतुमती (रजस्वला) रहने वाली। (२) **अनृतुका**–कभी भी ऋतुमती न होने वाली। (३) **व्यापन्नश्रोता**–गर्भाशय नष्ट हो जाने पर। (४) **व्याविद्धस्रोता**–गर्भाशय की शक्ति क्षीण हो जाने पर। (५) **अनंगप्रतिषेविणी**–अनग-क्रीडा अप्राकृतिक काम क्रीडा या अनेक पुरुषो के साथ सहवास करने वाली। इन पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास करने पर भी गर्भ को धारण नही करती है।

105. For five reasons a woman does not conceive even on having an intercourse with a man—**(1) nitya rituka**—if she is always in menses, **(2) anrituka**—if she is never in menses, **(3) vyapannashrota**—if her womb is damaged, **(4) vyaviddhasrota**—if she has weak reproductive organs and **(5) anagapratisevini**—if she indulges in unnatural sex or promiscuity or sex with many persons For these five reasons a woman does not conceive even on having an intercourse with a man

१०६. पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं णो धरेज्जा, तं जहा–

(१) उउंमि णो णिगामपडिसेविणी यावि भवति। (२) समागता वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धंसंति। (३) उदिण्णे वा से पित्तसोणिते। (४) पुरा वा देवकम्मणा। (५) पुत्तफले वा णो णिव्विट्ठे भवति–इच्चेतेहिं (पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं) णो धरेज्जा।

१०६. पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास करने पर भी गर्भ को धारण नही करती। जैसे- (१) जो स्त्री ऋतुकाल मे वीर्यपात होने तक पुरुष का सेवन नही करती है। (२) जिसकी योनि मे आये शुक्र-पुद्गल विनष्ट हो जाते है। (३) जिसका पित्त-प्रधान शोणित (रक्त-रज) उदीर्ण हो गया है। (४) देव-कर्म से (देव के द्वारा शापादि देने से) जो गर्भधारण के योग्य नही रही हो। (५) जिसने पुत्र-फल देने वाला कर्म उपार्जित नही किया है। इन पाँच कारणो से स्त्री पुरुष के साथ सवास करती हुई भी गर्भ को धारण नही करती है।

106. For five reasons a woman does not conceive even on having an intercourse with a man—(1) during post-menstrual days, when she is prone to conception, if a woman, does not have intercourse till semen ejaculation, (2) if the sperms entering a woman's vagina usually get destroyed, (3) if a woman's bile-intensive blood becomes toxic, (4) if a woman becomes sterile due to divine intervention (like curse) and (5) if a

woman has not acquired *karmas* responsible for offsprings. For these five reasons a woman does not conceive even on having an intercourse with a man

निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थी–एकत्रवास–पद NIRGRANTH NIRGRANTHI EKATRAVAS-PAD (SEGMENT OF MALE AND FEMALE ASCETICS RESIDING TOGATHER)

१०७. पंचहिं ठाणेहिं णिग्गंथा णिग्गंथीओ य एगतओ ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा णातिक्कमंति, तं जहा–(१) अत्थेगइया णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य एगं महं अगामियं छिण्णावायं दीहमद्ध–मडविमणुपविट्ठा, तत्थेगयतो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा णातिक्कमंति। (२) अत्थेगइया णिग्गंथा य णिग्गंथीओ य गामंसि वा णगरंसि वा (खेडंसि वा कव्वडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा णिगमंसि वा आसमंसि वा सण्णिवेसंसि वा) रायहाणिंसि वा वासं उवागता, एगतिया जत्थ उवस्सयं लभंति, एगतिया णो लभंति, तत्थेगतो ठार्ण वा (सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा) णातिक्कमंति। (३) अत्थेगइया णिग्गंथा या णिग्गंथीओ या णागकुमारावासंसि वा सुवण्णकुमारावासंसि वा वासं उवागता, तत्थेगओ (ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा) णातिक्कमंति। (४) आमोसगा दीसंति, ते इच्छंति णिग्गंथीओ चीवरपडियाए, पडिगाहित्तए, तत्थेगओ ठाणं वा (सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा) णातिक्कमंति। (५) जुवाणा दीसंति, ते इच्छंति णिग्गंथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहित्तए, तत्थेगओ ठाणं वा (सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेमाणा) णातिक्कमंति।

इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं (णिग्गंथा, णिग्गंथीओ य एगतओ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणा) णातिक्कमंति।

१०७. पाँच कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ एक स्थान (आवास) पर अवस्थान–(कायोत्सर्ग) शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है–

(१) कदाचित् कुछ निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ किसी विशाल बस्ती–शून्य, आवागमनरहित, लम्बे मार्ग वाली अटवी मे प्रवेश कर जावे, तो वहाँ एक स्थान पर अवस्थान, शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है। (२) यदि कुछ निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ किसी ग्राम मे, नगर मे, खेट मे, कर्वट मे, मडम्ब मे, पत्तन मे, आकर मे, द्रोणमुख मे, निगम मे, आश्रम मे, सन्निवेश मे अथवा राजधानी मे पहुँचे, वहाँ दोनो मे से किसी एक वर्ग को उपाश्रय मिला और एक को नही मिला, तो वे एक स्थान पर अवस्थान, शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है। (३) यदि कदाचित् कुछ निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ नागकुमार के आवास मे या सुपर्णकुमार के (या किसी अन्य देव के) आवास मे निवास के लिए एक साथ पहुँचे तो वहाँ सर्वथा जन शून्यता से, या अतिजनबहुलता (भीड–भाड) आदि कारण से निर्ग्रन्थियो को सुरक्षा के लिए एक स्थान पर अवस्थान, शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है।

(४) (यदि कहीं निर्ग्रन्थियाँ ठहरी हो, और वहाँ) चोर-लुटेरे बहुत हो, वे निर्ग्रन्थियो के वस्त्रों को चुराना चाहते हो तो वहाँ एक स्थान पर अवस्थान, शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है। (५) (जिस स्थान पर निर्ग्रन्थियाँ ठहरी हो, और वहाँ पर) दुराचारी युवक दिखाई देवे, वे निर्ग्रन्थियो के साथ मैथुन की इच्छा से उन्हे पकडना चाहते हो, तो वहाँ निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ एक स्थान पर अवस्थान, शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है।

इन पाँच कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ, एक स्थान पर अवस्थान, शयन और स्वाध्याय करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है।

107. *Shraman nirgranths* and *nirgranthis* do not defy the order of *Tirthankars* if they do *avasthan* (meditate), *shayan* (sleep) and *svadhyaya* (study) at the same place (or abode) jointly for five reasons—

(1) If some male and female ascetics happen to enter a large abandoned settlement or a long path in a desolate area they do not defy the order of *Tirthankars* if they meditate, sleep and study at that place (2) If some male and female ascetics happen to arrive at some *gram* (village), *nagar* (town), *khet, karbat, madamb, pattan, aakar, dronmukh, nigam, ashram sanniwesh* or *rajadhani* and if only one group gets an *upashraya* (place of stay) and not the other, then they do not defy the order of *Tirthankars* if they meditate, sleep and study at one place (3) If some male and female ascetics happen to arrive at the abode of some *Naag Kumar, Suparna Kumar* (or other divine being) and they find that the place is insecure for female ascetics due to being desolate or over crowded, then they do not defy the order of Tirthankars if they meditate, sleep and study at one place (4) If female ascetics are staying at some place where there are numerous thieves and bandits, and they intend to deprive the female ascetics of their possessions, then they do not defy the order of *Tirthankars* if they (male and female ascetics) meditate, sleep and study at one place (5) If female ascetics are staying at some place where there are numerous debauch young men and they intend to approach the females for sexual gratification, then they do not defy the order of *Tirthankars* if they (male and female ascetics) meditate, sleep and study at one place

Shraman nirgranths and *nirgranthis* do not defy the order of *Tirthankars* if they meditate, sleep and study at one place for these five reasons

१०८. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहि सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति, तं जहा—

(१) खित्तचित्ते समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति। (२) [दित्तचित्ते समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति। (३) जक्खाइट्ठे समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति। (४) उम्मायपत्ते समणे णिग्गंथे णिग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति।] (५) णिग्गंथीपव्वाइयए समणे णिग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलिए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति।

१०८. पाँच कारणो से अचेलक (निर्वस्त्र) श्रमण निर्ग्रन्थ सचेलक निर्ग्रन्थियो के साथ रहता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है, जैसे-(१) शोक आदि से विक्षिप्तचित्त कोई अचेलक श्रमण निर्ग्रन्थ अन्य निर्ग्रन्थो के नही होने पर सचेलक निर्ग्रन्थियो के साथ रहता हुआ। [(२) हर्षातिरेक (हर्ष के आवेग से) दृप्तचित्त कोई अचेलक श्रमण निर्ग्रन्थ अन्य निर्ग्रन्थो के नही होने पर सचेल निर्ग्रन्थियो के साथ रहता हुआ। (३) यक्षाविष्ट कोई अचेलक श्रमण निर्ग्रन्थ अन्य निर्ग्रन्थो के नही होने पर सचेल निर्ग्रन्थियो के साथ रहता हुआ। (४) वायु के प्रकोपादि से उन्माद को प्राप्त कोई अचेलक श्रमण निर्ग्रन्थ अन्य निर्ग्रन्थो के नही होने पर सचेल निर्ग्रन्थियो के साथ रहता हुआ।] (५) निर्ग्रन्थियो के द्वारा प्रव्रजित (दीक्षित) अचेलक श्रमण निर्ग्रन्थ अन्य निर्ग्रन्थो के नही होने पर सचेल निर्ग्रन्थियो के साथ रहता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है।

108. An *achelak* (nude) *shraman nirgranth* (male ascetic) does not defy the order of *Tirthankars* if he lives with *sachelak* (dressed) *nirgranthis* (female ascetics) for five reasons—(1) If he is in a mentally deranged state (*vikshipt chitta*) due to grief and company of another nude or suchlike ascetic is not available [(2) If he is in a delirius state (*dript chitt*) due to euphoria and company of another nude or other ascetic is not available (3) If he is possessed by some evil spirit (*yakshavisht*) and company of another nude or other ascetic is not available (4) If he has gone crazy due to disturbed humour and company of another nude or non-nude ascetic is not available (5) If he has been initiated by female ascetics and company of another nude or ordinary ascetic is not available

आस्रव संवर–पद ASRAVA SAMVAR-PAD (SEGMENT OF INFLOW AND BLOCKAGE OF KARMAS)

१०९. पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा—मिच्छत्तं, अविरती, पमादो, कसाया, जोगा।

११०. पंच संवरदारा पण्णत्ता, तं जहा—संमत्तं, विरती, अपमादो, अकसाइत्तं अजोगित्तं।

१०९. आस्रव के पाँच द्वार (कारण) है-(१) मिथ्यात्व, (२) अविरति, (३) प्रमाद, (४) कषाय, (५) योग। ११०. संवर के पाँच द्वार है-(१) सम्यक्त्व, (२) विरति, (३) अप्रमाद, (४) अकषायिता, (५) अयोगिता (योगो की स्थिरता)।

109. There are five doors (reasons) of *asrava* (inflow of *karmas*)—(1) *mithyatva* (unrighteousness), (2) *avirati* (non-restraint), (3) *pramad* (stupor), (4) *kashaya* (passions) and (5) *yoga* (association) **110.** There are five doors (reasons) of *samvar* (blockage of inflow of *karmas*)—(1) *samyaktva* (righteousness), (2) *virati* (restraint), (3) *apramad* (non-stupor), (4) *akashayita* (absence of passions) and (5) *ayogita* (absence of association)

दण्ड-पद DAND-PAD (SEGMENT OF PUNISHMENT OR ABUSE)

१११. पंच दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे, अणट्ठादंडे, हिंसादंडे, अकस्मादंडे, दिट्ठीविप्परियासियादंडे।

१११. दण्ड पाँच प्रकार है-(१) **अर्थदण्ड**—प्रयोजनवश अपने या दूसरो के लिए जीव-घात करना। (२) **अनर्थदण्ड**—बिना प्रयोजन जीव-घात करना। (३) **हिंसादण्ड**—'इसने मुझे मारा था, मार रहा है, या मारेगा' इसलिए प्रतिहिंसा करना। (४) **अकस्माद्दण्ड**—अकस्मात् जीव-घात हो जाना। (५) **दृष्टिविपर्यासदण्ड**—मित्र को शत्रु समझकर गलतफहमी से दण्डित करना।

111. *Dand* (punishment or abuse) is of five kinds—(1) *Arthadand*—to harm or kill beings purposefully for self or others (2) *Anarth dand*—to harm or kill beings without any purpose (3) *Himsa dand*—to harm or kill a being with vengeance because it has harmed or will harm (4) *Akasmat dand*—to harm or kill beings accidentally (5) *Drishtiviparyas dand*—to harm or kill beings out of misunderstanding

क्रिया-पद KRIYA-PAD (SEGMENT OF ACTIVITY)

११२. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया।

११२. क्रियाएँ पाँच है-(१) आरम्भिकी क्रिया, (२) पारिग्रहिकी क्रिया, (३) मायाप्रत्यया क्रिया, (४) अप्रत्याख्यान क्रिया, (५) मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया।

112. *Kriyas* (activities) are of five kinds—(1) *arambhiki kriya* (involving violence), (2) *paarigrahiki kriya*, (3) *mayapratyaya kriya* (involving deceit), (4) *apratyakhyan kriya* (unrestrained) and (5) *mithyadarshan pratyaya kriya* (involving wrong perception / faith)

११३. मिच्छादिट्ठियाणं णेरइयाणं पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–[आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया], मिच्छादंसणवत्तिया। ११४. एवं–सव्वेसिं णिरंतरं जाव मिच्छाद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं, णवरं–विगलिंदिया मिच्छद्दिट्ठी ण भण्णंति। सेसं तहेव।

११३. मिथ्यादृष्टि नारको के पॉच क्रियाएँ है–(१) आरम्भिकी क्रिया, [(२) पारिग्रहिकी क्रिया, (३) मायाप्रत्यया क्रिया, (४) अप्रत्याख्यान क्रिया], (५) मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया। ११४. इसी प्रकार मिथ्यादृष्टि वैमानिको तक सभी दण्डको मे पॉचो क्रियाएँ होती है। केवल विकलेन्द्रियो के साथ मिथ्यादृष्टि पद नही कहना चाहिए, क्योकि वे सभी मिथ्यादृष्टि ही होते है। शेष सभी पूर्ववत् जानना चाहिए।

113. *Mithyadrishti naaraks* (unrighteous infernal beings) indulge in five *kriyas* (activities)—(1) *arambhiki kriya*, (2) *paarigrahiki kriya*, (3) *mayapratyaya kriya*, (4) *apratyakhyan kriya* and (5) *mithyadarshan pratyaya kriya* **114.** In the same way all beings up to *mithyadrishti Vaimaniks* indulge in five *kriyas* Only *vikalendriyas* (one to four sensed beings) should be excluded because all of them are exclusively unrighteous Rest should be read as before

११५. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–काइया, आहिगरणिया, पाओसिया, पारितावणिया, पाणातिवातकिरिया। ११६. णेरइयाणं पंच एवं चेव। एवं–णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।

११५. पाँच क्रियाएँ है–(१) कायिकी क्रिया, (२) आधिकरणिकी क्रिया, (३) प्रादोषिकी क्रिया, (४) पारितापनिकी क्रिया, (५) प्राणातिपातिकी क्रिया। ११६. नारकी जीवो मे पाँचो ही क्रियाएँ होती है। इसी प्रकार वैमानिको तक सभी दण्डको मे ये ही पाँच क्रियाएँ है।

115. *Kriyas* (activities) are of five kinds—(1) *kayiki kriya*, (2) *aadhikaraniki kriya*, (3) *pradoshiki kriya* (done in passion), (4) *paritapini kriya* (hurting others) and (5) *pranatipatiki kriya* (activity leaching destruction of life-force) **116.** *Naaraki jivas* (infernal beings) also have all these five *kriyas* In the same way all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks* have these five *kriyas*

११७. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–आरंभिया, (पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया), मिच्छादंसणवत्तिया। ११८. णेरइयाणं पंच किरिया णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।

११७. पुन पाँच क्रियाएँ है–(१) आरम्भिकी क्रिया, (२) पारिग्रहिकी क्रिया, (३) मायाप्रत्यया क्रिया, (४) अप्रत्याख्यान क्रिया, (५) मिथ्यादर्शन क्रिया। ११८. नारकी जीवो से लेकर निरन्तर वैमानिक तक सभी दण्डको मे ये पाँच क्रियाएँ जाननी चाहिए।

117. *Kriyas* (activities) are of five kinds—(1) *arambhiki kriya*, (2) *paarigrahiki kriya*, (3) *mayapratyaya kriya*, (4) *apratyakhyan kriya* and (5) *mithyadarshan pratyaya kriya* 118. In the same way all *dandaks* (places of suffering) from *naaraki jivas* up to *Vaimaniks* have these five *kriyas*

११९. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–दिट्ठिया, पुट्ठिया, पाडुच्चिया, सामंतोवणिवाइया, साहत्थिया। १२०. एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।

११९. पाँच क्रियाएँ है-(१) दृष्टिजा क्रिया, (२) पृष्टिजा क्रिया, (३) प्रातीत्यिकी क्रिया, (४) सामन्तोपनिपातिकी क्रिया, (५) स्वाहस्तिकी क्रिया। १२०. नारकी जीवो से लेकर वैमानिक तक सभी दण्डको मे ये पाँच क्रियाएँ जाननी चाहिए।

119. *Kriyas* (activities) are of five kinds—(1) *drishtija kriya* (activity due to seeing), (2) *prishtija kriya* (due to touch), (3) *praateetyiki kriya*, (4) *saamantopanipatiki kriya* and (5) *svaahastiki kriya* 120. In the same way all *dandaks* (places of suffering) from *naaraki jivas* up to *Vaimaniks* have these five *kriyas*

१२१. पंच किरियाओ, तं जहा–णेसत्थिया, आणवणिया, वेयारिणया, अणाभोगवत्तिया, अणवकंखवत्तिया। एवं जाव वेमाणियाणं।

१२१. पाँच क्रियाएँ है-(१) नैसृष्टिकी क्रिया, (२) आज्ञापनिकी क्रिया, (३) वैदारणिका क्रिया, (४) अनाभोगप्रत्यया क्रिया, (५) अनवकाक्षप्रत्यया क्रिया। नारको से लेकर वैमानिको तक सभी दण्डको मे ये पाँच क्रियाएँ जाननी चाहिए।

121. *Kriyas* (activities) are of five kinds—(1) *naisrishtiki kriya*, (2) *ajnapaniki kriya*, (3) *viadarniki kriya*, (4) *anaabhog pratyaya kriya* and (5) *anavakanksha pratyaya kriya* All *dandaks* (places of suffering) from *naaraki jivas* up to *Vaimaniks* have these five *kriyas*

१२२. पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पेज्जवत्तिया, दोसवत्तिया, पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, ईरियावहिया। एवं–मणुस्साणवि। सेसाणं णत्थि।

१२२. पाँच क्रियाएँ है-(१) प्रेयस्प्रत्यया क्रिया, (२) द्वेषप्रत्यया क्रिया, (३) प्रयोग क्रिया, (४) समुदान क्रिया, (५) ईर्यापथिकी क्रिया।

ये पाँचो क्रियाएँ मनुष्यो मे ही होती है, शेष दण्डको मे नही होती। (क्योकि उनमे ईर्यापथिकी क्रिया सम्भव नही है, वह वीतरागी ग्यारहवे, बारहवे और तेरहवे गुणस्थान वाले मनुष्यो के ही होती है।)

122. *Kriyas* (activities) are of five kinds—(1) *preyaspratyaya kriya*, (2) *dvesh-pratyaya kriya*, (3) *prayog kriya*, (4) *samudaan kriya* and (5) *iryapathiki kriya*

These five activities are applicable only to human beings and not in other *dandaks* (This is because *iryapathiki kriya* is impossible for anyone except detached human beings belonging to eleventh, twelfth and thirteenth *Gunasthans* (levels of spiritual purity)

विवेचन–स्थानाग के प्रथम भाग स्थान-२ के सूत्र २ से ३६ तक ७२ प्रकार की क्रियाओ का कथन किया है। वहाँ सभी की सक्षिप्त व्याख्या दी है।

Elaboration—Brief definitions of all these kriyas have been given in *Sthananga* part-1, Sthaan-2, aphorisms 2 to 36 where 72 types of activities have been listed

१२३. पंचविहा परिण्णा पण्णत्ता, तं जहा–उवहिपरिण्णा, उवस्सयपरिण्णा, कसायपरिण्णा, जोगपरिण्णा, भत्तपाणपरिण्णा।

१२३. परिज्ञा पाँच प्रकार की है, जैसे-(१) उपधिपरिज्ञा, (२) उपाश्रयपरिज्ञा, (३) कषायपरिज्ञा, (४) योगपरिज्ञा, (५) भक्तपानपरिज्ञा।

123. *Parijna* (sagacity or discerning attitude) is of five kinds—(1) *upadhi parijna*, (2) *upashraya parijna*, (3) *kashaya parijna*, (4) *yoga parijna* and (5) *bhaktapaan parijna*

विवेचन–परिज्ञा का अर्थ है, विवेक। उसके दो भेद है-**ज्ञ परिज्ञा**–वस्तु के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान और **प्रत्याख्यान परिज्ञा**–विरक्तिपूर्वक त्याग।

(१) **उपधि परिज्ञा**–मुखपत्ती, रजोहरण आदि सयम के उपयोगी उपकरणो को ग्रहण करने एव उपयोग मे विवेक रखना। मर्यादा का अतिक्रमण न करना। (२) **उपाश्रय परिज्ञा**–अकल्पनीय सदोष उपाश्रय-स्थान का त्याग व निर्दोष का सेवन। (३) **कषाय परिज्ञा**–कषायो को अल्प करने का प्रयत्न तथा सघ, गण या व्यक्ति को हानि पहुँचाने वाली कषाय प्रवृत्ति का निरोध। (४) **योग परिज्ञा**–मन, वचन, काय योगो की अशुभ प्रवृत्ति का निरोध तथा शुभ मे प्रवृत्ति। (५) **भक्तपान–परिज्ञा**–सयम निर्वाह योग्य निर्दोष व सात्विक आहार का सेवन। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ १२८)*

Elaboration—*Parijna* means sagacity or discerning attitude It has two limbs—*jna parijna* or the true knowledge of reality and *pratyakhyan parijna* or to renounce with detachment

(1) Upadhi parijna—to accept and use *muhapatti* (mouth cover) *rajoharan* (ascetic broom) and other ascetic-equipment carefully **(2) Upashraya parijna**—to reject a faulty and unsuitable place of stay and accept faultless one **(3) Kashaya parijna**—to make efforts to generally reduce passions and specifically avoid passion inspired activity harmful to religous organisation, group or individuals thereof **(4) Yoga**

parijna—to stop bad mental, vocal and physical association and indulge in good ones **(5) Bhaktapaan parijna**—to eat faultless and pure food necessary for observing ascetic conduct *(Hindi Tika, part-2, p 128)*

व्यवहार–पद **VYAVAHAR-PAD (SEGMENT OF BEHAVIOUR)**

१२४. पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तं जहा–आगमे, सुते, आणा, धारणा, जीते।

(१) जहा से तत्थ आगमे सिया, आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

(२) णो से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुते सिया, सुतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

(३) णो से तत्थ सुते सिया (जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

(४) णो से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

(५) णो से तत्थ धारणा सिया जहा से तत्थ जीते सिया, जीतेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

इच्चेतेहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा–आगमेणं (सुतेणं आणाए धारणाए) जीतेणं।

जहा–जहा से तत्थ आगमे (सुते आणा धारणा) जीते तहा–तहा ववहारं पट्ठवेज्जा।

से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा णिग्गंथा।

इच्चेतं पंचविधं ववहारं जया–जया जहिं–जहिं तया–तया तहिं–तहिं अणिस्सितोवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे णिग्गंथे आणाए आराहए भवति।

१२४. व्यवहार पाँच प्रकार का है–(१) आगमव्यवहार, (२) श्रुतव्यवहार, (३) आज्ञाव्यवहार, (४) धारणाव्यवहार, (५) जीतव्यवहार।

(१) जहाँ आगम हो अर्थात् जहाँ आगम से विधि–निषेध का बोध होता हो वहाँ आगम से व्यवहार करे। (२) जहाँ आगम न हो, श्रुत हो, वहाँ श्रुत से व्यवहार करे। (३) जहाँ श्रुत न हो, आज्ञा हो, वहाँ आज्ञा से व्यवहार करे। (४) जहाँ आज्ञा न हो, धारणा हो, वहाँ धारणा से व्यवहार करे। (५) जहाँ धारणा न हो, जीत हो, वहाँ जीत से व्यवहार करे।

इन पाँचो से व्यवहार करे–(१) आगम से, (२) श्रुत से, (३) आज्ञा से, (४) धारणा से, (५) जीत से। जिस समय जहाँ आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा और जीत मे से जो प्रधान हो, वहाँ उसी से व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न–भगवन् ! जिनका आगम ही बल है ऐसे श्रमण–निर्ग्रन्थो ने इस विषय मे क्या कहा है ?

उत्तर–आयुष्मान् श्रमणो ! इन पाचों व्यवहारो मे जब–जब जिस–जिस विषय मे जो व्यवहार हो, तब–तब वहाँ–वहाँ उसका **अनिश्रितोपाश्रित**–मध्यस्थ भाव से, सम्यक् व्यवहार करता हुआ श्रमण निर्ग्रन्थ भगवान् की आज्ञा का आराधक होता है।

124. *Vyavahar* (behaviour or conduct) is of five kinds—(1) *Agam vyavahar*, (2) *Shrut vyavahar*, (3) *Ajna vyavahar*, (4) *Dharana vyavahar* and (5) *Jeet vyavahar*

(1) In case *Agam* exists (and dictates of *Agam* are available) follow *Agam*-conduct (2) In case *Shrut* (scriptures) and not *Agam* exists follow *Shrut*-conduct (3) Where *Ajna* (command of the learned) and not *Shrut* exists follow *Ajna*-conduct (4) Where *Dharana* (general belief of the seniors) and not *Ajna* exists follow *Dharana*-conduct (5) Where *Jeet* (common practice of the seniors) and not *Dharana* exists follow *Jeet*-conduct

Behave according to these five—(1) *Agam*, (2) *Shrut*, (3) *Ajna*, (4) *Dharana* and (5) *Jeet* In a particular situation whichever out of *Agam, Shrut, Ajna, Dharana* and *Jeet* is important base your conduct accordingly

(Question) *Bhante* ! What the *shraman nirgranths* whose strength lies in *Agam* alone have said about this ?

(Answer) "Long lived Shramans ! Out of these five types of conduct when a specific code is stated then that should be rightly followed with equanimity Such *shraman nirgranth* is the true follower of *Bhagavan's* order

विवेचन–मुमुक्षु व्यक्ति को क्या करना चाहिए। इस प्रकार के प्रवृत्ति-निवृत्ति रूप निर्देश को 'व्यवहार' कहते है। जिनसे यह व्यवहार चलता है वे व्यक्ति भी कार्य-कारण की अभेद दृष्टि से व्यवहार कहे जाते है। पाँचो व्यवहारो का अर्थ इस प्रकार है–

(१) **आगमव्यवहार**–केवलज्ञानी, मन पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चतुर्दशपूर्वी, दशपूर्वी और नवपूर्वो के धारक **'आगम पुरुष'** कहे जाते है, उनका आदेश 'आगम व्यवहार' है।

(२) **श्रुतव्यवहार**–नवपूर्व से न्यून ज्ञान वाले आचार्यों का व्यवहार श्रुतव्यवहार है। कम से कम बृहत्कल्प और व्यवहार के ज्ञाता 'श्रुत व्यवहारी' होते है।

(३) **आज्ञाव्यवहार**–किसी साधु ने किसी दोष-विशेष की प्रतिसेवना की है, अथवा भक्तपान का त्याग कर दिया है और समाधिमरण को धारण कर लिया है, वह अपने जीवनभर की आलोचना करना चाहता है। गीतार्थ साधु या आचार्य समीप प्रदेश मे नही है, दूर है और उनका आना भी सम्भव नही है। ऐसी दशा मे उस साधु के दोषो को गूढ या सकेत पदो के द्वारा किसी अन्य साधु के साथ उन दूरवर्ती आचार्य या गीतार्थ साधु के समीप भेजा जाता है, तब वे उसके प्रायश्चित्त को गूढ पदो के द्वारा ही उसके साथ भेजते है। इस प्रकार गीतार्थ की आज्ञा से जो शुद्धि की जाती है, उसे आज्ञाव्यवहार कहते है। सक्षेप में गीतार्थ आचार्य की आज्ञा ही व्यवहार है।

(४) **धारणाव्यवहार**–गीतार्थ साधु ने पहले किसी को प्रायश्चित्त दिया हो, उसे जो धारण करे अर्थात् याद रखे। पीछे उसी प्रकार का दोष किसी अन्य के द्वारा होने पर वैसा ही प्रायश्चित्त देना धारणाव्यवहार है।

(५) **जीतव्यवहार**–किसी समय किसी अपराध के लिए आगमादि चार व्यवहारो का अभाव हो, तब तात्कालिक आचार्यो के द्वारा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार जो प्रायश्चित्त का विधान किया जाता है, उसे जीतव्यवहार कहते है। अथवा जिस गच्छ मे कारण -विशेष से सूत्रातिरिक्त जो प्रायश्चित्त देने का व्यवहार चल रहा है और जिसका अन्य अनेक महापुरुषो ने अनुसरण किया है, वह जीतव्यवहार कहलाता है। *(विस्तृत विवेचन के लिए देखे, व्यवहारभाष्य उद्देशक १०, गाथा ६७०, वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५४६)*

Elaboration—What an aspirant should do ? Negative and positive directions with regard to indulgence in and withdrawal from action is called *vyavahar* (behaviour or conduct) Those who give these directions are also called *vyavahar* from the standpoint of unity of cause and action The aforesaid five conducts are explained as follows—

(1) Agam vyavahar—*Keval-jnani, manahparyava-jnani, avadhi-jnani, chaturdash purvi, dash purvi,* and *nava purvi* are called *Agam Purush* (one who knows *Agam*) Their command is *Agam vyavahar*

(2) Shrut vyavahar—The commands of *acharyas* having knowledge of less then nine *purvas* is *Shrut vyavahar* The minimum qualification for this is the knowledge of *Vrihatkalp* and *Vyavahar Sutra*

(3) Ajna vyavahar—Some ascetic has committed some specific fault or some ascetic has taken the ultimate vow abandoning food and drinks, and wants to atone for all his mistakes but there is no scholarly ascetic or *acharya* available nearby Further, there is no chance of such ascetic coming there In this situation the list of faults committed by that ascetic is sent to a distant *acharya* in cryptic language through some other ascetic The acharya prescribes the procedures of atonement in cryptic language and sends back Atonement done as per the order of a scholarly *acharya* is called *Ajna vyavahar* In short, the command of a scholarly *acharya* is *vyavahar*

(4) Dharana vyavahar—When someone remembers the atonement prescribed by a scholarly *acharya* and at a later date precribes the same for similar faults then that is called *Dharana vyavahar*

(5) Jeet vyavahar—In some instance if for some specific fault there is no provision of atonement in the said four sources then the present *acharyas* frame the code of atonement based on matter, area, time and

state, this is called *Jeet vyavahar* The set of rules of atonement traditionally followed by numerous great men in a particular religious group or organisation is also called *Jeet vyavahar (for further details refer to Vyavahar Bhashya 10/670 and Vritti, part-2 p 546)*

सुप्त–जागरण पद SUPT-JAGARAN-PAD (SEGMENT OF ASLEEP AND AWAKE)

१२५. संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पण्णत्ता, तं जहा–सद्दा, (रूवा, गंधा, रसा), फासा। १२६. संजतमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता पण्णत्ता, तं जहा–सद्दा, (रूवा, गंधा, रसा), फासा। १२७. असंजयमणुस्साणं सुत्ताणं वा जागराणं वा पंच जागरा पण्णत्ता, तं जहा–सद्दा, (रूवा, गंधा, रसा), फासा।

१२५. सोते हुए प्रमत्त सयत मनुष्यो के **पॉच जागृत** रहते है-(१) शब्द, (२) रूप, (३) गन्ध, (४) रस, (५) स्पर्श। १२६. जागते हुए (अप्रमत्त) सयत मनुष्यो के **पॉच सुप्त** रहते है-(१) शब्द, (२) रूप, (३) गन्ध, (४) रस, (५) स्पर्श। १२७. सोते हुए या जागते हुए **असयत मनुष्यो के पॉच जागृत** रहते है-(१) शब्द, (२) रूप, (३) गन्ध, (४) रस, (५) स्पर्श।

125. In a sleeping *pramatt samyat* (accomplished but negligent) person these five remain awake—(1) *Shabd* (sound), (2) *Rupa* (appearance), (3) *Gandh* (smell), (4) *Rasa* (taste) and (5) *Sparsh* (touch) **126.** In an awakened (*apramatt*) *samyat* person these five remain sleeping (subdued)—(1) *Shabd* (sound), (2) *Rupa* (appearance), (3) *Gandh* (smell), (4) *Rasa* (taste) and (5) *Sparsh* (touch) **127.** In a sleeping or awakened *asamyat* person (person not observing any restraint) these five remain awake—(1) *Shabd* (sound), (2) *Rupa* (appearance), (3) *Gandh* (smell), (4) *Rasa* (taste) and (5) *Sparsh* (touch)

विवेचन–सयत पुरुष जब प्रमाद का सेवन कर रहा हो, तब वह चाहे जागता हो या सुप्त, उसे **'सुप्त'** ही कहा जाता है। इसके विपरीत जब अप्रमत्तदशा मे रहता है, तो उसे 'जागृत' कहा जाता है। जब सयमी जागता है तो उसके शब्द आदि इन्द्रिय-विषय सुप्त रहते है और जब वह सुप्त होता है तो पॉच इन्द्रियो के विषय 'जागृत' रहते है। इसी तरह असयत मनुष्य चाहे सो रहा हो, चाहे जाग रहा हो, दोनो ही अवस्था मे प्रमाद का सेवन करने से उसके शब्दादि विषय जागृत रहते है।

Elaboration—If a *samyat* (disciplined) person is under stupor he is said to be asleep irrespective of his being awake or asleep On the other hand if he is in *apramatt* (not under stupor) state he is said to be awake When a disciplined person is awake his five senses are asleep and when he is sleeping his five senses are awake But in case of an indisciplined person the senses are always awake irrespective of his being asleep or awake because of the fact that he is under stupor

रज–आदान–वमन–सूत्र RAJ-ADAAN-VAMAN-PAD (SEGMENT OF INFLOW AND SHEDDING OF KARMA-DUST)

१२८. पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं आदिज्जंति, तं जहा–पाणातिवातेणं, [मुसावाएणं, अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं], परिग्गहेणं। १२९. पचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमंति, तं जहा–पाणातिवातवेरमणेणं, [मुसावायवेरमणेणं, अदिण्णादाणवेरमणेणं, मेहुणवेरमणेणं], परिग्गहवेरमणेणं।

१२८. पाँच कारणो मे जीव कर्म-रज को ग्रहण (कर्मबन्ध) करते है–(१) प्राणातिपात से, [(२) मृषावाद से, (३) अदत्तादान से, (४) मैथुनसेवन से], (५) परिग्रह से। १२९. पाँच कारणो से जीव कर्म-रज को वमन (कर्मों की निर्जरा) करते है (१) प्राणातिपात-विरमण से, [(२) मृषावाद-विरमण से, (३) अदत्तादान-विरमण से], (४) मैथुन-विरमण से, (५) परिग्रह-विरमण से।

128. For five reasons beings acquire the dust of *karma* (*karmic* bondage)—(1) by *pranatipat* (harming or destroying life), (2) by *mrishavad* (falsity), (3) by *adattadan* (stealing), (4) by *maithun* (sexual activities) and (5) by *parigraha* (possession) **129.** For five reasons beings shed the dust of *karma* (*karmic* bondage)—(1) by *pranatipat viraman* (to abstain completely from harming or destroying life), (2) by *mrishavad viraman* (to abstain completely from falsity), (3) by *adattadan viraman* (to abstain completely from acts of stealing), (4) by *maithun viraman* (to abstain completely from indulgence in sexual activities) and (5) by *parigraha viraman* (to abstain completely from acts of possession of things)

दत्ति–पद DATTI-PAD (SEGMENT OF SERVINGS)

१३०. पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए, पंच पाणगस्स।

१३०. पचमासिकी भिक्षुप्रतिमा को धारण करने वाले अनगार को भोजन की पॉच दत्तियॉ और पानक की पाँच दत्तियॉ ग्रहण करना कल्पता है।

130. An ascetic observing a five-month *bhikshu pratima* (special austerities) is allowed to take five *datti* (servings) of food and five *datti* (servings) of drinks

उपघात–विशोधि पद UPAGHAT-VISHODHI-PAD (SEGMENT OF IMPURITY AND PURITY)

१३१. पंचविधे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा–उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, एसणोवघाते, परिकम्मोवघाते, परिहरणोवघाते।

१३२. पंचविहा विसोही पण्णत्ता, तं जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, एसणविसोही, परिकम्मविसोही, परिहरणविसोही।

१३१. **उपघात**—(अशुद्धि अथवा दोष) पाँच प्रकार का है-(१) **उद्गमोपघात**—आधाकर्मादि १६ उद्गम दोषो से होने वाला चारित्र का घात। (२) **उत्पादनोपघात**—धात्री आदि १६ उत्पादन दोषो से होने वाला चारित्र का घात। (३) **एषणोपघात**—शकित आदि १० एषणा के दोषो से होने वाला चारित्र का घात। (४) **परिकर्मोपघात**—वस्त्र-पात्रादि के निमित्त से होने वाला चारित्र का घात। (५) **परिहरणोपघात**—अकल्प्य उपकरणो के उपभोग से होने वाला चारित्र का घात।

१३२. विशोधि पाँच प्रकार की है-(१) **उद्गमविशोधि**—आधाकर्मादि उद्गम-जनित दोषो का वर्जन। (२) **उत्पादनविशोधि**—धात्री आदि उत्पादन जनित दोषो का वर्जन। (३) **एषणाविशोधि**—शकित आदि एषणा-जनित दोषो का वर्जन। (४) **परिकर्मविशोधि**—वस्त्र-पात्रादि परिकर्म-जनित दोषो का वर्जन। (५) **परिहरणविशोधि**—अकल्प्य उपकरणो के उपभोग-जनित दोषो का वर्जन।

131. *Upaghat* (impurity or fault) is of five kinds—**(1) Udgamopaghat**—impurity in conduct due to the 16 faults of accepting alms including *aadhakarma* (food cooked specifically for ascetics) **(2) Utpadanopaghat**—impurity in conduct due to the 16 faults of participating in arranging for or producing food for alms including *dhatri* (faults committed by donor) **(3) Eshanopaghat**—impurity in conduct due to the 10 faults of alms seeking including *shankit* (dobtful food) **(4) Parikarmopaghat**—impurity in conduct due to faults related to garb, bowls and other prescribed ascetic equipment **(5) Pariharanopaghat**—impurity in conduct due to using prohibited equipment

132. *Vishodhi* (purity) is of five kinds—**(1) Udgamavishodhi**—censuring the faults of accepting alms including *aadhakarma* (food cooked specifically for ascetics) **(2) Utpadanavishodhi**—censuring the faults of participating in arranging for or producing alms including dhatri **(3) Eshanavishodhi**—censuring the faults of alms seeking including *shankit* (dobtful) **(4) Parikarmavishodhi**—censuring faults related to garb, bowls and other prescribed ascetic equipment **(5) Pariharanavishodhi**—censuring using prohibited equipment

दुर्लभ-सुलभ-बोधि पद DURLABH-SULABH-BODHI-PAD (SEGMENT OF DIFFICULT AND EASY ENLIGHTENMENT)

१३३. पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्मं पकरेति, तं जहा—अरहंताणं अवण्णं वदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणं अवण्णं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे, विवक्क-तव-बंभचेराणं देवाणं अवण्णं वदमाणे।

१३३. पाँच कारणो से जीव दुर्लभबोधि (सद्धर्म की प्राप्ति को दुर्लभ बनाने वाले) मोहनीय आदि कर्मो का उपार्जन करते है, जैसे–(१) अर्हन्तो का अवर्णवाद (निन्दा) करता हुआ। (२) अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म का, (३) आचार्य–उपाध्याय का, (४) चतुर्वर्ण (चतुर्विध) सघ का, और (५) तप और ब्रह्मचर्य के फलस्वरूप दिव्य गति को प्राप्त देवो का अवर्णवाद करता हुआ।

133. For five reasons beings acquire *karmas* that make enlightenement difficult (*durlabh-bodhi*)—by criticising (*avarnavad*) (1) *Arhants*, (2) religion propagated by *Arhats*, (3) *acharyas* and *upadhyayas*, (4) four limbed religious organisation and (5) gods who attained divine birth by observing austerities and celibacy

१३४. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोधियत्ताए कम्मं पकरेति, तं जहा–अरहंताणं वण्णं वदमाणे, [अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स वण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणं वण्णं वदमाणे, चाउवण्णस्स संघस्स वण्णं वदमाणे], विवक्क–तव–बंभचेराणं देवाणं वण्णं वदमाणे।

१३४. पाँच कारणो से जीव सुलभबोधि करने वाले कर्म का उपार्जन करता है–(१) अर्हन्तो का वर्णवाद (गुण कीर्तन) करता हुआ। [(२) अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म का, (३) आचार्य–उपाध्याय का, (४) चतुर्वर्ण सघ का], (५) तप और ब्रह्मचर्य के फलस्वरूप दिव्यगति को प्राप्त देवो का वर्णवाद (गुण–कथन) करता हुआ।

134. For five reasons beings acquires *karmas* that make enlightenement easy (*sulabh-bodhi*)—by singing in praise of (*varnavad*) (1) *Arhants*, (2) religion propagated by *Arhats*, (3) *acharyas* and *upadhyayas*, (4) four limbed religious organisation and (5) gods who attained divine birth by observing austerities and celibacy

प्रतिसंलीन–अप्रतिसंलीन पद PRATISAMLINATA-APRATISAMLINATA-PAD (SEGMENT OF ENGROSSMENT AND COUNTER-ENGROSSMENT)

१३५. पंच पडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा–सोइंदियपडिसंलीणे, [चक्खिंदियपडिसंलीणे, घाणिंदियपडिसंलीणे, जिब्भिंदियपडिसंलीणे], फासिंदियपडिसंलीणे।

१३५. **प्रतिसंलीन**–(इन्द्र–विषयो का निग्रह करने वाला) पाँच प्रकार का है–(१) **श्रोत्रेन्द्रिय–प्रतिसंलीन**–शुभ–अशुभ शब्दो मे, (२) **चक्षुरिन्द्रिय–प्रतिसलीन**–शुभ–अशुभ रूपो मे, (३) **घ्राणेन्द्रिय–प्रतिसंलीन**–शुभ–अशुभ गन्ध मे, (४) **रसनेन्द्रिय–प्रतिसलीन**–शुभ–अशुभ रसो मे, (५) **स्पर्शनेन्द्रिय–प्रतिसलीन**–शुभ–अशुभ स्पर्शो मे राग–द्वेष न करने वाला।

135. *Pratisamlin* (one who abstains from indulgence in subjects of five sense organs) is of five kinds—(one who is free of attachment and aversion—) (1) *shrotendriya pratisamlin*—in good and bad sound,

(2) *chakshurındrıya pratısamlın*—ın good and bad appearance, (3) *ghranendrıya pratısamlın*—ın good and bad smell, (4) *rasanendrıya pratısamlın*—ın good and bad taste and (5) *sparshendrıya pratısamlın*—ın good and bad touch

१३६. पंच अपडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—सोतिंदियअपडिसंलीणे, [चक्खिंदियअपडिसंलीणे, घाणिंदियअपडिसंलीणे, जिब्भिंदियअपडिसंलीणे], फासिंदियअपडिसंलीणे।

१३६. **अप्रतिसंलीन**–(इन्द्रिय-विषय-सेवन मे सलग्न तथा उनमे राग-द्वेष करने वाला) पाँच प्रकार का है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-अप्रतिसलीन, (२) चक्षुरिन्द्रिय-अप्रतिसलीन, (३) घ्राणेन्द्रिय-अप्रतिसलीन, (४) रसनेन्द्रिय-अप्रतिसलीन और (५) स्पर्शनेन्द्रिय-अप्रतिसलीन।

136. *Apratısamlın* (one who ındulges ın subjects of five sense organs) ıs of five kınds—(one who ıs not free of attachment and aversıon) (1) *shrotendrıya apratısamlın*, (2) *chakshurındrıya apratısamlın*, (3) *ghranendrıya apratısamlın*, (4) *rasanendrıya apratısamlın* and (5) *sparshendrıya apratısamlın*

सवर-असंवर पद SAMVAR-ASAMVAR-PAD

१३७. पंचविधे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियसंवरे, [चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे], फासिंदियसंवरे। १३८.—पंचविधे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसंवरे, [चक्खिंदियअसंवरे, घाणिंदियअसंवरे, जिब्भिंदियअसंवरे], फासिंदियअसंवरे।

१३७. सवर पाँच प्रकार का है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-सवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय-सवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-सवर, (४) रसनेन्द्रिय-सवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-सवर। १३८. असवर (आस्रव) पाँच प्रकार का है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय-असवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-असवर, (४) रसनेन्द्रिय-असवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय असवर।

137. *Samvar* (blockage of ınflow of *karmas* or abstaınıng from ındulgence ın subjects of sense organs) ıs of five kınds—(1) *shrotendrıya samvar*, (2) *chakshurındrıya samvar*, (3) *ghranendrıya samvar*, (4) *rasanendrıya samvar* and (5) *sparshendrıya samvar* **138.** *Asamvar* (ınflow of *karmas* or ındulgence ın subjects of sense organs) ıs of five kınds—(1) *shrotendrıya asamvar*, (2) *chakshurındrıya asamvar*, (3) *ghranendrıya asamvar*, (4) *rasanendrıya asamvar* and (5) *sparshendrıya asamvar*

विवेचन–प्रतिसलीन और 'सवर' शब्द मे अर्थ भेद है। बाह्य विषयो से इन्द्रियो को हटाना प्रतिसलीनता है तथा आत्म-स्वरूप मे रमण करना, सवर है। बाह्य विषयो से सम्बन्ध तोडना प्रतिसलीनता तथा अन्तर स्वरूप से सम्बन्ध जोडना सवर है।

Elaboration—There is a subtle difference between the meaning of the two terms *pratisamlin* and *samvar* To shift sense organs from physical subjects is *pratisamlinata* and to indulge in inner or spiritual state is *samvar* To terminate relationship with outer things is *pratisamlinata* and to establish that with inner state is *samvar*

संयम–असयम पद SAMYAM-ASAMYAM -PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

१३९. पंचविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा–सामाइयसंजमे, छेदोवट्ठावणियसंजमे, परिहारविसुद्धियसंजमे, सुहुमसंपरागसंजमे, अहक्खायचरित्तसंजमे।

१३९. सयम (चारित्र) पाँच प्रकार का है–(१) **सामायिक–सयम**–सर्व सावद्यकार्यों का त्याग। (२) **छेदोपस्थानीय–संयम**–पच महाव्रतो का पृथक्–पृथक् स्वीकार करना। (३) **परिहारविशुद्धिक–सयम**–तपस्या विशेष की विधि सहित आराधना करना। (४) **सूक्ष्मसांपरायसयम**–दशम गुणस्थानवर्ती का सयम। (५) **यथाख्यातचारित्रसयम**–ग्यारहवे गुणस्थान से लेकर उपरिम सभी गुणस्थानवर्ती जीवो का वीतराग सयम।

139. *Samyam* (ascetic-discipline or conduct) is of five kinds—(1) *Samayik-samyam*—abstaining from all kinds of sinful acts (2) *Chhedopasthaniya-samyam*—to accept five great vows one by one (3) *Pariharavishuddhik-samyam*—to observe austerity according to the prescribed procedure (4) *Sukshmasamparaya-samyam*—the discipline prescribed for tenth *Gunasthan* and (5) *Yathakhyatachaaritra-samyam*—the discipline of detachment of beings at eleventh *Gunasthan* and above

१४०. एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तं जहा–पुढविकाइयसंजमे, [आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे], वणस्सतिकाइयसंजमे।

१४०. एकेन्द्रियजीवो का आरम्भ–समारम्भ नही करने वाले जीव को पॉच प्रकार का सयम होता है- (१) पृथ्वीकायिक–सयम, [(२) अप्कायिक–सयम, (३) तेजस्कायिक- सयम, (४) वायुकायिक–सयम,] (५) वनस्पतिकायिक–सयम।

140. A being not indulging in harming or killing of one sensed beings has five kinds of discipline—(1) *Prithvikayik samyam* (discipline related to earth-bodied beings), [(2) *Apkayik samyam* (discipline related to water-bodied beings), (3) *Tejas-kayik samyam* (discipline related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik samyam* (discipline related to air-bodied beings) and] (5) *Vanaspatikayik samyam* (discipline related to plant-bodied beings)

१४१. एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे, [आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसमंजमे], वणस्सतिकाइयअसंजमे।

१४१. एकेन्द्रिय जीवो का आरम्भ करने वाले को पाँच प्रकार का असयम होता है—(१) पृथ्वीकायिक-असयम, (२) अप्कायिक-असयम, (३) तेजस्कायिक-असयम, (४) वायुकायिक-असयम, (४) वनस्पतिकायिक-असयम,

141. A being indulging in harming or killing of one sensed beings has five kinds of indiscipline—(1) *Prithvikayik asamyam* (indiscipline related to earth-bodied beings), [(2) *Apkayik asamyam* (indiscipline related to water-bodied beings), (3) *Tejas-kayik asamyam* (indiscipline related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik asamyam* (indiscipline related to air-bodied beings) and] (5) *Vanaspatikayik asamyam* (indiscipline related to plant-bodied beings)

१४२. पंचिंदिया ण जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा—सोतिंदियसंजमे, [चक्खिंदियसंजमे, घाणिंदियसंजमे, जिब्भिंदियसंजमे], फासिंदियसंजमे।

१४२. पचेन्द्रिय जीवो का आरम्भ-समारम्भ नही करने वाले को पॉच प्रकार का सयम होता है—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-सयम, [(२) चक्षुरिन्द्रिय-सयम, (३) घ्राणेन्द्रिय-सयम, (४) रसनेन्द्रिय-सयम], (५) स्पर्शनेन्द्रिय-सयम।

142. A being not indulging in harming or killing of five sensed beings has five kinds of discipline—(1) *shrotendriya samyam*, (2) *chakshurindriya samyam*, (3) *ghranendriya samyam*, (4) *rasanendriya samyam* and (5) *sparshendriya samyam*

१४३. पंचिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—सोतिंदियअसंजमे, [चक्खिंदियअसंजमे, घाणिंदियअसंजमे, जिब्भिंदियअसंजमे], फासिंदियअसंजमे।

१४३. पंचेन्द्रिय जीवो का घात करने वाले को पाँच प्रकार का असयम होता है—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असयम, [(२) चक्षुरिन्द्रिय-असयम, (३) घ्राणेन्द्रिय-असयम, (४) रसनेन्द्रिय-असयम], (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असयम।

143. A being indulging in harming or killing of five sensed beings has five kinds of indiscipline—(1) *shrotendriya asamyam*, (2) *chakshurindriya asamyam*, (3) *ghranendriya asamyam*, (4) *rasanendriya asamyam* and (5) *sparshendriya asamyam*

१४४. सव्व पाणभूयजीवसत्ताणं असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जति, तं जहा—एगिंदियसंजमे, [बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे], पंचिंदियसंजमे।

१४४. सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो का घात नही करने वाले को पाँच प्रकार का सयम होता है-(१) एकेन्द्रिय-सयम, [(२) द्वीन्द्रिय-सयम, (३) त्रीन्द्रिय-सयम, (४) चतुरिन्द्रिय-सयम], (५) पचेन्द्रिय-सयम।

144. A being not indulging in harming or killing of all *pran, bhoot, jiva* and *sattva* has five kinds of discipline—(1) *ekendriya samyam* (discipline relating to one-sensed living being), (2) *dvindriya samyam*, (3) *trindriya samyam*, (4) *chaturindriya samyam* and (5) *panchendriya samyam*

१४५. सव्व पाणभूयजीवसत्ताणं समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति, तं जहा—एगिंदियअसंजमे, [बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे], पंचिंदियअसंजमे।

१४५. सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो का घात करने वाले को पॉच प्रकार का असयम होता है-(१) एकेन्द्रिय-असयम, (२) [द्वीन्द्रिय-असयम, (३) त्रीन्द्रिय-असयम, (४) चतुरिन्द्रिय-असयम], (५) पचेन्द्रिय-असयम।

145. A being indulging in harming or killing of all *pran, bhoot, jiva* and *sattva* (two to four-sensed beings, plant-bodied beings, five-sensed living beings) and (earth-bodied, water-bodied, fire bodied and air-bodied living beings) has five kinds of indiscipline—(1) *ekendriya asamyam*, (2) *dvindriya asamyam*, (3) *trindriya asamyam*, (4) *chaturindriya asamyam* and (5) *panchendriya asamyam*

विवेचन—वृत्तिकार के अनुसार द्वीन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव को '**प्राण**' वनस्पतिकाय को '**भूत**' पचेन्द्रिय को '**सत्त्व**' और शेष पृथ्वी आदि चार स्थावरकाय को '**सत्त्व**' कहते है।

Elaboration—According to the commentator (*Vritti*) two to four sensed beings are classified as *pran*, plant-bodied beings as *bhoot*, five sensed beings as *jiva*, and the remaining four immobile-bodied beings including earth-bodied are called *sattva*

तृणवनस्पति-पद TRINAVANASPATI-PAD (SEGMENT OF GRAMINEOUS PLANTS)

१४६. पंचविहा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा।

१४६. तृणवनस्पतिकायिक जीव पाँच प्रकार के है-(१) **अग्रबीज**—जिनका अग्रभाग ही बीजरूप होता है। जैसे—कोरट वृक्ष आदि। (२) **मूलबीज**—जिनका मूल भाग ही बीज रूप होता है। जैसे-कमलकद आदि। (३) **पर्वबीज**—जिनका पर्व (पोर, गाँठ) ही बीजरूप होता है। जैसे-गन्ना आदि। (४) **स्कन्धबीज**—जिसका स्कन्ध ही बीजरूप होता है। जैसे—सल्लकी (वट या चीढ का वृक्ष) आदि। (५) **बीजरूह**—बीज से उगने वाले-गेहूँ, चना आदि।

146. Gramineous plant-bodied beings are of three kinds—(1) *agra-beej*—those which grow when the tip is planted, such as *Korant* tree, (2) *mool-beej*—those which grow when the root-bulb is planted like lotus, (3) *parva-beej*—those which grow when the knot is planted like sugar-cane, (4) *skandh-beej*—those which grow when the branch is planted like banyan or pine and (5) *beej-ruha*—those which grow when seed is sown like wheat, gram etc

आचार-पद ACHAR-PAD (SEGMENT OF CONDUCT)

१४७. पंचविहे आयारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे।

१४७. आचार पाँच प्रकार का है-(१) ज्ञानाचार, (२) दर्शनाचार, (३) चारित्राचार, (४) तपाचार, (५) वीर्याचार।

147. *Achar* (conduct) is of five kinds—(1) *Jnanachar*, (2) *darshanachar*, (3) *charitrachar*, (4) *tapah-achar* and (5) *viryachar*

विवेचन—आचार का अर्थ है-उस विषय का शास्त्र विहित उचित आचरण। श्रुतज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना ज्ञानाचार है। सम्यक्त्व की आराधना दर्शनाचार, चारित्र की सम्यक् आराधना 'चारित्राचार' तप की बहुविध आराधना 'तपाचार' उक्त चारो की प्राप्ति व शुद्धि के लिए शक्ति का उपयोग करना वीर्याचार है। ज्ञानाचार के ८, दर्शनाचार के ८, चारित्राचार के ५, तपाचार के १२ भेद है।

Elaboration—*Achar* means specific proper conduct as prescribed in scriptures Proper endeavour to acquire scriptural knowledge is *Jnanachar* or conduct related to *jnana* or knowledge Proper practice of *smayaktva* (righteousness) is *darshanachar* or conduct related to *darshan* or perception/faith Proper following of codes of conduct is *chaaritrachar* or conduct related to *chaaritra* or ascetic-conduct Proper observation of various austerities is *tapah-achar* or conduct related to *tapah* or austerities Application of all strength and vigour in faultless accomplishment of these four is *viryachar* or conduct related to *virya* or potency There are eight types of *jnanachar*, eight types of *darshanachar*, five types of *charitrachar* and twelve types of *tapah-achar*

आचारप्रकल्प-पद ACHAR-PRAKALP-PAD (SEGMENT OF CONDUCT ATONEMENT)

१४८. पंचविहे आयारकप्पे पण्णत्ते, तं जहा—मासिए उग्घातिए, मासिए अणुग्घातिए, चउमासिए उग्घातिए, चउमासिए अणुग्घातिए, आरोवणा।

१४८. आचारप्रकल्प (निशीथ सूत्रोक्त प्रायश्चित्त) पाँच प्रकार का है–(१) मासिक उद्घातिक-लघु मासरूप प्रायश्चित्त। (२) मासिक अनुद्घातिक-गुरु मासरूप प्रायश्चित्त। (३) चातुर्मासिक उद्घातिक-लघु चार मासरूप प्रायश्चित्त। (४) चातुर्मासिक अनुद्घातिक-गुरु चार मासरूप प्रायश्चित्त। (५) आरोपणा-एक दोष से प्राप्त प्रायश्चित्त मे दूसरे दोष के सेवन से प्राप्त प्रायश्चित्त का आरोपण करना।

148. *Achar-prakalp* (atonement for faults related to conduct as precribed in *Nisheeth Sutra*) is of five kinds—(1) *masik udghatik*—curtailment in month long prescribed atonement as simple atonement, (2) *masik anudghatik*—no curtailment in month long prescribed atonement as harsh atonement, (3) *chaturmasik udghatik*—curtailment in four month long prescribed atonement as simple atonement, (4) *chaturmasik anudghatik*—curtailment in four month long prescribed atonement as harsh atonement and (5) *aropan*—to include atonement of new fault with the one already in process

विवेचन–मासिक तपश्चर्या वाले प्रायश्चित्त मे कुछ दिन कम करना मासिक उद्घातिक या लघुमास प्रायश्चित्त है, तथा मासिक तपश्चर्या वाले प्रायश्चित्त मे से कुछ भी अश कम नही करना, मासिक अनुद्घातिक या गुरुमास प्रायश्चित्त है। यही अर्थ चातुर्मासिक उद्घातिक और अनुद्घातिक का है। आरोपणा का विवेचन आगे के सूत्र मे है।

Elaboration—English meaning is self-explanatory

आरोपणा–पद AROPANA-PAD (SEGMENT OF STALLING)

१४९. आरोवणा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा–पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा, हाडहडा।

१४९. आरोपणा पांच प्रकार की होती है। (१) **प्रस्थापिता आरोपणा**–प्रायश्चित्त मे प्राप्त अनेक तपो मे से किसी एक तप को प्रारम्भ करना। (२) **स्थापिता आरोपणा**–प्रायश्चित्त रूप से प्राप्त तपो को गुरुजनो की वैयावृत्त्य आदि किसी कारण से प्रारम्भ न करना। भविष्य के लिए स्थापित किये रखना। (३) **कृत्स्ना आरोपणा**–पूरे छह मास की तपस्या का प्रायश्चित्त देना, क्योकि वर्तमान जिनशासन मे उत्कृष्ट तपस्या की सीमा छह मास की मानी गई है। (४) **अकृत्स्ना आरोपणा**–एक दोष के प्रायश्चित्त को करते हुए दूसरे दोष को करने पर तथा उसके प्रायश्चित्त को करते हुए तीसरे दोष के करने पर यदि प्रायश्चित्त तपस्या का काल छह मास से अधिक होता है तो उसे छह मास मे ही आरोपण कर दिया जाता है। क्योकि प्रायश्चित्त के रूप में छह मास से अधिक का तप नही किया जाता। अत पूरा प्रायश्चित्त नही कर सकने के कारण उसे अकृत्स्ना आरोपणा कहा जाता है। (५) **हाडहडा आरोपणा**–जो प्रायश्चित्त प्राप्त हो, उसे शीघ्र ही दे देना।

149. *Aropana* (stalling) is of five kinds—(1) *Prasthapit aropana*—to stall all but one of the austerities prescribed for atonement (2) *Sthapit aropana*—to stall prescribed austerities for some future time due to some specific reason like serving the seniors (3) *Kritsna aropana*—to prescribe atonement for complete six months following the belief that in modern times that is the maximum limit (4) *Akritsna aropana*—to include atonement of new faults committed during atonement within the maximum limit of six months even if the total period comes to more than that (5) *Haadahada aropana*—to prescribe atonement at once without any delay

वक्षस्कारपर्वत–पद VAKSHASKAR PARVAT-PAD (SEGMENT OF VAKSHASKAR MOUNTAINS)

१५०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीयाए महाणदीए उत्तरे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—मालवंते, चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले।

१५१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीयाए महाणदीए दाहिणे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे, सोमणसे।

१५०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग मे सीता महानदी की उत्तर दिशा मे पाँच वक्षस्कारपर्वत है- (१) माल्यवान्, (२) चित्रकूट, (३) पक्ष्मकूट, (४) नलिनकूट, (५) एकशैल।

१५१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग मे सीता महानदी की दक्षिण दिशा मे पाँच वक्षस्कारपर्वत है–(१) त्रिकूट, (२) वैश्रमणकूट, (३) अजन, (४) माताजन, (५) सौमनस।

150. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain there are four *Vakshaskar* mountains on the northern bank of great river Sita They are—(1) Malyavan, (2) Chitrakoot, (3) Padmakoot, (4) Nalinakoot and (5) Ekashailakoot

151. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain there are four *Vakshaskar* mountains on the southern bank of great river Sita They are—(1) Trikoot, (2) Vaishraman-koot, (3) Anjan and (4) Matanjan (5) Saumanas

१५२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए दाहिणे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता,तं जहा—विज्जुप्पभे, अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे।

१५३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए उत्तरे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चंदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते, गंधमादणे।

१५२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत मे सीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा मे पाँच वक्षस्कारपर्वत है-(१) विद्युत्प्रभ, (२) अकावती, (३) पक्ष्मावती, (४) आशीविष, (५) सुखावह।

१५३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम भाग मे सीतोदा महानदी की उत्तर दिशा मे पाँच वक्षस्कारपर्वत है-(१) चन्द्रपर्वत, (२) सूर्यपर्वत, (३) नागपर्वत, (४) देवपर्वत, (५) गन्धमादन। ये सभी पर्वत महाविदेह क्षेत्र के अन्तर्गत है)

152. In Jambu Dveep ın the western part of Mandar mountaın there are four *Vakshaskar* mountaıns on the southern bank of great rıver Sıtoda They are—(1) Vıdyutprabh, (2) Ankavatı, (3) Pakshmavatı, (4) Ashıvısh and (5) Sukhavah

153. In Jambu Dveep ın the western part of Mandar mountaın there are four *Vakshaskar* mountaıns on the northern bank of great rıver Sıtoda They are—(1) Chandraparvat, (2) Suryaparvat, (3) Naag-parvat and (4) Devaparvat and (5) Gandhamadan (All these mountaıns are ın Mahavıdeh area)

महाद्रह–पद MAHADRAH-PAD (SEGMENT OF GREAT LAKES)

१५४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा पण्णत्ता, तं जहा–णिसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पभदहे।

१५५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं उत्तरकुराए कुराए पंच महादहा पण्णत्ता, तं जहा–णीलवंतदहे, उत्तरकुरुदहे, चददहे, एरावणदहे, मालवंतदहे।

१५४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे देवकुरु नामक कुरुक्षेत्र मे पाँच महाद्रह है (१) निषधद्रह, (२) देवकुरुद्रह, (३) सूर्यद्रह, (४) सुलसद्रह, (५) विद्युत्प्रभद्रह।

१५५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे उत्तरकुरु नामक कुरुक्षेत्र मे पाँच महाद्रह है-(१) नीलवत्द्रह, (२) उत्तरकुरुद्रह, (३) चन्द्रद्रह, (४) ऐरावणद्रह, (५) माल्यवत्द्रह।

154. In Jambu contınent, to the south of Mandar Mountaın there are five *mahadrahas* (great lakes) ın the Kuru area called Devakuru They are—(1) Nıshadh draha, (2) Devakuru draha, (3) Surya draha, (4) Sulas draha and (5) Vıdyutprabh draha

155. In Jambu contınent, to the north of Mandar Mountaın there are five *mahadrahas* (great lakes) ın the Kuru area called Uttar-kuru They are—(1) Nıavat draha, (2) Uttar-kuru draha, (3) Chandra draha, (4) Aıravan drahe and (5) Malyavat draha

वक्षस्कारपर्वत–पद **VAKSHASKAR PARVAT-PAD (SEGMENT OF VAKSHASKAR MOUNTAINS)**

१५६. सव्वेवि णं वक्खारपव्वया सीया–सीओयाओ महाणईओ मंदरं वा पव्वतं पंच जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेण, पंचगाउसताइं उव्वेहेणं।

१५६. सभी (उक्त) वक्षस्कारपर्वत सीता–सीतोदा महानदी तथा मन्दर पर्वत की दिशा मे पाँच सौ योजन ऊँचे और पाँच सौ कोश गहरी नीव वाले है।

156. All the aforesaid *Vakshaskar* mountains, in the directions of Sita-Sitoda great rivers and Mandar mountain, are five hundred *Yojans* high and five hundred *Yojans* deep in the ground

धातकीषंड–पुष्करवर–पद **DHATKIKHAND-PUSHKARAVAR-PAD**

१५७. धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स पुरित्थमे णं सीयाए महाणदीए उत्तरे णं पंच वक्खारपव्वता पण्णत्ता. तं जहा–मालवंते, एवं जहा जंबुद्दीवे तहा जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे वक्खारपव्वया दहा य उच्चत्तं भाणियव्वं।

१५७. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे तथा सीता महानदी के उत्तर मे पाँच वक्षस्कारपर्वत है- (१) माल्यवान, (२) चित्रकूट, (३) पक्ष्मकूट, (४) नलिनकूट, (५) एकशैल।

इसी प्रकार धातकीषण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी जम्बूद्वीप के समान पाँच–पाँच वक्षस्कारपर्वत, महानदियाँ–सम्बन्धी द्रह और वक्षस्कार पर्वतो की ऊँचाई–गहराई कहना चाहिए।

157. In the eastern half of Dhatkikhand Dveep, to the east of Mandar mountain there are five *Vakshaskar* mountains to the north of Sita great river They are—(1) Malyavan, (2) Chitrakoot, (3) Padmakoot, (4) Nalinakoot and (5) Ekashailakoot

In the same way in the western half of Dhatkikhand Dveep and eastern and western halves of Ardhapushkaravar Dveep, five *Vakshaskar* mountains each, great lakes connected with great rivers and height and depth of mountains should be read like those in Jambu Dveep

समयक्षेत्र–पद **SAMAYAKSHETRA-PAD (SEGMENT OF SAMAYAKSHETRA)**

१५८. समयक्खेत्ते णं पंच भरहाइं, पंच एरवताइं, एवं जहा चउट्ठाणे बितीयउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव पंच मंदरा पंच मंदरचूलियाओ, णवरं–उसुयारा णत्थि।

१५८. समयक्षेत्र (अढाई द्वीपो) मे पाँच भरत, पाँच ऐरवत क्षेत्र है। इसी प्रकार जैसे चतु स्थान के द्वितीय उद्देशक मे जिन–जिनका वर्णन है, वह यहाँ भी कहना चाहिए। यावत् पाँच मन्दर, पाँच मदर चूलिकाएँ समयक्षेत्र मे है। विशेष यह है कि वहाँ इषुकार पर्वत नही है।

158. In *Samayakshetra* (area of human habitation or Adhai Dveep) there are five Bharat and five Airavat areas In the same way all description of all things mentioned in the second lesson of the fourth Sthaan should be read here and so on up to There are five Mandar and five Mandar Chulikas in *Samayakshetra* The only difference being that there is no Ikshukar mountain here

अवगाहना–पद **AVAGAHANA-PAD (SEGMENT OF HEIGHT)**

१५९. उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। १६०. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। १६१. बाहुबली णं अणगारे [पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था]। १६२. बंभी णं अज्जा [पंच धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था]। १६३. [सुंदरी णं अज्जा पंच धणुसताइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था]।

१५९. कौशलिक (कोशल देश मे उत्पन्न हुए) अर्हन्त ऋषभदेव पाँच सौ धनुष (चार हाथ का एक धनुष) ऊँचे थे। १६०. चातुरन्त चक्रवर्ती भरत राजा पचम सौ धनुष ऊँचे थे। १६१. अनगार बाहुबली पाँच सौ धनुष ऊँचे थे। १६२. आर्या ब्राह्मी पाँच सौ धनुष ऊँची थी। १६३. आर्या सुन्दरी पाँच सौ धनुष ऊँची थी।

159. Kaushalik (born in Kaushal country) Arhant Risabhadeva was five hundred *Dhanush* tall (one *Dhanush* is four cubits) **160.** Chaturant Chakravarti King Bharat was five hundred *Dhanush* tall **161.** Anagar Bahubali was five hundred *Dhanush* tall **162.** Arya Brahmi was five hundred *Dhanush* tall **163.** Arya Sundari was five hundred *Dhanush* tall

विबोध–पद **VIBODH-PAD (SEGMENT OF AWAKENING)**

१६४. पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते विबुज्झेज्जा, तं जहा–सद्देणं, फासेणं, भोयणपरिणामेणं, णिद्दक्खएणं, सुविणदंसणेणं।

१६४. पाँच कारणो से सोता हुआ मनुष्य जाग जाता है–(१) **शब्द से**–आवाज को सुनकर। (२) **स्पर्श से**–स्पर्श होने पर। (३) **भोजन परिणाम से**–भूख लगने से। (४) **निद्राक्षय से**–पूरी नीद सो लेने से। (५) **स्वप्नदर्शन से**–स्वप्न देखने से।

164. For five reasons a sleeping person gets awake—(1) by *shabd*—by hearing sound, (2) by *sparsh*—by touch, (3) by *bhojan parinam*—on being hungry, (4) by *nidrakshaya*—on conclusion of sleep and (5) by *svapnadarshan*—on seeing a dream

१६५. पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति, तं जहा–

(१) णिग्गंथिं च णं अण्णयरे पसुजातिए वा पक्खिजातिए वा ओहातेज्जा, तत्थ णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति। (२) णिग्गंथे णिग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति। (३) णिग्गंथे णिग्गंथिं सेयंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदगंसि वा उक्कसमाणिं वा उबुज्झमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति। (४) णिग्गंथे णिग्गंथिं णावं आरुभमाणे वा ओरोहमाणे वा णातिक्कमति। (५) खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं जाव भत्तपाणपडियाइक्खियं अट्ठजायं वा णिग्गंथे णिग्गंथिं गेण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति।

१६५. पाँच कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ, निर्ग्रन्थी को पकडता हुआ, अवलम्बन देता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण (उल्लघन) नही करता है।

(१) कोई पशुजाति या पक्षीजाति का प्राणी निर्ग्रन्थी को मारने के लिए आक्रमण करे तो वहाँ निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थी को पकडता है। या अवलम्बन (हाथ का सहारा) देता है तो (२) दुर्गम या विषम स्थान मे फिसलती हुई या गिरती हुई निर्ग्रन्थी को ग्रहण करता है या अवलम्बन देता है, तो (३) दल–दल मे या कीचड मे, या काई मे, या जल मे फॅसी हुई, या बहती हुई निर्ग्रन्थी को निर्ग्रन्थ ग्रहण करता है या अवलम्बन देता है, तो (४) निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थी को नाव मे चढाता हुआ या उतारता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। (५) क्षिप्तचित्त या दृप्तचित्त या यक्षाविष्ट या उन्माद प्राप्त या उपसर्ग प्राप्त, या कलह–रत या प्रायश्चित्त से डरी हुई, या **भक्त–पान–प्रत्याख्यात,** (उपवासी) या **अर्थजात** (पति या किसी अन्य द्वारा सयम से च्युत की जाती हुई) निर्ग्रन्थी को ग्रहण करता या अवलम्बन देता है तो, निर्ग्रन्थ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है।

165. A *Shraman Nirgranth* (male ascetic) does not defy the word of *Bhagavan* if he holds (*grahan*) and lends support to (*avalamban*) a *nirgranthi* (female ascetic)—

(1) If a *nirgranth* holds or supports a *nirgranthi* when she is attacked by an animal or a bird (2) If a *nirgranth* holds or supports a *nirgranthi* when she slips or falls while crossing a difficult or rugged terrain (3) If a *nirgranth* holds or supports a *nirgranthi* when she is caught in a swamp or mud or is drowning in water (4) If a *nirgranth* holds or supports a *nirgranthi* in order to help her board or disembark a boat (5) If a nirgranth holds or supports a *nirgranthi* when she is *kshipt-chitt* (crazy), *dript-chitt* (euphoric), *yakshavisht* (possessed by spirit), *unmaad prapt* (mad), *upasarg prapt* (tormented by affliction), *sadhikarana* (quarreling), *saprayashchit* (apprehensive of atonement), *bhakt-paan-pratyakhyan* (fasting), or *arthajat* (being forced or seduced into

compromising her modesty) Under these conditions he does not defy the word of *Bhagavan*.

विवेचन—यद्यपि निर्ग्रन्थ को निर्ग्रन्थी का स्पर्श करने का सर्वथा निषेध है, तथापि जिन परिस्थिति-विशेष मे वह निर्ग्रन्थी का हाथ आदि पकड कर उसको सहारा दे सकता है या उसकी और उसके सयम की रक्षा कर सकता है, तदनुसार कार्य करते हुए वह जिन–आज्ञा का उल्लघन नही करता है।

निर्ग्रन्थी को सर्वाङ्ग से पकडना **ग्रहण** और हाथ से पकड कर सहारा देना **अवलम्बन** कहलाता है।

जहाँ कठिनाई से जाया जा सके ऐसे दुर्गम प्रदेश को दुर्ग कहते है। पैर का फिसलना, या फिसलते हुए भूमि पर हाथ–घुटने टेकना **प्रस्खलन** है और भूमि पर धडाम से गिर पडना **प्रपतन** है।

क्षिप्तचित्त आदि का अर्थ इस प्रकार है- (१) **क्षिप्तचित्त**—राग, भय या अपमानादि से जिसका चित्त विक्षिप्त हो। (२) **दृप्तचित्त**—सन्मान, लाभ, ऐश्वर्य आदि मद से या दुर्जय शत्रु को जीतने से जिसका चित्त दर्प को प्राप्त हो। (३) **यक्षाविष्ट**—पूर्वभव के वैर से, या रागादि से यक्ष के द्वारा आक्रात हुई। (४) **उन्मादप्राप्त**—पित्त -विकार से उन्मत्त या पागल (देव प्रकोप से अथवा रूप आदि के मोह वश)। (५) **उपसर्गप्राप्त**—देव, मनुष्य या तिर्यच कृत उपद्रव से पीडित। (६) **साधिकरणा**—कलह करती हुई या लडने के लिए उद्यत। (७) **सप्रायश्चित्त**—प्रायश्चित्त के भय से पीडित या डरी हुई। (८) **भक्त–पान–प्रत्याख्यात**—जीवन भर के लिए अशन–पान का त्याग करने से दुर्बल हुई मार्ग मे कही गिरती हो, मूर्च्छा आ गई हो तो। (९) **अर्थजात**—अर्थ-(प्रयोजन-) विशेष से, अथवा धनादि के लिए पति या चोर आदि के द्वारा सयम से चलायमान की जाती हुई।

उपर्युक्त सभी दशाओ मे निर्ग्रन्थी की रक्षार्थ निर्ग्रन्थ उसे ग्रहण या अवलम्बन देते हुए जिन आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। *(वृत्ति भाग २ पृष्ठ ५६२-६३)*

Elaboration—A male ascetic is not at all allowed to touch a female ascetic However, he can hold her hand and offer support or protect her and her modesty under special circumstances He does not defy the word of *Tirthankar* if he acts strictly according to the said code

To hold the body of a female ascetic is called *grahan* and to support her by holding her hand is called *alamban*

A difficult or rugged terrain is called *durg* Slipping of feet or to touch knees or hands to the ground on slipping is called *praskhalan* To fall on the ground is *prapatan*

Other terms are explained as follows—

Kshipt-chitt—gone crazy due to attachment, fear, insult or other such sentiment *Dript-chitt*—euphoric due to conceit of honour, gains, grandeur, or conquering a strong enemy *Yakshavisht*—possessed or afflicted by *yaksha* or other spirits due to animosity or attachment from earlier births *Unmaad prapt*—mentally deranged due to disturbed body

humours or excessive attachment or evil spirits *Upasarg prapt*—tormented by divine, human or animal affliction *Sadhikarana*—ready to quarrel or quarreling *Saprayashchit*—apprehensive of atonement *Bhakt-paan-pratyakhyan*—stumbling or falling or losing consciousness due to weakness caused by observing ultimate vow or fasting otherwise *Arthajat*—being forced or seduced into compromising her modesty by her husband or other person for some specific reason or otherwise *(Vritti, part-2, p 562-63)*

आचार्य–उपाध्याय–अतिशेष–पद ACHARYA UPADHYAYA ATISHESH-PAD (SEGMENT OF SPECIAL PRIVILEGE OF ACHARYA AND UPADHYAYA)

१६६. आयरिय–उवज्झायस्स णं गणंसि पंच अतिसेसा पण्णत्ता, तं जहा–

(१) आयरिय–उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स पाए णिगज्झिय–णिगज्झिय पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति। (२) आयरिय–उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति। (३) आयरिय–उवज्झाए पभू, इच्छा वेयावडियं करेज्जा, इच्छा णो करेज्जा। (४) आयरिय–उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा एगओ वसमाणे णातिक्कमति। (५) आयरिय–उवज्झाए बाहिं उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा [एगओ] वसमाणे णातिक्कमति।

१६६. गण मे आचार्य और उपाध्याय के पॉच अतिशेष (अतिशय, विशेष विधियाँ) है

(१) आचार्य और उपाध्याय (बाहर से आकर) उपाश्रय के भीतर प्रवेश करने पर पैरो की धूलि को सावधानी से झाडते हुए या फटकारते हुए। (२) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के भीतर उच्चार (मल) और प्रस्रवण (मूत्र) का व्युत्सर्ग और विशोधन (अशुचि की शुद्धि) करते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है। (३) आचार्य और उपाध्याय की इच्छा हो तो वे दूसरे साधु की वैयावृत्त्य करे, इच्छा न हो तो न करे, इसके लिए प्रभु (स्वतन्त्र) है। (४) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के भीतर एक रात्रि या दो रात्रि अकेले रहते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते। (५) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के बाहर एक रात्रि या दो या रात्रि अकेले रहते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है।

166. In a *gana* (group of ascetics) *acharya* and *upadhyaya* have five *atishesh* (special privilege)—

(1) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they carefully dust their feet while entering an *upashraya* (place of stay) (2) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they pass their stool or urine or cleanse it themselves within the *upashraya* (3) *Acharya* and *upadhyaya* are free of the responsibility of serving other ascetics, they may do or not do as they desire (4) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they live alone in the *upashraya* for

one or two nights (5) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they live alone out side the *upashraya* for one or two nights

विवेचन—इन पाँच अतिशेषो के सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन व्यवहारभाष्य उद्देशक ६ गाथा १२३--२२७ मे प्राप्त है। हिन्दी टीका भाग २ पृष्ठ १६६, तथा ठाण पृष्ठ ६३८ पर भी विस्तार के साथ वर्णन है।

Elaboration—Detailed description about these five privileges is available in *Vyavahar Bhashya* 6/123-227 and also in *Hindi Tika*, part-2 p 166 as well as *Thanam*, p 638

आचार्य–उपाध्याय–गणापक्रमण–पद ACHARYA UPADHYAYA GANAPAKRAMAN-PAD (SEGMENT OF ACHARYA AND UPADHYAYA LEAVING THE GROUP)

१६७. पंचहिं ठाणेहिं आयरिय–उवज्झायस्स गणावक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा–

(१) आयरिय–उवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा णो सम्मं पउंजित्ता भवति। (२) आयरिय–उवज्झाए गणंसि आधारायणियाए कितिकम्मं वेणइयं णो सम्मं पउंजित्ता भवति। (३) आयरिय–उवज्झाए गणंसि जे सुयपज्जवजाते धारेति, ते काले–काले णो सम्ममणुपवादेत्ता भवति। (४) आयरिय–उवज्झाए गणंसि सगणियाए वा परगणियाए वा णिग्गंथीए बहिल्लेसे भवति। (५) मित्ते णातिगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा, तेसिं संगहोवग्गहट्ठायए गणावक्कमणे पण्णत्ते।

१६७. पाँच कारणो से आचार्य और उपाध्याय **गणापक्रमण**–गण से बाहर निर्गमन करते है।

(१) यदि आचार्य या उपाध्याय गण मे आज्ञा या धारणा का सम्यक् प्रयोग न कर सके। (२) यदि आचार्य और उपाध्याय गण मे यथारात्निक कृतिकर्म (बडो का वन्दन और विनयादिक) का सम्यक् प्रयोग न कर सके। (३) यदि आचार्य और उपाध्याय जिन श्रुत-पर्यायो को धारण करते है, समय-समय पर उनकी गण को सम्यक् वाचना न दे सके। (४) यदि आचार्य या उपाध्याय अपने गण की, या पर-गण की निर्ग्रन्थी में **बहिर्लेश्य** (आसक्त) हो जावे। (५) आचार्य या उपाध्याय के मित्र ज्ञातिजन (कुटुम्बी आदि) गण से चले जाये तो उन्हे पुन गण मे सग्रह करने या उपग्रह करने के लिए गण से अपक्रमण कर सकते है।

167. For five reasons *acharya* and *upadhyaya* leave their group (*ganapakraman*)—

(1) If an *acharya* or *upadhyaya* fails to properly assert his command (*ajna* and *dharana*) (2) If an *acharya* or *upadhyaya* fails to properly follow *yatharatnik kritikarma* (codes of protocol and conduct) (3) If an *acharya* or *upadhyaya* fails to properly recite and teach the *sutra paryavajat* (meaning and interpretations of *sutras*) he has mastered (4) If an *acharya* or *upadhyaya* gets infatuated with a female ascetic of his own or other group (5) If the friends and relatives of an *acharya* or *upadhyaya* leave his group, then for the purpose of bringing them back to the fold

विवेचन—आचार्य और उपाध्याय गण के प्रधान होते है। सघ या गण का सम्यक् प्रकार से सचालन करना उनका कर्त्तव्य है। किन्तु जब वे यह अनुभव करते है कि गण मे मेरी आज्ञा या धारणा की अवहेलना हो रही है, तो वे गण छोडकर चले जाते है।

दूसरा कारण वन्दन और विनय का सम्यक् प्रयोग न कर सकना है। यद्यपि आचार्य और उपाध्याय का गण मे सर्वोपरि स्थान है, तथापि प्रतिक्रमण और क्षमा-याचना के समय दीक्षा-पर्याय मे ज्येष्ठ और श्रुत के विशिष्ट ज्ञाता साधुओ का विशेष सम्मान करना चाहिए। यदि वे अपने पद के अभिमान से वैसा नही करते है, तो गण मे असन्तोष या विग्रह खडा हो जाता है, ऐसी दशा मे वे गण छोडकर चले जाते है।

तीसरा कारण गणस्थ साधुओ को, स्वय जानते हुए भी यथासमय सूत्र या अर्थ या उभय की वाचना न देना है। इससे गण मे क्षोभ उत्पन्न हो जाता है और आचार्य या उपाध्याय पर पक्षपात का दोषारोपण होने लगता है। ऐसी दशा मे उन्हे गण से चले जाने का विधान किया गया है।

चौथा कारण सघ की निन्दा होने या प्रतिष्ठा गिरने का है, अत उनका स्वय ही गण से बाहर चले जाना उचित माना गया है।

पाँचवाँ कारण मित्र या ज्ञातिजन के गण से चले जाने पर पुन सयम मे स्थिर करने या गण मे वापिस लाने के लिए गण से बाहर जाने का विधान किया गया है।

सबका साराश यही है कि जैसा करने से गण या सघ की प्रतिष्ठा, मर्यादा और प्रख्याति बनी रहे और अप्रतिष्ठा, अमर्यादा और अपकीर्ति का अवसर न आवे, वही कार्य करना आचार्य और उपाध्याय का कर्त्तव्य है। *(विस्तार से वर्णन देखे हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ १७० तथा ७१, ठाण पृष्ठ ६४१)*

Elaboration—*Acharya* and *upadhyaya* are heads of the *gana* (group). It is their duty to direct and manage the organization properly But when they feel that their orders or instructions are not being followed they are supposed to leave the group and go away

The second reason is inability to follow the codes of protocol Although *acharya* or *upadhyaya* command the highest status in the group they should offer due respect to the seniors in initiation as well as accomplished scholars of scriptures, specially at the time of *pratikraman* (critical review) and *kshama yachana* (begging pardon) If they fail to do so due to the ego of their status there are chances of dissatisfaction and revolt in the group Under such conditions they are supposed to leave the group

The third reason is not to teach or give timely recitation (*vaachana*) of text and meaning of scriptures to all disciples in spite of knowing the same This breeds dissatisfaction and they are blamed of favouritism Under such conditions they are supposed to leave the group

The fourth reason leads to criticism of the *sangh* or tarnishing its prestige Therefore, it is better that the involved *acharya* or *upadhyaya* himself leaves the group

The fifth reason is included for the cause of avoiding the depletion of the group If some friend or relative abandons the group the head is allowed to leave in order to bring them back into the fold

The central theme is that the duty of an *acharya* or *upadhyaya* is to ensure that the prestige, discipline and fame of the group or *sangh* remains intact It is his duty to perform acts that avoid the chances of tarnishing these three *(for detailed discussion refer to Hindi Tika, part-2, pp 170-71 and Thanam p 641)*

ऋद्धिमत्–पद RIDDHIMAT-PAD (SEGMENT OF THE ENDOWED)

१६८. पंचविहा इड्ढिमंता मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा–अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, भावियप्पाणो अणगारा।

१६८. ऋद्धिमान् मनुष्य पाँच प्रकार के होते है-(१) अर्हन्त, (२) चक्रवर्ती, (३) बलदेव, (४) वासुदेव, (५) भावितात्मा अनगार।

168. *Riddhiman manushya* (endowed persons) are of five kinds—(1) *Arhant*, (2) *Chakravarti*, (3) *Baladeva*, (4) *Vasudeva* and (5) *bhaavitatma anagar* (pure-hearted ascetic)

विवेचन–वैभव, ऐश्वर्य और सम्पदा को ऋद्धि कहते है। अर्हन्तो की ऋद्धि पूर्वभवोपार्जित और वर्तमानभव मे घातिकर्मक्षयोपार्जित होती है। मध्यवर्ती तीन महापुरुषो की ऋद्धि पूर्वभव के पुण्य से उपार्जित होती है। तप, सयम व शुभ भावनाओ से जिनकी आत्मा निर्मल हो चुकी है, वे **भावितात्मा** होते है। भावितात्मा अनगार की ऋद्धियाँ वर्तमान भव की तपस्या-विशेष से योग विभूतिजन्य होती है। जो कि बुद्धि, क्रिया, विक्रिया आदि के भेद से अनेक प्रकार की बतलाई गई है। २८ प्रकार की ऋद्धियो का वर्णन वृत्तिकार ने किया है। स्थान ६ सूत्र २१ पर छह प्रकार के ऋद्धिमान् बताये है। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५६५-६६)*

Elaboration—*Riddhi* is grandeur, majesty and wealth Those endowed with these are called *riddhiman Arihants* are endowed with these due to *karmas* acquired in the past birth and shedding of vitiating *karmas* during this birth The three middle persons are endowed due to the meritorious *karmas* from the past birth *Bhaavitatmas* are those who have purified their soul through austerities, discipline and pious attitude The pure-hearted ascetics are endowed due to their austerities and association with spiritual endeavour These *riddhis* are of many kinds based on wisdom, action, transformation, etc The commentator (*Vritti*) has mentioned twenty eight kinds of *riddhis* *(Vritti, part-2, pp 565-66)*

॥ पचम स्थान का द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

● END OF THE SECOND LESSON ●

पंचम स्थान : तृतीय उद्देशक
FIFTH STHAAN (Place Number Five) : THIRD LESSON

अस्तिकाय-पद ASTIKAYA-PAD (SEGMENT OF AGGLOMERATIVE ENTITY)

धर्मास्तिकाय DHARMASTIKAYA

१६९. पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए।

१६९. अस्तिकाय पॉच है-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) जीवास्तिकाय, (५) पुद्गलास्तिकाय।

169. There are five *astikayas* (agglomerative entities)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) *Jivastikaya* (soul entity) and (5) *Pudgalastikaya* (matter entity)

१७०. धम्मत्थिकाए अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे। से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।

दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं। खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते। कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे। भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। गुणओ गमणगुणे।

१७०. धर्मास्तिकाय वर्ण रहित, गन्ध रहित, रस रहित, स्पर्श रहित, अरूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित और लोक का अशभूत द्रव्य है। वह सक्षेप मे है-(१) द्रव्य, (२) क्षेत्र, (३) काल, (४) भाव और (५) गुण की अपेक्षा पाँच प्रकार का है।

(१) **द्रव्य की अपेक्षा**—धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है। (२) **क्षेत्र की अपेक्षा**—लोकप्रमाण है। (३) **काल की अपेक्षा**—कभी नही था, ऐसा नही है, कभी नही है, ऐसा नही है, कभी नही होगा, ऐसा नही है। वह भूतकाल मे था, वर्तमान मे है और भविष्य मे रहेगा। अत वह ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है। (४) **भाव की अपेक्षा**—वर्ण, गध, रस और स्पर्श रहित है। (५) **गुण की अपेक्षा**—गमनगुण वाला है अर्थात् धर्मास्तिकाय स्वय गमन करते हुए जीवो और पुद्गलो के गमन करने मे सहायक है।

170. *Dharmastikaya* is an entity (*dravya*) that is *varna rahit* (devoid of appearance or colour), *gandh rahit* (devoid of smell), *rasa rahit* (devoid of taste), *sparsh rahit* (devoid of touch), *arupi* (formless), *ajiva* (lifeless),

shashvat (eternal), *avasthit* (indestructible) and integral part of *lok* (occupied space or universe) Briefly speaking, it has five attributes in context of—(1) *dravya* (entity), (2) *kshetra* (space or area), (3) *kaal* (time), (4) *bhaava* (state) and (5) *guna* (properties)

In context of—(1) *Dravya* (entity)—*Dharmastikaya* is one entity (2) *Kshetra* (space or area)—it pervades the whole *lok* (3) *Kaal* (time)—it is not that it never existed, it is not that it does not exist, it is not that it will never exist It existed in the past, it exists in the present and it will continue to exist in the future Therefore it is *dhruva* (constant), *niyat* (fixed), *shashvat* (eternal), *akshaya* (imperishable), *avyaya* (non-expendable), *avasthit* (steady), and *nitya* (perpetual) (4) *Bhaava* (state)—it is devoid of colour, smell, taste and touch (5) *Guna* (properties)—it has the property of motion In other words it moves and passively helps beings and matter to move

विवेचन—विशेष शब्दो का अर्थ—अस्तिकाय—(अनेक प्रदेशो का समूह एक द्रव्य) **ध्रुव—**तीनो काल मे विद्यमान। **नियत—**सदा समान रहने वाला। **शाश्वत—**सदा रहने वाला। **अक्षय—**कभी क्षय नही होने वाला। **अव्यय—**कभी विनष्ट नही होने वाला। **अवस्थित—**उत्पाद—व्यय होने पर भी स्वरूप मे स्थित है। **नित्य—**उक्त गुणो से सम्पन्न है।

Elaboration—The English terms in parenthesis are self explanatory

अधर्मास्तिकाय ADHARMASTIKAYA

१७१. अधम्मत्थिकाए अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे। से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।

दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगं दव्वं। खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते। कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति या भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे। भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। गुणओ ठाणगुणे।

१७१. अधर्मास्तिकाय वर्ण रहित, गन्ध रहित, रस रहित, स्पर्श रहित, अरूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित और लोक का अशभूत द्रव्य है। वह सक्षेप मे (१) द्रव्य, (२) क्षेत्र, (३) काल, (४) भाव और (५) गुण की अपेक्षा पाँच प्रकार का है—

(१) द्रव्य की अपेक्षा—अधर्मास्तिकाय एक द्रव्य है। (२) क्षेत्र की अपेक्षा—लोकप्रमाण है। (३) काल की अपेक्षा—अधर्मास्तिकाय कभी नही था, ऐसा नही है, कभी नही है, ऐसा नही है, कभी नही होगा, ऐसा नही है। वह भूतकाल मे था, वर्तमान मे है और भविष्य मे रहेगा। अत वह ध्रुव, नियत, शाश्वत, अव्यय, अवस्थित और नित्य है। (४) भाव की अपेक्षा—अवर्ण, अगन्ध, अरस और अस्पर्श है।

(५) गुण की अपेक्षा-अवस्थान गुणवाला है। अर्थात् अधर्मास्तिकाय स्वय ठहरने वाले जीव और पुद्गलो के ठहरने मे सहायक है।

171. *Adharmastıkaya* ıs an entıty (*dravya*) that ıs *varna rahıt* (devoıd of appearance or colour), *gandh rahıt* (devoıd of smell), *rasa rahıt* (devoıd of taste), *sparsh rahıt* (devoıd of touch), *arupı* (formless), *ajıva* (lıfeless), *shashvat* (eternal), *avasthıt* (ındestructıble) and ıntegral part of *lok* (occupıed space or unıverse) Brıefly speakıng, ıt has five attrıbutes ın context of—(1) *dravya* (entıty), (2) *kshetra* (space or area), (3) *kaal* (tıme), (4) *bhaava* (state) and (5) *guna* (propertıes)

In context of—(1) *Dravya* (entıty)—*Adharmastıkaya* ıs one entıty (2) *Kshetra* (space or area)—ıt pervades the whole *lok* (3) *Kaal* (tıme)—ıt ıs not that ıt never exısted, ıt ıs not that ıt does not exıst, ıt ıs not that it wıll never exıst It exısted ın the past, ıt exısts ın the present and ıt wıll contınue to exıst ın the future Therefore ıt ıs *dhruva* (constant), *nıyat* (fixed), *shashvat* (eternal), *akshaya* (ımperıshable), *avyaya* (non-expendable), *avasthıt* (steady), and *nıtya* (perpetual) (4) *Bhaava* (state)—ıt ıs devoıd of colour, smell, taste and touch (5) *Guna* (propertıes)—ıt has the property of ınertıa In other words ıt rests and passıvely helps beıngs and matter to come to rest

आकाशास्तिकाय **AAKASHASTIKAYA**

१७२. आगासत्थिकाए अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगालोगदव्वे। से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।

दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगं दव्वं। खेत्तओ लोगालोगपमाणमेत्ते। कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे। भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। गुणओ अवगाहणागुणे।

१७२. आकाशास्तिकाय वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श रहित, अरूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित और लोकालोक रूप द्रव्य है। सक्षेप मे वह-(१) द्रव्य, (२) क्षेत्र, (३) काल, (४) भाव और (५) गुण की अपेक्षा पाँच प्रकार का है-

(१) द्रव्य की अपेक्षा-आकाशास्तिकाय एक द्रव्य है। (२) क्षेत्र की अपेक्षा लोक-अलोक प्रमाण सर्वत्र विद्यमान है। (३) काल की अपेक्षा कभी नही था, ऐसा नही है, कभी नही है, ऐसा नही है, कभी नही होगा, ऐसा नही है। वह भूतकाल मे था, वर्तमान मे है और भविष्य मे रहेगा। अत वह ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है। (४) भाव की अपेक्षा अवर्ण, अगन्ध, अरस और अस्पर्श है। (५) गुण की अपेक्षा-आकाशास्तिकाय अवगाहन (अवकाश देना) गुण वाला है।

172. *Aakashastikaya* is an entity (*dravya*) that is *varna rahit* (devoid of appearance or colour), *gandh rahit* (devoid of smell), *rasa rahit* (devoid of taste), *sparsh rahit* (devoid of touch), *arupi* (formless), *ajiva* (lifeless), *shashvat* (eternal), *avasthit* (indestructible) and integral part of *lok* and *alok* (occupied and unoccupied space or universe and space) Briefly speaking, it has five attributes in context of—(1) *dravya* (entity), (2) *kshetra* (space or area), (3) *kaal* (time), (4) *bhaava* (state) and (5) *guna* (properties)

In context of—(1) *Dravya* (entity)—*Aakashastikaya* is one entity (2) *Kshetra* (space or area)—it pervades the whole *lok* and *alok* (3) *Kaal* (time)—it is not that it never existed, it is not that it does not exist, it is not that it will never exist It existed in the past, it exists in the present and it will continue to exist in the future Therefore it is *dhruva* (constant), *niyat* (fixed), *shashvat* (eternal), *akshaya* (imperishable), *avyaya* (non-expendable), *avasthit* (steady), and *nitya* (perpetual) (4) *Bhaava* (state)—it is devoid of colour, smell, taste and touch (5) *Guna* (properties)—it has the property of *avagahana* (occupation) In other words it provides space-occupation

जीवास्तिकाय JIVASTIKAYA

१७३. जीवत्थिकाए णं अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी जीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे। से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा–दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।

दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं। खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते। कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति–भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे। भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे। गुणओ उवओगगुणे।

१७३. जीवास्तिकाय अवर्ण, अगन्ध, अरस, अस्पर्श, जीव, शाश्वत, अवस्थित और लोक का एक अशभूत द्रव्य है। सक्षेप से वह–(१) द्रव्य, (२) क्षेत्र, (३) काल, (४) भाव और (५) गुण की अपेक्षा पाँच प्रकार का है–

(१) द्रव्य की अपेक्षा–जीवास्तिकाय अनन्त द्रव्य है। (२) क्षेत्र की अपेक्षा लोकप्रमाण है, अर्थात् लोकाकाश के असख्यात प्रदेशो के बराबर प्रदेशो वाला है। (३) काल की अपेक्षा कभी नहीं था, ऐसा नही है, कभी नही है, ऐसा नही है, कभी नही होगा, ऐसा नही है। वह भूतकाल मे था, वर्तमानकाल मे है और भविष्यकाल मे रहेगा। अत वह ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षत, अव्यय, अवस्थित और नित्य है। (४) भाव की अपेक्षा अवर्ण, अगन्ध, अरस और अस्पर्श है। (५) गुण की अपेक्षा–जीवास्तिकाय उपयोग गुणवाला है।

173. *Jivastikaya* is an entity (*dravya*) that is *varna rahit* (devoid of appearance or colour), *gandh rahit* (devoid of smell), *rasa rahit* (devoid of taste), *sparsh rahit* (devoid of touch), *arupi* (formless), *ajiva* (lifeless), *shashvat* (eternal), *avasthit* (indestructible) and integral part of *lok* (occupied space or universe) Briefly speaking, it has five attributes in context of—(1) *dravya* (entity), (2) *kshetra* (space or area), (3) *kaal* (time), (4) *bhaava* (state) and (5) *guna* (properties)

In context of—(1) *Dravya* (entity)—*Jivastikaya* is infinite entities (2) *Kshetra* (space or area)—it pervades the whole *lok* In other words, like lok it has innumerable space-points (3) *Kaal* (time)—it is not that it never existed, it is not that it does not exist, it is not that it will never exist It existed in the past, it exists in the present and it will continue to exist in the future Therefore it is *dhruva* (constant), *niyat* (fixed), *shashvat* (eternal), *akshaya* (imperishable), *avyaya* (non-expendable), *avasthit* (steady), and *nitya* (perpetual) (4) *Bhaava* (state)—it is devoid of colour, smell, taste and touch (5) *Guna* (properties)—it has the property of *upayog* (intent or sentience)

पुद्गलास्तिकाय PUDGALASTIKAYA

१७४. पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासते अवट्ठिते लोगदव्वे। से समासओ पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं। खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते। कालओ ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइत्ति—भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिइए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे। भावओ वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते। गुणओ गहणगुणे।

१७४. पुद्गलास्तिकाय पच वर्ण, पच रस, दो गन्ध, आठ स्पर्श वाला, रूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित और लोक का एक अशभूत द्रव्य है। सक्षेप से वह—(१) द्रव्य, (२) क्षेत्र, (३) काल, (४) भाव और (५) गुण की अपेक्षा पाँच प्रकार का है—

(१) द्रव्य की अपेक्षा—अनन्त द्रव्य है। (२) क्षेत्र की अपेक्षा—लोकप्रमाण है, अर्थात् लोक मे ही पुद्गल रहता है। (३) काल की अपेक्षा कभी नही था, ऐसा नही है, कभी नही है, ऐसा भी नही है, कभी नही होगा, ऐसा भी नही है। वह भूतकाल मे था, वर्तमानकाल मे है और भविष्यकाल मे रहेगा। अत वह ध्रुव, निचित, शाश्वत, अक्षत, अव्यय, अवस्थित और नित्य है। (४) भाव की अपेक्षा वर्णवान्, गन्धमान्, रसवान् और स्पर्शवान् है। (५) गुण की अपेक्षा—ग्रहण गुणवाला है, अर्थात् औदारिक आदि शरीर रूप से और इन्द्रियो के द्वारा भी वह ग्रहण किया जाता है। अथवा पूरण, गलन—मिलने–बिछुडने का स्वभाव वाला है।

174. *Pudgalastikaya* is an entity (*dravya*) that has five *varnas* (colours), five *rasas* (tastes), two *gandh* (two smells), eight *sparsh* (touches), *rupi* (with form), *ajiva* (lifeless), *shashvat* (eternal), *avasthit* (indestructible) and integral part of *lok* (occupied space or universe) Briefly speaking, it has five attributes in context of—(1) *dravya* (entity), (2) *kshetra* (space or area), (3) *kaal* (time), (4) *bhaava* (state) and (5) *guna* (properties)

In context of—(1) *Dravya* (entity)—*Pudgalastikaya* is infinite in number (2) *Kshetra* (space or area)—it pervades the whole *lok* In other words, it is confined to *lok* (3) *Kaal* (time)—it is not that it never existed, it is not that it does not exist, it is not that it will never exist It existed in the past, it exists in the present and it will continue to exist in the future Therefore it is *dhruva* (constant), *niyat* (fixed), *shashvat* (eternal), *akshaya* (imperishable), *avyaya* (non-expendable), *avasthit* (steady), and *nitya* (perpetual) (4) *Bhaava* (state)—it is endowed with colour, smell, taste and touch (5) *Guna* (properties)—it has the property of *grahan* (being acquirable), in other words it is acquired by bodies including gross physical body and sense organs This also means it has the property of combining and separating or integrating and disintegrating

गति–पद **GATI-PAD (SEGMENT OF GENUSES)**

१७५. पंच गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–णिरयगती, तिरियगती, मणुयगती, देवगती, सिद्धिगती।

१७५. गतियाँ पाँच है (१) नरकगति, (२) तिर्यंचगति, (३) मनुष्यगति, (४) देवगति, (५) सिद्धगति।

175. There are five *gatis* (genuses)—(1) *narak gati* (genus of infernal beings), (2) *tiryanch gati* (animal genus), (3) *manushya gati* (genus of human beings), (4) *deva gati* (divine genus) and (5) *Siddha gati* (*Siddha* genus or status)

विवेचन–गति का सामान्य अर्थ है, गमन करना। किन्तु यहाँ पर गति शब्द का विशेष अर्थ है। गति पाँच प्रकार की होती है–(१) **जन्मान्तर गति**–एक भव से दूसरे भव मे जाना। (२) **देशान्तर गति**–एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। (३) **भवोपपात गति**– जीव ने जिस भव के योग्य कर्मों का बध किया है, कर्मों के उदय से अन्तिम क्षण तक उसी भव मे रहना। यह नरक आदि चार गति है। (४) **कर्मच्छेदन गति**–कर्मों का सर्वथा उच्छेद करके जीव की जो ऊर्ध्वगति होती है, जैसे सिद्धात्मा की गति। (५) **विहाय**

गति–आकाश मे चलने की क्रिया। प्रज्ञापना पद १६ मे इसके १७ भेद है प्रस्तुत सूत्र मे तीसरे, चौथे प्रकार की गति का सम्बन्ध है। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ १७८)*

Elaboration—The common meaning of gati is movement But here this term has a special meaning Gati is of five kinds—**(1) Janmantar gati**—to go from one birth to another or reincarnation **(2) Deshantar gati**—to go from one place to another **(3) Bhavopapat gati**—to remain in the specific genus, for which a being has acquired specific *karmas*, from the time of fruition of those *karmas* till the last moment of their duration This includes the four *gatis* including the infernal one **(4) Karmachchhedan gati**—the upward movement of a soul after it has shed all *karmas*. This means *Siddha gati* **(5) Vihaya gati**—to move in the space *Prajnapana Sutra* mentions seventeen kinds of this *gati* in verse 16 Here it relates to the third and fourth kind

इन्द्रियार्थ–पद **INDRIYARTH-PAD (SEGMENT OF SUBJECTS OF SENSE ORGANS)**

१७६. पंच इंदियत्था पण्णत्ता, तं जहा–सोतिंदियत्थे, चक्खिंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे, फासिंदियत्थे।

१७६. इन्द्रियो के पाँच अर्थ (विषय) है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय का विषय शब्द, (२) चक्षुरिन्द्रिय का रूप, (३) घ्राणेन्द्रिय का गन्ध, (४) रसनेन्द्रिय का रस, (५) स्पर्शनेन्द्रिय का स्पर्श।

176. *Indriyas* (sense organs) have five *arth* (subjects)—(1) the subject of *shrotrendriya* (ear) is sound, (2) the subject of *chakshu-indriya* (eyes) is appearance, (3) the subject of *ghranendriya* (nose) is smell, (4) the subject of *rasanendriya* (taste-buds) is taste, and (5) the subject of *sparshanendriya* (touch) is touch

मुंड–पद **MUND-PAD (SEGMENT OF VICTORS)**

१७७. पंच मुंडा पण्णत्ता, तं जहा–सोतिंदियमुंडे, चक्खिंदियमुंडे, घाणिंदियमुंडे, जिब्भिंदियमुंडे, फासिंदियमुंडे।

अहवा–पंच मुंडा पण्णत्ता, तं जहा–कोहमुंडे, माणमुंडे, मायामुंडे, लोभमुंडे, सिरमुंडे।

१७७. मुण्ड–(इन्द्रियविषय-विजेता या इन्द्रिय निग्रह करने वाले) अथवा इन्द्रियो के शुभ-अशुभ विषय में समवृत्ति रखने वाले। पाँच प्रकार के है–(१) श्रोत्रेन्द्रियमुण्ड, (२) चक्षुरिन्द्रियमुण्ड, (३) घ्राणेन्द्रियमुण्ड, (४) रसनेन्द्रियमुण्ड, (५) स्पर्शनेन्द्रियमुण्ड।

अथवा मुण्ड पाँच प्रकार के होते है-(१) क्रोधमुण्ड-क्रोध कषाय के विजेता। (२) मानमुण्ड-मान कषाय के विजेता। (३) मायामुण्ड-माया कषाय के विजेता। (४) लोभमुण्ड-लोभ कषाय के विजतो। (५) शिरोमुण्ड-सिर का मुण्डन करने वाला।

177. *Mund* (victors over indulgence of sense organs or who have control over sense organs or who are equanimous towards good and bad sensations) are of five kinds—(1) *shrotrendriyamund*, (2) *chakshurindriyamund*, (3) *ghranendriyamund*, (4) *rasanendriyamund*, and (5) *sparshanendriyamund*

Also mund are of five kinds—**(1) krodh-mund**—victors over anger, **(2) maan-mund**—victors over conceit, **(3) maya-mund**—victors over deceit, **(4) lobh-mund**—victors over greed and **(5) shiro-mund**—who has tonsured his head

बादर-पद BADAR-PAD (SEGMENT OF GROSS)

१७८. अहेलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा-पुढविकाइया, आउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, ओराला तसा पाणा। १७९. उड्ढलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा-[पुढविकाइया, आउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, ओराला तसा पाणा]। १८०. तिरियलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता, तं जहा-एगिंदिया, [बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया] पंचिंदिया।

१७८. अधोलोक मे पाँच प्रकार के बादर (स्थूल) जीव होते है-(१) पृथिवीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) वायुकायिक, (४) वनस्पतिकायिक, (५) उदार त्रस (द्वीन्द्रियादि) प्राणी। १७९. ऊर्ध्वलोक मे पाँच प्रकार के बादर जीव होते है-[(१) पृथिवीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) वायुकायिक, (४) वनस्पतिकायिक, (५) उदार त्रस प्राणी]। १८०. तिर्यक्लोक मे पॉच प्रकार के बादर जीव होते है-(१) एकेन्द्रिय, [(२) द्वीन्द्रिय, (३) त्रीन्द्रिय, (४) चतुरिन्द्रिय], (५) पचेन्द्रिय।

178. In *adholok* (lower world) there are five kinds of *badar jivas* (gross living beings)—(1) *Prithvikayiks* (earth-bodied beings), (2) *Apkayiks* (water-bodied beings), (3) *Vayukayiks* (air-bodied beings), (4) *Vanaspatikayiks* (plant-bodied beings) and (5) *Udaar tras pranis* (*dvindriya* etc or two-sensed beings etc) **179.** In *urdhvalok* (upper world) there are five kinds of *badar jivas* (gross living beings)—(1) *Prithvikayiks* (earth-bodied beings), (2) *Apkayiks* (water-bodied beings), (3) *Vayukayiks* (air-bodied beings), (4) *Vanaspatikayiks* (plant-bodied beings) and (5) *Udaar tras pranis* (*dvindriya* etc or two-sensed beings etc) **180.** In *Tiryaklok* (transverse or middle world) there are five kinds of *badar jivas* (gross living beings)—(1) *Ekendriya* (one-sensed beings), (2) *Dvindriya* (Two-sensed beings), (3) *Trindriya* (three-sensed

beings), (4) *Chaturindriya* (four-sensed beings) and (5) *Panchendriya-tiryagyonik* (five-sensed animal beings)

विवेचन—आगमो मे तेजस्काय और वायुकाय को भी त्रस कहा है। सूक्ष्म स्थावर जीव तो सम्पूर्ण लोक मे व्याप्त है, अत उनसे भिन्नता बताने के लिए यहाँ 'बादर जीव' शब्द प्रयुक्त हुआ है। बादर तेजस्काय केवल मनुष्य लोक मे ही होती है। अत ऊर्ध्वलोक, अधोलोक मे उसका निषेध सूचित करने के लिए यहाँ 'उदार' विशेषण दिया है। जिसका अर्थ है द्वीन्द्रियादि त्रस प्राणी। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५७४। हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ १७३)*

Elaboration—In *Agams* fire-bodied and air-bodied beings are also classified as mobile Minute immobile beings pervade the whole *lok*, therefore, in order to differentiate from them the term *badar jiva* or gross beings has been used Gross fire-bodied beings exist only in the area of humans Thus in order to negate their existence in upper and lower worlds the adjective *udaar* has been used It means two sensed and other mobile beings *(Vritti, part-2, p 574 and Hindi Tika, part-2, p 173)*

१८१. पंचविहा बायरतेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—इंगाले, जाले, मुम्मुरे, अच्ची, अलाते।

१८१. बादर-तेजस्कायिक जीव पाँच प्रकार के होते है-(१) **अंगार**—धधकता हुआ अग्निपिण्ड या कोयला, (२) **ज्वाला**—जलती हुई अग्नि की मूल से छिन्न शिखा। (३) **मुर्मुर**—भस्म (राख) मिश्रित अग्निकण चिनगारी। (४) **अर्चि**—जलते काष्ठ आदि से अविच्छिन्न ज्वाला, लपट। (५) **अलात**—जलती हुई लकडी।

181. *Badar tejaskayik jivas* (gross fire-bodied beings) are of five kinds—**(1) angaar**—glowing coal or fire ball, **(2) jvala**—tip of flame (away from the source), **(3) murmur**—sparks of fire in ash, **(4) archi**—flame (near the source) and **(5) alaat**—burning wood

१८२. पंचविधा बादरवाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—पाईणवाते, पडीणवाते, दाहिणवाते, उदीणवाते, विदिसवाते।

१८२. बादर-वायुकायिक जीव पाँच प्रकार के होते है-(१) **प्राचीनवात**—पूर्वदिशा का पवन। (२) **प्रतीचीन वात**—पश्चिम दिशा का पवन। (३) **दक्षिणवात**—दक्षिण दिशा का पवन। (४) **उत्तरवात**—उत्तरदिशा का पवन। (५) **विदिग्वात**—विदिशाओ ईशान आदि दिक् कोणो से चलने वाला वायु।

182. *Badar vayukayik jivas* (gross air-bodied beings) are of five kinds—**(1) prachinavaat**—wind flowing from the east, **(2) pratichinavaat**—wind flowing from the west, **(3) dakshinavaat**—wind flowing from the south, **(4) uttaravaat**—wind flowing from the north and **(5) vidigvaat**—wind flowing from the intermediate directions like *Ishaan* (north-east)

अचित्त–वायुकाय–पद ACHITTA-VAYUKAYA-PAD
(SEGMENT OF LIFELESS AIR-BODIED BEINGS)

१८३. पंचविधा अचित्ता वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–अक्कंते, धंते, पीलिए, सरीराणुगते, संमुच्छिमे।

१८३. अचित्त वायुकाय पाँच प्रकार का होता है–(१) **आक्रान्तवात**–भूमि पर जोर-जोर से पैर पटकने से उत्पन्न वायु। (२) **ध्मातवात**–धौकनी मशक आदि से उत्पन्न वायु। (३) **पीड़ितवात**–गीले वस्त्रादि से निचोडने से उत्पन्न वायु। (४) शरीरानुगतवात–शरीर से उच्छ्वास, अपान और उद्‌गारादि से निकलने वाली वायु। (५) **सम्मूर्च्छिमवात**–पखे आदि से उत्पन्न वायु।

183. *Achitta vayukayik jivas* (gross air-bodied beings) are of five kinds—**(1) akrant-vaat**—wind produced by thumping legs on the ground, **(2) dhmaat-vaat**—wind produced by bellows and other such instrument, **(3) pidit-vaat**—wind produced by squeezing wet things like cloth, **(4) shariranugat-vaat**—wind produced by body (breath, belch, break wind etc) and **(5) sammurchhim-vaat**—wind produced by fan etc

विवेचन–सूत्रोक्त पाँचो प्रकार की वायु उत्पत्तिकाल मे अचेतन होती है, किन्तु अचित्त वायु से सचित्त वायु की विराधना हो सकती है। **एते च पूर्वमचेतनास्तत सचेतना अपि भवन्तीति।** *(वृत्ति पत्र ३१९ ए)*

Elaboration—Aforesaid five kinds of air is lifeless when produced but it may harm the normal organism-infested air *(Vritti, leaf 319)*

निर्ग्रन्थ–पद NIRGRANTH-PAD (SEGMENT OF ASCETICS)

१८४. पंच णियंठा पण्णत्ता, तं जहा–पुलाए, बउसे, कुसीले, णियंटे, सिणाते।

१८४. निर्ग्रन्थ पाँच प्रकार के है–(१) **पुलाक**–नि सार धान्य कणो के समान जिसका चारित्र नि सार है (मूल गुणो मे भी दोष लगाने वाले निर्ग्रन्थ)। (२) **बकुश**–जिसके चारित्र मे स्थान-स्थान पर दाग लगे हो, (उत्तर गुणो मे दोष लगाने वाले निर्ग्रन्थ)। (३) **कुशील**–विषय या कषाय सेवन से जिसका चारित्र कुछ-कुछ मलिन हो गया हो। (४) **निर्ग्रन्थ**–मोहनीय कर्म का उपशम या क्षय करने वाले ग्यारहवे-बारहवे गुणस्थानवर्ती साधु। (५) **स्नातक**–चार घातिकर्मों का क्षय करके तेरहवे-चौदहवे गुणस्थानवर्ती जिन।

184. *Nirgranth* (ascetics) are of five kinds—**(1) Pulaak**—whose conduct is worthless like decayed grain (ascetics not properly observing even the basic codes of conduct) **(2) Bakush**—whose conduct has many faults (ascetics not properly observing the auxiliary codes of conduct) **(3) Kushila**—whose conduct has been tarnished by slight indulgence in comforts and passions **(4) Nirgranth**—the ascetics at the eleventh and twelfth *Gunasthaan* who have destroyed or pacified *Mohaniya karma*

(5) **Snatak**—the *Jina* at the thirteenth and fourteenth *Gunasthaan* who has destroyed the four vitiating *karmas*

१८५. पुलाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणपुलाए, दंसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए णामं पंचमे।

१८५. पुलाक निर्ग्रन्थ पाँच प्रकार के होते है–(१) **ज्ञानपुलाक**–स्खलित, मिलित आदि ज्ञान के अतिचारो का सेवन करने वाला। (२) **दर्शनपुलाक**–शका, काक्षा आदि सम्यक्त्व के अतिचारो का सेवन करने वाला। (३) **चारित्रपुलाक**–मूल गुणो और उत्तर-गुणो मे दोष लगाने वाला। (४) **लिगपुलाक**–शास्त्रोक्त उपकरणो से अधिक उपकरण रखने वाला अथवा जैनलिग से भिन्न लिग या वेष को बिना कारण धारण करने वाला। (५) **यथासूक्ष्मपुलाक**–प्रमादवश अकल्पनीय वस्तु को ग्रहण करने का मन मे विचार करने वाला।

185. *Pulaak nirgranth* are of five kinds—(1) **Jnana pulaak**—who indulges in transgression related to knowledge, such as *skhalit* (lowly) and *milit* (mixed) (2) **Darshan pulaak**—who indulges in transgression related to *samyaktva* (righteousness), such as indulging in *shanka* (doubt) and *kanksha* (desire) (3) **Chaaritra pulaak**—who commits faults in observation of basic and auxiliary codes of conduct (4) **Linga pulaak**—who keeps more ascetic-equipment than prescribed in scriptures or who uses garb other than that prescribed for a Jain ascetic (5) **Yathasukshma pulaak**—who, out of stupor, thinks of acquiring prohibited things

१८६. बउसे पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा–आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे, असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे णामं पंचमे।

१८६. बकुश निर्ग्रन्थ पाँच प्रकार के होते है -(१) **आभोगबकुश**–जान-बूझ कर शरीर की विभूषा करने वाला। (२) **अनाभोगबकुश**–अनजान मे शरीर की विभूषा करने वाला। (३) **सवृतबकुश**–लुक-छिप कर शरीर आदि की विभूषा करने वाला। (४) **असवृतबकुश**–प्रकट रूप से शरीर की विभूषा करने वाला। (५) **यथासूक्ष्मबकुश**–प्रकट या अप्रकट रूप से शरीर आदि की सूक्ष्म विभूषा करने वाला।

186. *Bakush nirgranth* are of five kinds—(1) **Abhoga bakush**—who takes special care of the body intentionally (2) **Anabhog bakush**—who takes special care of the body unintentionally. (3) **Samvrit bakush**—who takes special care of the body furtively (4) **Asamvrit bakush**—who takes special care of the body openly (5) **Yathasukshma bakush**—who takes special care of the body openly or furtively

१८७. कुसीले पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा–णाणकुसीले, दंसणकुसीले, चरित्तकुसीले, लिंगकुसीले, अहासुहुमकुसीले णामं पंचमे।

१८७. कुशील निर्ग्रन्थ पाँच प्रकार के होते है-(१) ज्ञानकुशील-काल, विनय, उपधान आदि ज्ञानाचार को नही पालने वाला। तथा क्रोधादि वश ज्ञान पढने व विद्याओ का प्रयोग करने वाला। (२) दर्शनकुशील-निष्काक्षित आदि दर्शनाचार को नही पालने वाला। (३) चारित्रकुशील-कौतुक, भूतिकर्म, निमित्त, मत्र आदि का प्रयोग करने वाला। (४) लिगकुशील-साधुवेष से आजीविका करने वाला। (५) यथासूक्ष्मकुशील-दूसरे के द्वारा अपने को तपस्वी, ज्ञानी कहे जाने पर हर्षित होने वाला।

187. *Kushila nirgranth* are of five kinds—**(1) Jnana kushila**—who does not follow the code of conduct related to knowledge, such as *kaal* (time), *vinaya* (modesty) and *upadhan* (studies) Also one who studies and uses special powers out of anger **(2) Darshan kushila**—who does not follow the code of conduct related to perception/faith, such as *nishkankshit* (undesired) **(3) Chaaritra kushila**—who indulges in prohibited invocations and rituals like *kautuk* (clown), *bhutikarma* (festive rites), *nimitta* (augury), *mantra* etc **(4) Linga kushila**—who earns living by dressing as an ascetic **(5) Yathasukshma kushila**—who is pleased when others call him a great hermit or scholar

१८८. णियंठे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-पढमसमयणियंठे, अपढमसमयणियंठे, चरिमसमयणियंठे, अचरिमसमयणियंठे, अहासुहुमणियंठे णामं पंचमे।

१८८. निर्ग्रन्थ, निर्ग्रन्थ पाँच प्रकार के होते है-(१) प्रथमसमनिर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थ दशा को प्राप्त प्रथमसमयवर्ती निर्ग्रन्थ। (२) अप्रथमसमयनिर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थ दशा को प्राप्त द्वितीयादिसमयवर्ती निर्ग्रन्थ। (३) चरमसमयवर्तीनिर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थ दशा के अन्तिम समय मे वर्तमान निर्ग्रन्थ। (४) अचरमसमयवर्तीनिर्ग्रन्थ-अन्तिम समय के अतिरिक्त शेष समय मे वर्तमान निर्ग्रन्थ। (५) यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थ-प्रथम या चरम-समय आदि की विवक्षा न करके सभी समयो मे वर्तमान निर्ग्रन्थ।

188. *Nirgranth nirgranth* are of five kinds—**(1) Pratham samaya Nirgranth**—*nirgranth* at the first moment of attaining the level of *Nirgranth* **(2) Apratham samaya Nirgranth**—*nirgranth* at the second and later moments of attaining the level of *Nirgranth* **(3) Charam samaya Nirgranth**—*nirgranth* at the last moment of being at the level of *Nirgranth* **(4) Acharama samaya Nirgranth**—*nirgranth* at the last but one and earlier moments of being at the level of *Nirgranth* **(5) Yathasukshma Nirgranth**—*nirgranth* at the level of *Nirgranth* unclassified by moments in that state

१८९. सिणाते पंचविधे पण्णत्ते, तं जहा-अच्छवी, असबले, अकम्मंसे, संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, अपरिस्साई।

१८९. स्नातक निर्ग्रन्थ पाँच प्रकार के होते है-(१) **अच्छवि स्नातक**-छवि अर्थात् काय योग का निरोध करने वाला। (२) **अशबल स्नातक**-निर्दोष चारित्र का पालन करने वाला। (३) **अकर्मांश स्नातक**-घाति कर्मों का सर्वथा विनाश करने वाला। (४) **संशुद्धज्ञान-दर्शनधर स्नातक**-विमल केवलज्ञान-केवलदर्शन के धारक अर्हन्त केवली जिन। (५) **अपरिश्रावी स्नातक**-सम्पूर्ण काययोग का निरोध करने वाले अयोगी जिन।

189. *Snatak nirgranth* are of five kinds—**(1) Achchhavi snatak**—those who deny association with body **(2) Ashbal snatak**—those who follow flawless ascetic conduct **(3) Akarmansh snatak**—those who have completely destroyed the vitiating *karmas* **(4) Samshiddha jnana-darshn-dhar snatak**—the omniscient *Jinas* who have acquired pure *Keval jnana* and *Keval darshan* **(5) Aparishravi snatak**—the *ayogi Jinas* who have completely terminated association with the body

विवेचन-प्रस्तुत सूत्रो मे पुलाक आदि निर्ग्रन्थो के सामान्य रूप से पाँच-पाँच भेद बताये है, किन्तु भगवतीसूत्र मे, तथा प्रस्तुत स्थानागसूत्र की सस्कृत टीका मे निर्ग्रन्थो के दो-दो भेद और बताये है। जिनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

(१) पुलाक के दो भेद- (I) लब्धिपुलाक और (II) प्रतिसेवनापुलाक। तपस्या-विशेष से प्राप्त लब्धि का सघ की सुरक्षा के लिए प्रयोग करने वाले साधु को **लब्धिपुलाक** और ज्ञानदर्शनादि की विराधना करने वाले को **प्रतिसेवनापुलाक** कहते है।

(२) बकुश के दो भेद है-(I) शरीर-बकुश और (II) उपकरण-बकुश। विभूषा की भावना वश अपने शरीर के हाथ, पैर, मुख आदि को पानी से धो-धोकर स्वच्छ रखने वाले, केशो का सस्कार करने वाले साधु **शरीर-बकुश** और पात्र, वस्त्र, रजोहरण आदि को बार-बार धोने वाले, उन्हे सुन्दर बनाने वाले की भावना से पात्रो पर तेल, लेप आदि करने वाले **उपकरण-बकुश** होते है।

(३) कुशील निर्ग्रन्थ के दो भेद-(I) प्रतिसेवनाकुशील और (II) कषायकुशील। उत्तर गुणो मे अर्थात्-पिण्डविशुद्धि, पाँच समिति, भावना, तप, प्रतिमा और अभिग्रह आदि मे दोष लगाने वाले साधु **प्रतिसेवनाकुशील**, तथा सज्वलन-कषाय के उदय-वश क्रोधादि कषायो से अभिभूत होने वाले साधु को **कषायकुशील** कहते है।

(४) निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थ के दो भेद-(I) उपशान्तमोहनिर्ग्रन्थ और (II) क्षीणमोहनिर्ग्रन्थ। जो उपशमश्रेणी पर आरूढ होकर सम्पूर्णमोहकर्म का उपशम कर ग्यारहवे गुणस्थानवर्ती वीतराग है, उन्हे उपशान्तमोह निर्ग्रन्थ, तथा जो क्षपकश्रेणी करके मोहकर्म का सर्वथा क्षय करके बारहवे गुणस्थानवर्ती वीतराग है और अन्तर्मुहूर्त के भीतर ही शेष तीन घातिकर्मों का क्षय करने वाले है, उन्हे क्षीणमोह निर्ग्रन्थ कहते है।

(५) स्नातक-निर्ग्रन्थ के दो भेद-(I) सयोगीस्नातक जिन और (II) अयोगीस्नातक जिन। (१) सयोगी जिन का काल आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटि वर्ष है। इतने काल तक वे भव्य

जीवो को धर्म-देशना करते हुए विचरते रहते है। (२) जब उनका आयुष्क केवल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण शेष रह जाता है, तब वे मनोयोग, वचनयोग और काययोग का निरोध करके अयोगी स्नातक जिन बनते है। अयोगी स्नातक का समय अ, इ, उ, ऋ, लृ, इन पच ह्रस्वाक्षरो के उच्चारण-काल-प्रमाण है। इतने ही समय के भीतर वे चारो अघातिकर्मों का क्षय करके अजर-अमर सिद्ध हो जाते है। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ५७६ / हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ १८७)*

Elaboration—In the aforesaid aphorisms five general types of *pulak* and other ascetics have been mentioned However, in *Bhagavati Sutra* and the *Sanskrit Tika* of *Sthananga Sutra* two more classes have been mentioned Their details are as follows—

(1) Two kinds of pulaak—a. Labdhi pulaak—an ascetic who employs the special powers, acquired through austerities, for the protection of the *sangh* **b. Pratisevana pulaak**—an ascetic who misuses his knowledge, perception and other qualities

(2) Two kinds of bakush—a. Sharira bakush—an ascetic who, for beautifying his body, washes his hands, feet, face, hair and other parts time and again **b. Upakaran bakush**—an ascetic who, for beautifying his bowls, garb, ascetic-broom and other equipment washes them and applies oil, colour and other such things time and again

(3) Two kinds of kushila—a. Pratisevana kushila—an ascetic who commits faults in observing auxiliary codes (*pinda-vishuddhi*, five *samitis*, *bhaavana*, *tap*, *pratima* and *abhigraha*) **b. Kashaya kushila**—an ascetic who gets overwhelmed with passions including anger due to precipitation of *sanjvalan kashaya* (extremely mild passion)

(4) Two kinds of nirgranth—a. Upashant moha nirgranth—a detached ascetic who through *upasham-shreni* (the rising path of pacification of *karmas*) reaches the eleventh *Gunasthaan* after pacifying all *moha-karma* **b. Ksheen moha nirgranth**—a detached ascetic who through *kshapak-shreni* (the rising path of destruction of *karmas*) reaches the twelfth *Gunasthaan* after destroying all *moha-karma* and who is going to destroy the remaining three vitiating *karmas* within one *antar-muhurt*

(5) Two kinds of snatak—a. *Sayogi snatak Jina* and **b.** *Ayogi snatak Jina*—the life span of a *sayogi Jina* is eight years to one *antar-muhurt* less one *Purvakoti* years During this period he moves around preaching religion to the worthy When only one *antar-muhurt* is left of his life-span he terminates the three associations (mind, speech and body) and

becomes *ayogi snatak Jina* The life span of *ayogi Jina* is equal to the time taken in uttering five short vowels (*a, i, u, ri,* and *lri*) Within this brief time he destroys all the four vitiating *karmas* and becomes immortal *Siddha* *(Vritti, part-2, p 576 and Hindi Tika, part-2, p 187)*

उपधि-पद UPADHI-PAD (SEGMENT OF MEANS OF SUSTENANCE)

१९०. कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा- जंगिए, भंगिए, साणए, पोत्तिए, तिरीडपट्टए णामं पंचमए।

१९०. निर्ग्रन्थो और निर्ग्रन्थियो को पाँच प्रकार के वस्त्र रखने और पहनने कल्पते है- (१) **जांगमिक**-जीवो के रोम आदि से बनने वाले कम्बल आदि। (२) **भांगिक**-अलसी की छाल से बनने वाले वस्त्र। (३) **सानिक**-सन से बनने वाले वस्त्र। (४) **पोतक**-कपास बोडी (रुई) से बनने वाले वस्त्र। (५) **तिरीटपट्ट**-लोध आदि की छाल से बनने वाले वस्त्र। *(आचाराग भाग-२, मे विस्तृत वर्णन देखे, ठाण पृष्ठ ६४३)।*

190. *Nirgranths* and *nirgranthis* are allowed to keep and use five kinds of cloth—**(1) Jangamik**—made of animal fibre like a woolen blanket, **(2) bhangik**—made of bark of *Alsi* (linseed) tree, **(3) sanik**—made of hessian, **(4) potak**—made of cotton and **(5) tiritapatt**—made of bark of *Lodhra* (Symplocos racemosa) tree *(for more details see Illustrated Acharanga Sutra, part-2, Thanam, p 643)*

१९१. कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच रयहरणाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा-उण्णिए, उट्टिए, साणए, पच्चापिच्चिए, मुंजापिच्चिए णामं पंचमए।

१९१. निर्ग्रन्थो और निर्ग्रन्थियो को पॉच प्रकार के रजोहरण रखने और धारण करने कल्पते है, जैसे-

(१) **और्णिक**-भेड की ऊन से बने रजोहरण। (२) **औष्ट्रिक**-ऊँट के बालो से बने रजोहरण। (३) **सानिक**-सन से बने रजोहरण। (४) **पच्चापिच्चिए**-वल्वज नाम की मोटी घास को कूटकर बनाया रजोहरण। (५) **मुजापिच्चिए**-मूँज को कूट कर बनाया हुआ रजोहरण।

191. *Nirgranths* and *nirgranthis* are allowed to keep and use five kinds of *rajo-haran* (ascetic-broom)—**(1) Aurnik**—made of sheep-wool, **(2) aushtrik**—made of camel-wool, **(3) sanik**—made of hessian, **(4) valvajiya**—made of *valvaj* grass and **(5) munjiya**—made of *moonj* grass

विवेचन-वृत्तिकार ने रजोहरण की यथार्थ व्याख्या इस प्रकार की है-

हरइ रयं जीवाणं बज्झ अब्भंतर च जं तेणं।
रयहरणं ति वुच्चइ कारण-कज्जोवयाराओ।

–जो बाह्य रूप मे रज को दूर करता है, तथा भाव रूप मे कर्म रज को दूर करता है। इस कारण उसे रजोहरण कहा जाता है। *(बृहत्कल्पभाष्य गाथा ३६७५ की वृत्ति मे रजोहरण सम्बन्धी विस्तृत वर्णन है)*

Elaboration—The commentator (*Vritti*) has given the true definition of *rajo-haran* (dust remover) as—as it removes the outer or physical dirt and also the inner dirt in the form of dust of *karmas* it is called dust remover or *rajo-haran* (ascetic broom) *(for more details on ascetic broom refer to Vritti of Brihatkalp Bhashya verse 3675)*

निश्रास्थान-पद NISHRA-STHAAN-PAD (SEGMENT OF SUPPORT)

१९२. धम्मण्णं चरमाणस्स पंच णिस्साट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–छक्काया, गणे, राया, गाहावती, सरीरं।

१९२. धर्म का आचरण करने वाले साधु के लिए पाँच निश्रा (आलम्बन) स्थान है–(१) षट्काय, (२) गण (श्रमण-सघ), (३) राजा, (४) गृहपति, (५) शरीर।

192. For an ascetic following code of conduct there are five *nishra sthaan* (supports)—(1) *shatkaya* (six bodies), (2) *gana* (ascetic organization), (3) *raja* (king), (4) *grihapati* (householder) and (5) *sharira* (body)

विवेचन–आलम्बन या आश्रय देने वाले उपकारक को निश्रास्थान कहते है। षट्काय को भी निश्रास्थान कहने मे उनकी उपयोगिता इस प्रकार बताई है–(१) **पृथिवी की निश्रा**–भूमि पर ठहरना, बैठना, सोना, मल-मूत्र-विसर्जन आदि। (२) **जल की निश्रा**–वस्त्र-प्रक्षालन, तृषा-निवारण, शरीर-शौच आदि। (३) **अग्नि की निश्रा**–भोजन-पाचन, पानक आदि। (४) **वायु की निश्रा**–अचित वायु का ग्रहण, श्वासोच्छ्वास आदि। (५) **वनस्पति की निश्रा**–सस्तारक, पाट, फलक, वस्त्र, औषधि, वृक्ष की छाया आदि। (६) **त्रस की निश्रा**–गोबर, गोमूत्र, दूध, दही आदि।

दूसरा निश्रास्थान गण है। गुरु के परिवार को **गण** कहते है। गण मे रहने वाले के **सारणा**–सत्कार्य मे प्रवर्तन और **वारणा**–असत्कार्य-निवारण के द्वारा कर्म-निर्जरा होती है, सयम की रक्षा होती है और धर्म की वृद्धि होती है।

राजा को निश्रास्थान इसलिए कहा है क्योकि वह दुष्टो का निग्रह और साधुओ का अनुग्रह करके धर्म के पालन मे आलम्बन होता है। **गृहपति** स्थान या उपाश्रय देने वाला है, वह ठहरने को स्थान एव भोजन-पान देकर साधुजनो का आलम्बन होता है। **शरीर** धर्म का आद्य या प्रधान साधन होने से निश्रास्थान है।

Elaboration—Support or place and person of refuge is called *nishra sthaan* The reasons for inclusion of six bodies in the list of supports are—**(1) Earth as support in**—place of stay, sitting, sleeping, excretion and other activities **(2) Water as support in**—drinking, washing clothes,

cleansing etc (3) **Fire as support in**—cooking food, digesting food and other uses (4) **Air as support in**—breathing etc (5) **Plants as support in**—beds of hay or wood, cloth, medicine, tree for shade and other uses (6) **Mobile-bodied beings (tras) as support**—cowdung, cow-urine, milk, curd, etc

The second support is *gana* The group of disciples of a guru is called *gana* One who stays with the organization is inspired to indulge in pious activity and prevented from indulging in evil activity This leads to shedding of *karmas*, protection of ascetic-discipline and improvement of religious conduct

A king is called support because he curbs evil and supports sages thus favouring religion A householder is called support because he provides for place of stay, food and other essentials One's own body is called support because it is the primary instrument of spiritual endeavour

निधि–पद NIDHI-PAD (SEGMENT OF TREASURE)

१९३. पंच णिही पण्णत्ता, तं जहा–पुत्तणिही, मित्तणिही, सिप्पणिही, धणणिही, धण्णणिही।

१९३. निधियाँ पाँच प्रकार की है–(१) पुत्रनिधि, (२) मित्रनिधि, (३) शिल्पनिधि, (४) धननिधि, (५) धान्यनिधि।

193. *Nidhis* (treasures) are of five kinds—(1) *putranidhi* (treasure of son or sons), (2) *mitranidhi* (treasure of friend or friends), (3) *shilp-nidhi* (treasure of skill), (4) *dhan-nidhi* (treasure of wealth) and (5) *dhaanyanidhi* (treasure of food-grains)

शौच–पद SHAUCH-PAD (SEGMENT OF CLEANSING)

१९४. पंचविहे सोए पण्णत्ते, तं जहा–पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बंभसोए।

१९४. शौच पाँच प्रकार का है-(१) पृथ्वीशौच, (२) जलशौच, (३) तेज शौच, (४) मत्रशौच, (५) ब्रह्मशौच।

194. *Shauch* (cleansing) is of five kinds—(1) *prithvi shauch* (cleansing by sand), (2) *jal shauch* (cleansing by water), (3) *tejah shauch* (cleansing by fire), (4) mantra *shauch* (cleansing by mantra) and (5) *brahma shauch* (cleansing by *brahmacharya*)

विवेचन–शुद्धि के साधन को शौच कहते है। मिट्टी, जल, अग्नि की राख आदि से शुद्धि की जाती है। अत ये तीनो द्रव्य या बाह्य शौच है। मत्र बोलकर मन की शुद्धि की जाती है और ब्रह्मचर्य को धारण करना ब्रह्मशौच कहलाता है। **'ब्रह्मचारी सदा शुचिः'** अर्थात् ब्रह्मचारी मनुष्य सदा पवित्र है।

वृत्तिकार ने ब्रह्मशौच के अन्तर्गत, सत्य शौच, तप शौच, इन्द्रिय निग्रह शौच तथा सर्व भूत दया शौच को सम्मिलित किया है। इस प्रकार मत्रशौच और ब्रह्मशौच को भावशौच जानना चाहिए।

Elaboration—Means of cleansing is called *shauch* Sand, water and ash (produced by fire) are normally used for cleansing These are called *dravya* (physical) or *bahya* (external) *shauch* Mantras are used for cleansing of mind To take the vow of celibacy is called *brahma shauch* It is said that a celibate person is always pure The commentator (*Vritti*) has also included truth, austerities, control over sense organs, and compassion for all beings in *brahma-shauch* Thus mantra *shauch* and *brahma shauch* are included in inner or spiritual cleansing

छद्मस्थ-केवली-पद CHHADMASTH-KEVALI-PAD (SEGMENT OF CHHADMASTH-KEVALI)

१९५. पंच ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं।

एयाणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणति पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, (अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं), परमाणुपोग्गलं।

१९५. छद्मस्थ मनुष्य पाँच वस्तुओ को सर्वथा न जानता है और न देखता है—(१) धर्मास्तिकाय को, (२) अधर्मास्तिकाय को, (३) आकाशास्तिकाय को, (४) शरीर-रहित जीव को और (५) पुद्‌गल परमाणु को इन पाँच वस्तुओ को उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अर्हत, जिन और केवली, सर्वभाव से जानते और देखते है।

195. A *chhadmasth* (a person in state of *karmic* bondage) person does not fully see or know five things—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul and (5) ultimate particle of matter

Arhat, Jina, and *Kevali* endowed with right knowledge and perception see and know these five things fully—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), [(2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul and] (5) ultimate particle of matter

विवेचन—जिनके ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्म विद्यमान है। ऐसे बारहवे गुणस्थान तक के सभी जीव छद्मस्थ कहलाते है। छद्मस्थ जीव अरूपी चार अस्तिकायो को समस्त पर्यायो सहित पूर्ण रूप से साक्षात् नही जान सकता और न देख सकता है। चलते-फिरते शरीर-युक्त जीव तो दिखाई देते है, किन्तु शरीर-रहित जीव कभी नही दिखाई देता है। पूर्व के चार अरूपी द्रव्य है। पुद्‌गल रूपी है, पर एक परमाणु रूप पुद्‌गल सूक्ष्म होने से छद्मस्थ के ज्ञान का विषय नही बनता।

Elaboration—All beings up to the twelfth *Gunasthaan* who are in bondage of knowledge and perception obscuring *karmas* are called *chhadmasth* A *chhadmasth* being cannot see and know fully all the alternative transformations of the four formless agglomerate entities He can see the moving beings but cannot see a soul free of body The first four are formless entities Matter has form but a single ultimate particle is so minute that it is beyond the scope of perception and knowledge of a *chhadmasth*

महानरक–पद MAHANARAK-PAD (SEGMENT OF WORST HELLS)

१९६. अधेलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महानरगा पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पतिट्ठाणे।

१९६. अधोलोक मे पाँच अनुत्तर महातिमहान् महानरक है–(१) काल, (२) महाकाल, (३) रौरुक, (४) महारौरुक और (५) अप्रतिष्ठान।

196. In *adholok* (lower world) there are five matchless *mahatimahan* (grotesque) *naraks* (hells)—(1) Kaal, (2) Mahakaal, (3) Rauruk, (4) Maharauruk and (5) Apratishthan

महाविमान–पद MAHAVIMAAN-PAD (SEGMENT OF GREAT CELESTIAL VEHICLES)

१९७. उड्ढलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—विजये, वेजयंते, जयंते, अपराजिते, सव्वट्ठसिद्धे।

१९७. ऊर्ध्वलोक मे पाँच अनुत्तर महातिमहान् महाविमान है–(१) विजय, (२) वैजयन्त, (३) जयन्त, (४) अपराजित और (५) सर्वार्थसिद्धि।

197. In *urdhvalok* (upper world) there are five *anuttar* (matchless) *mahatimahan* (extremely grand) *mahavimaans* (great celestial vehicles or divine realms)—(1) Vijaya, (2) Vaijayant, (3) Jayant, (4) Aparajit and (5) Sarvarthasiddha

विवेचन—सूत्रोक्त अधोलोकवर्ती पाँचो नरकावास सातवी नरक मे है। उन्हे अनुत्तर और महातिमहान कहने का अभिप्राय यह है, कि यही सबसे अधिक वेदना है। सबसे अधिक लम्बा आयुष्य है और क्षेत्र की दृष्टि से भी सबसे अधिक विशाल है। अनुत्तर विमान स्वर्ग विमानो मे दिव्य सुखो की अपेक्षा तथा दीर्घ आयुष्य की अपेक्षा सबसे अनुत्तर–श्रेष्ठ है। क्षेत्र की दृष्टि से सबसे विशाल है। ये पाँचो महाविमान वैमानिक लोक के सबसे ऊपर के भाग मे है। *(हिन्दी टीका भाग–२ पृष्ठ २००)*

Elaboration—The aforesaid five infernal abodes are in seventh hell They are called worse than worst because they have maximum agony, maximum life span and largest area The Anuttar *vimaans* are superlative in terms of divine pleasures, long life span and area All

these five celestial vehicles are situated at the highest part of the *lok* (*Hindi Tika, part-2, p 200*)

सत्त्व-पद SATTVA-PAD (SEGMENT OF COURAGE)

१९८. पंच पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते।

१९८. पुरुष पाँच प्रकार के होते है-(१) **हीसत्त्व**—लज्जा के कारण हिम्मत रखने वाला। (२) **हीमनःसत्त्व**—लज्जावश भी केवल मन मे ही हिम्मत लाने वाला, देह मे नही। (३) **चलसत्त्व**—हिम्मत या साहस हारने वाला। (४) **स्थिरसत्त्व**—विकट परिस्थिति मे भी मनोबल को स्थिर रखने वाला। (५) **उदयनसत्त्व**—उत्तरोत्तर प्रवर्धमान सत्त्व या पराक्रम वाला।

198. Men are of five kinds—**(1) Hri-sattva**—who is courageous out of shame, **(2) hrimanah-sattva**—who is courageous out of shame but only in mind and not in action, **(3) chal-sattva**—who loses courage, **(4) sthir-sattva**—who remains courageous even in difficult predicament and **(5) udayan-sattva**—who has ever increasing courage

भिक्षाक-पद BHIKSHAAK-PAD (SEGMENT OF ALMS EATER)

१९९. पंच मच्छा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोतचारी, पडिसोतचारी, अंतचारी, मज्झचारी, सव्वचारी।

एवामेव पंच भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—अणुसोतचारी, (पडिसोतचारी, अतचारी, मज्झचारी), सव्वचारी।

१९९. मत्स्य (मच्छ) पॉच प्रकार के होते है-(१) **अनुस्रोतचारी**—जल-प्रवाह के अनुकूल चलने वाला। (२) **प्रतिस्रोतचारी**—जल-प्रवाह के प्रतिकूल चलने वाला। (३) **अन्तचारी**—जल-प्रवाह के किनारे-किनारे चलने वाला। (४) **मध्यचारी**—जल-प्रवाह के मध्य मे चलने वाला। (५) **सर्वचारी**—जल मे सर्वत्र विचरण करने वाला।

इसी प्रकार भिक्षुक (अभिग्रह लेकर भिक्षाचरी करने वाले) भी पॉच प्रकार के होते है, जैसे-(१) **अनुस्रोतचारी**—उपाश्रय से निकलकर सीधी गृहपक्ति से गोचरी करने वाला। (२) **प्रतिस्रोतचारी**—गली के अन्तिम गृह पर पहुँचकर लौटते हुए उपाश्रय तक घरो से गोचरी करने वाला। (३) **अन्तचारी**—ग्राम के अन्तिम भाग मे स्थित गृहो से गोचरी लेने वाला। (४) **मध्यचारी**—ग्राम के मध्य भाग से गोचरी लेने वाला। (५) **सर्वचारी**—ग्राम के सभी भागो से गोचरी लेने वाला।

199. *Matsya* (fish) are of five kinds—**(1) anusrotachari**—one that moves with the flow of water, **(2) pratisrtochari**—one that moves against the flow of water, **(3) antachari**—one that moves at the brink, **(4) madhyachari**—one that moves in the middle and **(5) sarvachari**—one that moves everywhere in water

In the same way *bhikshaak* (alms eater ascetics) are of five kinds—(1) **anusrotachari**—one that moves on a straight lane from the *upashraya* (place of stay) and collects alms from houses as he moves on that lane, (2) **pratisrtochari**—one that moves on a straight lane from the *upashraya* (place of stay) and collects alms from houses on that lane but only while returning, (3) **antachari**—one who collects alms from the houses located at the end of a city, village, or a section of a city, (4) **madhyachari**—one who collects alms from the houses located in the middle of a city, village, or a section of a city and (5) **sarvachari**—one who collects alms from all parts of a city (etc)

वनीपक–पद VANIPAK-PAD (SEGMENT OF BEGGAR)

२००. पंच वणीमगा पण्णत्ता, तं जहा–अतिहिवणीमगे, किवणवणीमगे, माहणवणीमगे, साणवणीमगे, समणवणीमगे।

२००. वनीपक (याचक) पाँच प्रकार के होते है–(१) **अतिथि–वनीपक**–अतिथिदान की प्रशसा करके माँगने वाला। (२) **कृपण वनीपक**–कृपण (दीन-दु खी) दान की प्रशसा करके माँगने वाला। (३) **माहन–वनीपक**–ब्राह्मण-दान की प्रशसा करके माँगने वाला। (४) **श्वा–वनीपक**–कुत्ते के दान की प्रशसा करके माँगने वाला। (५) **श्रमण–वनीपक**–श्रमणदान की प्रशसा करके माँगने वाला।

200. Vanipaks (beggars) are of five kinds—(1) **atithi-vanipak**—who begs by praising donation offered to guests, (2) **kripan-vanipak**—who begs by praising donation given to a *kripan* (destitute), (3) **maahan-vanipak**—who begs by praising donation to a Brahmin, (4) **shvan-vanipak**—who begs by praising donation offered to a dog and (5) **shraman-vanipak**—who begs by praising donation offered to a *shraman* (ascetic)

अचेल–पद ACHEL-PAD (SEGMENT OF SCANTILY CLAD ASCETIC)

२०१. पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवति, तं जहा–अप्पापडिलेहा, लाघविए पसत्थे, रूवे वेसासिए, तवे अणुण्णाते, विउले इंदियणिग्गहे।

२०१. पाँच कारणो से अचेलक (अल्प मात्रा मे व अल्प मूल्य वाले वस्त्र रखने वाला) प्रशस्त (प्रशसा योग्य) होता है–(१) अचेलक की प्रतिलेखना अल्प होती है। (२) अचेलक का लाघव (हल्कापन) प्रशस्त (प्रशसनीय) होता है। (३) अचेलक का रूप (सतोषी व तपस्वी दीखने से) विश्वास के योग्य होता है। (४) अचेलक का तप (ऊनोदरी व व्युत्सर्ग तप) अनुज्ञात (जिनशासन-अनुमत) होता है। (५) अचेलक का इन्द्रिय-निग्रह महान् (विशिष्ट) होता है।

201. For five reason an *achel* (scantily clad ascetic and one who keeps few clothes) is worthy of praise—(1) his duty of maintenance is

minimum, (2) his lightness is praiseworthy, (3) his appearance (contented and hermit-like) invokes confidence, (4) his austerity (reduced needs and sacrifice) is according to the code and (5) his control over sense organs is great

उत्कल–पद UTKAL-PAD (SEGMENT OF THE EXTREMELY POWERFUL)

२०२. पंच उक्कला पण्णत्ता, तं जहा–दंडुक्कले, रज्जुक्कले, तेणुक्कले, देसुक्कले, सव्वुक्कले।

२०२. पाँच उत्कल (उत्कट शक्ति-सम्पन्न) पुरुष होते है–(१) दण्डोत्कल–प्रबल दण्ड (आज्ञा या सैन्यशक्ति) वाला पुरुष अथवा गुरुजनो की कठोर आज्ञा का पालन करने वाला। (२) राज्योत्कल–प्रबल राज्यशक्ति वाला अथवा विशेष राज-प्रतिष्ठा प्राप्त पुरुष। (३) स्तेनोत्कल–प्रबल चोरो की शक्ति वाला (तस्करो का सरदार व दु स्साहसिक व्यक्ति)। (४) देशोत्कल–प्रबल जनपद की शक्ति वाला अथवा जनपद के कारण महत्ता प्राप्त करने वाला पुरुष। (५) सर्वोत्कल–उक्त सभी प्रकार की प्रबल शक्ति वाला पुरुष।

202. There are five *utkals* (extremely powerful persons)—**(1) dandotkal**—a person with extreme power of punishment (great army) or a person who obeys harshest command of seniors, **(2) rajyotkal**—a person with great power of state or a person with very high status in state, **(3) stenotkal**—a person with great power of theft (a bandit leader), **(4) deshotkal**—a person having great power of a republic or a person having high status in a republic and **(5) sarvotkal**—a person having all kinds of power

समिति–पद SAMITI-PAD (SEGMENT OF SELF REGULATION)

२०३. पंच समितीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–इरियासमिती, भासासमिती, एसणासमिती, आयाणभंड–मत्त–णिक्खेवणासमिती, उच्चार–पासवण–खेल–सिंघाण–जल्ल–पारिठावणियसमिती।

२०३. समितियाँ पाँच प्रकार की है–(१) ईर्यासमिति–गमन मे सावधानी। (२) भाषासमिति–बोलने मे सावधानी। (३) एषणासमिति–गोचरी मे सावधानी निर्दोष भिक्षा लेना। (४) आदान-भाण्ड-अमत्र-निक्षेपणासमिति–भोजनादि के भाण्ड-पात्र आदि को सावधानीपूर्वक देखकर लेना और रखना। (५) उच्चार (मल) प्रस्रवण–(मूत्र) श्लेष्म (कफ) जल्ल (शरीर का मैल) सिंघाड (नासिका का मल), इनका निर्जन्तु स्थान मे विसर्जन करना।

203. *Samitis* (self regulations) are of five kinds—**(1) Irya samiti**—proper care in movement, **(2) bhasha samiti**—proper care in speaking, **(3) eshana samiti**—proper care in seeking and collecting alms, **(4) adan-bhand-amatra-nikshepana samiti**—proper care in taking and keeping bowls for food etc and **(5) uchchar-prasravan-shleshm-jalla-singhad prasthapana samiti**—proper care in disposal of all kinds of excreta

(stool, urine, phlegm, and body and nose scum) at a spot free of living beings

जीव–पद **JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING BEINGS)**

२०४. पंचविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा–एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया।

२०४. ससार-समापन्नक (ससारी) जीव पाँच प्रकार के है–(१) एकेन्द्रिय, (२) द्वीन्द्रिय, (३) त्रीन्द्रिय, (४) चतुरिन्द्रिय और (५) पचेन्द्रियजीव।

204. *Samsar-samapannak jivas* (worldly living beings) are of five kinds—(1) *Ekendriya* (one-sensed beings), (2) *Dvindriya* (Two-sensed beings), (3) *Trindriya* (three-sensed beings), (4) *Chaturindriya* (four-sensed beings) and (5) *Panchendriya* (five-sensed animal beings)

गति–आगति–पद **GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF BIRTH FROM AND TO)**

२०५. एगिंदिया पंचगतिया पंचागतिया पण्णत्ता, तं जहा–एगिंदिए एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा, (बेइंदिएहिंतो वा, तेइंदिएहिंतो वा, चउरिंदिएहिंतो वा,) पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं से एगिंदिए एगिंदियत्तं विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए वा, (बेइंदियत्ताए वा, तेइंदियत्ताए वा, चउरिंदियत्ताए वा), पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा।

२०६. बेंदिया पंचगतिया पंचागतिया एवं चेव।

२०७. एवं जाव पंचिंदिया पंचगतिया पंचागतिया पण्णत्ता, तं जहा–पंचिंदिए जाव गच्छेज्जा।

२०५. एकेन्द्रिय जीव पाँच गतिक (गति मे जाने वाले) और पाँच आगतिक (आने वाले) है–(१) एकेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियो मे उत्पन्न होता हुआ। (पूर्वभव मे) एकेन्द्रियो से, या द्वीन्द्रियो से, या त्रीन्द्रियो से, या चतुरिन्द्रियो से, या पचेन्द्रियो से आकर उत्पन्न होता है।

(२) वही एकेन्द्रियजीव एकेन्द्रियपर्याय को छोडता हुआ (आगामी भव मे) एकेन्द्रियो मे, या द्वीन्द्रियों मे, या त्रीन्द्रियो मे, या चतुरिन्द्रियो मे, या पचेन्द्रियो मे उत्पन्न होता है।

२०६–२०७. इसी प्रकार द्वीन्द्रिय जीव भी पाँच गतिक और पाँच आगतिक है। यावत् पचेन्द्रिय तक के सभी जीव पाँच गतिक और पाँच आगतिक होते है।

205. *Ekendriya jiva* (one-sensed beings) have five kinds of *gatis* (reincarnation to) and five *aagatis* (reincarnation from)—A being taking birth as a one-sensed being reincarnates from either one-sensed beings, two-sensed beings, three-sensed beings, four-sensed beings or five-sensed beings

(2) The same one-sensed being leaving the state of one-sensed beings reincarnates in the genus of either one-sensed beings, two-sensed beings, three-sensed beings, four-sensed beings or five-sensed beings

206. and **207.** In the same way two-sensed beings also have five kinds of *gatis* (reincarnation to) and five *aagatis* (reincarnation from) and so on up to all beings up to five-sensed ones have five kinds of *gatis* (reincarnation to) and five *aagatis* (reincarnation from)

जीव–पद JIVA-PAD (SEGMENT OF BEINGS)

२०८. पंचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–कोहकसाई, (माणकसाई, मायाकसाई), लोभकसी, अकसाई।

अहवा–पंचविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–णेरइया, (तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा), देवा, सिद्धा।

२०८. सर्व जीव पाँच प्रकार के होते है–(१) नारक, (२) तिर्यंच, (३) मनुष्य, (४) देव, (५) सिद्ध।

208. All beings are of five kinds (1) *naarak* (infernal beings), (2) *tiryanch* (animals), (3) *manushya* (human beings), (4) *deva* (divine beings) and (5) *Siddhas* (liberated beings)

योनिस्थिति–पद YONISTHITI-PAD (SEGMENT OF PRODUCTIVE LIFE)

२०९. अह भंते ! कल–मसूर–तिल–मुग्ग–मास–णिप्फाव–कुलत्थ–आलिसंदग–सतीण–पलिमंथगाणं–एतेसि णं धण्णाणं कुट्ठाउत्ताणं (पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं) केवइयं कालं जोणी सचिट्ठति?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पंच संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायति, तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेणं परं जोणी विद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति। तेण परं जोणी वोच्छेदे पण्णत्ते।

२०९. (प्रश्न) भगवन् ! मटर, मसूर, तिल, मूँग, उडद निष्पाव (सेम), कुलथी, चवला, तूवर और काला चना–इन धान्यो को कोठे मे गुप्त (बन्द), पल्य में, मचान मे और माल्य मे बन्द करके उनके द्वारो को ढक देने पर, गोबर से लीप देने पर, चारो ओर से लीप देने पर, रेखाओ से लाछित कर देने पर, मिट्टी से मुद्रित कर देने पर और भलीभाँति से सुरक्षित रखने पर उनकी योनि (उत्पादक–शक्ति) कितने काल तक बनी रहती है ?

(उत्तर) गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक और उत्कृष्ट पाँच वर्ष तक उनकी उत्पादक शक्ति बनी रहती है। उसके पश्चात् उनकी योनि म्लान हो जाती है, योनि विध्वस्त हो जाती है, योनि क्षीण हो जाती है, बीज अबीज हो जाता है (पाँच वर्ष) पश्चात् योनि का विच्छेद हो जाता है।

209. (Question) *Bhante* ! How long the *yoni* (productive capacity) of *matar* (peas), *masur* (Lens esculenta), *til* (sesame), *moong* (green gram, Phaseolus radiatus), *udad, nishpava* or *sem* (beans, Dolichos lablab), *kulathi* (horse gram), *chavala, tuvar* (Cajamus indicus), *kala chana* (black gram) or other pulses last once they are stored in *kotha* (silo), *palya* (basket made of bamboo or cane), *machan* (store on a raised wooden platform) and *mala* (store on roof top), and then covered, sealed, marked, stamped and properly closed ?

(Answer) "Long lived one ! Their productive capacity lasts for a minimum period of *antarmuhurt* (less than 48 minutes) and a maximum period of five years After that the *yoni* (productive capacity) gets weak, shattered, destroyed, seedless, and sterile In other words the seeds no longer germinate on sowing

सवत्सर–पद SAMVATSAR-PAD (SEGMENT OF YEAR)

२१०. पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा–णक्खत्तसंवच्छरे, जुगसंवच्छरे, पमाणसंवच्छरे, लक्खण संवच्छरे, सणिंचर संवच्छरे।

२११. जुगसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–चंदे, चंदे, अभिवड्ढिते, चंदे, अभिवड्ढिते चेव।

२१२. पमाणसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–णक्खत्ते, चंदे, उऊ, आदिच्चे अभिवड्ढिते।

२१०. सवत्सर (वर्ष) पॉच प्रकार के है-(१) नक्षत्र-सवत्सर, (२) युग-सवत्सर, (३) प्रमाण-सवत्सर, (४) लक्षण सवत्सर, (५) शनिश्चर-सवत्सर।

२११. युगसवत्सर पॉच प्रकार के है-(१) चन्द्र-सवत्सर, (२) चन्द्र-सवत्सर, (३) अभिवर्धित-सवत्सर, (४) चन्द्र-सवत्सर, (५) अभिवर्धित-सवत्सर।

२१२. प्रमाण-सवत्सर पॉच प्रकार के है-(१) नक्षत्र-सवत्सर, (२) चन्द्र-सवत्सर, (३) ऋतु-सवत्सर, (४) आदित्य-सवत्सर, (५) अभिवर्धित-सवत्सर।

210. *Samvatsar* (year) is of five kinds—(1) *Nakshatra-samvatsar*, (2) *Yug-samvatsar*, (3) *Praman-samvatsar*, (4) *Lakshan-samvatsar* and (5) *Shanishchar-samvatsar*

211. *Yug-samvatsar* is of five kinds—(1) *Chandra-samvatsar*, (2) *Chandra-samvatsar*, (3) *Abhivardhit-samvatsar*, (4) *Chandra-samvatsar* and (5) *Abhivardhit-samvatsar*

212. *Praman-samvatsar* is of five kinds—(1) *Nakshatra-samvatsar*, (2) *Chandra-samvatsar*, (3) *Ritu-samvatsar*, (4) *Aditya-samvatsar* and (5) *Abhivardhit-samvatsar*

२१३. लक्खणसंवच्छरे, पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–

समगं णक्खत्ता जोगं जोयंति समगं उदू परिणमंति।
णच्चुण्हं णातिसीतो, बहूदओ होति णक्खत्तो ॥१॥

ससिसगलपुण्णमासी, जोएइ विसमचारिणक्खत्ते।
कडुओ बहूदओ बा, तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥

विसमं पवालिणो परिणमंति अणुदूसू देंति पुप्फफलं।
वासं णं सम्म वासति, तमाहु संवच्छरं कम्मं॥३॥

पुढविदगाणं तु रसं, पुप्फफलाणं तु देइ आदिच्चो।
अप्पेणवि वासेणं, सम्मं णिप्फज्जए सासं॥४॥

आदिच्चतेयतविता, खणलवदिवसा उऊ परिणमंति।
पूरेति रेणू थलयाइं, तमाहु अभिवड्ढितं जाणे॥५॥ (संग्रहणी–गाथाएँ)

२१३. लक्षण-सवत्सर पाँच प्रकार के है–(१) नक्षत्र-सवत्सर, (२) चन्द्र-सवत्सर, (३) कर्म-(ऋतु) सवत्सर, (४) आदित्य-सवत्सर, (५) अभिवर्धित-सवत्सर।

(१) जिस सवत्सर मे जिस तिथि मे जिस नक्षत्र का योग होना चाहिए, उस नक्षत्र का उसी तिथि मे योग होता है, जिसमे ऋतुएँ यथासमय परिणम्न करती है, जिसमे न अति गर्मी पडती है और न अधिक सर्दी ही पडती है और जिसमे वर्षा अच्छी होती है, वह **नक्षत्र–सवत्सर** कहलाता है। जैसे चैत्री पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र, वैशाखी पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र आदि।

(२) जिस सवत्सर मे चन्द्रमा सभी पूर्णिमाओ का स्पर्श करता है, जिसमे अन्य नक्षत्रो की विषम गति होती है, जिसमे सर्दी और गर्मी अधिक होती है तथा वर्षा भी अधिक होती है, उसे **चन्द्र–संवत्सर** कहते है।

(३) जिस सवत्सर मे बिना समय के बीज अकुरित हो, वृक्ष मे कोपले आये, वर्षा भी समय पर न हो, उसे **कर्मसंवत्सर** या **ऋतुसंवत्सर** कहते है।

(४) जिस सवत्सर मे वर्षा कम होने पर भी सूर्य, पृथ्वी, जल, पुष्प और फलो को रस अच्छा देता है और धान्य अच्छा उत्पन्न होता है, उसे आदित्य या **सूर्यसंवत्सर** कहते है।

(५) जिस सवत्सर मे क्षण, लव, दिवस और ऋतु सूर्य के तेज से तप्त होकर व्यतीत होते है, जिसमे आँधी–तूफान अधिक आये, उसे **अभिवर्धित–संवत्सर** कहते है।

(६) जितने काल मे शनिश्चर एक नक्षत्र को भोगता है, वह **शनिश्चर संवत्सर** कहलाता है। *(विस्तृत वर्णन देखे वृत्ति भाग–२ पृष्ठ ५८९। तथा हिन्दी टीका भाग–२, पृष्ठ २१८)*

213. *Lakshan-samvatsar* is of five kinds—(1) *Nakshatra-samvatsar*, (2) *Chandra-samvatsar*, (3) *Karma (Ritu)-samvatsar*, (4) *Aditya-samvatsar* and (5) *Abhivardhit-samvatsar*

(1) The *samvatsar* (calendar year) in which the dates and constellations (lunar mansions) follow the established system of conjunction, in which seasons follow the established pattern, in which summer and winter are not extreme and in which there is good monsoon is called *Nakshatra-samvatsar* For example *Chitra nakshatra* falls on *Chaitra purnima* and *Vishakha nakshatra* falls on *Vaishakh purnima*

(2) The *samvatsar* (calendar year) in which the moon always shines on *Purnimas*, in which constellations do not follow a fixed system of conjunction, and in which seasons like summer, winter and monsoon are extreme is called *Chandra-samvatsar*

(3) The *samvatsar* (calendar year) in which seeds germinate untimely, in which plants sprout untimely and the rains are also untimely is called *Karma-samvatsar* or *Ritu-samvatsar*

(4) The *samvatsar* (calendar year) in which the sun, the earth and water provide ample nutrition to flowers and fruits and crops are good, is called *Aditya* or *Surya-samvatsar*

(5) The *samvatsar* (calendar year) in which every fraction of time is spent suffering scorching heat of a glowing sun and which has excessive storms is called *Abhivardhit-samvatsar*

(6) The time taken by *Shanishchar* (Saturn) to cross one *nakshatra* is called *Shanishchar-samvatsar* *(for more details see Vritti, part-2, p 589 and Hindi Tika, part-2, p 218)*

जीवप्रदेश–निर्याणमार्ग–पद JIVAPRADESH-NIRYANAMARG-PAD (SEGMENT OF DEPARTURE OF SOUL-SPACE-POINTS)

२१४. पंचविधे जीवस्स णिज्जाणमग्गे पण्णत्ते, तं जहा– पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं, सव्वंगेहिं।

पाएहिं णिज्जायमाणे णिरयगामी भवति, ऊरूहिं णिज्जायमाणे तिरियगामी भवति, उरेणं णिज्जायमाणे मणुयगामी भवति, सिरेणं णिज्जायमाणे देवगामी भवति, सव्वंगेहिं णिज्जायमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पण्णत्ते।

२१४. मृत्यु के समय जीव–प्रदेशो के शरीर से निर्याण–निकलने के पाच मार्ग होते है–(१) पैर, (२) उरू, (३) हृदय, (४) शिर, (५) सर्वाङ्ग।

(१) पैरो से (घुटने के नीचे का भाग) निर्याण करने वाला जीव नरकगामी होता है। (२) उरू (जघा) से निर्याण करने वाला जीव तिर्यंचगतिगामी होता है। (३) हृदय से निर्याण करने वाला जीव

मनुष्यगतिगामी होता है। (४) शिर से निर्याण करने वाला जीव देवगतिगामी होता है। (५) सर्वाङ्ग मे निर्याण करने वाला जीव सिद्धगति अर्थात् मुक्ति प्राप्त करता है।

[**विशेष**–जब शरीर के एक भाग से जीव निकलता है, तब महावेदना होती है, किन्तु सर्वांगो से जब आत्मा निकलता है। तब कोई वेदना नही होती]

214. There are five paths of *niryan* (departure) of *jivapradesh* (soul-space-points) at the time of death—(1) legs, (2) thigh, (3) heart, (4) head and (5) whole body

(1) A soul departing through legs (below knees) is destined for hell, (2) that departing from thigh is destined for animal genus, (3) that departing from heart is destined foi human genus, (4) that departing from head is destined for divine realm and (5) that departing from whole body is destined for the status of *Siddha* or to be liberated (When the soul departs through any one part of body it is very painful but when it departs from the whole body it is not painful)

छेदन–पद CHHEDAN-PAD (SEGMENT OF DIVISION)

२१५. पंचविहे छेयणे पण्णत्ते, तं जहा–उप्पाछेयणे, वियच्छेयणे, बंधच्छेयणे, पएसच्छेयणे, दोधारच्छेयणे।

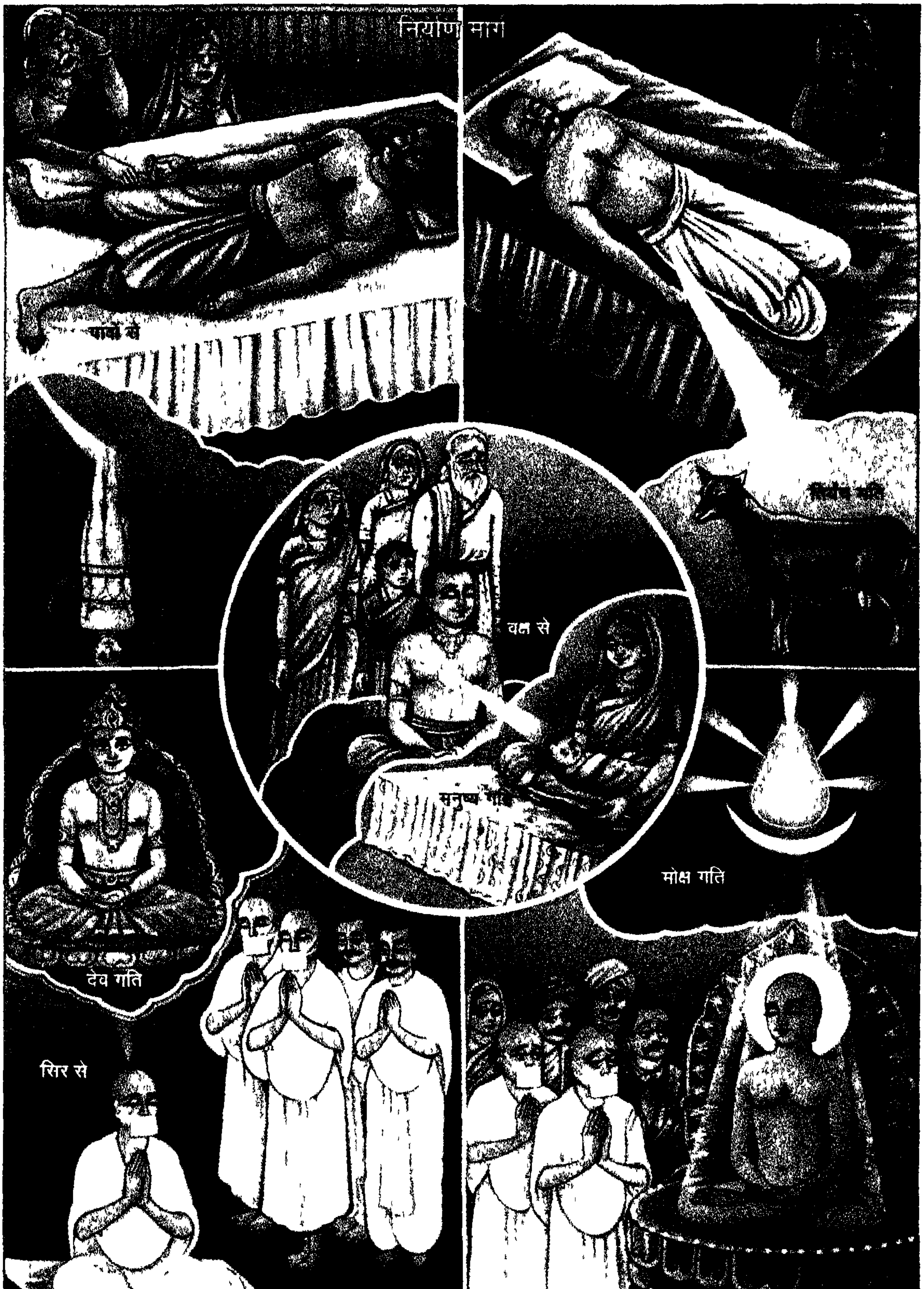
२१५. छेदन (विभाग) पॉच प्रकार का होता है-(१) उत्पाद–छेदन–उत्पाद पर्याय के आधार पर विभाग करना। (२) **व्यय–छेदन**–विनाश पर्याय के आधार पर विभाग करना। (३) **बन्ध–छेदन**–कर्म-बन्ध का छेदन, या पुद्‌गलस्कन्ध का विभाजन। (४) **प्रदेश–छेदन**–अविभक्त वस्तु के प्रदेशो का बुद्धि से कल्पित विभाजन। (५) **द्विधा–छेदन**–किसी वस्तु के दो विभाग करना।

215. *Chhedan* (division) is of five kinds—**(1) Utpad-chhedan**—to divide on the basis of mode of production, **(2) vyaya-chhedan**—to divide on the basis of mode of destruction, **(3) bandh-chhedan**—division of *karmic* bondage or division of matter particle, **(4) pradesh-chhedan**—to conceptually divide an undivided thing and **(5) dvidha-chhedan**—to divide in two parts

आनन्तर्य–पद ANANTARYA-PAD (SEGMENT OF NON-INTERRUPTION)

२१६. पंचविहे आणंतरिए पण्णत्ते, तं जहा–उप्पायाणंतरिए, वियाणंतरिए, पएसाणंतरिए, समयाणंतरिए, सामण्णाणंतरिए।

२१६. आनन्तर्य (विरह का अभाव, सातत्य) पॉच प्रकार का होता है-(१) **उत्पाद–आनन्तर्य**–लगातार उत्पत्ति। (२) **व्यय–आनन्तर्य**–लगातार विनाश। (३) **प्रदेश–आनन्तर्य**–लगातार प्रदेशो की


निर्याण मार्ग
पावों से
वक्ष से
मनुष्य गति
मोक्ष गति
देव गति
सिर से
6

चित्र परिचय ६

Illustration No. 6

निर्याण मार्ग

मानव प्राणी शरीर छोड़ते समय पाँच स्थानों से उसका जीव (आत्मा) निकलता है-

(१) **पाँवों से**–यदि जीव पैरों से निकलता है तो वह नरकगामी होता है।

(२) **जंघाओं से**–जंघा या उसके ऊपर के कटिभाग से नीचे के स्थान से निकलने वाला जीव तिर्यंचगति में जाता है।

(३) **छाती (वक्षस्थल) से**–कमर से ऊपर वक्षस्थल से निकलने वाला जीव मनुष्यगति में जाता है।

(४) **सिर से**–मस्तक या ग्रीवा से ऊपर के भाग से निकलने वाला जीव देवगति में जाता है।

(५) **सर्वांग (सम्पूर्ण शरीर से)** शरीर के समस्त अंगों से समान रूप से निकलने वाला जीव मोक्षगामी होता है।

[illegible]

PATH OF DEPARTURE

There are five place in the body from where a soul departs (niryan) at the time of death—

(1) Legs—A soul departing through legs (below knees) is destined for hell

(2) Thigh—A soul departing from thigh is destined for animal genus

(3) Heart—A soul departing from heart is destined for human genus

(4) Head—A soul departing from head is destined for divine realm

(5) Whole Body—A soul departing from whole body is destined for the status of *Siddha* or to be liberated

- Sthaan [illegible] Lesson 3 Sutra 211

सलग्नता। (४) **समय-आनन्तर्य**-समय की निरन्तरता। (५) **सामान्य-आनन्तर्य**-जिसमे उत्पाद-व्यय आदि पर्याय विशेष की विवक्षा न हो। सामान्य निरन्तरता। *[विशेष-छेदन और आनन्तर्य के सम्बन्ध मे विशेष स्पष्टीकरण हेतु हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ २२२ देखे।]*

216. *Anantarya* (absence of separation or interruption) is of five kinds—**(1) utpad-anantarya**—uninterrupted generation, **(2) vyaya-anantarya**—uninterrupted destruction, **(3) pradesh-anantarya**—uninterrupted sections, **(4) samaya-anantarya**—uninterrupted time and **(5) samanya-anantarya**—general non-interruption with regard to any specific process including generation and destruction *(for more details about chhedan and anantarya refer to Hindi Tika, part-2, p 222)*

अनन्त-पद ANANT-PAD (SEGMENT OF THE ENDLESS OR INFINITE)

२१७. पंचविधे अणंतए पण्णत्ते, तं जहा-णामाणंतए, ठवणाणंतए, दव्वाणंतए, गणणाणंतए, पदेसाणंतए।

अहवा-पंचविहे अणंतए पण्णत्ते, तं जहा-एगंतोऽणंतए, दुहओणंतए, देसवित्थाराणंतए, सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणंतए।

२१७. अनन्तक पाँच प्रकार का होता है-(१) **नाम-अनन्तक**-जिसका नाम अनन्त है, जैसे अनन्तनाथ, अनन्त चौदस। (२) **स्थापना-अनन्तक**-किसी सचित्त-अचित्त 'अनन्त' वस्तु का चित्र, मूर्ति या नक्शा आदि। (३) **द्रव्य-अनन्तक**-जीव, पुद्गल परमाणु, और काल ये तीन द्रव्य-अनन्तक है। (४) **गणना-अनन्तक**-जिस गणना का अन्त न हो, ऐसी सख्याविशेष। (५) **प्रदेश-अनन्तक**-जिसके प्रदेश अनन्त हो, जैसे आकाश के प्रदेश अनन्त है।

अथवा अनन्तक पॉच प्रकार का होता है-

(१) **एकत· अनन्तक**-लम्बाई की अपेक्षा से आकाश प्रदेश की एक श्रेणि मे अनन्त प्रदेश है। (२) **द्विधा अनन्तक**- लम्बाई और चौडाई दोनो की अपेक्षा से जो अनन्त हो। (३) **देश विस्तार अनन्तक**-पूर्वादि किसी एक दिशा के विस्तार मे फैले हुए आकाश-प्रदेशो की अनन्तता। (४) **सर्व विस्तार अनन्तक**-सम्पूर्ण आकाश प्रदेशो की जो अनन्तता है। (५) **शाश्वत अनन्तक**-आदि अन्त रहित, स्थिति रहित जीवादि शाश्वत पदार्थ **शाश्वत अनन्तक** है।

217. *Anantak* (endless or infinite) is of five kinds—**(1) naam-anantak**—whose name is Anantak, **(2) sthapana-anantak**—picture, image or drawing of some living or non-living infinite thing, **(3) dravya-anantak**—soul, matter and time are endless entities, **(4) ganana-anantak**—an endless number (numerical infinite) and **(5) pradesh-anantak**—having endless space-points, such as space

Also *anantak* (endless or infinite) is of five kinds—(1) **Ekatah-anantak**—there are infinite space-points in a line in space (2) **Dvidha-anantak**—that which is infinite both in length and width (3) **Desh-vistar-anantak**—the endlessness of the expanse of space in one specific direction, (4) **Sarva-vistar-anantak**—the endlessness of the overall expanse of space (5) **Shashvat-anantak**—enternally infinite, such as entities like soul that are without a beginning or an end

ज्ञान–पद JNANA-PAD (SEGMENT OF KNOWLEDGE)

२१८. पंचविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा आभिणिबोहियणाणे, सुयणाणे, ओहिणाणे, मणपज्जवणाणे, केवलणाणे।

२१८. ज्ञान पाँच प्रकार का है–(१) आभिनिबोधिकज्ञान, (२) श्रुतज्ञान, (३) अवधिज्ञान, (४) मन पर्यवज्ञान, (५) केवलज्ञान।

218. *Jnana* (knowledge) is of five kinds—(1) *abhinibodhik jnana* or *mati-jnana* (sensory knowledge or to know the apparent form of things coming before the soul by means of five sense organs and the mind), (2) *shrut-jnana* (scriptural knowledge), (3) *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance), (4) *manahparyav jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy) and (5) *keval-jnana* (omniscience)

२१९. पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा–आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे, (सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे), केवलणाणावरणिज्जे।

२१९. ज्ञानावरणीय कर्म पाँच प्रकार का है–(१) आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय, (२) श्रुतज्ञानावरणीय, (३) अवधिज्ञानावरणीय, (४) मन पर्यवज्ञानावरणीय, (५) केवलज्ञानावरणीय।

219. *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) is of five kinds—(1) *abhinibodhik jnanavaraniya*, (2) *shrut-jnanavaraniya*, (3) *avadhi-jnanavaraniya*, (4) *manahparyav jnanavaraniya* and (5) *keval-jnanavaraniya*

२२०. पंचविहे सज्झाए पण्णत्ते, तं जहा–वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा।

२२०. स्वाध्याय पाँच प्रकार का है- (१) **वाचना**–पठन-पाठन करना। (२) **पृच्छना**–सदिग्ध विषय को पूछना। (३) **परिवर्तना**–पठित विषयो को बारबार फेरना। (४) **अनुप्रेक्षा**–पुन -पुन चिन्तन करना। (५) **धर्मकथा**–धर्म चर्चा करना।

220. *Svadhyaya* (study) is of five kinds—**(1) Vaachana**—to read or recite. **(2) Prichhana**—to seek clarification and elaboration **(3) Parivartana**—to

revise and repeat what has been learnt (4) **Anupreksha**—to ponder over the meaning profoundly (5) **Dharmakatha**—to discuss religion

प्रत्याख्यान-पद PRATYAKHYAN-PAD (SEGMENT OF ABSTAINMENT)

२२१. पंचविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा-सद्दहणसुद्धे, विणयसुद्धे, अणुभासणासुद्धे, अणुपालणासुद्धे, भावसुद्धे।

२२१. प्रत्याख्यान पाँच प्रकार का है-(१) **श्रद्धानशुद्ध**-श्रद्धापूर्वक किया गया निर्दोष त्याग। (२) **विनयशुद्ध**-देव-गुरु की विनयपूर्वक किया गया निर्दोष त्याग। (३) **अनुभाषणाशुद्ध**-गुरु द्वारा बोले गये 'वोसिरे' आदि पदो को दोहराते हुए प्रत्याख्यान पाठ बोलना। (४) **अनुपालनाशुद्ध**-विकट परिस्थिति मे भी दृढतापूर्वक प्रत्याख्यान का निर्दोष पालन करना। (५) **भावशुद्ध**-राग-द्वेष से रहित होकर शुद्ध भाव से प्रत्याख्यान का पालन करना।

221. *Pratyakhyan* (abstainment) is of five kinds—**(1) Shraddhan shuddha**—faultless abstainment done with faith, **(2) Vinaya shuddha**—faultless abstainment done with modesty towards deities and gurus, **(3) Anubhashana shuddha**—to repeat the verses related to abstainment (*vosire*) uttered by the guru, **(4) Anupalana shuddha**—faultless abstainment observed with resolve even in adverse conditions and **(5) Bhaava shuddha**—faultless abstainment done with purity of mind being free of attachment and aversion

प्रतिक्रमण-पद PRATIKRAMAN-PAD (SEGMENT OF CRITICAL REVIEW)

२२२. पंचविहे पडिक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा-आसवदारपडिक्कमणे, मिच्छत्तपडिक्कमणे, कसायपडिक्कमणे, जोगपडिक्कमणे, भावपडिक्कमणे।

२२२. प्रतिक्रमण पाँच प्रकार का है-(१) **आस्रवद्वार-प्रतिक्रमण**-प्राणातिपातादि पाँच आस्रवो से निवृत्त होना। (२) **मिथ्यात्व-प्रतिक्रमण**-मिथ्यात्व को त्यागकर सम्यक्त्व मे लौटना। (३) **कषाय-प्रतिक्रमण**-कषायो से निवृत्त होना। (४) **योग-प्रतिक्रमण**-मन, वचन, काय की अशुभ प्रवृत्ति से निवृत्त होना। (५) **भाव-प्रतिक्रमण**-मिथ्यात्व आदि का कृत, कारित, अनुमोदना से त्यागकर शुद्धभाव से सम्यक्त्व में स्थिर रहना।

222. *Pratikraman* (critical review) is of five kinds—**(1) Asravadvar pratikraman**—to be rid of five channels of *karmic* inflow, such as killing beings **(2) Mithyatva pratikraman**—to abandon unrighteousness and regain righteousness **(3) Kashaya pratikraman**—to be rid of passions **(4) Yoga pratikraman**—to be rid of evil indulgence through mind, speech and body **(5) Bhaava pratikraman**—to stabilize oneself in righteousness with spiritual purity gained by renouncing all vices through three means (do, cause to do and affirm doing)

सूत्रवाचना-पद **SUTRAVACHANA-PAD (SEGMENT OF RECITATION OF SUTRAS)**

२२३. पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा, तं जहा–संगहट्ठयाए, उवग्गहट्ठयाए, णिज्जरट्ठयाए, सुत्ते वा मे पज्जवयाते भविस्सति, सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए।

२२३. पाँच कारणो (प्रयोजनो) से सूत्र की वाचना देनी चाहिए–(१) **संग्रह के लिए**–शिष्यो को श्रुत-सम्पन्न (विद्वान) बनाने के लिए। (२) **उपग्रह के लिए**–दूसरो को धर्म बोध देकर परोपकार करने की योग्यता प्राप्त कराने के लिए। (३) निर्जरा के लिए। (४) वाचना देने से मेरा श्रुतज्ञान पुष्ट और विस्तृत होगा, इस कारण से। (५) श्रुत के पठन-पाठन की परम्परा अविच्छिन्न रखने के लिए।

223. *Sutras* should be recited (*vachana*) for five reasons—(1) **Samgraha**—to make disciples scholars of *Shrut* (the *Sutras*) (2) **Upagraha**—to impart ability of benefitting people by teaching them religion (3) **Nirjara**—for shedding *karmas* (4) **for the purpose**—Believing that my knowledge of *Shrut* will enhance and widen (5) for keeping the tradition of *Shrut-jnana* intact

२२४. पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खेज्जा, तं जहा–णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए, वुग्गहविमोयणट्ठयाए, अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीतिकट्टु।

२२४. पाँच कारणो से सूत्र सीखना चाहिए। (१) **ज्ञानार्थ**–नये-नये तत्त्वो के परिज्ञान के लिए। (२) **दर्शनार्थ**–सम्यक्त्व की उत्तरोत्तर विशुद्धि एव सपोषण के लिए। (३) **चारित्रार्थ**–चारित्र की अधिक निर्मलता के लिए। (४) **व्युद्ग्रहविमोचनार्थ**–दूसरो का दुराग्रह छुडाने के लिए। (५) **यथार्थ भाव ज्ञानार्थ**–तत्त्व के यथार्थ परिज्ञान के लिए।

224. *Sutras* should be learned for five reasons—(1) **Jnanarth**—to learn about new facts and realities (2) **Darshanarth**—for gradual sublimation and nurturing of righteousness (3) **Chaaritrarth**—for further purification of conduct (4) **Vyudgrahavimochanarth**—for removing dogmas of others (5) **Yatharth-bhaava jnanarth**—for true knowledge of fundamentals

कल्प-पद **KALP-PAD (SEGMENT OF DIVINE REALMS)**

२२५. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा–किण्हा, [णीला, लोहिता, हालिद्दा], सुक्किल्ला। २२६. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। २२७. बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

२२५. सौधर्म और ईशानकल्प के विमान पाँच वर्ण के है–(१) कृष्ण, (२) नील, (३) लोहित, (४) हारिद्र, (५) शुक्ल। २२६. सौधर्म और ईशानकल्प के विमान पाँच सौ योजन ऊँचे है। २२७. ब्रह्मलोक और लान्तककल्प के देवो के भवधारणीय शरीर की उत्कृष्ट ऊँचाई पाँच रत्नि (हाथ) है।

225. The *vimaans* (celestial vehicles) in Saudharma and Ishan *kalp* are of five colours—(1) *krishna* (black), (2) *neel* (blue), (3) *lohit* (red), (4) *haridra* (yellow) and (5) *shukla* (white) **226.** The *vimaans* (celestial vehicles) in Saudharma and Ishan kalp are five hundred Yojans in height **227.** The maximum height of the gods of Brahmalok and Lantak Kalp is five *Ratnis* (cubits)

बंध–पद BANDH-PAD (SEGMENT OF BONDAGE)

२२८. णेरइया णं पंचवण्णे पंचरसे पोग्गले बंधेंसु वा बंधंति वा बंधस्संति वा, तं जहा–किण्हे, [णीले, लोहिते, हालिद्दे], सुक्किल्ले। तित्ते। [कडुए, कसाए, अंबिले], मधुरे। २२९. एवं जाव वेमाणिया।

२२८. नारक जीवो ने निम्न पाँच वर्ण और पाँच रस वाले पुद्‌गलो को कर्मरूप से भूतकाल मे बॉधा है, वर्तमान मे बॉध रहे है और भविष्य मे बॉधेग–(१) कृष्ण वर्ण, (२) नील वर्ण, (३) लोहित वर्ण, (४) हारिद्र वर्ण और (५) शुक्ल वर्ण तथा (१) तिक्त रस, (२) कटु रस, (३) कषाय रस, (४) अम्ल रस और (५) मधुर रस वाले। २२९. इसीप्रकार वैमानिको तक के सभी दण्डको के जीवो ने पाँच वर्ण और पाँच रस वाले पुद्‌गलो को कर्म रूप से बाँधा है, बाँध रहे है और बाँधेगे।

228. The infernal beings did, do and will acquire bondage of *karma* particles of following five colours and five tastes in past, present and future—(1) *krishna* (black), (2) *neel* (blue), (3) *lohit* (red), (4) *haridra* (yellow) and (5) *shukla* (white) colours and (1) *tikta* (bitter), (2) *katu* (pungent), (3) *kashaya* (astringent), (4) *amla* (sour) and (5) *madhur* (sweet) tastes **229.** In the same way all beings of all *dandaks* up to *Vaimaniks* did, do and will acquire bondage of *karma* particles of following five colours and five tastes

महानदी–पद MAHANADI-PAD (SEGMENT OF GREAT RIVERS)

२३०. जम्बूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं गंगं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा–जउणा, सरू, आवी, कोसी, मही। २३१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं सिंधुं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा–सतद्दू, वितत्था, विपासा, एरावती चंदभागा।

२३०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे (भरत क्षेत्र मे) पाँच महानदियाँ गगा महानदी मे मिलती है–(१) यमुना, (२) सरयू, (३) आवी, (४) कोसी, (५) मही। २३१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दरपर्वत के दक्षिण भाग मे (भरत क्षेत्र मे) पाँच महानदियाँ सिन्धु महानदी मे मिलती है–(१) शतद्रु (सतलज), (२) वितस्ता (झेलम), (३) विपासा (व्यास), (४) ऐरावती (रावी), (५) चन्द्रभागा (चिनाब)। (ये पाँचो पजाब मे है)

231. In Jambu continent, to the south of Mandar Mountain (in Bharat area) five great rivers join the great river Sindhu—(1) Shatadru (Sataluj) (2) Vitasta (Jhelum), (3) Vipasa (Vyas), (4) Airavati (Ravi) and (5) Chandrabhaga (Chenab) (All these are in Punjab) **230.** In Jambu continent, to the south of Mandar Mountain (in Bharat area) five great rivers join the great river Ganga—(1) Yamuna, (2) Sarayu, (3) Aavi, (4) Kosi and (5) Mahi

२३२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रत्त महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेति, तं जहा–किण्हा, महाकिण्हा, णीला, महाणीला, महातीरा। २३३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रत्तावतिं महाणदिं पंच महाणदीओ समप्पेति, तं जहा– इंदा, इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभोगा।

२३२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे (ऐरवत क्षेत्र मे) पाँच महानदियाँ रक्ता महानदी मे मिलती है–(१) कृष्णा, (२) महाकृष्णा, (३) नीला, (४) महानीला, (५) महातीरा। २३३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे (ऐरवत क्षेत्र मे) पाँच महानदियाँ रक्तावती महानदी मे मिलती है-(१) इन्द्रा, (२) इन्द्रसेना, (३) सुषेणा, (४) वारिषेणा, (५) महाभोगा।

232. In Jambu continent, to the north of Mandar Mountain (in Airavat area) five great rivers join the great river Rakta—(1) Krishna, (2) Mahakrishna, (3) Nila, (4) Mahanila and (5) Mahatira **233.** In Jambu continent, to the north of Mandar Mountain (in Airavat area) five great rivers join the great river Raktavati—(1) Indra, (2) Indrasena, (3) Sushena, (4) Varishena and (5) Mahabhoga

तीर्थंकर–पद TIRTHANKAR-PAD (SEGMENT OF TIRTHANKAR)

२३४. पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडा (भवित्ता अगाराओ अणगारियं) पव्वइया, तं जहा–वासुपूज्जे, मल्ली, अरिट्ठणेमी, पासे, वीरे।

२३४. पाँच तीर्थंकर कुमारवास मे रहकर मुण्डित हो अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हुए-(१) वासुपूज्य, (२) मल्ली, (३) अरिष्टनेमि, (४) पार्श्व और (५) महावीर। (वृत्ति अनुसार यहाँ 'कुमार' शब्द राजकुमार अवस्था का सूचक है)

234. Five *Tirthankars* tonsured themselves and became ascetics after renouncing households as *kumars* (princes)—(1) Vasupujya, (2) Malli, (3) Arishtanemi, (4) Parshva and (5) Mahavir

सभा–पद SABHA-PAD (SEGMENT OF ASSEMBLIES)

२३५. चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभा पण्णत्ता, तं जहा–सभासुधम्मा उववातसभा, अभिसेयसभा, अलंकारियसभा, ववसायसभा।

२३६. एगमेगे णं इंदट्ठाणे पंच सभाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सभासुहम्मा, [उववातसभा, अभिसेयसभा, अलंकारियसभा], ववसायसभा।

२३५. चमरचचा राजधानी मे पाँच सभाएँ है-(१) सुधर्मासभा—यहाँ इन्द्र का दरबार लगता है, तथा तीन प्रकार की परिषदे लगती है।, (२) उपपातसभा—उत्पत्तिस्थान, (३) अभिषेकसभा—इन्द्र का राज्याभिषेक का स्थान, (४) अलकारिकसभा—इन्द्र व देवो का शरीर-सज्जा भवन, (५) व्यवसायसभा—देवो का अध्ययन या तत्त्वनिर्णय का स्थान।

२३६. इसी प्रकार एक-एक इन्द्रस्थान (जहाँ इन्द्र रहता है) मे पाँच-पाँच सभाएँ है-(१) सुधर्मासभा, (२) उपपातसभा, (३) अभिषेकसभा, (४) अलकारिकसभा और (५) व्यवसायसभा। *(इनका विशेष वर्णन सचित्र राजप्रश्नीय सूत्र के सूर्याभ देव के प्रकरण मे देखे)*

235. In the capital city Chamarachancha there are five assembly halls—**(1) Sudharma sabha**—this is the court of Indra and is used for three *parishads* (meetings), **(2) Upapata sabha**—hall of birth, **(3) Abhishek sabha**—Indra's coronation hall, **(4) Alankarik sabha**—adornment hall and **(5) Vyavasaya sabha**—study and deliberation hall

236. In the same way at each abode of Indra (overlord of gods) there are five assembly halls—(1) *Sudharma sabha*, (2) *Upapata sabha*, (3) *Abhishek sabha*, (4) *Alankarik sabha* and (5) *Vyavasaya sabha* *(for detailed description see the Suryabh god portion of Illustrated Rajaprashniya Sutra)*

नक्षत्र-पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

२३७. पंच णक्खत्ता पंचतारा पण्णत्ता, तं जहा—धणिट्ठा, रोहिणी, पुणव्वसू, हत्थो, विसाहा।

२३७. पाँच नक्षत्र पाँच-पाँच तारा वाले है-(१) धनिष्ठा, (२) रोहिणी, (३) पुनर्वसु, (४) हस्त, (५) विशाखा।

237. Five *nakshtras* (constellations) have five stars each—(1) Dhanishtha (Belta Delphini, the 24th), (2) Rohini (Aldebaran, the 4th), (3) Punarvasu (Beta Geminorum, the 7th), (4) Hasta (Delta Corvi, the 13th) and (5) Vishakha (Alpha Librae, the 16th)

पापकर्म-पद PAAP KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMAS)

२३८. जीवा णं पंचट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—एगिंदियणिव्वत्तिए, [बेइंदियणिव्वत्तिए, तेइंदियणिव्वत्तिए, चउरिंदियणिव्वत्तिए] पंचिंदियणिव्वत्तिए।

एवं—चिण, उवचिण, बंध, उदीर, वेद, तह णिज्जरा चेवा।

२३८. जीवो ने पाँच स्थानो से निष्पादित पुद्गलो का पापकर्म के रूप से भूतकाल मे सचय किया है, वर्तमान मे कर रहे है और भविष्य मे करेगे, जैसे-(१) एकेन्द्रियनिर्वर्तित पुद्गलो का, (२) द्वीन्द्रियनिर्वर्तित पुद्गलो का, (३) त्रीन्द्रियनिर्वर्तित पुद्गलो का, (४) चतुरिन्द्रियनिर्वर्तित पुद्गलो का, (५) पचेन्द्रियनिर्वर्तित पुद्गलो का।

इसी प्रकार पाँच स्थानो से निर्वर्तित पुद्गलो का पापकर्म रूप से उपचय-(बार-बार सचय करना), बन्ध, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, वर्तमान मे कर रहे है और भविष्य मे करेगे।

238. *Jivas* (souls) did, do, and will attract (*chaya*) particles in the form of *paap-karma* (demeritorious *karmas*) in five ways—(1) *Ekendriya nirvartit* (earned as one-sensed beings), (2) *Dvindriya nirvartit* (earned as two-sensed beings), (3) *Trindriya nirvartit* (earned as three-sensed beings), (4) *Chaturindriya nirvartit* (earned as four-sensed beings) and (5) *Panchendriya nirvartit* (earned as five-sensed animal beings)

In the same way *jivas* (souls) did, do, and will augment (*upachaya*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) particles in the form of *paap-karma* (demeritorious *karmas*) five ways

पुद्गल-पद **PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)**

२३९. पंचपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता।

२३९. पाँच प्रदेश वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है।

239. There are infinite matter molecules having five space-points (ultimate-particles)

२४०. पंचपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव पचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

२४०. (आकाश के) पाँच प्रदेशो मे अवगाढ (अवस्थित) पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। पाँच समय की स्थिति वाले पुद्गल-स्कन्ध अनन्त है। पाँच गुण वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है।

इसी प्रकार शेष वर्ण तथा सभी रस, गन्ध और स्पर्श वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है।

240. There are infinite matter molecules occupying five space-points in space There are infinite matter molecules with an existence of five *Samayas* There are infinite matter molecules with five units of attributes

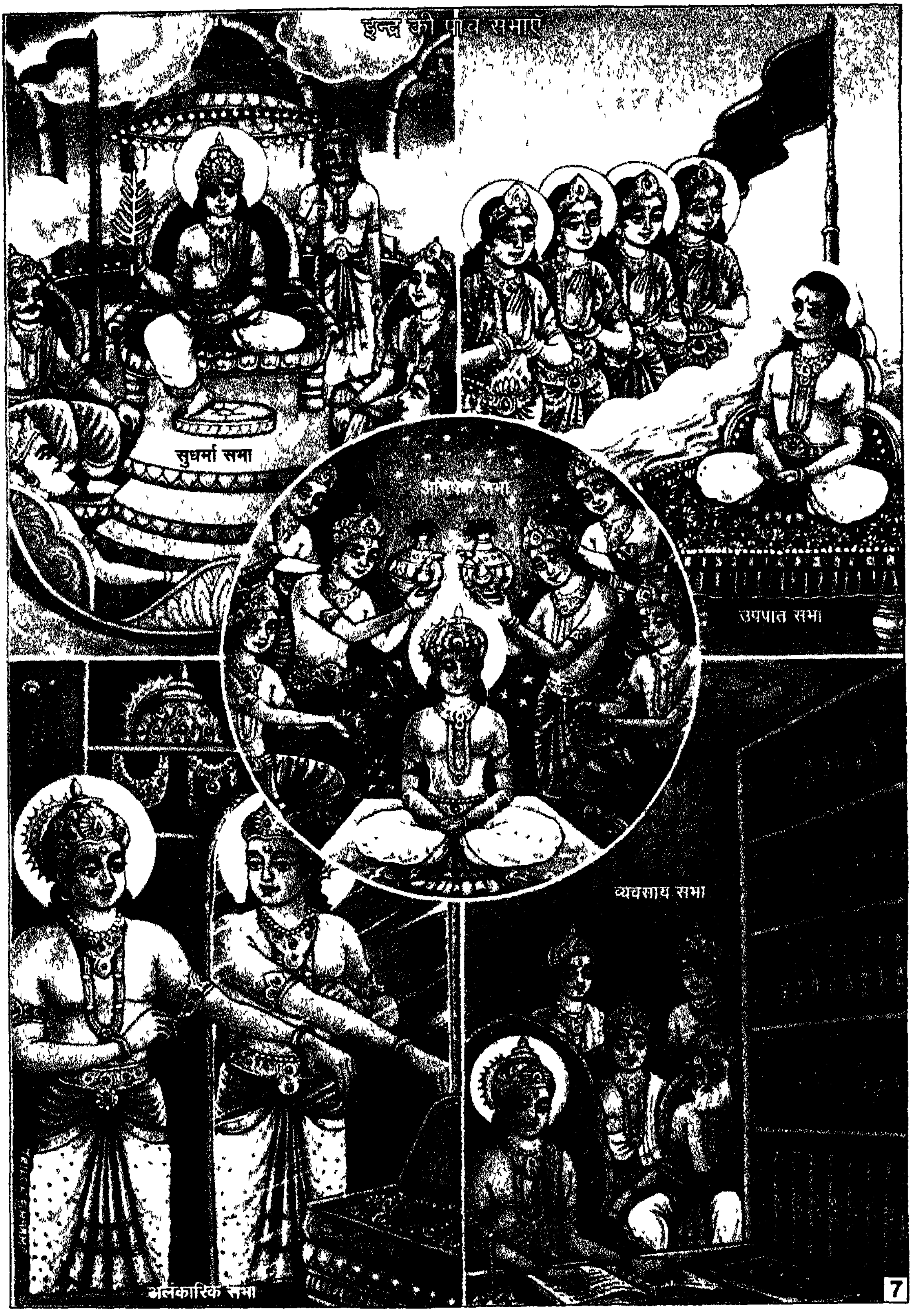
In the same way there are infinite matter molecules with five units of each attribute of appearance, smell, taste, and touch

॥ पंचम स्थान का तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

● END OF THE THIRD LESSON ●

॥ पचम स्थान समाप्त ॥

● END OF THE FIFTH STHAAN ●


इन्द्र की पाँच सभाएँ
सुधर्मा सभा
उपपात सभा
व्यवसाय सभा
अलंकारिक सभा
7

चित्र परिचय ७ | **Illustration No. 7**

इन्द्र की पाँच सभाएँ

(१) **सुधर्मा सभा**—यहाँ इन्द्र का दरबार लगता है और राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी चर्चा होती है।

(२) **उपपात सभा**—यहाँ पर इन्द्र, देव-देवियाँ आदि फूलों की शय्या पर उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न होने पर अप्सराएँ उन्हें पूछती हैं 'आपने पूर्व जन्म में क्या कैसा पुण्य कर्म किया था?'

(३) **अभिषेक सभा**—यहाँ देवगण इन्द्र का राज्याभिषेक करते हैं।

(४) **अलंकारिक सभा**—यहाँ आकर इन्द्र देव विभिन्न प्रकार के आभूषण आदि धारण करते हैं।

(५) **व्यवसाय सभा**—यहाँ आकर इन्द्र राजनीति, धर्मनीति सम्बन्धी ग्रन्थों का अवलोकन करते हैं तथा प्रमुख देवों से नीति सम्बन्धी चर्चा करते हैं।

(सभी इन्द्र स्थानों में पाँच प्रकार की सभाएँ होती हैं।)

[illegible]

FIVE ASSEMBLY HALLS OF INDRAS

(1) Sudharma sabha—this is the court of Indra and is used to discuss state administration

(2) Upapata sabha—hall of birth of gods and goddesses. After birth *Apsaras* (goddesses) ask them about their pious deeds in the past birth

(3) Abhishek sabha—Indra's coronation hall where gods anoint him

(4) Alankarik sabha—adornment hall where Indra adorns his body with a variety of ornaments etc

(5) Vyavasaya sabha—study and deliberation hall where Indra studies various books and discusses policy matters with prominent gods

All abodes of Indras have five assembly halls

—Sthaan 5 Lesson 3 Sutra 235

षष्ठ स्थान

सार : सक्षेप

प्रस्तुत स्थान मे छह-छह सख्या वाले अनेक विषय सकलित है। अन्य स्थानो की अपेक्षा छठा स्थान छोटा है, इसमे एक ही उद्देशक है। परन्तु अनेक महत्त्वपूर्ण चर्चाओ से परिपूर्ण है, जिनका ज्ञान सभी के लिए उपयोगी व आवश्यक है।

सर्वप्रथम गण के धारक गणी या आचार्य की योग्यता की कसौटी बताई है। यदि वह श्रद्धावान्, सत्यवादी, मेधावी, बहुश्रुत, शक्तिमान् और अधिकरणविहीन है, तब वह गणधारण के योग्य है। (सूत्र १)

साधुओ के कर्त्तव्यो को बताते हुए गोचरी के छह भेद, प्रतिक्रमण के छह भेद, सयम-असयम के छह भेद और प्रायश्चित्त का कल्प प्रस्तार आदि वर्णन साधु के लिए बहुत ही उद्‌बोधक है। इसी प्रकार साधु-आचार के घातक छह पलिमथु, छह प्रकार के अवचन और उन्माद के छह स्थानो का वर्णन, उनसे बचने की प्रेरणा देता है।

कुछ जटिल प्रश्नो का समाधान अनेकान्त दृष्टि से बहुत सुन्दर किया है, जैसे अध्यात्मवादी प्राय कहते है इन्द्रिय-सुख सुख नही, दु ख है, किन्तु इस सूत्र मे बडी व्यावहारिक दृष्टि से कहा है- इन्द्रिय-सुख भी सुख तो है, किन्तु अतीन्द्रिय सुख की अपेक्षा वह सुख बहुत नगण्य तथा अस्थायी है। (सूत्र १७)

इसी प्रकार पूजा-प्रतिष्ठा-सत्कार-सन्मान आदि आत्मवान् के लिए उन्नति करने की दिशा मे प्रेरणादायी बनता है तो अनात्मवान् के लिए अहकार का कारण बनता है। (सूत्र ३२) आहार के विषय मे भी यही अनेकान्त दृष्टि मे दी गई है। छह आवश्यक कारण उपस्थित होने पर आहार लिया भी जा सकता है तथा छह कारणो से आहार का त्याग किया जाता है।

सैद्धान्तिक तत्त्वो के निरूपण मे गति-आगति-पद, इन्द्रियार्थ-पद, सवर-असवरपद, सहनन और सस्थानपद, दिशापद, लेश्यापद, मति-पद आदि पठनीय एव महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ है। ज्योतिष की दृष्टि से कालचक्र-पद, दिशा-पद, नक्षत्र-पद, ऋतु-पद, अवमरात्र और अतिरात्र-पद विशेष ज्ञानवर्धक है।

प्राचीन समय मे वाद-विवाद या शास्त्रार्थ मे वादी एव प्रतिवादी किस प्रकार के शाब्दिक दाव-पेच खेलते थे, यह विवाद-पद से ज्ञात होता है।

विष-परिणाम पद, से आयुर्वेद-विषयक ज्ञान प्राप्त होता है। पृष्ठ-पद से अनेक प्रकार के प्रश्नो का, भोजन-परिणाम पद से भोजन कैसा होना चाहिए आदि व्यावहारिक बातो का भी ज्ञान प्राप्त होता है। इसप्रकार यह स्थान अनेक महत्त्वपूर्ण विषयो से समृद्ध है।

SIXTH STHAAN (PLACE NUMBER SIX)

INTRODUCTION

Numerous topics related to the numeral six are compiled in this *Sthaan* As compared to other *sthaans* this *sthaan* is short, it has only one lesson However, it contains many important discussions that are essential and useful for all

Initially it mentions the yardstick of a *gani* or *acharya* who heads a *gana* (group) If he is devoted, truthful, intelligent, scholarly, powerful and strife-free then only he is capable of heading a *gana* (aphorism 1)

Enumerating the duties of ascetics, the description of six types of *gochari* (alms-seeking), *pratikraman* (critical review), discipline-indiscipline and *prayashchit* (atonement) are edifying for ascetics In the same way the description of six *palimanthu* (detriments to ascetic praxis), six types of ill-speech, and six sources of madness inspires one to avoid them

Answers to some complex questions have been provided vividly with the help of doctrine of *Anekant* (relative viewpoint) For instance the assertion that sensual pleasures are miseries not pleasures has been pragmatically presented as—sensual pleasures are, indeed, pleasures but as compared to spiritual pleasures they become insignificant and transient (aphorism 17)

In the same way worship, status, honour and respect inspire the spiritualist towards progress but they become sources of ego for the materialist (aphorism 32) Food habits have also been explained with relative angle There are six reasons for eating and six for abstaining to eat

In context of metaphysical topics *gati-aagati pad, indriyarth-pad, samvar-asamvar pad, samhanan* and *samsthan pad, disha pad, leshya pad,* and *mati pad* provide interesting reading and references *Kaal-chakra pad, disha pad, nakshatra pad,* and *avamratra-atiratra* pad are informative

In ancient times how debaters wrestled with arguments and counter arguments has been explained in *vivad pad*

Vish parinam pad informs about *Ayurveda, prishta pad* about many types of questions, and *bhojan parinam pad* about practical knowledge of food Thus this *Sthaan* contains many important topics ●●

षष्ठ स्थान
SIXTH STHAAN (Place Number Six)

गणधारण–पद **GANADHAARAN-PAD (SEGMENT OF HEADING THE GROUP)**

१. छहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति गणं धारित्तए, तं जहा–सड्ढी पुरिसजाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, बहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिमं, अप्पाधिकरणे।

१. छह स्थानो (गुणो) से सम्पन्न अनगार गण धारण करने के योग्य होता है–(१) श्रद्धावान् पुरुष, (२) सत्यवादी पुरुष, (३) मेधावी पुरुष, (४) बहुश्रुत पुरुष, (५) शक्तिमान् पुरुष, (६) अल्पाधिकरण वाला पुरुष।

1. An ascetic endowed with six *sthaans* (qualities) is capable of heading a *gana* (group)—(1) *Shriddhavan purush* (devoted person), (2) *satyavaadi purush* (truthful person), (3) *medhavi purush* (intelligent person), (4) *bahushrut purush* (scholarly person), (5) *shaktiman purush* (powerful person) and (6) *alpadhikaran purush* (strife-free person)

विवेचन–गण व्यवस्था के जो विशेष पद है उनमे आचार्य, उपाध्याय, गणी और प्रवर्तक ये चार पद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गण की व्यवस्था सँभालने वाले पुरुष मे ये छह गुण होना बहुत आवश्यक है–

(१) **श्रद्धावान्**–जो श्रद्धावान् होता है वही मर्यादा का पालन कर सकता है। देव-गुरु-धर्म के प्रति जिसकी श्रद्धा नही है, वह न तो मर्यादा का पालन करेगा और न ही धर्म सघ को ठीक से चला सकेगा। (२) **सत्यवादी**–इसके दो अर्थ है–यथार्थवक्ता और स्वीकृत मर्यादाओ का पालन करने मे समर्थ। (३) **मेधावी**–तीव्र बुद्धि सम्पन्न। (४) **बहुश्रुत**–अनेक शास्त्रो का ज्ञाता। जो गणनायक स्वय ज्ञानी या बहुश्रुत नही होगा वह दूसरो को क्या ज्ञान देगा ? (५) **शक्तिमान्**–शक्ति अनेक प्रकार की होती है–शरीर की शक्ति, मत्र व विद्या की शक्ति, तत्र की सिद्धियो से सम्पन्न, विशिष्ट शिष्य सम्पदा सम्पन्न। शक्ति से ही धर्म की रक्षा होती है। (६) **अल्पाधिकरण**–जो कलह कदाग्रह से मुक्त हो, उपशान्त वृत्ति या प्रशान्त स्वभाव वाला हो। वृत्तिकार ने निम्न गाथा उद्धृत की है–

सुत्तत्थे निम्माओ पिय–दढ धम्मोऽणुवत्तणाकुसलो।
जाइ कुल संपन्नो गंभीरो लद्धिमंतो य।

संगहुवग्गह निरओ कय करणो पवयणाणुरागी य।
एवं विहा उ भणिओ गणसामी जिण वरिंदेहिं॥ –पच वस्तु १३१५-१६

जो सूत्र एव अर्थ मे कुशल है, प्रियधर्मी और दृढधर्मी है, शिष्यो को अनुशासन मे रखना जानता है, जाति-कुल सम्पन्न है, गम्भीर है, लब्धि-सम्पन्न है, सग्रह व उपकार करने मे कुशल है, कृत-करण (परोपकार) मे चतुर है, प्रवचनानुरागी है। इन गुणो से सम्पन्न अणगार ही गण का स्वामी हो सकता है। *(वृत्ति भाग-२ पृष्ठ ६०३)*

Elaboration—*Acharya, Upadhyaya, Gani* and *Pravartak* are the four most important positions in the management system of a *Gana* It is essential for a person responsible for managing a *gana* to have the following six qualities—

(1) *Shriddhavan*—only a devoted person is capable of adhering to the codes of ascetic-discipline A person devoid of faith in deity, guru and religion is neither capable of following ascetic-discipline nor proper management of the *sangh* (religious organization) (2) *Satyavaadi*—this means a truthful person as well as one capable of observing the accepted ascetic-discipline (3) *Medhavi*—highly intelligent person (4) *Bahushrut*—a scholar of many scriptures What can a head of a *gana*, who is not a scholar himself, teach others ? (5) *Shaktiman*—power is of many varieties—physical power, power of mantras, power of *tantras*, and power of accomplished disciples Religion is protected by power alone (6) *Alpadhikaran*—a person free of strife and dogmatic attitude and endowed with serene bearing and peaceful nature

The commentator (*Vritti*) has quoted a verse from *Panch Vastu* (1315-16)—

Only a person who is a scholar of text and meaning of scriptures, loves religion, and is steadfast in conduct, who keeps disciples in discipline, who belongs to good caste and family, who is solemn, endowed with special powers, skillful in collection as well as donation, clever in prescribed duties and loves discourse, can be the master Only an ascetic endowed with all these qualities can become the head of a *gana* *(Vritti, part-2, p 603)*

निर्ग्रन्थी–अवलंबन–पद **NIRGRANTHI AVALAMBAN-PAD (SEGMENT OF SUPPORT)**

२. छहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ, तं जहा– खित्तचित्तं, दित्तचित्तं जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्तं, साहिकरणं।

२. छह कारणो से निर्ग्रन्थ, निर्ग्रन्थी को पकडता हुआ, सहारा देता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है–(१) निर्ग्रन्थी के विक्षिप्तचित्त हो जाने पर, (२) दृप्तचित्त हो जाने पर, (३) यक्षाविष्ट हो जाने पर, (४) उन्माद के कारण मस्तिष्क का सन्तुलन खो देने पर, (५) उपसर्ग व विपदा मे फँस जाने पर, (६) कलह के कारण उद्विग्न हो जाने पर।

2. A *Shraman Nirgranth* (male ascetic) does not defy the word of *Bhagavan* if he holds (*grahan*) and supports (*avalamban*) a *nirgranthi*

(female ascetic) for six reasons—(1) when she is *vikshipt-chitt* (crazy), (2) when she is *dript-chitt* (euphoric), (3) when she is *yakshavisht* (possessed by spirits), (4) when she is *unmaad prapt* (mentally deranged due to excitement), (5) when she is *upasarg prapt* (tormented by affliction) and (6) when she is *sadhikarana* (excited due to strife)

साधर्मिक-अन्तकर्म पद SADHARMIK-ANTKARMA-PAD (SEGMENT OF LAST RITES OF CO-RELIGIONIST)

३. छहिं ठाणेंहि णिग्गंथा णिग्गंथीओ य साहम्मियं कालगतं समायरमाणा णाइक्कमंति, तं जहा–अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा, बाहीहिंतो वा णिब्बाहिं णीणेमाणा, उवेहेमाणा वा, उवासमाणा वा, अणुण्णवेमाणा वा, तुसिणीए वा संपव्वयमाणा।

३. छह कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थी कालप्राप्त हुए अपने साधर्मिक का अन्त्यकर्म करते हुए भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है–(१) उसे उपाश्रय से बाहर लाते हुए। (२) बस्ती से बाहर लाते हुए। (३) उपेक्षा करते या उदासीनता वरतते हुए। (४) शव के समीप रहकर रात्रि-जागरण करते हुए। (५) मृत साधक के स्वजन या गृहस्थो को सूचित करते हुए। (६) उसे एकान्त मे विसर्जित करने के लिए मौन भाव से जाते हुए।

3. *Shraman Nirgranth* and *Nirgranthi* (male and female ascetics) do not defy the word of *Bhagavan* if they perform last rites of a co-religionist for six reasons—(1) bringing him out of the *upashraya* (place of stay), (2) taking him out of the inhabited area, (3) showing unconcern or apathy to him, (4) keeping awake near the dead body during the night, (5) informing the relatives of the deceased or other householders and (6) proceeding silently to place the body at some isolated spot

विवेचन–प्राचीन काल मे जब साधु और साध्वियो के सघ विशाल होते थे और वे प्राय नगर के बाहर रहते थे, उस समय किसी स्थिति मे किसी साधु या साध्वी के कालगत होने पर उसकी अन्तक्रिया उन्हे करनी पडती थी। उसी का निर्देश प्रस्तुत सूत्र मे किया है।

प्रथम दो कारणो से ज्ञात होता है कि जहाँ साधु या साध्वी कालगत हो, उस स्थान से बाहर निकालना और फिर उसे निर्दोष स्थण्डिल पर विसर्जित करने के लिए बस्ती से बाहर ले जाने का भी काम उनके साम्भोगिक साधु या साध्वी स्वय ही करते थे।

टीकाकार ने 'उपेक्षा' नामक तीसरे कारण के दो भेद किये है–व्यापारोपेक्षा और अव्यापारोपेक्षा। व्यापारोपेक्षा अर्थात्–मृतक के अगच्छेदन–बधनादि क्रियाएँ करना। बृहत्कल्प भाष्य आदि से ज्ञात होता है कि यदि कोई साधक रात्रि मे कालगत हो जावे तो उसमे कोई भूत-प्रेत आदि प्रवेश न कर जावे, इस आशका से उसकी अगुली के मध्य पर्व का भाग छेद दिया जाता था। तथा हाथ-पैरो के अगूठो को रस्सी से बाँध दिया जाता था। अव्यापारोपेक्षा का अर्थ है–मृतक के सम्बन्धियो द्वारा सत्कार-सस्कार मे

उदासीन रहना। उससे ज्ञात होता है कि मृतक के सम्बन्धी आकर उसका मृत्यु महोत्सव किसी विधि-विशेष से मनाते रहे होगे, उसमे साधु या साध्वी को उदासीन रहना चाहिए। आचार्यश्री आत्मारामजी म के अनुसार उपेक्षा का अर्थ है-साधर्मिक की मृत्यु पर रुदन विलाप न करते हुए उदासीन या उपेक्षा भाव रखना।

चौथा कारण स्पष्ट बताता है कि यदि रात्रि मे कोई साधु कालगत हो जावे और उसका तत्काल निर्हरण सम्भव न हो तो साम्भोगिको को उसके पास रात्रि-जागरण करते हुए रहना चाहिए।

पाँचवे कारण से ज्ञात होता है कि कालगत साधु के सम्बन्धी जनो को मरण होने की सूचना देने के लिए कह रखा हो तो उन्हे उसकी सूचना देना भी उनका कर्त्तव्य है।

छठे कारण से ज्ञात होता है कि कालगत साधर्मिकको विसर्जित करने के लिए साधु या साध्वियो को जाना पडे तो मौनपूर्वक जाना चाहिए। बृहत्कल्पभाष्य मे इस विषयक प्राचीन परम्परा विधि का विस्तृत वर्णन किया है। *(देखे ठाण पृष्ठ ६८८-६८९)*

Elaboration—In ancient times ascetics moved about in large groups and generally stayed outside a city They had to perform the last rites of a deceased ascetic on their own These directions are in that context only

The first two reasons inform us that during that period it was part of the duty of the ascetics to bring out the body of a deceased colleague and take it to a solitary spot for last rites

The commentator (*Tika*) has divided the third reason—*upeksha*—into two categories, *vyaparopeksha* and *avyaparopeksha* *Vyaparopeksha* means avoiding the rituals of piercing or tying body-parts *Brihatkalp Bhashya* and other sources inform that if some ascetic died during the night, in order to avoid evil spirits entering his body, either the middle part of his finger was pierced or his thumbs and toes were tied with a string *Avyaparopeksha* means apathy towards any post-death rituals performed by relatives of the deceased This indicates that some post-death ceremonies and rituals by relatives of the deceased were in vogue during that period An ascetic should avoid joining such functions According to Acharya Shri Atmamarm ji M *upeksha* means to avoid crying or any other expression of grief, and remain unconcerned at such death

The fourth reason clearly indicates that if some ascetic dies during the night and it is not possible to perform last rites at once, his colleagues should remain awake near the body

The fifth reason informs that if the relatives of the deceased had already desired to be informed, then it was the duty of the colleagues to inform them about the death

The sixth reason indicates that if the ascetics are to carry the body to an isolated spot they should do it observing complete silence A detailed description of the ancient tradition on this subject is available in *Brihatkalp Bhashya* (see *Thanam*, pp 688-89)

छद्मस्थ-केवली पद CHHADMASTH-KEVALI-PAD (SEGMENT OF CHHADMASTH-KEVALI)

४. छ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आयासं, जीवमसरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं।

एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे (केवली) सव्वभावेणं जाणति पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, (अधम्मत्थिकायं, आयासं, जीवमसरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं), सद्दं।

४. छद्मस्थ पुरुष छह स्थानो को सम्पूर्ण रूप से (समस्त पर्यायो से) न जानता है और न देखता है-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीररहित जीव, (५) पुद्गल परमाणु, (६) शब्द।

जिनको विशिष्ट ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, वे ज्ञान-दर्शन के धारक अर्हन्त, जिन, केवली सम्पूर्ण रूप से (सर्व पर्यायो से) इनको जानते और देखते है-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीररहित जीव, (५) पुद्गल परमाणु, (६) शब्द।

4. A *chhadmasth* (a person in state of karmic bondage) person cannot see or know six things fully (all their possible modes)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter and (6) *shabd* (sound)

Arhat, Jina, and *Kevali* endowed with right knowledge and perception see and know fully (all their possible modes) these five things—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter and (6) *shabd* (sound)

असंभव-पद ASAMBHAVA-PAD (SEGMENT OF IMPOSSIBLE)

५. छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्डीति वा जुतीति वा जसेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कार-परक्कमेति वा, तं जहा—(१) जीवं वा अजीवं करणयाए। (२) अजीवं वा जीवं करणयाए। (३) एगसमए णं वा दो भासाओ भासिए। (४) सयं कडं वा कम्मं वेदेमि वा मा वा वेदेमि। (५) परमाणुपोग्गलं वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए अगणिकाएणं वा समोदहित्तए। (६) बहिआ वा लोगंता गमणयाए।

५. ससार के सभी जीवो मे छह कार्य करने की ऋद्धि (लब्धि) द्युति (माहात्म्य), यश, बल (शरीर शक्ति), वीर्य (आत्म शक्ति), पुरस्कार (उत्साह) और पराक्रम (सामर्थ्य) नही होता है, अर्थात् निम्न छह काम करने का सामर्थ्य किसी जीव मे नही है-(१) जीव को अजीव करना। (२) अजीव को जीव करना। (३) एक समय मे दो भाषा बोलना। (४) अपने कृत कर्म का फल अपनी इच्छानुसार भोगना। (५) पुद्गल परमाणु का छेदन-भेदन करना या अग्नि से जलाना। (६) लोकान्त से बाहर जाना। (ये छहो असम्भव कार्य है)

5. All beings in the world do not have the *riddhi* (opulence or special powers), *dyuti* (radiance or majesty), *yash* (fame), *bal* (strength), *virya* (spiritual potency), *purushakar* (virility or prowess) and *parakram* (valour) to perform six acts—(1) to turn soul into matter, (2) to turn matter into soul, (3) to speak in two languages at the same moment, (4) to suffer the fruits of one's deeds at will, (5) to pierce or burn ultimate-particle and (6) to go beyond the edge of *lok* (occupied space or the universe) (All these acts are impossible)

जीव–पद **JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING ORGANISMS)**

६. छज्जीवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा–पुढविकाइया, [आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया], तसकाइया।

६. छह जीवनिकाय है- (१) पृथ्वीकायिक, [(२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायिक,] (६) त्रसकायिक।

6. Bodied beings are of six kinds—(1) *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *Apkayik* (water-bodied beings), (3) *Tejaskayik* (fire-bodied beings), (4) *Vayukayik* (air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings) and (5) *Tras-kayik* (mobile-bodied beings)

७. छ तारग्गहा पण्णत्ता, तं जहा–सुक्के, बुहे, बहस्सती, अंगारए, सणिच्छरे, केतू।

७. ताराग्रह छह (तारो के आकार वाले ग्रह) है-(१) शुक्र, (२) बुध, (३) बृहस्पति, (४) अगारक (मगल), (५) शनिश्चर, (६) केतु। (नौ ग्रह मे-सूर्य, चन्द्र और राहु तीन तारो के आकार के नही है।)

7. There are six *taragrahas* (star-like planets) (1) Shukra (Venus), (2) Budh (Mercury), (3) Brihaspati (Jupiter), (4) Angarak or Mangal (Mars), (5) Shanishchar (Saturn) and (6) Ketu

८. छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा–पुढविकाइया, जाव, तसकाइया।

८. ससार मे रहने वाले जीव छह प्रकार के है-(१) पृथ्वीकायिक, [(२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायिक,] (६) त्रसकायिक।

8. Beings living in the world are of six kinds—(1) *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *Apkayik* (water-bodied beings), (3) *Tejaskayik* (fire-bodied beings), (4) *Vayukayik* (air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings) and (6) *Tras-kayik* (mobile-bodied beings)

गति–आगति पद GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF BIRTH FROM AND TO)

९. पुढविकाइया छगतिया छआगतिया पण्णत्ता, तं जहा–पुढविकाइए, पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा, [आउकाइएहिंतो वा, तेउकाइएहिंतो वा, वाउकाइएहिंतो वा, वणस्सइकाइएहिंतो वा], तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं सा पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा, जाव तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा। १०. आउकाइया छगतिया एवं छआगतिया चेव जाव तसकाइया।

९. पृथिवीकायिक जीव छह स्थानो से गति और छहस्थानो से आगति करते है–(१) पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिको मे उत्पन्न होता हुआ पृथिवीकायिको से, अप्कायिको से, तेजस्कायिको से, वायुकायिको से, वनस्पतिकायिको से, या त्रसकायिको से आकर उत्पन्न होता है।

वही पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याय को छोडताहुआ पृथिवीकायिको मे, (अप्कायिको, तेजस्कायिको, वायुकायिको व वनस्पतिकायिको मे) या त्रसकायिको मे जाकर उत्पन्न होता है। १०. इसी प्रकार अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीव छह स्थानो मे गति तथा छह स्थानो से आगति करते है।

9. *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) have six kinds of *gatis* (reincarnation to) and six aagatis (reincarnation from)—A being taking birth as an earth-bodied being reincarnates from either earth-bodied beings, water-bodied beings, fire-bodied beings, air-bodied beings, plant-bodied beings or mobile-bodied beings

The same earth-bodied being leaving the state of earth-bodied being reincarnates in the genus of either earth-bodied beings, water-bodied beings, fire-bodied beings, air-bodied beings, plant-bodied beings or mobile-bodied beings **10.** In the same way water-bodied beings, fire-bodied beings, air-bodied beings, plant-bodied beings or mobile-bodied beings also have six kinds of *gatis* (reincarnation to) and six *aagatis* (reincarnation from)

जीव–पद JIVA-PAD (SEGMENT OF BEINGS)

११. छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–आभिणिबोहियणाणी, [सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी], केवलणाणी, अण्णाणी।

अहवा–छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–एगिंदिया, [बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया], पंचिंदिया, अणिंदिया।

अहवा–छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–ओरालियसरीरी, वेउव्वियसरीरी, आहारगसरीरी, तेअगसरीरी, कम्मगसरीरी, असरीरी।

११. सब जीव छह प्रकार के है–(ज्ञान की अपेक्षा) (१) आभिनिबोधिकज्ञानी, [(२) श्रुतज्ञानी, (३) अवधिज्ञानी, (४) मन पर्यवज्ञानी], (५) केवलज्ञानी और (६) अज्ञानी (मिथ्याज्ञानी)।

अथवा–सब जीव छह प्रकार के है। (इन्द्रियो की अपेक्षा) (१) एकेन्द्रिय, (२) द्वीन्द्रिय, (३) त्रीन्द्रिय, (४) चतुरिन्द्रिय, (५) पचेन्द्रिय, (६) अनिन्द्रिय (सिद्ध)।

अथवा–सब जीव छह प्रकार के है। (शरीर की अपेक्षा) (१) औदारिकशरीरी, (२) वैक्रियशरीरी, (३) आहारकशरीरी, (४) तैजसशरीरी, (५) कार्मणशरीरी और (६) अशरीरी (मुक्तात्मा)।

11. All beings are of six kinds (in terms of knowledge)—(1) *abhinibodhik jnani*, (2) *shrut-jnani*, (3) *avadhi-jnani*, (4) *manahparyav jnani*, (5) *Keval-jnani* and (6) *ajnani* (having false knowledge)

Also all beings are of six kinds (in terms of sense organs)—(1) *Ekendriya* (one-sensed beings), (2) *Dvindriya* (Two-sensed beings), (3) *Trindriya* (three-sensed beings), (4) *Chaturindriya* (four-sensed beings), (5) *Panchendriya-tiryagyonik* (five-sensed animal beings) and (6) *Anindriya* (without sense organs, Siddha)

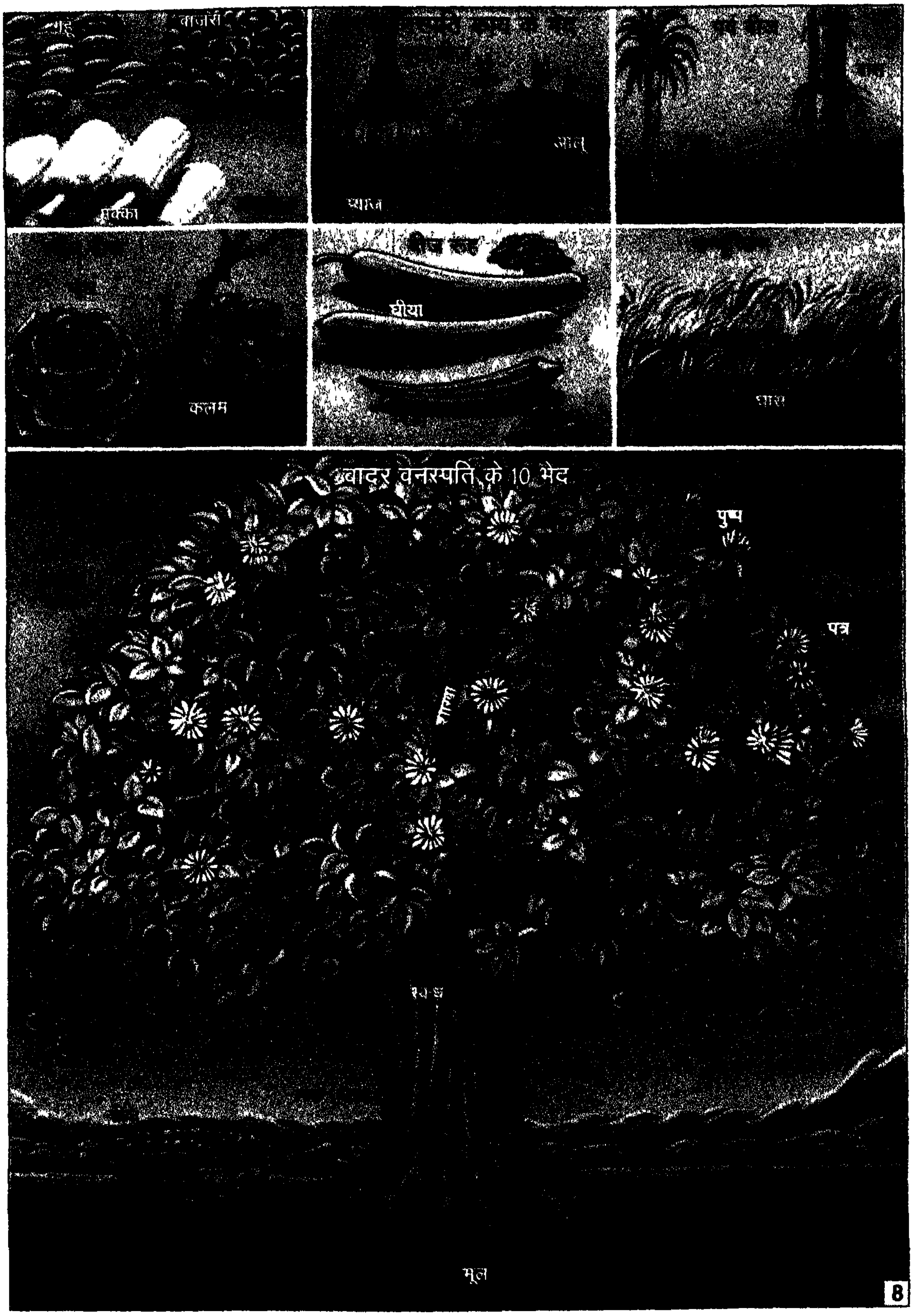
Also all beings are of six kinds (in terms of bodies)—(1) *audarik sharıri* (having gross physical body), (2) *vaikriya sharıri* (having transmutable body), (3) *aharak sharıri* (having telemigratory body), (4) *taijas sharıri* (having fiery body), (5) *karman sharıri* (having karmic body) and (6) *asharıri* (without a body, liberated soul)

तृणवनस्पति–पद TRINA-VANASPATI-PAD (SEGMENT OF GRAMINEOUS PLANTS)

१२. छव्विहा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा–अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा, संमुच्छिमा।

१२. तृण–वनस्पतिकायिक जीव छह प्रकार के है–(१) अग्रबीज (बाजरा–गेहूँ आदि), (२) मूलबीज (आलू आदि), (३) पर्व बीज (गन्ना, बाँस आदि), (४) स्कन्ध बीज (गुलाब आदि कलम वाले पौधे) (५) बीजरुह (बीज से उत्पन्न होने वाले) और (६) सम्मूर्च्छिम (बिना बीज के उत्पन्न होने वाला घास आदि)

12. *Trin-vanaspatikayik jiva* (gramineous or gross plant-bodied beings) are of six kinds—(1) *agra-beej*—those which grow when the tip is


बाजरी
मक्का
आलू
प्याज
कलम
घीया
घास
बादर वनस्पति के 10 भेद
पुष्प
पत्र
मूल
8

चित्र परिचय ८

Illustration No 8

बादर वनस्पतिकाय

वनस्पतिकायिक जीवो के मुख्य छह प्रकार है

(१) **अग्र बीज**–जिनका बीज उनके अग्र भाग मे हो। जैसे गेहूँ बाजरा, मक्का आदि।

(२) **मूल बीज**–जिनका मूल मे बीज हो। जैसे आलू प्याज आदि।

(३) **पर्व बीज**–जिनके पर्व मे बीज हो। जैसे गन्ना, बांस आदि।

(४) **स्कध बीज**–जिनके स्कन्ध (गाठ) मे बीज हो जिनकी कलम लगती है। जैसे गुलाब आदि।

(५) **बीज रूह**–जिनकी उत्पत्ति बीज से हो।

(६) **सम्मूर्च्छिम**–तृण घास आदि जो बीज न होने पर भी उत्पन्न होती है।

स्थान ६ सूत्र १२

बादर वनस्पतिकाय के दस भेद है

जैसे एक विशाल वृक्ष को देखने से पता चलता है उसके जड से बीज तक दस अंग है

(१) **मूल**–जड, (२) **कन्द**–जड से ऊपर का भाग और स्कन्ध से नीचे का भाग (३) **स्कन्ध**–जहाँ से शाखाएँ निकलती है (४) **त्वक**–छाल (५) **शाखा**–तना डालियाँ (६) **प्रवाल**–अंकुर या कोंपल (७) **पत्र** (८) **पुष्प**–फूल (९) **फल** और (१०) **बीज**।

स्थान १० सूत्र १५५

GROSS PALNT-BODIED BEINGS

There are six main categories of plant-bodied beings-

(1) Agra-beej—those which grow when the tip is planted such as millet corn and wheat

(2) Mool-beej—those which grow when the root-bulb is planted like potatoes and onions

(3) Parva-beej—those which grow when the knot is planted like sugar cane and bamboo

(4) Skandh-beej—those which grow when the branch is planted like roses

(5) Beej-ruha—those which grow from seeds

(6) Sammurchhim—those which grow without seeds such as wild grass

- *Sthaan 6 Sutra 12*

There are ten parts of plant-bodied beings--

When we see a large tree we find that from roots to seeds it has ten parts—

(1) *mool* (root), (2) *kand* (bulbous root or portion between roots and trunk), (3) *skandh* (trunk from where it divides into branches), (4) *tvak* (bark), (5) *shakha* (branch), (6) *praval* (sprout), (7) *patra* (leaf), (8) *pushp* (flower), (9) *phal* (fruit), and (10) *beej* (seed)

—*Sthaan 10 Sutra 155*

planted, such as millet and wheat (2) *Mool-beej*—those which grow when the root-bulb is planted like potatoes (3) *Parva-beej*—those which grow when the knot is planted like sugar-cane and bamboo, (4) *skandh-beej*—those which grow when the branch is planted like roses (5) *Beej-ruha*—those which grow from seeds (6) *Sammurchhim*—those which grow without seeds, such as wild grass

नो सुलभ–पद **NO SULABH-PAD (SEGMENT OF NOT EASY)**

१३. छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति, तं जहा–माणुस्सए भवे। आरिए खेत्ते जम्मं। सुकुले पच्चायाती। केवलीपण्णत्तस्स धम्मस्स सवणता। सुतस्स वा सद्दहणता। सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोइतस्स वा सम्मं काएणं फासणता।

१३. छह स्थान सब जीवो को प्राप्त होना सुलभ नही है–(१) मनुष्य भव, (२) आर्य क्षेत्र मे जन्म, (३) सुकुल (धार्मिक कुल) मे उत्पन्न होना, (४) केवलिप्रज्ञप्त धर्म का सुनना, (५) सुने हुए धर्म पर श्रद्धा करना तथा (६) श्रद्धा प्रतीति और रुचि किये गये धर्म का काय से सम्यक् स्पर्शना (आचरण करना)।

13. Six things are not easily available to all beings—(1) birth as a human being, (2) birth in *Arya kshetra* (the land of Aryas), (3) birth in a noble religious) family, (4) to listen to the religion propagated by a *Kevali*, (5) to have faith on the so listened religion, and (6) to actually follow in practice properly (to follow the path of) the religion of one's faith, with awareness and interest

इन्द्रियार्थ–पद **INDRIYARTH-PAD (SEGMENT OF SUBJECTS OF SENSE ORGANS)**

१४. छ इंदियत्था पण्णत्ता, तं जहा–सोइंदियत्थे, [चक्खिंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे], फासिंदियत्थे, णोइंदियत्थे।

१४. इन्द्रियो के अर्थ (विषय) छह है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय का अर्थ–शब्द, (२) चक्षुरिन्द्रिय का अर्थ रूप, (३) घ्राणेन्द्रिय का अर्थ–गन्ध, (४) रसनेन्द्रिय का अर्थ–रस, (५) स्पर्शनेन्द्रिय का अर्थ–स्पर्श, (६) नोइन्द्रिय (मन) का अर्थ–श्रुत।

14. *Indriyas* (sense organs) have six arth (subjects)—(1) the subject of *shrotrendriya* (ear) is sound, (2) the subject of *chakshu-indriya* (eyes) is appearance, (3) the subject of *ghranendriya* (nose) is smell, (4) the subject of *rasanendriya* (taste-buds) is taste, (5) the subject of *sparshanendriya* (touch) is touch (6) the subject of *noindriya* (mind) is *shrut* (the religion propagated by *Jinas*)

विवेचन–पॉच इन्द्रियो के विषय तो नियत एव सर्व-विदित है किन्तु मन का विषय नियत नही है। वह सभी इन्द्रियो के द्वारा गृहीत विषय का चिन्तन करता है, अत सर्वार्थग्राही है। टीकाकार अभयदेव

सूरि ने लिखा है कि श्रोत्रेन्द्रिय के द्वारा मनोज्ञ शब्द सुनने से जो सुख होता है, वह तो श्रोत्रेन्द्रिय-जनित है, किन्तु इष्ट-चिन्तन से जो सुख मिलता है, वह नोइन्द्रिय-जनित है। चिन्तन, विचार आदि श्रुतज्ञान का विषय है। *(वृत्ति, भाग २ पृष्ठ ६०९)*

Elaboration—The subjects of five sense organs are definite and known to all but that of mind is indefinite Mind contemplates on everything that is experienced by sense organs and thus everything is its subject Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*), writes that the pleasure derived by listening to a sweet sound is provided by ears but the pleasure derived by beneficial thoughts is provided by mind Contemplation and reflection are subjects of *shrut jnana* (scriptural knowledge *(Vritti, part-2, p 609)*

संवर असंवर–पद SAMVAR-ASAMVAR-PAD (SEGMENT OF BLOCKAGE AND NON-BLOCKAGE OF INFLOW OF KARMAS)

१५. छव्विहे संवरे पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियसंवरे, [चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे] फासिंदियसंवरे, णोइंदियसंवरे। १६. छव्विहे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियअसंवरे, [चक्खिंदियअसंवरे, घाणिंदियअसंवरे], जिब्भिंदियअसंवरे), फासिंदियअसंवरे, णोइंदियअसंवरे।

१५. सवर छह प्रकार का है, जैसे-(१) श्रोत्रेन्द्रिय-सवर, [(२) चक्षुरिन्द्रिय-सवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-सवर, (४) रसनेन्द्रिय-सवर], (५) स्पर्शनेन्द्रिय-सवर, (६) नोइन्द्रिय (मन) सवर। १६. असवर छह प्रकार का है-(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय-असवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-असवर, (४) रसनेन्द्रिय-असवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असवर, (६) नोइन्द्रिय-असवर।

15. *Samvar* (blockage of inflow of *karmas* or abstaining from indulgence in subjects of sense organs) is of six kinds—(1) *shrotendriya samvar*, (2) *chakshurindriya samvar*, (3) *ghranendriya samvar*, (4) *rasanendriya samvar*, (5) *sparshendriya samvar* and (6) *noindriya samvar* **16.** *Asamvar* (inflow of *karmas* or indulgence in subjects of sense organs) is of six kinds—(1) *shrotendriya asamvar*, (2) *chakshurindriya asamvar*, (3) *ghranendriya asamvar*, (4) *rasanendriya asamvar*, (5) *sparshendriya asamvar* and (6) *noindriya asamvar*

सात–असात पद SAAT-ASAAT-PAD (SEGMENT OF HAPPINESS AND SORROW)

१७. छव्विहे साते पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियसाते, [चक्खिंदियसाते, घाणिंदियसाते, जिब्भिंदियसाते, फासिंदियसाते], णोइंदियसाते। १८. छव्विहे असाते पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियअसाते, जाव णोइंदियअसाते।

१७. **सात**–(सुख) छह प्रकार का है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-सुख, [(२) चक्षुरिन्द्रिय-सुख, (३) घ्राणेन्द्रिय-सुख, (४) रसनेन्द्रिय-सुख, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-सुख], (६) नोइन्द्रिय-(मन) का सुख।
१८. **असात**–(दु ख) छह प्रकार का है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असुख, [(२) चक्षुरिन्द्रिय-असुख, (३) घ्राणेन्द्रिय-असुख, (४) रसनेन्द्रिय-असुख], (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असुख,] (६) नोइन्द्रिय-असुख।

17. *Saat* (happiness or pleasure) is of six kinds—(1) *shrotendriya saat* (pleasure in listening), (2) *chakshurindriya saat*, (3) *ghranendriya saat*, (4) *rasanendriya saat*, (5) *sparshendriya saat* and (6) *noindriya saat*
18. *Asaat* (unhappiness or pain) is of six kinds—(1) *shrotendriya asaat*, (2) *chakshurindriya asaat*, (3) *ghranendriya asaat*, (4) *rasanendriya asaat*, (5) *sparshendriya asaat* and (6) *noindriya asaat*

प्रायश्चित्त-पद PRAYASHCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)

१९. छव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा–आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे।

१९. प्रायश्चित्त छह प्रकार का है–(१) आलोचना-योग्य, (२) प्रतिक्रमण-योग्य, (३) तदुभय-योग्य, (४) विवेक-योग्य, (५) व्युत्सर्ग-योग्य, (६) तप-योग्य। (दशम स्थान सूत्र ७३ पर प्रायश्चित्त के दस भेद बताये है, वही पर इनकी सक्षिप्त परिभाषा भी दी है।)

19. *Prayashchit* (atonement) is of six kinds—(1) requiring *alochana* (criticism), (2) requiring *pratikraman* (critical review), (3) *tadubhaya* (requiring both *alochana* and *pratikraman*) (4) requiring *vivek* (sagacity), (5) requiring *vyutsarg* (abstainment) and (6) requiring *tap* (austerities) (In tenth *sthaan*, aphorism 73 ten kinds of atonement have been listed with brief definitions)

मनुष्य-पद MANUSHYA-PAD (SEGMENT OF HUMAN BEINGS)

२०. छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा–जंबूदीवगा, धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धगा, धायइसंड-दीवपच्चत्थिमद्धगा, पुक्खवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा, अंतरदीवगा।

अहवा–छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा–संमुच्छिममणुस्सा–कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा, गब्भवक्कंतिअमणुस्सा–कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा।

२०. मनुष्य छह प्रकार के होते है–(१) जम्बूद्वीप मे उत्पन्न, (२) धातकीषण्डद्वीप के पूर्वार्ध मे उत्पन्न, (३) धातकीषण्डद्वीप के पश्चिमार्ध मे उत्पन्न, (४) पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध मे उत्पन्न, (५) पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध मे उत्पन्न, (६) अन्तर्द्वीपो मे उत्पन्न।

अथवा मनुष्य छह प्रकार के होते है–(१) कर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम मनुष्य, (२) अकर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम मनुष्य, (३) अन्तर्द्वीपो मे उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम

मनुष्य, (४) कर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले गर्भज मनुष्य, (५) अकर्मभूमि मे उत्पन्न होने वाले गर्भज मनुष्य, (६) अन्तर्द्वीपो मे उत्पन्न होने वाले गर्भज मनुष्य।

20. *Manushya* (humans) are of six kinds—(1) born in Jambu Dveep, (2) born in the eastern half of Dhatakikhand Dveep, (3) born in the western half of Dhatakikhand Dveep, (4) born in the eastern half of Pushkaravar Dveepardh, (5) born in the western half of Pushkaravar Dveepardh, and (6) born in Antar Dveeps (middle islands)

Also *Manushya* (humans) are of six kinds—(1) *sammurchhim* (of asexual origin) *manushya* born in *karmabhumi* (land of endeavour), (2) *sammurchhim* (of asexual origin) *manushya* born in *akarmabhumi* (land of inactivity), (3) *sammurchhim* (of asexual origin) *manushya* born in Antar Dveep (middle islands), (1) *garbhaj* (placental) *manushya* born in *karmabhumi* (land of endeavour), (2) *garbhaj* (placental) *manushya* born in *akarmabhumi* (land of inactivity), (3) *garbhaj* (placental) *manushya* born in Antar Dveep (middle islands)

२१. छव्विहा इड्ढिमंता मणुस्सा पण्णत्ता, त जहा—अरहता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा।

२१. (विशिष्ट) ऋद्धि वाले मनुष्य छह प्रकार के है (१) अर्हन्त, (२) चक्रवर्ती (३) बलदेव, (४) वासुदेव, (५) चारण, (६) विद्याधर।

21. Persons with (*Vishisht*) *riddhi* (wealth of paranormal abilities) are of six kinds—(1) *Arhant*, (2) *Chakravarti*, (3) *Baladeva*, (4) *Vasudeva*, (5) *Chaaran* and (6) *Vidyadhar*

विवेचन—अर्हन्त, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव की ऋद्धि तो पूर्वभवोपार्जित पुण्य के प्रभाव से प्राप्त होती है। वैताढ्यनिवासी विद्याधरो की ऋद्धि कुलक्रमागत भी होती है और इस भव मे भी विद्याओ की साधना से प्राप्त होती है। किन्तु चारणऋद्धि महान् तपस्वी साधुओ की कठिन तपस्या से प्राप्त होती है। वृत्तिकार ने 'चारण' के अर्थ मे 'जघाचारण' और 'विद्याचारण' इन दो नामो का उल्लेख किया है। जिन्हे तप के प्रभाव से भूमि का स्पर्श किये बिना ही जल, जघा, पुष्प आदि का आलम्बन लेकर अधर गमनागमन की लब्धि प्राप्त होती है, वे **जघाचरण** और विद्या की साधना से जिन्हे आकाश मे गमनागमन की शक्ति प्राप्त होती है, वे **विद्याचारण** कहलाते है।

प्रवचन सारोद्धार द्वार ६८ मे चारणऋद्धि के भी अनेक भेद बताये है। यथा- (१) **जघाचारण**—भूमि से चार अगुल ऊपर गमन करने वाले। (२) **अग्निशिखाचारण**—अग्नि की शिखा का स्पर्श किये बिना उसके ऊपर गमन करने वाले। (३) **श्रेणिचारण**—पर्वतश्रेणि आदि का स्पर्श किये बिना उनके ऊपर गमन करने वाले। (४) **फलचारण**—वृक्षो के फलो को स्पर्श किये बिना उनके ऊपर गमन करने वाले।


चारण
जंघा चारण
9

चित्र परिचय ९

Illustration No. 9

ऋद्धिमान मनुष्य

विशिष्ट ऋद्धि वाले मनुष्य छह प्रकार के है -

(१) अरिहन्त देव, (२) चक्रवर्ती (३) बलदेव (४) वासुदेव (५) चारण (तपोजनित विशेष प्रकार के ऋद्धि सम्पन्न श्रमण और (६) विद्याधर।

चारण ऋद्धि अनेक प्रकार की होती है। जैसे

जघाचारण—जघा पर हाथ रखकर भूमि से चार अगुल ऊपर चलने की शक्ति।

धूमचारण—धुए के पीछे पीछे गमन करने की शक्ति।

श्रेणिचारण—पर्वत श्रेणि के ऊपर ऊपर चलने की शक्ति।

आकाशगमन—पद्मासन आदि मे बैठकर आकाश मे गमन करने की क्षमता।

कामरूपित्व—छोटे बडे मनचाहे रूप बनाने की क्षमता।

विद्याधर—कुल क्रमागत विद्या बल से आकाश आदि मे गमन करने वाले।

स्थान ६ सूत्र २१

RIDDHIMAAN MANUSHYA

Persons with (*Vishisht*) *riddhi* (wealth of paranormal abilities) are of six kinds -

(1) *Arhant*, (2) *Chakravarti* (3) *Baladeva*, (4) *Vaasudeva*, (5) *Chaaran* (endowed with paranormal abilities acquired through austerities), and (6) *Vidyadhar*

However, the *chaaran* powers are only acquired by ascetics highly austere ascetics through their vigorous austerities Explaining the term *chaaran* the commentator (*Vritti*) mentions two words *janghachaaran* and *vidyachaaran* Those who acquire the ability to move about hovering with the support of water, thighs (in sitting posture), flower etc are called *janghachaaran* Those who acquire the capability to fly in the sky are called *vidyachaaran*

Janghachaaran—the power to move about four *Anguls* above ground just by placing his palm on his thigh

Dhoomchaaran—the power to move about with smoke without touching it

Shrenichaaran—the power to move about over mountain ranges without touching them

Akashgaman—the power to move about in sky in different postures including lotus pose

Kaamrupitva—the power to acquire desired forms, large or small

Vidyadhar—those who have various special powers including movement in the sky These are family-inherited powers

—Sthaan 6 Sutra 21

(५) **पुष्पचारण**–वृक्षो के पुष्पो को स्पर्श किये बिना उनके ऊपर गमन करने वाले। (६) **मर्कट तन्तुचारण**–मकडी के तन्तुओ को स्पर्श किये बिना उनके ऊपर चलने वाले। (७) **जलचारण**–जल को स्पर्श किये बिना उसके ऊपर चलने वाले। (८) **अकुरचारण**–वनस्पति के अकुरो को स्पर्श किये बिना ऊपर चलने वाले। (९) **बीजचारण**–बीजो को स्पर्श किये बिना उनके ऊपर चलने वाले। (१०) **धूमचारण**–तिरछी या ऊँची गति वाले धूम का स्पर्श किये बिना उसकी गति के साथ चलने वाले। इसी प्रकार वायुचारण, नीहारचारण, जलदचारण आदि चारणऋद्धि वालो के अनेक प्रकार है।

पर्यङ्कासन से बैठे हुए, या खड्गासन से अवस्थित रहते हुए पॉव टिकाये बिना ही विविध आसनो से आकाश मे विहार करने वालो को **आकाशगामिऋद्धि सम्पन्न** कहा है।

विक्रियाऋद्धि के अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व, ईशित्व, अप्रतिघात, अन्तर्धान, कामरूपित्व आदि अनेक भेद है।

तपऋद्धि के उग्र तप, दीप्त तप, तप्त नप, महाघोर, तपोघोर, पराक्रमघोर और ब्रह्मचर्य, ये सात भेद बताये है।

बलऋद्धि के मनोबली, वचनबली और कायबली, ये तीन भेद है। औषधऋद्धि के आठ भेद है–आमर्श, श्वेल (श्लेष्म), जल्ल, मल, विट्, सर्वोषधि, आस्यनिर्विष, दृष्टिनिर्विष। रसऋद्धि के छह भेद है क्षीरस्रवी, मधुस्रवी, सर्पि स्रवी, अमृतस्रवी, आस्यनिर्विष और दृष्टिनिर्विष। क्षेत्रऋद्धि के दो भेद है–अक्षीण महानस (भोजन) और अक्षीण महालय (आवास)। उक्त सभी ऋद्धियो का विस्तृत वर्णन प्रवचनसारोद्धार, मे है। विशेषावश्यकभाष्य मे २८ ऋद्धियो का वर्णन है।

Elaboration—The special abilities of *Arhant, Chakravarti, Baladeva* and *Vasudeva* are acquired as fruits of meritorious *karmas* from the past birth The powers of *Vidyadhars* dwelling at Vaitadhya mountain are genetic as well as self-acquired through specific practices However, the *chaaran* powers are only acquired by highly austere ascetics through their vigorous austerities Explaining the term *chaaran*, the commentator (*Vritti*) mentions two words *janghachaaran* and *vidyachaaran*. Those who acquire the ability to move about hovering with the support of water, thighs (in sitting posture), flower etc are called *janghachaaran* Those who acquire the capability to fly in the sky are called *vidyachaaran*

In the *Pravachanasaroddhar* (Dvar 68) many other categories of *chaaran riddhi* are mentioned (1) *Janghachaaran*—who move about four *Angul* (width of a finger) above ground (2) *Agnishikhachaaran*—who move over flames without touching them (3) *Shrenichaaran*—who move about over mountain ranges without touching them (4) *Phal-chaaran*—who move about over trees without touching their fruits (5) *Pushp-chaaran*—who move about over trees without touching their

flowers (6) *Markat-tantuchaaran*—who move about over cobwebs without touching them (7) *Jal-chaaran*—who move about over water surface without touching it (8) *Ankur-chaaran*—who move about over plant sprouts without touching them (9) *Beej-chaaran*—who move about over seeds without touching them (10) *Dhoom-chaaran*—who move about with flow of rising straight or spiraling smoke without touching it

There are many other categories of individuals endowed with *chaaran riddhi*—*vayuchaaran, neeharchaaran, jalad-chaaran* etc.

Those who move in the sky in different yogic postures including *paryankasan* and *khadgasan* are called *akash-gami riddhi sampanna*

There are several categories of *vikriya riddhi* (capability of transmutation)—*anima, mahima, laghima, garima, prapti, prakamya, vashitva, ishitva, apratighaat, antardhan, kaamrupitva* etc

There are seven categories of *tap-riddhi* (capability of observing austerities)—*ugra tap, deept tap, tapt tap, mahaghor, tapoghor, parakram-ghor* and *brahmacharya*

Categories of other riddhis are as follows—

Bal riddhi (capability related to power) is of three types—*manobali, vachan-bali* and *kayabali* *Aushadh riddhi* (capability related to medicine) is of eight types—*amarsh, shvel* (shleshm), *jalla, malla, vit, sarvoshadhi, aasyanirvish* and *drishtirvish* *Rasa riddhi* (capability related to taste) is of six types—*kshirasravi, madhusravi, sarpihsravi, amrit-sravi, aasyanirvish* and *drishtirvish* *Kshetra riddhi* (capability related to area or volume) is of two types—*akshina mahanas* (related to food) and *akshina mahalaya* (related to abode) Detailed description of these special powers can be seen in *Pravachanasaroddhar, Tiloyapannatti, Dhavala Tika,* and *Tattvarth Rajavartik* *Visheshavashyak Bhashya* also describes twenty eight *riddhis*

२२. छव्विहा अणिड्ढिमंता मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—हेमवतगा, हेरण्णवतगा, हरिवासगा, रम्मगवासगा, कुरुवासिणो, अंतरदीवगा।

२२. ऋद्धि-अप्राप्त मनुष्य छह प्रकार के है-(१) हेमवत मे उत्पन्न, (२) हेरण्यवत मे उत्पन्न, (३) हरिवर्ष मे उत्पन्न, (४) रम्यक्वर्ष मे उत्पन्न, (५) कुरुवासी, (६) अन्तर्द्वीप मे उत्पन्न।

22. Persons devoid of *riddhis* (special powers) are of six kinds—(1) born in Haimavat, (2) born in Hairanyavat, (3) born in Harivarsh, (4) born in Ramyakvarsh, (5) living in Kuru and (6) born in Antardveeps

२३. छव्विहा ओसप्पिणी पण्णत्ता, तं जहा–सुसम–सुसमा, [सुसमा, सुसम–दूसमा, दूसम–सुसमा, दूसमा], दूसम–दूसमा। २४. छव्विहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता, तं जहा–दुस्सम–दुस्समा, दुस्समा, [दुस्सम–सुसमा, सुसम–दुस्समा, सुसमा] सुसम–सुसमा।

२३. अवसर्पिणी काल छह प्रकार का है–(१) सुषम–सुषमा, (२) सुषमा, (३) सुषम–दु षमा, (४) दु षम–सुषमा, (५) दु षमा, (६) दु षम–दु षमा। २४. उत्सर्पिणी काल छह प्रकार का है–(१) दु षम–दु षमा, (२) दु षमा, (३) दु षम–सुषमा, (४) सुषम–दु षमा, (५) सुषमा, (६) सुषम–सुषमा।

23. *Avasarpini* (regressive half-cycle of time) is of six kinds—(1) *Sukham-sukhama* (epoch of extreme happiness), (2) *Sukhama* (epoch of happiness), (3) *Sukham-dukhama* (epoch of more happiness than sorrow), (4) *Dukham-sukhama* (epoch of more sorrow than happiness), (5) *Dukhama* (epoch of sorrow) and (6) *Dukham-dukhama* (epoch of extreme sorrow) **24.** *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) is of six kinds—(1) *Dukham-dukhama* (epoch of extreme sorrow), (2) *Dukhama* (epoch of sorrow), (3) *Dukham-sukhama* (epoch of more sorrow than happiness), (4) *Sukham-dukhama* (epoch of more happiness than sorrow), (5) *Sukham* (epoch of happiness) and (6) *Sukham-sukhama* (epoch of extreme happiness)

२५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसम–सुसमाए समाए मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं हुत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था। २६. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसम–सुसमाए समाए [मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था।] २७. जंबुद्दीवे दीवे भरेहरवएसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसम–सुसमाए समाए [मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं भविस्संति], छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालइस्संति।

२५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे भरत–ऐरवत क्षेत्र की अतीत उत्सर्पिणी के सुषम–सुषमा काल मे मनुष्यो की ऊँचाई छह हजार धनुष की थी और उनकी उत्कृष्ट आयु छह अर्ध पल्योपम अर्थात् तीन पल्योपम की थी। २६. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे भरत–ऐरवत क्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी के सुषम–सुषमा काल मे मनुष्यो की ऊँचाई छह हजार धनुष की थी और उनकी छह अर्धपल्योपम की उत्कृष्ट आयु थी। २७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे भरत–ऐरवत क्षेत्र की आगामी उत्सर्पिणी के सुषम–सुषमा काल मे मनुष्यो की ऊँचाई छह हजार धनुष होगी और वे छह अर्धपल्योपम (तीन पल्योपम) उत्कृष्ट आयु का पालन करेगे।

25. In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukham-sukhama* ara (epoch of extreme happiness) of the

past *Utsarpini* (progressive cycle of time) was six thousand *Dhanush* and their maximum life span was six half-*Palyopam* (three *Palyopam*) (a metaphoric unit of time) **26.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukham-sukhama* ara (epoch of extreme happiness) of the present *Avasarpini* (regressive cycle of time) was six thousand *Dhanush* and their maximum life span was six half-*Palyopam* (three *Palyopam*) (a metaphoric unit of time) **27.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukham-sukhama* ara (epoch of extreme happiness) of the future *Utsarpini* (progressive cycle of time) will be six thousand *Dhanush* and their maximum life span will be six half-*Palyopam* (three *Palyopam*) (a metaphoric unit of time)

२८. जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु–उत्तरकुरुकुरासु मणुया छ धणुस्साहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालेंति। २९. एवं धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा।

२८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुष्यो की ऊँचाई छह हजार धनुष की है और वे छह अर्धपल्योपम उत्कृष्ट आयु का पालन करते है। २९. इसी प्रकार धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी मनुष्यो की ऊंचाई छह हजार धनुष और उत्कृष्ट आयु छह अर्धपल्योपम की जम्बूद्वीप के चारो आलापकों के समान है।

28. In Jambu Dveep in Devakuru and Uttar-kuru areas the height of humans is six thousand *Dhanush* and their maximum life span is six half-*Palyopam* (three *Palyopam*) (a metaphoric unit of time) **29.** In the same way in eastern and western halves of Dhatakikhand Dveep and Ardhapushkaravar Dveep the height of humans is six thousand *Dhanush* and their maximum life span is six half-*Palyopam* (three *Palyopam*) (a metaphoric unit of time) like the four statements regarding Jambu Dveep

संहनन–पद SAMHANAN-PAD (SEGMENT OF BODY CONSTITUTION)

३०. छव्विहे संघयणे पण्णत्ते, तं जहा–वइरोसभणारायसंघयणे, उसभणारायसंघयणे, णारायसंघयणे, अद्धणारायसंघयणे, खीलियासंघयणे, छेवट्टसंघयणे।

३०. संहनन छह प्रकार का होता है (१) वज्र ऋषभ नाराच संहनन, (२) ऋषभ नाराच संहनन, (३) नाराच संहनन, (४) अर्द्ध नाराच संहनन, (५) कीलिका संहनन, (६) सेवार्त संहनन।

30. *Samhanan* (body constitution) is of six kinds—(1) *Vajra rishabh naaraach samhanan*, (2) *Rishabh naaraach samhanan*, (3) *Naaraach samhanan*, (4) *Ardh naaraach samhanan*, (5) *Kilika samhanan* and (6) *Sevart samhanan*

३१. छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तं जहा–समचउरंसे, णग्गोहपरिमंडले, साई, खुज्जे, वामणे, हुंडे।

३१. सस्थान छह प्रकार का होता है–(१) समचतुरस्र-सस्थान, (२) न्यग्रोधपरिमडल-संस्थान, (३) सादि सस्थान, (४) कुब्ज-सस्थान, (५) वामन-सस्थान, (६) हुण्डक-सस्थान।

31. *Samsthan* (body structure) is of six kinds—(1) *Samchaturasra samsthan*, (2) *Nyagrodh-parimandal samsthan*, (3) *Sadi samsthan*, (4) *Kubj samsthan*, (5) *Vaaman samsthan* and (6) *Hundak samsthan*

विवेचन–(१) वज्र ऋषभ नाराच संहनन–सहनन का अर्थ है–शरीर मे हड्डियो का विशेष प्रकार का गठन। यह केवल औदारिक शरीर मे ही होता है। **वज्र** अर्थात् कीलिका, जो शरीर की प्रत्येक संधि को जोडती है। **ऋषभ** का अर्थ है- परिवेष्टन-पट्ट और **नाराच** का अर्थ है दोनो ओर का मर्कट बध। अर्थात् वज्र के समान हड्डी की कील से बँधा, सुदृढ हड्डियो वाला शारीरिक गठन- वज्र ऋषभ नाराच सहनन है। हडडी की मजबूती ही शक्ति का आधार है। सशक्त शरीर वाला साधक ही कर्मो को विशेष रूप मे तोडने मे समर्थ होता है। तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, चरमशरीरी एव युगलिया वज्र ऋषभ नाराचन सहनन वाले होते है।

(२) **ऋषभ नाराच सहनन**–जिस शरीर की हड्डियो का गठन तो उक्त प्रकार का हो, परन्तु बीच मे वज्र समान कीलिका जिसमे न हो। इस सहनन वाला अधिक से अधिक ग्रैवेयक देवलोक तक जा सकता है। (३) **नाराच सहनन**–जिस शरीर की हड्डियॉ दोनो ओर से केवल मर्कट बँध युक्त हो। इस सहनन वाला बारहवे देवलोक तक जा सकता है। (४) **अर्द्ध नाराच सहनन**–जिस शरीर का हड्डियाँ एक ओर मर्कट बध वाली हो, दूसरी ओर कीलिका वाली हो। इसकी उत्कृष्ट गति आठवे देवलोक तक हो सकती है। (५) **कीलिका सहनन**–जिस सहनन मे हड्डियॉ केवल कील से जुडी हो। इसकी उत्कृष्ट गति छठा देवलोक तक है। (६) **सेवार्त संहनन**–जिस शरीर की हड्डियॉ परस्पर मिली हुई हो और जिन्हे तैल मालिश आदि की जरूरत रहती हो। इस सहनन वाला उत्कृष्ट चौथे देवलोक तक जा सकता है।

इसी प्रकार अशुभ कर्म करने पर पहली, दूसरी नरक तक छहो सहनन वाले, तीसरी मे प्रथम पाँच वाले, चौथी मे चार सहनन वाले, पाँचवी मे तीन, छठी मे दो तथा सातवी मे केवल प्रथम सहनन वाले जीव जा सकते है। विस्तृत वर्णन के लिए भगवती सूत्र शतक २४ देखे।

संस्थान–शरीर की रचना या आकार को सस्थान कहते है। सभी जीवो को इन छह सस्थानो मे सम्मिलित किया गया है–(१) **समचतुरस्र–सस्थान**–सम का अर्थ है समान, चतु का अर्थ है चारो ओर, 'अस्र' शब्द का अर्थ है कोण। जिस शरीर के सम्पूर्ण अवयव प्रमाणोपेत हो, शरीर की ऊँचाई, चौडाई, मोटाई, वजन, ये सब ठीक प्रमाण वाले हो, कोई अवयव न्यून-अधिक न हो, ऐसे सस्थान को "**सम-चतुरस्र**" कहते है। (२) **न्यग्रोधपरिमंडल-संस्थान**–जिस सस्थान मे नाभि से ऊपर का भाग सामुद्रिक शास्त्र मे बताये हुए शरीर-परिमाण के अनुकूल हो और नीचे का भाग हीन अवयवो वाला हो

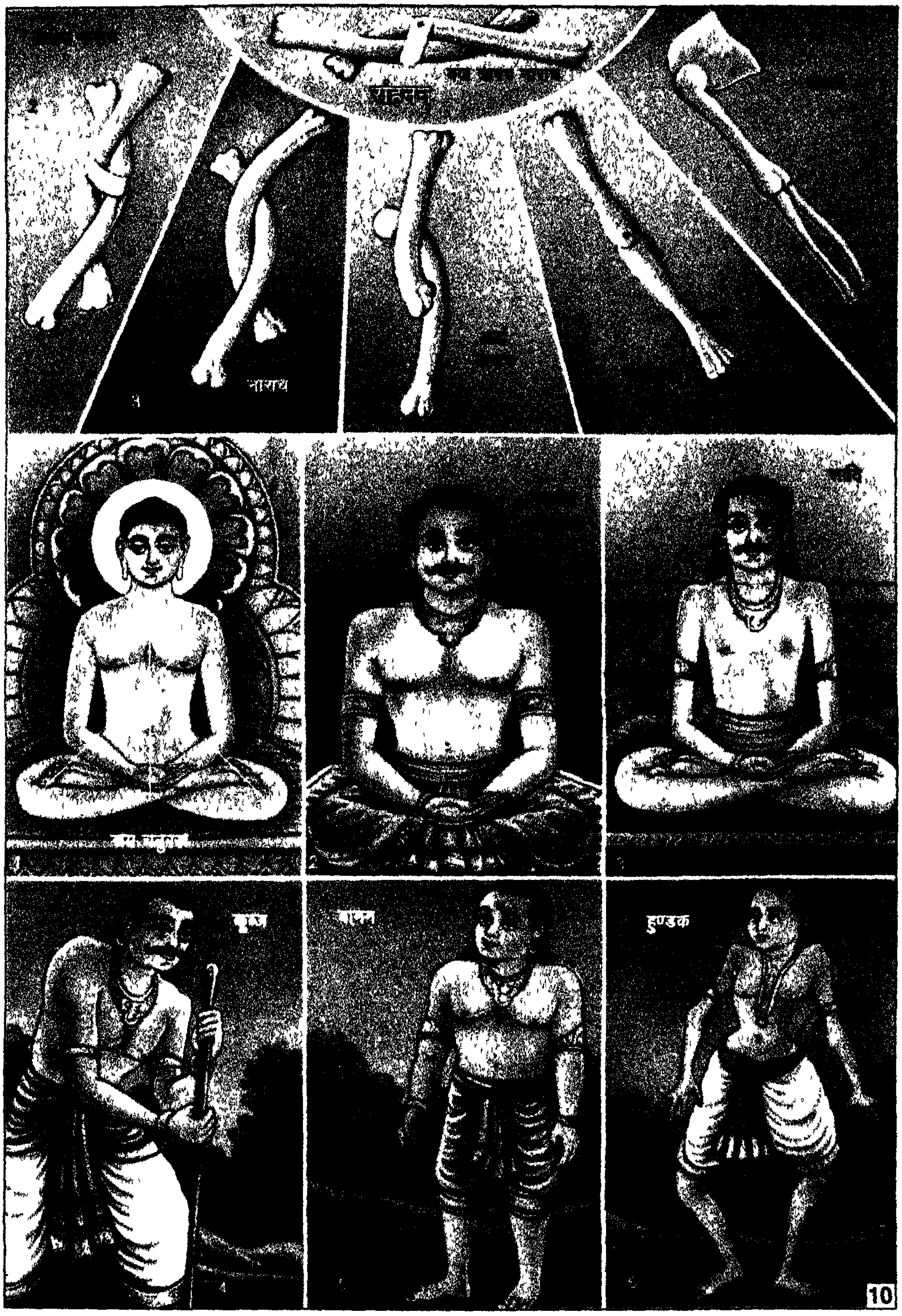
उसे "न्यग्रोध-परिमण्डल-सस्थान" कहते है। (३) **सादि सस्थान**–जिस सस्थान मे नाभि से नीचे का भाग परिपूर्ण हो और ऊपर का भाग परिमाण से न्यून या अधिक हो, वह सादि सस्थान माना जाता है।

(४) **कुब्ज-संस्थान**–जिस सस्थान मे हाथ, पैर, गर्दन और सिर आदि अवयव तो ठीक हो, किन्तु पीठ, पेट, छाती आदि टेढे-मेढे हो उसे कुब्ज सस्थान कहते है। (५) **वामन-संस्थान**–जिस आकार मे छाती, पीठ, पेट आदि अवयव तो ठीक हो, किन्तु ऊँचाई अत्यन्त कम हो, उस बौनी आकृति को वामन-सस्थान कहते है। (६) **हुण्ड-सस्थान**–जिसका शरीर सब तरह से बेढब एव बेडौल हो, शरीर के सभी अवयव न्यून-अधिक हो, उसे हुण्ड-सस्थान कहते है।

कोई भी सस्थान परमपद को पाने मे बाधक नही होता, किन्तु उत्तम सुदृढ सस्थान व सहनन के बिना सयम की कठोर साधना व तप एव उपसर्गो को सहने की क्षमता प्राप्त नही होती।

Elaboration—(1) *Vajra-rishabh-narach samhanan*—The skeletal constitution of body is called *samhanan* This only relates to *audarik sharir* (gross physical body) *Vajra* means peg-like bone that joins two or more bones *Rishabh* means socket or grove-like bone *Naaraach* means monkey-joint (two bones joint as snug and perfect as an infant monkey holds its mother close) Thus *Vajra-rishabh-narach samhanan* means an extremely strong skeletal constitution with strong bones and perfect joints Strength of a body is dependent on the strength of its skeletal constitution Only an aspirant with strong body is capable of destroying *karmas* to a great extant *Tirthankars, Chakravartis, Baladevas, Vasudevas, Charam-shariris* (who are destined to be liberated during this birth) and *Yugaliyas* (twins) have this constitution

(2) *Rishabh naaraach samhanan*—Aforesaid body constitution but devoid of the peg like bone in skeletal joints A person having this constitution can go up to Graiveyak divine realm and not beyond (3) *Naaraach samhanan*—A body constitution having only monkey-joints A person having this constitution can go up to twelfth divine realm and not beyond (4) *Ardh naaraach samhanan*—A body constitution with monkey-joint on one side of a bone and peg-joint on the other A person having this constitution can go up to eighth divine realm and not beyond (5) *Kilika samhanan*—A body constitution exclusively with peg-joints. A person having this constitution can reach up to sixth divine realm and not beyond and (6) Sevart samhanan—A body constitution with common joints and often requiring oil massage A person having this constitution can go up to fourth divine realm and not beyond


नाराच
हुण्डक
10

चित्र परिचय १० **Illustration No. 10**

संहनन और संस्थान

हड्डियों के गठन को संहनन कहा जाता है। यह छह प्रकार का है

(१) वज्रऋषभ नाराच संहनन (२) ऋषभ नाराच संहनन (३) नाराच संहनन (४) अर्द्ध नाराच संहनन (५) कीलिका संहनन और (६) सेवार्त्त संहनन।

शरीर की आकार रचना को संस्थान कहते हैं, यह छह प्रकार का होता है

(१) समचतुरस्र संस्थान (२) न्यग्रोधपरिमण्डल (३) सादि संस्थान (४) कुब्ज संस्थान (५) वामन संस्थान और (६) हुण्डक संस्थान।

(इनका विस्तृत अर्थ विवेचन में [illegible])

[illegible]

SAMHANAN AND SANSTHAN

Samhanan (body constitution or skeletal structure) is of six kinds

(1) Vajra-rishabh naaraach samhanan, (2) Rishabh naaraach samhanan, (3) Naaraach samhanan, (4) Ardh naaraach samhanan, (5) Kilika samhanan, and (6) Sevart samhanan.

Samsthan (body structure or overall shape) is of six kinds

(1) Samchaturasra samsthan, (2) Nyagrodhaparimandal samsthan, (3) Sadi samsthan, (4) Kubja samsthan, (5) Vaman samsthan and (6) Hundak samsthan.

(for detailed description see elaborations)

— Sthaananga Sutra 30, 31

In the same way on indulging in evil deeds a person with any of the six said constitutions can fall into first and second hell and not lower One with any of the first five constitutions can fall into the third hell and not lower One with any of the first four constitutions can fall into the fourth hell and not lower One with any of the first three constitutions can fall into the fifth hell and not lower One with any of the first two constitutions can fall into the sixth hell and not lower One with the first constitutions alone can fall into the first hell For more details refer to *Bhagavati Sutra*, Shatak 24

Samsthan—Structure of the body is called *samsthan* The said six types of structures cover all beings (1) *Samachaturasra Samsthan*—*Sam* means same or equal and *asra* means angle An anatomical structure of a human being where all the parts of body above and below the navel are of standard dimensions (length, breadth, thickness and weight) The dimensions increase and decrease proportionately (2) *Nyagrodhaparimandal Samsthan*—*Nyagrodh* means a banyan tree An anatomical structure similar to the shape of a banyan tree is called *Nyagrodhaparimandal Samsthan* Like a banyan tree it is much broader and developed above the navel and comparatively lean and underdeveloped below (3) *Sadi Samsthan*—An anatomical structure fully developed below the navel and under-developed above the navel is called *Sadi Samsthan*

(4) *Kubja Samsthan*—An anatomical structure where torso is weak and deformed and remaining parts including limbs and head are normal is called *Kubja Samsthan* For instance a hunchback (5) *Vaman Samsthan*—An anatomical structure with a proportionate torso but smaller limbs is called *Vaman Samsthan* For instance a dwarf (6) *Hunda Samsthan*—An anatomical structure having deformities in every part of the body is called *Hunda Samsthan*

It is not that any of these body structures prevents liberation, but in absence of good and strong constitution and structure it is not possible to acquire capacity to indulge in rigorous spiritual practices and endure afflictions (for detailed description of six *samsthans* refer to *Illustrated Anuyogadvar Sutra*, part-1, aphorisms 206 and 214 as well as illustrations 14 and 15)

अनात्मवान्–आत्मवान्–पद ANATMAVAN-ATMAVAN-PAD (SEGMENT OF NON-SPIRITUALIST AND SPIRITUALIST)

३२. छट्ठाणा अणत्तवओ अहिताए असुभाए अखमाए अणीसेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा–परियाए, परियाले, सुते, तवे, लाभे, पूयासक्कारे। ३३. छट्ठाणा अत्तवतो हिताए (सुभाए खमाए णीसेसाए) आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा–परियाए, परियाले, (सुते, तवे, लाभे) पूयासक्कारे।

३२ अनात्मवान् के लिए छह स्थान अहित, अशुभ, अक्षम, अनि श्रेयस् अनानुगामिकता (आगामी भव के लिए अशुभानुबन्ध वाले) के लिए होते है–(१) पर्याय–अवस्था या दीक्षा मे बडा होना, (२) परिवार, (३) श्रुत, (४) तप, (५) लाभ, (६) पूजा-सत्कार। ३३. आत्मवान् के लिए छह स्थान हित, शुभ, क्षम, नि श्रेयस् और आनुगामिकता (शुभानुबन्ध) के लिए होते है -(१) पर्याय, (२) परिवार, (३) श्रुत, (४) तप, (५) लाभ, (६) पूजा-सत्कार।

32. For an *anatmavan* (non-spiritualist) six things are *ahitkar* (harmful), *ashubh* (bad), *aksham* (improper), *anihshreyash* (disadvantageous) and *ananugamik* (cause of demeritorious bondage for future life)—(1) *paryaya* (to be senior in initiation or age), (2) *parivar* (family), (3) *shrut* (scriptures), (4) *tap* (austerities), (5) *laabh* (gains) and (6) *puja-satkar* (worship and honour) **33** For an *atmavan* (spiritualist) six things are *hitakar* (beneficial), *shubh* (good), *ksham* (proper), *nihshreyash* (advantageous) and *ananugamik* (cause of liberation in future life)—(1) *paryaya* (to be senior in initiation or age), (2) *parivar* (family), (3) *shrut* (scriptures), (4) *tap* (austerities), (5) *laabh* (gains) and (6) *puja-satkar* (worship and honour)

विवेचन–जिसको अपनी आत्मा का अनुभव हो गया है और जिसका अहकार-ममकार दूर हो गया है, वह आत्मवान् है। इसके विपरीत अनात्मवान् है।

अनात्मवान् व्यक्ति के लिए दीक्षा-पर्याय या अधिक अवस्था, शिष्य या कुटुम्ब परिवार, श्रुत, तप और पूजा-सत्कार की प्राप्ति से लोकैषणा, ज्ञान से अहकार, तप से क्रोध, लाभ से लोभ या ममत्व उत्तरोत्तर बढता है, उससे वह दूसरो को हीन, अपने को महान् समझने लगता है। इस कारण से सब उत्तम योग भी उसके लिए पतन के कारण हो जाते है। किन्तु आत्मवान् के लिए उक्त छहो स्थान उत्थान और आत्म-विकास के कारण होते है, क्योकि ज्यो-त्यो उसमे तप-श्रुत आदि की वृद्धि होती है, त्यो-त्यो वह अधिक विनम्र एव उदार होता जाता है।

Elaboration—One who has had spiritual experience of self realization and who is devoid of conceit and ego (fondness for the self) is called *atmavan* Opposite of this is *anatmavan*

For a non-spiritualist to be senior in initiation or age, and to possess family including that of disciples, scriptural knowledge, austerities, gains, worship and honour are causes of ever increasing ambitions, conceit, anger, greed and attachment Consequently he considers himself to be great and others to be lowly Thus these excellent associations turn into causes of his fall But for a spiritualist all these become cause of development and spiritual progress because of the fact that with increase in knowledge and austerities he becomes more and more humble and generous

***आर्य–पद* ARYA-PAD (SEGMENT OF ARYA)**

३४. छव्विहा जाइ–आरिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा–

अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगादिया।
हरिता चुंचुणा चेव, छप्पेता इब्भजातिओ॥१॥ संग्रहणी–गाथा

३५. छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा–उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाता, कोरव्वा।

३४. जाति से आर्यपुरुष छह प्रकार के है–(१) अबष्ठ, (२) कलन्द, (३) वैदेह, (४) वैदिक, (५) हरित, (६) चुचुण, ये छहो इभ्यजाति के मनुष्य है।

३५. कुल से आर्य मनुष्य छह प्रकार के है–(१) उग्र, (२) भोज, (३) राजन्य, (४) इक्ष्वाकु, (५) ज्ञात, (६) कौरव।

34. In the context of *jati Arya purush* (men belonging to noble maternal lineage) are of six kinds—(1) Ambasht, (2) Kaland, (3) Videha, (4) Vaidik, (5) Harit and (6) Chunchun All these are people of *Ibhya jati* (affluent families)

35. In the context of *kula Arya purush* (men belonging to noble paternal lineage) are of six kinds—(1) Ugra, (2) Bhoj, (3) Rajanya, (4) Ikshvaku, (5) Jnata and (6) Kaurava

विवेचन–मातृ–पक्ष को जाति कहते है। जिन का मातृपक्ष निर्दोष और पवित्र होता है, वे पुरुष जात्यार्य कहलाते है। अमर–कोष के अनुसार वैश्य माता और ब्राह्मण पिता से उत्पन्न हुई सन्तान को अम्बष्ठ, तथा ब्राह्मणी माता और वैश्य पिता से उत्पन्न हुई सन्तान वैदेह कहलाती है। चुचुण का कोषो मे कोई उल्लेख नही है, यदि इसके स्थान पर कुकुण पद की कल्पना की जावे तो ये कोकण देशवासी जाति के है, जिनमे मातृपक्ष की आज भी प्रधानता है। कलद और हरित जाति भी मातृपक्ष प्रधान रही है। मातृपक्ष की प्रधानता सतति मे विनीतता और लज्जालुता तथा पितृपक्ष की प्रधानता वीरता व बुद्धिमत्ता प्रकट करती है।

संग्रहणी गाथा मे इन छहो को 'इभ्यजातीय' कहा है। ईभ का अर्थ हाथी होता है। वृत्तिकार के अनुसार जिसके पास धन-राशि इतनी ऊँची हो कि जिसके समक्ष सूँड को ऊँची किया हुआ हाथी भी न दिख सके, उसे इभ्य कहा जाता था। इभ्य की इस परिभाषा से इतना तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्रजातीय माता की वैश्य पिता से उत्पन्न सन्तान से इन इभ्य जातियो के नाम पडे हैं। क्योकि व्यापार करने वाले वैश्य सदा से ही धन-सम्पन्न रहे है।

पितृपक्ष को 'कुल' कहा जाता है। छह कुल आर्यो का विवरण इस प्रकार है-(१) उग्र-भगवान ऋषभदेव ने आरक्षक या कोट्टपाल के रूप मे जिनकी नियुक्ति की थी, वे उग्र नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी सन्तान भी उग्रवशीय कहलाने लगी। (२) भोज-गुरुस्थानीय क्षत्रियो के वशज। (३) राजन्य-मित्रस्थानीय क्षत्रियो के वशज। (४) इक्ष्वाकु-भगवान ऋषभदेव के वशज। (५) ज्ञात-भगवान महावीर के वशज। (६) कौरव-कुरुवश मे उत्पन्न शान्तिनाथ तीर्थंकर के वशज। इन छहो कुलार्यो का सम्बन्ध क्षत्रियो से रहा है। *(इनका विस्तृत वर्णन देखे - 'ठाणं' पृष्ठ, ६९४)*

Elaboration—Maternal lineage is called *jati* People having faultless and pious maternal lineage are called *jatyarya* (noble by *jati*) According to *Amarkosh* an offspring of a *Vaishya* (the third caste in the traditional Hindu caste-hierarchy) mother and Brahmin (the first caste in the traditional Hindu caste-hierarchy) father is called Ambasht, that of a Brahmin mother and *Vaishya* father is called Vaideha The term *chunchun* does not find a mention in any lexicon If it is transcribed as *kunkun* then it could mean inhabitants of Konkan country Interestingly in that area maternal lineage is prominent even today Kaland and Harit castes also follow maternal lineage It is believed that with maternal dominance the offsprings have qualities like humility and shyness and with paternal dominance qualities like bravery and wisdom are prominent

In the collative verse these six people are called *ibhyajatiya* *Ibh* means elephant According to the commentator (*Vritti*) a person who has such a high heap of wealth that an elephant with raised trunk can hide behind it was called *Ibhya* This definition of *Ibhya* clearly indicates that offsprings of Brahmin, *Kshatriya* and *Shudra* mothers sired by *Vaishya* father established *Ibhya* clans This is because *Vaishyas* have always been affluent

Paternal lineage is called *Kula* Details about six *Aryas* by *Kula* are—(1) Ugra—People appointed as guards or guardians of forts became famous as Ugra Their descendents were called Ugra *vamshiya* (2) Bhoj—Descendents of *Kshatriyas* who were respected as gurus

(seniors and teachers) of kings (3) Rajanya—Descendents of *Kshatriyas* who enjoyed the position of friends of kings (4) Ikshvaku—Descendents of Bhagavan Risabhadeva (5) Jnata—Descendents of Bhagavan Mahavir and (6) Kaurava—Descendents of Bhagavan Shantinath of Kuru clan These six noble clans are related to *Kshatriyas* (the second caste in the traditional Hindu caste-hierarchy) *(for more details see Thanam, p 694)*

लोकस्थिति–पद LOK-STHITI-PAD (SEGMENT OF STRUCTURE OF UNIVERSE)

३६. छव्विहा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा–आगासपतिट्ठिते वाए, वातपतिट्ठिते उदही, उदधिपतिट्ठिता पुढवी, पुढविपतिट्ठिता तसा थावरा पाणा, अजीवा जीवपइट्ठिता, जीवा कम्मपतिट्ठिता।

३६. लोक की स्थिति छह प्रकार की है–(१) आकाश पर वात (तनुवात) प्रतिष्ठित है। (२) तनुवात पर उदधि (घनोदधि) प्रतिष्ठित है। (३) घनोदधि पर पृथिवी प्रतिष्ठित है। (४) पृथिवी पर त्रस-स्थावर प्राणी प्रतिष्ठित है। (५) अजीव जीव पर प्रतिष्ठित है। (६) जीव कर्मो पर प्रतिष्ठित है। *(लोक स्थिति का चित्र भाग-१, स्थान ३ पर देखे)*

36. *Lok-sthiti* (structure of universe) is six tiered—(1) *vayu* (air) is *pratishthit* (installed) on *akash* (space), (2) *udadhi* or *ghanodadhi* (dense water) is *pratishthit* (installed) on *vayu*, (3) *prithvi* (earth) is *pratishthit* (installed) on *ghanodadhi*, (4) *sthavar* and *tras pranis* (immobile and mobile beings) are *pratishthit* (installed) on (live on) *prithvi*, (5) *ajiva* (matter) is *pratishthit* (installed) on *jiva* (life) and (6) *jiva* (living being) is *pratishthit* (installed on) *karma* *(see illustration of Lok-sthiti in Sthananga Sutra, part-1, Sthaan-3)*

दिशा–पद DISHA-PAD (SEGMENT OF DIRECTIONS)

३७. छद्दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पाईणा, पडीणा, दाहिणा, उदीणा, उड्ढा, अधा। ३८. छहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति, तं जहा–पाईणाए, (पडीणाए, दाहिणाए, उदीणाए, उड्ढाए), अधाए। ३९. (छहिं दिसाहिं जीवाणं)–आगई, वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, विगुव्वणा, गतिपरियाए, समुग्घाते, कालसंजोगे, दंसणाभिगमे, णाणाभिगमे, जीवाभिगमे अजीवाभिगमे [पण्णत्ते, तं जहा–पाईणाए, पडीणाए, दाहिणाए, उदीणाए, उड्ढाए अधाए]। ४०. एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि, मणुस्साणवि।

३७. दिशाएँ छह है–(१) प्राची (पूर्व), (२) प्रतीची (पश्चिम), (३) दक्षिण, (४) उत्तर, (५) ऊर्ध्व और (६) अधोदिशा। ३८. छहो दिशाओ मे जीवो की गति होती है–(१) पूर्व दिशा मे, (२) पश्चिम दिशा मे, (३) दक्षिण दिशा मे, (४) उत्तर दिशा मे, (५) ऊर्ध्व दिशा मे और (६) अधोदिशा मे।

३९. छहो दिशाओ मे जीवो की आगति, अवक्रान्ति, आहार, वृद्धि, निवृद्धि, विकरण, गतिपर्याय, समुद्घात, कालसयोग, दर्शनाभिगम, ज्ञानाभिगम जीवाभिगम और अजीवाभिगम होता है-(१) पूर्वदिशा मे, (२) पश्चिमदिशा मे, (३) दक्षिणदिशा मे, (४) उत्तरदिशा मे, (५) ऊर्ध्वदिशा मे और (६) अधोदिशा मे। ४०. इसी प्रकार पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको की और मनुष्यो की गति-आगति आदि छहो दिशा मे होती है।

37. Directions are six—(1) *Praachi* (east), (2) *Pratichi* (west), (3) *Dakshin* (south), (4) *Uttar* (north), (5) *Urdhva* (zenith) and (6) *Adho* (nadir) **38.** *Jivas* (souls or living beings) have *gati* (movement or reincarnation) in all the six directions—(1) in *Praachi* (east), (2) in *Pratichi* (west), (3) in *Dakshin* (south), (4) in *Uttar* (north), (5) in *Urdhva* (zenith) and (6) in *Adho* (nadir) **39.** All beings have *aagati, avakranti, ahar, vriddhi, nivriddhi, vikaran, gati-paryaya, samudghat, kaal-samyoga, darshanabhigam, jnanabhigam, jivabhigam* and *ajivabhigam* in all the six directions—(1) in *Praachi* (east), (2) in *Pratichi* (west), (3) in *Dakshin* (south), (4) in *Uttar* (north), (5) in *Urdhva* (zenith) and (6) in *Adho* (nadir) **40.** In the same way five sensed animals and human beings also have *gati, aagati* etc in all the six directions

विवेचन—सूत्रोक्त १३ पदो का अर्थ इस प्रकार है-(१) **आगति**—पूर्वभव से वर्तमान भव मे आना। (२) **अवक्रान्ति**—उत्पत्तिस्थान मे उत्पन्न होना। (३) **आहार**—प्रथम समय मे शरीर के योग्य पुद्गलो का ग्रहण करना। (४) **वृद्धि**—उत्पत्ति के पश्चात् शरीर का बढना। (५) **हानि**—शरीर के पुद्गलो का ह्रास। (६) **विक्रिया**—शरीर के छोटे-बडे विविध आकारो का निर्माण। (७) **गति-पर्याय**—गमन करना। (८) **समुद्घात**—वर्तमान शरीर को बिना त्यागे कुछ आत्म-प्रदेशो का शरीर से बाहर निकलना। (९) **काल-सयोग**—काल-विभाग। (१०) **दर्शनाभिगम**—अवधिदर्शन आदि के द्वारा वस्तु का सामान्य अवलोकन। (११) **ज्ञानाभिगम**—अवधिज्ञान आदि के द्वारा वस्तु का परिज्ञान। (१२) **जीवाभिगम**—अवधिज्ञान आदि के द्वारा जीवो का परिज्ञान। (१३) **अजीवाभिगम**—अवधिज्ञान आदि के द्वारा पुद्गलो का परिज्ञान। उपर्युक्त गति-आगति आदि सभी कार्य छहो दिशाओ से सम्पन्न होते है।

Elaboration—The meanings of thirteen terms, besides *gati*, are as follows—(1) *Aagati*—incarnation or movement from past birth to this birth (2) *Avakranti*—to get born at place of birth (3) *Ahar*—to acquire body-forming matter particles during the first *Samaya* of birth (4) *Vriddhi*—post-birth growth of body (5) *Nivriddhi*—loss of matter particles of body (6) *Vikaran*—forming of various small or large parts of the body (7) *Gati-paryaya*—to move (8) *Samudghat*—to move some soul-space-points outside the body without completely abandoning the present body (9) *Kaal-samyoga*—to divide time in sections

(10) *Darshanabhigam*—to have cursory view of a thing through *avadhi-darshan* or other such capacity (11) *Jnanabhigam*—to know things through *avadhi-jnana* (12) *Jivabhigam*—to know about beings through *avadhi-jnana* (13) *Ajivabhigam*—to know about matter through *avadhi-jnana*. All these actions are performed in all the six directions

आहार-पद AHAR-PAD (SEGMENT OF FOOD)

४१. छहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे आहारमाहारेमाणे णातिक्कमति, तं जहा–

वेयण–वेयावच्चे, ईरियट्ठाए य संजमट्ठाए।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिंताए॥१॥

४२. छहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे आहारं वोच्छिंदमाणे णातिक्कमति, तं जहा–

आतंके उवसग्गे, तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए।
पाणिदया–तवहेउं, सरीरवुच्छेयणट्ठाए॥१॥

४१. श्रमण निर्ग्रन्थ छह कारणो से आहार करता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है–(१) **वेदना**–भूख की पीडा मिटाने के लिए। (२) वैयावृत्य करने के लिए। (३) ईर्यासमिति का पालन करने के लिए। (४) सयम की रक्षा के लिए। (५) प्राण-धारण किये रखने के लिए। (६) धर्म का चिन्तन करने के लिए।

४२. श्रमण निर्ग्रन्थ छह कारणो से आहार का परित्याग करता हुआ भगवान की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है–(१) **आतक**–ज्वर आदि आकस्मिक रोग हो जाने पर। (२) **उपसर्ग**–देव, मनुष्य, तिर्यंच कृत उपद्रव होने पर। (३) **तितिक्षण**–ब्रह्मचर्य की सुरक्षा के लिए। (४) प्राणियो की दया के लिए। (५) तप की वृद्धि के लिए। (६) शरीर का व्युत्सर्ग करने के लिए।

41. A *Shraman Nirgranth* does not defy the word of *Bhagavan* if he takes food for six reasons—(1) *vedana*—to remove pain of hunger, (2) *vaiyavritya*—for serving ascetics, (3) *iryasamiti*—for observing careful movement, (4) *samyam*—for protecting ascetic-discipline, (5) *pran-dharan*—for survival and (6) *dharma-chintan*—for religious contemplation

42. A *Shraman Nirgranth* does not defy the word of *Bhagavan* if he abandons food for six reasons—(1) *atank*—due to sudden fever or other ailment, (2) *upsarg*—due to divine, human or animal affliction, (3) *titikshan*—to protect celibacy, (4) compassion—for compassion towards living beings, (5) *tap*—for extending austerities and (6) *vyutsarg*—for abandoning the body

उन्माद-सूत्र UNMAAD-PAD (SEGMENT OF MADNESS)

४३. छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं पाउणेज्जा, तं जहा—अरहंताणं अवण्णं वदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरिय-उवज्झायाणं अवण्णं वदमाणे, चाउव्वण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे, जक्खावेसेण चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं।

४३. छह कारणो से आत्मा उन्माद (मिथ्यात्व) को प्राप्त होता है, जैसे-(१) अर्हन्तो का, (२) अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म का, (३) आचार्य और उपाध्याय का, (४) चतुर्वर्ण (चतुर्विध) सघ का अवर्णवाद करता हुआ (५) यक्ष आदि के शरीर मे प्रविष्ट हो जाने पर, (६) मोहनीय कर्म के उदय से।

43. A soul gets mad or unrighteous for six reasons—by slandering and criticizing (1) *Arhants*, (2) religion propagated by *Arhats*, (3) *acharya* and *upadhyaya*, and (4) *Chaturvarna (Chaturvidh) Sangh* (four limbed religious organization), (5) by being possessed by evil spirits including *Yaksh* and (6) due to fruition of *mohaniya karma* (deluding *karma*)

विवेचन—उन्माद का अर्थ है, विवेक भ्रष्ट हो जाना, पागल हो जाना या मिथ्यात्व के उदय से सत्य को असत्य कहकर अनर्गल प्रलाप करना। मिथ्यात्व भाव उन्माद है, प्रथम चार भेद भाव उन्माद के है। शेष दो भेद द्रव्य उन्माद के है।

Elaboration—*Unmaad* means to lose rationality and go mad It also includes to blather under influence of unrighteousness calling true as false Unrighteousness itself is madness The first four statements are called *bhaava unmaad* and the last two *dravya unmaad*

प्रमाद-पद PRAMAD-PAD (SEGMENT OF STUPOR)

४४. छव्विहे पमाए पण्णत्ते, तं जहा—मज्जपमाए, णिद्दपमाए, विसयपमाए, कसायपमाए, जूतपमाए, पडिलेहणापमाए।

४४. प्रमाद छह प्रकार का है (१) मद्य-प्रमाद, (२) निद्रा-प्रमाद, (३) विषय-प्रमाद, (४) कषाय-प्रमाद, (५) द्यूत-प्रमाद, (६) प्रतिलेखना-प्रमाद। प्रमाद ही कर्म बन्धन का हेतु है।

44. *Pramad* (stupor) is of six kinds—(1) *madya-pramad* (stupor of alcohol), (2) *nidra-pramad* (stupor of sleep), (3) *vishaya-pramad* (stupor of carnal pleasures), (4) *kashaya-pramad* (stupor of passions), (5) *dyoot-pramad* (stupor of gambling) and (6) *pratilekhana-pramad* (stupor of inspection)

विवेचन—उन्माद का सहचारी प्रमाद है। कर्त्तव्य के प्रति उपेक्षा, लापरवाही, प्राप्त साधनो का दुरुपयोग तथा सदुपयोग करने मे उत्साह हीनता प्रमाद है।

Elaboration—Stupor is associated with madness To ignore and neglect duties, to misuse available facilities and to have apathy towards use of facilities is stupor

प्रतिलेखना–पद **PRATILEKHANA-PAD (SEGMENT OF INSPECTION)**

४५. छव्विहा पमायपडिलेहणा पण्णत्ता, तं जहा–

आरभडा संमद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली ततिया।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

४५. प्रमाद (अविधि) पूर्वक की गई प्रतिलेखना छह प्रकार की है। (१) **आरभटा**–वस्त्रादि को सम्यक् प्रकार से देखे बिना उतावल से प्रतिलेखना करना। (२) **सम्मर्दा**–मर्दन करके वस्त्रो के कोने पकडकर या मसलकर प्रतिलेखना करना। (३) **मोसली**–वस्त्र के ऊपरी, निचले या तिरछे भाग का प्रतिलेखन करते हुए भूमि या दीवार आदि से टकराना। (४) **प्रस्फोटना**–वस्त्र की धूलि को जोर से झटकारते हुए प्रतिलेखना करना। (५) **विक्षिप्ता**–प्रतिलेखित वस्त्रो को अप्रतिलेखित वस्त्रो के ऊपर रखना। (६) **वेदिका**–प्रतिलेखना करते समय विधिवत् न बैठकर गलत ढग से बैठकर प्रतिलेखना करना।

45. Inspection (*pratilekhana*) with *pramad* (done under stupor or improperly) is of six kinds—**(1) Aarbhata**—to hastily inspect clothes without taking proper care **(2) Sammarda**—to inspect clothes after wrenching by holding ends or to inspect clothes by rubbing **(3) Mosali**—to collide with wall or another thing while inspecting the upper, lower or oblique parts of clothes **(4) Prasfotana**—to inspect while shaking or jerking clothes to remove dust **(5) Vikshipta**—to place inspected clothes over uninspected clothes **(6) Vedika**—not to sit properly according to the prescribed procedure while inspecting clothes

४६. छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पण्णत्ता, तं जहा–

अणच्चावितं अवलितं अणाणुबंधिं अमोसलिं चेव।
छप्पुरिमा णव खोडा, पाणीपाणविसोहणी॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

४६. प्रमाद-रहित (शास्त्रोक्त विधि अनुसार) प्रतिलेखना छह प्रकार की है–(१) **अनर्तिता**–शरीर या वस्त्र को न नचाते हुए प्रतिलेखना करना। (२) **अवलिता**–शरीर या वस्त्र को झुकाये बिना प्रतिलेखना करना। (३) **अनानुबन्धी**–उतावल रहित वस्त्र को झटकाये बिना प्रतिलेखना करना। (४) **अमोसली**–वस्त्र के ऊपरी, निचले आदि भागो को मसले बिना प्रतिलेखना करना। (५) **षट्पूर्वा नवखोडा**–प्रतिलेखन किये जाने वाले वस्त्र को पसारकर और आँखो से भली-भाँति देखकर उसके दोनो भागो को तीन-तीन बार पूँज कर तीन बार शोधना नवखोडा है। (६) **पाणिप्राण-विशोधिनी**–वस्त्र पर चलते हुए जीव को हाथ के ऊपर लेकर प्रासुक स्थान पर सुरक्षित रख देना। *(प्रतिलेखना का विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २६ मे देखे)*

46. Inspection (*pratilekhana*) without *pramad* (following the procedure prescribed in scriptures) is of six kinds—**(1) Anartita**—to inspect without swaying the body or clothes **(2) Avalita**—to inspect clothes without bending **(3) Ananubandhi**—to inspect clothes without any haste and without jerking, **(4) Amosali**—to inspect clothes without rubbing upper, lower and middle part **(5) Shatpurva-navakhoda**—to spread the cloth, inspect both its sides carefully and feel its surface lightly three times and cleanse it three times **(6) Panipran-vishodhini**—to carefully lift any insect, moving on the cloth, on palm and place it at a clean and secure spot *(for detailed description of pratilekhana see Uttaradhyayan Sutra, Adhyayan 26)*

लेश्या–पद LESHYA-PAD (SEGMENT OF COMPLEXION OF SOUL)

४७. छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, [णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा] सुक्कलेसा। ४८. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, [णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा], सुक्कलेसा। ४९. एवं मणुस्स—देवाण वि।

४७. लेश्याएँ छह है -(१) कृष्णलेश्या, [(२) नीललेश्या, (३) कापोतलेश्या, (४) तेजोलेश्या, (५) पद्मलेश्या], (६) शुक्ललेश्या। ४८ पचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीवो के छह लेश्याएँ होती है - (१) कृष्णलेश्या, [(२) नीललेश्या, (३) कापोतलेश्या, (४) तेजोलेश्या, (५) पद्मलेश्या], (६) शुक्ललेश्या। ४९. इसी प्रकार मनुष्यो और देवो के भी छह-छह लेश्याएँ होती है।

47. *Leshyas* (complexion of soul) are of six kinds—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul), (4) *tejo leshya* (fiery complexion of soul), (5) *padma leshya* (yellow complexion of soul) and (6) *shukla leshya* (white complexion of soul) **48.** Five sensed animals have six *leshyas*—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul), (4) *tejo leshya* (fiery complexion of soul), (5) *padma leshya* (yellow complexion of soul) and (6) *shukla leshya* (white complexion of soul) **49.** In the same ways human beings and gods too have six *leshyas* each

अग्रमहिषी–पद AGRAMAHISHIS-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS)

५०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। ५१. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ।

५०. देवराज देवेन्द्र शक्र के लोकपाल सोम महाराज की छह अग्रमहिषियाँ है। ५१. देवराज देवेन्द्र शक्र के लोकपाल यम महाराज की छह अग्रमहिषियाँ है।

50. Soma, the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has four *agramahishis* (chief queens) 51. Yama, the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has four *agramahishis* (chief queens)

स्थिति–पद STHITI-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN)

५२. ईसाणस्स णं देविंदस्स [देवरण्णो] मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।

५२. देवराज देवेन्द्र ईशान की मध्यम परिषद् के देवो की स्थिति छह पल्योपम है।

52. The *sthiti* (life span) of the gods of the middle assembly of Ishan Devendra, the king of gods is six *Palyopam*

महत्तरिका–पद MAHATTARIKA-PAD (SEGMENT OF PRINCIPAL GODDESS)

५३. छ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–रूवा, रूवंसा, सुरूवा, रूववती, रूवकंता, रूवप्पभा। ५४. छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–अला, सक्का, सतेरा, सोतामणि, इंदा, घणविज्जुया।

५३. दिक्कुमारियो की छह महत्तरिकाएँ (प्रधान) है–(१) रूपा, (२) रूपाशा, (३) सुरूपा, (४) रूपवती, (५) रूपकान्ता, (६) रूपप्रभा। ५४. विद्युत्कुमारियो की छह महत्तरिकाएँ–(१) अला, (२) शक्रा, (३) शतेरा, (४) सौदामिनी, (५) इन्द्रा, (६) घनविद्युत्।

53. There are six *Mahattarikas* (principal goddesses) of *Dikkumaris* (directional goddesses)—(1) Rupa, (2) Rupamsha, (3) Surupa, (4) Rupavati, (5) Rupakanta and (6) Rupaprabha **54.** There are six *Mahattarikas* (principal goddesses) of *Vidyutkumaris* (goddesses of lightening)—(1) Chitra, (2) Chitrakanaka, (3) Satera, (4) Saudamini, (5) Indra and (6) Ghanavidyut

अग्रमहिषी–पद AGRAMAHISHIS-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS)

५५. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–अला, सक्का, सतेरा, सोतामणि, इंदा, घणविज्जुया। ५६. भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–अला रूवा, रूवंसा, सुरूवा, रूववती, रूवकंता, रूवप्पभा। ५७. जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स। ५८. जहा भूताणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स।

५५. नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र धरण की छह अग्रमहिषियाँ है, (१) अला (आला), (२) शक्रा, (३) शतेरा, (४) सौदामिनी, (५) इन्द्रा, (६) घनविद्युत्। ५६. नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र भूतानन्द की छह अग्रमहिषियाँ है, (१) रूपा, (२) रूपाशा, (३) सुरूपा, (४) रूपवती, (५) रूपकान्ता, (६) रूपप्रभा। ५७. जिस प्रकार धरण की छह अग्रमहिषियाँ है, उसी प्रकार भवनपति इन्द्र वेणुदेव,

हरिकान्त, अग्निशिख, पूर्ण, जलकान्त, अमितगति, बेलम्ब और घोष इन सभी दक्षिणेन्द्रो की छह-छह अग्रमहिषियाँ है। ५८. जिस प्रकार भूतानन्द की छह अग्रमहिषियाँ है, उसी प्रकार हरिस्सह, अग्निमानव, विशिष्ट, जलप्रभ, अमितवाहन, प्रभजन और महाघोष, इन सभी उत्तरेन्द्रो की छह-छह अग्रमहिषियाँ है।

55. Dharan Naagkumarendra, the king of Naag Kumar gods in the south, has six *agramahishis* (chief queens)—(1) Ala (Aala), (2) Shakra, (3) Shatera, (4) Saudamini, (5) Indra and (6) Ghanavidyut **56.** Bhootanand Naagkumarendra, the king of Naag Kumar gods in the north, has six *agramahishis* (chief queens)—(1) Rupa, (2) Rupamsha, (3) Surupa, (4) Rupavati, (5) Rupakanta and (6) Rupaprabha **57.** Like the *agramahishis* of Dharan, all *Dakshinendras* (the overlords of south)—Venudev, Harikant, Agnishikh, Purna, Jalakant, Amit-gati, Velamb and Ghosh have six *agramahishis* each **58.** Like the *agramahishis* of Bhootanand, all *Uttarendras* (the overlords of north)—Harissaha, Agnimanav, Vishisht, Jalaprabh, Amit-vahan, Prabhanjan and Mahaghosh have six *agramahishis* each

सामानिक-पद SAMANIK-PAD (SEGMENT OF GODS OF EQUAL STATUS)

५९. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छस्सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ६०. एवं भूताणंदस्सवि जाव महाघोसस्स।

५९. नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र धरण के छह हजार सामानिक देव है। ६०. इसी प्रकार नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र भूतानन्द, वेणुदालि, हरिस्सह, अग्निमानव, विशिष्ट, जलप्रभ, अमितवाहन, प्रभजन और महाघोष के भी भूतानन्द के समान छह-छह हजार सामानिक देव है।

59. Dharan Naagkumarendra, the king of Naag Kumar gods, has six thousand *Samanik* gods (gods of equal status) **60.** In the same way Bhootanand, Venudali, Harissaha, Agnimanav, Vishisht, Jalaprabh, Amit-vahan, Prabhanjan and Mahaghosh Naagkumarendras too have six thousand *Samanik* gods each

मति-पद (अवग्रहादि के २४ विकल्प) MATI-PAD (SEGMENT OF INTELLECTUAL FACULTY)

६१. छव्विहा ओग्गहमती पण्णत्ता, तं जहा-खिप्पमोगिण्हति, बहुमोगिण्हति, बहुविधमोगिण्हति, मोगिण्हति, धुवमोगिण्हति, अणिस्सियमोगिण्हति, असंदिद्धमोगिण्हति।

६१. अवग्रहमति (सामान्य अर्थग्रहण करने वाली) के छह प्रकार है-(१) **क्षिप्र-अवग्रहमति**-शीघ्र ग्रहण करना। (२) **बहु-अवग्रहमति**-अनेक पदार्थो को एक-एक करके बहुत ग्रहण करना। (३) **बहुविध-अवग्रहमति**-बहुत प्रकार के पदार्थो के अनेक पर्यायो को ग्रहण करना। (व्यवहारभाष्य के

अनुसार-एक साथ भिन्न-भिन्न इन्द्रियो से विभिन्न विषयो को ग्रहण करना) (४) **ध्रुव-अवग्रहमति**-निश्चल (सम्पूर्ण रूप मे) ग्रहण करना। (५) **अनिश्रित-अवग्रहमति**-अनुमान आदि का सहारा लिए बिना ग्रहण करना। (६) **असंदिग्ध-अवग्रहमति**-सन्देह-रहित ग्रहण करना। (६१)।

61. *Avagraha mati* (intellectual faculty to acquire general meaning) is of six kinds—(1) *Kshipra-avagraha mati*—to acquire quickly (2) *Bahu-avagraha mati*—to acquire many things one by one (3) *Bahuvidh-avagraha mati*—to acquire many modes of many things [Interpretation in *Vyavahar Bhashya*—to acquire various information through different sense organs at once] (4) *Dhruva-avagraha mati*—to acquire with stability or perfectly (5) *Anishrit-avagraha mati*—to acquire without the aid of imagination or estimation or other such means (6) *Asandigdha-avagraha mati*—to acquire without any doubt

६२. छव्विहा ईहामती पण्णत्ता, तं जहा-खिप्पमीहति, बहुमीहति, [बहुविधमीहति, धुवमीहति, अणिस्सियमीहति] असंदिद्धमीहति।

६२. ईहामति [अवग्रह से जाने हुए पदार्थ के विशेष रूप मे जानने की इच्छा] छह प्रकार की है-(१) **क्षिप्र-ईहामति**-शीघ्र ईहा करना। (२) **बहु-ईहामति**-बहुत जिज्ञासावाली मति। (३) **बहुविध-ईहामति**-बहुत प्रकार की वस्तुओ की ईहा करना। (४) **ध्रुव-ईहामति**-ध्रुव रूप मे जानने की जिज्ञासा। (५) **अनिश्रित-ईहामति**-अनुमान आदि के आलम्बन बिना जिज्ञासा करना। (६) **असंदिग्ध-ईहामति**-असदिग्ध वस्तु की विशेष जिज्ञासा।

62. *Iha mati* (desire to know more about the things acquired through *avagraha*) is of six kinds—(1) *Kshipra-iha mati*—fleet curiosity (2) *Bahu-iha mati*—elaborate curiosity (3) *Bahuvidh-iha mati*—curiosity to know things of numerous kinds (4) *Dhruva-iha mati*—curiosity to know perfectly (5) *Anishrit-iha mati*—curiosity unaided by imagination or estimation (6) *Asandigdha-iha mati*—specific curiosity about unambiguous things

६३. छव्विहा अवायमती पण्णत्ता, तं जहा-खिप्पमवेति, [बहुमवेति, बहुविधमवेति, धुवमवेति, अणिस्सियमवेति], असंदिद्धमवेति।

६३. अवायमति (निर्णायक या निश्चय बुद्धि) छह प्रकार की है-(१) **क्षिप्रावाय-मति**-शीघ्र अवाय करना। (२) **बहु-अवायमति**-बहुत अवाय करना। (३) **बहुविध-अवायमति**-बहुत प्रकार की वस्तुओ का अवाय करना। (४) **ध्रुव-अवायमति**-ध्रुव अवाय करना। (५) **अनिश्रित-अवायमति**-अनुमान आदि के बिना ही अवाय करना। (६) **असंदिग्ध-अवायमति**-असदिग्ध निश्चय करना।

63. *Avaya mati* (discerning or decisive wisdom) is of six kinds—(1) *Kshipra-avaya mati*—to take quick decision (2) *Bahu-avaya mati*—

to take elaborate decision (3) *Bahuvidh-avaya mati*—to take decision about many things (4) *Dhruva-avaya mati*—to take perfect decision. (5) *Anishrit-avaya mati*—to take decision unaided by imagination or estimation (6) *Asandigdha-avaya mati*—to take doubt-free decision

६४. छव्विहा धारणा [मती ?] पण्णत्ता तं जहा–बहुं धरेति, बहुविहं धरेति, पोराणं धरेति, दुद्धरं धरेति, अणिस्सितं धरेति, असंदिद्धं धरेति।

६४. धारण (निर्णीत विषय को भविष्य मे याद रखने वाली) मति छह प्रकार की है-(१) **बहु-धारणामति**–बहुत धारण करना। (२) **बहुविध–धारणामति**–बहुत प्रकार की वस्तुओ की धारणा करना। (३) **पुराण–धारणामति**–पुराने पदार्थ की धारणा रखना। (४) **दुर्धर–धारणामति**–दुर्धर-गहन पदार्थ की धारणा करना। (५) **अनिश्रित–धारणामति**–अनिश्रित धारणा करना। (६) **असंदिग्ध–धारणामति**–असदिग्ध धारणा करना।

64. *Dharana mati* (intellectual faculty to put the decision into memory) is of six kinds—(1) *Bahu-dharana mati*—to memorize much (2) *Bahuvidh-dharana mati*—to memorize a variety of things (3) *Purana-dharana mati*—to remember old things (4) *Durdha-dharana mati*—to memorize difficult or complex things (5) *Anishrit-dharana mati*—to memorize unaided by imagination or conjecture (6) *Asandigdha-dharana mati*—to memorize without doubt

तप पद (बाह्य–आभ्यन्तर तप) TAPAH-PAD (SEGMENT OF AUSTERITIES)

६५. छव्विहे बाहिरए तवे पण्णत्ते, तं जहा–अणसणं, ओमोदरिया, भिक्खायरिया, रस–परिच्चाए, कायकिलेसो, पडिसंलीणता। ६६. छव्विहे अब्भंतरिए तवे पण्णत्ते, तं जहा–पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउस्सग्गो।

६५. **बाह्य तप** के छह प्रकार है-(१) अनशन, (२) अवमोदरिका, (३) भिक्षाचर्या, (४) रसपरित्याग, (५) कायक्लेश, (६) प्रतिसलीनता। **६६. आभ्यन्तर तप** छह प्रकार का है-(१) प्रायश्चित्त, (२) विनय, (३) वैयावृत्य, (४) स्वाध्याय, (५) ध्यान, (६) व्युत्सर्ग। (तप के १२ भेदो का वर्णन औपपातिक सूत्र मे देखे)

65. *Bahya tap* (outer or physical austerities) are of six kinds—(1) *anashan* (fasting), (2) *avamodarika* (eating less than appetite and also to limit use of other utilities), (3) *bhikshacharya* (alms seeking), (4) *rasaparityag* (abstaining from tasty and rich things), (5) *kayaklesh* (mortification of body) and (6) *pratisamlinata* (to restrain the extrovert attitudes related to senses) **66.** *Abhyantar tap* (inner or spiritual austerities) are of six kinds—(1) *pryayashchit* (atonement), (2) *vinaya* (modesty), (3) *vaiyavritya* (service to others), (4) *svadhyaya* (self-study),

(5) *dhyan* (meditation) and (6) *vyutsarg* (dissociation from the body or abandoning the body). (for more details refer to *Aupapatik Sutra*)

विवाद–पद VIVAAD-PAD (SEGMENT OF DEBATE)

६७. छव्विहे विवादे पण्णत्ते, तं जहा—ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता, अणुलोमइत्ता, पडिलोमइत्ता, भइत्ता, भेलइत्ता।

६७. विवाद के छह प्रकार (अग) है–(१) **ओसक्कइत्ता**–वादी के तर्क का उत्तर ध्यान मे न आने पर समय बिताने के लिए प्रस्तुत विषय से हट जाना। (२) **उस्सक्कइत्ता**–शास्त्रार्थ की पूर्ण तैयारी होते ही वादी को पराजित करने के लिए आगे आना। (३) **अणुलोमइत्ता**–विवादाध्यक्ष को अपने अनुकूल बना लेना अथवा प्रतिवादी के पक्ष का एक बार समर्थन कर उसे अपने अनुकूल कर लेना। (४) **पडिलोमइत्ता**–शास्त्रार्थ की पूर्ण तैयारी होने पर विवादाध्यक्ष तथा प्रतिपक्षी की उपेक्षा कर देना। (५) **भइत्ता**–विवादाध्यक्ष (निर्णायक) की सेवा कर उसे अपने पक्ष मे कर लेना। (६) **भेलइत्ता**–निर्णायको मे अपने समर्थको का बहुमत कर लेना।

67. There are six kinds (parts) of *vivaad* (debate)—(1) *Osakkaitta*—to shift from the topic under discussion to bide one's time when reply to the opponents argument is not thought out (2) *Ussakkaitta*—to come forward to defeat the opponent when fully prepared for debate (3) *Anulomaitta*—to make the judge favourable or to make the opponent sympathetic by supporting his argument once (4) *Padilomaitta*—to ignore the judge as well as opponent in case fully prepared for debate (5) *Bhaitta*—To seek favour of the judge by offering him services (6) *Bhelaitta*—to build favourable majority among a group of judges

६८. छव्विहा खुड्डा पाणा पण्णत्ता, तं जहा—बेंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, संमुच्छिम-पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, तेउकाइया, वाउकाइया।

६८. क्षुद्र प्राणी छह प्रकार के है–(१) द्वीन्द्रिय, (२) त्रीन्द्रिय, (३) चतुरिन्द्रिय, (४) सम्मूर्च्छिम पचेन्द्रियतिर्यग्योनिक, (५) तेजस्कायिक, (६) वायुकायिक।

68. *Kshudra prani* (worthless living beings) are of six kinds—(1) *Dvindriya* (two-sensed beings), (2) *Trindriya* (three-sensed beings), (3) *Chaturindriya* (four-sensed beings), (4) *Sammurchhim panchendriya-tiryagyonik* (five-sensed animal beings of asexual origin) and (5) *tejaskayik* (fire-bodied beings) and (6) *vayukayik* (air-bodied beings)

विवेचन–वृत्तिकार ने क्षुद्र का अर्थ तुच्छ या अधम किया है। इनको क्षुद्र मानने के दो कारण है - (१) इनमे कोई भी देव गति से आकर उत्पन्न नही होता। (२) इनसे निकलकर दूसरे भव मे सिद्ध नही होता। *(वृत्ति पत्र ३४७)*

Elaboration—According to the commentator (*Vritti*) *kshudra* means lowly or worthless There are two reasons for this—(1) None of these reincarnates from divine genus and (2) none of these gets liberated after one reincarnation *(Vritti leaf 347)*

गोचरचर्या–पद GOCHAR-CHARYA-PAD (SEGMENT OF MOVING FOR ALMS)

६९. छव्विहा गोयरचरिया पण्णत्ता, तं जहा–पेडा, अद्धपेडा, गोमुत्तिया, पतंगवीहिया, संबुक्कावट्टा, गंतुंपच्चागता।

६९. गोचर-चर्या छह प्रकार की है-(१) **पेटा**–पेटी की तरह गॉव के चार विभाग करके गोचरी करना। (२) **अर्धपेटा**–गाँव के दो विभाग करके गोचरी करना। (३) **गोमूत्रिका**–घरो की आमने-सामने वाली दो पक्तियो मे कभी दाएँ से बाएँ कभी बाएँ से दाएँ आते-जाते गोचरी करना। (४) **पतंगवीथिका**–पतगा की उडान के समान बिना क्रम के एक घर से गोचरी लेकर एकदम दूरवर्ती घर से गोचरी लेना। (५) **शम्बूकावर्त्ता**–शख के आवर्त (गोलाकार) के समान घरो का क्रम बनाकर गोचरी लेना। (६) **गत्वा-प्रत्यागता**–प्रथम पक्ति के घरो मे क्रम से आद्योपान्त गोचरी करके द्वितीय पक्ति के घरो मे क्रमश गोचरी करते हुए वापस आना। (ये छहो अभिग्रह विशेष के भेद है)

69. *Gochar-charya* (moving for alms) is of six kinds—(1) *Peta*—to divide the village in four parts like a box and move about to seek alms (2) *Ardhapeta*—to divide the village in two parts and move about to seek alms (3) *Gomutrika*—to move about to seek alms in a row of facing houses sometimes from left to right and sometimes from right to left (4) *Patangavithika*—to seek alms at random, like the flight of a moth, first from one house and then from a distant (5) *Shambukavarta*—to seek alms from houses in a hypothetically spiral arrangement (6) *Gatva-pratyagata*—to seek alms in order from all houses in the first row while going and then from houses in the second row while returning (All these six are included in special resolves)

महानरक–पद MAHANARAK-PAD (SEGMENT OF WORST HELL)

७०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंत-महाणिरया पण्णत्ता, तं जहा–लोले, लोलुए, उद्दड्ढे, णिद्दड्ढे जरए, पज्जरए। ७१. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंतमहाणिरया पण्णत्ता, तं जहा–आरे, वारे, मारे, रोरे, रोरुए, खाडखडे।

७०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे इस रत्नप्रभा पृथ्वी (प्रथम नरक) मे छह अपक्रान्त (अति निकृष्ट) महानरक है, जैसे- (१) लोल, (२) लोलुप, (३) उद्दग्ध, (४) निर्दग्ध,

(५) जरक, (६) प्रजरक। ७१. चौथी पकप्रभा पृथ्वी (दक्षिण भाग) मे छह अपक्रान्त महानरक है- (१) आर, (२) बार, (३) मार, (४) रोर, (५) रोरुक, (६) खाडखड।

70. In Jambu Dveep to the south of Mandar mountain in this Ratnaprabha Prithvi (the first hell) there are six *apakrant* (worse of the worst) *mahanarak* (worst hells)—(1) Lola, (2) Lolup, (3) Uddagdha, (4) Nirdagdha, (5) Jarak and (6) Prajarak **71.** In the fourth (hell) Pankaprabha Prithvi (in the southern part) there are six *apakrant mahanaraks*—(1) Aar, (2) Baar, (3) Maar, (4) Rora, (5) Roruk and (6) Khaatkhad

विवेचन—सातो नरको मे दो प्रकार के नरकावास है-(१) आवलिका प्रविष्ट और (२) पुष्पावकीर्ण। आवलिका के तीन आकार है-गोल, त्रिकोण और चतुष्कोण। पुष्पावकीर्ण अनेक प्रकार के होते है। अपक्रान्त महानरकावास आवलिका प्रविष्ट है तथा ये सबसे अधिक भयावह होते है। *(हिन्दी टीका भाग २ पृष्ठ ३०६)*

Elaboration—In all the seven hells there are two types of infernal abodes—*Avalika pravisht* and *Pushpavakeern* *Avalika* has three shapes—circular, triangular and quadrangular *Pushpavakeern* has numerous types The *Apakrant Mahanarak* abodes are *Avalika pravisht* and most horrifying *(Hindi Tika, part-2, p 306)*

विमानप्रस्तट–पद VIMAAN-PRASTAT-PAD (SEGMENT OF GAP BETWEEN CELESTIAL VEHICLES)

७२. बंभलोगे णं कप्पे छ विमाण पत्थडा पण्णत्ता, तं जहा—अरए, विरए, णीरए, णिम्मले, वितिमिरे, विसुद्धे।

७२. ब्रह्मलोक कल्प मे छह विमान प्रस्तट (भवनो के मध्य का अन्तराल भाग) है-(१) अरजस्, (२) विरजस्, (३) नीरजस्, (४) निर्मल, (५) वितिमिर, (६) विशुद्ध।

72. In Brahmalok Kalp there are six *Vimaan-prastats* (intervening space or gap between two divine abodes)—(1) Arjas, (2) Virajas, (3) Neerajas, (4) Nirmal, (5) Vitimir and (6) Vishuddha

नक्षत्र–पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

७३. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा, पुव्वफग्गुणे, मूलो, पुव्वासाढा। ७४. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खत्ता पण्णरसमुहुत्ता, तं जहा—सयभिसया, भरणी, अद्दा, अस्सेसा, साती, जेट्ठा।

७३. ज्योतिषराज, ज्योतिषेन्द्र चन्द्र के पूर्वभाग मे, समक्षेत्री और तीस मुहूर्त तक चन्द्र के साथ योग करने वाले छह नक्षत्र है-(१) पूर्वभाद्रपद, (२) कृत्तिका, (३) मघा, (४) पूर्वफाल्गुनी, (५) मूल, (६) पूर्वाषाढा। ७४. ज्योतिष्कराज, ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के अपार्धक्षेत्र मे रहने वाले [मात्र रात्रि भाग मे रहने वाले] पन्द्रह मुहूर्त तक योग करने वाले छह नक्षत्र है-(१) शतभिषक्, (२) भरणी, (३) आर्द्रा, (४) आश्लेषा, (५) स्वाति, (६) ज्येष्ठा।

73. To the east of Jyotishendra Chandra, the king of celestial gods, there are six constellations in the same segment of space (covered by moon) and associating for thirty *Muhurts* (day and night) with the moon—(1) Purva Bhadrapad (Alpha Pegasi, the 26th), (2) Krittika (Eta Tauri or Pleiades, the 3rd), (3) Magha (Regulus, the 10th), (4) Purva Phalguni (Delta Leonis, the 11th), (5) Mula (Lambda Scorpii, the 19th) and (6) Purva Ashadha (Delta Sagittarii, the 20th) **74.** There are six constellations in half the segment of space (covered by moon) and associating for fifteen *Muhurts* (night) with the moon—(1) Shat Bhishag (Lambda Aquarii, the 25th), (2) Bharani (35 Arietis, the 2nd), (3) Ardra (Alpha Orionis, the 6th), (4) Ashlesha (Alpha Hydrae, the 9th), (5) Swati (Arcturus, the 15th) and (6) Jyeshtha (Antares, the 18th)

७५. चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता, उभयभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा–रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा, उत्तराभद्दवया।

७५. ज्योतिष्कराज, ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के उभययोगी-दोनो भाग वाले द्व्यर्ध क्षेत्र मे (१, $\frac{1}{2}$ क्षेत्र) वाले और पैतालीस मुहूर्त तक भोग करने वाले छह नक्षत्र है-(१) रोहिणी, (२) पुनर्वसु, (३) उत्तरफाल्गुनी, (४) विशाखा, (५) उत्तराषाढा, (६) उत्तराभाद्रपद।

75. There are six constellations in both the said segments of space (one and a half) and associating for forty five *Muhurts* with the moon—(1) Rohini (Aldebaran, the 4th), (2) Punarvasu (Beta Geminorum; the 7th), (3) Uttara Phalguni (Beta Leonis, the 12th), (4) Vishakha (Alpha Librae, the 16th), (5) Uttara Ashadha (Sigma Sagittarii, the 21st) and (6) Uttara Bhadrapad (Gama Pegasi, the 27th)

इतिहास–पद ITIHAS-PAD (SEGMENT OF HISTORY)

७६. अभिचंदे णं कुलकरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था। ७७. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसतसहस्साइं महाराया हुत्था। ७८. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सता वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं संपया होत्था। ७९. वासुपुज्जे णं अरहा

छहिं पुरिससतेहिं सुद्धिं मुंडे (भवित्ता अगाराओ अणगारियं) पव्वइए। ८०. चंदप्पभे णं अरहा छउम्मासे छउमत्थे हुत्था।

७६. अभिचन्द्र (१०वे) कुलकर छह सौ धनुष ऊँचे शरीर वाले थे। ७७. चातुरन्त चक्रवर्ती भरत राजा छह लाख पूर्वो तक महाराज (सम्राट्) पद पर रहे। ७८. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व के देवो, मनुष्यो और असुरो की सभा मे अपराजित रहने वाले छह सौ वादी मुनियो की सम्पदा थी। ७९. वासुपूज्य अर्हत् छह सौ पुरुषो के साथ मुण्डित होकर गृहस्थ से अनगार धर्म मे प्रव्रजित हुए थे। ८०. चन्द्रप्रभ अर्हत् छह मास तक छद्मस्थ रहे।

76. Abhichandra Kulakar (10th) was six hundred *Dhanush* tall **77.** Chaturant Chakravarti Bharat Raja reigned as emperor for six hundred thousand *Purva* **78.** In Purushadaniya Arhat Parshva's divine, human, and *Asur* assembly their were six hundred debating ascetics who remained undefeated **79.** Vasupujya Arhat tonsured his head, renounced the household and got initiated in *Anagar dharma* (ascetic religion) along with six hundred men **80.** Chandraprabh Arhat remained *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) for six months

सयम–असंयम–पद SAMYAM-ASAMYAM-PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

८१. तेइंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जति, तं जहा–घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। जिब्भामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति, [जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति]।

८१. त्रीन्द्रिय जीवो का घात न करने वाले पुरुष को छह प्रकार का सयम होता है– (१) **घ्राणमय**–घ्राणेन्द्रिय–जनित सुख का वियोग नही करने से। (२) **घ्राणमय** दु ख का सयोग नही करने से। (३) **रसमय** सुख का वियोग नही करने से। (४) **रसमय** दु ख का सयोग नही करने से। (५) **स्पर्शमय** सुख का वियोग नही करने से। (६) **स्पर्शमय** दु ख का सयोग नही करने से।

81. A person not harming *trindriya* (three sensed beings) accomplishes four kinds of discipline—

(1) *Ghranamaya*—He does not terminate the pleasure derived through *ghranendriya* (nose or sense organ of smell) by these beings (2) *Ghranamaya*—He does not enforce the misery experienced through nose on these beings (3) *Rasamaya*—He does not terminate the pleasure derived through *rasanendriya* (tongue or sense organ of taste) by these

beings (4) *Rasamaya*—He does not enforce the misery experienced through tongue on these beings (5) *Sparshamaya*—He does not terminate the pleasure derived through *sparshanendriya* (sense organ of touch) by these beings (6) *Sparshamaya*—He does not enforce the misery experienced through touch on these beings

८२. तेइंदिया णं जीवा समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जति, तं जहा–घाणामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। [जिब्भामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति] फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति।

८२. त्रीन्द्रिय जीवो का घात करने वाले के छह प्रकार का असयम होता है -(१) घ्राणेन्द्रिय-जनित सुख का वियोग करने से। (२) घ्राणमय-दु ख का सयोग करने से। (३) रसमय सुख का वियोग करने से। (४) रसमय-दु ख का सयोग करने से। (५) स्पर्शमय-सुख का वियोग करने से। (६) स्पर्शमय-दु ख का सयोग करने से।

82. A person harming two sensed beings accomplishes four kinds of indiscipline—(1) *Ghranamaya*—He terminates the pleasure derived through *ghranendriya* (nose or sense organ of smell) by these beings (2) *Ghranamaya*—He enforces the misery experienced through nose on these beings (3) *Rasamaya*—He terminates the pleasure derived through *rasanendriya* (tongue or sense organ of taste) by these beings (4) *Rasamaya*—He enforces the misery experienced through tongue on these beings (5) *Sparshamaya*—He terminates the pleasure derived through *sparshanendriya* (sense organ of touch) by these beings (6) *Sparshamaya*—He enforces the misery experienced through touch on these beings

क्षेत्र पर्वत–पद KSHETRA PARVAT-PAD (SEGMENT OF AREAS AND MOUNTAINS)

८३. जंबुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा।

८३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे छह अकर्मभूमियॉ है–(१) हैमवत, (२) हैरण्यवत, (३) हरिवर्ष, (४) रम्यकवर्ष, (५) देवकुरु, (६) उत्तरकुरु।

83. In Jambu continent there are six *akarma-bhumis* (land of no endeavour)—(1) Haimavat, (2) Hairanyavat, (3) Harivarsh, (4) Ramyak-varsh, (5) Devakuru and (6) Uttar-kuru

८४. जंबुद्दीवे दीवे छव्वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे। ८५. जंबुद्दीवे दीवे छ वासाहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे, णीलवंते, रुप्पी, सिहरी।

८४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे छह वर्ष (क्षेत्र) है, जैसे-(१) भरत, (२) ऐरवत, (३) हैमवत, (४) हैरण्यवत, (५) हरिवर्ष, (६) रम्यकवर्ष। ८५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे छह वर्षधर पर्वत है-(१) क्षुद्रहिमवान्, (२) महाहिमवान्, (३) निषध, (४) नीलवान्, (५) रुक्मी, (६) शिखरी।

84. In Jambu continent there are six *varsh* (areas)—(1) Bharat, (2) Airavat, (3) Haimavat, (4) Hairanyavat, (5) Harivarsh and (6) Ramyak-varsh **85.** In Jambu continent there are six *Varsh-dhar parvats* (mountains)—(1) Kshudra Himavan, (2) Mahahimavan, (3) Nishadh, (4) Nilavaan, (5) Rukmi and (6) Shikhari

८६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं छ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंत—कूडे, वेसमणकूडे, महाहिमवंतकूडे, वेरुलियकूडे, णिसढकूडे, रुयगकूडे। ८७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं छ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—णीलवंतकूडे, उवदंसणकूडे, रुप्पिकूडे, मणिकंचणकूडे, सिहरिकूडे, तिगिंछिकूडे।

८६ जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे छह कूट है-(१) क्षुद्र हिमवान्कूट, (२) वैश्रमणकूट, (३) महाहिमवान्कूट, (४) वैडूर्यकूट, (५) निषधकूट, (६) रुचककूट। ८७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे छह कूट है-(१) नीलवतकूट, (२) उपदर्शनकूट, (३) रुक्मिकूट, (४) मणिकाचनकूट, (५) शिखरीकूट, (६) तिगिछिकूट।

86. In Jambu Dveep to the south of Mandar mountain there are six *koots* (peaks)—(1) Kshudra Himavan *koot*, (2) Vaishraman *koot*, (3) Mahahimavan *koot*, (4) Vaidurya *koot*, (5) Nishadh *koot* and (6) Ruchak *koot* **87.** In Jambu Dveep to the north of Mandar mountain there are six *koots* (peaks)—(1) Nilavant *koot*, (2) Upadarshan *koot*, (3) Rukmi *koot*, (4) Manikanchan *koot*, (5) Shikhari *koot* and (6) Tingichha *koot*

महाद्रह—पद MAHADRAHA-PAD (SEGMENT OF GREAT LAKES)

८८. जंबुद्दीवे दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता, तं जहा—पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिंछद्दहे, केसरिद्दहे, महापोंडरीयद्दहे, पुंडरीयद्दहे। तत्थ णं छ देवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितियाओ परिवसंति, तं जहा—सिरी, हिरी, धिती, कित्ती, बुद्धी, लच्छी।

८८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे छह महाद्रह है-(१) पद्मद्रह, (२) महापद्मद्रह, (३) तिगिञ्छिद्रह, (४) केशरीद्रह, (५) महापुण्डरीकद्रह, (६) पुण्डरीकद्रह। उनमे महर्धिक, महाद्युति, महाशक्ति, महायश,

महाबल, महासुखवाली तथा एक पल्योपम की स्थिति वाली छह देवियाँ निवास करती है-(१) श्री देवी, (२) ह्री देवी, (३) धृति देवी, (४) कीर्ति देवी, (५) बुद्धि देवी, (६) लक्ष्मी देवी।

88. In Jambu continent there are six *mahadrahas* (great lakes)—(1) Padmadraha, (2) Mahapadmadraha, (3) Tingichhadraha, (4) Kesaridraha, (5) Mahapaundareek-draha and (6) Paundareek-draha On these reside six goddesses having great wealth, great radiance, great power, great fame, great strength, great happiness and with a life span of one *Palyopam*—(1) Shridevi, (2) Hridevi, (3) Dhritidevi, (4) Kirtidevi, (5) Buddhidevi and (6) Laxmidevi

नदी-पद MAHANADI-PAD (SEGMENT OF GREAT RIVERS)

८९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं छ महाणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-गंगा, सिंधू, रोहिया, रोहितंसा, हरी, हरिकंता। ९०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं छ महाणदीओ पण्णत्ताओ तं जहा-णरकंता, णारिकंता, सुवण्णकूला, रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवती।

८९ जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे छह महानदियाँ है-(१) गगा, (२) सिन्धु, (३) रोहिता, (४) रोहिताशा (५) हरित, (६) हरिकान्ता। ९०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत क उत्तर भाग मे छह महानदियाँ है-(१) नरकान्ता, (२) नारीकान्ता, (३) सुवर्णकूला, (४) रूप्यकूला, (५) रक्ता, (६) रक्तवती। *(महाद्रह आदि की स्थिति भाग-१, चित्र-७ मे देखे)*

89. In Jambu continent, to the south of Mandar Mountain, flow six *mahanadis* (great rivers)—(1) Ganga, (2) Sindhu and (3) Rohita, (4) Rohitamsha, (5) Harit and (6) Harikanta **90.** In Jambu continent, to the north of Mandar Mountain, flow six *mahanadis* (great rivers)—(1) Narakanta, (2) Narikanta, (3) Suvarnakoola, (4) Rupyakoola, (5) Rakta and (6) Raktavati *(see illustration-7 in part-1)*

९१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-गाहावती, दहवती, पंकवती, तत्तयला, मत्तयला, उम्मत्तयला। ९२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-खीरोदा, सीहसोता, अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीरमालिणी।

९१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग मे (महाविदेह क्षेत्र में) सीता महानदी के दोनो कूलो मे मिलने वाली छह अन्तर्नदियाँ है-(१) ग्राहवती, (२) द्रहवती, (३) पकवती, (४) तप्तजला, (५) मत्तजला, (६) उन्मत्तजला। ९२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम भाग मे सीतोदा महानदी के दोनो कूलो मे मिलने वाली छह अन्तर्नदियाँ है-(१) क्षीरोदा, (२) सिहस्रोता, (३) अन्तर्वाहिनी, (४) उर्मिमालिनी, (५) फेनमालिनी, (६) गम्भीरमालिनी।

91. In Jambu continent, to the east of Mandar Mountain (in Mahavideh area) joining from both sides of great river Sita flow three intermediate rivers They are—(1) Grahavati, (2) Drahavati, (3) Pankavati, (4) Taptajala, (5) Mattajala and (6) Unmattajala **92.** In Jambu continent, to the west of Mandar Mountain joining from both sides of great river Sitoda flow six intermediate rivers They are—(1) Kshiroda, (2) Simhasrota, (3) Antarvahini, (4) Urmimalini, (5) Phenamalini and (6) Gambhiramalini

धातकीषण्ड पुष्करवर–पद DHATAKIKHAND-PUSHKARVAR-PAD (SEGMENT OF DHATAKIKHAND-PUSHKARVAR)

९३. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–हेमवए, हेरण्णवते, हरिवासे, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा। ९४. एवं जहा जंबुद्दीवे दीवे जाव अंतरणदीओ जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे भाणितव्वं।

९३. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे छह अकर्मभूमियॉ है–(१) हैमवत, (२) हैरण्यवत, (३) हरिवर्ष, (४) रम्यकवर्ष, (५) देवकुरु, (६) उत्तरकुरु। ९४. इसी प्रकार जैसे जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे वर्ष, वर्षधर आदि से लेकर अन्तर्नदी तक का वर्णन किया है वैसा ही धातकीषण्ड द्वीप मे भी जानना चाहिए। इसी प्रकार धातकीषण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे तथा पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी जम्बूद्वीप के समान सर्व वर्णन जानना चाहिए।

93. In eastern half of Dhatakikhand continent there are six *akarma-bhumis* (land of no endeavour)—(1) Haimavat, (2) Hairanyavat, (3) Harivarsh, (4) Ramyak-varsh, (5) Devakuru and (6) Uttar-kuru **94.** In the same way all the description mentioned about Jambu continent starting from *Varsha, Varsh-dhar* right up to intermediate rivers should be repeated for eastern half of Dhatakikhand Similarly all the description mentioned about Jambu continent should be repeated for western half of Dhatakikhand as well as eastern and western halves of Ardhapushkarvar continent

ऋतु–पद RITU-PAD (SEGMENT OF SEASONS)

९५. छ उऊ पण्णत्ता, तं जहा–पाउसे, वरिसारत्ते, सरए, हेमंते, वसंते, गिम्हे।

९५. ऋतुएँ छह है–(१) **प्रावृट् ऋतु**–आषाढ और श्रावण मास। (२) **वर्षा ऋतु**–भाद्रपद और आश्विन मास। (३) **शरद् ऋतु**–कार्तिक और मृगशिर मास। (४) **हेमन्त ऋतु**–पौष और माघ मास। (५) **वसन्त ऋतु**–फाल्गुन और चैत्र मास। (६) **ग्रीष्म ऋतु**–वैशाख और ज्येष्ठ मास।

95. There are six *ritus* (seasons)—(1) *Pravrit ritu* (first half of monsoon)—months of Ashadh and Shravan, (2) *Varsha ritu* (second half

of monsoon)—months of Bhadrapad and Ashvin, (3) *Sharad ritu* (autumn)—months of Kartik and Mrigashira, (4) *Hemant ritu* (winter)—months of Paush and Maagh, (5) *Vasant ritu* (spring)—months of Phalgun and Chaitra and (6) *Grishma ritu* (summer)—months of Vaishakh and Jyeshtha

अवमरात्र–पद AVAMARATRA-PAD (SEGMENT OF DATE SKIPPING)

९६. छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तं जहा–ततिए पव्वे, सत्तमे पव्वे, एक्कारसमे पव्वे, पण्णरसमे पव्वे, एगूणवीसइमे पव्वे, तेवीसइमे पव्वे।

९६. छह अवमरात्र (तिथि-क्षय) होते है -(१) तीसरा पर्व-आषाढ कृष्णपक्ष मे। (२) सातवाँ पर्व, भाद्रपद कृष्णपक्ष मे। (३) ग्यारहवाँ पर्व, कार्तिक कृष्णपक्ष मे। (४) पन्द्रहवाँ पर्व, पौष कृष्णपक्ष मे। (५) उन्नीसवाँ पर्व, फाल्गुन कृष्णपक्ष मे। (६) तेईसवाँ पर्व, वैशाख कृष्णपक्ष मे।

96. There are six *avamaratra* (fortnights of date skipping)—(1) third *parva* (third fortnight of the lunar calendar)—in dark fortnight of Ashadh, (2) seventh fortnight—in dark fortnight of Bhadrapad, (3) eleventh fortnight—in dark fortnight of Kartik, (4) fifteenth fortnight—in dark fortnight of Paush, (5) nineteenth fortnight—in dark fortnight of Phalgun and (6) twenty third fortnight—in dark fortnight of Vaishakh

अतिरात्र–पद ATIRATRA-PAD (SEGMENT OF DATE SKIPPING)

९७. छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तं जहा–चउत्थे पव्वे, अट्ठमे पव्वे, दुवालसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे, वीसइमे पव्वे, चउवीसइमे पव्वे।

९७. छह अतिरात्र (तिथिवृद्धि वाले पर्व) होते है (१) चौथा पर्व-आषाढ शुक्ल पक्ष मे। (२) आठवाँ पर्व भाद्रपद- शुक्ल पक्ष मे। (३) बारहवाँ पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष मे। (४) सोलहवाँ पर्व पौष शुक्ल पक्ष मे। (५) बीसवाँ पर्व फाल्गुन शुक्ल पक्ष मे। (६) चौबीसवाँ पर्व, वैशाख शुक्ल पक्ष मे।

97. There are six *atiratra* (fortnights of date addition)—(1) fourth *parva* (fourth fortnight of the lunar calendar)—in bright fortnight of Ashadh, (2) eighth fortnight—in bright fortnight of Bhadrapad, (3) twelfth fortnight—in bright fortnight of Kartik, (4) sixteenth fortnight—in bright fortnight of Paush, (5) twentieth fortnight—in bright fortnight of Phalgun and (6) twenty fourth fortnight—in bright fortnight of Vaishakh

विवेचन–आगम कालीन मान्यता के अनुसार, वर्ष के जिन छह महीनो मे कृष्ण पक्ष मे तिथियाँ घटती है, उन्ही महीनो के शुक्ल पक्ष मे तिथियाँ बढती भी है। अमावस्या और पूर्णमासी को पर्व कहा जाता है।

Elaboration—According to the belief prevalent during the *Agam* writing period the skipping and addition of dates occurred during the same six months of the lunar calendar The skipping occurred during the dark half of the month and addition during the bright half Parva means full-moon date and dark-night date

अर्थावग्रह–पद **ARTHAVAGRAH-PAD (SEGMENT OF ACQUIRING INFORMATION)**

९८. आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते, तं जहा–सोइंदियत्थोग्गहे, [चक्खिदियत्थोग्गहे, घाणिंदियत्थोग्गहे, जिब्भिंदियत्थोग्गहे, फासिंदियत्थोग्गहे], णोइंदियत्थोग्गहे।

९८. आभिनिबोधिक (मतिज्ञान) ज्ञान का अर्थावग्रह छह प्रकार का होता है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-अर्थावग्रह, (२) चक्षुरिन्द्रिय–अर्थावग्रह, (३) घ्राणेन्द्रिय–अर्थावग्रह, (४) रसनेन्द्रिय–अर्थावग्रह, (५) स्पर्शनेन्द्रिय -अर्थावग्रह, (६) नोइन्द्रिय- अथावग्रह।

98. *Arthavagrah* (acquiring information) of *Abhinibodhik jnana* (*mati jnana*) is of six kinds—(1) *shrotendriya-arthavagraha*, (2) chakshurindriya-arthavagraha, (3) *ghranendriya-arthavagraha*, (4) *rasanendriya-arthavagraha*, (5) *sparshendriya-arthavagraha* and (6) *noindriya-arthavagraha*

विवेचन–अवग्रह के दो भेद है -व्यजनावग्रह और अर्थावग्रह। उपकरणेन्द्रिय (बाह्यइन्द्रिय) के साथ शब्दादि ग्राह्य विषय के सम्बन्धो को व्यजन कहते है। दोनो का सम्बन्ध होने पर अव्यक्त ज्ञान की किचित् मात्रा उत्पन्न होती है, उसे व्यजनावग्रह कहते है। व्यजनावग्रह के पश्चात् अर्थावग्रह उत्पन्न होता है।

Elaboration—*Avagraha* (acquisition) is of two *types*—*vyanjanavagraha* and *arthavagraha* The contact of sense organ with its subject is *vyanjan* The acquisition of the smallest fraction of information at this point is called *vyanjanavagraha* The continuing process of acquisition triggered by this is *arthavagraha*

अवधिज्ञान–पद **AVADHI-JNANA-PAD (SEGMENT OF AVADHI-JNANA)**

९९. छव्विहे ओहिणाणे पण्णत्ते, तं जहा–आणुगामिए, अणाणुगामिए, वड्ढमाणए, हायमाणए, पडिवाती, अपडिवाती।

९९. अवधिज्ञान छह प्रकार का है-(१) आनुगामिक, (२) अनानुगामिक, (३) वर्धमान, (४) हीयमान, (५) प्रतिपाती, (६) अप्रतिपाती। *(अवधिज्ञान का विस्तृत वर्णन सचित्र नन्दीसूत्र अवधिज्ञान प्रकरण पृष्ठ ८० देखे।)*

99. *Avadhi-jnana*—is of six kinds—(1) *Aanugaamik*, (2) *Ananugaamik*, (3) *Vardhaman*, (4) *Hiyaman*, (5) *Pratipati* and (6) *Apratipati* *(for detailed discussion on Avadhi-jnana refer to Illustrated Nandi Sutra p 80)*

अवचन-पद AVACHAN-PAD (SEGMENT OF IGNOBLE WORDS)

१००. णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा इमाइं छ अवयणाइं वदित्तए, तं जहा— अलियवयणे, हीलियवयणे, खिंसितवयणे, फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए।

१००. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को ये छह **अवचन**—(गर्हित अथवा अयोग्य वचन) बोलना नही कल्पता है- (१) **अलीकवचन**—असत्यवचन। (२) **हीलितवचन**—दूसरो का अनादर व अवहेलनायुक्त वचन। (३) **खिसितवचन**—मर्मवेधी वचन या जिसे सुनकर दूसरा तिलमिला उठे। (४) **पुरुषवचन**—कठोर वचन। (५) **अगारस्थितवचन**—बेटा, बेटी आदि गृहस्थावस्था के सम्बन्धसूचक वचन। (६) **व्यवसित उदीरकवचन**—उपशान्त कलह को उभाडने वाला वचन।

100. *Shraman Nirgranth* and *Nirgranthi* (male and female ascetics) are not allowed to utter six *avachan* (despicable or ignoble words)—(1) *Aleek vachan*—false statement, (2) *heelit vachan*—insulting or disrespectful statement, (3) *khimsit vachan*—piercing statement, (4) *purush vachan*—harsh statement, (5) *agaarasthit vachan*—kinship expressions like son and daughter, suitable only for householders and (6) *vyavasit udirak vachan*—provoking statement inflaming pacified discontent

कल्पप्रस्तार-पद KALP-PRASTAAR-PAD (SEGMENT OF FORMULATING ATONEMENTS)

१०१. छ कप्पस्स पत्थारा पण्णत्ता, तं जहा पाणइवायस्स वयमाणे, मुसावायं वयमाणे, अदिन्नादाणं वायं वयमाणे, अविरतिवायं वयमाणे, अपुरिसवायं वयमाणे, दासवायं वयमाणे—इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थारेत्ता सम्ममपडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते।

१०१. कल्प (साधु-आचार) के छह प्रस्तार है (१) प्राणातिपात सम्बन्धी आरोपात्मक वचन बोलने पर। (२) मृषावाद सम्बन्धी आरोपात्मक वचन बोलने पर। (३) अदत्तादान सम्बन्धी आरोपात्मक वचन बोलने पर। (४) अब्रह्मचर्य सम्बन्धी आरोपात्मक वचन बोलने पर। (५) पुरुषत्त्व-हीनता (नपुसकता) के आरोपात्मक वचन बोलने पर। (६) दास (दासी पुत्र) होने का आरोपात्मक वचन बोलने पर।

कल्प के इन छह प्रस्तारो–आरोपो को स्थापित कर यदि कोई साधु उन्हे सम्यक् प्रकार से प्रमाणित न कर सके तो वह उस स्थान को प्राप्त होता है, अर्थात् आरोपित दोष के प्रायश्चित्त का भागी आरोप लगाने वाला स्वय होता है।

101. There are six *prastar* (formulation of atonements) related to *kalp* (ascetic praxis)—(1) On making a statement accusing someone of killing beings (*pranatipat*) (2) On making a statement accusing someone of telling a lie (*asatya*). (3) On making a statement accusing someone of stealing (*adattadan*) (4) On giving statement accusing someone of non-

celibacy (*abrahmacharya*) (5) On giving statement accusing someone of impotency and (6) On giving statement accusing someone of being a slave (born of a slave mother)

After accusing someone of these six atonement-entailing transgressions, if some ascetic fails to irrefutably prove them then he is liable to get the same atonement In other words, if the accuser is unable to prove the accusation, he himself has to suffer the formulated atonement

विवेचन–साधु के आचार को कल्प कहा जाता है। प्रायश्चित्त की उत्तरोत्तर वृद्धि को प्रस्तार कहते है। हिसा, असत्य, ब्रह्मचर्य आदि के सम्बन्ध मे यदि कोई साधु अन्य साधु को नीचा दिखाने, कलकित करने की नीयत से झूठा आरोप लगावे कि "तुमने यह पाप किया है", फिर मनगढन्त प्रमाण जुटाकर उसे दोषी सिद्ध करने की चेष्टा करता है तब वह गुरु के सामने यदि आरोप सिद्ध नही कर पाता है, तो वह स्वय उसके प्रायश्चित्त का भागी होता है। पुन वह अपने कथन को सिद्ध करने के लिए ज्यो-ज्यो असत् प्रयत्न करता है, त्यो-त्यो वह उत्तरोत्तर अधिक प्रायश्चित्त का भागी होता जाता है।

Elaboration—Ascetic praxis is called *kalp* Formulating and prescribing progressively intensifying atonement for specific and multiplying faults is called *prastaar* When an ascetic accuses another ascetic of blames related to violence and other transgressions of ascetic praxis and collects imaginary and false evidences, after this if he fails to prove his accusation then it is he who has to undergo the same prescribed atonement If he continues to pile up false evidences by hook or crook to prove his point, he continues to be liable to progressively severe atonement

पलिमन्थु-पद PALIMANTHU-PAD (SEGMENT OF DETRIMENTS OF ASCETIC PRAXIS)

१०२. छ कप्पस्स पलिमंथु पण्णत्ता, तं जहा—कोकुइते संजमस्स पलिमंथू, मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू, चक्खूलोलुए ईरियावहियाए पलिमंथु, तिंतिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू, इच्छालोभिते मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू, भिज्जाणिदाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू। सव्वत्थ भगवता अणिदाणता पसत्था।

१०२. कल्प के छह पलिमथु (साधु आचार के विघातक कारण) है-(१) कौकुचित--चपलता सयम का पलिमथु है, (२) मौखरिक-मुखरता या बकवाद सत्य का पलिमथु है, (३) चक्षुर्लोलुप-नेत्र के विषय मे आसक्त, ईर्यापथिक का पलिमथु है। (४) तितिणक-चिडचिड स्वभाव वाला, एषणा-गोचरी का पलिमथु है। (५) इच्छालोभिक-अतिलोभी, निष्परिग्रह रूप मुक्तिमार्ग का पलिमथु है। (६) अभिध्या निदानकरण--चक्रवर्ती, वासुदेव आदि के भोगो का निदान करने वाला मोक्षमार्ग का पलिमथु है। भगवान ने अनिदानता को सर्वत्र प्रशस्त (श्रेष्ठ) कहा है।

102. There are six *palimanthu* (detriments) of *kalp* (ascetic praxis)— (1) *Kaukuchit* (hastiness) is detrimental to discipline (2) *Maukharik* (blathering) is detrimental to truth (3) *Chakshurlolup* (obsession of visual gratification) is detrimental to *iryapathiki* (careful movement) (4) *Tintinak* (irritability) is detrimental to *eshana* (alms-seeking) (5) *Ichchhalobhik* (covetousness) is detrimental to path of liberation (non-possession) (6) *Abhidhyanidan-karan* (avaricious ambition) of sensory pleasures of Chakrawarti or Vasudev is detrimental to path of liberation Bhagavan has always appreciated absence of worldly desires

विवेचन—इन सबका विशेष अर्थ इस प्रकार है (१) **कौकुचित**—कुत्सित शारीरिक चेष्टा। इसके तीन भेद है-(१) स्थान से, अपने स्थान पर नट या कठपुतली की तरह नाचना। (२) शरीर से, हाथ-पैर आदि अगो को सिकोडना, बिगाडना। (३) भाषा से, मुँह से विचित्र प्रकार की आवाजे निकालना। (२) **मौखरिक**—बिना विचारे अट-सट बोलना। (३) **चक्षुलोलुप**—चलते हुए इधर-उधर ताँक-झाँक करना। लुभावने दृश्यो को देखना। (४) **तितिणिक**—आहार आदि की मनचाही प्राप्ति न होने पर खिन्न होना या बडबडाना। (५) **इच्छालोभिक**—असीम इच्छा और असीम लोभ की वृत्ति रखना। (६) **भिज्जा निदान**—ऋद्धि, पद, विषय-सुख आदि की अभिलाषा से बार-बार निदान करना। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ३२७)*

TECHNICAL TERMS

(1) *Kaukuchit*—hastiness and grotesque movements of body This is of three kinds—1 place related includes to dance like an acrobat or a puppet at one place, 2 body related includes disgraceful gestures as well as repulsive and freakish contortions of body parts, 3 speech related includes producing strange sounds from mouth (2) *Maukharik*—blathering or uttering incoherent and thoughtless words (3) *Chakshurlolup*—obsession of visual gratification leading to peeping and staring at attractive scenes (4) *Tintinak*—irritability, such as discontentment on not getting desired things including food, and expressing it grudgingly (5) *Ichchhalobhik*—covetousness or excessive greed for possessions (6) *Abhidhyanidan-karan*—avaricious ambition and persistent desire for power, status, wealth, carnal and other such mundane attainments *(Hindi Tika, part-2, p 327)*

कल्पस्थित-पद KALPASTHITI-PAD (SEGMENT OF PRAXIS OBSERVATION)

१०३. छव्विहा कप्पट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयकप्पट्ठिती, छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिती, णिव्विसमाणकप्पट्ठिती, णिव्विट्ठकप्पट्ठिती, जिणकप्पट्ठिती, थेरकप्पट्ठिती।

१०३. कल्प की स्थिति (सयम की मर्यादा) छह प्रकार की है-(१) सामायिककल्पस्थिति, (२) छेदोपस्थानीयकल्पस्थिति, (३) निर्विशमानकल्पस्थिति, (४) निर्विष्टमानकल्पस्थिति, (५) जिनकल्पस्थिति और (६) स्थविरकल्पस्थिति। *(इनका विवेचन स्थान ३ के सूत्र ३६४ पर किया जा चुका है।)*

103. *Kalpasthiti* (praxis observation) is of six kinds—(1) *Samayik kalpasthiti*, (2) *Chhedopasthapaniya kalpasthiti* and (3) *Nirvishamaan kalpasthiti*, (4) *Nirvisht kalpasthiti*, (5) *Jinakalpasthiti* and (6) *Sthavirakalpasthiti* *(These have been discussed in details in aphorism 364 of Sthaan 3)*

महावीर षष्ठभक्त–पद MAHAVIR SHASHT-BHAKT-PAD (SEGMENT OF MAHAVIR'S TWO-DAY FASTING)

१०४. समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे [भवित्ता अगाराओ अणगारियं] पव्वइए। १०५. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे [णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे] समुप्पण्णे। १०६. समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे [बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे] सव्वदुक्खप्पहीणे।

१०४. श्रमण भगवान महावीर **अपानक**–(जलादिपान–रहित) **षष्टभक्त**–(दो उपवास) की तपस्या के साथ मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हुए। १०५. श्रमण भगवान महावीर को अपानक षष्ठभक्त की तपस्या मे अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, कृत्स्न, परिपूर्ण केवलवर ज्ञान–दर्शन उत्पन्न हुआ। १०६. श्रमण भगवान महावीर अपानक षष्ठभक्त से सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत और सर्वदु खो से रहित हुए।

104. Shraman Bhagavan Mahavir tonsured his head and renouncing his household got initiated into the ascetic religion after *apaanak shashthabhakta* (missing six meals or two-day fasting without water) **105.** Shraman Bhagavan Mahavir attained *anant* (infinite), *anuttar* (unmatched), *nirvyaaghaat* (unrestricted), *niraavaran* (unveiled), *kritsna* (perfect) and *paripurna* (supreme) omniscience (*Keval-jnana* and *keval-darshan*) while observing *apaanak shashthabhakta* **106.** Shraman Bhagavan Mahavir became perfect (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*), and ended all miseries after observing *apaanak shashthabhakta*

विमान–पद VIMAAN-PAD (SEGMENT OF CELESTIAL VEHICLES)

१०७. सणंकुमार–माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

१०७. सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के विमान छह सौ योजन उत्कृष्ट ऊँचाई वाले है।

107. The maximum height of *vimaans* (celestial vehicles) in Sanatkumar and Mahendra *kalps* is six hundred *Yojans*

देव-पद DEVA-PAD (SEGMENT OF GODS)

१०८. सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

१०८. सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प के देवो के भवधारणीय शरीर ऊँचाई मे छह रत्निप्रमाण है।

108. The *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining bodies) of gods in Sanatkumar and Mahendra *kalps* is six *Ratni* tall

भोजन परिणाम-पद BHOJAN PARINAM-PAD (SEGMENT OF BENEFITS OF FOOD)

१०९. छव्विहे भोयणपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा-मणुण्णे, रसिए, पीणणिज्जे, बिंहणिज्जे, मयणिज्जे, दप्पणिज्जे।

१०९. भोजन का **परिणाम**-(परिपाक) छह प्रकार का होता है- (१) **मनोज्ञ**-मन मे आनन्द उत्पन्न करने वाला। (२) **रसिक**-विविधरसयुक्त व्यजन वाला। (३) **प्रीणनीय**-रस रक्तादि धातुओ मे समता लाने वाला। (४) **बृहणीय**-रस, मासादि, धातुओ को बढाने वाला। (५) **मदनीय**-कामशक्ति को बढाने वाला। (६) **दर्पणीय**-शरीर का पोषण करने वाला, उत्साहवर्धक।

109. There are six *bhojan parinam* (benefits of food)—(1) *Manojna*—infusing joy in mind (2) *Rasik*—providing a variety of tastes and flavours (3) *Preenaniya*—creating balance in blood and other body fluids (4) *Vrimhaniya*—nourishing fluids, flesh and other body components (5) *Madaniya*—acting as aphrodisiac (6) *Darpaniya*—providing nutrition to the body, invigourating

विषपरिणाम-पद VISH-PARINAM-PAD (SEGMENT OF EFFECTS OF POISON)

११०. छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा-डक्के, भुत्ते, णिवतिते, मंसाणुसारी, सोणिताणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी।

११०. विष का परिणाम या विपाक छह प्रकार का होता है- (१) **दष्ट**-किसी विषैले जीव द्वारा काटे जाने पर प्रभाव डालने वाला। (२) **भुक्त**-खाये जाने पर प्रभाव डालने वाला। (३) **निपतित**-शरीर के बाहिरी भाग (चमडी या दृष्टि) से स्पर्श होने पर प्रभाव डालने वाला। (४) **मॉसानुसारी**-मॉस तक की धातुओ को प्रभावित करने वाला। (५) **शोणितानुसारी**-रक्त तक की धातुओ को प्रभावित करने वाला। (६) **अस्थि-मज्जानुसारी**-हड्डी और हड्डियो के रस तक की धातुओ पर प्रभाव डालने वाला।

110. There are six *vish parinam* (ways a poison acts)—(1) *Dasht*—one that acts on being stung or bitten by a venomous being (2) *Bhukta*—one that acts when consumed (3) *Nipatit*—one that acts when touched to any part of the body (skin) (4) *Mansanusari*—one that affects flesh (5) *Shonitanusari*—one that affects blood (6) *Asthi-majjanusari*—one that affects bones and bone-marrow

प्रश्न–पद PRASHNA-PAD (SEGMENT OF QUESTION)

१११. छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते, तं जहा—संसयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी, अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे।

१११. प्रश्न छह प्रकार के होते है–(१) **संशयप्रश्न**–सशय दूर करने के लिए पूछना। (२) **व्युद्ग्रहप्रश्न**–मिथ्याभिनिवेश से दूसरे को पराजित करने के लिए पूछना। (३) **अनुयोगीप्रश्न**–व्याख्या के लिए पूछना। (४) **अनुलोम प्रश्न**–कुशल-कामना से पूछना। (५) **तथाज्ञानप्रश्न**–स्वय जानते हुए भी दूसरो की ज्ञानवृद्धि के लिए पूछना। (६) **अतथाज्ञानप्रश्न**–स्वय नही जानने पर जानने के लिए पूछना।

111. *Prashna* (questions) are of six kinds—(1) *Samshaya prashna*—question for removing doubt, (2) *vyudgraha prashna*—question for confusing and defeating an opponent, (3) *anuyogi prashna*—question seeking elaboration, (4) *anulom prashna*– question to know about welfare, (5) *tathajnana prashna*—question aimed at educating others, in spite of already knowing the answer, and (6) *atathajnana prashna*—question for knowing the unknown

विरहित–पद VIRAHIT-PAD (SEGMENT OF OMMISSION)

११२. चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववातेणं। ११३. एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासे विरहिते उववातेणं। ११४. अधेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं। ११५. सिद्धिगती णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं।

११२. चमरचचा राजधानी मे अधिक से अधिक छह मास तक उपपात का विरह (अन्य देव की उत्पत्ति का व्यवधान) हो सकता है। ११३. प्रत्येक इन्द्र के स्थान मे उत्कृष्ट रूप मे छह मास तक इन्द्र के उपपात का विरह (अन्य इन्द्र की उत्पत्ति का व्यवधान) हो सकता है। ११४. निचली सातवी पृथिवी मे उत्कृष्ट रूप से छह मास तक नारकीजीव के उपपात का विरह हो सकता है। ११५. सिद्धगति मे उत्कृष्ट रूप मे छह मास तक सिद्ध जीव के उपपात का विरह हो सकता है।

112. In the capital city Chamarachancha there can be an ommission in *upapat* (instantaneous birth) of a god for a maximum period of six months **113.** In the abode of every *Indra* there can be an omission in *upapat* of another *Indra* for a maximum period of six months **114.** In the

seventh lower world (hell) there can be an omission in *upapat* of an infernal being for a maximum period of six months **115.** In the abode of *Siddhas* (perfected beings or liberated souls) there can be an omission in *upapat* of a *Siddha* for a maximum period of six months

आयुर्बन्ध–पद AYURBANDH-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN BONDAGE)

११६. छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा–जातिणामणिधत्ताउए, गतिणामणिधत्ताउए, ठितिणामणिधत्ताउए, ओगाहणाणामणिधत्तउए, पएसणामणिधत्ताउए, अणुभागणामणिधत्ताउए।

११६. आयुष्य का बन्ध छह प्रकार का होता है–(१) जातिनामनिधत्तायु, (२) गतिनामनिधत्तायु, (३) स्थितिनामनिधत्तायु, (४) अवगाहनानामनिधत्तायु, (५) प्रदेशनामनिधत्तायु, (६) अनुभागनामनिधत्तायु।

116. *Ayushyabandh* (bondage of *karmas* determining next life span) is of six kinds—(1) *jati-naam-nidhatt-ayu*, (2) *gati-naam-nidhatt-ayu*, (3) *sthiti-naam-nidhatt-ayu*, (4) *avagahana-naam-nidhatt-ayu*, (5) *pradesh-naam-nidhatt-ayu* and (6) *anubhag-naam-nidhatt-ayu*

विवेचन–जिस समय किसी जीव को आयु का बध होता है, तब वह जाति गति आदि छहो के साथ निधत्त (गाठ बधन मय) होता है। अमुक आयु का बध करने वाला जीव उसके साथ-साथ एकेन्द्रिय आदि पाँच जातियो मे से किसी एक जाति का, नरक आदि चार गतियो मे से एक गति का, अमुक समय की स्थिति काल मर्यादा का, अवगाहना, औदारिक या वैक्रिय शरीर मे से किसी एक शरीर का तथा आयुष्य के प्रदेशो–परमाणु सचयो का और उसके अनुभाव–विपाक शक्ति का भी बध करता है। इस प्रकार आयु कर्म के बध के साथ ये छहो प्रकार का बध होता है।

Elaboration—When a being acquires bondage of life span determining *karma* the process includes fixation (*nidhatt*) of six parameters including *jati* (species) listed here A being acquiring life span bondage acquires simultaneously the bondage of one of the five *jatis* including *ekendriya* (one-sensed being), one of the four genuses including *narak*, specific duration of time (*sthiti*), space occupation (*avagahana*) of one of the two bodies (*audarik* or *vaikriya*), specific aggregates of ultimate-particles (*pradesh*), and specific potency of acquired *karma* particles (*anubhag*) Thus bondage of *ayushya karma* includes these six types of bondage

पारभविक–आयुर्बन्ध–पद PARBHAVIK AYURBANDH-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN BONDAGE FOR NEXT BIRTH)

११७. णेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा–जातिणामणिहत्ताउए, (गतिणामणिहत्ताइए, ठितिणाम णिहत्ताउए, ओगाहणाणाम णिहत्ताउए, पएसणाम णिहत्ताउए), अणुभागणाम णिहत्ताउए। ११८. एवं जाव वेमाणियाण।

११७. नारकी जीवो का आयुष्क बन्ध छह प्रकार का होता है–(१) **जातिनामनिधत्तायु**–नारकायुष्क के बन्ध के साथ पचेन्द्रियजातिनामकर्म का, (२) **गतिनामनिधत्तायु**–नारकायुष्क के बन्ध के साथ नरकगति का, (३) **स्थितिनामनिधत्तायु**–नारकायुष्क के बन्ध के साथ स्थिति (कालमान) का, (४) **अवगाहनानामधित्तायु**–नारकायुष्क के बन्ध के साथ वैक्रियशरीरनामकर्म का, (५) **प्रदेशनामनिधत्तायु**–नारकायुष्क के बन्ध के साथ प्रदेशो का और (६) **अनुभागनामनिधत्तायु**–नारकायुष्क के बध के साथ अनुभाग का नियम से बध होता है। ११८. इसी प्रकार वैमानिक तक के सभी दण्डको के जीवो मे आयुष्यकर्म का बन्ध इसी तरह छह प्रकार का होता है।

117. *Ayushyabandh* (bondage of *karmas* determining next life span) of infernal beings is of six kinds—(with bondage of life span as infernal beings they also enter bondage of)—(1) *jati-naam-nidhatt-ayu* (*panchendriya-jati-naam-karma*), (2) *gati-naam-nidhatt-ayu* (*narak-gati-naam-karma*), (3) *sthiti-naam-nidhatt-ayu* (*sthiti* of these *karmas*), (4) *avagahana-naam-nidhatt-ayu* (*vaikriya sharira-naam-karma*), (5) *pradesh-naam-nidhatt-ayu* (*pradesh* of these *karmas*) and (6) *anubhag-naam-nidhatt-ayu* (*anubhag* of these *karmas*) **118.** In the same way *Ayushyabandh* (bondage of *karmas* determining next life span) of all beings of all *dandaks* up to *Vaimaniks* is of six kinds

११९. णेरइया णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति। १२०. एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा। १२१. असंखेज्जवासाउया सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति। १२२. असंखेज्जवासउया सण्णिमणुस्सा णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेति। १२३. वाणमंतरा जोतिसवासिया वेमाणिया जहा णेरइया।

११९. नारकी जीव आयु के छह मास शेष रहने पर नियम से परभव की आयु का बन्ध करते है। १२०. इसी प्रकार असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक के सभी देव भी छह मास आयु के अवशेष रहने पर नियम से परभव की आयु का बन्ध करते है। १२१. असख्येयवर्ष आयुष्य वाले सज्ञि-पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव छह मास आयु अवशेष रहने पर नियम से परभव की आयु का बन्ध करते है। १२२. असख्येयवर्षायुष्क सज्ञि-मनुष्य छह मास की आयु अवशेष रहने पर नियम से परभव की आयु का बन्ध करते है। १२३. वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव नारक जीवो के समान छह मास आयु शेष रहने पर परभव की आयु का नियम से बन्ध करते है।

119. As a rule infernal beings acquire the bondage of life span of next birth when six months are left from their present life span **120.** In the same way all the divine beings from *Asur Kumars* to *Stanit Kumars* also, as a rule, acquire the bondage of life span of next birth when six months

are left from their present life 121 *Sanjni panchendriya tiryakyoni jivas* (sentient five sensed animals) with a life span of innumerable years also, as a rule, acquire the bondage of life span of next birth when six months are left from their present life 122. *Sanjni manushya* (sentient human beings) also, as a rule, acquire the bondage of life span of next birth when six months are left from their present life 123. Like infernal beings *Vanavyantar, Jyotishk* and *Vaimanik* gods also, as a rule, acquire the bondage of life span of next birth when six months are left from their present life

विवेचन–किस जीव को अगले भव का आयुष्य कब बँधता है, इस विषय मे सस्कृत टीका मे निम्न गाथा उद्धृत है–

निरइ सुर असंखाउ तिरि–मणुआ सेसए उ छम्मासे।
इग–विगला निरुवक्कम तिरि–मणुया आउय तिभागे।

अवसेसा सोवक्कम तिभाग नवभाग सत्तवीसइमे।
बंधति परभवाउं नियइ भवे सव्व जीवा उ॥

–नैरयिक, देव, तथा असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच और मनुष्य, जब इनकी आयु छ महीने शेष रहती है तब वे परभव की आयु का बन्ध करते है। निरुपक्रम आयु वाले तिर्यच और मनुष्य अपनी आयु के तीसरे भाग मे अगले भव की आयु का बध करते है। शेष सोपक्रम आयु वाले जीव अपनी आयु के तीसरे, नौवे तथा सत्ताइसवे भाग मे आयु का बध करते है। *(हिन्दी टीका भाग–२ पृष्ठ २४१)*

Elaboration—Which being acquires life-span determining *karmas* when is mentioned in a verse in Sanskrit Tika—

Infernal beings, gods and human beings with a life span of innumerable years acquire the bondage of life span of next birth when six months are left from their present life Animals and human beings with *nirupakram* (irreducible) life span acquire the bondage of life span of next birth when one third of their present life span is remaining All the remaining beings with *sopakram* (reducible) life span acquire the bondage of life span of next birth when one third, one ninth or one twenty seventh of their present life span is remaining *(Hindi Tika, part-2, p 241)*

भाव–पद BHAAVA-PAD (SEGMENT OF STATE)

१२४. छव्विहे भावे पण्णत्ते, तं जहा–ओदइए, उवसमिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए, सण्णिवातिए।

१२४. भाव (जीव की शुद्ध अशुद्ध पर्याय) या अवस्था छह प्रकार की होती है-(१) **औदयिक भाव**-कर्म के उदय से होने वाले कषाय, वेद आदि २१ भाव। (२) **औपशमिक भाव**-मोहकर्म के उपशम से होने वाले सम्यक्त्व चारित्र २ भाव। (३) **क्षायिक भाव**-घातिकर्मों के क्षय से उत्पन्न होने वाले अनन्त ज्ञान-दर्शनादि ९ भाव। (४) **क्षायोपशमिक भाव**-घातिकर्मो के क्षयोपशम से होने वाले मति-श्रुतज्ञानादि १८ भाव। (५) **पारिणामिक भाव**-किसी कर्म के उदयादि के बिना अनादि से चले आ रहे जीवत्व आदि ३ भाव। (६) **सान्निपातिकभाव**-उपर्युक्त भावो के सयोग से होने वाला २६ प्रकार का भाव। *(भावो के विस्तृत वर्णन के लिए सचित्र अनुयोगद्वार भाग-१ पृष्ठ ३४९-३५९) देखे)*

124. *Bhaava* (state of a being) are of six kinds—(1) *Audayık bhaava*—state of *jıva* (being or soul) caused by *udaya* (fruition) of *karmas*, this includes the 21 states including passions and gender (2) *Aupashamık bhaava*—state caused by *upasham* (pacification) of *Mohanıya karmas*, this includes *samyaktva* (righteousness) and *charıtra* (right conduct) (3) *Kshayık bhaava*—state caused by kshaya (destruction) of vitiating *karmas*, this includes nine states including infinite knowledge-perception (4) *Kshayopashamık bhaava*—state of mind caused by *kshayopasham* (pacification-cum-destruction) of *karmas*, this includes 18 states including *matı jnana* and *shrut jnana* (5) *Parınamık bhaava*—three eternal states unrelated to action of *karmas*, this includes three states including *jıvatva* (the quality of being a soul) (6) *Sannıpatık bhaava*—state incorporating combinations of the said five states, this includes 26 different states *(for detailed discussion on bhaavas refer to Illustrated Anuyogadvar Sutra, part-1, pp 349-59)*

प्रतिक्रमण-पद PRATIKRAMAN-PAD (SEGMENT OF CRITICAL REVIEW)

१२५. छव्विहे पडिक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा-उच्चारपडिक्कमणे, पासवणपडिक्कमणे, इत्तरिए, आवकहिए, जंकिंचिमिच्छा, सोमणंतिए।

१२५. प्रतिक्रमण (दोषो की शुद्धि के लिए की जाने वाली क्रिया) छह प्रकार का होता है-(१) **उच्चार-प्रतिक्रमण**-मल-विसर्जन के पश्चात् वापस आने पर ईर्यापथिकी सूत्र के द्वारा प्रतिक्रमण करना। (२) **प्रस्रवण-प्रतिक्रमण**-मूत्र-विसर्जन के पश्चात् वापस आने पर ईर्यापथिकी सूत्र के द्वारा प्रतिक्रमण करना। (३) **इत्वरिक-प्रतिक्रमण**-दैवसिक-रात्रिक आदि प्रतिक्रमण करना। (४) **यावत्कथिक-प्रतिक्रमण**-मारणान्तिकी सलेखना के समय किया जाने वाला प्रतिक्रमण। (५) **यत्किञ्चित्मिथ्यादुष्कृत-प्रतिक्रमण**-साधारण दोष लगने पर उसकी शुद्धि के लिए 'मिच्छा मि दुक्कड ' कहकर पश्चात्ताप प्रकट करना। (६) **स्वप्नान्तिक-प्रतिक्रमण**-दु स्वप्नादि देखने पर किया जाने वाला प्रतिक्रमण।

125. *Pratikraman* (critical review) is of six kinds—(1) *Uchchar-pratikraman*—to perform *pratikraman* with *Iryapathiki Sutra* (a specific verse) after disposal of faeces (2) *Prasravan-pratikraman*—to perform *pratikraman* with *Iryapathiki Sutra* (a specific verse) after disposal of urine (3) *Itvarik-pratikraman*—to perform *devasik* (for activities of the day) and *ratrik* (for activities of the night) and other time related *pratikraman* (4) *Yavatkathit pratikraman*—that performed during the ultimate vow (*maranantik sallekhana*) (5) *Yatkinchitmithyadushkrit-pratikraman*—that done by uttering *'michchhami dukkadam'* for atonement on committing some ordinary fault (6) *Svapnantik-pratikraman*—that done after seeing a bad dream

नक्षत्र-पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

१२६. कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते। १२७. असिलेसा णक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते।

१२६. कृत्तिका नक्षत्र छह तारावाला है। १२७. अश्लेषा नक्षत्र छह तारावाला है।

126. Krittika (Eta Tauri or Pleiades, the 3rd) constellation has six stars **127.** Ashlesha (Alpha Hydrae, the 9th) constellation has six stars

१२८. जीवा णं छट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पुढविकाइयणिव्वत्तिए, तसकायणिव्वत्तिए। एवं—चिण—उवचिण—बंध—उदीर—वेय तह णिज्जरा चेव।

१२८. जीवो ने छह अवस्थाओ मे कर्मपुद्‌गलो को पापकर्म के रूप से ग्रहण किया था, ग्रहण करते है और ग्रहण करेगे, यथा-(१) पृथ्वीकायनिर्वर्तित (पृथ्वीकाय के रूप मे), [(२) अप्कायनिर्वर्तित, (३) तेजस्कायनिर्वर्तित, (४) वायुकायनिर्वर्तित, (५) वनस्पतिकायनिर्वर्तित], (६) त्रसकायनिर्वर्तित।

इसी प्रकार सभी जीवो ने उक्त षट्‌काय-निर्वर्तित कर्मपुद्‌गलो का पापकर्म के रूप से उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदन और निर्जरण किया है, करते है और करेगे।

128. All beings did, do and will acquire (*sanchit*) *karma* particles in the form of demeritorious *karmas* in the past, present and future respectively four ways—(1) *Prithvikaya-nirvartit* (earned as earth-bodied beings), (2) *Apkayiks* (water-bodied beings), (3) *Tejaskaya-nirvartit* (earned as fire-bodied beings), (4) *Vayukaya-nirvartit* (earned as air-bodied beings), (5) *Vanaspatikaya-nirvartit* (earned as plant-bodied beings) and (5) *tras-kaya-nirvartit* (earned as mobile-bodied beings)

In the same way all beings did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the acquired *karma* particles in the past, present and future respectively

पुद्गल–पद PUDGAL-PAD

१२९. छप्पएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता। १३०. छप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। १३१. छसमयट्ठितीया पोग्गला अणंता पण्णत्ता। १३२. छगुणकालगा पोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

१२९. छह प्रदेशी स्कन्ध अनन्त है। १३०. छह प्रदेशावगाढ (छह प्रदेशो पर अवगाहन किये हुए) पुद्गल अनन्त है। १३१. छह समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त है। १३२. छह गुण काले (पाँचो वर्ण वाले) पुद्गल अनन्त है।

इसी प्रकार शेष दो गन्ध, पाँच रस और आठ स्पर्श के छह गुण वाले पुद्गल अनन्त–अनन्त है।

129. There are infinite *Chhaha pradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of six ultimate particles) **130.** There are infinite *Chhaha pradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles occupying six space-points) **131.** There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with stability of six *Samayas* **132.** There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with six units of the attribute of black appearance

In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with six units of each of the remaining attributes of smell (two), taste (five), and touch (eight)

॥ छठा स्थान समाप्त ॥

● END OF THE SIXTH STHAAN ●

सप्तम स्थान

सार : संक्षेप

सात की सख्या से सम्बद्ध विषयो का सकलन सप्तम स्थान मे है। यद्यपि जैन आगमो का मुख्य प्रतिपाद्य आचारधर्म है, तथापि अन्य विविध विषयो का वर्णन उनमे उपलब्ध है। इस स्थान मे सात सख्या वाले अनेक दार्शनिक, भौगोलिक, ज्योतिष्क, ऐतिहासिक और पौराणिक एव प्रासगिक विषयों का वर्णन है।

ससार चक्र से मुक्ति पाने के लिए सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र की आराधना करना आवश्यक है। साधारण व्यक्ति किसी आधार या आश्रय के बिना उनकी आराधना नही कर सकता है, इसके लिए तीर्थंकरो ने सघ की व्यवस्था की। सघ के सम्यक् सचालन का भार अनुभवी, लोकव्यवहार कुशल आचार्य को सौपा। वह निष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए जब यह अनुभव करे कि सघ या गण मे रहते हुए मेरा आत्म-विकास सम्भव नही, और अधिक उच्चस्तरीय साधना के लिए आगे बढना है, तब वह गण को छोड कर या तो किसी महान् आचार्य के पास जाता है, या एकलविहारी होकर आत्म-साधना मे सलग्न होता है। आत्म-साधना के लिए गण को छोंडना **गणअपक्रमण** है। इस स्थान मे सर्वप्रथम गणापक्रमण-पद द्वारा इसी तथ्य का निरूपण किया है।

अहिसा और अपरिग्रह की साधना के लिए भय मुक्त रहना आवश्यक है। भय उसे ही होता है जिसकी शरीर आदि पर ममता होती है। इस दृष्टि से यहाँ सात प्रकार के भयो का वर्णन है।

साधक को किस प्रकार के वचन बोलना चाहिए और किस प्रकार के नही, यह वचन विवेक आवश्यक है। इसी के साथ प्रशस्त और अप्रशस्त विनय के सात-सात प्रकार भी ज्ञातव्य है। अविनयी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त नही कर पाता है। अत विनय के प्रकारो को जानकर प्रशस्त विनयो का परिपालन करना आवश्यक है।

राजनीति की दृष्टि से दण्डनीति के सात प्रकार मननीय है। मनुष्यो मे जैसे-जैसे कुटिलता की वृद्धि व आत्मानुशास की कमी हुई, वैसे-वैसे ही दण्डनीति भी कठोर होती गई। इसका क्रमिक-विकास दण्डनीति के सात प्रकारो मे निहित है। समाज व्यवस्था और राजव्यवस्था के इतिहास का क्रमिक विकास इन सात नीतियो मे लक्षित होता है।

उक्त विविध वर्णन के अतिरिक्त इस स्थान मे जीव-विज्ञान, लोक-स्थिति-सस्थान, गोत्र, नय, आसन, पर्वत, सात प्रवचन निह्नव, सात समुद्घात का वर्णन है। सप्त स्वरो का विस्तृत वर्णन सगीत विज्ञान की दृष्टि से बडा ज्ञानवर्धक है।



SEVENTH STHAAN (PLACE NUMBER SEVEN)

INTRODUCTION

Subjects related to the numeral seven are compiled in the Seventh Sthaan Although the central theme of Jain *Agams* is the code of religious conduct, they contain discussions about a variety of numerous other topics This Sthaan contains information on many topics including philosophical, geographical, astrological, historical and mythological

In order to get liberated from the cycles of rebirths it is essential to strive for right perception/faith, knowledge, and conduct An ordinary individual cannot take to the path of spiritual endeavour without some basis or help For this purpose the *Tirthankars* established the *sangh* (religious organization) The responsibility of properly managing the *sangh* was entrusted to an experienced *acharya* who was equally proficient in social customs While sincerely disposing his duties a time comes when such on *acharya* feels that while continuing to shoulder the responsibilities of the *sangh* it was hardly possible to pursue the goal of spiritual purity and it was time to proceed for higher practices He then leaves the *gana* (organization) and goes to some accomplished *acharya* or into isolation to devote all his time to spiritual practices To leave a *gana* to pursue spiritual practices is called *gana-apakraman* This is the first topic discussed in this Sthaan

In order to practice ahimsa and *aparigraha* it is essential to be free of all fear Cause of such fear is fondness for one's body and other connected things This fact is explained with seven kinds of fear

It is essential for an aspirant to develop a discerning attitude about speech, he should know what words he should utter and what not With this he is also supposed to know about the seven kinds of noble and ignoble modesty An immodest person cannot achieve the desired goal Therefore, it is necessary to know about types of noble modesty and instill them in conduct

In politics seven kinds of punitive policy is valid With the upsurge of villainy and decline of self-discipline in human society the penal codes became tougher The gradual progress of this is presented in the seven kinds of punitive policy The evolution of social system and system of governance is reflected in these seven policies

Besides these topics this chapter also contains descriptions related to biology, cosmology, castes, standpoints, postures, mountains, seven *pravachan nihnava* and seven *Samudghat* Detailed description of seven musical notes provides insight into musicology ●●

सप्तम स्थान
SEVENTH STHAAN (Place Number Seven)

गणापक्रमण–पद **GANAPAKRAMAN-PAD (SEGMENT OF LEAVING THE GANA)**

१. सत्तविहे गणावक्कमणे पण्णत्ते, तं जहा–(१) सव्वधम्मा रोएमि। (२) एगइया रोएमि एगइया णो रोएमि। (३) सव्वधम्मा वितिगिच्छामि। (४) एगइया वितिगिच्छामि एगइया णो वितिगिच्छामि। (५) सव्वधम्मा जुहुणामि। (६) एगइया जुहुणामि एगया णो जुहुणामि। (७) इच्छामि णं भंते ! एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।

१. सात कारणो से गण से अपक्रमण (गण–परित्याग या परिवर्तन) किया जा सकता है–

(१) सर्व धर्मो मे–(श्रुत और चारित्र के विविध प्रकारो मे) मेरी रुचि है। इस गण मे उनकी पूर्ति के साधन उपलब्ध नही है। इसलिए भदन्त ! मै इस गण से अपक्रमण करता हूँ और दूसरे गण की उपसम्पदा–(श्रुत–चारित्र की विशिष्ट साधना के लिए आश्रय/आलम्बन) को स्वीकार करता हूँ।

(२) कितनेक धर्मों–(साधना प्रकारो) मे मेरी रुचि है और कितनेक धर्मो मे मेरी रुचि नही है। जिनमे मेरी रुचि है, उनकी पूर्ति के साधन या उनका विशिष्ट ज्ञाता इस गण मे नही है। इसलिए भदन्त ! मै इस गण से अपक्रमण करता हूँ और दूसरे गण की उपसम्पदा को स्वीकार करता हूँ।

(३) सर्व धर्मो मे मेरा सशय (जिज्ञासा) है। उन सशयो का निराकरण (समाधान) करने के लिए हे भदन्त ! मै इस गण से अपक्रमण करता हूँ और दूसरे गण की उपसम्पदा को स्वीकार करता हूँ।

(४) धर्म के कुछ भेदो मे मेरा सशय है और कितनेक धर्मो मे मेरा सशय नही है। उन सशयो को दूर करने के लिए हे भदन्त ! मै इस गण से अपक्रमण करता हूँ और दूसरे गण की उपसम्पदा को स्वीकार करता हूँ।

(५) मै सभी धर्म (ज्ञान आदि) दूसरो को देना चाहता हूँ। इस गण मे कोई योग्य पात्र नही है, जिसे मै सभी धर्म (अपनी विद्या) दे सकूँ ! इसलिए हे भदन्त ! मै इस गण से अपक्रमण करता हूँ और दूसरे गण की उपसम्पदा को स्वीकार करता हूँ।

(६) मै कितनेक धर्म (कुछ विद्याओ का ज्ञान) दूसरो को देना चाहता हूँ और कितनेक धर्म नही देना चाहता। इस गण मे कोई योग्य पात्र नही है जिसे मै जो देना चाहता हूँ, वह दे सकूँ। इसलिए हे भदन्त ! मै इस गण से अपक्रमण करता हूँ और दूसरे गण की उपसम्पदा को स्वीकार करता हूँ।

(७) हे भदन्त ! मै एकलविहारप्रतिमा को स्वीकार कर स्वतत्र विहार करना चाहता हूँ। इसलिए इस गण से अपक्रमण करता हूँ।

1. A *gana* can be left for seven reasons—

(1) I have interest in all *dharmas* (various kinds of scriptures and codes of conduct) Means of learning and practicing that are not available in this *gana* Therefore, *Bhadant* ! I leave (*apakraman*) this *gana* to take *upasampada* (admission for advanced study and practice of scriptures and codes of conduct) in another *gana*

(2) I have interest in some *dharmas* and not in others Means and guides of pursuing the studies and practice of those of my interest are not available in this *gana* Therefore, *Bhadant* ! I leave this *gana* to take admission in another *gana*

(3) I have doubts about all *dharmas* Means of removing those doubts are not available here Therefore, *Bhadant* ! I leave this *gana* to take admission in another *gana*

(4) I have doubts about some *dharmas* and not about others Means of removing those doubts are not available here Therefore, *Bhadant* ! I leave this *gana* to take admission in another *gana*

(5) I want to impart knowledge of all *dharmas* to others There is no capable student here to whom I can give all my knowledge Therefore, *Bhadant* ! I leave this *gana* to take admission in another *gana*

(6) I want to impart knowledge of some *dharmas* (or some subjects) and not of others to others There is no capable student here to whom I can give what I want to Therefore, *Bhadant* ! I leave this *gana* to take admission in another *gana*

(7) *Bhadant* ! I want to take the special resolve of solitary practices and move about alone Therefore I leave this *gana*

विभंगज्ञान–पद VIBHANG-JNANA-PAD (SEGMENT OF UNRIGHTEOUS KNOWLEDGE)

२. सत्तविहे विभंगणाणे पण्णत्ते, तं जहा–(१) एगदिसिं लोगाभिगमे, (२) पंचदिसिं लोगाभिगमे, (३) किरियावरणे जीवे, (४) मुदग्गे जीवे, (५) अमुदग्गे जीवे, (६) रूवी जीवे, (७) सव्वमिणं जीवा।

(१) तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे–जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाईणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे। तस्स णं एवं भवति–अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे–एगदिसिं लोगाभिगमे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु–पंचदिसिं लोगाभिगमे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु; पढमे विभंगणाणे।

(२) अहावरे दोच्चे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाईणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—पंचदिसिं लोगाभिगमे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—एगदिसिं लोगाभिगमे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु; दोच्चे विभंगणाणे।

(३) अहावरे तच्चे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासति पाणे अतिवातेमाणे, मुसं वयमाणे, अदिण्णमादियमाणे, मेहुणं पडिसेवमाणे, परिग्गहं परिगिण्हमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे, पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासति। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—किरियावरणे जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—णो किरियावरणे जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु; तच्चे विभंगणाणे।

(४) अहावरे चउत्थे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा (विभंगणाणे) समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता विकुव्वित्ता ण चिट्ठित्तए। तस्स णं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—मुदग्गे जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—अमुदग्गे जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु; चउत्थे विभंगणाणे।

(५) अहावरे पंचमे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स (वा माहणस्स वा) विभगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं (फुसित्ता फुरित्ता फुट्टित्ता) विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि (णं मम अतिसेसे णाणदंसणे) समुप्पण्णे—अमुदग्गे जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—मुदग्गे जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु; पंचमे विभंगणाणे।

(६) अहावरे छट्ठे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा (विभंगणाणे) समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता वा अपरियाइत्ता वा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता (फुरित्ता फुट्टित्ता) विकुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—रूवी जीवे। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—अरूवी जीवे। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु, छट्ठे विभंगणाणे।

(७) अहावरे सत्तमे विभंगणाणे—जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति। से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासई सुहुमेणं वायुकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं वेयंतं चलंतं खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तं तं भावं परिणमंतं। तस्स णं एवं भवति—अत्थि णं मम

अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे—सव्वमिणं जीवा। संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु—जीवा चेव, अजीवा चेव। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु। तस्स णं इमे चत्तारि जीवणिकाया णो सम्ममुवगता भवंति, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया। इच्चेतेहिं चउहिं जीवणिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ, सत्तमे विभंगणाणे।

२. विभगज्ञान (मिथ्यात्वी का अवधिज्ञान) सात प्रकार का है- (१) **एकदिग्लोकाभिगम**—एक ही दिशा लोक को जानने वाला। (२) **पंचदिग्लोकाभिगम**—पाँचो दिशाओ मे लोक को जानने वाला। (३) **क्रियावरण जीव**—जीव के क्रिया का ही आवरण है, कर्म का नही। (४) **मुदग्गजीव**—जीव को मुदग्ग- (पुद्गल-) निर्मित ही मानने वाला। (५) **अमुदग्गजीव**—जीव को पुद्गल-निर्मित नही मानने वाला। (६) **रूपी-जीव**—जीव को रूपी ही मानने वाला। (७) **यह सर्वजीव**—इस सर्व दृश्यमान जगत् को जीव ही मानने वाला।

(१) **पहला विभगज्ञान**—जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस उत्पन्न हुए विभगज्ञान से पूर्व या पश्चिम या दक्षिण या उत्तर दिशा को या ऊर्ध्वदिशा को सौधर्मकल्प तक, इन पाँचो दिशाओ मे से किसी एक दिशा को देखता है। तब उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है—मुझे अतिशय युक्त ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मै इस एक दिशा मे ही लोक को देख रहा हूँ। कितनेक श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि लोक पाँचो दिशाओ मे है। जो ऐसा कहते है, वे मिथ्या कहते है। यह प्रथम विभगज्ञान है।

(२) **दूसरा विभगज्ञान**—जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस विभगज्ञान से पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर और ऊर्ध्वदिशा मे सौधर्मकल्प तक देखता है। तब उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है—मुझे सातिशय (सम्पूर्ण) ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मै पाँचो दिशाओ मे ही लोक को देख रहा हूँ। कितनेक श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि लोक एक ही दिशा मे है। जो ऐसा कहते है वे मिथ्या कहते है। यह दूसरा विभगज्ञान है।

(३) **तीसरा विभगज्ञान**—जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस विभगज्ञान से जीवो को हिंसा करते हुए, झूठ बोलते हुए, अदत्त-ग्रहण करते हुए, मैथुन-सेवन करते हुए, परिग्रह करते हुए और रात्रि-भोजन करते हुए देखता है, किन्तु उन प्रवृत्तियो के द्वारा होते हुए कर्मबन्ध को नही देख पाता, तब उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है—मुझे सातिशय ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मैं ऐसा देख रहा हूँ कि जीव क्रिया से ही आवृत्त है, (क्रिया करने वाला है) कर्म से कर्म का बध करने वाला नही। जो श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि जीव क्रिया से आवृत्त नही है, वे मिथ्यावादी है। यह तीसरा विभगज्ञान है।

(४) **चौथा विभंगज्ञान**—जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस विभगज्ञान से देवो को बाह्य (शरीर स्पृष्ट क्षेत्र से बाहर) और आभ्यन्तर (शरीर क्षेत्र के भीतर) पुद्गलो को ग्रहण कर विक्रिया-विभिन्न क्रियाएँ करते हुए देखता है कि ये देव पुद्गलो का स्पर्श कर, इनमे हल-चल पैदा कर, उनका स्फोट कर भिन्न-भिन्न काल और विभिन्न देश मे कभी एकरूप व कभी

विविधरूपो की विक्रिया करते है। यह देखकर उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है-मुझे सातिशय ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मै देख रहा हूँ कि जीव पुद्‌गलो से ही बना हुआ है। कितनेक श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि जीव शरीर-पुद्‌गलो से बना हुआ नही है, जो ऐसा कहते है, वे मिथ्यावादी है। यह चौथा विभगज्ञान है।

(५) **पाँचवाँ विभंगज्ञान**-जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस विभगज्ञान से देवो को बाह्य और आभ्यन्तर पुद्‌गलो को ग्रहण किये बिना (पुद्‌गलो की सहायता लिए बिना) ही विविध क्रियाएँ करते हुए देखता है कि ये देव पुद्‌गलो का स्पर्श कर, उनमे हल-चल उत्पन्न कर, उनका स्फोट कर, भिन्न-भिन्न काल और देश मे विविध प्रकार की विक्रिया करते है। यह देखकर उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है-मुझे सातिशय ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मै देख रहा हूँ कि जीव पुद्‌गलो से बना हुआ नही है। कितनेक श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि जीव-शरीर पुद्‌गलो से बना हुआ है। जो ऐसा कहते है, वे मिथ्या कहते है। यह पाँचवाँ विभगज्ञान है।

(६) **छठा विभगज्ञान है**-जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस विभगज्ञान से देवो को बाह्य आभ्यन्तर पुद्‌गलो को ग्रहण करके और ग्रहण किए बिना विक्रिया करते हुए देखता है। वे देव पुद्‌गलो का स्पर्श कर, उनमे हल-चल पैदा कर, उनका स्फोट कर भिन्न-भिन्न काल और देश मे कभी एक प्रकार व कभी विविध प्रकार की विक्रिया करते है। यह देखकर उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है-मुझे सातिशय ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मै देख रहा हूँ कि जीव रूपी ही है। कितनेक श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि जीव अरूपी है। जो ऐसा कहते है, वे मिथ्या कहते है। यह छठा विभगज्ञान है।

(७) **सातवाँ विभगज्ञान**-जब तथारूप श्रमण-माहन को विभगज्ञान उत्पन्न होता है, तब वह उस विभगज्ञान से सूक्ष्म (मन्द) वायु के स्पर्श से पुद्‌गल (पुद्‌गल स्कन्धो को) काय को कम्पित होते हुए, विशेष रूप से कम्पित होते हुए, चलित होते हुए, क्षुब्ध होते हुए, स्पन्दित होते हुए, दूसरे पदार्थो का स्पर्श करते हुए, दूसरे पदार्थो को प्रेरित करते हुए विभिन्न पर्यायो मे परिणत होते हुए देखता है। तब उसके मन मे ऐसा विचार उत्पन्न होता है-मुझे सातिशय ज्ञान-दर्शन प्राप्त हुआ है। मै देख रहा हूँ कि ये सभी जीव ही जीव है, कितनेक श्रमण-माहन ऐसा कहते है कि जीव भी है और अजीव भी है। जो ऐसा कहते है, वे मिथ्या कहते है। उस विभगज्ञानी को पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक, इन चारो जीव-निकायो का सम्यक् ज्ञान नही होता है। वह इन चार जीव-निकायो पर मिथ्यादण्ड का प्रयोग करता है। यह सातवाँ विभगज्ञान है।

2. *Vibhang jnana* (*avadhi-jnana* of an unrighteous person) is of seven kinds—**(1) Ekadiglokabhigam**—covering only one direction of the *lok*, **(2) Panchadiglokabhigam**—covering five sides of the *lok*, **(3) Kriyavaran jiva**—believes that *jiva* (being or soul) is involved only in *kriya* (action) and not in *karma* (bondage of *karma*), **(4) Mudagga jiva**—believes that *jiva* (being or soul) is made up of matter alone, **(5) Amudagga jiva**—

believes that *jiva* (being or soul) is not made up of matter, **(6) Rupi jiva—** believes that *jiva* (being or soul) is with form only, and **(7) Sarva jiva—** believes that the whole visible world is *jiva* (being or soul)

(1) First Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* (ascetic as described in scriptures) is endowed with *vibhang-jnana*, he sees any one of the five directions—east, west, south, north or zenith up to Saudharma Kalp (a divine realm)—with the help of this knowledge He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw the whole universe in this one direction Many ascetics say that this universe existed in all the five directions They all were telling a lie This is first *Vibhang-jnana*

(2) Second Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* is endowed with *vibhang-jnana*, he sees all the five directions—east, west, south, north or zenith up to Saudharma Kalp—with the help of this knowledge He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw the whole universe in all the five directions Many ascetics say that this universe existed in only one direction They all were telling a lie This is second *Vibhang-jnana*

(3) Third Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* is endowed with *vibhang-jnana*, he only sees beings indulging in violence, falsity, stealing, sex, possessions and eating during the night but is unable to see the bondage of *karmas* caused due to these activities He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw that *jiva* (being or soul) was involved merely in action and there was no bondage of *karmas* due to these actions Many ascetics say that *jiva* was not involved in action They all were telling a lie This is third *Vibhang-jnana*

(4) Fourth Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* is endowed with *vibhang-jnana*, he sees gods picking matter particles from outside their body as well as inside and performing a variety of transmutations and creating just one body or a variety of bodies by touching, agitating, and bursting forth at different times in different areas He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw that *jiva* is made up of matter only Many ascetics say that *jiva* was not made up of matter They all were telling a lie This is fourth *Vibhang-jnana*

(5) Fifth Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* is endowed with *vibhang-jnana*, he sees gods performing a variety of

transmutations and creating just one body or a variety of bodies by touching, agitating, and bursting forth at different times in different areas without picking any matter particles from outside their body as well as inside. He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw that *jiva* was not made up of matter only Many ascetics say that *jiva* was made up of matter They all were telling a lie This is fifth *Vibhang-jnana*

(6) Sixth Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* is endowed with *vibhang-jnana*, he sees gods performing a variety of transmutations and creating just one body or a variety of bodies by touching, agitating, and bursting forth at different times in different areas by picking as well as without picking matter particles from outside their body as well as inside He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw that *jiva* is exclusively with form Many ascetics say that *jiva* was formless They all were telling a lie This is sixth *Vibhang-jnana*

(7) Seventh Vibhang-jnana—When a *tatharupa saman-mahan* is endowed with *vibhang-jnana*, he sees matter particles transforming into a variety of modes by vibrating, uniquely vibrating, moving, agitating, pulsating, touching other particles, and influencing other particles He then thinks that he had acquired miraculous knowledge and perception and saw that all these are *jivas* Many ascetics say that they were jivas as well as *ajivas* They all were telling a lie That *Vibhang-jnani* does not have complete and perfect knowledge of the four bodied beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied and air-bodied He harms these four bodied beings with his false perception This is seventh *Vibhang-jnana*

विवेचन—जो व्यक्ति सम्यग्दृष्टि होता है, उसे जितनी मात्रा मे भी यह उत्पन्न होता है, वह ज्ञान उत्पन्न होने पर प्रारम्भिक क्षणो मे विस्मित तो अवश्य होता है, किन्तु भ्रमित नही होता। वह यह जानता है कि मेरे क्षयोपशम के अनुसार इतनी सीमा या मर्यादा वाला यह अतिशय युक्त ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, अत मै उस सीमित क्षेत्रवर्ती पदार्थों को जानता हूँ। किन्तु यह लोक और उसमे रहने वाले पदार्थ असीम है।

किन्तु जो श्रमण-माहन मिथ्यादृष्टि होते है, उनको उनमे उपरोक्त प्रकार से एकान्त आग्रह उत्पन्न हो जाता है)

Elaboration—A *samyagdrishti* (righteous) person is surprised during the initial moments of acquiring unprecedented knowledge but he is not deluded He realizes that he has acquired only limited knowledge according to the degree of pacification-cum-destruction of *karmas* Thus

he only knows limited things in a limited area but this universe is unlimited and is filled with unlimited things

But the ascetics who are unrighteous get singularly dogmatic as mentioned above

योनिसंग्रह–सूत्र **YONI-SANGRAHA-PAD (SEGMENT OF PLACE OF ORIGIN)**

३. सत्तविधे जोणिसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडजा, पोतजा, जराउजा, रसजा, संसेयजा, संमुच्छिमा, उब्भिगा।

३. योनि-सग्रह (जीवो के उत्पत्तिस्थान) सात प्रकार के है–(१) **अण्डज**–अण्डो से उत्पन्न होने वाले पक्षी सर्प आदि। (२) **पोतज**–चर्म-आवरण बिना उत्पन्न होने वाले हाथी, शेर आदि। (३) **जरायुज**–चर्म-आवरण रूप जरायु (जेर) से उत्पन्न होने वाले मनुष्य, गाय आदि। (४) **रसज**–दूध-दही, तेल आदि रसो मे उत्पन्न होने वाले जीव। (५) **सस्वेदज**–सस्वेद (पसीना) से उत्पन्न होने वाले जूँ, लीख आदि। (६) **सम्मूर्च्छिम**–परमाणुओ के सयोग से उत्पन्न होने वाले लट आदि। (७) **उद्भिज्ज**–भूमि को भेद कर उत्पन्न होने वाले खजनक आदि जीव।

3. *Yoni sangraha* (places of origin) are of seven kinds—**(1) Andaj** or born from an egg, as are birds, reptiles, etc **(2) Potaj** or born as fully formed infants, as are elephants and tigers **(3) Jarayuj** or placental, such as man, cow etc **(4) Rasaj** or born out of liquids including milk, curd, oil etc **(5) Samsvedaj** or born out of sweat, such as louse, nit, etc **(6) Sammoorchanaj** or produced from asexual origin, such as worms **(7) Udbhij** or those that burst out of the earth when born, such as *khanjanak*

गति–आगति–पद **GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF BIRTH FROM AND TO)**

४. अंडगा सत्तगतिया सत्तागतिया पण्णत्ता, तं जहा—अंडगे अंडगेसु उववज्जमाणे अंडगेहिंतो वा, पोतजेहिंतो वा, [जराउजेहिंतो वा, रसजेहिंतो वा, संसेयगेहिंतो वा, संमुच्छिमेहिंतो वा], उब्भिगेहिंतो वा, उववज्जेज्जा।

सच्चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा, पोतगत्ताए वा, [जराउजत्ताए वा, रसजत्ताए वा, संसयेगत्ताए वा, संमुच्छिमत्ताए वा], उब्भिगत्ताए वा गच्छेज्जा।

५. पोतगा सत्तगतिया सत्तागतिया एवं चेव। सत्तण्हवि गतिरागती भाणियव्वा जाव उब्भियत्ति।

४. अण्डज जीवो की सात गति और सात आगति होती है–जो जीव अण्डज योनि मे उत्पन्न होता है, वह अण्डजो से या पोतजो से या जरायुजो से या रसजो से या सस्वेदजो से या सम्मूर्च्छिमो से या उद्भिज्जो से आकर उत्पन्न होता है।

वही जीव अण्डज योनि को छोडकर दूसरी योनि मे जाता है, वह अण्डज, पोतज, जरायुज, रसज, सस्वेदज, सम्मूर्च्छिम या उद्भिज्ज रूप से जाता है। अर्थात् सातो योनियो मे उत्पन्न हो सकता है।

५. पोतज जीवो की सात गति और सात आगति होती है। इसी प्रकार सातो ही योनि वाले जीवो की सातो ही गति-आगति होती है।

4. *Andaj jiva* (egg-born beings) have seven kinds of *gatis* (reincarnation to) and seven *aagatis* (reincarnation from)—A being taking birth as *Andaj* being reincarnates from either *Andaj* beings, *Potaj* beings, *Jarayuj* beings, *Rasaj* beings, *Samsvedaj* beings, *Sammoorchanaj* beings or *Udbhij* beings

The same *Andaj* being leaving the state of *Andaj* being reincarnates in the genus of either *Andaj* beings, *Potaj* beings, *Jarayuj* beings, *Rasaj* beings, *Samsvedaj* beings, *Sammoorchanaj* beings or *Udbhij* beings In other words it can reincarnate in any of the said seven genuses

5. *Potaj* beings also have seven *gatis* and *aagatis* In the same way all the said seven kinds of beings have seven kinds of *gatis* (reincarnation to) and seven *aagatis* (reincarnation from)

संग्रहस्थान-पद SANGRAHASTHAAN-PAD (SEGMENT OF PROPER MANAGEMENT)

६. आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहठाणा पण्णत्ता, तं जहा-

(१) आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति। (२) [आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आहाराइणियाए कितिकम्मं सम्मं पउंजित्ता भवति। (३) आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले-काले सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति। (४) आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति]। (५) आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति, णो अणापुच्छियचारी। (६) आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अणुप्पण्णाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवति। (७) आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि पुव्वुप्पणाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवति, णो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवति।

६. आचार्य और उपाध्याय के लिए गण मे सात सग्रहस्थान (गण को सुव्यवस्थित रखने का उपाय) है-

(१) आचार्य और उपाध्याय गण मे आज्ञा (आदेश) एव धारणा (निषेध) का सम्यक् प्रयोग करे। (२) आचार्य और उपाध्याय गण मे यथारात्निक (दीक्षा-पर्याय मे छोटे-बडे के क्रम से) कृतिकर्म (वन्दनादि) का सम्यक् प्रयोग करें। (३) आचार्य और उपाध्याय जिन-जिन सूत्र-पर्यवजातो को धारण

करते है, उनकी उचित प्रकार से यथासमय गण को सम्यक् वाचना देवे। (४) आचार्य और उपाध्याय गण के ग्लान (रुग्ण) और शैक्ष (नवदीक्षित) साधुओ की वैयावृत्त्य के लिए सदा सावधान रहे। (५) आचार्य और उपाध्याय गण को पूछकर अन्य प्रदेश मे विहार करे, उसे पूछे बिना विहार न करे। (६) आचार्य और उपाध्याय गण के लिए अनुपलब्ध उपकरणो को यथाविधि उपलब्ध कराएँ। (७) आचार्य और उपाध्याय गण मे प्राप्त उपकरणो का सम्यक् प्रकार से सरक्षण एव सगोपन करे, असम्यक् प्रकार से–विधि का अतिक्रमण कर सरक्षण और सगोपन न करे।

6. For an *acharya* and *upadhyaya* there are seven *sangrahasthaan* (means of proper management)—

(1) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should ensure proper implementation of directive and interdictive commands (*ajna* and *dharana*) (2) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should ensure proper implementation of code of protocol in all activities including greetings (*yatharatnik kritikarma*) (3) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should ensure proper implementation of their duty of scheduled and methodical recitation of the scriptures they know (4) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should always remain alert to ensure proper care of the sick and newly initiated ascetics (5) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should ensure proper implementation of their obligation of seeking permission of the *gana* before traveling to another area and refrain from traveling without permission (6) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should ensure timely supply of required ascetic-equipment (*upakaran*) following the prescribed procedure (7) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* should ensure proper care and storage of equipment received in the *gana*, and avoid improper care and storage, transgressing the prescribed code

असग्रहस्थान–पद ASANGRAHASTHAAN-PAD (SEGMENT OF IMPROPER MANAGEMENT)

७. आयरिय–उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त असंगहठाणा पण्णत्ता, तं जहा–

(१) आयरिय–उवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा णो सम्मं पुउंजित्ता भवति। (२) [आयरिय–उवज्झाए णं गणंसि आहाराइणियाए किंतिकम्मं णो सम्मं पउंजित्ता भवति। (३) आयरिय–उवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले–काले णो सम्ममणुप्पवाइत्ता भवति। (४) आयरिय–उवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णो सम्ममब्भुट्ठित्ता भवति। (५) आयरिय–उवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी यावि हवइ, णो आपुच्छियचारी। (६) आयरिय–उवज्झाए णं गणंसिं अणुप्पण्णाइं उवगरणाइं णो सम्मं उप्पाइत्ता भवति।

(७) आयरिय–उवज्झाए णं गणंसि] पच्चुप्पण्णाणं उवगरणाणं णो सम्मं सारक्खेत्ता संगोवेत्ता भवति।

७. आचार्य और उपाध्याय के लिए गण मे सात असग्रहस्थान (गण व्यवस्था को भग करने वाले) है–

(१) आचार्य और उपाध्याय गण मे आज्ञा एव धारणा का सम्यक् प्रयोग न करे। (२) आचार्य और उपाध्याय गण मे यथारात्निक कृतिकर्म का सम्यक् प्रयोग न करे। (३) आचार्य और उपाध्याय जिन सूत्र-पर्यवजातो (श्रुत ज्ञान के रहस्यो) को धारण करते है, उनकी यथाकाल गण को सम्यक् वाचना न देवे। (४) आचार्य और उपाध्याय ग्लान एव शैक्ष साधुओ की यथोचित वैयावृत्त्य के लिए सदा सावधान न रहे। (५) आचार्य और उपाध्याय गण को पूछे बिना अन्यत्र विहार करे, उसे पूछ कर विहार न करे। (६) आचार्य और उपाध्याय गण के लिए अनुपलब्ध उपकरणो को सम्यक् प्रकार से उपलब्ध न कराएँ। (७) आचार्य और उपाध्याय गण मे पूर्व उपलब्ध उपकरणो का सम्यक् प्रकार से सरक्षण एव सगोपन न करे।

7. For an *acharya* and *upadhyaya* there are seven *asangrahasthaan* (means of improper management)—

(1) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not ensure proper implementation of directive and interdictive commands (*ajna* and *dharana*) (2) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not ensure proper implementation of code of protocol in all activities including greetings (*yatharatnik kritikarma*) (3) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not ensure proper implementation of their duty of scheduled and methodical recitation of the scriptures they know (4) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not always remain alert to ensure proper care of the sick and newly initiated ascetics (5) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not ensure proper implementation of their obligation of seeking permission of the *gana* before traveling to another area and refrain from traveling without permission (6) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not ensure timely supply of required ascetic-equipment (*upakaran*) following the prescribed procedure (7) In the *gana* the *acharya* and *upadhyaya* do not ensure proper care and storage of equipment received in the *gana*, and do not avoid improper care and storage, transgressing the prescribed code

प्रतिमा–पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)

८. सत्त पिंडेसणाओ पण्णत्ताओ।

८. पिण्ड-एषणाएँ सात है।

8. There are seven *pındaıshanas* (seekıng food)

विवेचन-(पिंडैषणा)-आहार के अन्वेषण को पिण्ड-एषणा कहते है। वे सात प्रकार की है- (१) **संसृष्ट-पिण्ड-एषणा**-देय वस्तु से लिप्त हाथ से, या कडछी आदि से आहार लेना। (२) **असंसृष्ट-पिण्ड-एषणा**-देय वस्तु से अलिप्त हाथ से, या कडछी आदि से आहार लेना। (३) **उद्‌धृत-पिण्ड-एषणा**-पकाने के पात्र से निकाल कर परोसने के लिए रखे हुए अन्य पात्र से आहार लेना। (४) **अल्पलेपिक-पिण्ड-एषणा**-रूक्ष आहार लेना। (५) **अवगृहीत-पिण्ड-एषणा**-खाने के लिए थाली मे परोसा हुआ आहार लेना। (६) **प्रगृहीत-पिण्ड-एषणा**-परोसने के लिए कडछी या चम्मच आदि से निकाला हुआ आहार लेना। (७) **उज्झितधर्मा-पिण्ड-एषणा**-घर वालो के भोजन करने के बाद बचा हुआ एव परित्याग करने के योग्य आहार लेना।

Elaboration—Exploratıon for food ıs called *pındaıshana* They are of seven kınds—(1) *Samshrısht-pınd-eshana*—to accept food gıven from hands or servıng spoon soıled wıth the food beıng offered (2) *Asamshrısht-pınd-eshana*—to accept food gıven from unsoıled hands or unsoıled servıng spoon (3) *Uddhrıt-pınd-eshana*—to accept food taken out from a cookıng pot and placed ın another pot for servıng (4) *Alpalepık-pınd-eshana*—to accept only dry food (5) *Avagrahıt-pınd-eshana*—to accept food from that served ın a plate for eatıng (6) *Pragrahıt-pınd-eshana*—to accept food taken ın servıng spoon for servıng (7) *Ujjhıtdharma-pınd-eshana*—to accept leftover or dıscarded food after everyone ın the famıly has eaten

९. सत्त पाणेसणाओ पण्णत्ताओ।

९. पान-एषणाएँ सात है।

9. There are seven *paanaıshana* (seekıng drınks)

विवेचन-पीने योग्य जल आदि की गवेषणा **पान-एषणा** है। पिण्ड-एषणा के समान उसके भी सात भेद है। यहाँ **अल्पलेपिक-पान-एषणा** का अर्थ काजी, ओसामण, उष्ण जल, चावल का धोवन आदि से है और इक्षुरस, द्राक्षारस आदि **लेपकृत पान**-एषणा है।

Elaboration—Exploratıon for water and other drınks suıtable for ascetıcs ıs called *paanaıshana* The seven kınds are same as *pındaıshana* In thıs case *alpalepık-paan-eshana* means seekıng tasteless drınks lıke *kanjı, osaman,* hot water, rıce-wash, etc and *lepakrıt-paan-eshana* means seekıng tasty drınks lıke cane juıce, grape-juıce etc

१०. सत्त उग्गहपडिमाओ पण्णत्ताओ।

१०. अवग्रह-प्रतिमाएँ सात है।

10. There are seven *avagraha-pratimas*

विवेचन–(अवग्रह प्रतिमा)–वसति, उपाश्रय या स्थान-प्राप्ति सम्बन्धी प्रतिज्ञा या अभिग्रह अवग्रह प्रतिमा है। उसके सात प्रकार है–

(१) मै अमुक प्रकार के स्थान मे रहूँगा, दूसरे स्थान मे नही। (२) मै अन्य साधुओ के लिए स्थान की याचना करूँगा तथा दूसरो के द्वारा याचित स्थान मे रहूँगा। यह गच्छान्तर्गत साधुओ के लिए होती है। (३) मै दूसरो के लिए स्थान की याचना करूँगा, किन्तु दूसरो के द्वारा याचित स्थान मे नही रहूँगा। यह **यथालन्दिक** (ज्ञान प्राप्ति हेतु कुछ समय के लिए गच्छ मे रहने वाले) साधुओ के होती है। उन मुनियो के सूत्र का अध्ययन जो शेष रह जाता है, उसे पूर्ण करने के लिए वे आचार्य से सम्बन्ध रखते है। अतएव वे आचार्य के लिए स्थान की याचना करते है, किन्तु स्वय दूसरे साधुओ के द्वारा याचित स्थान मे नही रहते। (४) मै दूसरो के लिए स्थान की याचना नही करूँगा, किन्तु दूसरो के द्वारा याचित स्थान मे रहूँगा। यह जिनकल्पदशा का अभ्यास करने वाले साधुओ के होती है। (५) मै अपने लिए स्थान की याचना करूँगा, दूसरो के लिए नही। यह जिनकल्पी साधुओ के होती है। (६) जिस शय्यातर का मै स्थान ग्रहण करूँगा, उसी के यहाँ धान-पलाल आदि सहज ही प्राप्त होगा तो लूँगा, अन्यथा उकडू या अन्य नैषधिक आसन से बैठकर ही रात बिताऊँगा। यह जिनकल्पी या अभिग्रहविशेष के धारी साधुओ के होती है। (७) जिस शय्यातर का मै स्थान ग्रहण करूँगा, उसी के यहाँ सहज ही बिछे हुए काष्ठपट्ट (तख्ता, चौकी) आदि प्राप्त होगा तो लूँगा, अन्यथा उकडू आदि आसन से बैठा-बैठा ही रात बिताऊँगा। यह अवग्रहप्रतिमा भी जिनकल्पी या अभिग्रहविशेष धारी साधुओ के होती है। *(हिन्दी टीका भाग-२, पृष्ठ ३६७। वृत्ति पत्र २१५। प्रवचन सारोद्धार गाथा ७४४)*

Elaboration—Special resolution regarding seeking place of stay is called *avagraha-pratima* It is of seven kinds—

(1) I will stay at this specific type of place and no other (2) I will seek place of stay for other ascetics and live at the place sought by others This is done for the ascetic of the same *gachchha* (3) I will seek place of stay for others but will not stay at a place sought by others This is meant for *yathalandik* (who stay with a *gachchha* for a short duration for studies) Such ascetics remain with an *acharya* to complete their studies Therefore they seek place of stay for the *acharya* but do not stay at a place sought by other ascetics (4) I will not seek place of stay for others but stay at a place sought by others This is meant for the ascetics who are preparing for *Jinkalp* state (5) I will seek place of stay for myself but not for others This is meant for *Jinakalpi* ascetics (6) I will accept hay or other things to make bed only if readily available with the


सात प्रकार की पिंडैषणा
2
4
7
11

चित्र परिचय ११

Illustration No. 11

सात प्रकार की पिण्डैषणा

आहार ग्रहण सम्बन्धी विशेष प्रकार का संकल्प/अभिग्रह लेकर गवेषणा करना पिण्डैषणा है। गृहस्थ मुनि को भिक्षार्थ आये देखकर प्रसन्नतापूर्वक भक्त पान का लाभ देने की प्रार्थना करता है। फिर मुनि इन सात विधियों में से अपने अभिग्रहानुसार आहार ग्रहण करते है। यह पिण्डैषणा सात प्रकार की है

(१) **संसृष्ट पिण्डैषणा**—गृहस्थ श्रमण को आहार देते समय देय वस्तु से लिप्त हाथ या कड़छी आदि से आहार देता है। इसी प्रकार अन्य भेद है। जैसे (२) **असंसृष्ट पिण्डैषणा** (३) **उद्धृत पिण्डैषणा**, (४) **अल्पलेपिक पिण्डैषणा** (५) **अवगृहीत पिण्डैषणा**, (६) **प्रगृहीत पिण्डैषणा**, तथा (७) **उज्झितधर्मा पिण्डैषणा**—बचा हुआ शेष भोजन या फेंकने योग्य आहार देना। *(विशेष वर्णन मूल सूत्र के अर्थ और विवेचन में देखें।)*

—स्थान ७, सूत्र ८

SEVEN PINDAISHANAS

Exploration for food after taking some specific resolve is called *pindaishana* A householder happily offers food when he sees an ascetic coming at his door seeking alms The ascetic then accepts food according to the specific resolve he has taken out of the seven resolves listed here Such exploration is of seven kinds—

(1) *Samshrisht-pind-eshana*—to accept food given from hands or serving spoon soiled with the food being offered In the same way the other kinds are (2) *Asamshrisht pind-eshana*, (3) *Uddhrit-pind-eshana*, (4) *Alpalepik pind-eshana*, (5) *Avagrahit-pind-eshana* (6) *Pragrahit pind-eshana*, and (7) *Ujjhitdharma pind eshana* *(for details refer to the text and elaboration)*

—Sthaan 7 Sutra 8

person who has provided the place of stay, otherwise I will spend the night sitting in some specific posture (7) I will accept wooden plank or bed already laid at the accepted place of stay, otherwise I will spend the night sitting in some specific posture. The last two *pratimas* are meant for *Jinakalpi* ascetics or those who have taken these specific resolves *(Vritti, leaf 215, Hindi Tika, part-2, p 367, Pravachanasaroddhar, verse 744)*

आचारचूला–पद ACHAARACHULA-PAD (SEGMENT OF ACHAARACHULA)

११. सत्तसत्तिक्कया पण्णत्ता। १२. सत्त महज्झयणा पण्णत्ता।

११. सात सप्तैकक है। अर्थात् आचारचूला की दूसरी चूलिका के उद्देशक–रहित अध्ययन सात है। प्रत्येक अध्ययन का नाम सप्त–एकक है। उनके नाम इस प्रकार है–(१) स्थान, (२) नैषेधिकी, (३) उच्चारप्रस्रवणविधि, (४) शब्द, (५) रूप, (६) परक्रिया, (७) अन्योन्यक्रिया।

१२. सात महान् अध्ययन है। सूत्रकृताग के दूसरे श्रुतस्कन्ध के अध्ययन पहले श्रुतस्कन्ध के अध्ययनो की अपेक्षा बडे है, उन्हे महान् अध्ययन कहा है। उनके नाम इस प्रकार है–(१) पुण्डरीक, (२) क्रियास्थान, (३) आहार–परिज्ञा, (४) प्रत्याख्यानक्रिया, (५) अनाचार–श्रुत, (६) आर्द्रककुमारीय, (७) नालन्दीय।

11. There are seven *Saptaikaks* In the second *Chulika* (appendix) of *Achaarachula* their are seven chapters without lessons The title of each of these chapters is *Sapta-ekak* Their names are—(1) *Sthaan*, (2) *Naishedhiki*, (3) *Uchchara-prasravan* vidhi, (4) *Shabd*, (5) *Rupa*, (6) *Parakriya* and (7) *Anyonya kriya*

12. There are seven *Mahan Adhyayans* (great chapters) The chapters in the second *Shrutaskandh* of *Sutrakritanga Sutra* are voluminous as compared with those in the first *Shrutaskandh* These are called *Mahan Adhyayans* Their names are—(1) *Pundareek*, (2) *Kriyasthaan*, (3) *Ahar-pariyna*, (4) *Pratyakhyan kriya*, (5) *Anachar-shrut*, (6) *Ardrakumariya* and (7) *Nalandiya*

प्रतिमा–पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)

१३. सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा एकूणपण्णताए राइंदिएहिं एगेण या छण्णउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्तं (अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया) आराहिया यावि भवति।

१३. सप्तसप्तमिका (७ × ७ =) भिक्षुप्रतिमा ४९ दिन–रात तथा १९६ भिक्षादत्तियो के द्वारा यथासूत्र, यथार्थ, यथातत्त्व, यथामार्ग, यथाकल्प तथा सम्यक् प्रकार काय से आचीर्ण, पालित, शोधित, पूरित, कीर्त्तित और आराधित की जाती है।

13. The *Saptasaptamika Bhikshupratima* (a specific practice with special codes) is sincerely observed (*palit*), purified (*shodhit*, for transgressions), completed (*purit*, for breaking fast), concluded (*kirtit*, break the fast) and successfully performed (*aradhit*) for 49 (7 × 7) days and nights with 196 *bhikshadattis* (servings of alms) according to the scriptures (*yathasutra*), correct interpretation (*yatha-arth*), prescribed procedure (*yathamarg*) and code of praxis (*yathakalp*), perfectly following fundamentals (*yathatattva*), with equanimity (*samata*) and touching the body (actually, not just conceptually)

विवेचन–भिक्षुप्रतिमाएँ १२ है। उनमे से सप्तसप्तमिका प्रतिमा सात सप्ताहो मे क्रमश एक-एक भक्त-पान की दत्ति द्वारा सम्पन्न की जाती है, उसका क्रम इस प्रकार है -

प्रथम सप्तक या सप्ताह मे प्रतिदिन १-१ भक्त-पान दत्ति का योग ७ भिक्षादत्तियाँ।

द्वितीय सप्तक मे प्रतिदिन २-२ भक्त-पान दत्तियो का योग १४ भिक्षादत्तियाँ।

तृतीय सप्तक मे प्रतिदिन ३-३ भक्त-पान दत्तियो का योग २१ भिक्षादत्तियाँ।

चतुर्थ सप्तक मे प्रतिदिन ४-४ भक्त-पान दत्तियो का योग २८ भिक्षादत्तियाँ।

पचम सप्तक मे प्रतिदिन ५-५ भक्त-पान दत्तियो का योग ३५ भिक्षादत्तियाँ।

षष्ठ सप्तक मे प्रतिदिन ६-६ भक्त-पान दत्तियो का योग ४२ भिक्षादत्तियाँ।

सप्तम सप्तक मे प्रतिदिन ७-७ भक्त-पान दत्तियो का योग ४९ भिक्षादत्तियाँ।

इस प्रकार सातो सप्ताहो के ४९ दिनो की भिक्षादत्तियाँ १९६ होती है। सप्तसप्तमिका भिक्षुप्रतिमा ४९ दिन और १९६ भिक्षादत्तियो के द्वारा यथाविधि आराधित की जाती है

विशेष शब्दो के अर्थ **अहासुत्तं**–सूत्र मे बताई विधि के अनुसार। **अहाकप्प**–मर्यादा अनुष्ठान के अनुसार, **अहातच्च**–यथातथ्य पूर्ण रूप मे, **अहासम्म**–समता भाव पूर्वक, **काएणफासिया**–शरीर से स्पर्श करना, **पालिया**–उपयोग पूर्वक पालन किया। **सोहिया**–अतिचारो की शुद्धि की, **तीरिया**–पारणे की अवधि पूरी की, **किट्टिया**–कीर्तित-पारणे के दिन अभिग्रह फलित होने पर पारणा किया, **आराहिया**–सम्यक् प्रकार से आराधित किया। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ३६९)*

Elaboration—There are twelve *Bhikshu Pratimas* Out of these the *Saptasaptamika Bhikshupratima* is observed for seven weeks with an increasing number of additional *dattis* (servings) per day every week Its order is as follows—

During the first *saptak* or week only one *datti* each of food and water is taken every day Total 7 *dattis*

During the second week two *dattis* each of food and water is taken every day Total 14 *dattis*

During the third week three *dattis* each of food and water is taken every day Total 21 *dattis*

During the fourth week four *dattis* each of food and water is taken every day. Total 28 *dattis*

During the fifth week five *dattis* each of food and water is taken every day. Total 35 *dattis*

During the sixth week six *dattis* each of food and water is taken every day Total 42 *dattis*

During the seventh week seven *dattis* each of food and water is taken every day Total 49 *dattis*

Thus the total number of *dattis* for 49 days of seven weeks is 196 This *Saptasaptamika Bhikshupratima* is concluded in 49 days with 196 servings following the prescribed procedure

With regard to technical terms the English translation is self explanatory

अधोलोकस्थिति–पद ADHOLOK-STHITI-PAD (SEGMENT OF STRUCTURE OF LOWER WORLD)

१४. अहेलोगे णं सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ। १५. सत्त घणोदधीओ पण्णत्ताओ। १६. सत्त घणवाता पण्णत्ता। १७. सत्त तणुवाता पण्णत्ता। १८. सत्त ओवासंतरा पण्णत्ता। १९. एतेसु णं सत्तसु ओवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया। २०. एतेसु णं सत्तसु तणुवातेसु सत्त घणवाता पइट्ठिया। २१. एतेसु णं सत्तसु घणवातेसु सत्त घणोदधी पतिट्ठिया। २२. एतेसु णं सत्तसु घणोदधीसु पिंडलग–पिहुल–संठाण–संठियाओ सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पढमा जाव सत्तमा।

२३. एतासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–घम्मा, वंसा, सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा, माघवती। २४. एतासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता पण्णत्ता, तं जहा–रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुअप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमा, तमतमा।

१४. अधोलोक मे सात पृथ्वियाँ है। १५. सात घनोदधि है। १६. सात घनवात है। १७. सात तनुवात है। १८. सात अवकाशान्तर (तनुवात, घनवात आदि के मध्यवर्ती अन्तराल क्षेत्र) है। १९. इन सात अवकाशान्तरों मे सात तनुवात प्रतिष्ठित है। २०. इन सात तनुवातो पर सात घनवात प्रतिष्ठित है। २१. इन घनवातो पर सात घनोदधि प्रतिष्ठित है। २२. इन सातो घनोदधियो पर फूल की टोकरी के समान चौडे सस्थान वाली सात पृथिविया है, पहली से लेकर सातवी तक।

२३. इन सातो पृथिवियो के सात नाम है–(१) घमा, (२) वशा, (३) शैला, (४) अजना, (५) रिष्टा, (६) मघा, (७) माघवती। २४. इन सात पृथिवियो के (अर्थ के अनुकूल नाम वाले) सात

गोत्र है। (१) रत्नप्रभा, (२) शर्कराप्रभा, (३) वालुकाप्रभा, (४) पकप्रभा, (५) धूमप्रभा, (६) तम प्रभा, (७) तमस्तम प्रभा।

14. In *Adholok* (lower world) there are seven *prithvis* (earth) **15.** (In *Adholok*) there are seven *Ghanodadhi* (dense or frozen water) **16.** (In *Adholok*) there are seven *Ghanavaat* (dense air) **17.** (In *Adholok*) there are seven *Tanuvaat* (rarefied air) **18.** (In *Adholok*) there are seven *avakashantar* (intervening space) **19.** Seven *Tanuvaats* are *pratishthit* (installed) in these seven *avakashantars* **20.** Seven *Ghanavaats* are installed on these seven *Tanuvaats* **21.** Seven *Ghanodadhis* are installed on these seven *Ghanavaats* **22.** On these seven *Ghanavaats* are installed seven *prithvis* with a wide structure like that of a basket of flowers, from one to seven

23. These seven *prithvis* have seven names—(1) Ghama, (2) Vamsha, (3) Shaila, (4) Anjana, (5) Rishta, (6) Magha and (7) Maaghavati **24.** These seven *prithvis* have seven *gotras* (class names based on attributes)—(1) Ratna-prabha, (2) Sharkara-prabha, (3) Baluka-prabha, (4) Pank-prabha, (5) Dhoom-prabha, (6) Tamah-prabha and (7) Tamastamah-prabha

बादरवायुकायिक–पद BADAR-VAYUKAYIK-PAD (SEGMENT OF GROSS AIR-BODIED BEINGS)

२५. सत्तविहा बायरवाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–पाईणवाते, पडीणवाते, दाहीणवाते, उदीणवाते, उड्ढवाते, अहेवाते, विदिसिवाते।

२५. बादर वायुकायिक जीव सात प्रकार के है। (१) पूर्व दिशा की वायु, (२) पश्चिम दिशा की वायु, (३) दक्षिण दिशा की वायु, (४) उत्तर दिशा की दिशा, (५) ऊर्ध्वदिशा की वायु, (६) अधोदिशा की वायु और (७) विदिशा की वायु।

25. *Badar vayukayik jivas* (gross air-bodied beings) are of seven kinds—(1) wind flowing from the east, (2) wind flowing from the west, (3) wind flowing from the south, (4) wind flowing from the north, (5) wind flowing from the Zenith, (6) wind flowing from the Nadir and (7) wind flowing from the intermediate directions like Ishaan

संस्थान–पद SAMSTHAN-PAD (SEGMENT OF STRUCTURE)

२६. सत्त संठाणा पण्णत्ता, तं जहा–दीहे, रहस्से, वट्टे, तंसे, चउरंसे, पिहुले, परिमंडले।

२६. सस्थान (पुद्‌गलो के आकार) सात प्रकार के है–(१) दीर्घसस्थान (आयत), (२) ह्रस्वसस्थान, (३) वृत्तसस्थान (गेद की तरह गोलाकार), (४) त्र्यस्र-(त्रिकोण-) सस्थान, (५) चतुरस्र-(चौकोण-) सस्थान, (६) पृथुल-(स्थूल विस्तीर्ण-) सस्थान, (७) परिमण्डल (अण्डे या नारगी के समान) सस्थान।

26. *Samsthan* (structure or shape of matter) is of seven kinds—(1) *deergh* (large or rectangular) *samsthan*, (2) *hrasva* (short or small) *samsthan*, (3) *vritta* (circular) *samsthan*, (4) *tryasra* or *trikone* (triangular) *samsthan*, (5) *chaturasra* or *chatushkone* (square or quadrangular) *samsthan*, (6) *prithul* (elongated) *samsthan* and (7) *parimandal* (oval like an egg or flattened like an orange) *samsthan*

भयस्थान-पद BHAYA-PAD (SEGMENT OF FEAR)

२७. सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणभए, मरणभए, असिलोगभए।

२७. भय के स्थान सात है–(१) **इहलोकभय**–इस लोक मे मनुष्य तिर्यंच आदि से होने वाला भय। अथवा स्वजातीयप्राणी से उत्पन्न भय, (२) **परलोकभय**–परलोक सम्बन्धी भय। अथवा विजातीय प्राणी से उत्पन्न भय। (३) **आदानभय**–सम्पत्ति आदि के अपहरण का भय। (४) **अकस्माद्‌भय**–अचानक या अकारण होने वाला भय। (५) **वेदनाभय**–रोग-पीडा आदि का भय। (६) **मरणभय**–मरने का भय। (७) **अश्लोकभय**–अपकीर्ति का भय।

27. There are seven *sthaans* (reasons) of fear—(1) *Ihalok bhaya*—fear of animals or humans in this world or that of beings of same species (2) *Paralok bhaya*—fear related to the other world (next birth) or that from beings of other species (3) *Aadan bhaya*—fear of loosing wealth (4) *Akasmat bhaya*—sudden or causeless fear (5) *Vedana bhaya*—fear of ailment or pain (6) *Maran bhaya*—fear of death (7) *Ashlok bhaya*—fear of infamy

छद्मस्थ-पद CHHADMASTH-PAD (SEGMENT OF THE UNRIGHTEOUS)

२८. सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तं जहा–पाणे अइवाएत्ता भवति। मुसं वइत्ता भवति। अदिण्णं आदित्ता भवति। सद्दफरिसरसरूवगंधे आसादेत्ता भवति। पूयासक्कारं अणुवूहेत्ता भवति। इमं सावज्जंति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवति। णो जहावादी तहाकारी यावि भवति।

२८. सात स्थानो से छद्मस्थ जाना जाता है–(१) जो प्राणियो का घात करता है। (२) जो मृषा (असत्य) बोलता है। (३) जो अदत्त (बिना दी) वस्तु को ग्रहण करता है। (४) जो शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध का आस्वाद लेता है। (५) जो अपने पूजा और सत्कार का अनुमोदन करता है। (६) जो 'यह सावद्य (सदोष) है', ऐसा कहकर भी उसका प्रतिसेवन करता है। (७) जो जैसा कहता है, वैसा नही करता।

28. A *chhadmasth* (unrighteous person) is recognized by seven *sthaans* (activities)—(1) One who harms or destroys life or living beings (2) One who tells a lie (*mrisha*) (3) One who takes a thing without being given (*adattadan*) (4) One who enjoys sound, touch, taste, form, and

smell. (5) One who encourages his worship and respect (6) One who indulges in an activity even after branding it as faulty (*savadya*) (7) One who does not do what he says

केवलि–पद KEVALI-PAD (SEGMENT OF OMNISCIENT)

२९. सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा, तं जहा–णो पाणे अइवाइत्ता भवति। [णो मुसं वइत्ता भवति। णो अदिण्णं आदित्ता भवति। णो सद्दफरिसरसरूवगंधे आसादेत्ता भवति। णो पूयासक्कारं अणुवूहेत्ता भवति। इमं सावज्जंति पण्णवेत्ता णो पडिसेवेत्ता भवति]। जहावादी तहाकारी यावि भवति।

२९. सात स्थानो (कारणो) से केवली जाना जाता है- (१) जो प्राणियो का घात नही करता है। (२) जो मृषा नही बोलता है। (३) जो अदत्त वस्तु को ग्रहण नही करता है। (४) जो शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध का आस्वादन नही लेता है। (५) जो पूजा और सत्कार का अनुमोदन नही करता है। (६) जो 'यह सावद्य है' ऐसा कह कर उसका प्रतिसेवन नही करता है। (७) जो जैसा कहता है, वैसा करता है।

29. A *Kevali* (omniscient) is recognized by seven *sthaans* (activities)—(1) One who does not harm or destroy life or living beings (2) One who does not tell a lie (*mrisha*) (3) One who does not take a thing without being given (*adattadan*) (4) One who does not enjoy sound, touch, taste, form, and smell (5) One who does not encourage his worship and respect (6) One who does not indulge in an activity after branding it as faulty (*savadya*) (7) One who does what he says

गोत्र–पद GOTRA-PAD (SEGMENT OF CLAN NAME)

३०. सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता, तं जहा–

कासवा, गोतमा, वच्छा, कोच्छा, कोसिआ, मंडवा, वासिट्ठा।

३०. मूल गोत्र सात है–(१) काश्यप, (२) गौतम, (३) वत्स, (४) कुत्स, (५) कौशिक, (६) माण्डव, (७) वाशिष्ठ।

30. There are seven *mool gotra* (original clan names)—(1) Kaashyap, (2) Gautam, (3) Vatsa, (4) Kutsa, (5) Kaushik, (6) Mandava and (7) Vaashisht

विवेचन–किसी एक महापुरुष से उत्पन्न हुई वश–परम्परा को गोत्र कहते है। प्रारम्भ मे सूत्रोक्त के सात मूल गोत्र थे। कालान्तर मे उन्ही से अनेक उत्तर गोत्र भी उत्पन्न हो गये। सातो मूल गोत्रो का उदाहरण सहित परिचय इस प्रकार है -

(१) काश्यपगोत्र–मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि जिनको छोडकर शेष बाईस तीर्थकर, सभी चक्रवर्ती (क्षत्रिय), सातवे से ग्यारहवे गणधर (ब्राह्मण) और जम्बूस्वामी (वैश्य) आदि सभी काश्यप गोत्रीय थे।

(२) गौतम गोत्र–मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि जिन, नारायण और पद्म को छोडकर सभी बलदेव–वासुदेव तथा इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति, ये तीन गणधर गौतम गोत्रीय थे।

(३) वत्सगोत्र - दशवैकालिक के रचयिता शय्यम्भवसूरि आदि वत्सगोत्रीय थे।

(४) कौत्स गोत्र–शिवभूति आदि कौत्स गोत्रीय थे।

(५) कौशिक गोत्र–षडुलुक (रोहगुप्त) आदि कौशिक गोत्रीय थे।

(६) माण्डव गोत्र–मण्डुऋषि के वशज माण्डव्य गोत्रीय कहलाये।

(७) वाशिष्ठ गोत्र–वशिष्ठ ऋषि के वशज वाशिष्ठ गोत्रीय कहे जाते है तथा छठे गणधर और आर्य सुहस्ती आदि को भी वाशिष्ट गोत्रीय कहा गया है।

Elaboration—The family lineage starting from some great man is called *gotra* As mentioned in scriptures there were only seven *gotras* in the beginning With passage of time many sub-*gotras* evolved from these The seven original *gotras* with names of some important persons belonging to each lineage are as follows—

(1) Kaashyap gotra—Except Munisuvrat and Arishtanemi all twenty two Tirthankars, all the Chakravartis (*Kshatriya*), seventh to eleventh Ganadhars (*Brahmin*), and Jambuswami (*Vaishya*) belonged to this *gotra*

(2) Gautam gotra—Tirthankars Munisuvrat and Arishtanemi, all *Baladevas* and *Vasudevas* except Narayan and Padma, and three *Ganadhars*, Indrabhuti, Agnibhuti and Vayubhuti belonged to this *gotra*

(3) Vatsa gotra—Shayyambhava Suri, the author of *Dashavaikalik Sutra* belonged to this *gotra*

(4) Kutsa gotra—Shivabhuti belonged to this *gotra*

(5) Kaushik gotra—Shaduluk (Rohagupta) belonged to this *gotra*

(6) Mandava gotra—The descendants of Mandu Rishi were called Mandavya *gotriya*

(7) Vaashisht gotra—The descendants of Vashisht Rishi were called Vashist *gotriya* The sixth *Ganadhar* and Arya Suhasti are said to have belonged to this *gotra*

३१. जे कासवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा–ते कासवा, ते संडिल्ला, ते गोला, ते वाला, ते मुंजइणो, ते पव्वतिणो, ते वसिकण्हा। ३२. जे गोतमा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा–ते गोतमा, ते गग्गा, ते भारद्दा, ते अंगिरसा, ते सक्कराभा, ते भक्खराभा, ते उदत्ताभा। ३३. जे वच्छा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा–ते वच्छा, ते अग्गेया, ते मित्तेया, ते सामलिणो, ते सेलयया, ते अट्ठिसेणा, ते वीयकण्हा।

३१. जो **काश्यप गोत्रीय** है, वे सात प्रकार के है-(१) काश्यप, (२) शाण्डिल्य, (३) गोल, (४) बाल, (५) मौज्जकी, (६) पर्वती, (७) वर्षकृष्ण। **३२. गौतम गोत्रीय** सात प्रकार के है-(१) गौतम, (२) गार्ग्य, (३) भारद्वाज, (४) आङ्गिरस, (५) शर्कराभ, (६) भास्कराभ, (७) उदत्ताभ। **३३. वत्स गोत्रीय** सात प्रकार के है-(१) वत्स, (२) आग्नेय, (३) मैत्रेय, (४) शाल्मली, (५) शैलक, (६) अस्थिषेण, (७) वीतकृष्ण।

31. Kashyap *gotriyas* are of seven kinds—(1) Kashyap, (2) Shandilya, (3) Gole, (4) Baal, (5) Maujjaki, (6) Parvati and (7) Varshakrishna **32.** Gautam *gotriyas* are of seven kinds—(1) Gautam, (2) Gargya, (3) Bharadvaaj, (4) Aangiras, (5) Sharkarabh, (6) Bhaskarabh and (7) Udattabh **33.** Vatsa *gotriyas* are of seven kinds—(1) Vatsa, (2) Aagneya, (3) Maitreya, (4) Shaalmali, (5) Shailak, (6) Asthishen and (7) Vitakrishna

३४. जे कोच्छा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते कोच्छा, ते मोग्गलायणा, ते पिंगलायणा, ते कोडीणा ते मंडलिणो, ते हारिता, ते सोमया। ३५. जे कोसिआ ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते कोसिआ, ते कच्चायणा, ते सालंकायणा, ते गोलिकायणा, ते पक्खिकायणा, ते अग्गिच्चा, ते लोहिच्चा। ३६. जे मंडवा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते मंडवा, ते आरिट्ठा, ते संमुता, ते तेला, ते एलावच्चा, ते कंडिल्ला, ते खारायणा। ३७. जे वासिट्ठा ते सत्तविधा पण्णत्ता, तं जहा—ते वासिट्ठा, ते उंजायणा, ते जारुकण्हा, ते वग्घावच्चा, ते कोडिण्णा, ते सण्णी, ते पारासरा।

३४. जो **कौत्स** है, वे सात प्रकार के है-(१) कौत्स, (२) मौद्गलायन, (३) पिङ्गलायन, (४) कौडिन्य, (५) मण्डली, (६) हारित, (७) सौम्य। ३५. जो **कौशिक** है, वे सात प्रकार के है-(१) कौशिक, (२) कात्यायन, (३) सालकायन, (४) गोलिकायन, (५) पाक्षिकायन, (६) आग्नेय, (७) लौहित्य। ३६. जो **माण्डव** है, वे सात प्रकार के है-(१) माण्डव, (२) अरिष्ट, (३) सम्मुत, (४) तैल, (५) एलापत्य, (६) काण्डिल्य, (७) क्षारायण। ३७. जो **वाशिष्ठ** है, वे सात प्रकार के है-(१) वाशिष्ठ, (२) उञ्जायण, (३) जरत्कृष्ण, (४) व्याघ्रापत्य, (५) कौण्डिन्य, (६) सञ्ज्ञी, (७) पाराशर।

34. Kautsa *gotriyas* are of seven kinds—(1) Kautsa, (2) Maudgalayan, (3) Pingalayan, (4) Kaundinya, (5) Mandali, (6) Haarit and (7) Saumya **35.** Kaushik *gotriyas* are of seven kinds—(1) Kaushik, (2) Katyayan, (3) Saalankayan, (4) Golikayan, (5) Pakshikayan, (6) Aagneya and (7) Lauhitya **36.** Mandava *gotriyas* are of seven kinds—(1) Mandava, (2) Arisht, (3) Sammut, (4) Tail, (5) Elapatya, (6) Kandilya and (7) Ksharayan **37.** Vaashist *gotriyas* are of seven kinds—(1) Vaashisht, (2) Unjayan, (3) Jaratkrishna, (4) Vyaghrapatya, (5) Kaundinya, (6) Sanjni and (7) Paaraashar

नय–पद NAYA-PAD (SEGMENT OF STAND-POINTS)

३८. सत्त मूल णया पण्णत्ता, तं जहा–णेगमे, संगहे, ववहारे, उज्जुसुते, सद्दे, समभिरूढे, एवंभूते।

३८. मूल नय सात है–(१) **नैगमनय**–भेद (विशेष) और अभेद (सामान्य) दोनो को ग्रहण करने वाला। (२) **संग्रह**–केवल अभेद को ग्रहण करने वाला। (३) **व्यवहारनय**–केवल भेद को ग्रहण करने वाला नय। (४) **ऋजुसूत्रनय**–वर्तमान क्षणवर्ती पर्याय को वस्तु रूप मे स्वीकार करने वाला। (५) **शब्दनय**–भिन्न-भिन्न लिग, वचन, कारक आदि के भेद से वस्तु मे भेद मानने वाला। (६) **समभिरूढ़नय**–लिगादि का भेद न होने पर भी पर्यायवाची शब्दो के भेद से वस्तु को भिन्न मानने वाला नय। (७) **एवम्भूतनय**–वर्तमान क्रिया-परिणत वस्तु को ही वस्तु मानने वाला। *(सात नयो का विस्तृत विवेचन हिन्दी टीका भाग २ पृष्ठ ३८० से ३८२ पर देखे)*

38. Original *nayas* (stand-points) are seven—**(1) Naigama naya**—deals with *bhed* (particular) and *abhed* (general) both **(2) Samgraha naya**—deals with *abhed* (general) only **(3) Vyavahara naya**—deals with *bhed* (particular) only **(4) Rijusutra naya**—accepts the mode at the present moment as the thing **(5) Shabda naya**—accepts variations in things depending on the grammatical definitions, such as gender, tense, verb etc **(6) Samabhirudha naya**—accepts variations in things based on synonyms even in absence of grammatical differences **(7) Evambhuta naya**—accepts a thing only if it is in action at the present moment *(For detailed description of seven nayas refer to Hindi Tika, part-2, pp 380-382)*

स्वरमंडल–पद SVARAMANDAL-PAD (SEGMENT OF SPHERE OF MUSICAL SCALES)

३९. सत्त सरा पण्णत्ता, तं जहा–

सज्जे रिसभे गंधारे, मज्झिमे पंचमे सरे।
धेवते चेव णेसादे, सरा सत्त वियाहिता॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

३९. स्वर सात है–(१) षड्ज, (२) ऋषभ, (३) गान्धार, (४) मध्यम, (५) पचम, (६) धैवत, (७) निषाद।

39. There are seven *svar* (musical notes)—(1) *Shadj*, (2) *Rishabh*, (3) *Gaandhaar*, (4) *Madhyam*, (5) *Pancham*, (6) *Dhaivat*, and (7) *Nishad*

विवेचन–(१) **षड्ज**–नासिका, कण्ठ, उरस, तालू, जिह्वा और दन्त इन छह स्थानो से उत्पन्न होने वाला स्वर–'स'। (२) **ऋषभ**–नाभि से उठकर कण्ठ और शिर से टकराकर ऋषभ (बैल) के समान गर्जना करने वाला स्वर–'रे'। (३) **गान्धार**–नाभि से समुत्थित एव कण्ठ और शीर्ष से आहत तथा

विशेष प्रकार की गन्ध को धारण करने वाला स्वर-'ग'। (४) **मध्यम**-नाभि से उठकर वक्ष और हृदय से समाहत होकर पुन. नाभि मे जाने वाला महानाद 'म'। शरीर के मध्य भाग से उत्पन्न होने के कारण यह मध्यम स्वर कहा जाता है। (५) **पचम**-नाभि, वक्ष, हृदय, कण्ठ और शिर इन पाँच स्थानो से उत्पन्न होने वाला स्वर-'प'। (६) **धैवत**-पूर्वोक्त सभी स्वरो का अनुसन्धान करने वाला या उनके पीछे दौडने वाला-'ध'। (७) **निषाद**-सभी स्वरो को समाहित करने वाला स्वर-'नी'।

Elaboration—(1) *Shadj* (Sa)—this note is produced by the combined activity of six parts of the human body, *i e* nose, throat, chest, palate, tongue, and teeth (2) *Rishabh* (Re)—This note resembles the roaring of a bull (*rishabh*) and is produced by the wind rising from the navel and striking the upper part of the throat (3) *Gandhar* (Ga)—It is produced by wind which rises from the navel and strikes at the heart and the throat This note is so called because it is the carrier of fragrance (4) *Madhyam* (Ma)—A loud note rising from the navel striking at the chest and heart and reflecting back to the navel As it originates from the middle part of the body it is called *madhyam* (middle) (5) *Pancham* (Pa)—This note is produced with the involvement of five parts of the body, namely navel, chest, heart, throat and head (6) *Dhaivat* (Dha)—This note follows or chases all other notes (7) *Nishad* (Ni)—This note envelops all other notes

स्वरोत्पत्तिस्थान SVAROTPATTISTHAAN (POINTS OF ORIGIN OF MUSICAL NOTES)

४०. एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा-

सज्जं तु अग्गजिब्भाए, उरेण रिसभं सरं।
कंठुग्गतेण गंधारं मज्झजिब्भाए मज्झिमं॥१॥

णासाए पंचमं बूया, दंतोट्ठेण य धेवतं।
मुद्धाणेण च णेसादं, सरट्ठाणा वियाहिता॥२॥

४०. इन सात स्वरो के सात (उच्चारण स्थान) स्वर-स्थान है-(१) षड्ज का, जिह्वा का अग्रभाग। (२) ऋषभ का, उरस्थल। (३) गान्धार का, कण्ठ। (४) मध्यम का, जिह्वा का मध्य भाग। (५) पचम का, नाक। (६) धैवत का, दन्त-ओष्ठ का सयोग। (७) निषाद का, शिर।

40. These seven *svars* (musical notes) have seven *Svar-sthaan* (points of origin)—(1) *Shadj* is produced from the tip of the tongue (2) *Rishabh* is produced from the chest (3) *Gandhar* is produced from the throat. (4) *Madhyam* is produced from the middle of the tongue (5) *Pancham* is

produced from the nose (6) *Dhaivat* is produced from the teeth and lips (7) *Nishad* is produced from head

जीव निश्रित सप्त स्वर JIVA NISHRIT SAPT SVAR (SEVEN MUSICAL NOTES PRODUCED BY LIVING BEINGS)

४१. सत्त सरा जीवणिस्सिता पण्णत्ता, तं जहा–

सज्जं रवति मयूरो, कुक्कुडो रिसभं सरं।
हंसो णदति गंधारं, मज्झिमं तु गवेलगा॥१॥

अह कुसुमसंभवे काले, कोइला पंचमं सरं।
छट्ठं च सारसा कोचा, णेसायं सत्तमं गजो॥२॥

४१. जीव नि सृत सात स्वर है–(१) मयूर षड्ज स्वर मे, (२) कुक्कुट ऋषभ स्वर मे, (३) हस गान्धार स्वर मे, (४) गवेलक (भेड) मध्यम स्वर मे, (५) कोयल वसन्त ऋतु मे पचम स्वर मे, (६) क्रौञ्च और सारस धैवत स्वर मे, (७) हाथी निषाद स्वर मे बोलता है।

41. There are seven *jiva nishrit svar* (musical notes produced by living beings)—(1) Pea-cock produces *Shadj svar* (2) Cock produces *Rishabh svar* (3) Swan produces *Gandhar svar* (4) Sheep or ram (*gavelak*) produces *Madhyam svar* (5) Cuckoo produces *Pancham svar* (in the spring season) (6) Cranes and curlews (*kraunch*) produce *Dhaivat svar* (7) Elephant produces *Nishad svar*

अजीव नि·सृत सप्तस्वर AJIVA NISHRIT SAPT SVAR (SEVEN MUSICAL NOTES PRODUCED BY NON-LIVING THINGS)

४२. सत्त सरा अजीवणिस्सिता पण्णत्ता, तं जहा–

सज्जं रवति मुइंगो, गोमुही रिसभं सरं।
संखो णदति गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी॥१॥

चउचलणपतिट्ठाणा, गोहिया पंचमं सरं।
आडंबरो धेवतियं, महाभेरी य सत्तमं॥२॥

४२. अजीव-नि·सृत सात स्वर है–(१) मृदग से षड्ज स्वर, (२) गोमुखी से ऋषभ स्वर, (३) शख से गान्धार स्वर, (४) झल्लरी से मध्यम स्वर, (५) चार चरणो पर प्रतिष्ठित गोधिका से पचम स्वर, (६) ढोल से धैवत स्वर, (७) महाभेरी से निषाद स्वर निकलता है

42. There are seven *ajiva nishrit svar* (musical notes produced by non-living things)—(1) *Mridang* produces *Shadj svar* (2) *Gomukhi* (*Turuhi* or *Narasingha*, trumpet like musical instrument) produces *Rishabh svar*

(3) Conch-shell produces *Gandhar svar* (4) *Jhallari* (*Jhanjh*, Cymbal like musical instrument) produces *Madhyam svar* (v) *Godhika* fixed on four legs (a type of musical instrument) produces *Pancham svar* (6) *Dhol* (a percussion instrument like big kettledrum) produces *Dhaivat svar* (7) *Mahabheri* (a huge drum) produces *Nishad svar*

स्वरों के लक्षण तथा फल CHARACTERISTICS AND RESULTS OF SEVEN SVARS

४३. एतेसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता, तं जहा–

सज्जेण लभति वित्तिं, कतं च णं विणस्सति।
गावो मित्ता य पुत्ता य णारीणं चेव वल्लभो॥१॥

रिसभेण उ एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य।
वत्थगंधमलंकारं इत्थिओ सयणाणि य॥२॥

गंधारे गीतजुत्तिणा, वज्जवित्ती कलाहिया।
भवंति कइओ पण्णा, जे अण्णे सत्थपारगा॥३॥

मज्झिमसरसंपण्णा, भवंति सुहजीविणो।
खायती पियती देती, मज्झिमसरमस्सितो॥४॥

पंचमसरसंपण्णा, भवंति पुढवीपती।
सूरा संगहकत्तारो अणेगगणणायगा॥५॥

धेवतसरसंपण्णा, भवंति कलहप्पिया।
'साउणिया वग्गुरिया, सोयरिया मच्छबंधा य'॥६॥

'चंडाला मुट्ठीया मेया, जे अण्णे पावकम्मिणो।
गोघातगा य जे चोरा, णेसायं सरमस्सिता'॥७॥

४३. इन सात स्वरो के सात लक्षण (तथा उनका फल) इस प्रकार है -

(१) षड्ज स्वर वाला मनुष्य आजीविका प्राप्त करता है, उसका प्रयत्न व्यर्थ नही जाता। उसके गाएँ, मित्र और पुत्र होते है। वह स्त्रियो को प्रिय होता है। (२) ऋषभ स्वर वाला मनुष्य ऐश्वर्य, सेनापतित्व धन, वस्त्र, गन्ध, आभूषण, स्त्री, शयन और आसन को प्राप्त करता है। (३) गान्धार स्वर वाला मनुष्य गाने मे कुशल, वादित्र वृत्तिवाला, कलानिपुण, कवि, प्राज्ञ और अनेक शास्त्रो का पारगामी होता है। (४) मध्यम स्वर से सम्पन्न पुरुष सुख से खाता, पीता, जीता और दान देता है। (५) पचम स्वर वाला पुरुष भूमिपाल, शूर-वीर सग्राहक और अनेक गणो का नायक होता है। (६) धैवत स्वर वाला पुरुष कलहप्रिय, पक्षियो को मारने वाला (चिडीमार) हिरण, सूकर और मच्छी मारने वाला होता है। (७) निषाद स्वर वाला पुरुष चाण्डाल, वधिक, मुक्केबाज, गो-घातक, चोर और अनेक प्रकार के पाप करने वाला होता है।

43. There are seven characteristics (based on the results or fruits) of these seven svars—

(1) A person with *Shadj svar* easily gains his livelihood and his efforts are never wasted He is endowed with cattle, friends and sons He is popular among women (2) A person with *Rishabh svar* gains grandeur, status of a commander, wealth and grains, apparels, perfumes, ornaments, woman, and furniture (3) A person with *Gandhar svar* is a musician fond of giving performances He is an accomplished artist and poet besides being wise, clever, and scholarly (4) A person with *Madhyam svar* is a happy-go-lucky man who eats, drinks, gives charity and lives as he wishes (5) A person with *Pancham svar* is a landlord, employer of warriors, and a leader of men (6) A person with *Dhaivat svar* is quarrelsome, hunter of birds, animals including deer, pigs and fish (7) A person with *Nishad svar* (musical note) is *chandal* (keeper of cremation ground), butcher, boxer, cow-slaughterer, thief and indulges in a variety of sinful and despicable activities

सात स्वरो के ग्राम और मूर्च्छनाएँ GRAM AND MURCHCHHANA

४४. एतेसि णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता, तं जहा—सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे।

४४. इन सातो स्वरो के तीन ग्राम है—(१) षड्जग्राम, (२) मध्यमग्राम, (३) गान्धारग्राम।

44. There are three *grams* (scales) of these seven *svars*—(1) *Shadj gram*, (2) *Madhyam gram*, (3) *Gaandhaar gram*

४५. सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

मंगी कोरव्वीया, हरी य रयणी य सारकंता य।
छट्ठी य सारसी णाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा॥१॥

४६. मज्झिमगामस्सं णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरायता।
अस्सोकंता य सोवीरा, अभिरू हवति सत्तमा॥१॥

४७. गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

णंदी य खुड्डिमा पूरिमा, य चउत्थी य सुद्धगंधरा।
उत्तरगंधाराावि य, पंचमिया हवति मुच्छा उ॥१॥

सुट्ठुत्तरमायामा, सा छट्ठी णियमसो उ णायव्वा।
अह उत्तरायता, कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा॥२॥

४५. षड्जग्राम की आरोह-अवरोह, या उतार-चढाव रूप सात मूर्च्छनाएँ हैं-(१) मंगी, (२) कौरवीया, (३) हरित्, (४) रजनी, (५) सारकान्ता, (६) सारसी, (७) शुद्ध षड्जा।

४६. मध्यमग्राम की सात मूर्च्छनाएँ है-(१) उत्तरमन्दा, (२) रजनी, (३) उत्तरा, (४) उत्तरायता, (५) अश्वक्रान्ता, (६) सौवीरा, (७) अभिरूद्गता।

४७. गान्धार ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ है-(१) नन्दी, (२) क्षुद्रिका, (३) पूरका, (४) शुद्धगान्धारा, (५) उत्तरगान्धारा, (६) सुष्ठतर आयामा, (७) उत्तरायता कोटिमा।

45. The *Shadj gram* (scale) has seven *Murchchhanas* (modulations)—(1) *Mangi*, (2) *Kauraviya*, (3) *Harit*, (4) *Rajani*, (5) *Sarakanta*, (6) *Sarasi*, and (7) *Shuddha Shadja*

46. The *Madhyam gram* (scale) has seven *Murchchhanas* (modulations)—(1) *Uttaramanda*, (2) *Rajani*, (3) *Uttara*, (4) *Uttarayata*, (5) *Ashvakranta*, (6) *Sauvira*, and (7) *Abhirudgata*

47. The *Gandhar gram* (scale) has seven *Murchchhanas* (modulations)—(1) *Nandi*, (2) *Kshudrika*, (3) *Purima*, (4) *Shuddha Gandhara*, (5) *Uttara Gandhara*, (6) *Sushtutar-ayama*, and (7) *Uttarayata-korima*

४८. (प्रश्न) सत्त सरा कतो संभवंति ? गीतस्स का भवति जोणी ?
कतिसमया उस्साया ? कति वा गीतस्स आगारा ? ॥१॥

(उत्तर) सत्त सरा णाभीतो, भवंति गीतं च रुण्णजोणीयं।
पदमसया ऊसासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा॥२॥

आइमिउ आरंभता, समुव्वहंता य मज्झगारंमि।
अवसाणे य झवेता, तिण्णि य गेयस्स आगारा॥३॥

छद्दोसे अट्ठगुणे, तिण्णि य वित्ताइं दो य भणितीओ।
जो णाहिति सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झमि॥४॥

(छह दोष) भीतं दुतं रहस्सं, गायंतो मा य गाहि उत्तालं।
काकस्सरमणुणासं च होंति गेयस्स छद्दोसा॥५॥

(आठ गुण) पुण्णं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहा अविघुट्ठं।
मधुरं समं सुललियं, अट्ठ गुणा होंति गेयस्स॥६॥

उर-कंठ-सिर-विसुद्धं, च गिज्जते मयउ-रिभिअ-पदबद्धं।
समतालपदुक्खेवं, सत्तसरसीहरं गेयं॥७॥

(गेय के आठ गुण) णिद्दोसं सारवंतं च, हेउजुत्तमलंकियं।
उवणीतं सोवयारं च, मितं मधुरमेव य॥८॥

(छन्द के तीन प्रकार) सममद्धसमं चेव, सव्वत्थ विसमं च जं।
तिण्णि वित्तप्पयाराइं, चउत्थं णोपलब्भती॥९॥

(गीत की भाषा) सक्कता पागता चेव, दोण्णि य भणिति आहिया।
सरमंडलंमि गिज्जंते पसत्था इसिभासिता॥१०॥

केसी गायति मधुरं ? केसी गायति खरं च रुक्खं च ?
विस्सरं पुण केरिसी ?॥११॥

सामा गायाइ मधुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च।
विस्सरं पुण पिंगला॥१२॥

(सप्तस्वरसीभर) तंतिसमं तालसमं, पादसमं लयसमं गहसमं च।
णीससिऊससियसमं संचारसमा सरा सत्त॥१३॥

सत्त सरा तओ गामा, मुच्छणा एकविंसती।
ताणा एगूणपण्णासा, समत्तं सरमंडलं॥१४॥

४८. (१) प्रश्न– सातो स्वर कहाँ से, किससे उत्पन्न होते है ? गीत की योनि–जाति क्या है ? उसका उच्छ्वासकाल कितने समय का है ? और गीत के आकार कितने होते है ?

(२–३) उत्तर– सातो स्वर नाभि से उत्पन्न होते है। रुदन गेय की योनि–जाति है। जितने समय मे किसी छन्द का एक चरण गाया जाता है, उतना उसका उच्छ्वासकाल होता है। गीत के तीन आकार होते है–आदि मे मृदु, मध्य मे तीव्र और अन्त मे मन्द।

(४) सगीत के छह दोषो, आठ गुणो, तीन वृत्तो और गीत की दो भाषाओ को भली प्रकार जानने वाला कुशल कलाकार रग मच पर जाता है।

(५) गीत के छह दोष इस प्रकार है–१. **भीत दोष**–डरते हुए गाना। २. **द्रुत दोष**–शीघ्रता वश गाना। ३. **ह्रस्व दोष**–शब्दो को लघु बनाकर या हाँफते हुए गाना। ४. **उत्ताल दोष**–ताल के अनुसार न गाना। ५. **काकस्वर दोष**–काक के समान कर्ण–कटु स्वर से गाना। ६. **अनुनास दोष**–नाक के स्वरो से गाना।

(६) गीत के आठ गुण इस प्रकार है–१. **पूर्ण गुण**–स्वर के आरोह–अवरोह आदि से परिपूर्ण गाना। २. **रक्त गुण**–गाये जाने वाले राग से परिष्कृत गाना। ३. **अलंकृत गुण**–विभिन्न स्वरो से सुशोभित गाना। ४. **व्यक्त गुण**–स्पष्ट स्वर से गाना। ५. **अविघुष्ट गुण**–नियत या नियमित स्वर से गाना। ६. **मधुर गुण**–मधुर स्वर से गाना। ७. **सम गुण**–ताल, वीणा आदि का अनुसरण करते हुए गाना। ८. **सुकुमार गुण**–ललित, कोमल लय से गाना।

(७) गीत के ये आठ गुण और भी होते है-१ **उरोविशुद्ध**-जो स्वर उर स्थल मे विशाल होता है। २. **कण्ठविशुद्ध**-जो स्वर कण्ठ मे नही फटता है, या साफ कण्ठ से गाना। ३ **शिरोविशुद्ध**-जो स्वर शिर से उत्पन्न होकर भी नासिका से मिश्रित नही होता। ४. **मृदु**-जो राग कोमल स्वर से गाया जाता है। ५. **रिभित**- जिस गीत मे स्वर घोलन हो, आलाप के कारण खेल-सा करता हुआ स्वर। ६. **पद-बद्ध-गेय** पदो से निबद्ध रचना। ७ **समताल पादोत्क्षेप**-जिसमे ताल, झाझ आदि का शब्द और नर्तक का पादनिक्षेप, ये सब सम हो, अर्थात् एक दूसरे से मिलते हो। ८. **सप्तस्वरसीभर**-जिसमे सातो स्वर तत्री आदि के सम हो।

(८) गेय पदो के आठ गुण इस प्रकार है १ **निर्दोष**-बत्तीस प्रकार के दोषो से रहित। २ **सारवन्त**-सारभूत अर्थ से युक्त होना। ३ **हेतुयुक्त**-अर्थ-साधक हेतु से सयुक्त होना। ४ **अलंकृत**-काव्य- गत अलकारो से युक्त होना। ५ **उपनीत**-उपसहार से युक्त होना। ६ **सोपचार**-कोमल, अविरुद्ध और अलज्जनीय अर्थ का प्रतिपादन करना अथवा व्यग्य या हॅसी से सयुक्त होना। ७ **मित**-अल्प पद और अल्प अक्षर वाला होना। ८ **मधुर**-शब्द, अर्थ और प्रतिपादन की अपेक्षा प्रिय होना।

(९) वृत्त-छन्द तीन प्रकार के होते है-१ **सम**-जिसमे चरण और अक्षर सम हो, अर्थात् चार चरण हो और उनमे गुरु-लघु अक्षर भी समान हो अथवा जिसके चारो वरण सरीखे हो। २ **अर्धसम**-जिसमे चरण या अक्षरो मे से कोई एक सम हो, या विषम चरण होने पर भी उनमे गुरु-लघु अक्षर समान हो। अथवा जिसके प्रथम और तृतीय चरण तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण समान हो। ३ **सर्वविषम**-जिसमे चरण और अक्षर सब विषम हो। अथवा जिसके चारो चरण विषम हो। इनके अतिरिक्त चौथा प्रकार नही पाया जाता है।

(१०) भणिति-गीत की भाषा दो प्रकार की कही गई है -सस्कृत और प्राकृत। ये दोनो प्रशस्त और ऋषिभाषित है और स्वर-मण्डल मे गाई जाती है।

(११) प्रश्न- मधुर गीत कौन गाती है ? परुष और रूक्ष कौन गाती है ? चतुर गीत कौन गाती है ? विलम्ब गीत कौन गाती है ? द्रुत (शीघ्र) गीत कौन गाती है ? तथा विस्वर गीत कौन गाती है ?

(१२) उत्तर-श्यामा स्त्री मधुर गीत गाती है। काली स्त्री खर, परुष और रूक्ष गाती है। केशी स्त्री चतुर गीत गाती है। काणी स्त्री विलम्ब गीत गाती है। अन्धी स्त्री द्रुत गीत गाती है और पिगला स्त्री विस्वर गीत गाती है।

(१३) **सप्तस्वरसीभर की व्याख्या-१ तन्त्रीसम**-तत्री-स्वरो के साथ-साथ गाया जाने वाला गीत। २. **तालसम**-ताल-वादन के साथ-साथ गाया जाने वाला गीत। ३. **पादसम**-स्वर के अनुकूल निर्मित गेयपद के अनुसार गाया जाने वाला गीत। ४ **लयसम**-वीणा आदि को आहत करने पर जो लय उत्पन्न होती है, उसके अनुसार गाया जाने वाला गीत-साज-बाज की लय अनुसार गाना। ५. **ग्रहसम**-वीणा आदि के द्वारा जो स्वर पकडे जाते है, उसी के अनुसार गाया जाने वाला गीत। ६. **निःश्वसितोच्छ्वसित सम**-सास लेने और छोडने के क्रमानुसार गाया जाने वाला गीत। ७. **सचारसम**-सितार आदि के साथ गाया जाने वाला गीत।

इस प्रकार गीत स्वर तंत्री आदि के साथ सम्बन्धित होकर सात प्रकार का हो जाता है।

(१४) **उपसंहार**–इस प्रकार सात स्वर, तीन ग्राम और इक्कीस मूर्च्छनाएँ होती है। प्रत्येक स्वर सात तानो से गाया जाता है, इसलिए ७ × ७ = ४९ भेद हो जाते है। इस प्रकार स्वर-मण्डल का वर्णन समाप्त हुआ।

(सात स्वरो का यही वर्णन सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र भाग-१ स्वर मण्डल मे पृष्ठ ४००-४१७ तक है)

48. (Question) Where is the origin of seven *svars* ? What is the origin or genus of song ? What is the length of breath (utterance in one breath) (of a song) ? How many are the special tones of a song) ? (1)

(Answer) The place of origin of seven *svars* (musical notes) is navel Wailing is the origin or genus of song The length of breath (utterance in one breath) of a song is same as the metrical quarter of a stanza There are three special tones of a song—Soft at the beginning, raise to high at the middle, and end with low tone (2, 3)

There are six faults, eight merits, three meters, and two languages (in singing a song) A well trained performer who knows these can give a recital on a stage (4)

Six faults of singing are as follows—(1) *Bheet dosh*—to sing with fright (2) *Drut dosh*—to sing fast (3) *Hrasva dosh*—to sing with abbreviated words or unstable breathing (4) *Uttal dosh*—to sing out of beats or rhythm (5) *Kaak-svar dosh*—to sing in crow-like harsh or coarse voice (6) Anunasa dosh— to sing in nasal voice (5)

Eight merits of singing are as follows—(1) *Purna guna*—to sing with perfection rendering all notes and modulations (2) *Rakta Guna*—to sing following proper grammar of the *Raga* (3) *Alankrit Gun*— to sing with selection of melodious notes (4) *Vyakta guna*—to sing with clear rendering of words and notes (5) *Avighusta gun*—to sing without discordance and distortions (6) *Madhur guna*—to sing in sweet tone (7) *Sama guna*—to sing harmoniously with rhythm and beat (8) *Sukumar guna*— to sing with enchanting combination of softness and melody (6)

There are eight other merits of singing—(1) *Urovishuddha*—to sing with a note resounding from the chest (2) *Kanthavishuddha*—to sing with note that does not get distorted in the throat (3) *Shirovishuddha*—to sing with a note that originates in the head but does not become nasal (4) *Mridu*—to sing with soft and regulated note (5) *Ribhita*—to sing with fine variations and modulations in notes producing enchanting

effects on audience (6) *Padabaddha*—to sing a song with attractive poetic composition of words (7) *Samatalapadokshepa*—to sing in perfect harmony and rhythm with beats, instrumental music, and dancing steps (8) *Saptasvar Sibhara*—to sing with notes that are in perfect tuning with accompanying notes from musical instruments

The eight merits of a song are as followsn—(1) *Nirdosh*—It should be free of thirty two faults (2) *Saravanta*—It should be meaningful (3) *Hetuyukta*—It should be purposeful (4) *Alankrit*—It should be embellished with poetic qualities (5) *Upanit*—It should be well concluded (6) *Sopachar*—It should be expressive of kind, consistent, and blameless meaning or it should be satirical and mirthful (7) *Mit*—It should be well measured (not tediously long) (8) *Madhur*—It should be sweet in terms of word, meaning as well as rendering (8)

There are three kinds of *vritta* (*chhand* or meter) of a song—(1) *Sam*—wherein all the quarter-verses are identical in structure measured in equal number of syllables (long and short) (2) *Ardh-sam*—wherein first quarter-verse is identical in structure with third and second with fourth (3) *Sarva Visham*—wherein all the four quarter-verses are different in structure There is no fourth kind (9)

There are said to be two languages of songs—*Sanskrit* and *Prakrit* These two languages are exalted and spoken by sages They are sung in full range of *svars* (musical notes) (10)

(Question) What sort of woman sings in sweet tone ? What sort of woman sings in rough and harsh tone ? What sort of woman sings with skill ? What sort of woman sings in slow rhythm ? What sort of woman sings in quick rhythm ? What sort of woman sings out of tune ? (11)

(Answer) A young woman sings in sweet tone A woman with dark complexion sings in rough and harsh tone A woman with fair complexion sings with skill A one-eyed woman sings in slow rhythm A blind woman sings in quick rhythm A woman with pale or tawny complexion sings out of tune (12)

The details about *Saptasvar Sibhar* are as follows—(1) *Tantri-sam*—there is a harmony with *tantri* (instrumental music) (2) *Taal sam*—there is a harmony with beats (of percussion instruments) (3) *Pada sam*—there is a harmony with lyrics (4) *Laya sam*—there is a harmony with rhythm of musical instruments (string, wind, and other) (5) *Graha*

sam—there is a harmony with the set notes of musical instruments (6) *Nishvasitocchavasit sam*—there is a harmony with inhalation and exhalation (7) *Sanchar sam*—there is a harmony with the (speed of) movement of fingers on musical instruments

Thus the rendering of a song has seven qualities in consonance with musical instruments (13)

Conclusion—Thus there are seven *svars* (musical notes), three *grams* (scales), and twenty one *murchchhanas* (modulations) Each *svar* (musical note) is sung with seven tones making a total of 49 tones This concludes the description of the sphere of *svars* (musical notes)

(These details about seven musical notes are also available in Illustrated Anuyogadvar Sutra, part-1, pp 400-417)

कायक्लेश–पद KAYAKLESH-PAD (SEGMENT OF MORTIFICATION OF BODY)

४९. सत्तविधे कायकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा–ठाणातिए, उक्कुडुयासणिए, पडिमाठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए, दंडायतिए, लगंडसाई।

४९. कायक्लेश तप सात प्रकार का है-(१) **स्थानायतिक**–खडे होकर कायोत्सर्ग मुद्रा मे स्थिर होना। (२) **उत्कुटुकासन**–दोनो पैरो को भूमि पर टिकाकर उकडू बैठना। (३) **प्रतिमास्थायी**–भिक्षुप्रतिमा की विभिन्न मुद्राओ मे स्थित रहना। (४) **वीरासनिक**–सिहासन पर बैठने के समान दोनो घुटनो पर हाथ रखकर अवस्थित होना। (५) **नैषधिक**–पालथी मारकर स्थिर हो स्वाध्याय करने की मुद्रा मे बैठना। (६) **दण्डायतिक**–डण्डे के समान सीधे चित्त लेटकर दोनो हाथो और पैरो को सटाकर अवस्थित रहना। (७) **लगडशायी**–भूमि पर सीधे लेटकर लकुट के समान एडियॉ और शिर को भूमि से लगाकर पीठ आदि मध्यवर्ती भाग को ऊपर उठाये रखना।

49. *Kayaklesh tap* (austerities of mortification of body) is of seven kinds—**(1) Sthanayatik**—to stand straight and still, dissociating thoughts from the body **(2) Utkatukasan**—to sit squatting with feet straight on the ground **(3) Pratimasthaayi**—to sit in various postures related to *bhikshupratima* (special austerities) **(4) Virasanik**—to sit in *Virasan* (posture resembling sitting on a chair without a chair) **(5) Naishadyik**—to sit cross-legged **(6) Dandayatik**—to sleep flat on the back with legs straight like a rod **(7) Lagandashayik**—to adopt a posture where head and heal touch the floor and the back is raised

विवेचन–कायक्लेश बाह्यतप का पाँचवाँ भेद है। कायक्लेश का उद्देश्य, शरीर को क्लेश या कष्ट देना नही, किन्तु विविध आसनो द्वारा, उपसर्गों व कष्टो को सहन करते हुए शरीर की मूर्च्छा मिटाना और तितिक्षा भाव की वृद्धि करना है। प्रस्तुत सूत्र मे वर्णित सातो भेद आसन से सम्बन्धित है। औपपातिक

सूत्र मे आसनो के अतिरिक्त सूर्य की आतापना लेना, सर्दी मे वस्त्र विहीन रहना, शरीर को नही खुजलाना, विभूषा नही करना–यह सभी कायक्लेश के प्रकार बताएँ है।

प्रतिमास्थायी का अर्थ है–दशाश्रुतस्कन्ध मे वर्णित भिक्षु प्रतिमाओ की विविध मुद्राओ मे स्थित रहना। (७) **वीरासनिक**–वीरासन की व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार की है। बद्धपद्मासन की या पद्मासन की मुद्रा मे बैठना। अभयदेवसूरि के अनुसार सिहासन पर बैठकर उसे निकाल देने पर जो मुद्रा बनती है, वह वीरासन है। इससे धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता तथा शरीर का सन्तुलन बनाये रखने की क्षमता बढती है।

इसी सूत्र के पाँचवे स्थान सूत्र ५० पर निषद्या के पॉच आसन बताये है। अत तदनुसार निषद्या का अर्थ है बैठकर किये जाने वाले आसन।

Elaboration—*Kayaklesh* is the fifth category of external austerities In fact it is not aimed at tormenting the body but at eliminating the natural fondness for one's own body by ignoring discomforts of adopting various tough postures and also enduring afflictions This enhances the capacity of forbearance as well These seven kinds are related to body postures In *Aupapatik Sutra* other kinds of *kayaklesh* are mentioned—to endure heat of the sun, to remain unclad in winter, not to scratch body when itching, and avoid embellishing body

Pratimasthayi means to adopt different postures related to *Bhikshu pratimas* (special austerities) mentioned in *Dashashrutskandh* (7) *Virasanik*—there are numerous descriptions of this posture To sit in *baddha padmasan* or *padmasan* (variations of lotus pose) Abhayadev Suri has described it as 'posture resembling sitting on a chair without a chair' This posture enhances the capacity of patience, tolerance and physical balance

In aphorism 50 of the fifth Sthaan of this book five sitting postures have been included in *nishadya* Thus *nishadya* broadly means sitting postures

क्षेत्र, पर्वत, नदी–पद KSHETRA, PARVAT, NADI-PAD (SEGMENT OF AREAS, MOUNTAINS, RIVERS)

५०. जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा–भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे, रम्मगवासे, महाविदेहे। ५१. जंबूद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा–चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे, णीलवंते, रुप्पी, सिहरी, मंदरे।

५०. जम्बूद्वीप द्वीप मे सात वर्ष (क्षेत्र) है–(१) भरत, (२) ऐरवत, (३) हैमवत, (४) हैरण्यवत, (५) हरिवर्ष, (६) रम्यकवर्ष, (७) महाविदेह। ५१. जम्बूद्वीप द्वीप मे सात वर्षधर पर्वत है–

(१) क्षुद्रहिमवान्, (२) महाहिमवान्, (३) निषध, (४) नीलवान, (५) रुक्मी, (६) शिखरी, (७) मन्दर (सुमेरु पर्वत)।

50. In Jambu continent there are seven *varsh* (areas)—(1) Bharat, (2) Airavat, (3) Haimavat, (4) Hairanyavat, (5) Harivarsh, (6) Ramyak-varsh and (7) Mahavideh **51.** In Jambu continent there are seven *Varsh-dhar parvats* (mountains)—(1) Kshudra Himavan, (2) Mahahimavan, (3) Nishadh, (4) Nilavaan, (5) Rukmi, (6) Shikhari and (7) Mandar (Sumeru)

५२. जंबूद्दीवे दीवे सत्त महाणदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—गंगा, रोहिता, हरी, सीता, णरकंता, सुवण्णकूला, रत्ता। ५३. जंबुद्दीवे दीवे सत्त महाणदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—सिंधू, रोहितंसा, हरिकंता, सीतोदा, णारिकंता, रूप्पकूला, रत्तावती।

५२. जम्बूद्वीप द्वीप मे सात महानदियाँ पूर्वाभिमुख होती हुई लवणसमुद्र मे मिलती है–(१) गगा, (२) रोहिता, (३) हरित, (४) सीता, (५) नरकान्ता, (६) सुवर्णकूला, (७) रक्ता। ५३. जम्बूद्वीप द्वीप मे सात महानदियाँ पश्चिमाभिमुख होती हुई लवणसमुद्र मे मिलती है–(१) सिन्धु, (२) रोहिताशा, (३) हरिकान्ता, (४) सीतोदा, (५) नारीकान्ता, (६) रूप्यकूला, (७) रक्तवती।

52. In Jambu continent east-flowing seven *mahanadis* (great rivers) fall into Lavan Samudra—(1) Ganga, (2) Rohita, (3) Harit, (4) Sita, (5) Narakanta, (6) Suvarnakoola and (7) Rakta **53.** In Jambu continent west-flowing seven *mahanadis* (great rivers) fall into Lavan Samudra—(1) Sindhu, (2) Rohitamsha, (3) Harikanta, (4) Sitoda, (5) Narikanta, (6) Rupyakoola and (7) Raktavati

५४. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, [एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवासे, रम्मगवासे] महाविदेहे। ५५. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, (महाहिमवंते, णिसढे, णीलवंते, रुप्पी, सिहरी), मंदरे।

५४. धातकीषण्डद्वीप के पूर्वार्ध मे सात वर्ष (क्षेत्र) है–(१) भरत, (२) ऐरवत, (३) हैमवत, (४) हैरण्यवत, (५) हरिवर्ष, (६) रम्यक्वर्ष, (७) महाविदेह। ५५. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात वर्षधर पर्वत है–(१) क्षुद्रहिमवान् (२) महाहिमवान् (३) निषध, (४) नीलवान् (५) रुक्मी, (६) शिखरी, (७) मन्दर।

54. In the eastern half of Dhatakikhand continent there are seven *varsh* (areas)—(1) Bharat, (2) Airavat, (3) Haimavat, (4) Hairanyavat, (5) Harivarsh, (6) Ramyak-varsh and (7) Mahavideh **55.** In the eastern half of Dhatakikhand continent there are seven *Varsh-dhar parvats*

(mountains)—(1) Kshudra Himavan, (2) Mahahimavan, (3) Nishadh, (4) Nilavaan, (5) Rukmi, (6) Shikhari and (7) Mandar

५६. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त महाणदीओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोयसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—गंगा, (रोहिता, हरी, सीता, णरकंता, सुवण्णकूला), रत्ता।

५६. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात महानदियाँ पूर्वाभिमुख होती हुई कालोदसमुद्र मे मिलती है—(१) गगा, (२) रोहिता, (३) हरित्, (४) सीता, (५) नरकान्ता, (६) सुवर्णकूला, (७) रक्ता।

56. In the eastern half of Dhatakikhand continent east-flowing seven *mahanadis* (great rivers) fall into Kalod Samudra—(1) Ganga, (2) Rohita, (3) Harit, (4) Sita, (5) Narakanta, (6) Suvarnakoola and (7) Rakta

५७. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त महाणदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं जहा—सिंधू, [रोहितंसा, हरिकंता, सीतोदा, णारिकंता, रुप्पकूला], रत्तावती। ५८. धायइसंडदीवे पच्चत्थिमद्धे णं सत्तवासा एवं चेव, णवरं—पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं। सेसं तं चेव।

५७. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे सात महानदियाँ पश्चिमाभिमुख होती हुई लवणसमुद्र मे मिलती है-(१) सिन्धु, (२) रोहिताशा, (३) हरिकान्ता, (४) सीतोदा, (५) नारीकान्ता, (६) रूप्यकूला, (७) रक्तवती। ५८. ध्धातकीषण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध मे सात वर्ष वर्षधर पर्वत और सात महानदियाँ इसी प्रकार–धातकीषण्ड के पूर्वार्ध के समान ही है। अन्तर केवल इतना है कि पूर्वाभिमुखी नदियाँ लवणसमुद्र मे और पश्चिमाभिमुखी नदियाँ कालोदसमुद्र मे मिलती है। शेष सब वर्णन वही है।

57. In the eastern half of Dhatakikhand continent west-flowing seven *mahanadis* (great rivers) fall into Lavan Samudra—(1) Sindhu, (2) Rohitamsha, (3) Harikanta, (4) Sitoda, (5) Narikanta, (6) Rupyakoola and (7) Raktavati **58.** In the western half of Dhatakikhand continent there are seven *varsh* (areas), seven *Varsh-dhar parvats* (mountains) and seven *mahanadis* (great rivers) like those in the eastern half of Dhatakikhand continent The only difference is that the east-flowing rivers fall in Lavan Samudra and the west flowing rivers fall in Kalod Samudra All other details are same

५९. पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासा तहेव, नवरं—पुरत्थाभिमुहाओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेनि। सेसं तं चेव। ६०. एवं पच्चत्थिमद्धेवि नवरं—पुरत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समप्पेति। सव्वत्थ वासा वासहरपव्वता णदीओ य भाणितव्वाणि।

५९. इसी प्रकार पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध मे सात वर्ष, सात वर्षधर पर्वत और सात महानदियाँ है। अर्थात् धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध के समान ही है। अन्तर केवल इतना ही है कि पूर्वाभिमुखी नदियाँ पुष्करोदसमुद्र मे और पश्चिमाभिमुखी नदियाँ कालोदसमुद्र मे मिलती है। ६०. इसी प्रकार अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध मे सात वर्ष, सात वर्षधर पर्वत और सात महानदियाँ धातकीषण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध के समान ही है। अन्तर केवल इतना है कि पूर्वाभिमुखी नदियाँ कालोदसमुद्र मे और पश्चिमाभिमुखी नदियाँ पुष्करोदसमुद्र मे जाकर मिलती है।

59. In the same way in the eastern half of Pushkaravar continent there are seven *varsh* (areas), seven *Varsh-dhar parvats* (mountains) and seven *mahanadis* (great rivers) This means that they are same as those in the eastern half of Dhatakikhand continent The only difference is that the east-flowing rivers fall in Pushkarod Samudra and the west flowing rivers fall in Kalod Samudra **60.** In the same way in the western half of Pushkaravar continent there are seven *varsh* (areas), seven *Varsh-dhar parvats* (mountains) and seven *mahanadis* (great rivers) like those in the western half of Dhatakikhand continent The only difference is that the east-flowing rivers fall in Kalod Samudra and the west flowing rivers fall in Pushkarod Samudra

कुलकर–पद KULAKAR-PAD (SEGMENT OF CLAN FOUNDERS)

६१. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था, तं जहा–

मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

६१ जम्बूद्वीप द्वीप मे भारतवर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी काल मे सात कुलकर हुए- (१) मित्रदामा, (२) सुदामा, (३) सुपार्श्व, (४) स्वयप्रभ, (५) विमलघोष, (६) सुघोष, (७) महाघोष।

61. In Jambu Dveep in Bharat-varsh there have been seven *kulakars* (clan founders or society makers) during the past *Utsarpini* (progressive cycle of time)—(1) Mitradama, (2) Sudama, (3) Suparshva, (4) Svayamprabh, (5) Vimalaghosh, (6) Sughosh and (7) Mahaghosh

६२. जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था–

पढमित्थ विमलवाहण, चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे।
ततो य पसेणइए, मरुदेवे चेव णाभी य॥१॥

६३. एएसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ हुत्था तं जहा–

चंदजस चंदकंता, सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य।
सिरिकंता मरुदेवी, कुलकरइत्थीण णामाइं॥१॥

६२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे भारतवर्ष मे इसी, वर्तमान अवसर्पिणी मे सात कुलकर हुए है–(१) विमलवाहन, (२) चक्षुष्मान्, (३) यशस्वी, (४) अभिचन्द्र, (५) प्रसेनजित्, (६) मरुदेव, (७) नाभि। ६३. इन सात कुलकरो की साथ भार्याएँ थी–(१) चन्द्रयशा, (२) चन्द्रकान्ता, (३) सुरूपा, (४) प्रतिरूपा, (५) चक्षुष्कान्ता, (६) श्रीकान्ता, (७) मरुदेवी।

62. In Jambu Dveep ın Bharat-varsh there have been seven *kulakars* (clan founders or socıety makers) durıng the current *Avasarpını* (regressıve cycle of tıme)—(1) Vımalavahan, (2) Chakshushman, (3) Yashasvı, (4) Abhıchandra, (5) Prasenajıt, (6) Marudev and (7) Nabhı **63.** These seven *kulakars* had seven wıves—(1) Chandrayasha, (2) Chandrakanta, (3) Surupa, (4) Pratırupa, (5) Chakshushkanta, (6) Shrıkanta and (7) Marudevı

६४. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति–

मित्तवाहण सुभोमे य, सुप्पभे य सयंपभे।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य, आगमिस्सेण होक्खती॥१॥

६४. जम्बूद्वीप द्वीप के भारतवर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी काल मे सात कुलकर होगे (१) मित्रवाहन, (२) सुभौम, (३) सुप्रभ, (४) स्वयम्प्रभ, (५) दत्त, (६) सूक्ष्म, (७) सुबन्धु।

64. In Jambu Dveep ın Bharat-varsh there wıll be seven *kulakars* (clan founders or socıety makers) durıng the comıng *Utsarpını* (progressıve cycle of tıme)—(1) Mıtravahan, (2) Subhaum, (3) Suprabh, (4) Svayamprabh, (5) Datt, (6) Sukshma and (7) Subandhu

कल्पवृक्ष–पद KALPAVRIKSHA-PAD (SEGMENT OF WISH FULFILLING TREE)

६५. विमलवाहणे ण कुलकरे सत्तविधा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिसु, तं जहा–

मतंगया य भिंगा, चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा।
मणियंगा य अणियणा, सत्तमगा कप्परुक्खा य॥१॥

६५. विमलवाहन कुलकर के समय मे सात प्रकार के कल्पवृक्ष उपभोग मे आते थे–(१) मदागक, (२) भृग, (३) चित्राग, (४) चित्ररस, (५) मण्यग, (६) अनग्नक, (७) कल्पवृक्ष।

65. Durıng the reıgn of Kulakar Vımalavahan seven kınds of *kalp-vrıksha* (wısh fulfıllıng trees) were used for subsıstence—(1) Madaangak, (2) Bhrıng, (3) Chıtrang, (4) Chıtrarasa, (5) Manyang, (6) Anagnak and (7) Kalp-vrıksha

विवेचन-प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से बहुत पहले यौगलिक व्यवस्था थी। दस प्रकार के कल्पवृक्षो के सहारे उनकी जीवन चर्या चलती थी। काल-परिवर्तन हुआ। युगलिक युग के स्थान पर कुल व्यवस्था का आरम्भ हुआ। लोग सगठित होकर कुल के रूप मे रहने लगे। उनका एक मुखिया जो सर्वेसर्वा होता था, उसे 'कुलकर' कहा जाता था। व्यवस्था बनाये रखने के लिए अपराधी को दण्ड देने का अधिकार भी कुलकर को होता था। उस प्रथा मे मुख्य कुलकर सात हुए।

उत्सर्पिणी काल मे २४वे तीर्थंकर के शासन काल के अवसान मे सात कुलकर होते है, तथा अवसर्पिणी काल मे प्रथम तीर्थंकर के पहले सात कुलकर होते है। वर्तमान अवसर्पिणी काल के सातवे कुलकर नाभि राजा हुए। जो भगवान ऋषभदेव के पिता थे।

प्रथम कुलकर विमलवाहन के समय दस कल्पवृक्षो मे से तीन कल्पवृक्ष लुप्त हो चुके थे-(१) त्रुटिताग, (२) दीपाग, (३) ज्योतिरग। कुलकरो का विस्तृत वर्णन आवश्यक निर्युक्ति गाथा १५२-१६५ मे है।

Elaboration—*Yaugalık* system (system of twıns) was prevalent long before Bhagavan Rısabhadeva's tıme These people subsısted on ten kınds of *kalpavrıkshas* Tımes changed *Kula* (famıly or clan) system replaced the *yugalık* system People organızed and started lıvıng as famılıes and clans The chıef, who commanded the clan, was called *kulakar* For the smooth runnıng of the socıal system the *kulakar* also had the rıght to punısh a mıscreant In that tradıtıon there were seven maın kulakars

In a progressıve cycle of tıme at the end of the perıod of ınfluence of the twenty fourth *Tırthankar* there are seven *kulakars* In a regressıve cycle of tıme there are seven *kulakars* before the tıme of the first *Tırthankar* In the current regressıve cycle of tıme the seventh *kulakar* was kıng Nabhı who was the father of Bhagavan Rısabhadeva

Durıng the tıme of the first *kulakar* Vımalavahan three out of the ten *kalpavrıkshas* had become extınct—(1) Trutıtang, (2) Dıpang and (3) Jyotırang Detaıled descrıptıon of *kulakars* ıs avaılable ın *Avashyak Nıryuktı*, verses 152-165

दण्डनीति-पद DANDANITI-PAD (SEGMENT OF PENAL CODE)

६६. सत्तविधा दंडनीती पण्णत्ता, तं जहा-हक्कारे, मक्कारे, धिक्कारे, परिभासे, मंडलबंधे, चारए, छविच्छेदे।

६६. दण्डनीति सात प्रकार की है-(१) **हाकार**-हा ! तूने यह क्या किया ? (२) **माकार**-आगे ऐसा मत करना। (३) **धिक्कार**-धिक्कार है तुझे ! तूने ऐसा किया। (४) **परिभाष**-अल्पकाल के लिए

नजर-कैद रखने का आदेश देना। (५) **मण्डलबन्ध**–नियत क्षेत्र के बाहर न जाने का आदेश देना। (६) **चारक**–जेलखाने मे बन्द रखने का आदेश देना। (७) **छविच्छेद**–हाथ-पैर आदि शरीर के अग काटने का आदेश देना।

66. *Dandanıtı* (penal code) ıs of seven kınds—(1) *Hakar*—'Ha ! What have you done ?' (2) *Makar*—'Do not do that agaın' (3) *Dhıkkar*—'Cursed you are ! For doıng thıs' (4) *Parıbhash*—to order for confinement for a lımıted perıod (5) *Mandal bandh*—to prohıbıt movement outsıde a prescrıbed area (6) *Charak*—order for ımprısonment (7) *Chhavıchchhed*—to order dısmemberıng

विवेचन–कुलकरो के पूर्व सभी मनुष्य अकर्मभूमि या भोगभूमि मे जीवन-यापन करते थे। कल्पवृक्षो के सहारे जीवन चलता था। उस समय युगल-धर्म चल रहा था। किन्तु काल के प्रभाव से जब वृक्षो मे भी फल-प्रदान की शक्ति घटने लगी और एक युगल दूसरे युगल की भूमि-सीमा मे प्रवेश कर फलादि तोडने और खाने लगे, तब अपराधी व्यक्तियो को कुलकरो के सम्मुख लाया जाने लगा। उस समय लोग इतने सरल और सीधे थे कि कुलकर द्वारा 'हा' (हाय, तुमने क्या किया ?) इतना मात्र कह देने पर आगे अपराध नही करते थे। इस प्रकार प्रथम 'हाकार' दण्डनीति दूसरे कुलकर के समय तक चलती रही। जब अपराध पर अपराध करने की प्रवृत्ति बढी तो तीसरे-चौथे कुलकर ने 'हा' के साथ 'मा' दण्डनीति प्रचलित की। जब और भी अपराधप्रवृत्ति बढी तब पाँचवे कुलकर ने 'हा', मा' के साथ 'धिक्' दण्डनीति प्रचलित की। इस प्रकार स्वल्प अपराध के लिए **'हा'**, उससे बडे अपराध के लिए **'मा'** और उससे बडे अपराध के लिए **'धिक्'** दण्डनीति का प्रचार अन्तिम कुलकर के समय तक रहा।

जब कुलकर-युग समाप्त हो गया और कर्म भूमि का प्रारम्भ हुआ। ऋषभदेव इस काल के प्रथम राजा हुए। भगवान ऋषभदेव के समय मे जब अपराधप्रवृत्ति दिनो-दिन बढने लगी, तब उन्होने चौथी **परिभाष** और पाचवी **मण्डलबन्ध** दण्डनीति का उपयोग किया। अपराध-प्रवृत्तियो की उग्रता बढने पर भरत चक्रवर्ती ने अन्तिम चारक और छविच्छेद इन दो दण्डनीतियो का प्रयोग करने का विधान किया। *(आवश्यक चूर्णि)*

आचार्य हरिभद्र आदि टीकाकारो का मत है कि भगवान ऋषभदेव ने तो कर्मभूमि की ही व्यवस्था की। अन्तिम चारो दण्डनीतियो का विधान भरत चक्रवर्ती ने किया है। इस विषय मे विभिन्न आचार्यों के विभिन्न अभिमत है। कुछ आचार्यो का मत है, चक्रवर्ती भरत के समय मे मृत्युदण्ड का चलन भी हो गया था। *(आवश्यकभाष्य गाथा १८)*

Elaboration—Before the perıod of *kulakars* everyone lıved ın the *akarmabhumı* (perıod of no endeavour) or *bhogabhumı* (perıod of enjoyments) People subsısted on wısh-fulfillıng trees But wıth passage of tıme the yıeld of these trees declıned and the twıns started trespassıng areas of other twıns to pluck fruıts and other thıngs These crımınals were

then caught and produced before *kulakars* During that period people were so simple that mere utterance of Ha ! (exclamation conveying—what have you done ?) was enough to avoid any further criminal activity This penal code of *Hakar* continued up to the second *kulakar*

With increase in criminal activity the third and forth *kulakar* introduced the *Makar* code With further increase the fifth *kulakar* introduced *Dhikkar* code Thus the penal codes of *Hakar* for simple offense, *Makar* for slightly serious offense and *Dhikkar* for serious offense continued till the time of the last *kulakar*

When the *kulakar* age ended, the period of *karma bhumi* (period of endeavour) commenced Risabhadeva was the first king of this age When the criminal activities continued to increase, he introduced the *Paribhash* and *Mandal* codes With a further increase in criminal tendencies Bharat Chakravarti introduced *Charak* and *Chhavichchhed* codes *(Avashyak Churni)*

Acharya Haribhadra and other commentators are of the view that Bhagavan Risabhadeva retained the policy of the *kulakar* period The last four codes were introduced by Bharat Chakravarti *Acharyas* have different opinions regarding this Some *acharyas* also believe that capital punishment was also introduced by Chakravarti Bharat *(Avashyak Bhashya, verse 18)*

चक्रवर्तीरत्न-पद CHAKRAVARTI RATNA-PAD (SEGMENT OF GEMS OF CHAKRAVARTI)

६७. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त एगिंदिय रयणा पण्णत्ता, तं जहा—चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे, दंडरयणे, असिरयणे, मणिरयणे, काकणिरयणे।

६८. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदिय रयणा पण्णत्ता, तं जहा—सेणावतिरयणे, गाहावतिरयणे, वड्ढइरयणे, पुरोहितरयणे, इत्थिरयणे, आसरयणे, हत्थिरयणे।

६७. प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के सात एकेन्द्रिय रत्न होते है-(१) चक्ररत्न, (२) छत्ररत्न, (३) चर्मरत्न, (४) दण्डरत्न, (५) असिरत्न, (६) मणिरत्न, (७) काकणीरत्न। ६८. प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के सात पचेन्द्रिय रत्न होते है-(१) सेनापतिरत्न, (२) गृहपतिरत्न, (३) वर्धकीरत्न, (४) पुरोहितरत्न, (५) स्त्रीरत्न, (६) अश्वरत्न, (७) हस्तिरत्न।

67. Every *Chaturant Chakravarti* (emperor of the land reaching the end of all four directions) has seven *ekendriya ratna* (one-sensed gem or best thing of its class)—(1) *Chakra ratna* (best disc weapon), (2) *Chhatra*

ratna (best umbrella), (3) *Charmaratna* (best leather), (4) *Dand ratna* (best staff), (5) *Asi ratna* (best sword), (6) *Mani ratna* (best bead) and (7) *Kakani ratna* (a unique stone) **68.** Every *Chaturant Chakravarti* (emperor of the land reaching the end of all four directions) has seven *panchendriya ratna* (five-sensed gem or best thing of its class)—(1) *Senapati ratna* (best commander), (2) *Grihapati ratna* (best household manager), (3) *Vardhaki ratna* (best engineer), (4) *Purohit ratna* (best priest), (5) *Stree ratna* (best woman), (6) *Ashva ratna* (best horse) and (7) *Hasti ratna* (best elephant)

विवेचन—किसी उत्कृष्ट या सर्वश्रेष्ठ वस्तु को 'रत्न' कहा जाता है। चक्रवर्ती के ये सभी वस्तुएँ अपनी-अपनी जाति मे सर्वश्रेष्ठ होती है। चक्र, छत्र आदि एकेन्द्रिय पृथ्वीकायिक जीवो के शरीर से निर्मित है, अत उन्हे एकेन्द्रिय रत्न कहा गया है।

एकेन्द्रिय रत्नो का प्रमाण इस प्रकार है-चक्र, छत्र और दण्ड -व्याम-प्रमाण है। अर्थात् तिरछे फैलाये हुए दोनो हाथो की अँगुलियो के अन्तराल जितने बडे होते है। चर्मरत्न दो हाथ लम्बा होता है। असि (खड्ग) बत्तीस अगुल का, मणि चार अगुल लम्बा और दो अगुल चौडा होता है। काकणीरत्न की लम्बाई चार अगुल होती है। रत्नो का यह माप प्रत्येक चक्रवर्ती के अपने-अपने अगुल (आत्मागुल) प्रमाण से है।

चक्र, छत्र, दण्ड और असि, इन चार रत्नो की उत्पत्ति चक्रवर्ती की आयुधशाला मे तथा चर्म, मणि और काकणीरत्न की उत्पत्ति चक्रवर्ती के श्रीगृह मे होती है। सेनापति, गृहपति, वर्धकी, और पुरोहित इन पुरुषरत्नो की उत्पत्ति चक्रवर्ती की राजधानी मे होती है। अश्व और हस्ती इन दो पचेन्द्रिय तिर्यच रत्नो की उत्पत्ति वैताढ्य (विजयार्ध) गिरि की उपत्यकाभूमि (तलहटी) मे होती है। स्त्रीरत्न की उत्पत्ति वैताढ्य पर्वत की उत्तर दिशा मे अवस्थित विद्याधर श्रेणी मे होती है। इन रत्नो की उपयोगिता इस प्रकार है-

(१) **सेनापतिरत्न**—यह चक्रवर्ती का प्रधान सेनापति है जो सभी मनुष्यो को जीतने वाला और अपराजेय होता है। (२) **गृहपतिरत्न**—यह चक्रवर्ती के गृह की सदा सर्वप्रकार से समुचित व्यवस्था करता है और उनके घर के भण्डार को सदा धन-धान्य से भरा-पूरा रखता है। (३) **पुरोहितरत्न**—यह राजपुरोहित चक्रवर्ती के शान्ति-कर्म आदि कार्य करता है तथा युद्ध के लिए प्रयाण-काल आदि बतलाता है। (४) **हस्तिरत्न**—यह चक्रवर्ती की गजशाला का सर्वश्रेष्ठ हाथी होता है और सभी मागलिक अवसरो पर चक्रवर्ती इसी पर सवार होकर निकलता है। (५) **अश्वरत्न**—यह चक्रवर्ती की अश्वशाला का सर्वश्रेष्ठ अश्व होता है और युद्ध या अन्यत्र दूर जाने मे चक्रवर्ती इसका उपयोग करता है। (६) **वर्धकीरत्न**—यह सभी बढई, मिस्त्री या कारीगरो का प्रधान, गृहनिर्माण मे कुशल, नदियो को पार करने के लिए पुल निर्माणादि कराने वाला श्रेष्ठ अभियन्ता (इजीनियर) होता है। (७) **स्त्रीरत्न**—यह चक्रवर्ती के विशाल अन्त पुर मे सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य वाली पट्टरानी होती है। (८) **चक्ररत्न**—यह सभी आयुधो


चक्रवर्ती के 14 रत्न
पंचेन्द्रिय रत्न
पुरोहित

चित्र परिचय १२

Illustration No. 12

चक्रवर्ती के चौदह रत्न

प्रत्येक चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय रत्न एवं सात पंचेन्द्रिय रत्न इस प्रकार १४ रत्न होते है।

सात एकेन्द्रिय रत्न–(१) चक्र रत्न, (२) छत्र रत्न, (३) चर्म रत्न, (४) दण्ड रत्न (५) असि रत्न, (६) मणि रत्न (७) काकिणी रत्न।

सात पंचेन्द्रिय रत्न (१) सेनापति रत्न, (२) गृहपति रत्न (३) वर्धकी (बढ़ई) रत्न (४) पुरोहित रत्न, (५) स्त्री रत्न (६) अश्व रत्न (७) गज रत्न।

ये रत्न अपने समय के श्रेष्ठतम होते है। *(इनका विस्तृत अर्थ विवेचन में देखें।)*

स्थान ७, सूत्र ६७-६८

FOURTEEN GEMS OF CHAKRAVARTI

Every *Chakravarti* has seven *ekendriya ratna* (one-sensed gems) and seven *panchendriya ratna* (five-sensed gems)

Seven *ekendriya ratna*--(1) *Chakra ratna* (best disc weapon) (2) *Chhatra ratna* (best umbrella), (3) *Charma ratna* (best leather), (4) *Dand ratna* (best staff), (5) *Asi ratna* (best sword), (6) *Mani ratna* (best bead), and (7) *Kakani ratna* (a unique stone)

Seven *panchendriya ratna*--(1) *Senapati ratna* (best commander), (2) *Grihapati ratna* (best household manager), (3) *Vardhaki ratna* (best engineer), (4) *Purohit ratna* (best priest), (5) *Stree ratna* (best woman), (6) *Ashva ratna* (best horse), and (7) *Hasti ratna* (best elephant)

The best thing in its particular class in a particular period is called *ratna* (gem) (for details see elaborations)

--Sthaan 7 Sutra 67 68

मे श्रेष्ठ और अदम्य शत्रुओ का भी दमन करने वाला आयुधरत्न है। (९) छत्ररत्न–यह सामान्य या साधारण काल मे धूप, वर्षा, हवा से बचाता है, किन्तु अकस्मात् वर्षाकाल होने पर चक्रवर्ती के हाथ का स्पर्श पाकर बारह योजन लम्बे-चौडे सारे स्कन्धावार के ऊपर फैलकर धूप और हवा-पानी से सबकी रक्षा करता है। (१०) चर्मरत्न–प्रवास काल मे बारह योजन लम्बे-चौडे छत्र के नीचे प्रात काल बोये गये शालि-धान्य के बीजो को मध्याह्न मे उपभोग योग्य बना देने मे यह समर्थ होता है। (११) मणिरत्न–यह तीन कोण और छह अश वाला मणि प्रवास या युद्धकाल मे रात्रि के समय चक्रवर्ती के सारे कटक मे प्रकाश करता है तथा वैताढ्यगिरि की तमिस्रा और खण्डप्रपात गुफाओ से निकलते समय हाथी के सिर के दाहिनी ओर बाँध देने पर सारी गुफाओ मे प्रकाश फैल जाता है। (१२) काकिणीरत्न–यह आठ सौवर्णिक प्रमाण, चारो ओर से सम होता है। सर्व प्रकार के विषो का प्रभाव दूर करता है। (१३) खड्गरत्न–यह अप्रतिहत शक्ति और अमोघ प्रहार वाला होता है। (१४) दण्डरत्न–यह वज्रमय दण्ड शत्रु-सैन्य का मर्दन करने वाला, विषम भूमि को सम करने वाला और सर्वत्र शान्ति स्थापित करने वाला रत्न है। *(–प्रवचन सारोद्धार भाग-२, द्वार २१२ गाथा १२१४ से १७)*

Elaboration—The best thing in its particular class is called *ratna* (gem) The aforesaid things belonging to a *Chakravarti* are best in their respective class As *Chakra, Chhatra* and other things of the first list are made from the bodies of one-sensed earth-bodied beings, they are called *ekendriya ratna*

The size of the *ekendriya ratnas*—Chakra, Chhatra and Dand are *vyaam* sized (distance between tips of outstretched hands) *Charma ratna* is two cubits long *Asi* is 32 *Anguls* (width of a finger) long, *Mani* is four *Anguls* long and two *Anguls* wide The *Kakini ratna* is four *Anguls* long These dimensions of the *ratnas* are in Atmanguls (width of fingers of the owner or the specific *Chakravarti*)

The origin of *Chakra, Chhatra, Dand* and *Asi* is in the armoury of the *Chakravarti* *Charma, Mani* and *Kakini ratna* appear in his treasury (*Shrigriha*) The human gems—*Senapati, Grihapati, Vardhaki* and *Purohit*—are born in the capital of the *Chakravarti* The animal gems, horse and elephant, are born in the valley of *Vaitadhya* mountain *Stree ratna* is born in *Vidyadhar* range north of *Vaitadhya* mountain The qualities of these gems are as follows—

(1) Senapati ratna—He is the commander-in-chief of the *Chakravarti* He conquers every foe and is unconquerable **(2) Grihapati ratna**—He is the manager of the household of *Chakravarti* and ensures that palace stores have abundant supplies of grains and other thing **(3) Vardhaki ratna**—He is the head of the workshop and an expert engineer skilled in

building and bridge construction besides other things (4) **Purohit ratna**—his duties include supervising auspicious rituals as well as calculating auspicious moments for various activities including going to war (5) **Stree ratna**—She is the most beautiful lady in the large harem of the *Chakravarti* and chief among queens (6) **Ashva ratna**—The best among horses in the *Chakravarti's* stable and personally used by him for traveling as well as war (7) **Hasti ratna**—The best among elephants and used by the *Chakravarti* for a ride on every auspicious occasion (8) **Chakra ratna**—The best among weapons and capable of subduing even unconquerable foes (9) **Chhatra ratna**—Commonly used for protection from sun, wind and rain but on sudden raining it can expand, by mere touch of the Chakravarti, to cover 12 square *Yojan* area and protect a large cantonment (10) **Charmaratna**—It has the capacity to produce ripe grains by noon from seeds sown in the morning under the aforesaid canopy with 12 *Yojan* area (11) **Dand ratna**—This diamond hard staff has the capacity to crush opposing armies, level uneven land and establish peace everywhere (12) **Asi ratna**—This can be used to give a tremendous and destructive blow (13) **Mani ratna**—This triangular and six faceted bead provides light in the whole camp-site of the *Chakravarti* during the night while he is camping for a war or otherwise It is also used to cross the pitch dark Tamisra and Khandaprapat caves in Vaitadhya mountain When tied on the right side of an elephant's head it lights the whole cave (14) **Kakani ratna**—This is a unique cubical stone of eight *Sauvarnik* dimension It is used to remove toxic effects of any and all poisons *(see Pravachanasaroddhar 2/212/1214-17)*

दु:षमा-सुषमा-लक्षण पद DUKHAMA-SUKHAMA-LAKSHAN-PAD (SEGMENT OF SIGNS OF DUKHAMA-SUKHAMA)

६९. सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तं जहा—अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाधू पुज्जंति, साधू ण पुज्जंति, गुरुहिं जणो मिच्छं पडिवण्णो, मणोदुहता, वइदुहता। ७०. सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा, तं जहा—अकाले ण वरिसइ, काले वरिसइ, असाधू ण पुज्जंति, साधू पुज्जंति, गुरुहिं जणो सम्मं पडिवण्णो, मणोसुहता, वइसुहता।

६९. सात लक्षणों से दु:षमा काल का आना या प्रकर्ष जाना जाता है - (१) अकाल में वर्षा होने से। (२) समय पर वर्षा न होने से। (३) असाधुओं की पूजा होने से। (४) साधुओं की पूजा न होने से। (५) गुरुजनों के प्रति लोगों का असद् व्यवहार होने से। (६) अकारण ही मन में दु:ख या उद्वेग होने से। (७) वचन-व्यवहार सम्बन्धी दु:ख से। ७०. सात लक्षणों से सुषमा काल का आना या प्रकर्ष जाना

जाता है, जैसे–(१) अकाल मे वर्षा नही होने से। (२) समय पर वर्षा होने से। (३) असाधुओ की पूजा नही होने से। (४) साधुओ की पूजा होने से। (५) गुरुजनों के प्रति लोगो का सद्व्यवहार होने से। (६) सहज ही मन मे सुख का संचार होने से। (७) वचन–व्यवहार मे सद्भाव प्रकट होने से।

69. There are seven signs that indicate the coming of *Dukham kaal* (epoch of sorrow)—(1) untimely rains, (2) absence of rains during monsoon season, (3) worship of the impious, (4) avoidance of worship of the pious, (5) misbehaviour with seniors, (6) rise of sadness or agitation in mind for no reason and (7) rude speech and misbehaviour **70.** There are seven signs that indicate the coming of *Sukham kaal* (epoch of happiness)—(1) absence of untimely rains, (2) timely rains, (3) avoidance of worship of the impious, (4) worship of the pious, (5) good behaviour with seniors, (6) rise of happiness or joy for no reason and (7) polite speech and good behaviour

जीव–पद JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING BEINGS)

७१. सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा–णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ।

७१. ससारी जीव सात प्रकार के है–(१) नैरयिक, (२) तिर्यग्योनिक, (३) तिर्यचनी, (४) मनुष्य, (५) मनुष्यनी, (६) देव, (७) देवी।

71. Worldly beings are of seven kinds—(1) *Nairayik* (infernal beings), (2) *Tiryagyonik* (males of animals), (3) *Tiryanchini* (females of animals), (4) *Manushya* (men), (5) *Manushyani* (women), (6) *Deva* (gods) and (7) *Devi* (goddesses)

आयुर्भेद–पद AYURBHED-PAD (SEGMENT OF ACCIDENTAL DEATH)

७२. सत्तविधे आउभेदे पण्णत्ते, तं जहा–

अज्झवसाण–णिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाते।
फासे आणापाणू सत्तविधं भिज्जए आउं॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

७२. आयुर्भेद (अकाल मरण) के सात कारण है–(१) राग, द्वेष, स्नेह, भय आदि भावो की तीव्रता से। (२) शस्त्राघात आदि के निमित्त से। (३) आहार की हीनाधिकता या निरोध से (४) ज्वर, आतक, रोग आदि की तीव्र वेदना से। (५) पर के आघात से, गड्ढे आदि मे गिर जाने से। (६) साँप आदि के स्पर्श या काटने से। (७) आन–पान–श्वासोच्छ्वास के निरोध से।

72. There are seven reasons of *ayurbhed* (accidental or untimely death)—(1) Due to intensity of feelings like attachment, aversion,

affection and fear (2) Due to being hit by weapons or other such accidents (3) Due to shortage or excess or abandoning of food intake (4) Due to aggravation of ailments including fever (5) Due to attack by others and also due to falling (6) Due to touch or bite of a snake or other venomous being (7) Due to suffocation

जीव-पद JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING BEINGS)

७३. सत्तविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सतिकाइया, तसकाइया, अकाइया।

अहवा—सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेसा, [णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा], सुक्कलेसा, अलेसा।

७३. सभी जीव सात प्रकार के है-(१) पृथिवीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायिक, (६) त्रसकायिक, (७) अकायिक। (सिद्ध)

अथवा-सब जीव सात प्रकार के है (१) कृष्णलेश्या वाले, (२) नीललेश्या वाले, (३) कापोतलेश्या वाले, (४) तेजोलेश्या वाले, (५) पद्मलेश्या वाले, (६) शुक्ललेश्या वाले, (७) अलेश्य (सिद्ध)

73. All living beings are of seven kinds—(1) *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *Apkayiks* (water-bodied beings), (3) *Tejaskayik* (fire-bodied beings), (4) *Vayukayik* (air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings), (6) *Tras-kayik* (mobile-bodied beings) and (7) *Akayik* (non-bodied or Siddha)

Also, all living beings are of seven kinds—(1) having *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) having *neel leshya* (blue complexion of soul), (3) having *kapot leshya* (pigeon complexion of soul), (4) having *tejo leshya* (fiery complexion of soul), (5) having *padma leshya* (yellow complexion of soul), (6) having *shukla leshya* (white complexion of soul) and (7) *aleshya* or having no *leshya* (Siddha)

ब्रह्मदत्त-पद BRAHMADATT-PAD (SEGMENT OF BRAHMADATT)

७४. बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अधेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णे।

७४. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त सात धनुष ऊँचे थे। वे सात सौ वर्ष की उत्कृष्ट आयु का पालन कर काल कर नीचे सातवी पृथिवी के अप्रतिष्ठान नरक मे नारक रूप से उत्पन्न हुए।

74. Chaturant Chakravarti Brahmadatt was seven *Dhanush* tall He died at the mature age of seven hundred years and reincarnated as an

infernal being in the Apratishthan infernal abode in the seventh *Prithvi* in the lower world

मल्ली–प्रव्रज्या–पद MALLI-PRAVRAJYA-PAD (SEGMENT OF INITIATION OF MALLI)

७५. मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं जहा–मल्ली विदेहरायवरकण्णगा, पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छायए अंगराया, रुप्पी कुणालाधिपती, संखे कासीराया, अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्तू पंचाल राया।

७५. मल्ली अर्हत् अपने सहित सात राजाओ के साथ मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हुए–(१) विदेहराज की श्रेष्ठकन्या मल्ली। (२) साकेत निवासी इक्ष्वाकुराज प्रतिबुद्धि। (३) अग जनपद का राजा चम्पा निवासी चन्द्रच्छाया। (४) कुणाल जनपद का राजा श्रावस्ती निवासी रुक्मी (५) काशी जनपद का राजा वाराणसी निवासी शख। (६) कुरु देश का राजा हस्तिनापुर निवासी अदीनशुत्र। (७) पञ्चाल जनपद का राजा कम्पिल्लपुर निवासी जितशत्रु। *(ज्ञातासूत्र अध्ययन १९ मे विस्तृत वर्णन है)*

75. Malli Arhat tonsured her head, renounced the household and got initiated into the ascetic order in a group of seven rulers (inclusive of herself)—(1) Malli, the virtuous daughter of the king of Videh (2) Pratibuddha, the Ikshvaku king of Saket (3) Chandrachchhaya, the king of Champa the capital of Anga country (4) Rukmi, the king of Shravasti the capital of Kunal country (5) Shankh, the king of Varanasi the capital of Kashi country (6) Adinashatru, the king of Hastinapur the capital of Kuru country (7) Jitashatru, the king of Kampillapur the capital of Panchal country *(for more details refer to Illustrated Jnata Sutra, Chapter 19)*

दर्शन–पद DARSHAN-PAD (SEGMENT OF PERCEPTION/FAITH)

७६. सत्तविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा–सम्मद्दंसणे, मिच्छद्दंसणे, सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे, अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे।

७६. दर्शन सात प्रकार का है–(१) सम्यग्दर्शन–यथार्थ श्रद्धान। (२) मिथ्यादर्शन–अयथार्थ श्रद्धान। (३) सम्यग्मिथ्यादर्शन–मिश्र श्रद्धान। (४) चक्षुदर्शन–आँखो से सामान्य प्रतिभास रूप अवलोकन। (५) अचक्षुदर्शन–आँखो के सिवाय शेष इन्द्रियो एव मन से होने वाला सामान्य प्रतिभासरूप अवलोकन। (६) अवधिदर्शन–अवधिज्ञान होने के पूर्व अवधिज्ञान के विषयभूत पदार्थ का सामान्य प्रतिभासरूप अवलोकन। (७) केवलर्शन–समस्त पदार्थो के सामान्य धर्मो का अवलोकन।

76. *Darshan* (perception/faith) is of seven kinds—**(1) Samyagdarshan**—right perception/faith, **(2) mithyadarshan**—wrong or false perception/faith, **(3) samyagmithyadarshan**—mixed or right and wrong perception/

faith, (4) **chakshu darshan**—common visual perception through eyes, (5) **achakshu darshan**—common sensual perception through mind and sensual organs other than eyes, (6) **avadhi darshan**—sensual perception of subjects of *avadhi-jnana* (distant things) preceding attainment of *avadhi-jnana* and (7) **Keval darshan**—common perception of general properties of all things

छद्मस्थ-केवलि-पद CHHADMASTH-KEVALI-PAD (SEGMENT OF CHHADMASTH-KEVALI)

७७. छउमत्थ-वीयरागे णं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेदेति, तं जहा—णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं, वेयणिज्जं, आउयं, णामं, गोतं, अंतराइयं।

७७ **छद्मस्थ वीतरागी** साधु (ग्यारहवे और बारहवे गुणस्थानवर्ती) मोहनीय कर्म को छोडकर शेष सात कर्मप्रकृतियो का वेदन करता है (१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) वेदनीय, (४) आयुष्य, (५) नाम, (६) गोत्र, (७) अन्तराय।

77. A *chhadmasth* (one who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) *vitarag* (devoid of attachment and aversion) experiences or suffers all seven *karma-prakritis* (species of *karmas*) other than *mohaniya karma*—(1) *Jnanavaraniya*, (2) *Darshanavaraniya*, (3) *Vedaniya*, (4) *Ayushya*, (5) *Naam*, (6) *Gotra* and (7) *Antaraya*

७८. सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं।

एयाणि चेव उप्पण्णणाण (दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं) जाणति पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, [अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं], गंधं।

७८. छद्मस्थ जीव सात पदार्थो को सम्पूर्ण रूप से न तो जान पाता है और न ही देख पाता है-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीररहित जीव, (५) परमाणु पुद्गल, (६) शब्द, (७) गन्ध।

जिनको केवलज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है वे अर्हन्, जिन, केवली इन सात पदार्थों को सम्पूर्ण रूप से जानते देखते है-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीर रहित जीव, (५) परमाणु पुद्गल, (६) शब्द, (७) गन्ध।

78. A *chhadmasth* (a person in state of *karmic* bondage) person cannot see or know seven things fully (all their possible modes)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter, (6) *shabd* (sound) and (7) *gandh* (smell)

Arhat, Jina, and *Kevali* endowed with right knowledge and perception see and know fully (all their possible modes) these seven things—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter, (6) *shabd* (sound) and (7) *gandh* (smell)

महावीर–पद MAHAVIR-PAD (SEGMENT OF MAHAVIR)

७९. समणे भगवं महावीरे वइरोसभणारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिते सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था।

७९. वज्र ऋषभ नाराचसहनन और समचतुरस्र–सस्थान से सस्थित श्रमण भगवान् महावीर के शरीर की ऊँचाई सात रत्नि (हाथ) प्रमाण थी।

79. Endowed with *Vajra rishabh naaraach samhanan* and *Samchaturasra samsthan*, Shraman Bhagavan Mahavir's body was seven *Ratni* (cubits) tall

विकथा–पद VIKATHA-PAD (SEGMENT OF GOSSIP)

८०. सत्त विकहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, मिउकालुणिया, दंसणभेयणी, चरित्तभेयणी।

८०. विकथाएँ सात है–(१) स्त्रीकथा, (२) भक्तकथा, (३) देशकथा, (४) राज्यकथा, (५) मृदु–**कारुणिकी**–इष्ट का वियोग बताने वाली करुणरस–प्रधान कथा। (६) **दर्शन–भेदिनी**–सम्यग्दर्शन का विनाश करने वाली कथा। (७) **चारित्र–भेदिनी**–सम्यक्चारित्र का विनाश करने वाली।

80. *Vikatha* (gossip that hinders spiritual practices) is of seven kinds—(1) *stree-katha* (gossip about women), (2) *bhakt-katha* (gossip about food), (3) *desh-katha* (gossip about country), (4) *raj-katha* (gossip about king), (5) *mridu-karuniki* (about separation from the loved one and filled with sentiment of pathos), (6) *darshan-bhedini* (detrimental to right faith) and (7) *chaaritra-bhedini* (detrimental to right conduct)

आचार्य–उपाध्याय–अतिशेष–पद ACHARYA UPADHYAYA ATISHESH-PAD (SEGMENT OF SPECIAL PRIVILEGE OF ACHARYA AND UPADHYAYA)

८१. आयरिय उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पण्णत्ता, तं जहा–

(१) आयरिय–उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स पाय णिगिज्झिय–णिगिज्झिय पप्फोडेमाणए वा पमज्जमाणे वा णातिक्कमति। (२) आयरिय–उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति। (३) आयरिय–उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा, इच्छा णो

करेज्जा। (४) आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा एगगो वसमाणे णातिक्कमति। (५) आयरिय-उवज्झाए बाहिं उवस्सयस्स एगरातं वा दुरातं वा [एगओ ?] वसमाणे णातिक्कमति। (६) उवकरणातिसेसे। (७) भत्तपाणातिसेसे।

८१. आचार्य और उपाध्याय के गण मे सात अतिशय (विशेष विधि) होते है-

(१) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के भीतर (बाहर से आने पर) दोनो पैरो की धूलि को झाडते हुए, प्रमार्जित करते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते है। (२) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के भीतर उच्चार-प्रस्रवण का व्युत्सर्ग और विशोधन करते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते। (३) आचार्य और उपाध्याय स्वतन्त्र है, यदि इच्छा हो तो दूसरे साधु की वैयावृत्त्य करे, यदि इच्छा न हो तो न करे। (४) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के भीतर एक रात या दो रात अकेले रहते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते। (५) आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के बाहर एक रात या दो रात अकेले रहते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नही करते। (पचम स्थान मे इनका वर्णन आ गया है)। (६) **उपकरण की विशेषता**-आचार्य और उपाध्याय अन्य साधुओ की अपेक्षा उज्ज्वल वस्त्रपात्रादि रख सकते है। (७) **भक्त-पान-विशेषता**-स्वास्थ्य और सयम की रक्षा के अनुकूल आगमानुकूल विशिष्ट खान-पान कर सकते है।

81. In a *gana* (group of ascetics) *acharya* and *upadhyaya* have seven *atishesh* (special privileges)—

(1) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they carefully dust their feet while entering an *upashraya* (place of stay) (2) *Acharya* and upadhyaya do not defy the word of *Bhagavan* if they pass their stool and urine or cleanse themselves within the *upashraya* (3) *Acharya* and *upadhyaya* are free of the responsibility of serving other ascetics, they may do so or not as they desire (4) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they live alone in the *upashraya* for one or two nights (5) *Acharya* and *upadhyaya* do not defy the word of *Bhagavan* if they live alone outside the *upashraya* for one or two nights (these have been explained in Sthaan-5) (6) *Upakaran-visheshata—Acharya* and *upadhyaya* can keep cleaner and brighter garbs and equipment (7) *Bhaktapaan-visheshata—Acharya* and *upadhyaya* can have special food and drinks as prescribed in *Agams* for reasons of health and ascetic-discipline

संयम-असंयम-पद SAMYAM-ASAMYAM-PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

८२. सत्तविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा-पुढविकाइयसंजमे, [आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे, वणस्सइकाइयसंजमे], तसकाइयसंजमे, अजीवकाइयसंजमे। ८३. सत्तविधे

असंजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे, [आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसंजमे, वणस्सइकाइयअसंजमे], तसकाइयअसंजमे, अजीवकाइय असंजमे।

८२. सयम सात प्रकार का है-(१) पृथिवीकायिक सयम-(२) अप्कायिक सयम, (३) तेजस्कायिक सयम, (४) वायुकायिक सयम, (५) वनस्पतिकायिक सयम, (६) त्रसकायिक सयम, (७) अजीवकायिक सयम-अजीव वस्तुओ के ग्रहण और परिभोग का त्याग। ८३. असयम सात प्रकार का है-(१) पृथिवीकायिक असयम, (२) अप्कायिक असयम, (३) तेजस्कायिक असयम, (४) वायुकायिक असयम, (५) वनस्पतिकायिक असयम, (६) त्रसकायिक असयम, (७) अजीवकायिक-असयम।

82. *Samyam* (discipline) is of seven kinds—(1) *Prithvikayik samyam* (discipline related to earth-bodied beings), (2) *Apkayik samyam* (discipline related to water-bodied beings), (3) *Tejaskayik samyam* (discipline related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik samyam* (discipline related to air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik samyam* (discipline related to plant-bodied beings), (6) *Tras-kayik samyam* (discipline related to mobile-bodied beings) and (7) *Ajivakayik samyam* (discipline related to non-being or abstaining from taking and using material things) **83.** *Asamyam* (indiscipline) is of seven kinds—(1) *Prithvikayik asamyam* (indiscipline related to earth-bodied beings), (2) *Apkayik asamyam* (indiscipline related to water-bodied beings), (3) *Tejaskayik asamyam* (indiscipline related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik asamyam* (indiscipline related to air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik asamyam* (indiscipline related to plant-bodied beings), (6) *Tras-kayik asamyam* (indiscipline related to mobile-bodied beings) and (7) *Ajivakayik asamyam* (indiscipline related to non-being or not abstaining from taking and using material things)

आरम्भ-पद ARAMBH-PAD (SEGMENT OF SINFUL ACTIVITY)

८४. सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयआरंभे, [आउकाइयआरंभे, तेउकाइयआरंभे, वाउकाइयआरंभे, वणस्सइकाइयआरंभे, तसकाइयआरंभे], अजीवकाइयआरंभे। ८५. सत्तविहे अणारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअणारंभे। ८६. सत्तविहे सारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसारंभे। ८७. सत्तविहे असारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसारंभे। ८८. सत्तविहे समारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसमारंभे। ८९. सत्तविहे असमारंभे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसमारंभे।

८४. आरम्भ सात प्रकार का है-(१) पृथ्वीकायिक आरम्भ, (२) अप्कायिक आरम्भ, (३) तेजस्कायिक आरम्भ, (४) वायुकायिक आरम्भ, (५) वनस्पतिकायिक आरम्भ, (६) त्रसकायिक

आरम्भ, (७) अजीवकायिक आरम्भ। ८५. इसी प्रकार अनारम्भ सात प्रकार का है, जैसे- पृथिवीकायिक अनारम्भ आदि। ८६. सरम्भ सात प्रकार का है, जैसे-(१) पृथ्वीकायिक सरम्भ आदि। ८७. असरम्भ सात प्रकार का है -(१) पृथ्वीकायिक असरम्भ आदि। ८८. समारम्भ सात प्रकार का है-(१) पृथ्वीकायिक समारम्भ आदि। ८९. असमारम्भ सात प्रकार का है-(१) पृथ्वीकायिक असमारम्भ आदि।

84. *Arambh* (sinful activity) is of seven kinds—(1) *Prithvikayik arambh* (sinful activity related to earth-bodied beings), (2) *Apkayik arambh* (sinful activity related to water-bodied beings), (3) *Tejaskayik arambh* (sinful activity related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik arambh* (sinful activity related to air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik arambh* (sinful activity related to plant-bodied beings), (6) *Tras-kayik arambh* (sinful activity related to mobile-bodied beings) and (7) *Ajivakayik arambh* (sinful activity related to non-being) **85.** In the same way *anarambh* (not indulging in sinful activity) is of seven kinds including *Prithvikayik anarambh* **86.** *Samrambh* (resolve to indulge in sinful activity) is of seven kinds including *Prithvikayik samrambh* **87.** *Asamrambh* (not to resolve to indulge in sinful activity) is of seven kinds including *Prithvikayik asamrambh* **88.** *Samaarambh* (to arrange for means of indulging in sinful activity) is of seven kinds including *Prithvikayik samaarambh* **89.** *Asamaarambh* (not to arrange for means of indulging in sinful activity) is of seven kinds including *Prithvikayik asamaarambh*

विवेचन—समवायाग के सत्तरहवे समवाय मे सयम-असयम के सत्रह भेद बताये है। उन्ही के यहाँ सात-सात प्रकार बताये है। मुख्यत सयम दो ही प्रकार का है। (१) जीवकाय सयम, (२) अजीवकाय सयम। छह काय के जीवो की हिंसा न करना व रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहना जीवकाय सयम है। वस्त्र-पात्र आदि उपकरणो के व्यवहार मे यतना व उपयोग रखना अजीवकाय सयम है। सयम का विपरीत असयम है। आरम्भ, सरम्भ, समारम्भ इनका अर्थ क्रमश इस प्रकार है-

आरभ उद्दवओ, परितापकरो भव समारभा।
सकप्पो सरंभो, सुद्ध नयाणं तु सव्वेसिं॥

संरम्भ—प्रवृत्ति का सकल्प **समारभ**—प्रवृत्ति के लिए साधन सामग्री जुटाना। **आरम्भ**—प्रवृत्ति का प्रारम्भ करना। (तत्त्वार्थवार्तिक पृष्ठ ५१३) अथवा **आरम्भ**—जीव हिंसा करना। **संरम्भ**—जीव हिसा का मन मे संकल्प करना। **समारम्भ**—जीवो को परिताप व दु ख पहुँचाना। इनका विरोधी तत्त्व है, अनारम्भ, असरम्भ और असमारम्भ।

Elaboration—In the seventeenth chapter of *Samvayanga Sutra* seventeen kinds of *samyam-asamyam* have been mentioned. They have

been summed up here as seven kinds Basically *samyam* is of two kinds only—(1) *jivakaya samyam* and (2) *ajivakaya samyam* Not to harm six kinds of bodied beings and to endeavour to protect them is *jivakaya samyam*. To be careful in use of garb, bowls and other ascetic equipment is *ajivakaya samyam* Opposite of *samyam* (discipline) is *asamyam* (indiscipline) The meanings of other terms are as follows—

Samrambh—to resolve to indulge in some activity *Samaarambh*—to arrange for means of indulging in such activity *Arambh*—to commence such activity (*Tattvarthavartik*, p 513) Here the meanings are—*arambh* means to harm or kill beings, *samrambh* means to resolve to harm or kill beings, and *samaarambh* means to cause torment or pain to beings Opposite of these are *anarambh, asamrambh* and *asamaarambh*

योनिस्थिति-पद YONISTHITI-PAD (SEGMENT OF PRODUCTIVE LIFE)

९०. [प्र.] अह भंते ! **अदसि-कुसुम्भ-कोद्दव-कंगु-रालग-वरट्ट-कोद्दूसग-सण-सरिसव-मूलग-बीयाणं-एतेसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं [मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं] पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?**

[उ.] **गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायति [तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेण परं जोणी विद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं] जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते।**

९०. प्रश्न—भगवन् ! अलसी, कुसुम्भ, कोद्रव, कगु, राल, वरट (गोल चना), कोदूषक (कोद्रव), सन, सरसो, मूलक, बीज, ये धान्य जो कोष्ठागारगुप्त, (सुरक्षित) पल्यगुप्त, मचगुप्त, अवलिप्त, लिप्त, लाछित, मुद्रित, पिहित रखे गये हो, उनकी योनि (उत्पादक शक्ति) कितने काल तक रहती है ?

उत्तर—गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट सात वर्ष तक उनकी योनि रहती है। उसके पश्चात् योनि म्लान हो जाती है, प्रविध्वस्त हो जाती है, विध्वस्त हो जाती है, बीज अबीज हो जाता है और योनि का व्युच्छेद हो जाता है।

90. (Question) *Bhante* ! How long the *yoni* (productive capacity) of Alasi (linseed), Kusumbh, Kodrava, Kangu, Raal, Varat (round gram), Kodushak (Kodrav), San (flax), Sarason (mustard), Moolak, and other seeds (*beej*) lasts once they are stored in *kotha* (silo), *palya* (basket made of bamboo or cane), *machan* (store on a raised wooden platform) and *mala* (store on roof top), and after that covered, sealed, marked, stamped and properly closed ?

(Answer) "Long lived one ! Their productive capacity lasts for a minimum period of *antarmuhurt* (less than 48 minutes) and a maximum

period of seven years After that the *yoni* (productive capacity) gets weak, shattered, destroyed, seedless, and sterile In other words the seeds no longer germinate on sowing

स्थिति–पद STHITI-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN)

९१. बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। ९२. तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ९३. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

९१. बादर अप्कायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्ष की है। ९२. तीसरी वालुकाप्रभा पृथ्वी के नारक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है। ९३. चौथी पकप्रभा पृथ्वी के नारक जीवो की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की ही।

91. The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of *apkayik jivas* (water-bodied beings) is seven thousand years **92.** The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of infernal beings of Balukaprabha *prithvi* (third hell) is seven *Sagaropam* (a conceptual unit of time) **93.** The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of infernal beings of Pankaprabha *prithvi* (fourth hell) is seven *Sagaropam* (a conceptual unit of time)

अग्रमहिषी–पद AGRAMAHISHIS-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS)

९४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। ९५. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। ९६. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ।

९४. देवेन्द्र देवराज शक्र के लोकपाल महाराज वरुण की सात अग्रमहिषियाँ है। ९५ देवेन्द्र देवराज ईशान के लोकपाल महाराज सोम की सात अग्रमहिषियाँ है। ९६. देवेन्द्र देवराज ईशान के लोकपाल महाराज यम की सात अग्रमहिषियाँ है।

94. Varun, the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has seven *agramahishis* (chief queens) **95.** Soma, the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has seven *agramahishis* (chief queens) **96.** Yama, the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has seven *agramahishis* (chief queens)

देव–पद DEVA-PAD (SEGMENT OF GODS)

९७. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। ९८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। ९९. सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।

९७. देवेन्द्र देवराज ईशान के आभ्यन्तर परिषद् के देवो की स्थिति सात पल्योपम है। ९८. देवेन्द्र देवराज शक्र की अग्रमहिषी देवियो की स्थिति सात पल्योपम है। ९९. सौधर्म कल्प मे परिगृहीता देवियो की उत्कृष्ट स्थिति सात पल्योपम है।

97. The *sthiti* (life span) of the gods of the inner assembly of Ishan Devendra, the king of gods, is seven *Palyopam* **98.** The *sthiti* (life span) of the *agramahishis* (chief queens) of Shakra Devendra, the king of gods, is seven *Palyopam* **99.** The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of the *parigrihit devis* (married goddesses) of Saudharma *kalp* is seven *Palyopam*

१००. सारस्सयमाइच्चाणं [देवाणं ?] सत्त देवा सत्तदेवसता पण्णत्ता।

१०१. गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता।

१००. सारस्वत और आदित्य लोकान्तिक देव स्वामीरूप मे सात है और उनके सात सौ देवो का परिवार है। १०१. गर्दतोय और तुषित लोकान्तिक देव स्वामीरूप मे सात है और उनके सात हजार देवो का परिवार है।

100. There are seven gods of the status of overlords among Sarasvat and Aditya Lokantik gods and they have a family of seven hundred gods **101.** There are seven gods of the status of overlords among Gardatoya and Tushit Lokantik gods and they have a family of seven thousand gods

१०२. सणंकुमारे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। १०३. माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सातिरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। १०४. बंभलोगे कप्पे जहण्णेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। १०५. बंभलोय-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

१०२. सनत्कुमार कल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम है। १०३. माहेन्द्र कल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम है। १०४. ब्रह्मलोक कल्प मे देवो की जघन्य स्थिति सात सागरोपम है। १०५. ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प मे विमानो की ऊँचाई सात सौ योजन है।

102. The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of gods of Sanatkumar *kalp* is seven *Sagaropam* **103.** The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of gods of Mahendra *kalp* is a little more than seven *Sagaropam* **104.** The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of gods of Brahmalok *kalp* is seven *Sagaropam* **105.** In Brahmalok and Lantak *kalp* the height of *vimaans* (celestial vehicles) is seven hundred *Yojans*

१०६. भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। १०७. वाणमंतराणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं

उच्चत्तेणं पण्णत्ता। १०८. जोइसियाणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। १०९. सोहम्मीसाणासे णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

१०६. भवनवासी देवो के भवधारणीय (स्वाभाविक शरीर) शरीरो की उत्कृष्ट ऊँचाई सात हाथ की है। १०७. वाण-व्यन्तर देवो के भवधारणीय शरीरो की उत्कृष्ट ऊँचाई सात हाथ की है। १०८. ज्योतिष्क देवो के भवधारणीय शरीरो की उत्कृष्ट ऊँचाई सात हाथ की है। १०९. सौधर्म और ईशानकल्प के देवो के भवधारणीय शरीरो की उत्कृष्ट ऊँचाई सात हाथ की है।

106. The *utkrisht* (maximum) height of the *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining body) of *Bhavan-vasi devas* (abode dwelling gods) is seven cubits **107.** The *utkrisht* (maximum) height of the *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining body) of *Vanavyantar devas* (interstitial gods) is seven cubits **108.** The *utkrisht* (maximum) height of the *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining body) of *Jyotishk devas* (stellar gods) is seven cubits **109.** The *utkrisht* (maximum) height of the *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining body) of Saudharma and Ishan *kalp* is seven cubits

नन्दीश्वर द्वीप-पद NANDISHVAR DVEEP-PAD (SEGMENT OF NANDISHVAR DVEEP)

११०. णंदीस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पण्णत्ता, तं जहा—जंबुद्दीवे, धायइसंडे, पोक्खरवरे, वरुणवरे, खीरवरे, घयवरे, खोयवरे। १११. णंदीसरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे, कालोदे, पुक्खरोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घओदे, खोओदे।

११०. नन्दीश्वर द्वीप के अन्तराल (मध्य) मे सात द्वीप है-(१) जम्बूद्वीप, (२) धातकीषण्ड, (३) पुष्करवर, (४) वरुणवर, (५) क्षीरवर, (६) घृतवर और (७) क्षोदवर द्वीप। [जम्बूद्वीप से आठवा द्वीप नन्दीश्वर द्वीप है। यह अन्य द्वीपो की अपेक्षा विशेष रमणीय है]। १११. नन्दीश्वर द्वीप के अन्तराल मे सात समुद्र है-(१) लवणसमुद्र, (२) कालोद, (३) पुष्करोद, (४) वरुणोद, (५) क्षीरोद, (६) घृतोद और क्षोदोदसमुद्र।

110. There are seven *dveeps* (continents) in the *antaral* (gap or middle) of Nandishvar *dveep*—(1) Jambu *dveep*, (2) Dhatakikhand, (3) Pushkaravar, (4) Varunavar, (5) Ksheeravar, (6) Ghritavar and (7) Kshaudavar [Nandishvar *dveep* is the eighth from Jambu *dveep* It is more attractive than other continents] **111.** There are seven *samudras* (seas) in the *antaral* (gap or middle) of Nandishvar *dveep*—(1) Lavan samudra, (2) Kalod, (3) Pushkarod, (4) Varunod, (5) Ksheerod, (6) Ghritod and (7) Kshaudod

श्रेणि–पद SHRENI-PAD (SEGMENT OF ROWS)

११२. सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–उज्जुआयता, एगतोवंका, दुहतोवंका, एगतोखहा, दुहतोखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला।

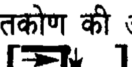
११२. श्रेणियाँ (आकाश की प्रदेश–पक्तियाँ) सात है–(१) **ऋजु–आयता**–सीधी और लम्बी श्रेणी। (२) **एकतो वक्रा**–एक दिशा मे वक्र श्रेणी। (३) **द्वितो वक्रा**–दो दिशाओ मे वक्र श्रेणी। (४) **एकतः खहा**–एक दिशा मे अकुश के समान मुडी हुई श्रेणी। (५) **द्वितः खहा**–दोनो दिशाओ मे अकुश के समान मुडी हुई श्रेणी। (६) **चक्रवाला**–चाक के समान वलयाकर श्रेणी। (७) **अर्धचक्रवाला**–आधे चाक के समान अर्धवलयाकर श्रेणी।

112. There are seven *shrenis* (rows of space-points)—**(1) Riju-aayata**—long and straight row **(2) Ekato-vakraa**—a row turned in one direction **(3) Dvito-vakraa**—a row turned in two directions **(4) Ekatah-khaha**—a row curved like a hook in one direction **(5) Dvitah-khaha**—a row curved like a hook in two direction **(6) Chakravala**—a circular row **(7) Ardhachakravala**—a semi-circular row

विवेचन–जिनमे जीव और पुद्‌गल की अपने स्वाभाविक रूप मे गति होती है, उन आकाश प्रदेशो की पक्ति को श्रेणी कहते है। जीव और पुद्‌गल श्रेणी के अनुसार ही गमन करते है।

(१) **ऋजु–आयता श्रेणी**–जब जीव और पुद्‌गल ऊर्ध्वलोक से अधोलोक मे या अधोलोक से ऊर्ध्वलोक मे सीधी श्रेणी मे गमन करते है, कोई मोड या घुमाव नही लेते है, तब उसे **ऋजु–आयता श्रेणी** कहते है। इसका आकार  ऐसी सीधी रेखा के समान है। इस गति मे केवल एक समय लगता है।

(२) **एकतोवक्रा श्रेणी**–यद्यपि आकाश की प्रदेश–श्रेणियाँ ऋजु (सीधी) ही होती है तथापि जीव या पुद्‌गल के घुमावदार गति के कारण उसको वक्र कहा जाता है। जब जीव और पुद्‌गल ऋजुगति से गमन करते हुए दूसरी श्रेणी मे पहुँचते है,तब उन्हे एक घुमाव लेना पडता है, इसलिए उसे एकतोवक्रा श्रेणी कहा जाता है। जैसे कोई जीव या पुद्‌गल ऊर्ध्वदिशा से अधोदिशा की पश्चिम श्रेणी पर जाना चाहता है, तो पहले समय मे वह ऊपर से नीचे की ओर समश्रेणी से गमन करेगा। पुन दूसरे समय मे वहाँ से पश्चिम दिशा वाली श्रेणी पर गमन कर अभीष्ट स्थान पर पहुँचेगा। इस गति मे दो समय और एक घुमाव लगने से उसका आकार  इस प्रकार का होगा।

(३) **द्वितोवक्रा श्रेणी**–जिस गति मे जीव या पुद्‌गल को दोनो ओर मोड लेना पडे उसे द्वितोवक्रा श्रेणी कहते है। जैसे कोई जीव या पुद्‌गल आकाश–प्रदेशो की ऊपरीसतह के ईशानकोण से चलकर नीचे जाकर नैर्ऋतकोण मे जाकर उत्पन्न होता है, तो उसे पहले समय मे ईशानकोण से चलकर पूर्वदिशा वाली श्रेणी पर जाना होगा। पुन वहाँ से सीधी श्रेणी द्वारा नीचे की ओर जाना होगा। पुन समरेखा पर पहुँच कर नैर्ऋतकोण की ओर जाना होगा। इस प्रकार इस गति मे दो मोड और तीन समय लगेगे। इसका आकार  ऐसा होगा।

(४) **एकत:खहा श्रेणी**–जब कोई स्थावर जीव त्रसनाडी के वाम पार्श्व से उसमे प्रवेश कर उसके वाम या दक्षिणी किसी पार्श्व मे दो या तीन मोड लेकर नियत स्थान मे उत्पन्न होता है, तब उसके त्रसनाडी के बाहर का आकाश एक ओर स्पृष्ट होता है, इसलिए उसे 'एकत खहा' श्रेणी कहा जाता है। इसका आकार  ऐसा होता है।

(५) **द्वित:खहा श्रेणी**–जब कोई जीव मध्यलोक के पश्चिम लोकान्तवर्ती प्रदेश से चलकर मध्यलोक के पूर्वदिशावर्ती लोकान्तप्रदेश पर जाकर उत्पन्न होता है, तब उसके दोनो ही स्थलो पर लोकान्त का स्पर्श होने से द्वित खहा श्रेणी कहा जाता है। इसका आकार  ऐसा होगा।

(६) **चक्रवाला श्रेणी**–चक्र के समान गोलाकार गति को चक्रवाला श्रेणी कहते है। जैसे- 

(७) **अर्धचक्रवाला श्रेणी**–आधे चक्र के समान आकार वाली श्रेणी को अर्धचक्रवाला कहते है। जैसे -  इन दोनो श्रेणियो से केवल पुद्गल की ही गति होती है, जीव की नही। *(विस्तृत वर्णन देखें भगवती सूत्र शतक २५)*

Elaboration—The rows of space-points in which soul and matter move naturally are called *shrenis* Soul and matter move in rows only

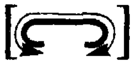
(1) Riju-aayata shreni—When soul or matter moves in a straight line in the same plane without any turn or curve, from upper world to lower world or vice versa, it is called *Riju-aayata shreni* (long and straight row) Only one dimension is involved here and it appears like a perpendicular straight line  The duration of this movement is one Samaya

(2) Ekato-vakraa shreni—Although the rows of space-points are straight, due to the curved movement of soul and matter they are termed as bent or curved When soul and matter moving in straight line shift from one row to another in the same plane they have to take one turn Therefore this movement is called *Ekato-vakraa shreni* (a row with one bend) For example, when a soul or a matter particle has to shift from a higher level to a western row at lower level it will move downward in a straight line during the first *Samaya* Then during the second *Samaya* it will move westward, again in a straight line and reach the destined point This movement takes two *Samayas* and one turn Two dimensions are involved here and it appears like 

(3) Dvito-vakraa shreni—When soul or matter has to take two turns to reach the destined spot it is called *Dvito vakraa shreni* (a row with two bends) For example, when a soul or matter particle has to shift from

higher level to a point diagonally opposite at lower level in a different plane, it will move in one direction at the same level during the first *Samaya* During the second *Samaya* it will take a turn and move downward in a straight line to the level of the destined spot. During the third *Samaya* it will again take a turn and move towards the destined spot now at the same level This movement takes three *Samayas* and two turns Three dimensions are involved here and it appears like 

(4) Ekatah-khaha shreni—When the soul of an immobile being enters the *Tras-nadi* (the central spine of the *Lok* or occupied space where living beings exist) from left and after taking two or three turns to reach the destined spot on its right or left side, it touches the outer space on one side only Therefore this is called *Ekatah-khaha shreni* It is hook or  shaped

(5) Dvito-vakraa shreni—When a soul leaves an area at the western edge of the *lok* in the middle world and moves to a spot at the eastern edge of the *lok* in the middle world it touches the outer space on both sides Therefore this is called *Dvitah-khaha shreni* It is double-hook or  shaped

(6) Chakravala shreni—A circular movement is called *Chakravala shreni* Like 

(7) Ardhachakravala shreni—A semi-circular movement is called *Ardhachakravala shreni* Like  The last two types are associated with matter only, and not soul *(for more details refer to Bhagavati Sutra, Shatak 25)*

अनीक–अनीकाधिपति–पद ANIKA-ANIKADHIPATI-PAD (SEGMENT OF ARMY AND COMMANDER)

११३. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा–पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए, णट्टाणिए, गंधव्वाणिए।

[दुमे पायत्ताणियाधिवती, सोदामे आसराया पीढाणिाधिवती, कुंथू हत्थिराया कुंजराणियाधिवती, लोहितक्खे महिसाणियाधिवती], किण्णरे रधाणियाधिवती, रिट्ठे णट्टाणियाधिवती, गीतरती गंधव्वाणियाधिवती।

११३. असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर की सात सेनाएँ और सात सेनाधिपति हैं-**सेनाएँ**-(१) पदातिसेना, (२) अश्वसेना, (३) हस्तिसेना, (४) महिषसेना, (५) रथसेना, (६) नर्तकसेना, (७) गन्धर्व-(गायक-) सेना।

सेनापति-(१) द्रुम-पदातिसेना का अधिपति। (२) अश्वराज सुदामा-अश्वसेना का अधिपति। (३) हस्तिराज कुन्थु-हस्तिसेना का अधिपति। (४) लोहिताक्ष-महिषसेना का अधिपति। (५) किन्नर-रथसेना का अधिपति। (६) रिष्ट-नर्तकसेना का अधिपति। (७) गीतरति-गन्धर्वसेना का अधिपति।

113. Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods has seven *anikas* (armies) and seven *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, (2) *Pithanika*—horse riders, (3) *Kunjaranika*—elephant riders, (4) *Mahishanika*—buffalo riders, (5) *Rathanika*—charioteers, (6) *Nartakanika*—dancers and (7) *Gandharvanika*—singers

The commanders of these armies are as follows—**(1) Drum**—commander of foot soldiers, **(2) Ashvaraj Sudama**—commander of horse riders, **(3) Hastiraj Kunthu**—commander of elephant riders, **(4) Lohitaksh**—commander of buffalo riders, **(5) Kinnar**—commander of charioteers, **(6) Rishta**—commander of dancers and **(7) Gitarati**—commander of singers

११४. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा-पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए। महद्दुमे पायत्ताणियाधिपती जाव किंपुरिसे रधाणियाधिपती, महारिट्ठे णट्टाणियाधिपती, गीतजसे गंधव्वाणियाधिपती।

११४. वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बली की सात सेनाएँ और सात सेनापति है, जैसे-**सेनाएँ**-(१) पदातिसेना यावत्, ७) गन्धर्वसेना। **सेनापति**-(१) महाद्रुम-पदातिसेना का अधिपति। यावत्। (५) किम्पुरुष-रथसेना का अधिपति। (६) महारिष्ट-नर्तकसेना का अधिपति। (७) गीतयश-गन्धर्वसेना का अधिपति।

114. Chamar Asurendra, Vairochanendra Bali, the king of *Virochana* gods has seven *anikas* (armies) and seven *anikadhipati* (commanders)—**Armies—(1) Padatanika**—foot soldiers, and so on up to **(7) Gandharvanika**—singers The commanders of these armies are as follows—**(1) Mahadrum**—commander of foot soldiers, **(2) Ashvaraj Mahasudama**—commander of horse riders, **(3) Hastiraj Malankar**—commander of elephant riders, **(4) Mahalohitaksh**—commander of buffalo riders, **(5) Kimpurush**—commander of charioteers, **(6) Maharishta**—commander of dancers and **(7) Gitayash**—commander of singers

११५. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाधिपती पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए। भद्दसेणे पायत्ताणियाधिपती जाव आणंदे रधाणियाधिपती, णंदणे णट्टाणियाधिपती, तेतली गंधव्वाणियाधिपती।

११५ नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण की सात सेनाएँ और सात सेनापति है, जैसे-**सेनाएँ**—(१) पदातिसेना यावत्। (७) गन्धर्वसेना। **सेनापति**—(१) **भद्रसेन**—पदातिसेना का अधिपति यावत्। (५) **आनन्द**—रथसेना का अधिपति। (६) **नन्दन**—नर्तकसेना का अधिपति। (७) **तेतली**—गन्धर्वसेना का अधिपति।

115. Dharan Naagkumarendra, the king of *Naag Kumar* gods has seven *anikas* (armies) and seven *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, and so on up to (7) *Gandharvanika*—singers The commanders of these armies are as follows—**(1) Bhadrasen**—commander of foot soldiers, **(2) Ashvaraj Yashodhar**—commander of horse riders, **(3) Hastiraj Sudarshan**—commander of elephant riders, **(4) Nilakanth**—commander of buffalo riders, **(5) Anand**—commander of charioteers, **(6) Nandan**—commander of dancers and **(7) Tetali**—commander of singers

११६. भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा—पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए। दक्खे पायत्ताणियाहिवती जाव णंदुत्तरे रहाणियाहिवई, रत्ती णट्टाणियाहिवई, माणसे गंधव्वाणियाहिवई।

११६. नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज भूतानन्द की सात सेनाएँ और सात सेनापति है-**सेनाएँ**—(१) पदातिसेना यावत् (७) गन्धर्वसेना। **सेनापति**—(१) दक्ष—पदातिसेना का अधिपति यावत्। (५) **नन्दोत्तर**—रथसेना का अधिपति। (६) रति—नर्तकसेना का अधिपति। (७) **मानस**—गन्धर्वसेना का अधिपति।

116. Bhootanand Naagkumarendra, the king of *Naag Kumar* gods has seven *anikas* (armies) and seven *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, and so on up to (7) *Gandharvanika*—singers The commanders of these armies are as follows—**(1) Daksh**—commander of foot soldiers, **(2) Ashvaraj Sugriva**—commander of horse riders, **(3) Hastiraj Suvikram**—commander of elephant riders, **(4) Shvetakanth**—commander of buffalo riders, **(5) Nandottar**—commander of charioteers, **(6) Rati**—commander of dancers and **(7) Maanas**—commander of singers

११७. (जधा धरणस्स तथा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स। ११८. जधा भूताणंदस्स तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स)।

११७. जिस प्रकार धरण की सेना और सेनापति है, उसी प्रकार दक्षिण दिशा के भवनवासी देवो के इन्द्र वेणुदेव यावत्। घोष की भी सात-सात सेनाएँ और सात-सात सेनापति है। ११८. जिस प्रकार भूतानन्द की सेना और सेनापति है, उसी प्रकार उत्तर दिशा के भवनवासी देवो के इन्द्र, वेणुदालि यावत् महाघोष की भी सात-सात सेनाएँ और सात-सात सेनापति है।

117. As Dharan has seven armies and seven commanders in the same way all *Dakshinadhipatis* (the overlords of abode dwelling gods of the south) namely Venudev and so on up to Ghosh also have seven armies and seven commanders **118.** As Bhootanand has seven armies and seven commanders in the same way all *Uttarendras* (the overlords of north) namely Venudali and so on up to Mahaghosh also have seven armies and seven commanders

११९. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवती पण्णत्ता, तं जहा– पायत्ताणिए जाव रहाणिए, णट्टाणिए, गंधव्वाणिए। हरिणेगमेसी पायत्ताणियाधिपती जाव माढरे रधाणियाधिपती, सेते णट्टाणियाहिवती, तुंबुरु गंधव्वाणियाधिपती

११९. देवेन्द्र देवराज शक्र की सात सेनाएँ और सात सेनापति है सेनाएँ–(१) पदातिसेना यावत्। (५) रथसेना, (६) नर्तकसेना, (७) गन्धर्वसेना। सेनापति–(१) हरिनैगमेषी–पदातिसेना का अधिपति यावत्। (५) माढर–रथसेना का अधिपति। (६) श्वेत–नर्तकसेना का अधिपति। (७) तुम्बुरु–गन्धर्वसेना का अधिपति।

119. Shakra Devendra, the king of gods has seven *anikas* (armies) and seven *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, and so on up to (7) *Gandharvanika*—singers The commanders of these armies are as follows—**(1) Harinaigameshi**—commander of foot soldiers, **(2) Ashvaraj Vayu**—commander of horse riders, **(3) Hastiraj Airavan**—commander of elephant riders, **(4) Daamardhi**—commander of bull riders, **(5) Mathar**—commander of charioteers, **(6) Shvet**—commander of dancers and **(7) Tumburu**—commander of singers

१२०. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता, तं जहा– पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए। लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवती जा महासेते णट्टाणियाहिवती, रते गंधव्वाणियाधिपती।

१२०. देवेन्द्र देवराज ईशान की सात सेनाएँ और सात सेनापति है–**सेनाएँ**–(१) पदातिसेना यावत्। **सेनापति**–(१) **लघुपराक्रम**–पदातिसेना का अधिपति। यावत्। (६) **महाश्वेत**–नर्तकसेना का अधिपति। (७) **रत**–गन्धर्वसेना का अधिपति।

120. Ishan Devendra, the king of gods has seven *anikas* (armies) and seven *anikadhipati* (commanders)—**Armies**—(1) *Padatanika*—foot soldiers, and so on up to (7) *Gandharvanika*—singers The commanders of these armies are as follows—**(1) Laghuparakram**—commander of foot soldiers, and so on up to **(6) Mahashvet**—commander of dancers and **(7) Rata**—commander of singers

१२१. (जधा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स। १२२. जधा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुतस्स)।

१२१. जिस प्रकार शक्र के सेना और सेनापति है, उसी प्रकार आरण आदि सभी दक्षिणेन्द्रो की सात-सात सेनाएँ और सात-सात सेनापति है। १२२. जिस प्रकार ईशान इन्द्र की सेना और सेनापति है, उसी प्रकार अच्युत आदि सभी उत्तरेन्द्रो की भी सात-सात सेनाएँ और सात-सात सेनापति है। *(स्थान ५ सूत्र ५७ से ६७ मे पाँच सेनाओ का वर्णन है)*

121. As Shakra Devendra, the king of gods has seven armies and seven commanders in the same way all overlords of south up to Aran *kalp* also have seven armies and seven commanders each **122.** As Ishan Devendra, the king of gods has seven armies and seven commanders in the same way all overlords of north up to Achyut kalp also have seven armies and seven commanders each *(Sthaan 5, aphorisms 57 to 67 describe five armies and commanders only)*

अनीकाधिपति कक्षा–पद **ANIKADHIPATI-KAKSHAA-PAD (SEGMENT OF BRIGADES)**

१२३. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाधिपतिस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा।

१२३. असुरेन्द्र, असुरकुमारराज चमर के पदातिसेना के अधिपति द्रुम के सात कक्षाएँ (वर्ग) है। जैसे पहली कक्षा, यावत् सातवी कक्षा।

123. Drum, the commander of foot soldiers of Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods, has seven *kakshaas* (brigades)—first to seventh

१२४. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाधिपतिस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता। जावतिया पढमा कच्छा तव्विगुणा दोच्चा कच्छा। जावतिया दोच्चा कच्छा तव्विगुणा तच्चा कच्छा। एवं जाव जावतिया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा।

१२४. असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर की पदातिसेना के अधिपति द्रुम की पहली कक्षा मे ६४,००० देव है। दूसरी कक्षा मे उससे दुगुने १,२८,००० देव है। तीसरी कक्षा मे उससे दुगुने २,५६,००० देव है। इसी प्रकार सातवी कक्षा तक दुगुने-दुगुने देव है।

124. In the first *kakshaa* (brigade) of Drum, the commander of foot soldiers of Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods, there are 64,000 gods In the second *kakshaa* the number of gods is double that of the first, *i e* 1,28,000 In the third *kakshaa* the number of gods is double that of the second, *i e* 2,56,000 In the same way the number continues to increase in geometric progression till the seventh *kakshaa*

१२५. एवं बलिस्सवि, णवरं–महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सिओ। सेसं तं चेव। १२६. धरणस्स एवं चेव, णवरं–अट्ठावीसं देवसहस्सा। सेसं तं चेव। १२७. जधा धरणस्स एवं जाव महाघोसस्स, णवरं–पायत्ताणियाधिपती अण्णे, ते पुव्वभणिता।

१२५. इसी प्रकार वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि की पदातिसेना के अधिपति महाद्रुम की पहली कक्षा मे ६० हजार देव है। आगे की कक्षाओ मे क्रमश दुगुने-दुगुने देव है। १२६. इसी प्रकार नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण की पदातिसेना के अधिपति भद्रसेन की पहली कक्षा मे २८ हजार देव है। आगे की कक्षाओ मे क्रमश दुगुने-दुगुने देवे है। १२७. धरण के समान ही भूतानन्द से महाघोष तक के सभी इन्द्रो के पदाति सेनापतियो की कक्षाओ की देव-सख्या है। विशेष-उनके पदातिसेनापति दक्षिण और उत्तर दिशा के भेद से भिन्न-भिन्न है, जो कि पहले बताये जा चुके है।

125. In the same way in the first *kakshaa* (brigade) of Bali, the commander of foot soldiers of Chamar Asurendra, Vairochanendra Bali, the king of *Virochana* gods, there are 60,000 gods The number progressively doubles in the following *kakshaas* **126.** In the same way in the first *kakshaa* (brigade) of Bhadrasen, the commander of foot soldiers of Dharan Naagkumarendra, the king of *Naag Kumar* gods, there are 28, 000 gods The number progressively doubles in the following *kakshaas* **127.** In the same way in the *kakshaas* (brigades) of the commanders of foot soldiers of Bhootanand to Mahaghosh, all the kings of gods, the number of gods is same as those of Dharan The number progressively doubles in the following *kakshaas* They have different commanders for south and north directions as already stated

१२८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुतस्स। णाणत्तं पायत्ताणियाधिपतीणं। ते पुव्वभणिता। देवपरिमाणं इमं–सक्कस्स चउरासीतिं देवसहस्सा, ईसाणस्स असीतिं देवसहस्साइं

जाव अच्चुतस्स लहुपरक्कमस्स दस देवसहस्सा जाव जावतिया छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा। देवा इमाए गाथाए अणुगंतव्वा—

चउरासीति असीति, बावत्तरी सत्तरी य सट्ठी य।
पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा य दससहस्सा॥१॥

१२८. देवेन्द्र, देवराज शक्र के पदातिसेना के अधिपति हरिनैगमेषी की सात कक्षाएँ हैं—पहली कक्षा यावत् सातवी कक्षा। जैसे चमर की है, उसी प्रकार यावत् अच्युत कल्प तक के सभी देवेन्द्रो के पदातिसेना के अधिपतियो की सात-सात कक्षाएँ जाननी चाहिए।

उनके पदातिसेना के अधिपतियो के नामो की जो विभिन्नता है, वह पहले कही जा चुकी है। उनकी पहली कक्षा के देवो का परिमाण इस प्रकार है-शक्र के पदातिसेना के अधिपति ८४ हजार देव है। ईशान के पदातिसेना के अधिपति ८० हजार देव है। सनत्कुमार के पदातिसेना के अधिपति ७२ हजार देव है। माहेन्द्र के पदातिसेना के अधिपति ७० हजार देव है। ब्रह्म के पदातिसेना के अधिपति ६० हजार देव है। लान्तक के पदातिसेना के अधिपति ५० हजार देव है। शुक्र के पदातिसेना के अधिपति ४० हजार देव है। सहस्रार के पदातिसेना के अधिपति ३० हजार देव है। प्राणत के पदातिसेना के अधिपति २० हजार देव है। अच्युत के पदातिसेना के अधिपति १० हजार देव है।

पहली कक्षा के देवो का परिमाण इस गाथा के अनुसार है—चौरासी हजार, अस्सी हजार, बहत्तर हजार, सत्तर हजार, साठ हजार, पचास हजार, चालीस हजार, तीस हजार, बीस हजार और दस हजार।

उक्त सर्व देवेन्द्रो की शेष कक्षाओ के देवो का प्रमाण पहली कक्षा के देवो के परिमाण से सातवीं कक्षा तक दुगुना-दुगुना है।

128. Harınaıgameshı, the commander of foot soldıers of Shakra Devendra, the kıng of gods, has seven *kakshaas* (brıgades)—first to seventh Lıke Chamar, commanders of foot soldıers of all the kıngs of gods up to Achyut *kalp* have seven *kakshaas* each

The dıfferent names of commanders of foot soldıers have already been stated The number of gods ın theır first *kakshaas* are—Under the commander of foot soldıers of Shakra there are 84,000 gods Under the commander of foot soldıers of Ishan there are 80,000 gods Under the commander of foot soldıers of Sanatkumar there are 72,000 gods Under the commander of foot soldıers of Maahendra there are 70,000 gods Under the commander of foot soldıers of Brahma there are 60,000 gods Under the commander of foot soldıers of Lantak there are 50,000 gods Under the commander of foot soldıers of Shukra there are 40,000 gods Under the commander of foot soldıers of Sahasrar there are 30,000 gods Under the commander of foot soldiers of Pranat there are 20,000 gods Under the commander of foot soldıers of Achyut there are 10,000 gods

According to this verse the number of gods in the first *kakshaas* are—eighty four thousand, eighty thousand, seventy two thousand, seventy thousand, sixty thousand, fifty thousand, forty thousand, thirty thousand, twenty thousand, and ten thousand

The number of gods in the remaining *kakshaas* of all kings of gods progressively doubles in the following *kakshaas* till the seventh *kakshaa*

वचन–विकल्प–पद VACHAN-VIKALP-PAD (SEGMENT OF CATEGORIES OF SPEECH)

१२९. सत्तविहे वयणाविकप्पे पण्णत्ते, तं जहा–आलावे, अणालावे, उल्लावे, अणुल्लावे, संलावे, पलावे, विप्पलावे।

१२९. वचन-विकल्प (बोलने के भेद) सात प्रकार के है–(१) **आलाप**–कम बोलना, प्रिय बोलना। (२) **अनालाप**–अयोग्य भाषा बोलना। (३) **उल्लाप**–ध्वनि-विकृत करके या व्यग्यपूर्वक बोलना। (४) **अनुल्लाप**–कुत्सित ध्वनि के साथ या दुष्ट वचन बोलना। (५) **संलाप**–परस्पर बातचीत करना। (६) **प्रलाप**–निरर्थक बकवाद करना। (७) **विप्रलाप**–विरुद्ध वचन बोलना।

129. *Vachan-vikalp* (categories of speech) are of seven kinds—(1) *Aalaap*—to speak less and speak sweetly, (2) *Anaalaap*—to speak improper language, (3) *Ullaap*—to distort voice or use satirical language, (4) *Anullaap*—to utter harshly or use evil language, (5) *Samlaap*—dialogue, (6) *Pralaap*—blather and (7) *Vipralaap*—to speak against or negative speech

विनय–पद VINAYA-PAD (SEGMENT OF MODESTY)

१३०. सत्तविहे विणए पण्णत्ते, तं जहा–णाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए।

१३०. विनय सात प्रकार का है–(१) **ज्ञान–विनय**–ज्ञान और ज्ञानवान् की विनय व ज्ञानियो का बहुमान करना। (२) **दर्शन–विनय**–सम्यग्दर्शन और सम्यग्दृष्टि का विनय करना। (३) **चारित्र–विनय**–चारित्र और चारित्रवान् का विनय। (४) **मनोविनय**–मन की अशुभ प्रवृत्ति रोक कर, शुभ प्रवृत्ति मे लगाना। (५) **वाग्–विनय**–वचन की अशुभ प्रवृत्ति रोकना, शुभ प्रवृत्ति मे लगाना। (६) **काय–विनय**–काय की अशुभ प्रवृत्ति रोक कर, शुभ प्रवृत्ति मे लगाना। (७) **लोकोपचार**–विनय–लोक–व्यवहार के अनुकूल सबके साथ यथायोग्य विनय व्यवहार करना।

130. *Vinaya* (modesty) is of seven kinds—(1) *Jnana-vinaya*—to show modesty and respect towards knowledge and those who have acquired knowledge, and also to honour scholarly sages (2) *Darshan-vinaya*—to show modesty and respect towards right perception/faith and those

endowed with it (3) *Chaaritra-vinaya*—to show modesty and respect towards right conduct and those endowed with it (4) *Manah-vinaya*—to restrain evil and engage in good tendencies of mind (5) *Vaag-vinaya*—to restrain evil and engage in good tendencies of speech (6) *Kaya-vinaya*—to restrain evil and engage in good tendencies of body (7) *Lokopachar-vinaya*—to be modest towards one and all following the social norms and customs

१३१. पसत्थमणविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, णिरुवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे, अभूताभिसंकणे। १३२. अपसत्थमणविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हयकरे, छविकरे, भूताभिसंकणे।

१३१. प्रशस्त मनोविनय सात प्रकार का है- (१) **अपापक-मनोविनय**-पाप-रहित निर्मल मनोवृत्ति रखना तथा शुभचिन्तन करना। (२) **असावद्य-मनोविनय**-सावद्य तथा गर्हितकार्य करने का विचार न करना। (३) **अक्रिय-मनोविनय**-मन को कायिकी, अधिकरणिकी आदि क्रियाओ मे प्रवृत्त नही करना। (४) **निरुपक्लेश-मनोविनय**-मन को क्लेश, शोक आदि मे प्रवृत्त न करना। (५) **अनास्रवकर-मनोविनय**-कर्मों का आस्रव कराने वाले हिंसादि पापो से मन को विरत रखना। (६) **अक्षयकर-मनोविनय**-प्राणियो की पीडा करने वाले कार्यों से मन को दूर रखना। (७) **अभूताभिशंकन-मनोविनय**-दूसरे जीवो को भय या शका आदि उत्पन्न करने वाले कार्यों मे मन को प्रवृत्त नही करना। १३२. अप्रशस्त मनोविनय सात प्रकार का है-(१) **पापक-अप्रशस्त मनोविनय**-पाप कार्यो को करने का चिन्तन करना। (२) **सावद्य अप्रशस्त मनोविनय**-गर्हित, लोक-निन्दित कार्यों को करने का चिन्तन करना। (३) **सक्रिय अप्रशस्त मनोविनय**-कायिकी आदि पापक्रियाओ के करने का चिन्तन करना। (४) **सोपक्लेश अप्रशस्त मनोविनय**-क्लेश, शोक आदि मे मन को लगाना। (५) **आस्रवकर अप्रशस्त मनोविनय**-कर्मों का आस्रव कराने वाले कार्यों मे मन को लगाना। (६) **क्षयिकर अप्रशस्त मनोविनय**-प्राणियो को पीडा पहुँचाने वाले कार्यों मे मन को लगाना। (७) **भूताभिशंकन अप्रशस्त मनोविनय**-दूसरे जीवो को भय, शका आदि उत्पन्न करने वाले कार्यो मे मन को लगाना।

131. *Prashast manovinaya* (noble mental modesty) is of seven kinds—(1) *Apaapak-manovinaya*—to be in a pure mental state free of sin and have noble thoughts (2) *Asavadya-manovinaya*—not to think of indulging in sinful and despicable activity (3) *Akriya-manovinaya*—not to think of indulging in physical, acquisitive and other such physical activities (4) *Nirupaklesh-manovinaya*—to avoid thoughts of pain, grief and other sad states (5) *Anasravakar-manovinaya*—to avoid thoughts of sins, like violence, that cause inflow of *karmas* (6) *Akshayakar-manovinaya*—to avoid thoughts of causing pain to living beings (7) *Abhootabhishankan-manovinaya*—to avoid thoughts of indulging in activities that terrify or confuse living beings **132.** *Aprashast manovinaya* (ignoble mental

modesty) is of seven kinds—(1) *Paapak aprashast manovinaya*—to think of indulging in sinful activities (2) *Savadya aprashast manovinaya*—to think of indulging in despicable and publicly censured activities (3) *Sakriya aprashast manovinaya*—to think of indulging in sinful physical and other such activities (4) *Sopaklesh aprashast manovinaya*—to revel in thoughts of pain, grief and other sad states (5) *Aasravakar aprashast manovinaya*—to revel in thoughts of sins, like violence, that cause inflow of karmas (6) *Kshayikar aprashast manovinaya*—to revel in thoughts of causing pain to living beings (7) *Bhootabhishankan aprashast manovinaya*—to revel in thoughts of indulging in activities that terrify or confuse living beings

१३३. पसत्थवइविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा–अपावए, असावज्जे, [अकिरिए, णिरुवक्केसे, अणण्हयकरे, अच्छविकरे], अभूताभिसकंणे। १३४. अपसत्थवइविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा–पावए, (सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हयकरे, छविकरे), भूताभिसंकणे।

१३३. प्रशस्तवाग् विनय सात प्रकार है, जैसे -(१) **अपापक–वाग्–विनय**–निष्पाप वचन बोलना। (२) **असावद्य–वाग्–विनय**–निर्दोष वचन बोलना। (३) **अक्रिय–वाग्–विनय**–पापक्रियारहित वचन बोलना। (४) **निरुपक्लेश–वाग्–विनय**–क्लेशरहित वचन बोलना। (५) **अनास्रवकर–वाग्–विनय**–कर्मो का आस्रव रोकने वाले वचन बोलना। (६) **अक्षयिकर–वाग्–विनय**–प्राणियो का विघातकारक वचन न बोलना। (७) **अभूताभिशकन–वाग्–विनय**–प्राणियो को भय शकादि उत्पन्न करने वाले वचन न बोलना। १३४. अप्रशस्त वाग्–विनय सात प्रकार का है -(१) **पापक वाग्–विनय**–पापयुक्त वचन बोलना। (२) सावद्य वाग्–विनय। (३) सक्रिय वाग्–विनय। (४) सोपक्लेश वाग्–विनय। (५) आस्रवकर वाग्–विनय। (६) क्षयिकर वाग्–विनय। (७) भूताभिशकन वाग्–विनय।

133. *Prashast vaag-vinaya* (noble vocal modesty) is of seven kinds—(1) *Apaapak-vaag-vinaya*—to speak sinless words (2) *Asavadya-vaag-vinaya*—to speak faultless words (3) *Akriya-vaag-vinaya*—to speak about sinless activity (4) *Nirupaklesh-vaag-vinaya*—to speak non-hurting words (5) *Anasravakar-vaag-vinaya*—to speak words that do not cause inflow of *karmas* (6) *Akshayakar-vaag-vinaya*—to avoid speaking words that cause pain to living beings (7) *Abhootabhishankan-vaag-vinaya*—to avoid speaking words that terrify or confuse living beings **134.** *Aprashast vaag-vinaya* (ignoble mental modesty) is of seven kinds—(1) *Paapak vaag-vinaya*—to speak sinful words (and so on) (2) *Savadya vaag-vinaya* (3) *Sakriya vaag-vinaya* (4) *Sopaklesh vaag-vinaya* (5) *Aasravakar vaag-vinaya* (6) *Kshayikar vaag-vinaya* (7) *Bhootabhishankan vaag-vinaya*. (these seven are opposite of preceding seven)

१३५. पसत्थकायविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—आउत्तं गमणं, आउत्तं ठाणं, आउत्तं णिसीयणं, आउत्तं तुअट्टणं, आउत्तं उल्लंघणं, आउत्तं पल्लंघणं, आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणता। १३६. अपसत्थकायविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्तं गमणं, (अणाउत्तं ठाणं, अणाउत्तं णिसीयणं, अणाउत्तं णिसीयणं, अणाउत्तं तुअट्टणं, अणाउत्तं उल्लंघणं, अणाउत्तं पल्लंघणं), अणाउत्त सव्विंदियजोगजुंजणता।

१३५. प्रशस्त काय विनय सात प्रकार का है–(१) **आयुक्त गमन**–यतनापूर्वक चलना। (२) **आयुक्त स्थान**–यतनापूर्वक खडे होना, कायोत्सर्ग करना। (३) **आयुक्त निषीदन**–यतनापूर्वक बैठना। (४) **आयुक्त त्वग्-वर्त्तन**–यतनापूर्वक करवट बदलना, सोना। (५) **आयुक्त उल्लंघन**–यतनापूर्वक देहली आदि को लाघना। (६) **आयुक्त प्रल्लघन**–यतनापूर्वक नाली आदि को पार करना। (७) **आयुक्त सर्वेन्द्रिय योगयोजना**–यतनापूर्वक सब इन्द्रियो की प्रवृत्ति करना। **१३६.** अप्रशस्त कायविनय सात प्रकार का है–(१) अनायुक्त गमन। (२) अनायुक्त स्थान। (३) अनायुक्त निषीदन। (४) अनायुक्त त्वग्वर्तन। (५) अनायुक्त उल्लघन। (६) अनायुक्त प्रल्लघन। (७) अनायुक्त सर्वेन्द्रिय योगयोजना।

135. *Prashast kaaya-vinaya* (noble physical modesty) is of seven kinds—(1) *Aayukt gaman*—to move carefully (2) *Aayukt sthaan*—to stand carefully, to perform *kaayotsarg* (3) *Aayukt nishidan*—to sit carefully (4) *Aayukt tvag-vartan*—to turn and sleep carefully (5) *Aayukt ullanghan*—to step over raised obstacles carefully (like door step) (6) *Aayukt prallanghan*—to step over grooved obstacles carefully (like a drain) (7) *Aayukt sarvendriya yogayojana*—to employ all sense-organs carefully **136.** *Aprashast kaaya-vinaya* (ignoble vocal modesty) is of seven kinds—(1) *Anaayukt gaman* (2) *Anaayukt sthaan* (3) *Anaayukt nishidan* (4) *Anaayukt tvag-vartan* (5) *Anaayukt ullanghan* (6) *Anaayukt prallanghan* (7) *Anaayukt sarvendriya yogayojana* (these are all careless movements)

१३७. लोगोवयारविणए सत्तविधे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भासवत्तित्तं, परच्छंदाणुवत्तित्तं, कज्जहेउं, कतपडिकतिता, अत्तगवेसणता, देसकालण्णता, सव्वत्थेसु अपडिलोमता।

१३७. लोकोपचार-(लोको के साथ व्यवहार की विधि) विनय सात प्रकार का है–(१) **अभ्यासवर्त्तित्व**–श्रुतग्रहण करने के लिए गुरु के समीप बैठना, सद्गुण ग्रहण करने मे प्रयत्नशील रहना। **परछन्दानुवर्त्तित्व**–आचार्यादि के अभिप्राय के अनुसार चलना। (३) **कार्यहेतु**–'इसने मुझे ज्ञान दिया' इस कृतज्ञ भाव के साथ विनय करना। (४) **कृतप्रतिकृतिता**–प्रत्युपकार की भावना से विनय आदि सद्व्यवहार करना। (५) **आर्तगवेषणता**–रोग पीडित के लिए औषध आदि की सुव्यवस्था रखना। (६) **देश-कालज्ञता**–देश-काल के अनुसार अवसरोचित व्यवहार करना। (७) **सर्वार्थ-अप्रतिलोमता**–सब कार्यों मे अनुकूल आचरण करना। प्रतिकूल व अप्रिय आचरण न करना।

137. *Lokopachar-vinaya* is of seven kinds—(1) *Abhyasavarttitva*—to sit with the guru for learning scriptures and pursue acquisition of virtues (2) *Parachhandanuvarttitva*—to follow the desire and command of *acharya* and other seniors (3) *Karyahetu*—to be humble with a feeling of gratitude that he has taught me. (4) *Kritpratikritita*—to respond for favours with modesty and good behaviour (5) *Artagaveshanata*—to keep proper arrangements of medicines and other needs of the ailing (6) *Desh-kaalajnata*—to mould behaviour according to time and place (7) *Sarvarth apratilomata*—to conduct oneself properly and pleasantly in all activity To avoid unpleasant and improper demeanour

विवेचन—जैनाचार्यो ने 'विनय' के दो अर्थ किये है–आत्मा से कर्म पुद्गलो को दूर हटाना, विनयन या विनाश करना। इस परिभाषा के अनुसार ज्ञान-दर्शन आदि विनय का अर्थ है, ज्ञान आदि की सम्यग् आराधना करते हुए कर्मो को दूर हटाना। दूसरी परिभाषा है–भक्ति बहुमान आदि करना। इस परिभाषा के अनुसार ज्ञान-दर्शन आदि विनय का अर्थ है- ज्ञान एव ज्ञानियो की भक्ति बहुमान, सेवा व उसकी प्रभावना करना।

'प्रशस्त' का अर्थ है, मन, वचन आदि की उचित शुभ प्रवृत्ति व अशुभ से निवृत्ति। 'विनय' जीवन व्यवहार की कला है, यह साधु और गृहस्थ सभी के लिए उपयोगी है। औपपातिक सूत्र मे तप अधिकार मे इनके विविध भेदो का वर्णन है।

Elaboration—Jain *acharyas* have given two interpretations of the term *vinaya* One is to remove and destroys (*vinayan* or *vinash*) *karma* particles from the soul According to this interpretation the meaning of *jnana, darshan* and other types of *vinaya* is to shed *karmas* through right and proper pursuit of knowledge and other such activities The second interpretation is to worship, respect and honour with modesty According to this interpretation the meaning of *jnana, darshan* and other types of *vinaya* is to worship, respect, honour and serve knowledge and those endowed with knowledge

Prashast means gaining noble/pious bent of mind, speech and body and avoiding aprashast or ignoble/evil one *Vinaya* is the art of behaviour in life and it is useful for both ascetic and householder Various classifications of *vinaya* are described in *Tap Adhikar* of *Aupapatik Sutra*

समुद्घात-पद SAMUDGHAT-PAD (SEGMENT OF SAMUDGHAT)

१३८. सत्त समुग्घाता पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेजससमुग्घाए, आहारगसमुग्घाए, केवलिसमुग्घाए।

१३८. समुद्घात सात है-(१) **वेदनासमुद्घात**-वेदना से पीडित होने पर कुछ आत्म-प्रदेशो का बाहर निकलना। (२) **कषायसमुद्घात**-तीव्र क्रोधादि की दशा मे कुछ आत्म-प्रदेशो का बाहर निकलना। (३) **मारणान्तिकसमुद्घात**-मरण से पूर्व कुछ आत्म-प्रदेशो का बाहर निकलना। (४) **वैक्रियसमुद्घात**-विक्रिया करते समय मूल शरीर को नही छोडते हुए उत्तर शरीर मे जीवप्रदेशो का प्रवेश करना। (५) **तैजस्समुद्घात**-तेजोलेश्या प्रकट करते समय कुछ आत्म-प्रदेशो का बाहर निकलना। (६) **आहारकसमुद्घात**-समीप मे केवली के न होने पर चतुर्दशपूर्वी साधु की शका के समाधानार्थ मस्तक से एक श्वेत पुतले के रूप मे कुछ आत्म-प्रदेशो का केवली के निकट जाना और वापिस आना। (७) **केवलिसमुद्घात**-आयुष्य के अन्तर्मुहूर्त रहने पर तथा वेदनीय आदि तीन कर्मों की स्थिति बहुत अधिक होने पर उसके समीकरण करने के लिए दण्ड, कपाट आदि के रूप मे जीव-प्रदेशो का शरीर से बाहर फैलना। इसमे केवल आठ समय लगते है। केवलिसमुद्घात का वर्णन देखे, अनुयोगद्वार भाग-१, सूत्र १०८। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ४५६)*

138. *Samudghat* (bursting, the process employed for transmutation and transformation) is of seven kinds—(1) *Vedana Samudghat*—Bursting forth of some soul-space-points due to intensity of pain (2) *Kashaya Samudghat*—Bursting forth of some soul-space-points due to intensity of passions (3) *Maranantik Samudghat*—Bursting forth of some soul-space-points before the moment of death (4) *Vaikriya Samudghat*—To cause some soul-space-points to enter a transmuted body while performing transmutation without completely leaving the original body (5) *Taijas Samudghat*—Bursting forth of some soul-space-points while manifesting *tejoleshya* (fire-power) (6) *Aharak Samudghat*—When a *Kevali* is not around to resolve some doubt, a *Chaturdash-purvi* ascetic sends forth some soul-space-points in the form of a telemigratory body (*Aharak Sharira*) to a distant *Kevali* to get an answer This process is Aharak Samudghat (7) *Kevali Samudghat*—When one *Antarmuhurt* of life span is left but the remaining quanta of the three *karmas* including *Vedaniya* is proportionately high, in order to balance the difference this process is employed by bursting forth the soul-space-points to acquire staff-shape and other shapes It lasts only eight *Samaya* (for detailed description of Kevali Samudghat see Illustrated Anyuogadvar Sutra, part-1, aphorism-108) *(Hindi Tika, part-2, p 456)*

१३९. मणुस्साणं सत्त समुग्घाता पण्णत्ता एवं चेव।

१३९. मनुष्यों के भी इसी प्रकार ये ही सातो समुद्घात होते है।

139. In the same way *manushyas* (human beings) also have these seven *Samudghats*

प्रवचन–निह्नव–पद PRAVACHAN-NIHNAVA-PAD
(SEGMENT OF MENDACIOUS SECEDER)

१४०. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणणिण्हगा पण्णत्ता, तं जहा– बहुरता, जीवपएसिया, अवत्तिया, सामुच्छेइया, दोकिरिया, तेरासिया, अबद्धिया। १४१. एएसि णं सत्तण्हं पवयणणिण्हगाणं सत्त धम्मायरिया हुत्था, तं जहा– जमाली, तीसगुत्ते, आसाढे, आसमित्ते, गंगे, छलुए, गोट्ठामाहिले।

१४०. श्रमण भगवान महावीर के तीर्थ मे सात प्रवचननिह्नव (आगम विपरीत प्ररूपणा करने वाले) हुए है–(१) बहुरत, (२) जीव प्रादेशिक, (३) अव्यक्तिक, (४) सामुच्छेदिक, (५) द्वैक्रिय, (६) त्रैराशिक, (७) अबद्धिक। १४१. इन सात प्रवचन-निह्नवो के सात धर्माचार्य थे–(१) जमाली, (२) तिष्यगुप्त, (३) आषाढभूति, (४) अश्वमित्र, (५) गग, (६) षडुलूक, (७) गोष्ठामाहिल।

140. In the *Tirtha* (order) of Shraman Bhagavan Mahavir there were seven *Pravachan-nihnavas* (mendacious seceders or doctrines or sects antithetical to *Agams*)—(1) Bahurat, (2) Jivapradeshik, (3) Avyaktik, (4) Samuchchhedik, (5) Dvaikriya, (6) Trairashik and (7) Abaddhik **141.** These seven *Pravachan-nihnavas* (sects) had seven *dharmacharyas* (religious preceptors)—(1) Jamali, (2) Tishyagupta, (3) Ashadhabhuti, (4) Ashvamitra, (5) Gang, (6) Shadulak and (7) Goshthamahil

१४२. एतेसि णं सत्तण्हं पवयणणिण्हगाणं सत्तउप्पत्तिणगरा हुत्था, तं जहा–

सावत्थी उसभपुरं, सेयविया मिहिलउल्लगातीरं।
पुरिमंतरंजि दसपुरं, णिण्हगउप्पत्तिणगराइं॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

१४२. इन सात प्रवचन-निह्नवो की उत्पत्ति सात नगरो मे हुई (१) श्रावस्ती, (२) ऋषभपुर, (३) श्वेतविका, (४) मिथिला, (५) उल्लुकातीर, (६) अन्तरजिका, (७) दशपुर।

142. These seven *Pravachan-nihnavas* originated in seven cities—(1) Shravasti, (2) Rishabhapur, (3) Shvetavika, (4) Mithila, (5) Ullukatira, (6) Antaranjika and (7) Dashapur

अनुभाव–पद ANUBHAAVA-PAD
(SEGMENT OF FRUITS OF KARMA)

१४३. सातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा–मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा, (मणुण्णा गंधा, मणुण्णा रसा), मणुण्णा फासा, मणोसुहता, वइसुहता। १४४. असातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा–अमणुण्णा सद्दा, (अमणुण्णा रूवा, अमणुण्णा गंधा, अमणुण्णा रसा, अमणुण्णा फासा, मणोदुहता), वइदुहता।

१४३. साता-वेदनीय कर्म का अनुभाव (सुखरूप फल-भोग) सात प्रकार का है-(१) मनोज्ञ शब्द, (२) मनोज्ञ रूप, (३) मनोज्ञ गन्ध, (४) मनोज्ञ रस, (५) मनोज्ञ स्पर्श, (६) मन सुख, (७) वचन सुख। १४४. असातावेदनीय कर्म का अनुभाव (दु:ख रूप फल भोग) सात प्रकार का है-(१) अमनोज्ञ शब्द, (२) अमनोज्ञ रूप, अमनोज्ञ गन्ध, (४) अमनोज्ञ रस, (५) अमनोज्ञ स्पर्श, (६) मनोदु:ख, (७) वचोदु:ख।

143. The *anubhaava* (fruits) of *Saata-vedaniya karma* (*karma* responsible for experience of pleasure) is of seven kinds—(1) *manojna shabd* (pleasant sound), (2) *manojna rupa* (pleasant appearance), (3) *manojna gandh* (pleasant smell), (4) *manojna rasa* (pleasant taste), (5) *manojna sparsh* (pleasant touch), (6) *manah sukha* (mental pleasure) and (7) *vachan sukha* (vocal pleasure) **144.** The *anubhaava* (fruits) of *Asaata-vedaniya karma* (*karma* responsible for experience of misery) is of seven kinds—(1) *amanojna shabd* (unpleasant sound), (2) *amanojna rupa* (unpleasant appearance), (3) *amanojna gandh* (unpleasant smell), (4) *amanojna rasa* (unpleasant taste), (5) *amanojna sparsh* (unpleasant touch), (6) *manah duhkha* (mental misery) and (7) *vachan duhkha* (vocal misery)

नक्षत्र-पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

१४५. महाणक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते। १४६. अभिईयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिय पण्णत्ता, तं जहा-अभिई, सवणो, धणिट्ठा, सतभिसया, पुव्वभद्दवया, उत्तरभद्दवया, रेवती। १४७. अस्सिणियादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा-अस्सिणी, भरणी, कित्तिया, रोहिणी, मिगसिरे, अद्दा, पुणव्वसू।

१४५. मघा नक्षत्र के सात तारे है। १४६. अभिजित् आदि सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले है-(१) अभिजित्, (२) श्रवण, (३) धनिष्ठा, (४) शतभिषक्, (५) पूर्वभाद्रपद, (६) उत्तरभाद्रपद, (७) रेवती। १४७. अश्विनी आदि सात नक्षत्र दक्षिणद्वार वाले है-(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) मृगशिर, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु।

145. Magha *nakshatra* (Regulus, the 10th) has seven stars **146.** Seven *nakshatras* including Abhijit are with *Purvadvar* (when going towards east is auspicious)—(1) Abhijit (Lyrae, the 22nd), (2) Shravan (Alpha Aquilae, the 23rd), (3) Dhanishtha (Belta Delphini, the 24th), (4) Shat Bhishag (Lambda Aquarii, the 25th), (5) Purva Bhadrapad (Alpha Pegasi, the 26th), (6) Uttara Bhadrapad (Gama Pegasi, the 27th) and (7) Revati (Zeta Piscium, the 28th) **147.** Seven *nakshatras* including Ashvini are with *Dakshin-dvar* (when going towards south is auspicious)—(1) Asvini (Beta Arietis, the 1st), (2) Bharani (35 Arietis, the 2nd), (3) Krittika (Eta Tauri or Pleiades, the 3rd), (4) Rohini (Aldebaran, the 4th), (5) Mrigashirsha

(Lambda Orionis, the 5th), (6) Ardra (Alpha Orionis, the 6th), and (7) Punarvasu (Beta Geminorum, the 7th)

१४८. पुस्सादिया णं सत्त णक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—पुस्सो, असिलेसा, मघा, पुव्वाफग्गुणी, उत्तराफग्गुणी, हत्थो, चित्ता। १४९. सातियाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—साती, विसाहा, अणुराहा, जेट्ठा, मूलो, पुव्वासाढा, उत्तरासाढा।

१४८. पुष्य आदि सात नक्षत्र पश्चिमद्वार वाले है-(१) पुष्य, (२) अश्लेषा, (३) मघा, (४) पूर्वफाल्गुनी, (६) हस्त, (७) चित्रा। १४९. स्वाति आदि सात नक्षत्र उत्तरद्वार वाले है-(१) स्वाति, (२) विशाखा, (३) अनुराधा, (४) ज्येष्ठा, (५) मूल, (६) पूर्वाषाढा, (७) उत्तराषाढा।

148. Seven *nakshatras* including Pushya are with *Pashchim-dvar* (when going towards west is auspicious)—(1) Pushya (Delta Cancri, the 8th), (2) Ashlesha (Alpha Hydrae, the 9th), (3) Magha (Regulus, the 10th), (4) Purva Phalguni (Delta Leonis, the 11th), (5) Uttara Phalguni (Beta Leonis, the 12th), (6) Hasta (Delta Corvi, the 13th) and (7) Chitra (Spica Virginis, the 14th) **149.** Seven nakshatras including Swati are with Uttar-dvar (when going towards north is auspicious)—(1) Swati (Arcturus, the 15th), (2) Vishakha (Alpha Librae, the 16th), (3) Anuradha (Delta Scorpii, the 17th), (4) Jyeshtha (Antares, the 18th), (5) Mula (Lambda Scorpii, the 19th), (6) Purva Ashadha (Delta Sagittarii, the 20th) and (7) Uttara Ashadha (Sigma Sagittarii, the 21st)

विवेचन—जैन आगमो के अनुसार माना जाता है कि जिस दिशा का जो नक्षत्र हो, उस नक्षत्र के दिन उस दिशा मे यात्रा करने पर नक्षत्र सामने रहता है। सन्मुख नक्षत्र कार्य की सफलता व सिद्धि मे सहायक बनता है।

Elaboration—According to Jain *Agams* there is a belief that when moving on a day assigned to a particular constellation in the direction assigned to that particular constellation one faces that particular constellation This facing constellation is auspicious and augurs success

कूट-पद KOOT-PAD (SEGMENT OF PEAKS)

१५०. जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे सोमणसे या, बोद्धव्वे मंगलावतीकूडे।
देवकुरु विमल कंचण, विसिट्ठकूडे य बोद्धव्वे॥१॥ (संग्रहणी-गाथा)

१५१. जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धे य गंधमायण, बोद्धव्वे गंधिलावतीकूडे।
उत्तरकुरु फलिहे, लोहितक्खे आणंदणे चेव॥१॥

१५०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे सौमनस वक्षस्कारपर्वत पर सात कूट है-(१) सिद्धकूट, (२) सौमनसकूट, (३) मगलावतीकूट, (४) देवकुरुकूट, (५) विमलकूट, (६) कांचनकूट, (७) विशिष्टकूट।

१५१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे गन्धमादन वक्षस्कारपर्वत पर सात कूट है-(१) सिद्धकूट, (२) गन्धमादनकूट, (३) गन्धिलावतीकूट, (४) उत्तरकुरुकूट, (५) स्फटिककूट, (६) लोहिताक्षकूट, (७) आनन्दनकूट।

150. In Jambu Dveep on the Saumanas *Vakshaskar* mountain there are seven *koots* (peaks)—(1) Siddhakoot, (2) Saumanas-koot, (3) Mangalavatikoot, (4) Devakurukoot, (5) Vimal-koot, (6) Kaanchan-koot and (7) Vishishtakoot

151. In Jambu Dveep on the Gandhamadan *Vakshaskar* mountain there are seven koots (peaks)—(1) Siddhakoot, (2) Gandhamadan-koot, (3) Gandhilavatikoot, (4) Uttarakurukoot, (5) Sphatik-koot, (6) Lohitaksh-koot and (7) Anandan-koot

कुलकोटी–पद KULAKOTI-PAD (SEGMENT OF SPECIES)

१५२. बिइंदियाणं सत्त जाति–कुलकोडि–जोणीपमुह–सयसहस्सा पण्णत्ता।

१५२. द्वीन्द्रिय जाति की सात लाख योनि प्रमुख कुलकोटि है।

152. *Dvindriya* (two-sensed beings) have seven lac (hundred thousand) species (*jati kulakoti*) in their genuses (*yoni pramukh*)

विवेचन–योनि का अर्थ है–उत्पत्ति स्थान। जाति कुलकोटि का अर्थ है, उसमे उत्पन्न होने वाले जीवो के विभिन्न प्रकार व कुल। जैसे गोबर मे अनेक जाति के कृमि उत्पन्न होते है। उन सबको सामूहिक रूप मे कुल कहते है। वृत्तिकार के अनुसार द्वीन्द्रिय जीवो की योनियाँ दो लाख और कुल कोटियाॅ सात लाख है। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ)*

Elaboration—*Yoni* means place of birth or genus Jati kulakoti means various species in that particular *jati* or class For example numerous species of worms are born in cow dung, they are collectively called *kula* According to the commentator (*Vritti*) two-sensed beings have two lac genuses and seven lac species

पापकर्म–पद PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMA)

१५३. जीवा णं सत्तट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा–णेरइयनिव्वत्तिते, (तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिते, तिरिक्खजोणिणीणिव्वत्तिते, मणुस्सणिव्वत्तिते, मणुस्सीणिव्वत्तिते), देवणिव्वत्तिते, देवीणिव्वत्तिते। एवं–चिण–(उवचिण–बंध–उदीर–वेद तह) णिज्जरा चेव।

१५३. जीवो ने सात स्थानो से निर्वर्तित पुद्गलो का पापकर्मरूप से सचय किया है, करते है और करेगे– (१) नैरयिक निर्वर्तित पुद्गलो का, (२) तिर्यग्योनिक (तिर्यंच) निर्वर्तित पुद्गलो का, (३) तिर्यग्योनिकी (तिर्यंचनी) निर्वर्तित पुद्गलो का, (४) मनुष्य निर्वर्तित पुद्गलो का, (५) मानुषी निर्वर्तित पुद्गलो का, (६) देव निर्वर्तित पुद्गलो का, (७) देवी निर्वर्तित पुद्गलो का। इसी प्रकार जीवो ने सात स्थानो से निर्वर्तित पुद्गलो का पापकर्मरूप से उपचय, बन्ध, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, करते है और करेगे।

153. All beings did, do and will acquire (*sanchit*) *karma* particles in the form of demeritorious *karmas* in the past, present and future respectively seven ways—(1) *nairayik nirvartit* (earned as infernal beings), (2) *tiryagyonik nirvartit* (earned as male animals), (3) *tiryagyoniki nirvartit* (earned as female animals), (4) *manushya nirvartit* (earned as male human beings), (5) *maanushi nirvartit* (earned as female human beings), (6) *deva nirvartit* (earned as male divine beings) and (7) *devi nirvartit* (earned as female divine beings)

In the same way all beings did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the acquired *karma* particles in the past, present and future respectively in aforesaid seven ways

पुद्गल–पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

१५४. सत्तपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता। १५५. सत्तपएसोगाढा पोग्गला जाव सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

१५४. सात प्रदेश वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। १५५ सात आकाश प्रदेशो मे अवगाहन करने वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। सात समय की स्थिति वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। सात गुण वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त है।

इसी प्रकार शेष वर्ण तथा गन्ध, रस और स्पर्शो के सात गुण वाले पुद्गलस्कन्ध अनन्त–अनन्त है।

154. There are infinite *saat pradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of seven ultimate particles) **155.** There are infinite *saat pradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles occupying seven space-points). There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with stability of seven *Samayas* There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with seven units of the attribute of black appearance

In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with seven units of each of the remaining attributes of smell, taste, and touch

॥ सप्तम स्थान समाप्त ॥

● END OF THE SEVEN STHAAN ●

अष्टम स्थान

अध्ययन सार

आठवे स्थान मे आठ की सख्या से सम्बन्धित विषयो का सकलन है। जैसे--जीव विज्ञान, गण व्यवस्था, ज्योतिष, आयुर्वेद, भूगोल आदि। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण वर्णन आलोचना-पद मे किया गया है। वहाँ बताया गया है कि सरल आत्मा माया का आचरण नही करता, जबकि कुटिल व्यक्ति माया को अपनी चतुरता समझता है। जिसके मन मे पाप के प्रति ग्लानि होती है, धर्म की आस्था होती है और कर्म-फल के सिद्धान्त मे विश्वास होता है, वह माया करके प्रसन्न नही होता। मायाचारी व्यक्ति दोषो का सेवन करके भी उनको छिपाने का प्रयत्न करता है। उसे अनेक प्रकार के भय सताते रहते है। मायावी व्यक्ति को सचेत करने के लिए बताया है कि वह इस लोक मे निन्दित होता है, परलोक मे भी निन्दित होता है और यदि देवलोक मे उत्पन्न होता है, तो वहाँ भी अन्य देवो के द्वारा तिरस्कार ही पाता है। वहाँ से च्यवकर मनुष्य होता है तो दीन-दरिद्र कुल मे उत्पन्न होता है और वहाँ भी तिरस्कार-अपमानपूर्ण जीवन-यापन करके अन्त मे दुर्गतियो मे परिभ्रमण करता है।

इसके विपरीत अपने दोषो की आलोचना करने वाला दोनो लोको मे सुखी होता है।

मायाचारी की मन स्थिति का चित्रण करते हुए बताया गया है कि वह अपने मायाचार को छिपाने के लिए भीतर ही भीतर लोहे, ताँबे, सीसे, सोने, चाँदी आदि को गलाने की भट्टियो के समान, कुभार के आपाक (आवे) के समान और ईंटो के भट्टे के समान निरन्तर सतप्त रहता है।

मायाचार के महान् दोषो को बतलाने का उद्देश्य यही है कि साधक पुरुष मायाचार न करे। मायाचार का यह प्रकरण सरलता के लिए गहरी प्रेरणा देता है।

गणि-सम्पदा-पद मे बताया है कि गण-नायक मे आचार-सम्पदा, श्रुत-सम्पदा आदि आठ सम्पदाओ का होना आवश्यक है। आलोचना करने वालो को प्रायश्चित्त देने वाले मे भी अपरिस्रावी आदि आठ गुणो का होना आवश्यक है।

केवलि-समुद्घात के आठ समयो का वर्णन, आठ कृष्णराजियो का वर्णन, आठ प्रकार के अक्रियावादियो का, आठ प्रकार की आयुर्वेद-चिकित्सा का, आठ पृथिवियो का वर्णन भी द्रष्टव्य है।

इस स्थान के प्रारम्भ मे एकल-विहार करने वाले साधु मे श्रद्धा, सत्य, मेधा, बहुश्रुतता आदि आठ गुणो की योग्यता का मानदण्ड बताया है।

EIGHTH STHAAN (PLACE NUMBER EIGHT)

INTRODUCTION

The eighth Sthaan compiles things related to the numeral eight. The topics include biology, group management, astrology, medicine, geography etc Most important discussion is in the *Alochana* (criticism) segment It is stated there that a simple soul does not indulge in deceit whereas an evil soul considers deceit to be his cleverness A person with a feeling of remorse for sins, faith in religion and belief in doctrine of karma is never happy indulging in deceit A deceitful person tries to conceal his faults after committing He is oppressed with numerous fears As warnings to a deceitful person it is stated that he is cursed in this as well as the next world Even when he reincarnates in the divine realm he is insulted by other gods When he descends to reincarnate as a human being again, he is born in a poor family and after leading a life filled with rejection and insults he continues to suffer in cycles of rebirth

As against this a person who criticizes and repents for his faults, attains happiness in both the worlds

Describing the mental state of a treacherous person, it is shown that in order to conceal his deceit he continuously remains seething inside like furnaces meant for melting iron, copper, gold and silver and like potter's and brick-maker's kilns

The purpose of vividly narrating the grave faults of treachery is to ensure that an aspirant avoids practicing deceit This section about deceit provides profound inspiration to remain simple

Gani-sampada-pad conveys that it is imperative that a head of a *gana* (group of ascetics) be a person endowed with eight kinds of wealth (virtues) including wealth of conduct and wealth of scriptures A person who prescribes atonement to the repenting should also necessarily have eight kinds of wealth including *aparisravi*

The descriptions of eight *Samayas* of *Kevali Samudghat*, eight levels of darkness, *Akriyavadis*, eight kinds of *Ayurvedic* methods of treatment and eight prithvis are also worth studying

At the beginning of this *Sthaan* the yardstick of eight virtues of an ascetic indulging in solitary practices have been mentioned They include faith, truthfulness, intelligence and scholarship ●●

अष्टम स्थान
EIGHTH STHAAN (Place Number Eight)

***एकलविहार प्रतिमा–पद* EKAL-VIHAR-PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SOLITARY STAY)**

१. अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, तं जहा–सड्ढी पुरिसजाते, सच्चे पुरिसजाते, मेहावी पुरिसजाते, बहुस्सुते पुरिसजाते, सत्तिमं, अप्पाधिगरणे, धितिमं, वीरियसंपण्णे।

१. आठ स्थानो (गुणो) से सम्पन्न अणगार एकाकी विहार प्रतिमा को स्वीकार कर विहार करने के योग्य होता है। जैसे–(१) श्रद्धावान् पुरुष, (२) सत्यवादी पुरुष, (३) मेधावी पुरुष, (४) बहुश्रुत पुरुष, (५) शक्तिमान् पुरुष, (६) अल्पाधिकरण पुरुष, (७) धृतिमान् पुरुष, (८) वीर्यसम्पन्न पुरुष।

1. An ascetic endowed with eight *sthaans* (qualities) is qualified to accept *ekal-vihar pratima* (special ascetic-practice of staying in solitude)—(1) *Shraddhavan purush* (person with faith), (2) *Satyavadi purush* (truthful person), (3) *Medhavi purush* (intelligent person), (4) *Bahushrut purush* (scholarly person), (5) *Shaktiman purush* (powerful person), (6) *Alpadhikaran purush* (strife-less person), (7) *Dhritiman purush* (patient person) and (8) *Viryasampanna purush* (enthusiastic person)

विवेचन–गुरु व सघ की आज्ञा लेकर अकेला विहार करते हुए आत्म–साधना करने का अभिग्रह **'एकल विहार प्रतिमा'** है। साधु तीन अवस्थाओ मे अकेला विचर सकता है–(१) एकल विहार प्रतिमा स्वीकार करने पर। (२) जिनकल्प स्वीकार करने पर। (३) मासिकी आदि भिक्षुप्रतिमाएँ स्वीकार करने पर।

इनमे से प्रस्तुत सूत्र मे एकल–विहार–प्रतिमा स्वीकार करने की योग्यता के आठ अग बताये गये है–(१) **श्रद्धावान्**–अचल सम्यक्त्वी और दृढ चारित्रवान्। (२) **सत्यवादी**–स्वीकृत प्रतिज्ञा पालने मे दृढ एव अर्हत्प्ररूपित तत्त्वो का कथन करने सत्यवादी मे। (३) **मेधावी**–श्रुतग्रहण की प्रखर बुद्धि से युक्त एव विवेकवान्। (४) **बहुश्रुत**–कम से कम नौ–दश पूर्व का ज्ञाता। (५) **शक्तिमान्**। शक्तिमान होने की पाँच कसौटियाँ है–(१) तपस्या, छह मास तक भोजन न मिलने पर भी जो भूख से पराजित न हो। (२) सत्त्व, भय और निद्रा को जीतने का अभ्यास 'सत्त्व' है। इसके लिए उसे सब साधुओं के सो जाने पर क्रमश उपाश्रय के भीतर, दूसरी बार उपाश्रय के बाहर, तीसरी बार किसी चौराहे पर, चौथी बार सूने घर में और पाचवी बार श्मशान मे रातभर कायोत्सर्ग करना पडता है। (३) सूत्र–भावना, वह सूत्र के परावर्तन से उच्छ्वास, घडी, मुहूर्त आदि काल को सूर्य–गति आदि के बिना जानने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। (४) एकत्व, वह आत्मा को शरीर से भिन्न अखण्ड चैतन्यपिण्ड का ज्ञाता हो जाता है।

(५) बल, वह मानसिक बल को इतना विकसित कर लेता है कि भयकर उपसर्ग आने पर भी वह उनसे चलायमान नही होता है। जो साधक जिनकल्प-प्रतिमा स्वीकार करता है, उसके लिए उक्त पाँचो कसौटियो मे सफल होना आवश्यक है। (६) **अल्पाधिकरण**–जो उपशान्त कलह की उदीरणा तथा नये कलहो का उद्भावक नही हो। (७) **धृतिमान्**–जो रति-अरति मे समभाव रखे एव अनुकूल-प्रतिकूल उपसर्गो को सहन करने मे धैर्यवान् हो। (८) **वीर्यसम्पन्न**–स्वीकृत साधना मे निरन्तर उत्साह बनाये रखे।

Elaboration—*Ekal-vihar pratima* is to resolve to do spiritual practices in solitude and to move alone after seeking due permission from the guru and *Sangh* An ascetic can move alone under three conditions—(1) on accepting *ekal-vihar pratima*, (2) on accepting *Jina-kalp* and (3) on accepting *Masiki* or other *Bhikshu pratimas* (special ascetic practices)

Here eight qualifications of accepting *ekal-vihar pratima* have been listed—(1) *Shraddhavan*—person with unwavering righteousness and impeccable conduct (2) *Satyavadi*—resolute in observing accepted vows and veracious in stating the fundamentals propagated by the *Arhat* (3) *Medhavi*—sagacious and acutely sharp and intelligent in absorbing knowledge from scriptures (4) *Bahushrut*—scholar of at least nine to ten *Purvas* (5) *Shaktiman*—there are five yardsticks of being powerful—(i) *Austerity* related should not be overwhelmed by hunger even if he does not get food for six months (ii) *Sattva* related the practice to win over fear and sleep is called *sattva* For this the aspirant has to practice doing one night Kayotsarg progressively first at the place of stay, then outside the place of stay, then at some crossing, then in some abandoned house and lastly at cremation ground (iii) *Sutra-bhaavana* the aspirant acquires with the help of *Sutra-paravartan* (repetition of aphorisms or mantra chanting) the capacity to know different units of time, such as *Uchchhavas* (one exhale), *Ghadi* (quarter of an hour) and *Muhurt* (48 minutes), without the aid of movement of the sun or other such measure (iv) *Ekatva* the aspirant attains self realization and experiences that soul is an indivisible unit of sentience different from the physical body (v) *Bal* the aspirant develops so great a mental strength that gravest of afflictions fails to move him It is necessary for an aspirant who desires to accept the *Jina-kalp pratima* to pass the aforesaid five tests (6) *Alpadhikaran*—an aspirant who does not fructify or precipitate the pacified *karmas* responsible for strife and does not trigger new strife (7) *Dhritiman*—an aspirant who is detached in indulgence and non-indulgence (*rati-arati*) as well as patient in enduring

pleasant and unpleasant afflictions (8) *Viryasampanna*—an aspirant who is ever enthusiastic in observing the accepted spiritual practices

(**Note :** All beings in the universe are included in these eight classes)

योनि–संग्रह–पद YONI-SANGRAHA-PAD (SEGMENT OF PLACE OF ORIGIN)

२. अट्ठविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते, तं जहा–अंडगा, पोतगा, [जराउजा, रसजा, संसेयगा, संमुच्छिमा], उब्भिगा, उववातिया।

२. योनि–संग्रह (उत्पत्ति स्थान) आठ प्रकार का है–(१) अण्डज, (२) पोतज, (३) जरायुज, (४) रसज, (५) सस्वेदज, (६) सम्मूर्च्छिम, (७) उद्भिज्ज, (८) औपपातिक।

2. *Yoni sangraha* (places of origin) are of eight kinds—(1) *Andaj*, or born from an egg, as are birds, reptiles, etc (2) *Potaj* or born as fully formed infants, as are elephants and tigers (3) *Jarayuj*, or placental, such as man, cow etc (4) *Rasaj* or born out of liquids including milk, curd, oil etc (5) *Samsvedaj*, or born out of sweat, such as louse, nit, etc (6) *Sammoorchanaj*, or of asexual origin, such as worms (7) *Udbhij*, or those that burst out of the earth when born, such as *khanjanak* (8) *Aupapatik*, or born instantaneously, such as gods

***गति–आगति–पद* GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF BIRTH FROM AND TO)**

३. अंडगा अट्ठगतिया अट्ठागतिया पण्णत्ता, तं जहा–अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा, पोतएहिंतो वा, (जराउजेहिंतो वा, रसजेहिंतो वा, संसेयगेहिंतो वा, संमुच्छिमेहिंतो वा, उब्भिएहिंतो वा), उववातिएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा, पोतगत्ताए वा, (जराउजत्ताए वा, रसजत्ताए वा, संसेयगत्ताए वा, संमुच्छिमत्ताए वा, उब्भियत्ताए वा), उववातियत्ताए वा गच्छेज्जा।

४. एवं पोतगावि जराउजावि सेसाणं गतिरागती णत्थि।

३. अण्डज जीव आठ गतिक और आठ आगतिक होते है। जैसे–

अण्डज जीव अण्डजों मे उत्पन्न होता हुआ अण्डजो से, या पोतजो से, या जरायुजो से, या रसजो से, या सस्वेदजो से, या सम्मूर्च्छिमो से, या उद्भिज्जो से, या औपपातिको से आकर उत्पन्न होता है।

वही अण्डज जीव वर्तमान अण्डज पर्याय को छोडता हुआ अण्डजरूप से, या पोतजरूप से, या जरायुजरूप से, या रसजरूप से, या सस्वेदजरूप से, या सम्मूर्च्छिमरूम से, या उद्भिज्जरूप से, या औपपातिकरूप से उत्पन्न होता है।

४. इसी प्रकार पोतज भी और जरायुज भी आठ गतिक और आठ आगतिक है। शेष रसज आदि जीवो की गति और आगति आठ प्रकार की नही होती है। *(विस्तार के लिए देखे–हिन्दी टीका, भाग–२, पृष्ठ ४८२, वृत्ति पत्र ३९५)*

3. *Andaj jiva* (egg-born beings) have eight kinds of *gatis* (reincarnation to) and eight *aagatis* (reincarnation from)—A being taking birth as *Andaj* being reincarnates from either *Andaj* beings, *Potaj* beings, *Jarayuj* beings, *Rasaj* beings, *Samsvedaj* beings, *Sammoorchanaj* beings, *Udbhij* beings, or *Aupapatik* beings

The same *Andaj* being leaving the state of *Andaj* being reincarnates in the genus of either *Andaj* beings, *Potaj* beings, *Jarayuj* beings, *Rasaj* beings, *Samsvedaj* beings, *Sammoorchanaj* beings, *Udbhij* beings or *Aupapatik* beings In other words it can reincarnate in any of the said eight genuses

4. *Potaj* beings and *Jarayuj* beings also have eight *gatis* and *aagatis* The remaining beings including *Rasaj* beings do not have eight kinds of *gatis* (reincarnation to) and *aagatis* (reincarnation from) *(for more details see Vritti, leaf 395 and Hindi Tika, part-2, p 482)*

कर्म बन्ध–पद KARMA BANDH-PAD (SEGMENT OF BONDAGE OF KARMAS)

५. जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वां, तं जहा– णाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, वेयणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, णामं, गोत्तं, अंतराइयं। ६. णेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा एवं चेव। ७. एवं णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।

५. सभी जीवो ने आठ कर्मप्रकृतियो का अतीत काल मे सचय किया है, वर्तमान मे कर रहे है और भविष्य मे करेगे–(१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) वेदनीय, (४) मोहनीय, (५) आयु, (६) नाम, (७) गोत्र, (८) अन्तराय। ६. नारक जीवो ने उक्त आठ कर्मप्रकृतियो का सचय किया है, कर रहे है और भविष्य मे करेगे। ७. इसी प्रकार वैमानिक तक के सभी दण्डक वाले जीवो ने आठ कर्मप्रकृतियो का सचय किया है, कर रहे है और करेगे।

5. All beings did, do and will acquire (*sanchaya*) eight *karma prakritis* (species of *karmas*) in the past, present and future respectively— (1) *Jnanavaraniya*, (2) *Darshanavaraniya*, (3) *Vedaniya*, (4) *Mohaniya*, (5) *Ayu*, (6) *Naam*, (7) *Gotra* and (8) *Antaraya* **6.** *Naarak* (infernal) beings did, do and will acquire (*sanchaya*) the said eight *karma prakritis* (species of *karmas*) in the past, present and future respectively **7.** In the same way all beings of all *Dandaks* up to *Vaimaniks* did, do and will acquire (*sanchaya*) the said eight *karma prakritis* (species of *karmas*) in the past, present and future respectively

८. जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा एवं चेव। एवं चिण–उवचिण–बंध–उदीर–वेय तह णिज्जरा चेव। एते छ चउवीसा दंडगा भाणियव्वा।

८. जीवो ने उक्त आठ कर्मप्रकृतियो का सचय, उपचय, बन्ध, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, कर रहे है और करेगे। इसी प्रकार नारको से लेकर वैमानिको तक सभी दण्डको के जीवो ने आठ कर्मप्रकृतियो का सचय, उपचय, बन्ध, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, कर रहे है और करेगे। इस प्रकार चौबीस दण्डो मे सचय आदि छह पदो का कथन करना चाहिए।

8. All beings did, do and will *augment* (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the aforesaid eight species of *karmas* in the past, present and future respectively. In the same way all beings of all *Dandaks* up to *Vaimaniks* did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the aforesaid eight species of *karmas* in the past, present and future respectively In the same way these six statements about acquiring (etc) should be read for all the twenty four *Dandaks* (places of suffering)

आलोचना–पद ALOCHANA-PAD (SEGMENT OF CRITICISM)

९. अट्ठहिं ठाणेंहि मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा, (णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं) पडिवज्जेज्जा, तं जहा–करिंसु वाहं, करेमि वाहं, करिस्सामि वाहं, अकित्ती वा मे सिया, अवण्णे वा मे सिया, अविणए वा मे सिया, कित्ती वा मे परिहाइस्सइ, जसे वा मे परिहाइस्सइ।

९. मायावी व्यक्ति माया करके आठ कारणो से उसकी आलोचना, प्रतिक्रमण, निन्दा, गर्हा, व्यावृत्ति (निवृत्ति) और विशुद्धि नही करता है। "पुन वैसा नही करूँगा", ऐसा कहने को उद्यत भी नही होता है तथा न यथायोग्य प्रायश्चित्त और तप कर्म को स्वीकार करता है। वे आठ कारण इस प्रकार है–(१) मैने (भूतकाल मे) अकरणीय कार्य किया है, (२) मै (वर्तमान मे) अकरणीय कार्य कर रहा हूँ, (३) मै (भविष्य मे) अकरणीय कार्य करूँगा, (फिर इनकी आलोचना निन्दा क्यो करूँ ?) (४) (आलोचना करने से) मेरी अपकीर्ति होगी, (५) मेरा अवर्णवाद (अपयश) होगा, (६) मेरा अविनय (प्रतिष्ठा को हानि पहुँचेगी) होगा, (७) मेरी (अब तक सचित)–कीर्ति–(भौतिक वैभव से बढी प्रतिष्ठा) कम हो जायेगी, (८) मेरा यश–(सद्‌गुणो से बढी प्रतिष्ठा) कम हो जायेगा।

9. For eight reasons a treacherous person, even after committing treachery, does not criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*) (before self), reproach (*garha*) (before the *guru*), refrain from doing the act (*vyavritti*), purge himself (*vishuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance Those

eight reasons are—(1) I have (in the past) committed a misdeed (2) I am (at present) committing a misdeed (3) I will (in the future) commit a misdeed (so, why criticize and reprove ?) (4) (If I do so) I will become disreputable (*apkirti*) (5) I will be dishonoured (*avarnavad*) (6) Others will ignore me (*avinaya*) (7) It will reduce my kirti (already acquired prestige due to worldly wealth) (8) It will reduce my *yash* (prestige gained due to virtues)

१०. (क) अट्ठहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, (पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं) पडिवज्जेज्जा, तं जहा–

(१) मायिस्स णं अस्सिं लोए गरहिते भवति। (२) उववाए गरहिते भवति। (३) आयाती गरहिता भवति। (४) एगमवि मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, (णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं) पडिवज्जेज्जा, णत्थि तस्स आराहणा। (५) एगमवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, (पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं) पडिवज्जेज्जा, अत्थि तस्स आराहणा। (६) बहुओवि मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, (णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं) पडिवज्जेज्जा, णत्थि तस्स आराहणा। (७) बहुओवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, (पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरिहेज्जा, विउट्टेज्जा, विसोहेज्जा, अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा), अत्थि तस्स आराहणा। (८) आयरिय-उवज्झायस्स वा मे अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, सेयं, मम मालोएज्जा मायी णं एसे।

१०. (क) आठ कारणो से मायावी माया करके उसकी आलोचना करता है, प्रतिक्रमण करता है, निन्दा करता है, गर्हा करता है, व्यावृत्ति करता है, विशुद्धि करता है, 'मै पुन वैसा नही करूँगा' ऐसा कहने को उद्यत होता है और (निर्वृत्ति) यथायोग्य प्रायश्चित्त तथा तप कर्म स्वीकार करता है। वे आठ कारण इस प्रकार है–

(१) मायावी का यह लोक गर्हित होता है। (लोक निन्दा करते है, जिसे सुनकर मन ही मन उद्विग्न रहता है। (२) उपपात गर्हित होता है। (आगामी जन्म मे देवगति मे भी किल्विषिक आदि देवो मे उत्पन्न होता है। (३) आजाति-तीसरा जन्म गर्हित होता है। देव योनि से च्युत होकर मनुष्य गति मे भी तिरस्कृत तथा असम्मानित होता है। (४) जो मायावी एक भी मायाचार करके आलोचना प्रतिक्रमण है, निन्दा, गर्हा, व्यावृत्ति करता और विशुद्धि नही करता है, 'पुन वैसा नही करूँगा' ऐसा कहने को उद्यत भी नहीं होता है, एव यथायोग्य प्रायश्चित्त और तप कर्म को स्वीकार भी नही करता है, उसके

आराधना नही होती है। (५) जो मायावी एक भी बार मायाचार करके उसकी आलोचना करता है, प्रतिक्रमण, निन्दा, गर्हा, व्यावृत्ति और विशुद्धि करता है, ' मै पुन' वैसा नही करूँगा', ऐसा कहने को उद्यत होता है, यथायोगय प्रायश्चित्त और तप कर्म स्वीकार करता है, उसके आराधना होती है। (६) जो मायावी बहुत मायाचार करके न उसकी आलोचना करता है, न ही प्रतिक्रमण, निन्दा, गर्हा, व्यावृत्ति और विशुद्धि करता है, 'मै पुन वैसा नही करूँगा' ऐसा कहने को भी उद्यत नही होता है तथा यथायोग्य प्रायश्चित्त और तप कर्म स्वीकार करता है, उसके आराधना नही होती है। (७) जो मायावी बहुत मायाचार करके उसकी आलोचना करता है, प्रतिक्रमण, निन्दा, गर्हा, व्यावृत्ति और विशुद्धि करता है, 'मै पुन वैसा नही करूँगा', ऐसा कहने को उद्यत होता है, यथायोग्य प्रायश्चित्त और और तप कर्म स्वीकार करता है, उसके आराधना होती है। (८) मेरे आचार्य या उपाध्याय को अतिशायी ज्ञान और दर्शन उत्पन्न हो तो वे मुझे देखकर ऐसा न जान लेवे कि यह मायावी है।

इन आठ कारणो से वह आलोचना करने को तैयार होता है।

10. (a) For eight reasons a treacherous person, after committing treachery, does criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*) (before self), reproach (*garha*) (before the *guru*), refrain from doing the act (*vyavritti*), purge himself (*vishuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance Those eight reasons are—

(1) This life (*ihalok*) of a fraud is condemned (People censure him and this causes a constant mental disturbance) (2) Next life (*upapat*) of a fraud is condemned (Even in the divine realm he reincarnates as a servant god) (3) Next to next life (*aajati*) of a fraud is condemned (From divine realm he descends to reincarnate as a cursed human being facing insult and dishonour) (4) A treacherous person, who does not criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*) (before self), reproach (*garha*) (before the *guru*), refrain from doing the act (*vyavritti*), purge himself (*vishuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance after committing treachery once, is not capable of accomplishing worship or spiritual practice (5) A treacherous person, who does criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*) (before self), reproach (*garha*) (before the *guru*), refrain from doing the act (*vyavritti*), purge himself (*vishuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance after committing treachery once, is capable of accomplishing worship or spiritual practice (6) A treacherous person, who does not criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*)

(before self), reproach (*garha*) (before the *guru*), refrain from doing the act (*vyavritti*), purge himself (*vishuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance after committing treachery repeatedly, is not capable of accomplishing worship or spiritual practice (7) A treacherous person, who does criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*) (before self), reproach (*garha*) (before the *guru*), refrain from doing the act (*vyavritti*), purge himself (*vishuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance after committing treachery repeatedly, is capable of accomplishing worship or spiritual practice (8) When my *acharya* and *upadhyaya* attains great knowledge and perception he will know that I was a fraud the moment he saw me

For these eight reasons he is ready to criticize (alochana) (etc)

१०. (ख) मायी णं मायं कट्टु से जहाणामए अयागरेति वा तंबागरेति वा तउआगरेति वा सीसागरेति वा रुप्पागरेति वा सुवण्णागरेति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा बुसागणीति वा णलागणीति वा दलागणीति वा सोंडियालिंछाणि वा भंडियालिंछाणि वा गोलियालिंछाणी वा कुंभारावाएति वा कवेल्लुआवाएति वा इट्टावाएति वा जंतवाडचुल्लीति वा लोहारंबरिसाणि वा।

तत्ताणि समजोतिभूताणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं-विणिम्मुयमाणाइं, जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं-पमुंचमाणाइं, इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणाइं-पविक्खिरमाणाइं, अंतो-अंतो झियायंति, एवामेव मायी मायं कट्टु अंतो-अंतो झियाए।

१०. (ख) अकरणीय कार्य करने के बाद मायावी उसी प्रकार भीतर ही भीतर जलता है, जैस कि-लोहा गलाने की भट्टी, ताँबा गलाने की भट्टी, त्रपु (जस्ता) गलाने की भट्टी, शीशा गलाने की भट्टी, चाँदी गलाने की भट्टी, सोना गलाने की भट्टी, तिल की अग्नि, तुष की अग्नि, भूसे की अग्नि, नलाग्नि (नरकट-पतले गाँठदार डठल वाला पौधा, उसकी अग्नि), पत्तो की अग्नि, मुण्डिका का चूल्हा, भण्डिका (छोटी हाडी) का चूल्हा, गोलिका[1] (बडी हाडी) का चूल्हा, घडो का पजावा (कुम्हार का आवा) खप्परो का पजावा, ईंटो का पजावा, गुड बनाने की भट्टी, लोहकार की भट्टी, तपती हुई, अग्निमय होती हुई, किशुक फूल के समान लाल होती हुई, सहस्रो उल्काओ और सहस्रो ज्वालाओ को छोडती हुई, सहस्रो अग्निकणो को फेकती हुई, भीतर ही भीतर जलती है, उसी प्रकार मायावी माया करके स्व-पाप के भय व चिन्ता से भीतर ही भीतर जलता है।

---

१ ये विभिन्न देशो मे विभिन्न वस्तुओ को पकाने, राँधने आदि कार्य के लिए काम मे आने वाले छोटे-बडे चूल्हो के नाम है।

1 These are the names of different sizes of furnaces used in different areas for cooking and other works

10. (b) After committing a misdeed a treacherous person remains seething inside like furnaces meant for melting iron, copper, zinc, lead, silver and gold, sesame-fire, chaff-fire, hay-fire, bush-fire (*nalagni*) and leaf-fire, like different sizes of stoves (for different sizes of pots, such as *mundika, bhandik* and *golika*), potter's and brick-maker's kilns; like a jaggery hearth and a blacksmith's hearth As these fires burn inside the furnaces with increasing temperature and glow, turning red like *Kinshuk* flower, throwing thousands of cinders, flames and sparks, in the same way a treacherous person remains seething inside after committing a sin for fear and worry of his sins

१०. (ग) जंवि य णं अण्णे केइ वदंति तंपि य णं मायी जाणति अहमेसे अभिसंकिज्जामि अभिसंकिज्जामि। मायी णं मायं कट्टु अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—णो महिड्ढिएसु (णो महज्जुइएसु णो महाणुभागेसु णो महायसेसु णो महाबलेसु णो महासोक्खेसु) णो दूरंगतिएसु णो चिरट्ठितिएसु। से णं तत्थ देवे भवति णो महिड्ढिए (णो महज्जुइए णो महाणुभागे णो महायसे णो महाबले णो महासोक्खे णो दूरंगतिए) मओ चिरट्ठितिए।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति णो महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठंति—मा बहुं देवे ! भासउ—भासउ।

से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, तं जहा—अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा किवणकुलाणि वा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति। से णं तत्थ पुमे भवति दुरूवे दुवण्णे दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पियस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणे पच्चायाते।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं णो आढाति णो परिजाणाति णो महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठंति —मा बहुं अज्जउत्तो ! भासउ—भासउ।

१०. (ग) यदि कोई अन्य पुरुष आपस मे बात करते है तो मायावी समझता है कि 'ये मेरे विषय मे ही शका कर रहे है !' कोई मायावी माया करके उसकी आलोचना या प्रतिक्रमण किये बिना ही काल-मास मे काल करके किसी देवलोक मे देवरूप मे उत्पन्न होता है, किन्तु वह महाऋद्धि वाले, महाद्युति वाले, महा अनुभव विक्रियादि शक्ति से युक्त, महायशस्वी, महाबलशाली, महान् सौख्य वाले,

ऊँची गति वाले और दीर्घस्थिति वाले देवो मे उत्पन्न नही होता। वह देव होता है, किन्तु महाऋद्धि वाला, महाद्युति वाला, महानुभाव वाला, महायशस्वी, महाबलशाली, महान् सौख्यवाला, ऊँची गति वाला और दीर्घ स्थिति वाला देव नही होता।

वहाँ देवलोक मे उसकी जो बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् होती है, वह भी न उसको आदर देती है, न उसे स्वामी के रूप मे मानती है और न महान् व्यक्ति के योग्य आसन पर बैठने के लिए निमन्त्रित करती है। जब वह भाषण देना प्रारम्भ करता है, तब चार-पांच देव बिना कहे ही खडे हो जाते है और कहते है 'देव ! बहुत मत बोलो, बहुत मत बोलो।'

पुन वह देव आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय के अनन्तर देवलोक से च्युत होकर यहाँ मनुष्यलोक मे मनुष्य भव मे जो ये अन्तकुल, या प्रान्तकुल, या तुच्छकुल, या दरिद्रकुल, या भिक्षुककुल, या कृपणकुल है, या इसी प्रकार के अन्य हीन कुल है, उनमे मनुष्य के रूप मे उत्पन्न होता है।

वहाँ वह कुरूप, कुवर्ण, दुर्गन्ध युक्त, अनिष्ट रस और कठोर स्पर्शवाला पुरुष होता है। वह अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ और मन को न गमने योग्य होता है। वह हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अकान्तस्वर, अप्रियस्वर, अमनोज्ञस्वर अरुचिकरस्वर और अनादेय वचनवाला होता है।

वहाँ उसकी जो बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् होती है, वह भी उसका न आदर करती है, न उसे स्वामी के रूप मे समझती है, न महान् व्यक्ति के योग्य आसन पर बैठने के लिए निमन्त्रित करती है। जब वह बोलने के लिए खडा होता है, तब चार-पॉच मनुष्य बिना कहे ही खडे हो जाते है और कहते है— 'आर्यपुत्र ! बहुत मत बोलो, बहुत मत बोलो।'

10. (c) When some other persons talk among themselves, the fraud thinks that they were talking about him After committing a misdeed when a treacherous person dies without self criticism (etc) before death and reincarnates in the divine realm, he is not born among the gods endowed with great *riddhi* (opulence or special powers), *dyuti* (radiance or majesty), *anubhaava* (powers of *vikriya* etc), *yash* (fame), bal (strength), *sukha* (bliss), status and long life span He becomes a god but not a god endowed with great *riddhi* (opulence or special powers), dyuti (radiance or majesty), *anubhaava* (powers of *vikriya* etc), *yash* (fame), *bal* (strength), *sukha* (bliss), status and long life span

There, in the external and internal divine assemblies, he is neither respected nor recognized as master or invited to sit on a thrown meant for great persons When he starts his speech four-five gods stand up without being asked and comment—"O god ! Do not utter much ! Do not speak much !"

Again at the conclusion of his life span, birth and state as a god he descends from the divine realm and is born in this land of humans as a

human being in any of these lowly clans—*ant-kul, prant-kul, tuchchhakul, daridrakul, bhikshuk-kul,* or *kripan-kul.*

There he is a man with bad appearance, bad complexion, bad smell, bad taste and rough touch He is not adorable, not lovable, not beautiful, and not worth cherishing He is with a voice that is bad, humble, not adorable, not lovable, not beautiful, and not worth cherishing

There, in the external and internal assemblies, he is neither respected nor recognized as master or invited to sit on a thrown meant for great persons When he starts his speech four-five men stand up, without being asked, and comment—"O *Arya*-born ! Do not utter much ! Do not speak much !"

१०. (घ) मायी णं मायं कट्टु आलोचित-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा-महिड्डिएसु (महज्जुइएसु महाणुभागेसु महायसेसु महाबलेसु महासोक्खेसु दूरगंतिएसु) चिरट्ठितिएसु। से णं तत्थ देवे भवति महिड्डिए जाव चिरट्ठितिएसु। से णं तत्थ देवे भवति महिड्डिए जाव चिरट्ठितिए हारविराइयवच्छे कडक-तुडित-थंभित-भुए अंगद-कुंडल-मट्ट-गंडतल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिते कल्लाणग-'पवर-गंध-मल्लाणुलेवणधरे' भासुरबोंदी पलंब-वणमालधरे दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रसेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे महयाहत-णट्ट-गीत-वादित-तंती-तल-ताल-तुडित-घणमुइंग-पडुप्पवादित-रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं आढाइ परिजाणाति महरिहेणं आसेणणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अणुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति-बहुं देवे ! भासउ-भासउ।

से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं (भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं) चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति-अड्डाइं (दित्ताइं वित्तिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं 'बहुधण-बहुजायरूप-रययाइं' आओगपओग-संपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलय-प्पभूयाइं) बहुजणस्स अपरिभूताइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाति। से णं तत्थ पुमे भवति सुरूवे सुवण्णे सुगंधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते (पिए मणुण्णे) मणामे अहीणस्सरे (अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कंतस्सरे पियस्सरे मणुण्णस्सरे) मणामस्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाते।

जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति, सावि य णं आढाति (परिजाणाति महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अणुत्ता चेव अब्भुट्टंति)–बहुं अज्जउत्ते ! भासउ–भासउ ।

१०. (घ) मायावी माया करके उसकी आलोचना, प्रतिक्रमण, कालमास मे काल कर किसी एक देवलोक मे देवरूप से उत्पन्न होता है। वह महाऋद्धि वाले, महाद्युति वाले, विक्रिया आदि शक्ति से युक्त, महायशस्वी, महाबलशाली, महान् सौख्य वाले, ऊँची गति वाले और दीर्घ स्थिति वाले देवो मे उत्पन्न होता है।

वह यावत् ऊँची गतिवाला और दीर्घ स्थिति वाला देव होता है। उसका वक्ष स्थल हारो से शोभित होता है, वह भुजाओ मे कडे, तोडे और अगद (बाजूबन्द) पहने हुए रहता है। उसके कानो मे कपोल तक स्पर्श करने वाले चचल कुण्डल होते है। वह विचित्र वस्त्राभरणो, विचित्र मालाओ और सेहरो वाला मॉंगलिक एव उत्तम वस्त्रो को पहने हुए होता है, वह मॉंगलिक, श्रेष्ठ, सुगन्धित पुष्प और विलेपन को धारण किये हुए होता है। उसका शरीर तेजस्वी होता है, वह लम्बी लटकती हुई मालाओ को धारण किये रहता है। वह दिव्य वर्ण, दिव्य गन्ध, दिव्य रस, दिव्य स्पर्श, दिव्य सघात (शरीर की बनावट), दिव्य सस्थान (शरीर की आकृति) और दिव्य ऋद्धि से युक्त होता है। वह दिव्यद्युति, दिव्यप्रभा, दिव्यकान्ति, दिव्य अर्चि, दिव्य तेज और दिव्य लेश्या से दशो दिशाओ को उद्योतित करता है, प्रभासित करता है, वह नाट्यों, गीतो तथा कुशल वादको के द्वारा जोर से बजाये गये वादित्र, तत्र, ताल, त्रुटित, घन और मृदग की महान् ध्वनि से युक्त दिव्य भोगो को भोगता हुआ रहता है।

उसकी वहॉं जो बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् होती है, वह भी उसका आदर करती है, उसे स्वामी के रूप मे मानती है, उसे महान् व्यक्ति के योग्य आसन पर बैठने के लिए निमत्रित करती है। जब वह भाषण देना प्रारम्भ करता है, तब चार–पॉंच देव बिना कहे ही खडे हो जाते है और कहते है–'देव ! और अधिक बोलिए और अधिक बोलिए।'

पुन वह देव आयुक्षय, भवक्षय और स्थितिक्षय होने पर देवलोक से च्युत होकर यहाँ मनुष्यलोक मे मनुष्यभव मे सम्पन्न, दीप्त, विस्तीर्ण और विपुल शयन, आसन, यान और वाहन वाले, बहुधन, बहु सुवर्ण और बहु चॉंदी वाले, आयोग और प्रयोग (लेनदेन) मे सप्रयुक्त, प्रचुर भक्त–पान का वितरण करने वाले, अनेक दासी–दास, गाय-भैस, भेड आदि रखने वाले और बहुत व्यक्तियो के द्वारा अपराजित, ऐसे उच्च कुलो मे मनुष्य के रूप मे उत्पन्न होता है।

वहाँ वह सुरूप, सुवर्ण, सुगन्ध, सुरस और सुस्पर्श वाला होता है। वह इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और मन को भाने वाला होता है। वह उच्च स्वर, प्रखर स्वर, कान्त स्वर, प्रिय स्वर, मनोज्ञ स्वर, रुचिकर स्वर और आदेय वचन वाला होता है।

वहाँ पर उसकी जो बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् होती है, वह भी उसका आदर करती है, उसे स्वामी के रूप मे मानती है, उसे महान् व्यक्ति के योग्य आसन पर बैठने के लिए निमत्रित करती है। वह

जब भाषण देना प्रारम्भ करता है, तब चार-पाँच मनुष्य बिना कहे ही खड़े हो जाते है और कहते है- 'आर्यपुत्र ! और अधिक बोलिए और अधिक बोलिए।'

10. (d) After committing a misdeed when a treacherous person dies after doing self criticism (etc) before death and reincarnates in the divine realm, he is born among the gods endowed with great *riddhi* (opulence or special powers), *dyuti* (radiance or majesty), *anubhaava* (powers of *vikriya* etc), *yash* (fame), *bal* (strength), *sukha* (bliss), status and long life span

There he becomes a god endowed with great *riddhi* (opulence or special powers), *dyuti* (radiance or majesty), *anubhaava* (powers of *vikriya* etc), *yash* (fame), *bal* (strength), *sukha* (bliss), status and long life span His chest is adorned with necklaces and arms with bangles, bracelets and armlets Earrings dangle from his ears and touch his cheeks He is dressed in exclusive, auspicious and excellent garb adorned with unique garlands and danglers He is embellished with auspicious and fragrant flowers and lotions His body is radiant with long dangling bead-strings He is endowed with divine appearance, smell, taste, touch body constitution, body structure and opulence He illuminates and brightens all the ten directions with his divine glow (*dyuti*), divine shine (*prabha*), divine glow (*kanti*), divine brilliance (*archi*), divine aura (*tej*) and divine orb (*leshya*) He lives enjoying divine pleasures in accompaniment of dances, dramas, songs and enchanting sounds of a variety of musical instruments (*vaditra, tantra, trutit, ghan* and *mridang*) played by expert musicians

There, in the external and internal divine assemblies, he is also respected and recognized as master as well as invited to sit on a thrown meant for great persons When he starts his speech four-five gods stand up without being asked and comment—"O god ! Utter more ! Speak more !"

Again at the conclusion of his life span, birth and state as a god he descends from the divine realm and is born in this land of humans as a human being in any of the upper class clans endowed with great affluence and glory, abundant furniture, carriages and vehicles, heaps of wealth, gold and silver; and flourishing trade and business These families also donate large quantities of food and drinks, maintain large contingents of slaves, servants, and cattle, and are unsurmountable by many

There he is a man with good appearance, good complexion, good smell, good taste and smooth touch He is adorable, lovable, beautiful, and worth cherishing He is with a voice that is loud, sharp, adorable, lovable, beautiful, and worth cherishing

There, in the external and internal assemblies, he is also respected and recognized as master as well as invited to sit on a thrown meant for great persons When he starts his speech four-five gods stand up, without being asked, and comment—"O *Arya*-born ! Utter more ! Speak more !"

विवेचन–वृत्तिकार आचार्य अभदेव सूरि ने निम्न शब्दो की व्याख्या इस प्रकार की है–

आभ्यन्तर परिषद्–पुत्र, कलत्र व स्थानीय देव-देवियॉं। **बाह्य परिषद्**–नौकर-चाकर सेवा करने वाले। **आयुक्षय**–आयुष्य कर्म के पुद्‌गलो का क्षय। **भवक्षय**–वर्तमान भव (पर्याय) का विनाश। **स्थितिक्षय**–आयु स्थिति के बन्ध का क्षय। **अन्तकुल**–म्लेच्छ, छिपक आदि कुल। **प्रान्त कुल**–चाण्डाल आदि कुल। **तुच्छ कुल**–छोटे परिवार व तुच्छ विचार वाले कुल। **दरिद्र कुल**–निर्धन कुल। **भिक्खागकुल**–भिक्षा माँगने वाले कुल। **कृपणकुल**–दान लेकर आजीविका चलाने वाले कुल

आलोचना करने से निम्न आठ गुण निष्पन्न होते है–

(१) **लघुता**–मन हल्का हो जाता है। (२) **प्रसन्नता** अनुभव करता है। (३) **आत्म–पर नियंत्रिता**–अपने व दूसरो पर अनुशासन करने की क्षमता आती है। (४) **आर्जव**–सरलता आती है। (५) **शोधि**–दोषो को परिष्कार होता है। (६) **दुष्कर करण**–दुष्कर कार्य करने की सामर्थ्य बढती है। (७) **आदर**–जनता मे सन्मान बढता है। (८) **नि:शल्यता**–मन की गॉंठे खुलकर ग्रन्थि भेद हो जाता है। *(वृत्ति पत्र ३९७-३९९)*

Elaboration—*Abhayadev Suri*, the commentator (*Vritti*), has interpreted the relevant technical terms as follows—

Abhyantar parishad (internal assembly)—this includes sons, relatives and local gods and goddesses *Bahya parishad* (external assembly)—this includes subordinates and servants *Ayu-kshaya*—destruction of life-span determining *karma* particles *Bhava-kshaya*—termination of the present birth *Sthiti-kshaya*—destruction of the *karma* determining the duration in present state *Ant-kul*—low castes including *Mlechchha* and *Chhimpak* *Prant-kul*—low castes including *Chandal* *Tuchchha kul*—low castes with rustic habits *Daridra kul*—destitute *Bhikshak kul*—clans subsisting on begging *Kripan kul*—clans subsisting on charity

Following eight qualities are acquired by self-criticism—

(1) *Laghuta*—lightness of the mind (2) *Prasannata*—experience of joy. (3) *Atma-par niyantrata*—capacity to discipline self and others (4) *Arjava*—simplicity (5) *Shodhi*—correction of faults (6) *Dushkar karan*—capacity to accomplish difficult tasks is enhanced (7) *Aadar*—respect among people increases (8) *Nihshalyata*—inner knots are shattered and psychological complexes are removed *(Vritti, leaves 397-399)*

संवर-असंवर-पद SAMVAR-ASAMVAR-PAD (SEGMENT OF BLOCKAGE AND NON-BLOCKAGE OF INFLOW OF KARMAS)

११. अट्ठविहे संवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियसंवरे, (चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे), फासिंदियसंवरे, मणसंवरे, वइसंवरे, कायसंवरे। १२. अट्ठविहे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियअसंवरे, चक्खिंदियअसंवरे, घाणिंदिय-असंवरे, जिब्भिंदियअसंवरे, फासिंदियअसंवरे, मणअसंवरे, वइअसंवरे, कायअसंवरे।

११. संवर आठ प्रकार का है-(१) श्रोत्रेन्द्रिय-संवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय-संवर, (३) घ्राणेन्द्रियसंवर, (४) रसनेन्द्रिय-संवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-संवर, (६) मन -संवर, (७) वचन-संवर, (८) काय-संवर। **१२.** असंवर के आठ प्रकार है-(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असंवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय-असंवर, (३) घ्राणेन्द्रिय-असंवर, (४) रसनेन्द्रिय-असंवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असंवर, (६) मन असंवर, (७) वचन-असंवर, (८) काय-असंवर।

11. *Samvar* (blockage of inflow of *karmas* or abstaining from indulgence in subjects of sense organs) is of eight kinds—(1) *shrotendriya samvar*, (2) *chakshurindriya samvar*, (3) *ghranendriya samvar*, (4) *rasanendriya samvar*, (5) *sparshendriya samvar*, (6) *manah samvar* (related to mind), (7) *vachan samvar* (related to speech) and (8) *kaaya samvar* (related to body) **12.** *Asamvar* (inflow of *karmas* or indulgence in subjects of sense organs) is of eight kinds—(1) *shrotendriya asamvar*, (2) *chakshurindriya asamvar*, (3) *ghranendriya asamvar*, (4) *rasanendriya asamvar*, (5) *sparshendriya asamvar*, (6) *manah asamvar* (related to mind), (7) *vachan asamvar* (related to speech) and (8) *kaaya asamvar* (related to body)

स्पर्श-पद SPARSH-PAD (SEGMENT OF TOUCH)

१३. अट्ठ फासा पण्णत्ता, तं जहा—कक्खडे, मउए, गरुए, लहुए, सीते, उसिणे, णिद्धे, लुक्खे।

१३. स्पर्श आठ प्रकार का है-(१) कर्कश, (२) मृदु, (३) गुरु, (४) लघु, (५) शीत, (६) उष्ण, (७) स्निग्ध, (८) रूक्ष।

13. *Sparsh* (touch) is of seven kinds—(1) *Karkash sparsh* (hard touch), (2) *Mridu sparsh* (soft touch), (3) *Guru sparsh* (heavy touch), (4) *Laghu*

sparsh (light touch), (5) *Sheet sparsh* (cold touch), (6) *Ushna sparsh* (hot touch), (7) *Snigdha sparsh* (smooth touch) and (7) *Ruksha sparsh* (coarse touch)

लोकस्थिति–पद LOK-STHITI-PAD (SEGMENT OF STRUCTURE OF UNIVERSE)

१४. अट्ठविधा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा–आगासपतिट्ठिते वाते, वातपतिट्ठिते उदही, (उदधिपतिट्ठिता पुढवी, पुढविपतिट्ठिता तसा थावरा पाणा, अजीवा जीवपतिट्ठिता) जीवा कम्मपतिट्ठिता, अजीवा जीवसंगहीता, जीवा कम्मसंगहीता।

१४. लोकस्थिति आठ प्रकार की है-(१) वायु (तनुवात) आकाश पर प्रतिष्ठित है। (२) समुद्र (घनोदधि) वायु पर प्रतिष्ठित है। (३) पृथ्वी समुद्र पर प्रतिष्ठित है। (४) त्रस-स्थावर प्राणी पृथ्वी पर प्रतिष्ठित है। (५) अजीव जीव पर प्रतिष्ठित है। (६) जीव कर्म पर प्रतिष्ठित है। (७) अजीव जीव के द्वारा सगृहीत है। (८) जीव कर्म के द्वारा सगृहीत है।

14. *Lok-sthiti* (structure of universe) is eight tiered—(1) *vayu* (air) is *pratishthit* (installed) on *akash* (space), (2) *udadhi* or *ghanodadhi* (dense water) is *pratishthit* (installed) on *vayu*, (3) *prithvi* (earth) is *pratishthit* (installed) on *ghanodadhi*, (4) *sthavar* and *tras pranis* (immobile and mobile beings) are *pratishthit* (installed) on (live on) *prithvi*, (5) *ajiva* (matter) is *pratishthit* (installed) on *jiva* (life), (6) *jiva* (living being) is *pratishthit* (installed on) *karma* (7) *ajivas* are accumulated (*samgrahit*) by *jiva* and (8) *jivas* are bonded (*samgrihit*) by *karma*

गणिसंपदा–पद GANISAMPAD-PAD (SEGMENT OF WEALTH OF A GANI)

१५. अट्ठविहा गणिसंपया पण्णत्ता, तं जहा–आचारसंपया, सुयसंपया, सरीरसंपया, वयणसंपया, वायणासंपया, मतिसंपया, पओगसंपया, सगहपरिण्णा णाम अट्ठमा।

१५. गणी (आचार्य) की सम्पदा आठ प्रकार की है-(१) **आचार–सम्पदा**–सयम की समृद्धि, (२) **श्रुत–सम्पदा**–श्रुतज्ञान की समृद्धि, (३) **शरीर–सम्पदा**–प्रभावक शरीर-सौन्दर्य, (४) **वचन–सम्पदा**–वचन-कुशलता, (५) **वाचना–सम्पदा**–अध्यापन-निपुणता, (६) **मति–सम्पदा**–बुद्धि की कुशलता, (७) **प्रयोग–सम्पदा**–वाद-प्रवीणता, (८) **सग्रह–परिज्ञा**–सघ-व्यवस्था की निपुणता।

15. *Gani sampada* (wealth of a *gani/acharya*) is of eight kinds—(1) *Achar sampada*—wealth of ascetic-discipline, (2) *Shrut sampada*—wealth of knowledge of scriptures, (3) *Sharira sampada*—wealth of physical qualities like impressive personality, (4) *Vachan sampada*—wealth of speech like lucidity, (5) *Vaachana sampada*—expertise in teaching, (6) *Mati sampada*—wealth of wisdom, (7) *Prayog sampada*—

expertise of debate and (8) *Samgraha pariјna*—expertise of managing *sangha* (religious organization)

महानिधि–पद MAHANIDHI-PAD (SEGMENT OF GREAT WEALTH)

१६. एगमेगे णं महाणिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

१६. चक्रवर्ती की प्रत्येक महानिधि आठ-आठ पहियो पर आधारित है और आठ-आठ योजन ऊँची है।

16. Each *mahanidhi* (great chest of treasure) rests on eight wheels and is eight *Yojan* in height

विवेचन—ये महानिधान मजूषा के आकार के एव प्रत्येक आठ योजन ऊँचा, नो योजन चौडा और बारह योजन लम्बा होता है। प्रत्येक के आठ-आठ पहिये होते है। तथा एक हजार यक्ष उनकी सेवा-सँभाल करते है। *(हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ५०८। विस्तृत वर्णन देखे, दशाश्रुतस्कन्ध दशा ४ तथा प्रवचन सारोद्धार गाथा ५४०-४६)*

Elaboration—The said great wealth is in the form of gigantic chests eight *Yojan* tall, nine *Yojan* broad, and twelve *Yojan* long Each one rests on eight wheels and is maintained and guarded by one thousand *Yakshas (Hindi Tika, part-2, p 508, for more details see Dashashrutskandha, dasha-4 and Pravachanasaroddhar verses 540-46)*

समिति–पद SAMITI-PAD (SEGMENT OF SELF REGULATION)

१७. अट्ठ समितीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–इरियासमिती, भासासमिती, एसणासमिती, आयाणभंड–मत्त–णिक्खेवणासमिती, उच्चार–पासवण–खेल–सिंघाण–जल्ल–परिट्ठावणियासमिती, मणसमिती, वइसमिती, कायसमिती।

१७. समितियाँ आठ है–(१) ईर्यासमिति, (२) भाषासमिति, (३) एषणासमिति, (४) आदान-भाण्ड-अमत्र-निक्षेपणासमिति, (५) उच्चार-प्रस्रवण-श्लेष्म-सिघाण-जल्ल-परिष्ठापनासमिति, (६) मन समिति, (७) वचनसमिति, (८) कायसमिति।

17. *Samitis* (self regulations) are of eight kinds—(1) *Irya samiti*—proper care in movement, (2) *bhasha samiti*—proper care in speaking, (3) *eshana samiti*—proper care in seeking and collecting alms, (4) *adan-bhand-amatra-nikshepana samiti*—proper care in taking and keeping bowls for food etc, (5) *uchchar-prasravan-shleshm-jalla-singhad prasthapana samiti*—proper care in disposal of all kinds of excreta (stool, urine, phlegm, and body and nose scum) at a spot free of living beings, (6) *manah samiti*—proper care in thinking, (7) *vachan samiti*—proper care in speech and (8) *kaaya samiti*—proper care in activities of body

१८. अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं, आधारवं, ववहारवं ओवीलए. पकुव्वए, अपरिस्साई णिज्जावए, अवायदंसी।

१८. आठ स्थानो (गुणो) से सम्पन्न अनगार आलोचना (दूसरो को आलोचना-प्रायश्चित्त) देने के योग्य होता है-(१) **आचारवान्**-जो ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पाँच आचारो से सम्पन्न हो। (२) **आधारवान्**-जो आलोचना लेने वाले के द्वारा आलोचना किये जाने वाले समस्त अतिचारो को जानने वाला हो। (३) **व्यवहारवान्**-आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा और जीत इन पॉच व्यवहारो का ज्ञाता हो। (४) **अपव्रीडक**-आलोचना करने वाला व्यक्ति, लाज या सकोच से मुक्त होकर यथार्थ आलोचना कर सके, ऐसा साहस उत्पन्न करने वाला हो। (५) **प्रकारी**-आलोचना करने पर विशुद्धि कराने वाला हो। (६) **अपरिश्रावी**-आलोचना करने वाले के आलोचित दोषो को दूसरो के सामने प्रकट करने वाला न हो। (७) **निर्यापक**-बडे प्रायश्चित्त को भी निभा सके, ऐसा सहयोग देने वाला हो। (८) **अपायदर्शी**-प्रायश्चित्त-भग से तथा यथार्थ आलोचना न करने से होने वाले दोषो को दिखाने वाला हो।

18. An *anagar* (ascetic) endowed with eight *sthaans* (qualities) is qualified to prescribe *alochana* (criticism and atonement) to others—(1) *Aacharvan*—who is endowed with five limbs of right conduct, namely knowledge, perception/faith, conduct, austerities and potency of perseverance (2) *Aadhaarvan*—who knows about all the transgressions requiring atonement by the one prepared for atonement (3) *Vyavaharvan*—who has knowledge of the five kinds of *vyavahar* (behaviour or conduct), namely *Agam, Shrut, Ajna, Dharana* and *jeet* (4) *Apavridak*—who is capable of imparting courage to rise above shyness and hesitation in order to perform atonement properly (5) *Prakari*—who can formalize purification after atonement is concluded (6) *Aprishraavi*—who does not reveal the faults of the defaulter to others (7) *Niryaapak*—who can cooperate even during extended atonement (8) *Apaayadarshi*—who can indicate the consequences of breach in and improper performance of prescribed atonement

१९. अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोइत्तए, तं जहा—जातिसंपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसंपण्णे, णाणसंपण्णे, दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे, खंते, दंते।

१९. आठ स्थानो (गुणो) से सम्पन्न अनगार अपने दोषो की (स्वय) आलोचना करने के लिए समर्थ होता है-(१) जातिसम्पन्न, (२) कुलसम्पन्न, (३) विनयसम्पन्न, (४) ज्ञानसम्पन्न, (५) दर्शनसम्पन्न, (६) चारित्रसम्पन्न, (७) क्षान्त (क्षमाशील), (८) दान्त (इन्द्रिय-जयी)।

19. An *anagar* (ascetic) endowed with eight *sthaans* (qualities) is himself qualified to perform *alochana* (criticism and atonement) for his own faults—(1) *Jati sampanna* (of good maternal lineage), (2) *Kula sampanna* (of good paternal lineage), (3) *Vinaya sampanna* (endowed with modesty), (4) *Jnana sampanna* (endowed with knowledge), (5) *Darshan sampanna* (endowed with perception/faith), (6) *Chaaritra sampanna* (endowed with right conduct), (7) *Kshant* (endowed with forgiveness) and (8) *Daant* (endowed with absolute control over sense organs)

प्रायश्चित्त–पद PRAYASHCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)

२०. अट्ठविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा–आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे।

२०. प्रायश्चित्त आठ प्रकार का है–(१) आलोचना के योग्य, (२) प्रतिक्रमण के योग्य, (३) आलोचना और प्रतिक्रमण दोनो के योग्य, (४) विवेक के योग्य, (५) व्युत्सर्ग के योग्य, (६) तप के योग्य, (७) छेद के योग्य, (८) मूल के योग्य। (आगे दशवे स्थान मे १० विध प्रायश्चित्त का वर्णन है)

20. *Prayashchit* (atonement) is of eight kinds—(1) requiring *alochana* (criticism), (2) requiring *pratikraman* (critical review), (3) *tadubhaya* (requiring both *alochana* and *pratikraman*) (4) requiring *vivek* (sagacity), (5) requiring *vyutsarg* (abstainment), (6) requiring *tap* (austerities), (7) requiring *chhed* (termination of ascetic state) and (8) requiring *mool* (reinitiation)

मदस्थान–पद MAD-STHAAN-PAD (SEGMENT OF REASONS OF CONCEIT)

२१. अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–जातिमए, कुलमए, बलमए, रूवमए, तवमए, सुतमए, लाभमए, इस्सरियमए।

२१. मद (अहकार) के स्थान (कारण) आठ है–(१) जातिमद, (२) कुलमद, (३) बलमद, (४) रूपमद, (५) तपोमद, (६) श्रुतमद, (७) लाभमद, (८) ऐश्वर्यमद।

21. There are eight *sthaan* (reasons) for *mad* (conceit)—(1) *Jati mad* (conceit of maternal lineage), (2) *kula mad* (conceit of paternal lineage), (3) *bal mad* (conceit of strength), (4) *rupa mad* (conceit of appearance or beauty), (5) *tapo mad* (conceit of austerities), (6) *Shrut mad* (conceit of scriptural knowledge), (7) *laabh mad* (conceit of gains) and (8) *aishvarya mad* (conceit of wealth)

अक्रियावादि-पद AKRIYAVADI-PAD (SEGMENT OF AKRIYAVADI)

२२. अट्ठ अकिरियावाई पण्णत्ता, तं जहा–एगावाई, अणेगावाई, मितवाई, णिम्मितवाई, सायवाई, समुच्छेदवाई, णितावाई, ण संतिपरलोगवाई।

२२. अक्रियावादी आठ प्रकार के है–(१) **एकवादी**–एक ही तत्त्व को मानने वाले। (२) **अनेकवादी**–अनेक तत्त्वो को मानने वाले। (३) **मितवादी**–जीवो को परिमित या जीव को अगुष्ठ प्रमाण मानने वाले। (४) **निर्मितवादी**–ईश्वर को सृष्टि का निर्माता मानने वाले। (५) **सातवादी**–सुख से ही सुख की प्राप्ति मानने वाले। (६) **समुच्छेदवादी**–क्षणिकवादी, वस्तु को सर्वथा क्षण विनाशी मानने वाले। (७) **नित्यवादी**–वस्तु को सर्वथा नित्य मानने वाले। (८) **असत्–परलोकवादी**–मोक्ष एव परलोक को नही मानने वाले। *(विस्तार के लिए देखे–ठाण पृष्ठ ८३०-३४। हिन्दी टीका, भाग २, पृष्ठ ५१६)*

22. *Akriyavadis* (sects of non-doers) are of seven kinds—(1) *Ekavadi*—who believe in singularity of fundamentals, (2) *Anekavadi*—who believe in plurality of fundamentals, (3) *Mitavadi*—who believe in limited number of souls or thumb-size of soul, (4) *Nirmit-vadi*—who believe in a creator god, (5) *Saat-vadi*—who believe in acquisition of bliss through pleasure, (6) *Samuchchhed-vadi*—who believe in absolutely ephemeral nature of things, (7) *Nitya-vadi*—who believe in absolute eternality of things and (8) *Asatparlok-vadi*—who do not believe in next life and liberation *(for more details see Thanam, pp 830-34 and Hindi Tika, part-2, p 516)*

महानिमित्त-पद MAHANIMITT-PAD (SEGMENT OF COMPENDIUMS OF AUGURY)

२३. अट्ठविहे महाणिमित्ते पण्णत्ते, तं जहा–भोमे, उप्पाते, सुविणे, अंतलिक्खे, अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे।

२३. आठ प्रकार के शुभाशुभ-सूचक महानिमित्त है-भौम, उत्पात, स्वप्न, आन्तरिक्ष, अग, स्वर, लक्षण, व्यजन।

23. There are eight *mahanimitt* (compendiums of augury)—(1) *Bhaum* (based on indications derived from earth), (2) *Utpaat* (based on indications derived from natural calamities), (3) *Svapna* (based on indications derived from dreams), (4) *Aantariksh* (based on indications derived from celestial happenings), (5) *Anga* (based on indications derived from activity in parts of human body), (6) *Svar* (based on indications derived from voice tone and breathing), (7) *Lakshan* (based on indications derived from marks on the body) and (8) *Vyanjan* (based on indications derived from spots on the body)

विवेचन—जिन कारणो व लक्षणो से भूत, भविष्य तथा वर्तमान मे होने वाली शुभाशुभ घटनाओ का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसे निमित्त शास्त्र कहते है। उनका वर्णन करने वाले महाग्रन्थो को महानिमित्त कहा जाता है। उनके आठ भेद यहाँ बताये है। इनका सक्षेप मे वर्णन इस प्रकार है–(१) **भौम**–भूमि की स्निग्धता–रूक्षता भूकम्प आदि से सम्बन्धित शुभाशुभ विषयो को जानना। (२) **उत्पात**–आकस्मिक घटनाओ जैसे उल्कापात रुधिर–वर्षा आदि से शुभाशुभ फल बताना। (३) **स्वप्न**–स्वप्नो के द्वारा भावी शुभाशुभ जानना। (४) **आन्तरिक्ष**–सूर्य–चन्द्र–ग्रह आदि आकाशीय घटनाओ को देखने से शुभाशुभ जानना। (५) **अङ्ग**–शरीर के अगो की स्फुरणा देखकर शुभाशुभ जानना। (६) **स्वर**–षड्ज आदि सात स्वर अथवा ईडा–पिगला–सुषुम्ना तीन स्वर या पक्षियो के स्वर को सुनकर शुभाशुभ जानना। (७) **लक्षण**–स्त्री–पुरुषो के शरीर–गत चक्र आदि लक्षणो को देखकर शुभाशुभ जानना। (८) **व्यंजन**–तिल, मसा, रेखा आदि देखकर शुभाशुभ जानना। लक्षण शरीर के साथ उत्पन्न होते है, व्यजन बाद मे। ज्ञाता सूत्र आदि मे अष्टाग महा निमित्त वेत्ताओ का वर्णन आता है। साधारण मनुष्य के ३२ लक्षण तथा तीर्थंकर चक्रवर्ती के १००८ शुभ लक्षणो का वर्णन इसी शास्त्र का विषय है।

Elaboration—English explanation of terms already covered Details about augurs is also available in *Jnata Sutra* and other scriptures The 32 auspicious signs of a common man and 1008 auspicious signs of a *Tirthankar* and *Chakravarti* are also subjects discussed in books of augury

वचनविभक्ति–पद **VACHAN-VIBHAKTI-PAD**
(SEGMENT OF INFLECTIONS OF WORDS)

२४. अट्ठविधा वयणविभत्ती पण्णत्ता, तं जहा–

णिद्देसे पढमा होती, बितिया उवएसणे।
ततिया करणम्मि कता, चउत्थी संपदाणवे॥१॥

पंचमी य अवादाणे, छट्ठी सस्सामिवादणे।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्ठमी आमंतणी भवे॥२॥

तत्थ पढमा विभत्ती, णिद्देसे–सो इमो अहं वत्ति।
बितिया उण उवएसे–भण 'कुण व' इमं व तं वत्ति॥३॥

ततिया करणम्मि कया–णीतं व कतं व तेण व मए व।
हंदि णमो साहाए, हवति चउत्थी पदाणंमि॥४॥

अवणे गिण्हसु तत्तो, इत्तोत्ति वा पंचमी अवादाणे।
छट्ठी तस्स इमस्स व, गतस्स वा सामि–संबंधे॥५॥

हवइ पुण सत्तमी तमिमम्मि आहारकालभावे य।
आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाण ! त्ति॥६॥ (संग्रहणी–गाथाएँ)

२४. वचन –विभक्तियाँ आठ प्रकार की है-(१) निर्देश (नमोच्चारण) मे प्रथमा विभक्ति होती है। (२) उपदेश क्रिया से व्याप्त कर्म के प्रतिपादन मे द्वितीया विभक्ति होती है। (३) क्रिया के प्रति साधकतम कारण के प्रतिपादन मे तृतीय या विभक्ति होती है। (४) सत्कार-पूर्वक दिये जाने वाले पात्र को देने, नमस्कार आदि करने के अर्थ मे चतुर्थी विभक्ति होती है। (५) पृथक्ता, पतनादि अपादान बताने के अर्थ मे पचमी विभक्ति होती है। (६) स्वामित्त्व-प्रतिपादन करने के अर्थ मे षष्ठी विभक्ति होती है। (७) सन्निधान का आधार बताने के अर्थ मे सप्तमी विभक्ति होती है। (८) किसी को सम्बोधन करने या पुकारने के अर्थ मे अष्टमी विभक्ति होती है।

(१) प्रथमा विभक्ति का चिह्न -वह, यह, मै, आप, तुम आदि। (२) द्वितीया विभक्ति का चिह्न–को, इसको कहो, उसे करो आदि। (३) तृतीया विभक्ति का चिह्न–से, द्वारा, जैसे– गाडी से या गाडी के द्वारा आया, मेरे द्वारा किया गया आदि। (४) चतुर्थी विभक्ति का चिह्न–लिए, जैसे–गुरु के लिए नमस्कार आदि। (५) पचमी विभक्ति का चिह्न–जैसे घर ले जाओ, यहाँ से ले जा आदि। (६) षष्ठी विभक्ति का चिह्न–यह उसकी पुस्तक है, वह इसकी है आदि। (७) सप्तमी विभक्ति का चिह्न जैसे उस चौकी पर पुस्तक, इस पर दीपक आदि। (८) अष्टमी विभक्ति का चिह्न–हे युवक, हे भगवान आदि।

24. There are eight kinds of *vachan-vibhaktis* (inflections or case-endings) of words (in *Sanskrit* grammar)—(1) The first *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for indication (*nirdesh*) of the meaning of the word including its gender and number (Nominative case) (2) The second *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for advice (*upadesh*) (Accusative case) (3) The third *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for instrument (*karan*) (Instrumental case) (4) The fourth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for recipient (*sampradan*) (Dative case) (5) The fifth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used for the object from which something is separated (*apadan*) (Ablative case) (6) The sixth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used to indicate the relation of one's ownership (*sva-svamitva*) (Genitive case) (7) The seventh *vachan-vibhakti* (case-ending) is used to mean the receptacle of something (*sannidhan*) (Vocative case) (8) The eighth *vachan-vibhakti* (case-ending) is used in addressing (*amantran*) someone

(1) The example of the first *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of indication (*nirdesh*) is so (he), imo (this person), or *aham* (I) (2) The example of the second *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of advice (*upadesh*) is *imam bhan* (speak this), *tam kunasu* (do that) (3) The example of the third *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense

of instrument (*karan*) is *tena bhaniyam* (was spoken by him) or *maye kayam* (was done by me) (4) The example of the fourth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of recipient (*sampradan*) is in the form of *namah* and *svaha* (obeisance and oblation) (5) The example of the fifth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of the object from which something is separated (*apadan*) is *etto apanaya* (take away from here) or *ito ginha* (snatch from him) (6) The example of the sixth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of indicating the relation of one's ownership (sva-svamitva) is *tassa ime vastu* (this thing belongs to him or this person) (7) The example of the seventh *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of the receptacle of something (*sannidhan*) is *imammi* (that thing is in this) (8) The example of the eighth *vachan-vibhakti* (case-ending) in the sense of addressing (*amantran*) someone is *Hay juvan* (Oh ! young man)

छद्मस्थ-केवलि-पद CHHADMASTH-KEVALI-PAD (SEGMENT OF CHHADMASTH-KEVALI)

२५. अट्ठ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणति ण पासति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, (अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं) गंधं, वातं।

एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली (सव्वभावेणं, जाणइ पासइ, तं जहा— धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं), गंधं, वातं।

२५. आठ पदार्थो को छद्मस्थ पुरुष सम्पूर्ण रूप से न तो जानता है और न देखता है। जैसे— (१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीर-मुक्त जीव, (५) परमाणु पुद्गल, (६) शब्द, (७) गन्ध, (८) वायु।

प्रत्यक्ष ज्ञान-दर्शन के धारक अर्हन् जिन केवली इन आठ पदार्थों को सम्पूर्ण रूप से जानते-देखते है, जैसे-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीर-मुक्त जीव, (५) परमाणु पुद्गल, (६) शब्द, (७) गन्ध, (८) वायु।

25. A *chhadmasth* (a person in state of karmic bondage) person cannot see or know six things fully (all their possible modes)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) *disembodied* soul, (5) ultimate particle of matter, (6) *shabd* (sound), (7) *Gandh* (smell) and (8) *Vauyu* (air)

Arhat, Jina, and *Kevali* endowed with right knowledge and perception see and know fully (all their possible modes) these five

things—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter, (6) *shabd* (sound), (7) *Gandh* (smell) and (8) *Vaayu* (air)

आयुर्वेद-सूत्र AYURVEDA-PAD (SEGMENT OF AYURVEDA)

२६. अट्ठविहे आउव्वेदे पण्णत्ते, तं जहा–कुमारभिच्चे, कायतिगिच्छा, सालाई, सल्लहत्ता, जंगोली, भूतविज्जा, खारतंते, रसायणे।

२६. आयुर्वेद आठ प्रकार का है। जैसे-(१) **कुमारभृत्य**–बाल-रोगो का चिकित्साशास्त्र। (२) **कायचिकित्सा**–शारीरिक रोगो का चिकित्साशास्त्र। (३) **शालाक्य**–शलाका (सलाई) के द्वारा नाक-कान आदि के रोगो की चिकित्सा का शास्त्र। (४) **शल्यहत्था**–शस्त्र द्वारा चीर-फाड करने का शास्त्र। (५) **जगोली**–सब प्रकार के विषो की चिकित्सा बताने वाला शास्त्र। (६) **भूतविद्या**–भूत, प्रेत, यक्षादि से पीडित व्यक्ति की चिकित्सा का शास्त्र। (७) **क्षारतन्त्र**–वाजीकरण, वीर्य-वर्धक औषधियो का शास्त्र। (८) **रसायन**–पारद आदि धातु-रसो आदि के निर्माण एव प्रयोग की विधि तथा उनके द्वार चिकित्सा विधि बताने वाला शास्त्र।

26. *Ayurveda* (Indian science of medicine and surgery) is of eight kinds—(1) *Kaumarabhritya*—The part of Ayurveda that deals with nursing, nutrition and cure of ailments of infants (Paediatrics) (2) *Kayachikitsa*—The part of Ayurveda that deals with the symptoms and cure of diseases in general (3) *Shalakya* (application of needle)—The part of Ayurveda that deals with the cure of diseases of eyes, nose and other parts of the upper half of the body (4) *Shalyahatya*—The part of Ayurveda that deals with the removal of thorns, cysts etc or surgery (5) *Jangoli*—The part of Ayurveda that deals with the cure for poisons or toxicity (6) *Bhoot-vidya*—The part of Ayurveda that deals with warding off evil spirits and pacifying them (7) *Ksharatantra* or *Baajikaran*—The part of *Ayurveda* that deals with the medicines and tonics for maintaining and toning up sexual performance (8) *Rasayan*—The part of *Ayurveda* that deals with extracting and formulating medicines from metallic sources and their application

अग्रमहिषी-पद AGRAMAHISHI-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS)

२७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पउमा, सिवा, सची, अंजू, अणला, अच्छरा, णवमिया, रोहिणी। २८. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिता, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा।

२९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। ३०. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ।

२७. देवेन्द्र देवराज शक्र के आठ अग्रमहिषियाँ है। जैसे-(१) पद्मा, (२) शिवा, (३) शची, (४) अंजु, (५) अमला, (६) अप्सरा, (७) नवमिका, (८) रोहिणी। २८. देवेन्द्र देवराज ईशान के आठ अग्रमहिषियाँ है। जैसे-(१) कृष्णा, (२) कृष्णराजी, (३) रामा, (४) रामरक्षिता, (५) वसु, (६) वसुगुप्ता, (७) वसुमित्रा, (८) वसुन्धरा। २९. देवेन्द्र देवराज शक्र के लोकपाल महाराज सोम के आठ अग्रमहिषियाँ है। ३०. देवन्द्र देवराज ईशान के लोकपाल महाराज वैश्रमण के आठ अग्रमहिषियाँ है।

27. Shakra Devendra, the king of Gods has eight *agramahishis* (chief queens)—(1) Padmaa, (2) Shiva, (3) Shachi, (4) Anju, (5) Amalaa, (6) Apsara, (7) Navamika and (8) Rohini **28.** Ishan Devendra, the king of Gods has eight *agramahishis* (chief queens)—(1) Krishnaa, (2) Krishnaraji, (3) Rama, (4) Ramarakshita, (5) Vasu, (6) Vasugupta, (7) Vasumitra and (8) Vasundhara **29.** Soma, the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has eight *agramahishis* (chief queens) **30.** Vaishraman, the *lok-paal* of Ishan Devendra, the king of gods has eight *agramahishis* (chief queens)

महाग्रह–पद MAHAGRAHA-PAD (SEGMENT OF GREAT PLANETS)

३१. अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता, तं जहा–चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सती, अंगारे, सणिंचरे, केऊ।

३१ आठ महाग्रह है। जैसे-(१) चन्द्र, (२) सूर्य, (३) शुक्र, (४) बुध, (५) बृहस्पति, (६) अगार (मगल), (७) शनैश्चर, (८) केतु। (ग्रहो का विस्तृत वर्णन, चन्द्र प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति तथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र मे है)

31. Their are eight *Mahagraha* (astrological planets) (1) Chandra (the moon), (2) Surya (the sun), (3) Shukra (Venus), (4) Budh (Mercury), (5) Brihaspati (Jupiter), (6) *Angarak* or *Mangal* (Mars), (7) Shanishchar (Saturn) and (8) Ketu

तृण वनस्पति–पद TRINA-VANASPATI-PAD (SEGMENT OF GRAMINEOUS PLANTS)

३२. अट्ठविधा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा–मूले, कंदे, खंधे, तया, साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे।

३२. तृण वनस्पतिकायिक जीव आठ प्रकार के है। जैसे-(१) मूल, (२) कन्द, (३) स्कन्ध, (४) त्वचा, (५) शाखा, (६) प्रवाल (कोपल), (७) पत्र, (८) पुष्प।

32. Gramineous plant-bodied beings are of eight kinds—(1) *mool* (root), (2) *kand* (bulbuous root), (3) *skandh* (trunk), (4) *tvacha* (bark), (5) *shakha* (branch), (6) *praval* (sprout), (7) *patra* (leaf) and (8) *pushp* (flower)

संयम–असंयम–पद SAMYAM-ASAMYAM-PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

३३. चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविधे संजमे कज्जति, तं जहा—चक्खुमातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। (घाणामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति। जिब्भामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति)। फासामातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति।

३३. चतुरिन्द्रिय जीवो का घात नही करने वाले के आठ प्रकार का सयम होता है, जैसे-(१-२) चक्षुरिन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग तथा दु ख का सयोग नही करने से, (३-४) घ्राणेन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग तथा दु ख का सयोग नही करने से, (५-६) रसनेन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग तथा दु ख का सयोग नही करने से, (७-८) स्पर्शनेन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग तथा दु ख का सयोग नही करने से।

33. A being not indulging in harming or killing of four-sensed beings has eight kinds of discipline—That related to not terminating the pleasure derived through and not enforcing the misery experienced through—(1,2) *chakshurindriya* (sense organ of seeing) (3,4) *ghranendriya* (sense organ of smell), (5, 6) *rasanendriya* (sense organ of taste) and (7,8) *sparshendriya* (sense organ of touch)

३४. चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविधे असंजमे कज्जति, तं जहा—चक्खुमातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। जिब्भामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति)। फासामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति।

३४. चतुरिन्द्रिय जीवो का घात करने वाले के आठ प्रकार का असयम होता है—(१-२) चक्षुरिन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग करने एव दु ख का सयोग करने से, (३-४) घ्राणेन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग एव दु ख का सयोग करने से, (५-६) रसनेन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग एव दु ख का सयोग करने से, (७-८) स्पर्शनेन्द्रिय सम्बन्धी सुख का वियोग एव दु ख का सयोग करने से।

34. A being indulging in harming or killing of four sensed beings has eight kinds of indiscipline—That related to terminating the pleasure derived through and enforcing the misery experienced through—

(1,2) *chakshurindriya* (sense organ of seeing) (3,4) *ghranendriya* (sense organ of smell), (5,6) *rasanendriya* (sense organ of taste) and (7,8) *sparshendriya* (sense organ of touch)

सूक्ष्म–पद SUKSHMA-PAD (SEGMENT OF MINUTE)

३५. अट्ठ सुहुमा पण्णत्ता, तं जहा–पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, बीयसुहुमे, हरितसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे, लेणसुहुमे, सिणेहसुहुमे।

३५. सूक्ष्म जीव आठ प्रकार के है। जैसे–(१) **प्राणसूक्ष्म**–कुन्थु आदि प्राणी, (२) **पनकसूक्ष्म**–लीलन–फूलन आदि, (३) **बीजसूक्ष्म**–धान आदि के बीज के मुख–मूल की कणी आदि जिसे तुष–मुख कहते है। (४) **हरितसूक्ष्म**–एकदम नवीन उत्पन्न हरित काय जो पृथ्वी के समान वर्ण वाला होता है। (५) **पुष्पसूक्ष्म**–वट–पीपल आदि के सूक्ष्म पुष्प। (६) **अण्डसूक्ष्म**–मक्षिका, पिपीलिकादि के अति सूक्ष्म अण्डे। (७) **लयनसूक्ष्म**–कीडीनगरा चीटियो की बाम्बी आदि। (८) **स्नेहसूक्ष्म**–ओस, हिम आदि जलकाय के सूक्ष्म जीव।

35. *Sukshma jiva* (minute beings) are of seven kinds—(1) *pran-sukshma*—like minute insects, (2) *panak-sukshma*—like moss, (3) *beej-sukshma*—like tip of grain seed, (4) *harit-sukshma*—like lichen, (5) *pushp-sukshma*—like minute flowers of banyan tree, (6) *anda-sukshma*—like minute eggs of insects like fly, (7) *layan-sukshma*—like anthill and (8) *sneha-sukshma*—like minute water-bodied beings in dew and snow

भरतचक्रवर्ती–पद BHARAT CHAKRAVARTI-PAD (SEGMENT OF BHARAT CHAKRAVARTI)

३६. भरहस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं (बुद्धाइं मुत्ताइं अंतगडाइं परिणिव्वुडाइं) सव्वदुक्खप्पहीणाइं, तं जहा–आदिच्चजसे, महाजसे, अतिबले, महाबले, तेयवीरिए, कत्तवीरिए, दंडवीरिए, जलवीरिए।

३६. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के क्रमबद्ध आठ उत्तराधिकारी पुरुष–युग राजा लगातार सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिवृत्त और समस्त दु खो से रहित हुए। जैसे–(१) आदित्ययश, (२) महायश, (३) अतिबल, (४) महाबल, (५) तेजोवीर्य, (६) कार्तवीर्य, (७) दण्डवीर्य, (८) जलवीर्य।

36. Eight progressive successor rulers of Chakravarti Bharat became perfect (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*), and ended all miseries in succession—(1) Adityayash, (2) Mahayash, (3) Atibal, (4) Mahabal, (5) Tejovirya, (6) Kartavirya, (7) Dandavirya and (8) Jalavirya

पार्श्वगण–पद PARSHVA-GANA-PAD (SEGMENT OF PARSHVA-GANA)

३७. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा–सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बंभचारी, सोमे, सिरिधरे, वीरभद्दे, जसोभद्दे।

३७. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर हुए–(१) शुभ, (२) आर्यघोष, (३) वशिष्ठ, (४) ब्रह्मचारी, (५) सोम, (६) श्रीधर, (७) वीरभद्र, (८) यशोभद्र।

37. *Purushadaniya Arhat Parshva* had eight *ganas* (groups of ascetic disciples) and eight *Ganadharas* (chief disciples)—(1) Shubha, (2) Aryaghosh, (3) Vashishtha, (4) Brahmachari, (5) Soma, (6) Shridhar, (7) Virabhadra and (8) Yashodhar

दर्शन–पद DARSHAN-PAD (SEGMENT OF PERCEPTION/FAITH)

३८. अट्ठविधे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा–सम्मदंसणे, मिच्छदंसणे, सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे, (अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे), केवलदंसणे, सुविणदंसणे।

३८. दर्शन आठ प्रकार का है। जैसे–(१) सम्यग्दर्शन, (२) मिथ्यादर्शन, (३) सम्यग्मिथ्यादर्शन, (४) चक्षुदर्शन, (५) अचक्षुदर्शन, (६) अवधिदर्शन, (७) केवलदर्शन, (८) स्वप्नदर्शन।

38. *Darshan* (perception/faith) is of eight kinds—(1) *Samyagdarshan*—right perception/faith, (2) *mithyadarshan*—wrong or false perception/faith, (3) *samyagmithyadarshan*—mixed or right and wrong perception/faith, (4) *chakshu darshan*—common visual perception through eyes, (5) *achakshu darshan*—common sensual perception through mind and sensual organs other than eyes, (6) *avadhi darshan*—sensual perception of subject of *avadhi-jnana* (distant things) preceding attainment of *avadhi-jnana*, (7) *Keval darshan*—common perception of general properties of all things and (8) *Svapnadarshan*—to dream

औपमिक–काल–पद AUPAMIK-KAAL-PAD (SEGMENT OF CONCEPTUAL UNITS OF TIME)

३९. अट्ठविधे अद्धोवमिए पण्णत्ते, तं जहा–पलिओवमे, सागरोवमे, ओसप्पिणी, उस्सप्पिणी, पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा।

३९. औपमिक अद्धा–(मात्र उपमा द्वारा समझाया जाने वाला काल) आठ प्रकार का है, जैसे–(१) पल्योपम, (२) सागरोपम, (३) अवसर्पिणी, (४) उत्सर्पिणी, (५) पुद्गल परिवर्त, (६) अतीत–अद्धा (भूतकाल), (७) अनागत–अद्धा (भविष्य), (८) सर्व–अद्धा (भूत, वर्तमान व भविष्य)।

39. *Aupamik addha* (conceptual units of time) are of eight kinds—(1) *Palyopam*, (2) *Sagaropam*, (3) *Avasarpini*, (4) *Utsarpini*, (5) *Pudgal-*

parivart (infinite *Avasarpini* and *Utsarpini*), (6) *Atita addha* (past), (7) *Anagat addha* (future) and (8) *Sarva addha* (past, present and future) *(for more details see Hindi Tika, part-2, p. 539)*

विवेचन–जिस काल की गणना सख्या द्वारा नही हो सकती केवल उपमा द्वारा समझाया जा सकता है, उसे औपमिक काल कहा जाता है। (१) पल्य की उपमा से समझाया जाने वाला–पल्योपम। (२) दस करोडा कोड पल्यो का एक सागरोपम। (३-४) दस करोडा करोड सागरोपम का एक उत्सर्पिणी तथा एक उत्सर्पिणी। (५) अनन्त उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी का एक पुद्गल परावर्तन। (६-७) बीता हुआ काल अतीत अद्धा तथा भविष्य काल अनागत अद्धा। (८) तीनो काल के समयो को मिलाने से 'सर्वाद्धा' कहलाता है। *(विस्तृत विवरण हेतु देखे -हिन्दी टीका भाग-२ पृष्ठ ५३९)*

Elaboration—The period of time beyond the scope of numbers can only be explained by metaphors This is called metaphoric or conceptual time-scale (1) That which is explained by the analogy of *palya* (silo) is called *Palyopam* (2) Ten *koda-kod* (one thousand trillion *Palyopam* make one *Sagaropam* (3,4) One thousand trillion *Sagaropam* make one *Utsarpini* or one *Avasarpini* (5) Infinite *Utsarpini-Avasarpini* make one *Pudgal Paravartan* (6,7) Past time is *Ateet Addha* and future time is *Anagat Addha* (8) When all three past, present and future are combined it is call *Sarva Addha* *(for more details see Hindi Tika, part-2, p 539)*

अरिष्टनेमि–पद ARISHTANEMI-PAD (SEGMENT OF ARISHTANEMI)

४०. अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स जाव अट्ठमातो पुरिसजुगातो जुगंतकरभूमी। दुवासपरियाए अंतमकासी।

४०. अर्हत् अरिष्टनेमि से आठवे पुरुषयुग तक युगान्तकर भूमि रही–(मोक्ष जाने का क्रम चालू रहा, आगे नही)। अर्हत् अरिष्टनेमि के केवलज्ञान प्राप्त करने के दो वर्ष बाद ही उनके शिष्य मोक्ष जाने लगे थे।

40. *Yugantakar Bhumi* (age of being liberated) continued from Arhat Arishtanemi to his eighth successor and not after that Two years after Arhat Arishtanemi attained *Keval-jnana,* his disciples had started getting liberated

महावीर–पद MAHAVIR-PAD (SEGMENT OF MAHAVIR)

४१. समणेणं भगवता महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगाराओ अणगारितं पव्वाइया, तं जहा–

वीरंगए वीरजसे, संजय एणिज्जए य रायरिसी।
सेये सिवे उद्दायणे, तह संखे कासिवद्धणे॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

४१. श्रमण भगवान् महावीर ने आठ राजाओ को मुण्डित कर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित किया। (१) वीराङ्गक, (२) वीर्ययश, (३) सजय, (४) एणेयक, (५) सेय, (६) शिव, (७) उद्दायन, (८) शखकाशीवर्धन।

41. Shraman Bhagavan Mahavir initiated eight kings from householders to homeless ascetics after getting their heads tonsured—(1) Virangak, (2) Viryayash, (3) Sanjaya, (4) Eneyak, (5) Seya, (6) Shiva, (7) Uddayan and (8) Shankhakashivardhan

आहार–पद AHAR-PAD (SEGMENT OF FOOD)

४२. अट्ठविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा–मणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे। अमणुण्णे (असणे, पाणे, खाइमे), साइमे।

४२. आहार आठ प्रकार का है। जैसे–(१) मनोज्ञ अशन, (२) मनोज्ञ पान, (३) मनोज्ञ खाद्य, (४) मनोज्ञ स्वाद्य, (५) अमनोज्ञ अशन, (६), अमनोज्ञ पान, (७) अमनोज्ञ स्वाद्य, (८) अमनोज्ञ खाद्य।

42. *Ahar* (food) is of eight kinds—(1) *Manojna* (palatable) *Ashan*, (2) *Manojna Paan*, (3) *Manojna Khadya*, (4) *Manojna Svadya*, (5) *Amanojna* (unpalatable) *Ashan*, (6) *Amanojna Paan*, (7) *Amanojna Khadya* and (8) *Amanojna Svadya* *(for details refer to Sthaan 4, aphorism 512)*

कृष्णराजि–पद KRISHNARAJI-PAD (SEGMENT OF ROWS OF DARKNESS)

४३. उप्पिं सणंकुमार–माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणं–पत्थडे, एत्थ णं अक्खाडग–समचउरंस–संठाण–संठिताओ अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पुरत्थिमे णं दो कण्हराईओ, दाहिणे णं दो कण्हराईओ, पच्चत्थिमे णं दो कण्हराईओ, उत्तरे णं दो कण्हराईओ।

पुरत्थिमा अब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। दाहिणा अब्भंतरा कण्हराई पच्चत्थिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। पच्चत्थिमा अब्भतरा कण्हराई उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। उत्तरा अब्भंतरा कण्हराई पुरत्थिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा। पुरत्थिमपच्चत्थिमिल्लाओ बाहिराओ। दो कण्हराईओ छलंसाओ। उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ तंसाओ। सव्वाओ वि णं अब्भंतरकण्हराईओ चउरंसाओ।

४३. सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के ऊपर और ब्रह्मलोक कल्प के नीचे रिष्ट विमान का प्रस्तट है, वहाँ अखाडे के समान समचतुरस्र (चतुष्कोण) सस्थान वाली आठ कृष्णराजियाँ (काले पुद्‌गलो की पक्तियाँ है, जैसे–(१) पूर्व दिशा मे दो कृष्णराजियाँ, (२) दक्षिण दिशा मे दो कृष्णराजियाँ, (३) पश्चिमी दिशा मे दो कृष्णराजियाँ, (४) उत्तर दिशा मे दो कृष्णराजियाँ।

पूर्व की आभ्यन्तर कृष्णराजि दक्षिण की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

दक्षिण की आभ्यन्तर कृष्णराजि पश्चिम की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

पश्चिम की आभ्यन्तर कृष्णराजि उत्तर की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

उत्तर की आभ्यन्तर कृष्णराजि पूर्व की बाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

पूर्व और पश्चिम की बाह्य दो कृष्णराजियाँ षट्कोण है।

उत्तर और दक्षिण की बाह्य दो कृष्णराजियाँ त्रिकोण है।

समस्त आभ्यन्तर कृष्णराजियाँ चतुष्कोण वाली है।

43. Above *Sanatkumar* and *Maahendra Kalp* and below *Brahmalok Kalp* there is the *prastat* (gap) of *Rishta Vimaan* In that space there are eight *Krishnarajis* (rows of dark particles) in square shape (like wrestling ring)—(1) two *Krishnarajis* in the east, (2) two *Krishnarajis* in the south, (3) two *Krishnarajis* in the west, and (4) two *Krishnarajis* in the north

The inner *Krishnaraji* of east touches the outer *Krishnaraji* of the south

The inner *Krishnaraji* of south touches the outer *Krishnaraji* of the west

The inner *Krishnaraji* of west touches the outer *Krishnaraji* of the north

The inner *Krishnaraji* of north touches the outer *Krishnaraji* of the east

The two outer *Krishnarajis* of east and west are hexagonal

The two outer *Krishnarajis* of north and south are triangular

all the inner *Krishnarajis* are square

४४. एतासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठ णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हराईति वा, मेहराईति वा, मघाति वा, माघवतीति वा, वातफलिहेति वा, वातपलिक्खोभेति वा, देवफलिहेति वा, देवपलिक्खोभेति वा।

४४. इन आठ कृष्णराजियो के आठ नाम है। जैसे–(१) कृष्णराजि, (२) मेघराजि, (३) मघा, (४) माघवती, (५) वातपरिघ, (६) वातपरिक्षोभ, (७) देवपरिघ, (८) देवपरिक्षोभ।

44. These eight *Krishnarajis* have eight names—(1) *Krishnaraji*, (2) *Megharaji* (3) *Magha*, (4) *Maaghavati*, (5) *Vaatparigh*, (6) *Vaatparikshobh*, (7) *Devaparigh* and (8) *Devaparikshobh*

४५. एतासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—अच्ची, अच्चीमाली, वइरोअणे, पभंकरे, चंदाभे, सूराभे, सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे।

४५. इन आठों कृष्णराजियो के आठ अवकाशान्तरो मे आठ लोकान्तिक देवो के विमान है। जैसे–(१) अर्चि, (२) अर्चिमाली, (३) वैरोचन, (४) प्रभकर, (५) चन्द्राभ, (६) सूर्याभ, (७) सुप्रतिष्ठाभ, (८) अग्न्यर्चाभ।

45. In the eight *avakashantars* (intervening space) of these eight *Krishnarajis* are located the *Vimaans* of eight *Lokantik Devas* (gods at the edge of universe)—(1) Archi, (2) Archimali, (3) Vairochan, (4) Prabhankar, (5) Chandrabh, (6) Suryabh, (7) Supratishthabh and (8) Agnyarchabh

४६. एतेसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविधा लोगंतिया देवा पण्णत्ता, तं जहा—

सारस्सतमाइच्चा, वण्ही वरुणा या गद्दतोया य।
तुसिता अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

४६. इन आठो लोकान्तिक विमानो मे आठ प्रकार के लोकान्तिक देव है। (१) सारस्वत, (२) आदित्य, (३) वह्नि, (४) वरुण, (५) गर्दतोय, (६) तुषित, (७) अव्याबाध, (८) अग्न्यर्च।

46. In these eight *Lokantik Vimaans* there are eight *Lokantik Devas*—(1) Sarasvat, (2) Aditya, (3) Vahni, (4) Varun, (5) Gardatoya, (6) Tushit, (7) Avyabadh and (8) Agnyarch

४७. एतेसि णं अट्ठण्हं लोगंतियदेवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

४७. इन आठो लोकान्तिक देवो की जघन्य और उत्कृष्ट भेद से रहित–एक–समान स्थिति आठ–आठ सागरोपम की है।

47. Without a variation of maximum and minimum, the common life span of each of these eight *Lokantik Devas* is eight *Sagaropam*

विवेचन—नौवे स्थान मे नौ लोकान्तिक देवो का कथन है। आठो के विमान कृष्णराजियो के बीच के भाग मे स्थित है तथा नौवाँ रिष्टाभ विमान सबके मध्य मे स्थित है। उसमे रिष्ट नामक देव का आवास है। तीर्थंकर जब दीक्षा का विचार करते है। तब ये देव आकर उनका वर्धापन कर ससार मे धर्म का उद्योत करने की प्रार्थना करते है। *(भगवती शतक ६, उ ५)*

Elaboration—In the Ninth *Sthaan* there is a mention of nine *Lokantik* gods Eight *Vimaans* are located in the middle of *Krishnarajis* and the ninth, *Rishtabh Vimaan*, is located at the center of all these It is the abode of Rishta Deva When a *Tirthankar* decides to get initiated these gods approach him to offer commendation and request him to spread the light of religion *(Bhagavati Shatak 6/5)*

मध्यप्रदेश–पद MADHYA PRADESH-PAD (SEGMENT OF MIDDLE SECTIONS)

४८. अट्ठ धम्मत्थिकाय–मज्झपएसा पण्णत्ता। ४९. अट्ठ अधम्मत्थिकाय–(मज्झपएसा पण्णत्ता)। ५०. अट्ठ आगासत्थिकाय–(मज्झपएसा पण्णत्ता)। ५१. अट्ठ जीव–मज्झपएसा पण्णत्ता।

४८. धर्मास्तिकाय के आठ मध्य प्रदेश मध्य भाग मे रहने वाले रुचक प्रदेश है। ४९. अधर्मास्तिकाय के आठ मध्य प्रदेश है। ५०. आकाशास्तिकाय के आठ मध्य प्रदेश है। ५१. जीव के आठ मध्य प्रदेश है।

48. There are eight *Madhya Pradesh* (core sections) of *Dharmastikaya* **49.** There are eight *Madhya Pradesh* (core sections) of *Adharmastikaya* **50.** There are eight *Madhya Pradesh* (core sections) of *Akashastikaya* **51.** There are eight *Madhya Pradesh* (core sections) of *Jiva*

विवेचन–तिर्यक् लोक के मध्य भाग मे एक राजु परिमाण लम्बाई-चौडाई वाले आकाश-प्रदेशो के दो प्रतर है। मेरु पर्वत के ठीक मध्य भाग मे इनका स्थान है। इन दोनो प्रतरो के बीचोबीच गाय के स्तन के आकार मे चार-चार आकाश प्रदेश है। इन्हे आठ **रुचक प्रदेश** कहा जाता है। ये ही रुचक प्रदेश दिशा-विदिशाओ की मर्यादा के कारण बनते है। (आचाराग श्रु १ अ १ उ १ निर्युक्ति गाथा ४२) जीव के आठ रुचक प्रदेश जीव के मध्य भाग मे स्थित रहते है। ये आठो रुचक प्रदेश सदा अपने शुद्ध स्वरूप मे रहते है। इन प्रदेशो के साथ कभी कर्मबन्ध नही होता। भव्य, अभव्य सभी जीवो के रुचक प्रदेश सिद्ध भगवान के रुचक प्रदेशो की तरह शुद्ध स्वरूप मे रहते है। *(भगवती सूत्र शतक ८ । उ ९)*

Elaboration—At the center of *Tiryak lok* at the mid-section of Meru mountain there are two levels of space At the center of these two levels there are four space-sections each resembling four teats in udder of a cow These are called *Madhya Pradesh* or *Ruchak Pradesh* These core sections determine the extant of directions (*Acharanga* 1/1/1, *Niryukti* verse 42) Such *Ruchak Pradesh* (core sections) also exist in other agglomerate entities as well as soul In soul also they are located at the exact center and are always in their pristine sublime form irrespective of the individual being worthy or unworthy of liberation or even liberated They are, in fact, free of any *karmic* bondage *(Bhagavati Sutra 8/9)*

महापद्म-पद MAHAPADMA-PAD (SEGMENT OF MAHAPADMA)

५२. अरहा णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वावेस्सति, तं जहा—पउमं, पउमगुम्मं, णलिणं, णलिणगुम्मं, पउमद्धयं, धणुद्धयं, कणगरहं, भरहं।

५२. (भावी प्रथम तीर्थंकर) अर्हत् (इन) महापद्म आठ राजाओ को मुण्डित कर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित करेगे। जैसे-(१) पद्म, (२) पद्मगुल्म, (३) नलिन, (४) नलिनगुल्म, (५) पद्मध्वज, (६) धनुर्ध्वज, (७) कनकरथ, (८) भरत।

52. Arhat Mahapadma (the first Tirthankar in future) will initiate eight kings from householders to homeless ascetics after getting their heads tonsured—(1) Padma, (2) Padmagulm, (3) Nalin, (4) Nalinagulm, (5) Padmadhvaj, (6) Dhanurdhvaj, (7) Kanakarath and (8) Bharat

कृष्ण–अग्रमहिषी–पद KRISHNA-AGRAMAHISHI-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS OF KRISHNA)

५३. कण्हस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स अंतिए मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइया सिद्धाओ (बुद्धाओ मुत्ताओ अंतगडाओ परिणिव्वुडाओ) सव्वदुक्खप्पहीणाओ, तं जहा–

पउमावती य गोरी, गंधारी लक्खणा सुसीमा य।
जंबवती सच्चभामा, रुप्पिणी अग्गमहिसीओ॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

५४. वीरियपुव्वस्स णं अट्ठवत्थू अट्ठ चूलिया वत्थू पण्णत्ते।

५३. श्रीकृष्ण वासुदेव की आठ पटरानियो ने अर्हत् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा लेकर सिद्धगति प्राप्त की। उनके नाम है-

(१) पद्मावती, (२) गौरी, (३) गधारी, (४) लक्षणा, (५) सुसीमा, (६) जोबवती, (७) सत्यगाथा, और (८) रुक्मिणी) (विस्तृत वर्णन देखे–अन्तकृद्दशा मे)

५४. वीर्यप्रवाद पूर्व के आठ वस्तु (मूल अध्ययन) और आठ चूलिका–वस्तु है।

53. Eight chief queens of Krishna Vasudev were initiated by Arhat Arishtanemi from householders to homeless ascetics after getting their heads tonsured and they all became perfect (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*) to end all miseries Their names are—(1) Padmavati, (2) Gauri, (3) Gandhari, (4) Lakshmana, (5) Susima, (6) Jambavati, (7) Satyabhama and (8) Rukmini

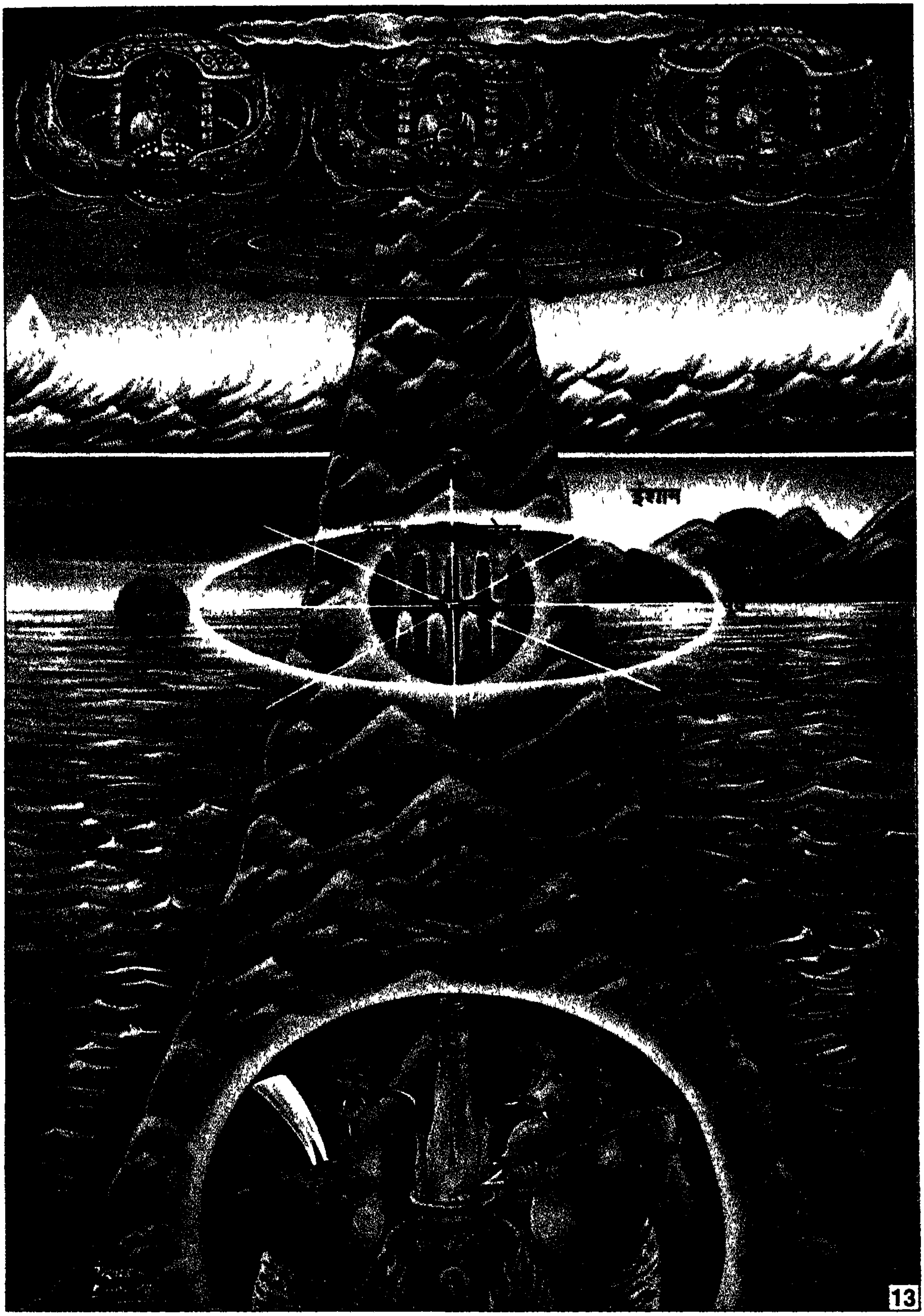
54. *Viryapravad Purva* (one of the subtle canon) has eight *Vastu* (basic chapters) and eight *Chulika-vastu* (appendices)

गति–पद GATI-PAD (SEGMENT OF GENUSES)

५५. अट्ठ गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–णिरयगती, तिरियगती, (मणुयगती, देवगती), सिद्धिगती, गुरुगती, पणोल्लणगती, पब्भारगती।

५५. गतियॉ आठ है। जैसे–(१) नरकगति, (२) तिर्यग्गति, (३) मनुष्यगति, (४) देवगति, (५) सिद्धगति, (६) गुरुगति, (७) प्रणोदनगति, (८) प्राग्–भारगति।

55. There are eight *gatis* (genuses)—(1) *narak gati* (genus of infernal beings), (2) *tiryanch gati* (animal genus), (3) *manushya gati* (genus of human beings), (4) *deva gati* (divine genus), (5) *Siddha gati* (Siddha genus or status), (6) *Guru gati* (natural movement of *Paramanu* and other



13

चित्र परिचय १३	Illustration No. 13

आठ रुचक प्रदेश

जम्बूद्वीप के मध्य भाग मे मेरु पर्वत है। इस पर्वत के ठीक मध्य भाग मे मध्य लोक व अधोलोक के सीमान्त पर दो प्रतर है। इन प्रतरो के बीच गो स्तनाकार चार आकाश प्रदेश ऊपर व चार नीचे यो आठ आकाश प्रदेश है, जिन्हे रुचक प्रदेश कहा जाता है। ये **रुचक प्रदेश** ही सम्पूर्ण लोक का केन्द्र भाग है। इन्ही से सभी दिशा और विदिशाओ का आरम्भ होता है। इसके जिस तरफ सूर्योदय होता है वह पूर्व, सूर्यास्त होने वाली पश्चिम बायी तरफ उत्तर व दाहिनी तरफ दक्षिण दिशा मानी जाती है। इसी प्रकार चारो कोनो मे चार विदिशा तथा ऊपर ऊर्ध्व दिशा जहाँ सभी देव लोक है, नीचे अधोदिशा जहा पर सभी नरक भूमियो है।

चित्र मे सूर्योदय की पूर्व व सूर्यास्त की पश्चिम दिशा बताई है। उत्तर मे विशाल पर्वत श्रेणियो तथा दक्षिण मे अथाह समुद्र दिखाये गये है। *(विशेष वर्णन के लिए देखे स्थान १० सूत्र ३०-३१ पृ ४८४)*

—स्थान ८ सूत्र ५२ पृ ३८३

EIGHT RUCHAK PRADESH

Meru mountain is at the center of Jambudveep At the mid-section of Meru mountain there are two levels of space At the center of these there are four space-sections, each resembling four teats in udder of a cow These are called Ruchak Pradesh This is the starting point of cardinal and intermediate directions From this point the directions of sunrise and sunset are called east and west respectively To the left and right are north and south respectively The intermediate directions are in four corners Directly above is zenith, the place of divine realms and below is nadir, the place of infernal realms

In the illustration east and west are shown as directions of sunrise and sunset Towards north are shown great mountain ranges and towards south is shown unfathomable sea *(for detailed discription please refer to--Sthaan 10, Sutra 30-31, p 484)*

—Sthaan 8 Sutra 52 p 383

things), (7) *Pranod gati* (movement caused by someone, such as shooting an arrow or moving a vehicle) and (8) *Pragbhar gati* (movement caused by a load, such as the downward movement of a boat when loaded)

विवेचन—परमाणु आदि की स्वाभाविक गति को **गुरुगति** कहा जाता है। प्रकाश की, शब्द की, वायु की गति, गुरुगति तथा किसी दूसरे की प्रेरणा से होने वाली गति **प्रणोदनगति** कहलाती है। जैसे तीर का चलना, वाहन का चलना आदि। द्रव्यो से आक्रान्त होने पर जो दूसरी गति होती है, उसे **प्राग्भार गति** कहते है। जैसे नाव मे भरे भार से उसकी नीचे की ओर होने वाली गति। शेष गतियाँ प्रसिद्ध है।

Elaboration—explanations given in parentheses

द्वीप-समुद्र-पद DVEEP-SAMUDRA-PAD (SEGMENT OF ISLANDS AND SEAS)

५६. गंगा-सिन्धु-रत्त-रत्तवतिदेवीणं दीवा अट्ठ-अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। ५७. उक्कामुह-मेहमुह-विज्जुमुह-विज्जुदंतदीवा णं दीवा अट्ठ-अट्ठ जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता।

५६. गगा, सिन्धु, रक्ता और रक्तवती नदियो की अधिष्ठात्री देवियो के द्वीप आठ-आठ योजन लम्बे-चौडे है। ५७. उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दन्त द्वीप आठ-आठ सौ योजन लम्बे-चौडे है।

56. The islands of *adhishthatri devis* (the ruling goddesses) of Ganga, Sindhu, Rakta and Raktavati rivers are eight *Yojan* long and eight *Yojan* wide **57.** Ulkamukh, Meghamukh, Vidyunmukh and Vidyuddant islands are eight hundred *Yojan* long and eight hundred *Yojan* wide

५८. कालोदे णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। ५९. अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। ६०. एवं बाहिरपुक्खरद्धेवि।

५८. कालोद समुद्र चक्रवाल विष्कम्भ-(गोलाई की अपेक्षा) से आठ लाख योजन विस्तृत है। ५९. आभ्यन्तर पुष्करार्ध चक्रवाल विष्कम्भ से आठ लाख योजन है। ६० इसी प्रकार बाह्य पुष्करार्ध भी चक्रवाल विष्कम्भ से आठ लाख योजन विस्तृत है।

58. The *chakraval vishkambh* (circumference) of Kalod Samudra is said to be eight hundred thousand *Yojans* **59** The *chakraval vishkambh* (circumference) of inner Pushkarardh is said to be eight hundred thousand *Yojans* **60.** In the same way the *chakraval vishkambh* (circumference) of outer Pushkarardh is also said to be eight hundred thousand *Yojans*

काकणिरत्न-पद KAKANIRATNA-PAD (SEGMENT OF KAKANI GEM)

६१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकणिरयणे छत्तले दुवाल-संसिए अट्ठकण्णिए अधिकरणिसंठिते।

६१. प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के आठ सुवर्ण जितना भारी काकिणी रत्न होता है। वह छह तल, बारह कोण, आठ कर्णिका वाला और अहरन (एरण) के सस्थान वाला होता है।

61. Every *Chaturant Chakravarti* has a *Kakini ratna* weighing eight Suvarna (an ancient coin) It has six surfaces, twelve angle, eight diagonals and is anvil-shaped

मागध-योजन-पद MAAGADH YOJAN-PAD (SEGMENT OF MAAGADH YOJAN)

६२. मागधस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं णिधत्ते पण्णत्ते।

६२. मगध देश के योजन का प्रमाण आठ हजार धनुष प्रमाण है।

62. The measure of *Yojan* in Magadh country is eight thousand *Dhanush*

जम्बूद्वीप-पद JAMBUDVEEP-PAD (SEGMENT OF JAMBU CONTINENT)

६३. जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठा जोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता। ६४. कूडसामली णं अट्ठ जोयणाइं एवं चेव। ६५. तिमिसगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं। ६६. खंडप्पवातगुहा णं अट्ठ (जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं)।

६३. सुदर्शन जम्बू वृक्ष आठ योजन ऊँचा, बहुमध्यप्रदेश (ठीक बीच मे) भाग मे आठ योजन चौडा और सर्व परिमाण मे कुछ अधिक आठ योजन है। ६४. कूट शाल्मली वृक्ष भी पूर्वोक्त प्रमाण वाला जानना चाहिए। ६५. तमिस्र गुफा आठ योजन ऊँची है। ६६. खण्डप्रपात गुफा आठ योजन ऊँची है।

63. The beautiful Jambu tree is eight *Yojan* tall. eight *Yojan* wide in the middle and a little more than eight *Yojan* in overall dimension **64.** The dimensions of *Koot Shalmali* tree should also be read as aforesaid **65.** *Tamisra* cave is eight *Yojan* high **66.** *Khandaprapat* cave is eight *Yojan* high

विवेचन-वैताढ्य पर्वत के मूल मे पश्चिम मे तमिस्रा गुफा तथा पूर्व भाग मे खण्ड प्रपात गुफा है। पूर्वी गुफा के किनारे गगा तथा पश्चिमी दिशा के किनारे सिन्धु नदी बहती है। गुफाओ के उत्तर-दक्षिण दोनो तरफ एक-एक विशाल द्वार है। ये द्वार सदा बन्द ही रहते है। जब चक्रवर्ती षट्खण्ड विजय को

निकलते है तो उनका सेनापति इनमें प्रवेश हेतु तमिस्रा गुफा का द्वार खोलता है तथा लौटते हुए खण्ड प्रपात गुफा से आता है। *(जम्बूद्वीप प्र व १)*

Elaboration—In the base of Vaitadhya mountain there are two caves, Tamisra in the west and Khand-prapat in the east The opening of the eastern caves is on the banks of Ganges and that of the western cave is on the banks of Sindhu On the northern and southern sides of the two caves there are large gates These gates are always closed When a Chakravarti launches his victory march, his commander opens the gates entering in Tamisra cave and leaving from Khand-prapat *(Jambudveep pra -1)*

६७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उभतो कूले अट्ठ वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे। ६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं सीतोयाए महाणदीए उभतो कूले अट्ठ वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते।

६७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दोनो कूलो पर आठ वक्षस्कारपर्वत है, जैसे-(१) चित्रकूट, (२) पक्ष्मकूट, (३) नलिनकूट, (४) एकशैल, (५) त्रिकूट, (६) वैश्रमणकूट, (७) अजनकूट, (८) माताजनकूट। ६८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दोनो कूलो पर आठ वक्षस्कारपर्वत है, जैसे-(१) अकावती, (२) पक्ष्मावती, (३) आशीविष, (४) सुखावह, (५) चन्द्रपर्वत, (६) सूरपर्वत, (७) नागपर्वत, (८) देवपर्वत।

67. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain there are eight *Vakshaskar* mountains on the two banks of great river Sita—(1) *Chitrakoot*, (2) *Padmakoot*, (3) *Nalinakoot*, (4) *Ekashaila*, (5) *Trikoot*, (6) *Vaishraman-koot*, (7) *Anjan-koot* and (8) *Matanjan-koot* **68.** In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain there are eight *Vakshaskar* mountains on the two banks of great river Sitoda—(1) *Ankavati*, (2) *Pakshmavati*, (3) *Ashivish*, (4) *Sukhavah*, (5) *Chandraparvat*, (6) *Suryaparvat*, (7) *Naag-parvat* and (8) *Devaparvat*

विजय–पद VIJAYA-PAD (SEGMENT OF VIJAYA)

६९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावती, आवत्ते, (मंगलावत्ते, पुक्खले), पुक्खलावती। ७०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा—वच्छे, सुवच्छे, (महावच्छे, वच्छगावती, रम्मे, रम्मगे, रमणिज्जे), मंगलावती।

६९. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तर मे चक्रवर्ती के आठ विजयक्षेत्र है। जैसे-(१) कच्छ, (२) सुकच्छ, (३) महाकच्छ, (४) कच्छकावती, (५) आवर्त, (६) मगलावर्त, (७) पुष्कल, (८) पुष्कलावती। ७०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे चक्रवर्ती के आठ विजयक्षेत्र है, जैसे-(१) वत्स, (२) सुवत्स, (३) महावत्स, (४) वत्सकावती, (५) रम्य, (६) रम्यक, (७) रमणीय, (८) मगलावती।

69. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain to the north of great river Sita there are eight *Vijaya Kshetra* (state-like subdivisions) of a *Chakravarti*—(1) Kachchha, (2) Sukachchha, (3) Mahakachchha, (4) Kachchhakavati, (5) Avart, (6) Mangalavart, (7) Pushkal, (8) Pushkalavati **70.** In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain to the south of great river Sita there are eight *Vijaya Kshetra* (state-like subdivisions) of a *Chakravarti*—(1) Vatsa, (2) Suvatsa, (3) Mahavatsa, (4) Vatsakavati, (5) Ramya, (6) Ramyak, (7) Ramaniya, (8) Mangalavati

७१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा–पम्हे, (सुपम्हे, महापम्हे, पम्हगावती, संखे,णलिणे, कुमुए), सलिलावती। ७२. जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तं जहा–वप्पे, सुवप्पे, (महावप्पे, वप्पगावती, वग्गू, सुवग्गू, गंधिल) गंधिलावती।

७१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे आठ विजय क्षेत्र है, जैसे-(१) पक्ष्म, (२) सुपक्ष्म, (३) महापक्ष्म, (४) पक्ष्मकावती, (५) शख, (६) नलिन, (७) कुमुद, (८) सलिलावती। ७२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे चक्रवर्ती के आठ विजयक्षेत्र है, जैसे-(१) वप्र, (२) सुवप्र, (३) महावप्र, (४) वप्रकावती, (५) वल्गु, (६) सुवल्गु, (७) गन्धिल, (८) गन्धिलावती।

71. In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain to the south of great river Sitoda there are eight *Vijaya Kshetra* (state-like subdivisions) of a *Chakravarti*—(1) Pakshma, (2) Supakshma, (3) Mahapakshma, (4) Pakshmavati, (5) Shankha, (6) Nalin, (7) Kumud, (8) Salilavati **72.** In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain to the north of great river Sitoda there are eight *Vijaya Kshetra* (state-like subdivisions) of a *Chakravarti*—(1) Vapra, (2) Suvapra, (3) Mahavapra, (4) Vaprakavati, (5) Valgu, (6) Suvalgu, (7) Gandhil, (8) Gandhilavati

७३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–खेमा, खेमपुरी, (रिट्ठा, रिट्ठपुरी, खग्गी, मंजूसा, ओसधी), पुंडरीगिणी। ७४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–सुसीमा, कुंडला, (अपराजिया, पभंकरा, अंकावई, पम्हावई, सुभा), रयणसंचया।

७३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे शीता महानदी के उत्तर मे आठ राजधानियाँ है, जैसे–(१) क्षेमा, (२) क्षेमपुरी, (३) रिष्टा, (४) रिष्टपुरी, (५) खड्‌गी, (६) मजूषा, (७) औषधि, (८) पौण्डरीकिणी। ७४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे आठ राजधानियाँ है, जैसे–(१) सुसीमा, (२) कुण्डला, (३) अपराजिता, (४) प्रभकरा, (५) अकावती, (६) पक्ष्मावती, (७) शुभा, (८) रत्नसचया।

73. In Jambu Dveep ın the eastern part of Mandar mountaın to the north of great rıver Sıta there are eıght *rajadhanıs* (capıtal cıtıes)—(1) Kshama, (2) Kshemapurı, (3) Rıshta, (4) Rıshtapurı, (5) Khadgı, (6) Manjusha, (7) Aushadhı, (8) Paundarıkını **74.** In Jambu Dveep ın the eastern part of Mandar mountaın to the south of great rıver Sıta there are eıght *rajadhanıs*—(1) Susıma, (2) Kundala, (3) Aparajıta, (4) Prabhankara, (5) Ankavatı, (6) Pakshamavatı, (7) Shubha, (8) Ratnasanchaya

७५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–आसपुरा, (सीहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अवराजिता, अवरा, असोया), वीतसोगा। ७६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणईए उत्तरे णं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–विजया, वेजयंती, (जयंती, अपराजिया, चक्कपुरा, खग्गपुरा, अवज्झा), अउज्झा।

७५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दक्षिण मे आठ राजधानियाँ है, जैसे–(१) अश्वपुरी, (२) सिहपुरी, (३) महापुरी, (४) विजयपुरी, (५) अपराजिता, (६) अपरा, (७) अशोका, (८) वीतशोका। ७६ जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के उत्तर मे आठ राजधानियाँ है, जैसे-(१) विजया, (२) वैजयन्ती, (३) जयन्ती, (४) अपराजिता, (५) खड्‌गपुरी, (७) अवध्या, (८) अयोध्या।

75. In Jambu Dveep ın the western part of Mandar mountaın to the south of great rıver Sıtoda there are eıght *rajadhanıs*—(1) Ashvapuri, (2) Sımhapurı, (3) Mahapurı, (4) Vıjayapurı, (5) Aparajıta, (6) Apara, (7) Ashoka, (8) Vigatashoka **76.** In Jambu Dveep ın the western part of Mandar mountaın to the north of great rıver Sıtoda there are eıght

rajadhanıs—(1) Vıjaya, (2) Vaıjayantı, (3) Jayantı, (4) Aparajıta, (5) Chakrapurı, (6) Khadgapurı, (7) Avadhya, and (8) Ayodhya

अरिहंत-चक्रवर्ती-पद ARIHANT-CHAKRAVARTI-PAD (SEGMENT OF ARIHANT AND CHAKRAVARTI)

७७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता, अट्ठ चक्कवट्टी, अट्ठ बलदेवा, अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा। ७८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए [महाणदीए ?] दाहिणे णं उक्कोसपए एवं चेव। ७९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए दाहिणे णं उक्कोसपए एवं चेव। ८०. एवं उत्तरेणवि।

७७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तर मे उत्कृष्टत आठ अर्हत् (तीर्थकर), आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे। ७८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे उत्कृष्टत इसी प्रकार आठ अर्हत्, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे। ७९. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे सीतोदा महानदी के दक्षिण मे उत्कृष्टत इसी प्रकार आठ अर्हत्, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे। ८०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे सीतोदा महानदी के उत्तर मे उत्कृष्टत इसी प्रकार आठ अर्हत्, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे।

77. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountaın to the north of great rıver Sıta a maxımum of eıght *Arhats* (*Tırthankars*), eıght *Chakravartıs*, eıght *Baladevas* and eıght *Vasudevas* dıd, do and wıll take bırth **78.** In Jambu Dveep ın the eastern part of Mandar mountaın to the south of great rıver Sıta a maxımum of eıght *Arhats* (*Tırthankars*), eıght *Chakravartıs*, eıght *Baladevas* and eıght *Vasudevas* dıd, do and wıll take bırth **79.** In Jambu Dveep ın the western part of Mandar mountaın to the south of great rıver Sıtoda a maxımum of eıght *Arhats* (*Tırthankars*), eıght *Chakravartıs*, eıght *Baladevas* and eıght *Vasudevas* dıd, do and wıll take bırth **80.** In Jambu Dveep ın the western part of Mandar mountaın to the north of great rıver Sıtoda a maxımum of eıght *Arhats* (*Tırthankars*), eıght *Chakravartıs*, eıght *Baladevas* and eıght *Vasudevas* dıd, do and wıll take bırth

पर्वत-गुफा-पद PARVAT-GUFA-PAD (SEGMENT OF MOUNTAINS AND CAVES)

८१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए उत्तरे णं अट्ठ दीहवेयड्ढा, अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खंडगप्पवातगुहाओ, अट्ठ कयमालगा देवा, अट्ठ णट्टमालगा देवा, अट्ठ

गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ गंगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता। ८२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए दाहिणे णं अट्ठ दीहवेअड्ढा एवं चेव जाव अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता, णवरमेत्थ रत्त–रत्तावती, तासिं चेव कुंडा।

८१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के उत्तर मे आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्र गुफाएँ, आठ खण्डकप्रताप गुफाएँ, आठ कृतमालक देव, आठ गगाकुण्ड, आठ सिन्धुकुण्ड, आठ गगा, आठ सिन्धु, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभकूट देव है। ८२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दक्षिण मे आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्र गुफाएँ, आठ खण्डकप्रताप गुफाएँ, आठ कृतमालक देव, आठ रक्ताकुण्ड, आठ रक्तवती कुण्ड, आठ रक्ता, आठ रक्तवती, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभकूट देव है।

81. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain to the north of great river Sita there are eight *Deergh Vaitadhya* mountains, eight *Tamisra* caves, eight *Khandaprapatak* caves, eight *Kritamalak* gods, eight *Nrityamalak* gods, eight *Gangakund*, eight *Sindhukund*, eight Ganga, eight Sindhu, eight *Rishabhakoot* mountains and eight *Rishabhakoot* gods **82.** In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain to the south of great river Sita there are eight *Deergh Vaitadhya* mountains, eight *Tamisra* caves, eight *Khandaprapatak* caves, eight *Kritamalak* gods, eight *Nrityamalak* gods, eight *Raktakund*, eight *Raktavatikund*, eight Rakta, eight Raktavati, eight *Rishabhakoot* mountains and eight *Rishabhakoot* gods

८३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोयाए महाणदीए दाहिणे णं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठ णट्टमालगा देवा, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ गंगाओ, अट्ठ सिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता। ८४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणदीए उत्तरे णं अट्ठ दीहवयेड्ढा जाव अट्ठ णट्टमालगा देवा पण्णत्ता। अट्ठ रत्ताकुंडा, अट्ठा रत्तावतिकुंडा, अट्ठ रत्ताओ, (अट्ठ रत्तावतीओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वता), अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता। ८५. मंदरचूलिया णं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोइणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

८३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे सीतोदा महानदी के दक्षिण मे आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्रगुफाएँ, आठ खण्डकप्रपात गुफाएँ, आठ कृतमालक देव, आठ नृत्यमालक देव, आठ गगाकुण्ड, आठ सिन्धुकुण्ड, आठ गगा, आठ सिन्धु, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभकूट देव है। ८४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे सीतोदा महानदी के उत्तर मे आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्रगुफाएँ, आठ खण्डकप्रपात गुफाएँ, आठ कृतमालक देव, आठ नृत्यमालक देव, आठ रक्ताकुण्ड, आठ रक्तवतीकुण्ड, आठ रक्ता, आठ रक्तावती, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभकूट देव है। ८५. मन्दर पर्वत की चूलिका बहुमध्यदेश भाग मे आठ योजन चौडी है।

83. In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain to the south of great river Sitoda there are eight *Deergh Vaitadhya* mountains, eight *Tamisra* caves, eight *Khandaprapatak* caves, eight *Kritamalak* gods, eight *Nrityamalak* gods, eight *Gangakund*, eight *Sindhukund*, eight Ganga, eight Sindhu, eight *Rishabhakoot* mountains and eight *Rishabhakoot* gods **84.** In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain to the north of great river Sita there are eight *Deergh Vaitadhya* mountains, eight *Tamisra* caves, eight *Khandaprapatak* caves, eight *Kritamalak* gods, eight *Nrityamalak* gods, eight *Raktakund*, eight *Raktavatikund*, eight Rakta, eight Raktavati, eight *Rishabhakoot* mountains and eight *Rishabhakoot* gods **85.** *Mandar Chulika* (the peak of Mandar mountain) is eight *Yojan* wide at its middle

धातकीषण्डद्वीप–पद DHATAKIKHAND-DVEEP-PAD (SEGMENT OF DHATAKIKHAND CONTINENT)

८६. धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं धायइरुक्खे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेण, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते। **८७.** एवं धायइरुक्खाओ आढवेत्ता सच्चेव जंबूदीववत्तव्वता भाणियव्वा जाव मंदर–चूलियति। **८८.** एवं पच्चत्थिमद्धेवि महाधायइरुक्खातो आढवेत्ता जाव मंदरचूलियति।

८६. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे धातकीवृक्ष आठ योजन ऊँचा, बहुमध्यदेश भाग मे आठ योजन चौडा और सर्व परिमाण मे कुछ अधिक आठ योजन विस्तृत है। ८७. इसी प्रकार धातकीषण्ड के पूर्वार्ध मे धातकीवृक्ष से लेकर मन्दरचूलिका तक का सर्व वर्णन जम्बूद्वीप की वक्तव्यता के समान है। ८८. इसी प्रकार धातकीषण्ड के पश्चिमार्ध मे महाधातकी वृक्ष से लेकर मन्दरचूलिका तक का सर्व वर्णन जम्बूद्वीप की वक्तव्यता के समान है।

86. In the eastern half of Dhatakikhand Dveep the *Dhataki* tree is eight *Yojan* tall, eight *Yojan* wide in the middle and a little more than eight *Yojan* in overall dimension **87.** In the same way all the description of the eastern half of Dhatakikhand Dveep starting from *Dhataki* tree up to *Mandar Chulika* should be read as that mentioned about Jambu Dveep **88.** In the same way all the description of the western half of Dhatakikhand Dveep starting from *Mahadhataki* tree up to *Mandar Chulika* should be read as that mentioned about Jambu Dveep

पुष्करवर–द्वीप–पद PUSHKARVAR-DVEEP-PAD (SEGMENT OF PUSHKARVAR CONTINENT)

८९. एवं पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धेवि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता जाव मंदरचूलियति। **९०.** एवं पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धेवि महापउमरुक्खातो जाव मंदरचूलियति।

८९. इसी प्रकार पुष्करवरद्वीपार्ध पूर्वार्ध मे पद्मवृक्ष से लेकर मन्दरचूलिका तक का सर्व वर्णन जम्बूद्वीप की वक्तव्यता के समान है। ९०. इसी प्रकार पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध के महापद्म वृक्ष से लेकर मन्दरचूलिका तक का सर्व वर्णन जम्बूद्वीप की वक्तव्यता के समान है।

89. In the same way all the description of the eastern half of Pushkarvardveepardh (half Pushkarvar continent) starting from *Padma* tree up to *Mandar Chulika* should be read as that mentioned about Jambu Dveep **90.** In the same way all the description of the western half of Pushkarvardveepardh starting from *Mahapadma* tree up to *Mandar Chulika* should be read as that mentioned about Jambu Dveep

कूट–पद KOOT-PAD (SEGMENT OF PEAKS)

९१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वते भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता,

तं जहा– पउमुत्तर णीलवंते, सुहत्थि अंजणागिरी।
कुमुदे य पलासे य वडेंसे रोयणागिरी॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

९१. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दरपर्वत के भद्रशाल वन मे आठ दिशाहस्तिकूट (पूर्व आदि दिशाओ मे हाथी के समान आकार वाले शिखर) कहे गये है, जैसे–(१) पद्मोत्तर, (२) नीलवान्, (३) सुहस्ती, (४) अजनगिरि, (५) कुमुद, (६) पलाश, (७) अवतसक, (८) रोचनगिरि।

91. In Jambudveep there are said to eight *Dishahastikoots* (elephant-shaped peaks in cardinal and intermediate directions including east) in Bhadrashal forest on Mandar mountain—(1) Padmottar, (2) Neelavaan, (3) Suhasti, (4) Anjanagiri, (5) Kumud, (6) Palaash, (7) Avatamsak and (8) Rochan-giri

जगती–पद JAGATI-PAD (SEGMENT OF PLATEAU)

९२. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

९२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप की जगती आठ योजन ऊँची और बहुमध्यदेश भाग मे आठ योजन विस्तृत है।

92. The plateau around Jambudveep is eight *Yojan* high and eight *Yojan* wide in the middle

कूट–पद KOOT-PAT (SEGMENT OF PEAKS)

९३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं महाहिमवंते वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता,

तं जहा— सिद्धे महाहिमवंते, हिमवंते रोहिता हिरीकूडे।
हरिकंता हरिवासे, वेरुलिए चेव कूडा उ॥१॥ (संग्रहणी-गाथा)

९४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रुप्पिमि वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता,

तं जहा— सिद्धे य रुप्पि रम्मग, णरकंता बुद्धि रुप्पकूडे य।
हिरण्णवते मणिकंचणे, य रुप्पिम्मि कूडा उ॥१॥

९३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के ऊपर आठ कूट है, जैसे-(१) सिद्ध कूट, (२) महाहिमवान् कूट, (३) हिमवान् कूट, (४) रोहित कूट, (५) ही कूट, (६) हरिकान्त कूट, (७) हरिवर्ष कूट, (८) वैडूर्य कूट। ९४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे रुक्मी वर्षधर पर्वत पर आठ कूट है, जैसे-(१) सिद्ध कूट, (२) रुक्मी कूट, (३) रम्यक कूट, (४) नरकान्त कूट, (५) बुद्धि कूट, (६) रुप्य कूट, (७) हैरण्यवत कूट, (८) मणिकाचन कूट।

93. In Jambu continent, south of Mandar Mountain on Mahahimavan *Varshadhar* mountain there are eight *koots* (peaks)—(1) Siddhakoot, (2) Mahahimavan koot, (3) Himavan koot, (4) Rohit koot, (5) Hri koot, (6) Harikant koot, (7) Harivarsh koot and (8) Vaidurya koot **94.** In Jambu continent, north of Mandar Mountain, on Rukmi *Varshadhar* mountain there are eight *koots* (peaks)—(1) Siddha koot, (2) Rukmi koot, (3) Ramyak koot, (4) Narakant koot, (5) Buddhi koot, (6) Rupya koot, (7) Hairanyavar and (8) Manikanchan koot

९५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता,

तं जहा— रिट्ठे तवणिज्ज कंचणा, रयत दिसासोत्थिते पलंबे य।
अंजणे अंजणपुलए, रुयगस्स पुरित्थमे कूडा॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति,

तं जहा— णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया॥२॥

९५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप के मन्दर पर्वत के पूर्व मे रुचकवर पर्वत के ऊपर आठ कूट है, जैसे-(१) रिष्ट कूट, (२) तपनीय कूट, (३) काचन कूट, (४) रजत कूट, (५) दिशास्वस्तिक कूट, (६) प्रलम्ब कूट, (७) अजन कूट, (८) अजनपुलक कूट।

उन कूटो पर महाऋद्धिवाली यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाली आठ दिशाकुमारी महत्तरिकाएँ रहती है। (१) नन्दोत्तरा, (२) नन्दा, (३) आनन्दा, (४) नन्दिवर्धना, (५) विजया, (६) वैजयन्ती, (७) जयन्ती, (८) अपराजिता।

95. In Jambu continent, east of Mandar Mountain on Ruchakavar mountain there are eight *koots* (peaks)—(1) Risht koot, (2) Tapaniya koot, (3) Kanchan, (4) Rajat koot, (5) Dishasvastik koot, (6) Pralamb koot, (7) Anjan koot and (8) Anjanapulak koot

On these peaks reside eight *Dishakumari Mahattarikas* (chiefs of directional goddesses) having great wealth and so on up to life span of one *Palyopam*—(1) Nandottara, (2) Nanda, (3) Ananda, (4) Nandivardhana, (5) Vijayaa, (6) Vaijayanti, (7) Jayanti and (8) Aparajita

९६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता,

तं जहा— कणए कंचणे पउमे, णलिणे ससि दिवायरे चेव।
वेसमणे वेरुलिए, रुयगस्स उ दाहिणे कूडा॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति,

तं जहा— समाहारा सुप्पतिण्णा, सुप्पबुद्धा जसोहरा।
लच्छिवती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा॥२॥

९६. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे रुचकवर पर्वत के ऊपर आठ कूट है, जैसे-(१) कनक कूट, (२) काचन कूट, (३) पद्म कूट, (४) नलिन कूट, (५) शशी कूट, (६) दिवाकर कूट, (७) वैश्रमण कूट, (८) वैडूर्य कूट।

वहाँ महाऋद्धिवाली यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाली आठ दिशाकुमारी महत्तरिकाएँ रहती है, जैसे-(१) समाहारा, (२) सुप्रतिज्ञा, (३) सुप्रबुद्धा, (४) यशोधरा, (५) लक्ष्मीवती, (६) शेषवती, (७) चित्रगुप्ता, (८) वसुन्धरा।

96. In Jambu continent, south of Mandar Mountain on Ruchakavar mountain there are eight *koots* (peaks)—(1) Kanak koot, (2) Kaanchan koot, (3) Padma koot, (4) Nalin koot, (5) Shashi koot, (6) Diwakar koot, (7) Vaishraman koot and (8) Vaidurya koot

On these lakes reside eight *Dishakumari Mahattarikas* (chiefs of directional goddesses) having great wealth and so on up to life span of one *Palyopam*—(1) Samaahaara, (2) Suptratijna, (3) Suprabuddhaa, (4) Yashodhara, (5) Lakshmivati, (6) Sheshavati, (7) Chitraguptaa and (8) Vasundhara.

९७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता,

तं जहा— सोत्थिते य अमोहे य, हिमवं मंदरे तहा।
रुअगे रुयगुत्तमे चंदे, अट्ठमे य सुदंसणे॥१॥

तत्थ णं अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति,

तं जहा— इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावती।
एगणासा णवमिया, सीता भद्दा य अट्ठमा॥२॥

९७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे रुचकवर पर्वत के ऊपर आठ कूट है, जैसे–(१) स्वस्तिक कूट, (२) अमोह कूट, (३) हिमवान कूट, (४) मन्दर कूट, (५) रुचक कूट, (६) रुचकोत्तमा कूट, (७) चन्द्र कूट, (८) सुदर्शन कूट।

वहाँ ऋद्धिशाली यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाली आठ दिशाकुमारी महत्तरिकाएँ रहती है, जैसे–(१) इलादेवी, (२) सुरादेवी, (३) पृथ्वी, (४) पद्मावती, (५) एकनासा, (६) नवमिका, (७) सीता, (८) भद्रा।

97. In Jambu continent, west of Mandar Mountain on Ruchakavar mountain there are eight *koots* (peaks)—(1) Swastika koot, (2) Amoha koot, (3) Himavan koot, (4) Mandar koot, (5) Ruchak koot, (6) Ruchakottama koot, (7) Chandra koot and (8) Sudarshan koot

On these lakes reside eight *Dishakumari Mahattarikas* (chiefs of directional goddesses) having great wealth and so on up to life span of one *Palyopam*—(1) Iladevi, (2) Suradevi, (3) Prithvi, (4) Padmavati, (5) Ekanasa, (6) Navamika, (7) Sita and (8) Bhadraa

९८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रुअगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पण्णत्ता,

तं जहा— रयण–रयणुच्चए या, सव्वरयण रयणसंचए चेव।
विजये य वेजयंते, जयंते अपराजिते॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति,

तं जहा— अलंबुसा मिस्सकेसी, पोंडरिगी य वारुणी।
आसा सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरतो॥२॥

९८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे रुचकवर पर्वत के ऊपर आठ कूट है। जैसे–(१) रत्नकूट, (२) रत्नोच्चय कूट, (३) सर्वरत्न कूट, (४) रत्नसचय कूट, (५) विजय कूट, (६) वैजयन्त कूट, (७) जयन्त कूट, (८) अपराजित कूट।

वहाँ महाऋद्धिवाली यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाली आठ दिशाकुमारी महत्तरिकाएँ रहती है, जैसे–(१) अलबुषा, (२) मिश्रकेशी, (३) पौण्डरिकी, (४) वारुणी, (५) आशा, (६) सर्वगा, (७) श्री, (८) ह्री।

98. In Jambu continent, north of Mandar Mountain on Ruchakavar mountain there are eight *koots* (peaks)—(1) Ratna koot, (2) Ratnochchaya

koot, (3) Sarvaratna koot, (4) Ratnasanchaya koot, (5) Vijaya koot, (6) Vaijayant koot, (7) Jayant koot and (8) Aparajit koot

On these lakes reside eight *Dishakumari Mahattarikas* (chiefs of directional goddesses) having great wealth and so on up to life span of one *Palyopam*—(1) Alambusha, (2) Mishrakeshi, (3) Paundariki, (4) Vaaruni, (5) Asha, (6) Sarvaga, (7) Shri and (8) Hri

महत्तरिका-पद MAHATTARIKA-PAD (SEGMENT OF MAHATTARIKAS)

९९. अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ,

तं जहा— भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा॥१॥

९९. अधोलोक मे रहने वाली आठ दिशाकुमारियो की महत्तरिकाएँ (प्रधान) है, जैसे-(१) भोगकरा, (२) भोगवती, (३) सुभोगा, (४) भोगमालिनी, (५) सुवत्सा, (६) वत्समित्रा, (७) वारिषेणा, (८) बलाहका।

99. In *Adholok* (lower world) reside eight *Dishakumari Mahattarikas* (chiefs of directional goddesses)—(1) Bhogankara, (2) Bhogavati, (3) Subhoga, (4) Bhogamalini, (5) Suvatsaa, (6) Vatsamitraa, (7) Vaarishena and (8) Balahaka

१००. अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ,

तं जहा— मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिणी।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिता॥१॥

१००. ऊर्ध्वलोक मे रहने वाली आठ दिशाकुमारी-महत्तरिकाएँ है। जैसे-(१) मेघकरा, (२) मेघवती, (३) सुमेघा, (४) मेघमालिनी, (५) तोयधारा, (६) विचित्रा, (७) पुष्पमाला, (८) अनिन्दिता।

100. In *Urdhvalok* (upper world) reside eight *Dishakumari Mahattarikas* (chiefs of directional goddesses)—(1) Meghankara, (2) Meghavati, (3) Sumegha, (4) Meghamalini, (5) Toyadhaara, (6) Vichitraa, (7) Pushpamaala and (8) Anindita

विवेचन—पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दिशाओ का विभाग मेरुपर्वत से होता है। जम्बूद्वीप से ही समस्त द्वीपो की गणना होती है। जम्बद्वीप से १७वाँ द्वीप रुचकवर द्वीप है। इस द्वीप के ठीक मध्य भाग मे गोलाकार रुचक पर्वत है। उनके चारों दिशाओ मे आठ-आठ कूट (शिखर) है। इन ३२ कूटो पर ३२ दिशा कुमारियो का आवास स्थान है। ८ दिशा कुमारियाँ अधोलोक के गजदत पर्वतो के कूटो पर ८ ऊर्ध्वलोक मे नन्दन वन मे कूटो पर तथा ४ विदिशा के रुचक पर्वतो के कूटो पर ४ मध्य रुचक पर्वतो

के कूटो पर यो कुल छप्पन दिशा कुमारियाँ कूटो पर स्थित अपने-अपने आवासो मे रहती है। तीर्थंकरो के जन्म अवसर सर्वप्रथम मे आकर उनका सूतिका कर्म आदि सम्पन्न कराती है। (जम्बूद्वीप वक्ष ५)

Elaboration—The dividing point of directions east-west and north-south is Meru mountain The counting of continents starts from Jambudveep The seventeenth continent from Jambudveep is Ruchakavar dveep At the center of this continent is a circular mountain called Ruchak In its four directions there are eight peaks each On these 32 peaks reside 32 *Dishakumaris* There are 8 *Dishakumaris* on the peaks of Gajadant mountain in *Adholok*, 8 on the peaks in Nandanavan in *Urdhvalok*, 4 on peaks of Ruchak mountains in intermediate directions and 4 on the peaks of the central Ruchak mountain Thus a total of 56 *Dishakumaris* reside in their respective abodes on these peaks They all arrive for performing the post birth rituals (*sutika karma*) when a *Tirthankar* is born

कल्प-पद KALP-VIMAAN-PAD (SEGMENT OF DIVINE REALMS)

१०१. अट्ठ कप्पा तिरिय-मिस्सोववण्णगा पण्णत्ता, तं जहा-सोहम्मे, (ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभलोगे, लंतए महासुक्के), सहस्सारे।

१०१. तिर्यग्-मिश्रोपन्नक (तिर्यंच और मनुष्य दोनो के उत्पन्न होने के योग्य) कल्प आठ है, जैसे-(१) सौधर्म, (२) ईशान, (३) सनत्कुमार, (४) माहेन्द्र, (५) ब्रह्मलोक, (६) लान्तक, (७) महाशुक्र, (८) सहस्रार।

101. There are said to be eight *tiryagmishropannak kalps* (the divine realms where animals and human beings both can reincarnate)—(1) *Saudharma*, (2) *Ishan*, (3) *Sanatkumar*, (4) *Maahendra*, (5) *Brahmalok*, (6) *Lantak*, (7) *Mahashukra* and (8) *Sahasrar*

विवेचन-इस सूत्र का भाव है-आठवे देवलोक तक तिर्यंच और मनुष्य दोनो ही जा सकते है, किन्तु नौवे से छब्बीसवे देवलोक तक केवल मनुष्यगति का जीव ही उत्पन्न होता है।

Elaboration—Beyond these eight *Devaloks* only human beings can reincarnate up to the twenty sixth one

१०२. एतेसु णं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पण्णत्ता, तं जहा-सक्के, (ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभे, लंतए, महासुक्के), सहस्सारे। १०३. एतेसि णं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा-पालए, पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते, कामकमे, पीतिमणे, मणोरमे।

१०२. इन आठों कल्पो मे आठ इन्द्र है, जैसे-(१) शक्र, (२) ईशान, (३) सनत्कुमार, (४) माहेन्द्र, (५) ब्रह्म, (६) लान्तक, (७) महाशुक्र, (८) सहस्रार। १०३. इन आठो इन्द्रो के

आठ पारियानिक (यात्रा मे काम आने वाले) विमान है, जैसे-(१) पालक, (२) पुष्पक, (३) सौमनस, (४) श्रीवत्स, (५) नद्यावर्त, (६) कामक्रम, (७) प्रीतिमन, (८) मनोरम।

102. There are said to be eight *Indras* (overlords) in these *Kalps*—(1) Shakra, (2) Ishan, (3) Sanatkumar, (4) Maahendra, (5) Brahma, (6) Lantak, (7) Mahashukra and (8) Sahasrar **103.** These eight *Indras* are said to have eight *paariyanik vimaans* (celestial vehicles used for traveling)—(1) Paalak, (2) Pushpak, (3) Saumanas, (4) Shrivatsa, (5) Nandyavart, (6) Kamakram, (7) Pritiman and (8) Manoram

प्रतिमा–पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)

१०४. अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं (अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया) अणुपालिताावि भवति।

१०४. अष्टअष्टमिका नामक भिक्षुप्रतिमा ६४ दिन-रात मे तथा २८८ भिक्षादत्तियो के द्वारा सूत्रानुसार, अर्थानुसार तत्वानुसार मार्गानुकूल आचारकल्प के अनुरूप तथा सम्यक् प्रकार से स्पर्श करे, पालन करे, अतिचारो से शुद्धिकरण करके, अन्त तक पालन की जाती है।

104. The *Ashta-ashtamika Bhikshupratima* (a specific practice with special codes) is sincerely observed (*palit*), purified (*shodhit*, for transgressions), completed (*purit*, for breaking fast), concluded (*kirtit*, break the fast) and successfully performed (*aradhit*) for 64 (8 × 8) days and nights with 288 *bhikshadattis* (servings of alms) according to the scriptures (*yathasutra*), correct interpretation (*yatha-arth*), prescribed procedure (*yathamarg*) and code of praxis (*yathakalp*), perfectly following fundamentals (*yathatattva*), with equanimity (*samata*) and touching the body (actually, not just conceptually)

जीव–पद JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING BEINGS)

१०५. अट्ठविधा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया, (पढमसमयतिरिया, अपढमसमयदेवा।

१०५. ससार-समापन्नक जीव आठ प्रकार के है-(१) प्रथम समय नारक-नरकायु के उदय के प्रथम समय वाले नारक। (२) अप्रथम समय नारक-प्रथम समय के सिवाय शेष समय वाले नारक। (३) प्रथम समय तिर्यंच-तिर्यगायु के उदय के प्रथम समय वाले तिर्यंच। (४) अप्रथम समय तिर्यंच। (५) प्रथम समय मनुष्य-मनुष्यायु के उदय के प्रथम समय वाले मनुष्य। (६) अप्रथम समय मनुष्य। (७) प्रथम समय देव-देवायु के उदय के प्रथम समय वाले देव। (८) अप्रथम समय देव।

105. *Samsar-samapannak jivas* (worldly living beings) are of eight kinds—(1) *Pratham samaya naarak*—infernal beings at the first moment of birth or fruition of infernal-life-span determining *karma* (2) *Apratham samaya naarak*—infernal beings at post birth moments (3) *Pratham samaya tiryanch*—animals at the first moment of birth or fruition of animal-life-span determining *karma* (4) *Apratham samaya tiryanch*—animals at post birth moments (5) *Pratham samaya manushya*—human beings at the first moment of birth or fruition of human-life-span determining *karma* (6) *Apratham samaya manushya*—human beings at post birth moments (7) *Pratham samaya deva*—gods at the first moment of birth or fruition of divine-life-span determining *karma* (8) *Apratham samaya deva*—gods at post birth moments

१०६. अट्ठविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा णेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खंजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ, सिद्धा।

अहवा—अट्ठविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियणाणी, (सुयणाणी, ओहिणाणी, मणपज्जवणाणी), केवलणाणी, मतिअण्णाणी, सुतअण्णाणी, विभंगणाणी।

१०६. सर्वजीव आठ प्रकार के है (१) नारक, (२) तिर्यग्योनिक, (३) तिर्यग्योनिकी, (४) मनुष्य, (५) मानुषी, (६) देव, (७) देवी, (८) सिद्ध।

अथवा सर्वजीव आठ प्रकार के है -(१) आभिनिबोधिकज्ञानी, (२) श्रुतज्ञानी, (३) अवधिज्ञानी, (४) मन पर्यवज्ञानी, (५) केवलज्ञानी, (६) मतिअज्ञानी, (७) श्रुतअज्ञानी, (८) विभगअज्ञानी।

106. All beings are of eight kinds—(1) *Nairayik* (infernal beings), (2) *Tiryagyonik* (males of animals), (3) *Tiryanchini* (females of animals), (4) *Manushya* (men), (5) *Manushyani* (women), (6) *Deva* (gods), (7) *Devi* (goddesses) and (8) *Siddha*

Also all beings are of eight kinds—(1) *abhinibodhik jnani*, (2) *shrut-jnani*, (3) *avadhi-jnani*, (4) *manahparyav jnani*, (5) *Keval-jnani*, (6) *mati-ajnani* (without *mati-jnana*), (7) *shrut-ajnani* (without *shrut-jnana*) and (8) *vibhang-ajnani* (having pervert knowledge)

संयम–पद SAMYAM-PAD (SEGMENT OF ASCETIC-DISCIPLINE)

१०७. अट्ठविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे, अपढमसमय सुहुमसंपरायसरागसंजमे, पढमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे, अपढमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे, पढमसमय उवसंतकसाय—वीतरागसंजमे, अपढमसमय उवसंतकसायवीतरागसंजमे, पढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे, अपढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे।

१०७. सयम आठ प्रकार का है–(१) प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायसराग सयम, (२) अप्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायसराग सयम, (३) प्रथम समय बादरसाम्परायसराग सयम, (४) अप्रथम समय बादरसाम्परायसराग सयम, (५) प्रथम समय उपशान्तकषायवीतराग सयम, (६) अप्रथम समय उपशान्तकषायवीतराग सयम, (७) प्रथम समय क्षीणकषायवीतराग सयम, (८) अप्रथम समय क्षीणकषायवीतराग सयम। *(देखे–स्थान १, सूत्र ११०–१२०)*

107. *Samyam* is of eight kinds—(1) *pratham Samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions during the first *Samaya* of attaining the level), (2) *apratham samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions any time after the first *Samaya* of attaining the level), (3) *pratham Samaya badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions during the first *Samaya* of attaining the level), (4) *apratham samaya badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions any time after the first *Samaya* of attaining the level), (5) *pratham Samaya upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions during the first *Samaya* of attaining the level), (6) *apratham Samaya upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions any time after the first *Samaya* of attaining the level), (7) *pratham Samaya ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions during the first *Samaya* of attaining the level) (8) *apratham Samaya ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at any time after the first *Samaya* of attaining the level) *(see Sthaan-1, aphorisms - 110-120)*

पृथ्वी–पद PRITHVI-PAD (SEGMENT OF LANDS)

१०८. अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–रयणप्पभा, (सक्करप्पभा, वालुअप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमा), अहेसत्तमा, ईसिपब्भारा।

१०८. पृथ्वियाँ आठ है–(१) रत्नप्रभा, (२) शर्कराप्रभा, (३) वालुकाप्रभा, (४) पकप्रभा, (५) धूमप्रभा, (६) तम प्रभा, (७) अध सप्तमी (तमस्तम प्रभा), (८) ईषत्प्राग्भारा (सिद्ध शिला)।

108. *Prithvi* (lands) are of eight kinds—(1) *Ratnaprabha*, (2) *Sharkaraprabha*, (3) *Balukaprabha*, (4) *Pankaprabha*, (5) *Dhoom-prabha*, (6) *Tamah-prabha*, (7) *Adhah saptami* (tamstamah-prabha) and (8) *Ishatpragbhara* (*Siddhashila*)

१०९. ईसिपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागे अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते। ११०. ईसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–ईसिति वा,

ईसिपब्भाराति वा, तणूति वा, तणुतणूइ वा, सिद्धीति वा, सिद्धालएति वा, मुत्तीति वा, मुत्तालएति वा।

१०९. ईषत्प्राग्भारा पृथिवी के बहुमध्य देशभाग मे आठ योजन लम्बे-चौडे क्षेत्र का बाहल्य (मोटाई) आठ योजन है। ११०. ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम है। जैसे-(१) ईषत्, (२) ईषत्प्रग्भारा, (३) तनु, (४) तनुतनु, (५) सिद्धि, (६) सिद्धालय, (७) मुक्ति, (८) मुक्तालय।

109. The eight *Yojan* long and wide area in the midsection of *Ishatpragbhara prithvi* is eight *Yojan deep* (thick) **110.** *Ishatpragbhara prithvi* has eight names (1) *Ishat,* (2) *Ishatpragbhara,* (3) *Tanu,* (4) *Tanutanu,* (5) *Siddhi,* (6) *Siddhalaya,* (7) *Mukti* and (8) *Muktalaya*

अभ्युत्थातव्य–पद ABHYUTTHATAVYA-PAD (SEGMENT OF ALERTNESS)

१११. अट्ठहिं ठाणेहिं सम्मं घडितव्वं जतितव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएतव्वं भवति–

(१) असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणताए अब्भुट्ठेतव्वं भवति।

(२) सुताणं धम्माणं ओगिण्हणयाए उवधारणयाए अब्भुट्ठेतव्वं भवति।

(३) णवाणं कम्माणं संजमेणमकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति।

(४) पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणताए विसोहणताए अब्भुट्ठेतव्वं भवति।

(५) असंगिहीतपरिजणस्स संगिण्हताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति।

(६) सेहं आयारगोयरं गाहणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति।

(७) गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति।

(८) साहम्मियाणमधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो अपक्खग्गाही मज्झत्थभावभूते कहं णु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति।

१११. आठ स्थानो की प्राप्ति के लिए साधक सम्यक् चेष्टा करे, सम्यक् प्रयत्न करे, सम्यक् पराक्रम करे। इन आठो के विषय मे कुछ भी प्रमाद (उपेक्षा) नही करना चाहिए–

(१) अब तक नही सुने हुए धर्मों को सम्यक् प्रकार से सुनने के लिए जागरूक रहे।

(२) सुने हुए धर्मों को मन से ग्रहण करे और उनकी स्थिति और स्मृति के लिए सतत् जागरूक रहे।

(३) सयम के द्वारा नवीन कर्मों का निरोध करने के लिए जागरूक रहे।

(४) तपश्चरण के द्वारा पुराने कर्मों को पृथक् करने और विशोधन करने के लिए जागरूक रहे।

(५) असगृहीत परिजनो (तथा निराश्रित सहधर्मी) का सग्रह (अपने साथ सम्मिलित) करने के लिए जागरूक रहे।

(६) शैक्ष (नवदीक्षित) मुनि को आचार-गोचर (साधु धर्म की मर्यादा और भिक्षाचरी) का सम्यक् बोध कराने के लिए जागरूक रहे।

(७) ग्लान (रोग व पीडा ग्रस्त) साधु की ग्लानि-भाव से रहित होकर वैयावृत्त्य करने के लिए जागरूक रहे।

(८) साधर्मिको मे परस्पर कलह उत्पन्न होने पर-'ये मेरे साधर्मिक किस प्रकार अपशब्द, कलह और तू-तू, मै-मै से मुक्त हो' ऐसा विचार करते हुए लिप्सा और अपेक्षा से रहित होकर किसी का पक्ष न लेकर मध्यस्थ भाव को स्वीकार कर उसे उपशान्त करने के लिए जागरूक रहे।

111. An aspirant should do right effort, right endeavour and right pursuance to attain eight *sthaans* (goals)—

(1) He should be ever alert to listen to hitherto unknown *dharmas* (codes of conduct, religious fundamentals)

(2) He should be ever alert to understand the listened *dharmas* and retain in his memory

(3) He should be ever alert to block the inflow of new *karmas* with the help of ascetic-discipline

(4) He should be ever alert to accomplish purification by shedding *karmas* with the help of austerities

(5) He should be ever alert to organize (to bring them in his organization) the scattered relatives (and co-religionists)

(6) He should be ever alert to impart right knowledge of *achar-gochar* (ascetic-discipline and alms-collection) to neo-initiates

(7) He should be ever alert to serve the ailing ascetics without any feeling of disgust

(8) When there is a strife among his co-religionists, he should be ever alert to pacify such strife with equanimity and without any demand, expectation or partiality, contemplating as to how those co-religionists may be free of slandering, strife and calling names

विमान-पद VIMAAN-PAD (SEGMENT OF CELESTIAL VEHICLES)

११२. महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

११२. महाशुक्र और सहस्रार कल्पो मे विमान आठ सौ योजन ऊँचे है।

112. The *vimaans* of *Mahashukra* and *Sahasrar kalps* are eight hundred *Yojan* in height

वादि-सम्पदा-पद **VAADI-SAMPADA-PAD (SEGMENT OF WEALTH OF VAADIS)**

११३. अरहतो णं अरिट्ठणेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजिताणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था।

११३. अर्हत् अरिष्टनेमि के वादी मुनियो की उत्कृष्ट सम्पदा आठ सौ थी, जो देव, मनुष्य और असुरो की परिषद् मे वाद-विवाद के समय किसी से भी पराजित नही होते थे।

113. In the *sangh* of *Arhat Arishtanemi* the *utkrishta sampada* (maximum wealth or number) of *vaadi munis* (debater ascetics) was eight hundred They were absolutely undefeated and unconquerable in any assembly of gods, men and *Asurs* (demons or lower gods)

केवलिसमुद्घात-पद **KEVALI-SAMUDGHAT-PAD (SEGMENT OF KEVALI-SAMUDGHAT)**

११४. अट्ठसमइए केवलिसमुग्घाते पण्णत्ते, तं जहा-पढमे समए दंडं करेति, बीए समए कवाडं करेति, ततिए समए मंथं करेति, चउत्थे समए लोगं पूरेति, पंचमे समए लोगं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति।

११४. केवलिसमुद्घात आठ समय का होता है- (१) पहले समय मे दण्ड समुदघात करते है, (२) दूसरे समय मे कपाट, (३) तीसरे समय मे मन्थान, (४) चौथे समय मे लोकपूरण, (५) पॉचवे समय मे लोक-व्याप्त आत्मप्रदेशो का उपसहार (सकोचन), (६) छठे समय मे मन्थान का उपसहार, (७) सातवे समय मे कपाट का उपसहार, (८) आठवे समय मे दण्ड का उपसहार करते है। *(विशेष विस्तार के लिए सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र, भाग १, सूत्र १०८, हिन्दी टीका, भाग २, पृ ४५६ तथा प्रज्ञापना सूत्र समुद्घात पद देखे)*

114. *Kevali Samudghat* is of eight *Samayas*—(1) In the first *Samaya* shape of *dand* (cylindrical) is acquired (2) In the second *Samaya* shape of *kapaat* (cubical) is acquired (3) In the third *Samaya* shape of *manthaan* (churning stick) is acquired (4) In the fourth *Samaya* shape of *lokapuran* (enveloping the whole *lokukash*) is acquired (5) In the fifth *Samaya upasamhar* (shrinking) of *lokapuran* (to regain the shape of *manthaan*) is accomplished (6) In the sixth *Samaya upasamhar* (shrinking) of *manthaan* (to regain the shape of *kapaat*) is accomplished (7) In the seventh *Samaya upasamhar* (shrinking) of *kapaat* (to regain the shape of *dand*) is accomplished (8) In the eighth *Samaya upasamhar* (shrinking) of *dand* (to nothingness) is accomplished *(for detailed description of Kevali Samudghat see Illustrated Anyuogadvar Sutra, part-1, aphorism-108, Hindi Tika, part-2, p 456 and Prajnapana Sutra, Samudghat Pad)*

अनुत्तरौपपातिक-पद **ANUTTARAUPAPATIK-PAD (SEGMENT OF ANUTTARAUPAPATIK)**

११५. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गतिकल्लाणाणं (ठितिकल्लाणाणं) आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया हुत्था।

११५. श्रमण भगवान महावीर के अनुत्तर विमानो मे उत्पन्न होने वाले साधुओ की उत्कृष्ट सम्पदा आठ सौ थी। वे कल्याणगति वाले, कल्याणस्थिति वाले और आगामी काल मे निर्वाण प्राप्त करने वाले है।

115. In the *sangh* of Shraman Bhagavan Mahavir the maximum number of ascetics reincarnating in *Anuttar vimaans* was eight hundred They are in blissful genus, blissful state and destined to attain liberation in next birth

वाणव्यन्तर-पद VANAVYANTAR-PAD (SEGMENT OF INTERSTITIAL GODS)

११६. अट्ठविधा वाणमंतरा देवा पण्णत्ता, तं जहा—पिसाया, भूता, जक्खा, रक्खसा, किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा। ११७. एतेसि णं अट्ठविहाणं वाणमंतरदेवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा पण्णत्ता,

तं जहा— कलंबो उ पिसायाणं, वडो जक्खाण चेइयं।
तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कंडओ॥१॥
असोओ किण्णराणं च, किंपुरिसाणं तु चंपओ।
णागरुक्खो भुयंगाणं, गंधवाणं य तेंदुओ॥२॥ (संग्रहणी-गाथा)

११६. वाण-व्यन्तर देव आठ प्रकार के होते है-(१) पिशाच, (२) भूत, (३) यक्ष, (४) राक्षस, (५) किन्नर, (६) किम्पुरुष, (७) महोरग, (८) गन्धर्व। ११७. इन आठ प्रकार केवाण-व्यन्तर देवो के आठ चैत्यवृक्ष (प्रिय वृक्ष) होते है, जैसे-(१) कदम्ब पिशाचो का, (२) वट यक्षो का, (३) तुलसी भूतो का, (४) काण्डक राक्षसो का, (५) अशोक किन्नरो का, (६) चम्पक किम्पुरुषो का, (७) नागवृक्ष भुजगो-महोरगो का, (८) तिन्दुक गन्धर्वो का चैत्यवृक्ष होता है।

116. *Vanavyantar devas* (interstitial gods) are of eight kinds— (1) *Pishach*, (2) *Bhoot*, (3) *Yaksha*, (4) *Rakshas*, (5) *Kinnar*, (6) *Kimpurush*, (7) *Mahorag* and (8) *Gandharva* **117.** These eight kinds of interstitial gods have (liking for) eight kinds of *Chaityavriskhas* (temple-trees)— (1) *Kadamb* is liked by *Pishach*, (2) *Vat* (banyan) is liked by *Yaksha*, (3) *Tulsi* is liked by *Bhoot*, (4) *Kandak* is liked by *Rakshas*, (5) *Ashoka* is liked by *Kinnar*, (6) *Champak* is liked by *Kimpurush*, (7) *Naag* tree is liked by *Bhujang* or *Mahorag* and (8) *Tinduk* is liked by *Gandharva*

ज्योतिष्क-पद JYOTISHK-PAD (SEGMENT OF STELLAR GODS)

११८. इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसते उड्ढमबाहाए सूरविमाणे चारं चरति। ११९. अट्ठ णक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तं जहा—कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा, चित्ता, विसाहा, अणुराधा, जेट्ठा।

११८. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अत्यन्त समतल और रमणीय भूमि भाग से आठ सौ योजन की ऊँचाई पर सूर्यविमान भ्रमण करता है। ११९. आठ नक्षत्र चन्द्रमा के साथ मिलकर प्रमर्दयोग करते है-(१) कृत्तिका, (२) रोहिणी, (३) पुनर्वसु,(४) मघा, (५) चित्रा, (६) विशाखा, (७) अनुराधा, (८) ज्येष्ठा।

118. At a height of eight hundred *Yojans* from the beautiful level land of this *Ratnaprabha prithvi* travels the *Surya vimaan* (the celestial vehicle of the stellar god *Surya*) **119.** Eight *nakshatras* (constellations) join *Chandrama* (the moon) to form *Pramardayoga* (touching or conjunction with the moon)—(1) Krittika (Eta Tauri or Pleiades, the 3rd), (2) Rohini (Aldebaran, the 4th), (3) Punarvasu (Beta Geminorum, the 7th), (4) Magha (Regulus, the 10th), (5) Chitra (Spica Virginis, the 14th), (6) Vishakha (Alpha Librae, the 16th), (7) Anuradha (Delta Scorpii, the 17th) and (8) Jyeshtha (Antares, the 18th)

विवेचन—चन्द्रमा के साथ स्पर्श करने को **प्रमर्दयोग** कहते है। उक्त आठ नक्षत्र उत्तर और दक्षिण दोनो ओर से स्पर्श करते है। चन्द्रमा उनके बीच मे से गमन करता हुआ निकल जाता है। इस योग का फल मनुष्य लोग के लिए सुभिक्ष आदि बताया है। (वृत्ति)

Elaboration—To touch the moon is called *pramard yoga* The aforesaid eight constellations touch the moon from both south and north The moon passes through them It is said that this conjunction is beneficial for the human world in terms of good rains and crops

द्वार-पद DVAR-PAD (SEGMENT OF GATES)

१२०. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। १२१. सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

१२०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप के चारो द्वार आठ-आठ योजन ऊँचे है। १२१. सभी द्वीप और समुद्रो के द्वार आठ-आठ योजन ऊँचे है।

120. The four *dvars* (gateways) of Jambudveep continent are eight *Yojans* in height **121.** The *dvars* of all continents and seas are eight *Yojans* each in height

बन्धस्थिति-पद BANDHASTHITI-PAD (SEGMENT OF DURATION OF BONDAGE)

१२२. पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिती पण्णत्ता। १२३. जसोकित्तीणामस्स णं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पण्णत्ता। १२४. उच्चागोतस्स णं कम्मस्स (जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पण्णत्ता।

१२२. पुरुषवेदनीय कर्म का जघन्य स्थितिबन्ध आठ वर्ष है। १२३. यश कीर्तिनामकर्म का जान्य स्थितिबन्ध आठ मुहूर्त है। १२४. उच्चगोत्र कर्म का जघन्य स्थितिबन्ध आठ मुहूर्त है।

122. The minimum duration of bondage of *Purush-vedaniya karma* (*karma* responsible for male gender) is eight years. **123.** The minimum duration of bondage of *Yashah-kirti naam karma* (*karma* responsible for fame and popularity) is eight years **124.** The minimum duration of bondage of *Uchcha gotra karma* (*karma* responsible for birth in family of higher status) is eight years

कुलकोटि–पद KULAKOTI-PAD (SEGMENT OF SPECIES)

१२५. तेइंदियाणं अट्ठ जाति–कुलकोडी–जोणीपमुह–सतसहस्सा पण्णत्ता।

१२५. त्रीन्द्रिय जीवो की जाति–कुलकोटियोनियाँ आठ लाख है। *(देखे–स्थान ७, सूत्र १५२)*

125. *Trindriya* (three-sensed beings) have eight lac (hundred thousand) species (*jati kulakoti*) in their genuses (*yoni pramukh*) *(see Sthaan-7, aphorism-152)*

पापकर्म–पद PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMA)

१२६. जीवाणं अट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा–पढमसमयणेरइयणिव्वत्तिते, (अपढमसमयणेरइयणिव्वत्तिते, पढमसमयतिरियणिव्वत्तिते, अपढमसमयतिरियणिव्वत्तिते, पढमसमयमणुयणिव्वत्तिते, अपढमसमयमणुयणिव्वत्तिते, पढमसमयदेवणिव्वत्तिते), अपढमसमयदेवणिव्वत्तिते।

एवं–चिण–उवचिण–(बंध–उदीर–वेद तह) णिज्जरा चेव।

१२६. जीवो ने आठ स्थानो से निर्वर्तित (निष्पादित) पुद्‌गलो का पापकर्मरूप से सचय किया है, कर रहे है और करेगे। जैसे–

(१) प्रथम समय यावत् का। (२) अप्रथम समय नैरयिक निर्वर्तित पुद्‌गलो का। (३) प्रथम समय तिर्यंचनिर्वर्तित यावत्। (४) अप्रथम समय तिर्यंचनिर्वर्तित पुद्‌गलो का। (५) प्रथम समय मनुष्यनिर्वर्तित यावत्। (६) अप्रथम समय मनुष्यनिर्वर्तित पुद्‌गलो का। (७) प्रथम समय देवनिर्वर्तित यावत्। (८) अप्रथम समय देवनिर्वर्तित पुद्‌गलो का।

इसी प्रकार सभी जीवो ने उनका उपचय, बन्धन, उदीरण, वेदन और निर्जरण अतीत काल मे किया है, वर्तमान मे करते है और आगे करेगे।

126. All beings did, do and will acquire (*sanchit*) *karma* particles in the form of demeritorious *karmas* in the past, present and future respectively eight ways—

(1) *pratham samaya nairayik nirvartit* (earned as infernal beings during the first moment of birth), (2) *apratham samaya nairayik nirvartit* (earned as infernal beings after the moment of birth), (3) *pratham samaya tiryagyonik nirvartit* (earned as animals during the first moment of birth), (4) *apratham samaya tiryagyonik nirvartit* (earned as animals after the moment of birth), (5) *pratham samaya manushya nirvartit* (earned as human beings during the first moment of birth), (6) *apratham samaya manushya nirvartit* (earned as human beings after the moment of birth), (7) *pratham samaya deva nirvartit* (earned as divine beings during the first moment of birth) and (8) *apratham samaya deva nirvartit* (earned as divine beings after the moment of birth)

In the same way all beings did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the acquired *karma* particles in the past, present and future respectively in aforesaid eight ways

पुद्गल-पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

१२७. अट्ठपएसिया खंधा अंणता पण्णत्ता। १२८. अट्ठपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

१२७. आठ प्रदेशी पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। १२८. आकाश के आठ प्रदेशो मे अवगाढ पुद्गल अनन्त कहे गये है।

आठ गुण वाले पुद्गल अनन्त कहे गये है।

इसी प्रकार शेष वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श के आठ गुण वाले पुद्गल अनन्त कहे गये है।

127. There are infinite *aath pradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of eight ultimate particles) **128.** There are infinite *aath pradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles occupying eight space-points) and so on up to There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with eight units of the attribute of black appearance

In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with eight units of each of the remaining attributes of smell, taste, and touch

॥ आठवॉं स्थान समाप्त ॥

● END OF THE EIGHTH STHAAN ●

नवम स्थान

सार : संक्षेप

नौवे स्थान मे नव सख्याओं से सम्बन्धित विभिन्न विषयो का सकलन है। इसमे सर्वप्रथम विसभोग का वर्णन (सूत्र १) है। 'सभोग' शब्द यहाँ एकसमान धर्म का आचरण करने वाले साधुओ का एक मण्डली मे बैठकर खान-पान आदि व्यवहार के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। सघ मर्यादा की दृष्टि से साभोगिक साधु को सघ से पृथक् करने का विधान है। यहाँ पर यह द्रष्टव्य है, चूँकि बिना किसी विशेष कारण के किसी साधु को सघ से पृथक् करना वर्जित है। अत इन कारणों का वर्णन आचार्य के लिए भी उपयोगी है।

उसके पश्चात् सयम की साधना मे अग्रसर होने के लिए ब्रह्मचर्य का सरक्षण अत्यन्त उपयोगी व आवश्यक है। ब्रह्मचर्य की नौ गुप्तियाँ या बाडो का वर्णन (सूत्र ३) है। साधक के लिए नौ विकृतियो (विगयो) का वर्णन भी ब्रह्मचर्य सुरक्षा के लिए कवच का काम करता है। पाप के नौ स्थानो का और पाप-वर्धक नौ प्रकार के श्रुत का परिहार भी आवश्यक है, प्रस्तुत स्थान मे उनका भी वर्णन किया गया है।

इस स्थान मे कुछ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यो का सकलन भी हुआ है। जैसे भगवान महावीर के तीर्थ मे तीर्थकर नामकर्म का बध करने वाले नौ व्यक्तियो का कथन। इसी प्रसग मे तीर्थंकर नामकर्म बाँधने के बीस स्थानो की चर्चा है। तथा इसी सन्दर्भ मे भगवान महावीर के अनन्य श्रद्धालु महाराज श्रेणिक के भव-भवान्तर का वर्णन बहुत ही महत्त्व का है। इसमे भगवान महावीर का तत्त्व दर्शन व आचार दर्शन बडे स्पष्ट रूप मे अभिव्यक्त हुआ है।

सूत्र १३ मे रोगोत्पत्ति के नौ कारणो का उल्लेख आरोग्य शास्त्र की दृष्टि से मनन करने योग्य है, साथ ही मनोविज्ञान की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। इनमे आठ कारण तो शारीरिक रोगोत्पत्ति से सम्बन्धित है तथा नौवा कारण मानसिक रोगो को उत्पन्न करने वाला है। आज का चिकित्सा विज्ञान इस निष्कर्ष पर पहुँच रहा है कि समस्त रोगो की जड मनोविकार है। आज कुशल चिकित्सक वही माना जाता है जो शरीर-मन दोनो की चिकित्सा साथ-साथ करता है। इस सन्दर्भ मे प्रस्तुत प्रकरण चिन्तन-मनन की विशेष दिशा दिखाता है।

ईश्वर, तलवर आदि पदो पर नियुक्ति का वर्णन उस समय की राज व्यवस्था का दिग्दर्शन कराता है।

इस प्रकार इस नवम स्थान मे भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर तथा राजा श्रेणिक से सम्बन्धित बहुत ही उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है।

अवगाहना, दर्शनावरण कर्म, नौ महानिधियाँ, आयु परिणाम, भावी तीर्थकर, कुलकोटि, पापकर्म आदि पदो के द्वारा अनेक ज्ञातव्य विषयो का सकलन किया गया है। सक्षेप मे यह स्थान अनेक दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है।

NINTH STHAAN (PLACE NUMBER NINE)

INTRODUCTION

The ninth *Sthaan* compiles things related to the numeral nine It starts with the discussion on *visambhog* (aphorism-1) The term *sambhog* here means group activities including eating by ascetics following the same code of conduct There is a code of expelling *sambhogik* (ascetics who partakes in group activities) from the *sangh* on disciplinary grounds It should be noted that as it is not allowed to expel an ascetic from the *sangh* without some specific reason, the mention of those reasons here is useful even for an *acharya*

After this comes the listing of nine *guptis* (aphorism-3) or fences for protection (ensuring proper observance) of *Brahmacharya* (celibacy), which is essential for furtherance of practice of ascetic-discipline The description of nine *vigaya* (prohibited things) also acts as a shield protecting *Brahmacharya* Also essential is avoiding the nine sources of sin and nine kinds of sin-enhancing scriptures, this *sthaan* lists these as well

This chapter also compiles some important historical facts For example the listing of nine persons acquiring the bondage of *Tirthankar-naam-karma* (*karma* determining status of *Tirthankar*) in the religious order of Bhagavan Mahavir Also important in the same context is the narration of the progressive births of king Shrenik, a matchless devotee of Bhagavan Mahavir Here the doctrine and code of conduct of Bhagavan Mahavir has been lucidly expressed

The mention of nine causes of disease (aphorism-13) is worth pondering from health as well as psychological viewpoints Of these, eight are sources of physical ailments and the ninth is that of mental ailments Modern medical science is coming to the conclusion that the root of all diseases is mental perversion Today only that doctor is recognized as an expert healer who treats body and mind in consonance In this context this section provides new directions

The appointments on posts and positions like *Ishvar* and *Talavar* reveals the system of governance prevalent in those days

Thus, very useful information about Bhagavan Parshva Naath, Bhagavan Mahavir and king *Shrenik* is available in this ninth chapter

Numerous useful topics have been compiled in segments of *Avagahana, Darshanavaran Karma*, nine great treasures, *Ayuh-parinam*, future *Tirthankars, Kulakoti, paap-karma*, etc In brief, this chapter is important from many angles ●●

नवम स्थान
NINTH STHAAN (Place Number Nine)

विसंभोग-पद VISAMBHOG-PAD (SEGMENT OF EXPULSION)

१. णवहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णातिक्कमति, तं जहा— आयरियपडिणीयं, उवज्झायपडिणीयं, थेरपडिणीयं, कुलपडिणीयं, गणपडिणीयं, संघपडिणीयं, णाणपडिणीयं, दंसणपडिणीयं, चरित्तपडिणीयं।

१. नौ कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ साम्भोगिक साधु को (प्रत्यनीक होने पर) विसाम्भोगिक करता हुआ तीर्थंकर की आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है। जैसे-(१) आचार्य-प्रत्यनीक, (२) उपाध्याय-प्रत्यनीक, (३) स्थविर-प्रत्यनीक, (४) कुल-प्रत्यनीक, (५) गण-प्रत्यनीक, (६) सघ-प्रत्यनीक, (७) ज्ञान-प्रत्यनीक, (८) दर्शन-प्रत्यनीक, (९) चारित्र-प्रत्यनीक।

1. A *Shraman Nirgranth* does not defy the word of *Bhagavan* if he ostracizes (*visambhogik*) a *sadharmik sambhogik* (a co-religionist team-mate) for nine reasons—(if he is)—(1) *acharya-pratyaneek* (opposed to *acharya*), (2) *upadhyaya-pratyaneek* (opposed to *upadhyaya*), (3) *sthavir-pratyaneek* (opposed to *sthavir*), (4) *kula-pratyaneek* (opposed to the group of disciples of same *acharya*), (5) *gana-pratyaneek* (opposed to *gana*), (6) *sangh-pratyaneek* (opposed to the religious organization), (7) *jnana-pratyaneek* (opposed to right knowledge), (8) *darshan-pratyaneek* (opposed to right perception/faith) and (9) *chaaritra-pratyaneek* (opposed to right conduct)

विवेचन—कर्त्तव्य के प्रतिकूल आचरण अथवा निन्दा, ईर्ष्या, वैरभाव तथा मर्यादा विरुद्ध आचरण करना **प्रत्यनीकता** है। एक मण्डली मे बैठकर खान-पान करने वाला श्रमणो का आचार साम्भोगिक है। जब कोई साधु सूत्रोक्त नौ पदो मे से किसी के भी साथ उसकी प्रतिष्ठा, मर्यादा तथा आचार विधि के प्रतिकूल आचरण करता है, तब श्रमण-निर्ग्रन्थ उसे अपनी मण्डली से पृथक् कर सकते है। इस पृथक्करण या सम्बन्ध विच्छेद को ही 'विसम्भोग' कहा गया है।

Elaboration—*Pratyaneek* means one who goes against or behaves contrary to the prescribed discipline or codes The ascetics who do combined studies and eat together in a group are called *sambhogik* When a *sambhogik* ascetic goes against the prescribed code of behaviour with any one two or all of the nine, the *acharya* ostracizes him from that group Such ostracizing is called *visambhog*

ब्रह्मचर्य–अध्ययन–पद BRAHAMCHARYA-ADHYAYAN-PAD
(SEGMENT OF CHAPTERS ON BRAHAMCHARYA)

२. णव बंभचेरा पण्णत्ता, तं जहा–सत्थपरिण्णा, लोगविजओ, (सीओसणिज्जं, सम्मत्तं, आवंती, धूतं, विमोहो), उवहाणसुयं, महापरिण्णा।

२. आचाराग सूत्र मे ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी नौ अध्ययन है-(१) शस्त्रपरिज्ञा, (२) लोकविजय, (३) शीतोष्णीय, (४) सम्यक्त्व, (५) आवन्ती-लोकसार, (६) धूत, (७) विमोह, (८) उपधानश्रुत, (९) महापरिज्ञा।

2. There are nine chapters on *brahamcharya* in *Acharanga Sutra* (1) *Shastraparijna*, (2) *Lokavijaya*, (3) *Sheetoshniya*, (4) *Samyaktva*, (5) *Aavanti-Lokasar*, (6) *Dhoot*, (7) *Vimoha*, (8) *Upadhan shrut* and (9) *Mahaparijna*

ब्रह्मचर्य–गुप्ति–पद BRAHAMCHARYA-GUPTI-PAD
(SEGMENT OF FENCES OF CELIBACY)

३. णव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–(१) विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति–णो इत्थिसंसत्ताइं णो पसुसंसत्ताइं णो पंडगसंसत्ताइं। (२) णो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति। (३) णो इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवति। (४) णो इत्थीणमिंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता णिज्झाइत्ता भवति। (५) णो पणीतरसभोई [भवति ?]। (६) णो पायभोयणस्स अतिमातमाहारए सया भवति। (७) णो पुव्वरतं पुव्वकीलियं सरेत्ता भवति। (८) णो सद्दाणुवाती णो रूवाणुवाती णो सिलोगाणुवाती [भवति ?]। (९) णो सातसोक्खपडिबद्धे यावि भवति।

३. ब्रह्मचर्य की नौ गुप्तियाँ (बाडे अथवा रक्षा कवच) है। जैसे-(१) ब्रह्मचारी एकान्त मे शयन और आसन करता है। जिन आवासो मे स्त्री, पशु और नपुसक रहते हो, वहाँ ब्रह्मचारी को नही रहना चाहिए। (२) ब्रह्मचारी विकार उत्पन्न करने वाली स्त्रियो से सम्बन्धित बाते नही करता है। (३) ब्रह्मचारी स्त्रियो के बैठने–उठने के स्थानो पर नही बैठता है। जिस स्थान पर स्त्री बैठी हो कम से कम एक मुहूर्त तक उस स्थान पर नही बैठे। (४) ब्रह्मचारी स्त्रियो के मनोहर रूप और मनोरम इन्द्रियो व अंगोपागो को नही देखे। (५) ब्रह्मचारी प्रणीतरस–घृत-तेलबहुल गरिष्ठ भोजन नही करे। (६) ब्रह्मचारी रूखा, सादा भोजन भी अधिक मात्रा में नही करे। (७) ब्रह्मचारी पूर्वकाल मे (ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने से पूर्व) भोगे हुए भोगो और स्त्रीक्रीड़ाओ का स्मरण नही करे। (८) ब्रह्मचारी स्त्रियो के मनोज्ञ शब्दो को सुनने का, सुन्दर रूपो को देखने का और स्त्रियो द्वारा कीर्ति–प्रशसा की अभिलाषा नही करे। (९) ब्रह्मचारी शारीरिक सुखो मे आसक्त नही हो।

3. There are nine *guptis* (fences or shields) of *Brahmacharya* (celibacy)—(examples) (1) A *brahmachari* (celibate) sleeps and sits in solitude A *brahmachari* avoids residing in abodes where women,

animals or eunuches live (2) A *brahmachari* avoids talking about women (avoids erotic conversation). (3) A *brahmachari* avoids sitting on places where women sit (he does not take a seat left by a woman for at least one *muhurt*) (4) A *brahmachari* avoids looking at attractive appearance of a woman as well as sense organs and other parts of the female body (5) A *brahmachari* avoids rich and heavy food (*praneet-rasa*) (6) A *brahmachari* avoids excessive quantities even of dry and drab food (7) A *brahmachari* avoids recalling the carnal and other pleasures enjoyed in the past (before taking the vow of celibacy) (8) A *brahmachari* does not desire listening to sweet words, seeing beautiful forms, and being appreciated and praised by women (9) A *brahmachari* does not get attached to physical pleasures

ब्रह्मचर्य–अगुप्ति–पद BRAHAMCHARYA-AGUPTI-PAD (SEGMENT OF DETRIMENTS OF CELIBACY)

४. णव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—(१) णो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति—इत्थिसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं। (२) इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति। (३) इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवति। (४) इत्थीणं इंदियाइं (मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता) णिज्झाइत्ता भवति। (५) पणीयरसभोई [भवति ?]। (६) पायभोयणस्स अइमायमाहारए सया भवति। (७) पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवति। (८) सद्दाणुवाई रूवाणुवाई सिलोगाणुवाई [भवति ?]। (९) सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवति।

४. ब्रह्मचर्य की नौ अगुप्तियाँ (ब्रह्मचर्य को हानि पहुँचाने वाली) है। जैसे - (१) जो ब्रह्मचारी एकान्त मे शयन व आसन का सेवन नही करे। स्त्री, पशु, नपुसक सहित स्थानो पर रहता है। (२) जो ब्रह्मचारी स्त्रियो की कथा वार्ता करे। (३) जो ब्रह्मचारी स्त्रियो के बैठने–उठने के स्थानो का सेवन करता है। (४) जो ब्रह्मचारी स्त्रियो की मनोहर और मनोरम इन्द्रियो व अगोपागो को देखता है और उनका चिन्तन करता है। (५) जो ब्रह्मचारी प्रणीत रसवाला भोजन करता है। (६) जो ब्रह्मचारी सदा अधिक मात्रा मे आहार–पान करता है। (७) जो ब्रह्मचारी पूर्वकाल मे भोगे हुए भोगो और स्त्रियो के साथ की हुई काम–क्रीडाओ का स्मरण करता है। (८) जो ब्रह्मचारी मनोज्ञ शब्दो को सुनने का, सुन्दर रूपो को देखने का और कीर्ति–प्रशंसा का अभिलाषी होता है। (९) जो ब्रह्मचारी शरीर सम्बन्धी सुख मे आसक्त होता है।

3. There are nine *aguptis* (detriments or causes of breaking) of *Brahmacharya* (celibacy)—(examples) (1) A *brahmachari* (celibate) avoids sleeping and sitting in solitude A *brahmachari* resides in abodes where women, animals or eunuches live (2) A *brahmachari* talks about women (erotic conversation) (3) A *brahmachari* sits on places where women sit (4) A *brahmachari* looks at and thinks about attractive appearance of a woman as well as sense organs and other parts of the

female body (5) A *brahmachari* consumes rich and heavy food (*praneet-rasa*) (6) A *brahmachari* consumes excessive quantities of food (7) A *brahmachari* recalls the carnal and other pleasures enjoyed in the past (8) A *brahmachari* desires listening to sweet words, seeing beautiful forms, and being appreciated and praised by women (9) A *brahmachari* gets attached to physical pleasures

तीर्थंकर-पद TIRTHANKAR-PAD (SEGMENT OF TIRTHANKAR)

५. अभिणंदणाओ णं अरहओ सुमती अरहा णवहिं सागरोवमकोडीसयसहस्सेहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पण्णे।

५. अर्हत् अभिनन्दन के पश्चात् नौ लाख करोड सागरोपमकाल व्यतीत हो जाने पर सुमति अर्हत् उत्पन्न हुए।

5. Arhat Sumati was born after nine lac *crore* (nine trillion) *Sagaropam* of Arhat Abhinandan

सद्भावपदार्थ-पद SADBHAAVA-PADARTH-PAD (SEGMENT OF ETERNAL THINGS)

६. णव सब्भावपयत्था पण्णत्ता, तं जहा—जीवा अजीवा, पुण्णं, पावं, आसवो, संवरो, णिज्जरा, बंधो, मोक्खो।

६. सद्भाव रूप (सदा काल विद्यमान) पारमार्थिक पदार्थ (तत्त्व) नौ है-(१) जीव, (२) अजीव, (३) पुण्य, (४) पाप, (५) आस्रव, (६) सवर, (७) निर्जरा, (८) बन्ध, (९) मोक्ष।

6. There are nine *sadbhaava rupa* (eternal) *paramarthik padarth* (fundamentals or reals regarded as objects of faith for a Jain)—(1) *jiva* (soul), (2) *ajiva* (matter), (3) *punya* (meritorious karma), (4) *paap* (demeritorious *karma*), (5) *asrava* (inflow of *karmas*), (6) *samvar* (blockage of inflow of *karmas*), (7) *nirjara* (shedding of *karmas*), (8) *bandh* (bondage of *karmas*) and (9) *moksha* (liberation)

जीव-पद JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING ORGANISMS)

७. णवविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, (आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया), वणस्सइकाइय, बेइंदिया, (तेइंदिया, चउरिंदिया), पंचिंदिया।

७. ससार-समापन्नक (ससारी) जीव नौ प्रकार के है-(१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायिक, (६) द्वीन्द्रिय, (७) त्रीन्द्रिय, (८) चतुरिन्द्रिय, (९) पचेन्द्रिय।

7. There are nine kinds of *samsar-samapannak jivas* (worldly beings)—(1) *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *Apkayiks* (water-bodied beings),

(3) *Tejaskayik* (fire-bodied beings), (4) *Vayukayik* (air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings), (6) *Dvindriya* (Two-sensed beings), (7) *Trindriya* (three-sensed beings), (8) *Chaturindriya* (four-sensed beings), (9) *Panchendriya* (five-sensed beings)

गति–आगति–पद GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF BIRTH FROM AND TO)

८. पुढविकाइया णवगतिया णवआगतिया पण्णत्ता, तं जहा–पुढविकाइए, पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा, जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा।

से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा। ९. एवमाउकाइयावि जाव पंचिंदियत्ति।

८. पृथ्वीकायिक जीव नौ प्रकार की गति वाले और नौ प्रकार की आगति वाले है–

(१) पृथ्वीकायिको मे उत्पन्न होने वाला पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिको से, यावत् [अप्कायिको, तेजस्कायिको, वायुकायिको, वनस्पतिकायिको, द्वीन्द्रियो, त्रीन्द्रियो, चतुरिन्द्रियो] अथवा पंचेन्द्रिय जीवो मे से आकर उत्पन्न हो सकता है।

(२) वही पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकाय को छोड कर पृथ्वीकायिक रूप से यावत् [अप्पकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय] अथवा पचेन्द्रिय रूप मे उत्पन्न हो सकता है। ९. इसी प्रकार अप्कायिक से लेकर पचेन्द्रिय तक के सभी जीव नौ प्रकार की गति वाले और नौ प्रकार की आगति वाले है।

8. *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) have nine kinds of *gatis* (reincarnation to) and five *aagatis* (reincarnation from)—

(1) A being taking birth as an earth-bodied being reincarnates from either earth-bodied beings, and so on up to [*Apkayik* (water-bodied beings), *Tejaskayik* (fire-bodied beings), *Vayukayik* (air-bodied beings), *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings), *Dvindriya* (Two-sensed beings), *Trindriya* (three-sensed beings), *Chaturindriya* (four-sensed beings)] or *Panchendriya* (five-sensed beings)

(2) The same earth-bodied being leaving the state of earth-bodied beings reincarnates in the genus of either earth-bodied beings, and so on up to [*Apkayik* (water-bodied beings), *Tejaskayik* (fire-bodied beings), *Vayukayik* (air-bodied beings), *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings), *Dvindriya* (Two-sensed beings), *Trindriya* (three-sensed beings), *Chaturindriya* (four-sensed beings)] or *Panchendriya* (five-sensed beings) **9.** In the same way all beings from *Apkayik* (water-bodied beings) to *Panchendriya* (five-sensed beings) also have nine kinds of gatis (reincarnation to) and five *aagatis* (reincarnation from)

जीव-पद JIVA-PAD (SEGMENT OF LIVING BEINGS)

१०. णवविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, णेरइया, पंचेंदियतिरिक्खजोणिया, मणुया, देवा, सिद्धा।

अहवा–णवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा–पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया, (पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा), अपढमसमयदेवा, सिद्धा।

१०. सब जीव नौ प्रकार के है। जैसे–(१) एकेन्द्रिय, (२) द्वीन्द्रिय, (३) त्रीन्द्रिय, (४) चतुरिन्द्रिय, (५) नारक, (६) पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक, (७) मनुष्य, (८) देव, (९) सिद्ध।

अथवा सब जीव नौ प्रकार के है–प्रथम समय मे उत्पन्न नारक, (२) अप्रथम समय मे उत्पन्न नारक, (३) प्रथम समयवर्ती तिर्यंच, (४) अप्रथम समयवर्ती तिर्यच, (५) प्रथम समयवर्ती मनुष्य, (६) अप्रथम समयवर्ती मनुष्य, (७) प्रथम समयवर्ती देव, (८) अप्रथम समयवर्ती देव, (९) सिद्ध।

10. All *jivas* (beings) are of nine kinds—(1) *Ekendriya* (one-sensed beings), (2) *Dvindriya* (Two-sensed beings), (3) *Trindriya* (three-sensed beings), (4) *Chaturindriya* (four-sensed beings), (5) *Naarak* (infernal beings) (6) *Panchendriya* (five-sensed animal beings), (7) *manushya* (human beings), (8) *deva* (divine beings) and (9) *Siddha* (liberated souls)

Also, all *jivas* (beings) are of nine kinds—(1) *Pratham samaya naarak* (infernal beings at the first moment of birth), (2) *Apratham samaya naarak* (infernal beings at post birth moments), (3) *Pratham samaya tiryanch*, (4) *Apratham samaya tiryanch*, (5) *Pratham samaya manushya*, (6) *Apratham samaya manushya*, (7) *Pratham samaya deva*, (8) *Apratham samaya deva* and (9) *Siddha*

अवगाहना-पद AVAGAHANA-PAD (SEGMENT OF SPACE OCCUPATION)

११. णवविहा सव्वजीवोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा–पुढविकाइओगाहणा, आउकाइयोगाहणा (तेउकाइओगाहणा, वाउकाइओगाहणा), वणस्सइकाइओगाहणा, बेइंदियओगाहणा, तेइंदियओगाहणा, चउरिंदियओगाहणा, पंचिंदियओगाहणा।

११. सब जीवो की अवगाहना नौ प्रकार की है–(१) पृथ्वीकायिक जीवो की अवगाहना, (२) अप्कायिक जीवों की, (३) तेजस्कायिक जीवो की, (४) वायुकायिक जीवो की, (५) वनस्पतिकायकि जीवो की, (६) द्वीन्द्रिय जीवो की, (७) त्रीन्द्रिय जीवो की, (८) चतुरिन्द्रिय जीवो की, (९) पचेन्द्रिय जीवो की अवगाहना।

11. *Avagahana* (space occupation) of all beings is of nine kinds—(1) *avagahana* of *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *avagahana* of

Apkayık (water-bodied beings), (3) *avagahana* of *Tejaskayık* (fire-bodied beings), (4) *avagahana* of *Vayukayık* (air-bodied beings), (5) *avagahana* of *Vanaspatıkayık* (plant-bodied beings), (6) *avagahana* of *Dvındrıya* (Two-sensed beings), (7) *avagahana* of *Trındrıya* (three-sensed beings), (8) *avagahana* of *Chaturındrıya* (four-sensed beings), (9) *avagahana* of *Panchendrıya* (five-sensed beings)

संसार–पद SAMSAR-PAD (SEGMENT OF CYCLES OF BIRTH)

१२. जीवा णं णवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिंसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा, तं जहा– पुढविकाइयत्ताए, (आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए, तेइंदियत्ताए, चउरिंदियत्ताए), पंचिंदियत्ताए।

१२. जीवो ने नौ स्थानो से (नौ पर्यायों से) ससार–परिभ्रमण किया है, कर रहे है और आगे करेगे, जैसे–(१) पृथ्वीकायिक रूप से, यावत् (२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायिक, (६) द्वीन्द्रिय, (७) त्रीन्द्रिय, (८) चतुरिन्द्रिय और (९) पचेन्द्रिय रूप से।

12. All beings did, do and will move around in cycles of rebirth (*samsar paribhraman*) from nine *sthaans* (modes or forms)—(1) *Prithvıkayık* (earth-bodied beings), (2) *Apkayık* (water-bodied beings), (3) *Tejaskayık* (fire-bodied beings), (4) *Vayukayık* (air-bodied beings), (5) *Vanaspatıkayık* (plant-bodied beings), (6) *Dvındrıya* (Two-sensed beings), (7) *Trındrıya* (three-sensed beings), (8) *Chaturındrıya* (four-sensed beings), (9) *Panchendrıya* (five-sensed beings).

रोगोत्पत्ति–पद ROGOTPATTI-PAD (SEGMENT OF ORIGIN OF DISEASE)

१३. णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया, तं जहा–(१) अच्चासणयाए, (२) अहितासणयाए, (३) अतिणिद्दाए, (४) अतिजागरितेणं, (५) उच्चारणिरोहेणं, (६) पासवणणिरोहेणं, (७) अद्धाणगमणेणं, (८) भोयणपडिकूलताए, (९) इंदियत्थविकोवणयाए।

१३. नौ स्थानो–कारणो से रोग की उत्पत्ति होती है, जैसे–(१) अधिक या निरन्तर बैठे रहने से, या अधिक भोजन करने से। (२) अहितकर (गलत) आसन से बैठने से, या अहितकर भोजन करने से। (३) अधिक नीद लेने से, (४) अधिक जागने से, (५) उच्चार (मल) का निरोध करने से, (६) प्रस्रवण (मूत्र) का वेग रोकने से, (७) अधिक मार्ग–गमन से, (८) भोजन की प्रतिकूलता से, (९) इन्द्रियार्थ–विकोपन अर्थात् काम–विकार से।

13. Disease is caused due to nine *sthaans* (reasons)—(1) *Atyasan*—sitting continuously for a long time or excessive eating. (2) *Ahitasan*—sitting in harmful or wrong posture or eating harmful food (3) *Atınidra*—excessive sleeping. (4) *Atıjagaran*—keeping awake inordinately.

(5) *Uchchaar nirodh*—restraining urge to pass stool (6) *Prasravan nirodh*—restraining urge to pass urine (7) *Adhvagaman*—excessive walking (8) *Bhojan pratikoolata*—unsuitable nature of food (9) *Indriyarth vikopan*—carnal perversions

विवेचन-'रोग' केवल शरीर की विकृतियो से ही नही, किन्तु मन की विकृतियो या मनोविकारो से भी उत्पन्न होते है। प्रस्तुत सूत्र मे भी आठ कारण शरीर के विकार और नौवाँ कारण मनोविकार या काम विकार बताया है। इनमे तीन बिन्दुओ पर टीकाकार ने विशेष स्पष्टीकरण किया है-

(१) **अच्चासणयाए**-इसके दो अर्थ है-**(I) अत्यासन**-निरन्तर बैठे रहने से अथवा **(II) अत्यशन**-अधिक भोजन करने से।

(२) **अहियासणयाए**-इसके तीन अर्थ है-**(I) अहितासन**-गर्म पत्थर आदि पर बैठना, अथवा प्रतिकूल व गलत आसन से बैठना, **(II) अहित-अशन**-शरीर की प्रकृति के प्रतिकूल व आरोग्य के प्रतिकूल भोजन करना। **(III) अध्यसन**-बार-बार भोजन करना, पहले किया हुआ भोजन पचने से पहले ही दूसरा भोजन करना।

(३) **इन्दियत्थ विकोवणया**-इन्द्रियार्थ विकोपन का अर्थ है-काम विकार, या कामासक्ति। वृत्तिकार अभयदेव सूरि ने काम-विकार के दस दोषो का उल्लेख किया है। जो क्रमश एक के बाद एक आते है। जैसे-(१) कामभोगो की प्राप्ति की अभिलाषा, (२) प्राप्त करने की चिन्ता, (३) सतत स्मरण, (४) सतत कीर्तन, (५) उद्वेग, (६) प्रलाप, (७) उन्माद (पागलपन), (८) व्याधि, (९) जडता/अगोपागो की शून्यता और १० मृत्यु। *(हिन्दी टीका भाग २ पृष्ठ ६१२ तथा वृत्ति पत्र ४२३-४२४)*

Elaboration—Diseases are caused not only by physical disorders but mental disorders as well Of these aforesaid causes eight are sources of physical ailments and the ninth is that of mental ailments The commentator (*Tika*) has given additional information on three points—

(1) Acchasanayaye—This term is interpreted two ways—(i) *atyasan* or sitting continuously for a long time and (ii) *atyashan* or excessive eating

(2) Ahiyasanayaye—This term is interpreted three ways (i) *ahitasan*—sitting on hot stone or in harmful or wrong posture, (ii) *ahit-ashan*—eating food that is unsuitable for the nature and health of an individual, and (iii) *adhyasan*—eating frequently or before the food eaten earlier is digested

(3) Indiyattha vikovana—*Indriyarth vikopan* means carnal perversions or lust *Abhayadev Suri*, the commentator (*Vritti*), has mentioned ten faults related to carnal perversion that are progressive in nature—(1) desire for carnal pleasures, (2) anxiety to avail, (3) continued thinking, (4) continued talks, (5) agitated state, (6) blathering,

(7) delirium, (8) disease, (9) comatose state and (10) death *(Vritti, leaves 423-424 and Hindi Tika, part-2, p 612)*

दर्शनावरणीयकर्म–पद DARSHANAVARANIYA KARMA-PAD (SEGMENT OF DARSHANAVARANIYA KARMA)

१४. णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा–णिद्दा, णिद्दाणिद्दा, पयला, पयला–पयला, थीणगिद्धी, चक्खुदंसणावरणे, अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवलदंसणावरणे।

१४. दर्शनावरणीय कर्म नौ प्रकार का है–(१) **निद्रा**–हल्की नीद सोना, जिससे सुखपूर्वक सोया और जगाया जा सके। (२) **निद्रानिद्रा**–गहरी नीद सोना। सुख के साथ नीद आये किन्तु कठिनता से जगाया जा सके। (३) **प्रचला**–खडे या बैठे हुए ऊँघना। (४) **प्रचला–प्रचला**–चलते-चलते सोना। (५) **स्त्यानर्द्धि**–दिन मे सोचे काम को निद्रावस्था मे कराने वाली घोर निद्रा। (६) **चक्षुदर्शनावरण**–चक्षु के द्वारा होने वाले सामान्य बोध का आवरण करने वाला कर्म। (७) **अचक्षुदर्शनावरण**–चक्षु के सिवाय शेष इन्द्रियो और मन से होने वाले सामान्य बोध का आवरक कर्म। (८) **अवधिदर्शनावरण**–इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना मूर्त पदार्थों के सामान्य दर्शन का प्रतिबन्धक कर्म। (९) **केवलदर्शनावरण**–सर्व द्रव्य और पर्यायो के साक्षात् दर्शन का आवरक कर्म।

14. *Darshanavaraniya karma* (perception obscuring *karma*) is of nine kinds—(1) *Nidra*—light sleep or to sleep and awake easily (2) *Nidranidra*—deep sleep or to sleep easily but awake with difficulty (3) *Prachala*—to drowse while standing or sitting (4) *Prachala-prachala*—to sleep while walking (5) *Styanardhi*—the deep sleep when thoughts of the day are acted upon in sleep (sleep-walking) (6) *Chakshudarshanavaran*—the *karma* that obscures the normal visual perception (7) *Achakshudarshanavaran*—the *karma* that obscures the normal perception through mind and sense organs other than eye (8) *Avadhidarshanavaran*—the *karma* that obscures the extrasensory perception of tangible things (9) *Kevaldarshanavaran*—the *karma* that obscures the direct perception of all things and all modes

ज्योतिष–पद JYOTISH-PAD (SEGMENT OF ASTROLOGY)

१५. अभिई णं णक्खत्ते सातिरेगे णवमुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति। १६. अभिइआइया णं णव णक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा–अभिई, सवणो धणिट्ठा, (सयभिसया, पुव्वाभद्दवया, उत्तरापोट्ठवया, रेवई, अस्सिणी), भरणी।

१५. अभिजित् नक्षत्र कुछ अधिक नौ मुहूर्त तक चन्द्रमा के साथ योग करता है। १६. अभिजित् आदि नौ नक्षत्र चन्द्रमा के साथ उत्तर दिशा से योग करते है, जैसे–(१) अभिजित्, (२) श्रवण, (३) धनिष्ठा, (४) शतभिषक्, (५) पूर्वभाद्रपद, (६) उत्तरभाद्रपद, (७) रेवती, (८) अश्विनी, (९) भरणी।

15. Abhijit *nakshatra* (Lyrae, the 22nd constellation) is in conjunction with the moon for nine *Muhurts* 16. Nine *nakshatras* (constellations) including Abhijit have north-sided conjunction with *Chandrama* (the moon)—(1) Abhijit (Lyrae, the 22nd), (2) Shravan (Alpha Aquilae, the 23rd), (3) Dhanishtha (Belta Delphini, the 24th), (4) Shat Bhishag (Lambda Aquarii, the 25th), (5) Purva Bhadrapad (Alpha Pegasi; the 26th), (6) Uttara Bhadrapad (Gama Pegasi, the 27th), (7) Revati (Zeta Piscium, the 28th), (8) Asvini (Beta Arietis, the 1st) and (9) Bharani (35 Arietis, the 2nd)

१७. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ णव जोअणसताइं उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति।

१७. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अत्यन्त सम और रमणीय भूमि-भाग से नौ सौ योजन की ऊँचाई पर सबसे ऊपर वाला तारा (शनैश्चर) भ्रमण करता है।

17. At a height of nine hundred *Yojans* from the beautiful level land of this *Ratnaprabha prithvi* travels the highest star (Saturn)

मत्स्य-पद MATSYA-PAD (SEGMENT OF FISH)

१८. जंबुद्दीवे णं दीवे णवजोयणिआ मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा।

१८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे नौ योजन की लम्बाई वाले मत्स्यो ने अतीत काल मे प्रवेश किया है, वर्तमान मे करते है और भविष्य मे करेगे।

18. Nine *Yojan* long *matsyas* (fishes) did, do and will enter Jambudveep continent

विवेचन—वृत्तिकार कहते है—यद्यपि लवण समुद्र मे पाँच सौ योजन के मत्स्य होते है, किन्तु जगती के रध्र मे केवल नौ योजन वाले मत्स्य ही प्रवेश पा सकते है, इससे बडे नही। ये मत्स्य लवणसमुद्र से जम्बूद्वीप की नदियो मे आ जाते है। *(वृत्ति पत्र ४२५)*

Elaboration—The commentator (Vritti) informs that although there are five hundred Yojan long fishes in Lavan Samudra on nine Yojan long fishes can enter the river-mouths, no larger than this This fishes come into the rivers from Lavan Samudra *(Vritti, leaf 425)*

बलदेव-वासुदेव-पद BALADEVA-VAASUDEVA-PAD (SEGMENT OF BALADEVA-VAASUDEVA)

१९. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेव वासुदेवपियरो हुत्था, तं जहा—

पयावती य बंभे रोद्दे सोमे सिवेति य।
महसीहे अग्गिसीहे, दसरहे णवमे य वसुदेवे॥१॥

इत्तो आढत्तं जधा समवाये णिरवसेसं जाव।
एगा से गब्भवसही, सिज्झिहिति आगमेसेणं॥२॥ (संग्रहणी–गाथा)

१९. जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भारत वर्ष मे इसी अवसर्पिणी मे बलदेवो और वासुदेवो के नौ पिता हो चुके है–(१) प्रजापति, (२) ब्रह्म, (३) रौद्र, (४) सोम, (५) शिव, (६) महासिह, (७) अग्निसिह, (८) दशरथ, (९) वसुदेव।

यहाँ से आगे शेष सब वर्णन समवायाग के समान है यावत् वह आगामी काल मे एक जन्म लेकर सिद्ध होगे।

19. In Jambudveep continent in Bharat area during current regressive cycle of time there have been nine fathers of *Baladevas* and *Vaasudeva*—(1) Prajapati, (2) Brahma, (3) Raudra, (4) Soma, (5) Shiva, (6) Mahasimha, (7) Agnisimha, (8) Dasharath and (9) Vasudeva

The following description should be read as in *Samavayanga* up to 'they will become *Siddha* after one reincarnation'

२०. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए णव बलदेव–वासुदेवपितरो भविस्संति, णव बलदेव–वासुदेवमायरो भविस्संति। एवं जधा समवाए णिरवसेसं जाव महाभीमसेणे, सुग्गीवे य अपच्छिमे।

एए खलु पडिसत्तू, कित्तिपुरिसाण वासुदेवाणं
सव्वे वि चक्कजोही, हम्मेहिंती सचक्केहिं॥१॥

२०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे भारतवर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी मे बलदेव और वासुदेव के नौ माता-पिता होगे। इस प्रकार जैसे समवायाग मे वर्णन किया है, वैसे महाभीमसेन और सुग्रीव तक सर्व वर्णन जानना चाहिए।

गाथार्थ–वे प्रतिवासुदेव कीर्त्तिपुरुष वासुदेवो के प्रतिशत्रु होगे। वे सब चक्रयोधी होगे और वे सब अपने ही चक्रो से वासुदेवो के द्वारा मारे जावेगे।

20. In Jambudveep continent in Bharat area during the future progressive cycle of time there will be nine parents of *Baladevas* and *Vaasudeva*

The following description should be read as in *Samavayanga* up to Mahabhimasen and Sugriva

These famous *Vaasudevas* will have *Prativaasudevas* as their enemies These enemies will wield disc weapons and will be killed by their own disc weapons by *Vaasudevas*

विवेचन—प्रत्येक अवसर्पिणी काल मे नौ बलदेव तथा नौ वासुदेव होते है। इनकी माताएँ भिन्न-भिन्न होती है, परन्तु पिता एक ही होते है। दोनो मे परस्पर घनिष्ठ प्रेम होता है। वासुदेव प्रतिवासुदेव पर विजय प्राप्त कर तीन खण्ड का अधिपति बनता है। वासुदेव के देहावसान के पश्चात् बलदेव सयम ग्रहण करते है। इस अवसर्पिणी के आठ बलदेव मोक्ष गति मे गये तथा नौवे बलभद्र, बलदेव पाँचवे देवलोक मे गये। इनका विशेष वर्णन समवायाग सूत्र मे होने से यहाँ उसी के अनुसार जानने की सूचना दी है।

Elaboration—There are nine *Baladevas* and nine *Vaasudevas* in every regressive cycle of time Each of these pairs have same father but different mothers The two have great affection for each other *Vaasudeva* becomes the monarch of three sections of the continent (half the continent) by defeating *Prativaasudeva* *Baladeva* gets initiated as an ascetic after the death of *Vaasudeva* Eight *Baladevas* of this regressive cycle got liberated and Balabhadra, the ninth, reincarnated in the fifth *Devalok* Detailed description of these is available in *Samavayanga Sutra*

महानिधि-पद MAHANIDHI-PAD (SEGMENT OF GREAT TREASURE)

२१. एगमेगे णं महाणिधी णव-णव जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते।

२१. एक-एक महानिधि नौ-नौ योजन विस्तार वाली है।

21. Every *mahanidhi* (great treasure) has an expanse of nine *Yojans* each

२२. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णव महाणिहिओ [णो ?] पण्णत्ता, तं जहा—

णेसप्पे पंडुयए, पिंगलए सव्वरयण महापउमे।
काले य महाकाले, माणवग, महाणिहि संखे॥१॥

णेसप्पंमि णिवेसा, गामागर-णगर-पट्टणाणं च।
दोणमुह-मडंबाणं, खंधाराणं गिहाणं च॥२॥

गणियस्स य बीयाणं, माणुम्माणस्स जं पमाणं च।
धण्णस्स य बीयाणं, उप्पत्ती पंडुए भणिया॥३॥

सव्वा आभरणविही, पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं।
आसाण य हत्थीण य, पिंगलग णिहिम्मि सा भणिया॥४॥

रयणाइं सव्वरयणे, चोद्दस पवराइं चक्कवट्टिस्स।
उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च॥५॥

वत्थाण य उप्पत्ती, णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं।
रंगाण य धोयाण य, सव्वा एसा महापउमे॥६॥

काले कालण्णाणं, भव्व पुराणं च तीसु वासेसु।
सिप्पसतं कम्माणि य, तिण्णि पयाए हियकराइं॥७॥

लोहस्स य उप्पत्ती, होइ महाकाले आगराणं च।
रुप्पस्स सुवण्णस्स य, मणि–मोत्ति–सिल–प्पवालाणं॥८॥

जोधाण य उप्पत्ती, आवरणाणं य पहरणाणं च।
सव्वा य जुद्धनीती, माणवए दंडणीती य॥९॥

णट्टविही णाडगविही, कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती।
संखे महाणिहिम्मी, तुडियंगाणं च सव्वेसिं॥१०॥

चक्कट्ठपइट्ठाणा, अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभे।
बारसदीहा मंजूस–संठिया जह्नवीए मुहे॥११॥

वेरुलियमणि–कवाडा, कणगमयाविविध–रयण–पडिपुण्णा।
ससि–सूर–चक्क–लक्खण–अणुसम–जुग–बाहु–वयणा य॥१२॥

पलिओवमट्ठितीया, णिहिसरिणाम य तेसु खलु देवा।
जेसिं ते आवासा, अक्किज्जा आहिवच्चा वा॥१३॥

एए ते णवणिहिणो, पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा।
जे वसमुवगच्छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं॥१४॥ (संग्रहणी गाथा)

२२. एक–एक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा की नौ–नौ निधियाँ होती है–

(संग्रहणी–गाथा)–(१) नैसर्पनिधि, (२) पाण्डुकनिधि, (३) पिगलनिधि, (४) सर्वरत्ननिधि, (५) महापद्मनिधि, (६) कालनिधि, (७) महाकालनिधि, (८) माणवकनिधि, (९) शखनिधि॥१॥

(१) नैसर्पनिधि से ग्राम, आकर, नगर, पट्टन, द्रोणमुख, मडब, स्कन्धावार और गृहो की प्राप्ति होती है॥२॥

(२) पाण्डुक महानिधि से गणना योग्य वस्तुएँ तथा बीजो के मान–उन्मान का प्रमाण तथा धान्य और बीजों की उत्पत्ति होती है॥३॥

(३) पिगलकनिधि मे स्त्री, पुरुष, घोडे और हाथियो के समस्त वस्त्र-आभूषण की विधि का वर्णन है ॥४॥

(४) चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय रत्न और सात पचेन्द्रिय रत्न, ये सब चौदह श्रेष्ठरत्न सर्वरत्ननिधि से उत्पन्न होते है ॥५॥

(५) महापद्मनिधि से रगे हुए या श्वेत सभी प्रकार के वस्त्रो की उत्पत्ति और निष्पत्ति होती है ॥६॥

(६) काल महानिधि से अतीत और अनागत काल के तीन-तीन वर्षों के शुभाशुभ का ज्ञान, सौ प्रकार के शिल्प, प्रजा के लिए हितकारक सुरक्षा, कृषि और वाणिज्य कर्म आदि की प्राप्ति होती है ॥७॥

(७) महाकालनिधि से लोहे, चाँदी तथा सोने के आकर, मणि, मुक्ता, स्फटिक और प्रवाल की उत्पत्ति होती है ॥८॥

(८) माणवक महानिधि से योद्धाओ, आवरणो (कवचो) और आयुधो की उत्पत्ति, सर्व प्रकार की युद्धनीति और दण्डनीति की प्राप्ति होती है ॥९॥

(९) शख महानिधि से नृत्यविधि, नाटकविधि, चार प्रकार के काव्यो तथा सभी प्रकार के वाद्यो की प्राप्ति होती है ॥१०॥

■ प्रत्येक महानिधि आठ-आठ चक्रो पर अवस्थित है। वे आठ योजन ऊँची, नौ योजन चौडी, बारह योजन लम्बी और मजूषा के आकार वाली होती है। ये सभी महानिधियाँ गगा के मुहानो (अग्रभाग) पर स्थित रहती है ॥११॥

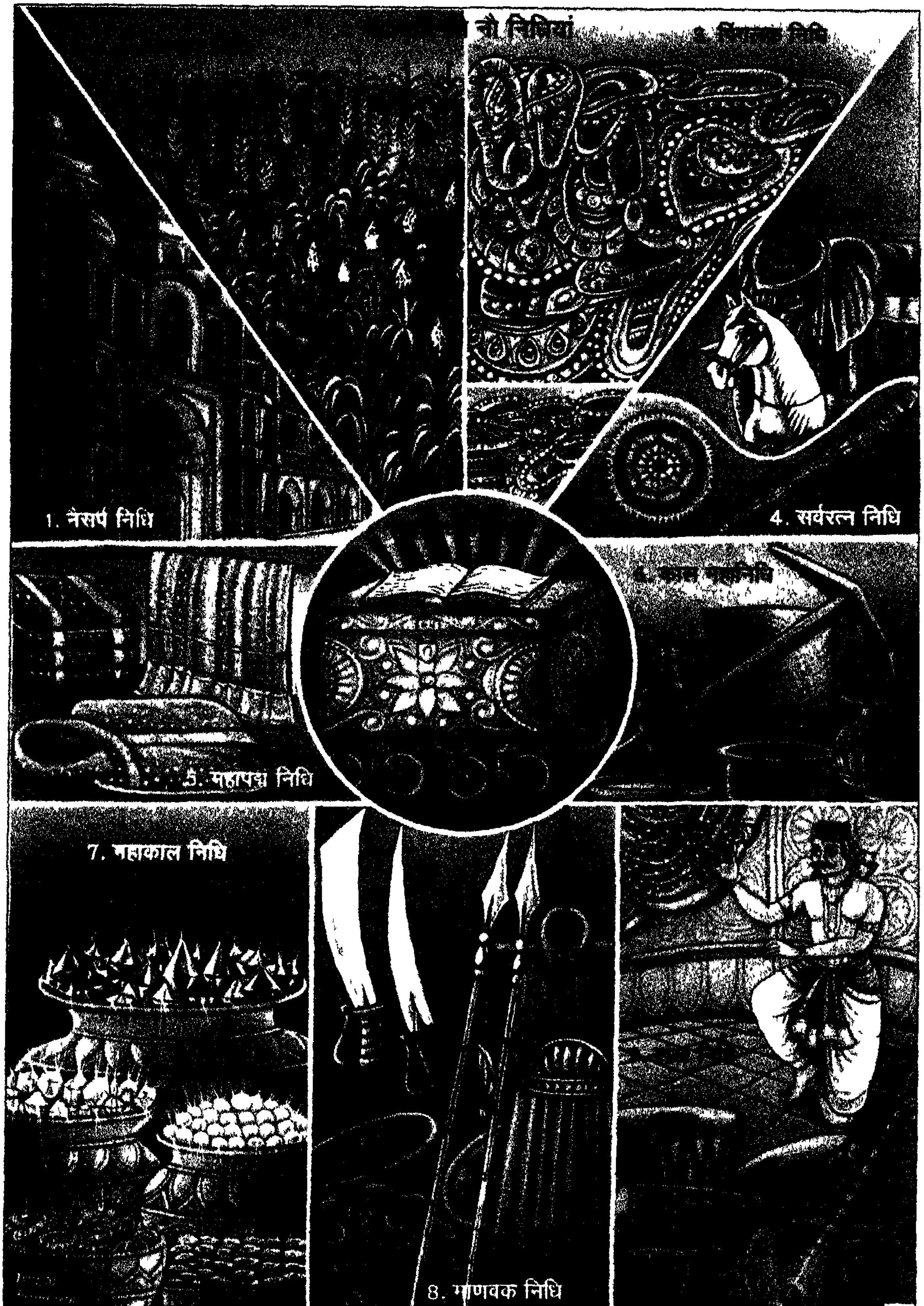
■ उन निधियो के कपाट वैडूर्यरत्नमय तथा सुवर्णमय होते है। उनमें अनेक प्रकार के रत्न जडे होते है। उन पर चन्द्र, सूर्य और चक्र के आकार के चिह्न होते है वे सभी कपाट समान होते है, उनके दरवाजे के मुखभाग मे खम्भे के समान गोल और लम्बी द्वार-शाखाएँ होती है ॥१२॥

■ ये सभी निधियाँ एक-एक पल्योपम की स्थिति वाले देवो से अधिष्ठित रहती है। उन पर निधियो के नाम वाले देव निवास करते है। ये निधियाँ खरीदी या बेची नही जा सकती है और उन पर सदा देवो का आधिपत्य रहता है ॥१३॥

■ ये नवो निधियाँ विपुल धन और रत्नो के संचय से समृद्ध रहती है और चक्रवर्तियो के वश मे रहती है ॥१४॥

22. Every *Chaturant Chakravarti* has nine *mahanidhis* (great treasures)—(collative verse)—(1) *Naisarpanidhi*, (2) *Panduk-nidhi*, (3) *Pingal-nidhi*, (4) *Sarvaratnanidhi*, (5) *Mahapadmanidhi*, (6) *Kaal-nidhi*, (7) *Mahakaal-nidhi*, (8) *Manavak-nidhi* and (9) *Shankhanidhi* #1#

(1) *Naisarpanidhi* is the source of *gram* (villages), *aakar* (settlement near a mine), *nagar* (city), *pattan* (harbour), *dronmukh* (hamlet), *madamb* (borough), *skandhavar* (cantonment) and *griha* (houses) #2#


1. नैसर्प निधि
4. सर्वरत्न निधि
5. महापद्म निधि
7. महाकाल निधि
८. माणवक निधि

चित्र परिचय १४	Illustration No. 14

चक्रवर्ती की नौ निधियाँ

प्रत्येक चक्रवर्ती के शासन में उनके असीम पुण्योदय प्रभाव से ये नौ निधियाँ (अक्षय निधान) प्रकट होती है।

चित्र के मध्य में मंजूषा दिखाई है। प्रत्येक महानिधि मंजूषा आकार में होती है। यह मंजूषा आठ-आठ चक्रो वाली, आठ योजन ऊँची, नौ योजन चौड़ी और बारह योजन लम्बी होती है। निधियों के नाम व गुण इस प्रकार है

(१) **नैसर्प निधि**—राजमहल आदि का निर्माण।

(२) **पाडुक निधि**—एक प्रकार का कृषि विज्ञान।

(३) **पिंगलक निधि**—रत्न व आभूषण आदि से सम्बन्धित।

(४) **सर्वरत्न निधि**—अश्व, गज, चक्र व दण्ड आदि चौदह रत्नों की उत्पत्ति का हेतु।

(५) **महापद्म निधि**—परिधान आदि की निधि।

(६) **काल निधि**—वतन व व्यापार की वस्तुएँ इत्यादि।

(७) **महाकाल निधि**—सोना, चाँदी, मणि, रत्न पदार्थ।

(८) **माणवक निधि**—तलवार आदि अस्त्र-शस्त्र आयुध।

(९) **शंख निधि**—नृत्य, संगीत आदि कला ज्ञान।

—स्थान ९, २१-२२

CHAKRAVARTI'S NINE NIDHIS

Nine *mahanidhis* (great treasures) appear during the reign of every *Chakravarti* due to fruition of his unlimited *punya karma*.

At the center of the illustration is shown a *manjusha* (box). Each of these great treasures rest on eight wheels each. They are eight *Yojan* high, nine *Yojan* wide, twelve *Yojan* long and box shaped. The names and attributes of the treasures are as follows—

(1) Naisarpa-nidhi—construction of palace and other such structures.

(2) Panduk-nidhi—a type of agricultural science.

(3) Pingal-nidhi—related to all ornaments.

(4) Sarvaratna-nidhi—the source of the fourteen unique gems including horses and elephants and other such possessions *Chakra* and *dand*.

(5) Mahapadma-nidhi—the source of all types of clothes and apparels.

(6) Kaal-nidhi—the source of things of trades and crafts.

(7) Mahakaal-nidhi—the source of silver and gold as also beads and gems.

(8) Manavak-nidhi—the source of armours and weapons including swords.

(9) Shankha-nidhi—the source of knowledge of arts including dance and music.

—*Sthaan 9, Sutra 21-22*

(2) *Panduk-nidhi* is the source of countable, measurable and weighable things as well as cereals and seeds #3#

(3) *Pingal-nidhi* contains the source book (processes of making) of all apparels and ornaments for woman, man, horse and elephant #4#

(4) *Sarvaratnanidhi* is the source of the fourteen unique gems of *Chakravarti* including seven *ekendriya* and seven *panchendriya* #5#

(5) *Mahapadmanidhi* is the source of all types of coloured and white clothes and apparels #6#

(6) *Kaal-nidhi* is the source of knowledge about good and bad happenings during three years each in the past and future as also that of hundred crafts and activities of public benefit including security, agriculture and trade #7#

(7) *Mahakaal-nidhi* is the source of minerals like iron, silver and gold as also beads, pearls, crystal-quartz and coral #8#

(8) *Manavak-nidhi* is the source of warriors, armours, and weapons as well as knowledge of military strategy and panel code #9#

(9) *Shankhanidhi* is the source of knowledge of methodology of dance and drama as well as all kinds of musical instruments #10#

■ Each of these great treasures rests on eight wheels each They are eight *Yojan* high, nine *Yojan* wide, twelve *Yojan* long and box shaped They are located at the mouth of the river Ganges #11#

■ The doors of these treasures are *Vaidurya* (catseye) and gold studded Many other gems are also studded therein They have motifs of the moon, the sun, and disc All these gates have same appearance At the opening of the gate there are round and sleek pilaster-like door jambs (*dvar-shakha*) #12#

■ Gods bearing names of each treasures and with one *Palyopam* life span are installed on all these treasures These treasures cannot be bought or sold They are always under the control of gods #13#

■ All these nine treasures abound in wealth and gems and are owned by *Chakravartis* #14#

विवेचन—वृत्तिकार का कथन है कि चक्रवर्ती के राज्य के लिए सभी उपयोगी और आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति इन निधियो से होती है। आचार्य श्री आत्माराम जी म ने लिखा है—परम्परागत मान्यता के अनुसार प्रत्येक महानिधान के ३-३ भाग हैं। पहले भाग मे देवासन है, दूसरे भाग मे रत्न

सचय है और तीसरे भाग मे रत्नमय ग्रन्थो का सग्रह है। इन ग्रन्थो मे महानिधियो के उपयोग-प्रयोग का सब ज्ञान भरा है। सक्षेप मे इन नौ महानिधियो को ज्ञान की इन शाखाओ से सम्बद्ध मान सकते है।

(१) **नैसर्पनिधि**–वास्तु शास्त्र। (२) **पांडुक निधि**–गणित शास्त्र। (३) **पिंगल निधि**–मडन शास्त्र या शृगार प्रसाधन साधन। (४) **सर्व रत्न निधि**–लक्षण शास्त्र। (५) **महापद्म निधि**–वस्त्र–उत्पत्ति व निर्माण शास्त्र। (६) **काल निधि**–काल विज्ञान, शिल्प विज्ञान, कृषि विज्ञान और कर्म विज्ञान का प्रतिपादक महाग्रन्थ। इसमे सौ प्रकार के शिल्पो का वर्णन है। (७) **महाकाल निधि**–धातु शास्त्र। (८) **माणवक निधि**–राजनीति व दण्ड शास्त्र। (९) **शंख निधि**–नाट्य व वाद्य शास्त्र। *(हिन्दी टीका भाग २, पृष्ठ ६२३। ठाण पृष्ठ ८७७)*

Elaboration—The commentator (*Vritti*) states that everything required in the empire of a *Chakravarti* is available in these treasures Acharya Shri Atmamarm ji M adds that according to the traditional belief each of these great treasures have three sections First has the seat of the deity, second has the treasure and the third has the collection of books These books contain all information and knowledge about application and use of these treasures The subjects covered by these branches of knowledge related to the nine treasures are as follows—

(1) *Naisarpanidhi*—architecture, (2) *Panduk-nidhi—mathematics*, (3) *Pingal-nidhi*—beautification and embellishing, (4) *Sarvaratnanidhi*—augury, (5) *Mahapadmanidhi*—textile and dress design and production, (6) *Kaal-nidhi*—astrology, crafts, technology, agriculture and engineering, (7) *Mahakaal-nidhi*—metallurgy, (8) *Manavak-nidhi*—politics, administration and law, and (9) *Shankhanidhi*—drama and music *(Hindi Tika, part-2, p 623, Thanam, p 877)*

विकृति–पद VIKRITI-PAD (SEGMENT OF CONTAMINANTS)

२३. णव विगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–खीरं, दधिं, णवणीतं, सप्पिं, तेलं, गुलो, महुं, मज्जं, मंसं।

२३. नौ विकृतियाँ है, जैसे–(१) दूध, (२) दही, (३) नवनीत (मक्खन), (४) घी, (५) तेल, (६) गुड, (७) मधु, (८)मद्य, (९) माँस।

23. There are nine *vikritis* (contaminants, food related)—(1) milk, (2) curd, (3) butter, (4) refined butter, (5) oil, (6) jaggery, (7) honey, (8) alcohol and (9) meat

विवेचन–जो पदार्थ शारीरिक व मानसिक विकार पैदा करते है उन्हे यहाँ 'विकृति' कहा है। प्रवचन सारोद्धार वृत्ति गाथा २३५ मे बताया है, दूध, दही, घी आदि स्वय विकृति है, तथा इनसे बने पदार्थ भी विकृतिकारक होने से **विकृतिगत** माने गये है। *(ठाण पृष्ठ ८७८)*

Elaboration—Here *vikriti* are things that create disorders of body and mind or cause physical and mental agitation when eaten It is mentioned in *Pravachan Saroddhar Vritti* (verse 235) that milk, curd, butter etc are contaminants and things made from them too are placed in the same category *(Thanam, p 878)*

बोन्दी–(शरीर)–पद BONDI-PAD (SEGMENT OF BODY)

२४. णव–सोत–परिस्सवा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा–दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसए, पाऊ।

२४. औदारिक शरीर से नौ स्रोत सतत झरते रहते है। जैसे–दो कर्ण, दो नेत्र, दो नाक, एक मुख, एक उपस्थ (मूत्रेन्द्रिय) और एक अपान (मलद्वार)।

24. There are nine places in the body that always ooze—two ears, two eyes, two holes in the nose, one mouth, one urethra and one anus

पुण्य–पद PUNYA-PAD (SEGMENT OF MERITORIOUS ACTIVITY)

२५. णवविधे पुण्णे पण्णत्ते, तं जहा–अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे, लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे, वइपुण्णे, कायपुण्णे, णमोक्कारपुण्णे।

२५. पुण्य नौ प्रकार का है, जैसे–(१) अन्नपुण्य, (२) पानपुण्य, (३) वस्त्रपुण्य, (४) लयन–(भवन)–पुण्य, (५) शयनपुण्य, (६) मनपुण्य, (७) वचनपुण्य (८) कायपुण्य, (९) नमस्कारपुण्य।

25. *Punya* (meritorious activities) are of nine kinds—(1) *anna-punya* (that related to grains or food), (2) *paan-punya* (that related to drinks), (3) *vastra-punya* (that related to dress or clothes), (4) *layan-punya* (that related to house), (5) *shayan-punya* (that related to sleep or bed), (6) *manah-punya* (that related to mind or thoughts), (7) *vachan-punya* (that related to words or speech), (8) *kaya-punya* (that related to body) and (9) *namaskar-punya* (that related to homage or greeting)

२६. णव पावस्सायतणा पण्णत्ता, तं जहा–पाणातिवाते, मुसावाए, (अदिण्णादाणे, मेहुणे), परिग्गहे, कोहे, माणे, माया, लोभे।

२६. पाप के आयतन (स्थान, पाप बध के कारण) नौ है। जैसे–(१) प्राणातिपात, (२) मृषावाद, (३) अदत्तादान, (४) मैथुन, (५) परिग्रह, (६) क्रोध, (७) मान, (८) माया, (९) लोभ।

26. There are nine *ayatan* (*sthaan* or causes) of bondage of *paap karma* (demeritorious *karmas*)—(1) *Pranatipat* (harming or destroying life), (2) *Mrishavad* (falsity), (3) *Adattadan* (stealing), (4) *Maithun* (indulgence in sexual activities), (5) *Parigraha* (acts of possession of things), (6) anger, (7) conceit, (8) deceit and (9) greed

पापश्रुतप्रसंग–पद PAAP-SHRUT-PRASANG-PAD (SEGMENT OF ELABORATION OF EVIL LITERATURE)

२७. णवविधे पावसुयपसंगे पण्णत्ते, तं जहा–

उप्पाते णिमित्ते मंते, आइक्खिए तिगिच्छए।
कला आवरणे अण्णाणे मिच्छापवयणे ति य॥१॥

२७. पापश्रुतप्रसग (पाप के कारणभूत शास्त्र का विस्तार) नौ प्रकार का है, जैसे–(१) **उत्पातश्रुत**–प्रकृति–विप्लव और राष्ट्र–विप्लव का सूचक शास्त्र। (२) **निमित्तश्रुत**–भूत, वर्तमान और भविष्य के फल का प्रतिपादक शास्त्र। (३) **मन्त्रश्रुत**–मन्त्र–विद्या का प्रतिपादक शास्त्र। (४) **आख्यायिकाश्रुत**–परोक्ष बातो की प्रतिपादक मातगविद्या का शास्त्र। (५) **चिकित्साश्रुत**–रोग–निवारक औषधियो का प्रतिपादक आयुर्वेद शास्त्र। (६) **कलाश्रुत**–स्त्री–पुरुषो की कलाओ का प्रतिपादक शास्त्र। (७) **आवरणश्रुत**–भवन–निर्माण की वास्तुविद्या का शास्त्र। (८) **अज्ञानश्रुत**–नृत्य, नाटक, सगीत आदि का शास्त्र। (९) **मिथ्याप्रवचन**–कुतीर्थिक मिथ्यात्वियो के शास्त्र।

27. *Paap-shrut-prasang* (elaboration of evil scriptures or literature) is of nine kinds—(1) *Utpat-shrut*—the scriptures about natural calamities and national disturbances (2) *Nimitta-shrut*—the scriptures about augury or fortune telling (3) *Mantra-shrut*—the scriptures about mantras and their applications (4) *Akhyayika-shrut*—the scriptures about *maatang vidya* or methods of indirect perception (5) *Chikitsa-shrut*—the scriptures about medicines and cures, such as *Ayurveda* (6) *Kala-shrut*—the scriptures about arts (7) *Avaran-shrut*—the scriptures about architecture (8) *Ajnana-shrut*—the scriptures about dance, drama, music and other performing arts (9) *Mithyapravachan*—the scriptures of heretics and the unrighteous

विवेचन–समवायाग सूत्र २९/१ मे उनतीस प्रकार के पापश्रुत का वर्णन है। वहाँ इनका विस्तार के साथ कथन किया जायेगा। वास्तव मे जिन शास्त्रो मे सम्यग् ज्ञान–दर्शन आदि का वर्णन नही है, और जिनसे सम्यग् दर्शनादि की वृद्धि–विशुद्धि नही होती, वे सभी पापश्रुत माने गये है। कारण कि प्राय वासना पूर्ति, धन प्राप्ति या दूसरो को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से ही इन भौतिक विद्याओ का प्रयोग किया जाता है। सम्यक् दृष्टि तो इनको भी सम्यक् श्रुत रूप मे परिणत कर सकता है।

Elaboration—More details about *Paap-shrut* are available in *Samavayanga Sutra* (29/1) where twenty nine types of these works have been listed In fact the books where right knowledge and perception are not discussed, and which do not enhance virtues leading to righteousness are all said to be Paap-shrut. The reason for this is that all these mundane subjects are mostly used for gratification of desires and greed

or to harm others However, a righteous person can turn all these into *samyak-shrut* or pious literature

नैपुणिक–सूत्र NAIPUNIK-PAD (SEGMENT OF EXPERT)

२८. णव णेउणिया वत्थू पण्णत्ता, तं जहा–

संखाणे णिमित्ते काइए पोराणे पारिहत्थिए।
परपंडिते वाई य, भूतिकम्मे तिगिच्छिए॥१॥

२८. नैपुणिक वस्तु नौ है। (अपने विषय के विशेषज्ञ या गम्भीर ज्ञाता अथवा नौवे अनुप्रवाद पूर्व की नौ वस्तु–अध्ययन का ज्ञाता को यहाँ नैपुणिक कहा है।)

(१) **संख्यान–नैपुणिक**–गणित शास्त्र का विशेषज्ञ। (२) **निमित्त–नैपुणिक**–निमित्त शास्त्र का विशेषज्ञ। (३) **काय–नैपुणिक**–शरीर की ईडा, पिगला आदि नाडियो का स्वरोदय शास्त्र का विशेषज्ञ। (४) **पुराण–नैपुणिक**–प्राचीन इतिहास या प्राचीन साहित्य का विशेषज्ञ। (५) **पारिहस्तिक–नैपुणिक**–जो जन्म से ही समस्त कार्यों मे कुशल हो। (६) **परपंडित**–अनेक शास्त्रो को जानने वाला। अथवा पडित मित्रो के ससर्ग में रहने वाला। (७) **वादी**–रसायन शास्त्रका ज्ञाता अथवा वाद–विवाद करने में कुशल। (८) **भूतिकर्म–नैपुणिक**–भस्म लेप करके और डोरा आदि बाँध कर चिकित्सा करने मे कुशल। (९) **चिकित्सा–नैपुणिक**–शारीरिक चिकित्सा करने मे कुशल।

28. There are nine *naipunik* things (here *naipunik* means a profound scholar or expert of his subject or a scholar of nine chapters of the ninth subtle canon named *Anupravad Purva*)—(1) *Sankhyan-naipunik*—a scholar of mathematics (2) *Nimitta-naipunik*—a scholar of augury, (3) *Kaya-naipunik*—a scholar of nervous system and *Svarodaya Shastra* (the special yogic topic related to breathing), (4) *Puran-naipunik*—a scholar of history and mythology or ancient scriptures (5) *Paarihastik-naipunik*—a prodigy (6) *Parapandit-naipunik*—a scholar of many subjects or one who has many scholars as friends (7) *Vaadi*—a scholar of chemistry or an expert debater (8) *Bhootikarma-naipunik*—a exponent of superstitious rituals or a magic healer (9) *Chikitsa-naipunik*—a scholar of medicine and surgery or an accomplished doctor

गण–पद GANA-PAD (SEGMENT OF GROUP OF ASCETICS)

२९. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं जहा–गोदासगणे, उत्तर–बलिस्सहगणे, उद्देहगणे, चारणगणे, उद्दवाइयगणे, विस्सवाइयगणे, कामड्ढियगणए, माणवगणे, कोडियगणे।

२९. श्रमण भगवान महावीर के नौ गण-(एक-समान सामाचारी का पालन करने वाले और एक-समान वाचना करने वाले साधुओ के समुदाय) थे, जैसे-(१) गोदासगण, (२) उत्तरबलिस्सहगण, (३) उद्देहगण, (४) चारणगण, (५) ऊर्ध्ववातिकगण, (६) विश्ववादिकगण, (७) कामर्धिकगण, (८) मानवगण, (९) कोटिकगण।

29. Shraman Bhagavan Mahavır had nıne *Ganas* (group of ascetıcs followıng the same praxıs and style of recıtatıon)—(1) *Godas gana*, (2) *Uttar-balıssaha gana*, (3) *Uddeha gana*, (4) *Chaaran gana*, (5) *Urdhvavatık gana*, (6) *Vıshvavadık gana*, (7) *Kamardhık gana*, (8) *Manav gana*, and (9) *Kotık gana*

विवेचन—आर्य भद्रबाहु के (वीर निर्वाण १७० के आसपास) समय से लेकर आर्य सुप्रतिबद्ध (वीर निर्वाण ३३९ तक) के काल मे इन गणो की उत्पत्ति हुई है। जैसे गोदासगण की उत्पत्ति आर्य भद्रबाहु के शिष्यो से हुई तथा आर्य सुस्थित ने सूर्य मत्र का कोटि जप किया जिस कारण उनका गण कोटिकगण कहलाया।

Elaboration—These *Ganas* were founded between the perıods of Arya Bhadrabahu (around 170 ANM) and Arya Supratıbaddha (339 ANM) For example *Godas gana* was founded by dıscıples of Arya Bhadrabahu Arya Susthıt chanted *Surya Mantra* ten mıllıon (*kotı*) tımes and for thıs reason hıs *gana* was called *Kotık gana*

भिक्षाशुद्धि-पद BHIKSHASHUDDHI-PAD (SEGMENT OF RIGHTEOUS ALMS-SEEKING)

३०. समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे पण्णत्ते, तं जहा—ण हणइ, ण हणावइ, हणंतं णाणुजाणइ, ण पयइ, ण पयावेति, पयंतं णाणुजाणति, ण किणति, ण किणावेति, किणंतं णाणुजाणति।

३०. श्रमण भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए नौ कोटि (नौ प्रकार) की परिशुद्ध भिक्षा का निरूपण किया है, जैसे-(१) आहार के लिए स्वय सचित्त वस्तु का घात नही करता है। (२) दूसरो से सचित्त वस्तु का घात नही कराता है। (३) सचित्त वस्तु के घात की अनुमोदन नही करता है। (४) स्वय आहार नही पकाता है। (५) दूसरो से नही पकवाता है। (६) पकाने वालो की अनुमोदना नही करता है। (७) आहार को स्वय नही खरीदता है। (८) दूसरो से नही खरीदवाता है। (९) मोल लेने वाले की अनुमोदना नही करता है।

30. Shraman Bhagavan Mahavır has prescrıbed nıne kınds of *bhıkshashuddhı* (pure or rıghteous alms-seekıng) for *Shraman Nırgranths* (*Jaın* ascetıcs)—(1) He does not destroy lıvıng organısms hımself for food (2) He does not cause others to destroy lıvıng organısms

for food (3) He does not approve others destroying living organisms for food (4) He does not cook food himself (5) He does not get food cooked by others (6) He does not approve others cooking food (7) He does not buy food himself (8) He does not get food bought by others (9) He does not approve others buying food

देव–पद DEVA-PAD (SEGMENT OF GODS)

३१. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो णव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। ३२. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं णव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। ३३. ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।

३१. देवेन्द्र देवराज ईशान के लोकपाल महाराज वरुण की नौ अग्रमहिषियाँ है। ३२. देवेन्द्र देवराज ईशान की अग्रमहिषियो की स्थिति नौ पल्योपम की है। ३३. ईशानकल्प मे देवियो की उत्कृष्ट स्थिति नौ पल्योपम की है।

31. Varun, the *lok-paal* of Ishan Devendra, the king of gods has nine *agramahishis* (chief queens) **32.** The life span of *agramahishis* (chief queens) of Ishan Devendra, the king of gods, is nine *Palyopam* **33.** The maximum life span of goddesses in *Ishan Kalp* is nine *Palyopam*

देव निकाय–पद DEVANIKAYA-PAD (SEGMENT OF ABODES OF GODS)

३४. णव देवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा–

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य॥१॥

३४. देव (लोकान्तिदेव) निकाय नौ है–(१) सारस्वत (२) आदित्य, (३) वह्नि, (४) वरुण, (५) गर्दतोय, (६) तुषित, (७) अव्याबाध, (८) अग्न्यर्च, (९) रिष्ट।

34. There are nine *Devanikaya* (the abodes of *Lokantik* gods)—(1) Sarasvat, (2) Aditya, (3) Vahni, (4) Varun, (5) Gardatoya, (6) Tushit, (7) Avyabadh, (8) Agnyarch and (9) Rishta

३५. अव्वाबाहाणं देवाणं णव देवा णव देवसया पण्णत्ता। ३६. (अग्गिच्चाणं देवाणं णव देवा णव देवसया पण्णत्ता)। ३७. (रिट्ठाणं देवाणं णव देवा णव देवसया पण्णत्ता)।

३५. अव्याबाध देव स्वामी रूप में नौ है और उनका नौ सौ देवो का परिवार है। ३६. (अग्न्यर्च देव स्वामी रूप मे नौ है और उनके नौ सौ देवो का परिवार है)। ३७. (रिष्ट देव स्वामी के रूप मे नौ है और उनके नौ सौ देवो का परिवार है।

35. In position of master there are nine *Avyabadh* gods and they have a family (retinue) of nine hundred gods **36.** In position of master there

are nine *Agnyarch* gods and they have a family (retinue) of nine hundred gods 37. In position of master there are nine *Rishta* gods and they have a family (retinue) of nine hundred gods

३८. णव गेवेज्ज–विमाण–पत्थडा पण्णत्ता, तं जहा–(१–३) हेट्ठिम–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, हेट्ठिम–मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, हेट्ठिम–उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे।

(४–६) मज्झिम–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, मज्झिम–मज्झिम–गेविज्ज विमाण–पत्थडे। मज्झिम–उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पथडे।

(७–९) उवरिम–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, उवरिम–मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, उवरिम–उवरिम गेविज्ज–विमाण–पत्थडे।

३९. एतेसि णं णवण्हं गेविज्ज विमाण पत्थडाणं णव णामधिज्जा पण्णत्ता, तं जहा–

भद्दे सुभद्दे सुजाते, सोमणसे पियदरिसणे।
सुदंसणे अमोहे य, सुप्पबुद्धे जसोधरे॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

३८. ग्रैवेयक विमान के प्रस्तट (पटल) नौ है–(१) अधस्तन-त्रिक का **अधस्तन** ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (२) अधस्तन-त्रिक का **मध्यम** ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (३) अधस्तन त्रिक का **उपरितन** ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (४) मध्यम त्रिक का अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (५) मध्यम त्रिक का मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (६) मध्यम त्रिक का उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (७) उपरितन त्रिक का अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (८) उपरितन त्रिक का मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट। (९) उपरितन त्रिक का उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट।

३९. इन ग्रैवेयक विमानो के नवो प्रस्तटो के नौ नाम ये है–(१) भद्र, (२) सुभद्र, (३) सुजात, (४) सौमनस, (५) प्रियदर्शन, (६) सुदर्शन, (७) अमोह, (८) सुप्रबुद्ध, (९) यशोधर।

38. The *Graiveyak Vimaans* have nine *prastat* (levels)—(1) *Adhastan* (lower) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the lower triad (2) *Madhyam* (middle) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the lower triad., (3) *Uparitan* (upper) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the lower triad. (4) *Adhastan* (lower) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the middle triad (5) *Madhyam* (middle) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the middle triad. (6) *Uparitan* (upper) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the middle triad. (7) *Adhastan* (lower) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the upper triad (8) *Madhyam* (middle) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the upper triad (9) *Uparitan* (upper) *Graiveyak Vimaan prastat* (level) of the upper triad

39. The names of these nine levels of these *Graiveyak Vimaans* are—(1) Bhadra, (2) Subhadra, (3) Sujaat, (4) Saumanas, (5) Priyadarshan, (6) Sudarshan, (7) Amoha, (8) Suprabuddha and (9) Yashodhar

आयुपरिणाम-पद AYU-PARINAAM-PAD (SEGMENT OF CAPACITY OF AYUSHYA KARMA)

४०. णवविहे आउपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—गतिपरिणामे, गतिबंधणपरिणामे, ठितीपरिणामे, ठितीबंधणपरिणामे, उड्ढंगारवपरिणामे, अहेगारवपरिणामे, तिरियंगारवपरिणामे, दीहंगारवपरिणामे, रहस्संगारवपरिणामे।

४०. आयु परिणाम नौ प्रकार का है—गति परिणाम, गतिबन्ध परिणाम, स्थिति परिणाम, स्थितिबन्ध परिणाम, ऊर्ध्वगौरव परिणाम, अधोगौरव परिणाम, तिर्यक् गौरव परिणाम, दीर्घगौरव परिणाम, ह्रस्वगौरव परिणाम।

40. *Ayu-parinaam* (capacity of *ayushya karma*) is of nine kinds—(1) *Gatiparinaam*, (2) *Gatibandh parinaam*, (3) *Sthiti parinaam*, (4) *Sthitibandh parinaam*, (5) *Urdhvagaurav parinaam*, (6) *Adhogaurav parinaam*, (7) *Tiryak gaurav parinaam*, (8) *Deergh gaurav parinaam* and (9) *Hrasva gaurav parinaam*

विवेचन—आयुष्य कर्म की स्वाभाविक शक्ति को आयु परिणाम कहते है। परिणाम शब्द, स्वभाव, शक्ति और धर्म इत्यादि अर्थों का बोधक है। आयुष्य कर्म बँधते समय जीव के साथ ये बाते निश्चित हो जाती है—(१) वह किस गति मे जायेगा, (२) वहाँ उसकी स्थिति कितनी होगी, (३) वह ऊँचा, नीचा या तिरछा कहाँ जायेगा, तथा (४) दूरवर्ती क्षेत्र मे या निकटवर्ती क्षेत्र मे कहाँ तक जायेगा। सक्षेप मे इनका विवेचन इस प्रकार है—

(१) **गति परिणाम**—जीव को अपनी निश्चित गति मे पहुँचाने वाला आयुष्य कर्म।

(२) **गति बंध-परिणाम**—अपनी नियत गति के योग्य कर्म का बन्ध कराने वाला आयु का स्वभाव। जैसे देव-नरक गति वाला जीव केवल मनुष्य तथा तिर्यंच गति के आयु का ही बध करता है।

(३) **स्थिति-परिणाम**—भव सम्बन्धी अन्तर्मुहूर्त से लेकर तेतीस सागरोपम तक की स्थिति का यथायोग्य बन्ध कराने वाला परिणाम।

(४) **स्थितिबन्धन-परिणाम**—पूर्व भव की आयु के अनुसार अगले भव की नियत आयुस्थिति का बन्ध कराने वाला परिणाम। २५६ आवलिका से कम तथा ३३ सागरोपम से अधिक आयु का बन्ध कोई जीव नही करता।

(५) **ऊर्ध्वगौरव-परिणाम**—जीव को ऊर्ध्वदिशा मे गमन कराने वाला परिणाम।

(६) **अधोगौरव-परिणाम**—जीव को अधोदिशा मे गमन कराने वाला परिणाम।

(७) **तिर्यग्गौरव-परिणाम**-जीव को तिर्यग्दिशा मे गमन कराने वाला परिणाम।

(८) **दीर्घगौरव-परिणाम**-जीव को बहुत दूर तक लोक के अन्त भाग तक गमन कराने वाला परिणाम।

(९) **ह्स्वगौरव-परिणाम**-जीव को अल्प गमन कराने वाला परिणाम।

Elaboration—The natural capacity of *ayushya karma* (life span determining *karma*) is called *ayu-parinaam* The term *parinaam* includes various meanings including nature, strength and action With the bonding of *ayushya karma* many things about the soul come in force They include—(1) The genus it will reincarnate into (2) The period of its stay in that genus (3) The direction it will take—up, down or transverse (4) The distance it will cover—far or near Brief details about the aforesaid are as follows—

(1) Gatiparinaam—The *ayushya karma* that ensures the passage to the destined genus

(2) Gatibandh parinaam—the nature of the existing life span that ensures the bondage of *karmas* leading to the specific genus of reincarnation For example a soul in divine or infernal realms enters the bondage of *ayushya karma* only for human or animal genus

(3) Sthiti parinaam—the capacity to acquire the bondage of exact duration of life in the destined genus varying from *Antar Muhurt* (less than 48 minutes) to thirty three *Sagaropam*

(4) Sthitibandh parinaam—the capacity to determine the specific life span in the destined genus on the basis of the preceding birth No soul acquires bondage of life span less than 256 *Avalika* and more than 33 *Sagaropam*

(5) Urdhvagaurav parinaam—The capacity to move the soul in upward direction

(6) Adhogaurav parinaam—The capacity to move the soul in downward direction

(7) Tiryak gaurav parinaam—The capacity to move the soul in transverse direction

(8) Deergh gaurav parinaam—The capacity to move the soul to long distances right up to the edge of the universe

(9) Hrasva gaurav parinaam—The capacity to move the soul to short distances

प्रतिमा–पद **PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)**

४१. णवणवमिया णं भिक्खुपडिमा एगासीतीए रातिंदिएहिं चउहिं य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं (अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया) आराहिया यावि भवति।

४१. नव–नवमिका भिक्षुप्रतिमा ८९ दिन–रात तथा ४०५ भिक्षादत्तियो के द्वारा सूत्र, अर्थ, तत्त्व, कल्प के अनुसार तथा सम्यक् प्रकार काय से आचरित, पालित, शोधित, पूरित, कीर्तित और आराधित की जाती है।

41. The *Nava-navamika Bhikshupratima* (a specific practice with special codes) is sincerely observed (*palit*), purified (shodhit, for transgressions), completed (*purit*), for breaking fast), concluded (*kirtit*, break the fast) and successfully performed (*aradhit*) for 81 (9 × 9) days and nights with 405 *bhikshadattis* (servings of alms) according to the scriptures (*yathasutra*), correct interpretation (*yatha-arth*), prescribed procedure (*yathamarg*) and code of praxis (*yathakalp*), perfectly following fundamentals (*yathatattva*), with equanimity (*samata*) and touching the body (actually not just conceptually)

प्रायश्चित्त–पद **PRAYASHCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)**

४२. णवविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा–आलोयणारिहे (पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे), मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे।

४२. प्रायश्चित्त नौ प्रकार का है, जैसे–(१) आलोचना के योग्य, (२) प्रतिक्रमण के योग्य, (३) तदुभय–आलोचना और प्रतिक्रमण दोनो के योग्य, (४) विवेक के योग्य, (५) व्युत्सर्ग के योग्य, (६) तप के योग्य, (७) छेद के योग्य, (८) मूल के योग्य, (९) अनवस्थाप्य के योग्य।

42. *Prayashchit* (atonement) is of nine kinds—(1) requiring *alochana* (criticism), (2) requiring *pratikraman* (critical review), (3) *tadubhaya* (requiring both alochana and *pratikraman*) (4) requiring *vivek* (sagacity), (5) requiring *vyutsarg* (abstainment), (6) requiring *tap* (austerities), (7) requiring *chhed* (termination of ascetic state), (8) requiring *mool* (reinitiation) and (9) requiring *anavasthapya* (reinitiation when atonement has already been done)

कूट–पद (दक्षिणवर्ती कूट) **KOOT-PAD (SEGMENT OF PEAKS)**

४३. जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं भरहे दीहवेतड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे भरहे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा।
भरहे वेसमणे या, भरहे कूडाण णामाइं॥१॥

४४. जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं णिसहे वासहरपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे णिसहे हरिवस, विदेह हरि धिति अ सीतोया।
अवरविदेहे रुपगे णिसहे कूडाण णामिवि॥१॥

४३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे भरत क्षेत्र मे दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट है–(१) सिद्धायतन कूट, (२) भरत कूट, (३) खण्डकप्रपातगुफा कूट, (४) माणिभद्र कूट, (५) वैताढ्य कूट, (६) पूर्णभद्र कूट, (७) तमिस्रगुफा कूट, (८) भरत कूट, (९) वैश्रमण कूट।

४४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे निषध वर्षधर पर्वत के ऊपर नौ कूट है–(१) सिद्धायतन कूट, (२) निषध कूट, (३) हरिवर्ष कूट, (४) पूर्वविदेह कूट, (५) हरि कूट, (६) धृति कूट, (७) सीतोदा कूट, (८) अपरविदेह कूट, (९) रुचक कूट।

43. In Jambu Dveep south of Mandar mountain in Bharat area on the Deergh Vaitadhya mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Bharat koot, (3) Khandak-prapat-gufa koot, (4) Manibhadra koot, (5) Vaitadhaya koot, (6) Purnabhadra koot, (7) Tamisra-gufa koot, (8) Bharat koot, and (9) Vaishraman koot

44. In Jambu Dveep south of Mandar mountain in Bharat area on the Nishadh Varshadhar mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Nishadh koot, (3) Harivarsh koot, (4) Purvavideha koot, (5) Hari koot, (6) Dhriti koot, (7) Sitoda koot, (8) Apar-videh koot and (9) Ruchak koot

मध्यवर्ती कूट **MADHYAVARTI-PAD (SEGMENT OF THE MIDDLE PEAKS)**

४५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वते णंदणवणे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

णंदणे मंदरे चेव, णिसहे हेमवते रयय रुपए य।
सागरचित्ते वइरे, बलकूडे चेव बोद्धव्वे॥१॥

४५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के नन्दन वन मे नौ कूट है, जैसे–(१) नन्दन कूट, (२) मन्दर कूट, (३) निषध कूट, (४) हैमवत कूट, (५) रजत कूट, (६) रुचक कूट, (७) सागरचित्र कूट, (८) वज्र कूट, (९) बल कूट।

45. In Jambu Dveep in Nandan van of Mandar mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Nandan koot, (2) Mandar koot, (3) Nishadh koot,

(4) Haimavat koot, (5) Rajat koot, (6) Ruchak koot, (7) Sagar-chitra koot, (8) Vajra koot, (9) Bala koot

४६. जंबुद्दीवे दीवे मालवंतवक्खारपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे य मालवंते, उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयते।
सीता य पुण्णणामे, हरिस्सहकूडे य बोद्धेव्वे॥१॥

४६. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे माल्यवान् वक्षस्कार पर्वत के ऊपर नौ कूट है, जैसे–(१) सिद्धायतन कूट, (२) माल्यवान् कूट, (३) उत्तरकुरु कूट, (४) कच्छ कूट, (५) सागर कूट, (६) रजत कूट, (७) सीता कूट, (८) पूर्णभद्र कूट, (९) हरिस्सह कूट।

46. In Jambu Dveep on Malyavan Vakshaskar mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Malyavan koot, (3) Uttarakurukoot, (4) Kachchha koot, (5) Agar koot, (6) Rajat koot, (7) Sita koot, (8) Purnabhadra koot, (9) Harissaha

४७. जंबुद्दीवे दीवे कच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे कच्छे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा।
कच्छे वेसमणे या, कच्छे कूडाण णामाइं॥१॥

४७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे कच्छवर्ती दीर्घ वैताढ्य के ऊपर नौ कूट है–(१) सिद्धायतन कूट, (२) कच्छ कूट, (३) खण्डकप्रपात कूट, (४) माणिभद्र कूट, (५) वैताढ्य कूट, (६) पूर्णभद्र कूट, (७) तमिस्रगुफा कूट, (८) कच्छ कूट, (९) वैश्रमण कूट।

47. In Jambu Dveep on Kachchhavarti Deergh Vaitadhya mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Kachchha koot, (3) Khandak-prapat koot, (4) Manibhadra koot, (5) Vaitadhya koot, (6) Purnabhadra koot, (7) Tamisra-gufa koot, (8) Kachchha koot, (9) Vaishraman koot

४८. जंबुद्दीवे दीवे सुकच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे सुकच्छे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा।
सुकच्छे वेसमणे या, सुकच्छे कूडाण णामाइं॥१॥

४९. एवं जाव पोक्खलावइम्मि दीहवेयड्ढे। ५०. एवं वच्छे दीहवेयड्ढे। ५१. एवं जाव मंगलावतिम्मि दीहवेयड्ढे।

४८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे सुकच्छवर्ती दीर्घ वैताढ्य पर्वत के ऊपर नौ कूट है, जैसे–(१) सिद्धायतन कूट, (२) सुकच्छ कूट, (३) खण्डकप्रपातगुफा कूट, (४) माणिभद्र कूट, (५) वैताढ्य कूट, (६) पूर्णभद्र कूट, (७) तमिस्रगुफा कूट, (८) सुकच्छ कूट, (९) वैश्रमण कूट। ४९. इसी प्रकार

महाकच्छ, कच्छकावती, आवर्त, मगलावर्त, पुष्कल और पुष्कलावती विजय मे विद्यमान दीर्घ वैताढ्यो के ऊपर नौ कूट है। ५०. इसी प्रकार वत्स विजय मे विद्यमान दीर्घ वैताढ्य पर नौ कूट है। ५१. इसी प्रकार सुवत्स, महावत्स, वत्सकावती, रम्य, रम्यक, रमणीय और मगलावती विजयो मे विद्यमान दीर्घ वैताढ्यो के ऊपर नौ कूट है।

48. In Jambu Dveep on Sukachchhavartı Deergh Vaitadhya mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Sukachchha koot, (3) Khandak-prapat gufa koot, (4) Manibhadra koot, (5) Vaitadhya koot, (6) Purnabhadra koot, (7) Tamisra-gufa koot, (8) Sukachchha koot, (9) Vaishraman koot **49.** In the same way in Mahakachchha, Kachhakavati, Avart, Mangalavarta, Pushkal and Pushkalavati Vijayas there are nine peaks each **50.** In the same way on *Deergh Vaitadhya* mountains in Vatsa Vijaya there are nine peaks **51** In the same way in Suvatsa, Mahavatsa, Vatsakavati, Ramya, Ramyak, Ramaniya and Mangalavati Vijayas there are nine peaks each

५२. जंबुद्दीवे दीवे विज्जुपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे अ विज्जुणामे, देवकुरा पम्ब कणग सोवत्थी।
सीओदा य सयजले, हरिकूडे चेव बोद्धव्वे॥१॥

५३. जंबुद्दीवे दीवे पम्हे दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे पम्हे खंडग, माणी वेयड्ढ (पुण्ण तिमिसगुहा।
पम्हे वेसमणे या, पम्हे कूडाण णामाइं)॥१॥

५४. एवं चेव जाव सलिलावतिम्मि दीहवेयड्ढे। ५५. एवं वप्पे दीहवेयड्ढे।

५६. एवं जाव गंधिलावतिम्मि दीहवेयड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे गंधिल खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा।
गंधिलावति वेसमणे, कूडाणं होंति णामाइं॥१॥

एवं–सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा, सेसा ते चेव।

५२. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत के ऊपर नौ कूट है– (१) सिद्धायतन कूट, (२) विद्युत्प्रभ कूट, (३) देवकुराकूट, (४) पक्ष्मकूट, (५) कनककूट, (६) स्वस्तिककूट, (७) सीतोदा कूट, (८) शतज्वल कूट, (९) हरिकूट।

५३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पद्मवर्ती दीर्घ वैताढ्य के ऊपर नौ कूट है– (१) सिद्धायतन कूट, (२) पक्ष्म कूट, (३) खण्डकप्रपातगुफा कूट, (४) माणिभद्र कूट, (५) वैताढ्य कूट, (६) पूर्णभद्र कूट,(७) तमिस्रगुफा कूट, (८) पक्ष्म कूट, (९) वैश्रमण कूट।

५४. इसी प्रकार सुपक्ष्म, महापक्ष्म, पक्ष्मकावती, शख, नलिन, कुमुद और सलिलावती विजय मे विद्यमान दीर्घ वैताढ्य के ऊपर नौ–नौ कूट है। ५५. इसी प्रकार वप्र विजय मे विद्यमान दीर्घ वैताढ्य के ऊपर नौ कूट है।

५६. इसी प्रकार सुवप्र, महावप्र, वप्रकावती, वल्गु, सुवल्गु, गन्धिल और गन्धिलावती मे विद्यमान दीर्घ वैताढ्य के ऊपर नौ–नौ कूट है–(१) सिद्धायतन कूट, (२) गन्धिलावती कूट, (३) खण्डकप्रपातगुफा कूट, (४) माणिभद्र कूट, (५) वैताढ्य कूट, (६) पूर्णभद्र कूट, (७) तमिस्रगुफा कूट, (८) गन्धिलावती कूट, (९) वैश्रमण कूट।

इसी प्रकार सभी दीर्घवैताढ्यो के ऊपर दो–दो (दूसरा और आठवा) कूट एक ही नाम के (उसी विजय के नाम के) है और शेष सात कूट वे ही है।

52. In Jambu Dveep on Vidyutprabh Vakshaskar mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Vidyutprabh koot, (3) Devakura koot, (4) Pakshma koot, (5) Kanak koot, (6) Swastika koot, (7) Sitoda koot, (8) Shatajval koot, (9) Hari koot

53. In Jambu Dveep on Padmavarti Deergh Vaitadhya mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Pakshma koot, (3) Khandak-prapat gufa koot, (4) Manibhadra koot, (5) Vaitadhya koot, (6) Purnabhadra koot, (7) Tamisra-gufa koot, (8) Pakshma koot, (9) Vaishraman koot

54. In the same way on *Deergh Vaitadhya* mountains in Supakshma, Mahapakshma, Pakshamakavati, Shankh, Nalin, Kumud, and Salilavati Vijayas there are nine peaks each **55.** In the same way on *Deergh Vaitadhya* mountains in Vapra Vijaya there are nine peaks each

56. In the same way on *Deergh Vaitadhya* mountains in Suvapra, Mahavapra, Vaprakavati, Valgu, Suvalgu, Gandhil, and Gandhilavati Vijayas there are nine *koots* (peaks) each—(1) Siddhayatan koot, (2) Gandhilavati koot, (3) Khandak-prapat gufa koot, (4) Manibhadra koot, (5) Vaitadhya koot, (6) Purnabhadra koot, (7) Tamisra-gufa koot, (8) Gandhilavati koot, (9) Vaishraman koot

In the same way on all *Deergh Vaitadhya* mountains two *koots* each (second and eighth) bear the same name (that of the particular *Vijaya*) and the remaining seven koots have common names

उत्तरवर्ती कूट NORTHERN PEAKS

५७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं णीलवंते वासहरपव्वते णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा–

सिद्धे णीलवंते विदेह, सीता कित्ती य णारिकंता य।
अवरविदेहे रम्मगकूडे, उवदंसणे चेव॥१॥

५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं एरवते दीहवेतड्ढे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

सिद्धेरवए खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा।
एरवते वेसमणे, एरवते कूडणामाइं॥१॥

५७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के ऊपर उत्तर मे नीलवान् वर्षधर पर्वत के ऊपर नौ कूट है, जैसे—

(१) सिद्धायतन कूट, (२) नीलवान् कूट, (३) पूर्वविदेह कूट, (४) सीता कूट, (५) कीर्ति कूट, (६) नारिकान्ता कूट, (७) अपरविदेह कूट, (८) रम्यक कूट, (९) उपदर्शन कूट।

५८. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे ऐरवत क्षेत्र के दीर्घ वैताढ्य के ऊपर नौ कूट है, जैसे—(१) सिद्धायतन कूट, (२) ऐरवत कूट, (३) खण्डकप्रपातगुफा कूट, (४) माणिभद्र कूट, (५) वैताढ्य कूट, (६) पूर्णभद्र कूट, (७) तमिस्रगुफा कूट, (८) ऐरवत कूट, (९) वैश्रमण कूट। [इन कूटो के सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र मे आया है।]

57. In Jambu Dveep north of Mandar mountain on the Nilavaan varshadhar mountain there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Nilavaan koot, (3) Purvavideh koot, (4) Sita koot, (5) Kirti koot, (6) Narikanta koot, (7) Apar-videh koot, (8) Ramyak koot, (9) Upadarshan koot

58. In Jambu Dveep north of Mandar mountain on the Deergha Vaitadhya mountain of *Airavat* area there are nine *koots* (peaks)—(1) Siddhayatan koot, (2) Airavat koot, (3) Khandak-prapat gufa koot, (4) Manibhadra koot, (5) Vaitadhya koot, (6) Purnabhadra koot, (7) Tamisra-gufa koot, (8) Airavat koot, (9) Vaishraman koot (more details on these peaks ar available in *Jambudveep Prajnapti Sutra*)

पार्श्व–उच्चत्व–पद PARSHVA-UCHCHATVA-PAD (SEGMENT OF HEIGHT OF PARSHVA)

५९. पासे णं अरहा पुरिसादाणीए वज्जरिसहणारायसंघयणे समचउरंस–संठाण–संठिते णव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था।

५९. पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् वज्र ऋषभनाराचसहनन और समुचतुरस्रसस्थान युक्त नौ हाथ ऊँचे थे।

59. Endowed with *Vajra rishabh naaraach samhanan* and *Samchaturasra samsthan*, Purushadaniya Parshva Arhat's body was nine *Ratni* (cubits) tall

६०. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तित्थंसि णवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वत्तिते, तं जहा–सेणिएणं, सुपासेणं, उदाइणा, पोट्टिलेणं अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं, सतएणं, सुलसाए सावियाए, रेवतीए।

६०. श्रमण भगवान महावीर के तीर्थ मे नौ जीवो ने तीर्थकर नाम–गोत्र कर्म अर्जित किया था। (१) श्रेणिक, (२) सुपार्श्व, (३) उदायी, (४) पोट्टिल अनगार, (५) दृढायु, (६) श्रावक शख, (७) श्रावक शतक, (८) श्राविका सुलसा, (९) श्राविका रेवती।

60. Nine souls in the order of Shraman Bhagavan Mahavir acquired *Tirthankar naam-gotra karma*—(1) Shrenik, (2) Suparshva, (3) Udayi, (4) Pottila Anagar, (5) Dridhayu, (6) Shravak Shankh, (7) Shravak Shatak, (8) Shravika Sulasa and (9) Shravika Revati

विवेचन–तीर्थंकर नाम गोत्रकर्म बध के कारण बीस स्थानको की पुन -पुन आराधना करने का वर्णन ज्ञाता सूत्र मे आता है। इन्ही २० स्थानको को सक्षिप्त कर १६ कारण भावना के रूप मे तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय ६ मे कथन है। सूत्र मे, भगवान महावीर के तीर्थ मे तीर्थंकर गोत्र कर्म बाँधने वाले नौ महान आत्माओ का सक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

(१) **श्रेणिक**–मगधपति श्रेणिक का वर्णन निरयावलिका मे आता है। अन्य सूत्रो मे भी उनका नामोल्लेख मिलता है। त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र मे इनका विस्तृत वर्णन है।

(२) **सुपार्श्व**–ये भगवान महावीर के चाचा थे। विशेष जानकारी प्राप्त नही है।

(३) **उदायी**–कोणिक पुत्र उदायी। विशेष वर्णन त्रिषष्टि० परिशिष्ट पर्व सर्ग ६ मे आया है।

(४) **पोट्टिल अनगार**–अनुत्तरौपपातिक सूत्र मे पोट्टिल अनगार का वर्णन आता है। परन्तु प्रस्तुत पोट्टिल अनगार कोई अन्य थे। इनका वर्णन नही मिलता है।

(५) **दृढ़ायु**–इनके विषय मे भी विशेष जानकारी उपलब्ध नही है।

(६–७) **शंख–शतक**–शख श्रावक का यत्किचित वर्णन भगवती सूत्र श १२। उ १ तथा उद्देशक २०–२१ मे है।

(८) **सुलसा**–राजगृह के राजा प्रसेनजित के रथिक नाग की पत्नी थी। यह दृढ सम्यक्त्वधारिणी थी। इसके ३२ पुत्र थे। वृत्ति मे इसका जीवन वृत्तान्त मिलता है।

(९) **रेवती**–भगवान महावीर की मुख्य श्राविका थी। गोशालक द्वारा तेजोलेश्या छोडने पर भगवान महावीर आहत हुए तब सिह अनगार रेवती श्राविका से बीजोरा पाक लेकर आया। उसके सेवन से भगवान का रोग शान्त हुआ। विशेष वर्णन भगवती शतक १५ मे मिलता है।

ये सभी आगामी चौबीसी मे तीर्थंकर होगे। *(विस्तार हेतु ठाण पृष्ठ ८८३–८८५ देखें)*

ज्ञातव्य है कि तीर्थंकर नामगोत्र का बध मनुष्य भव मे ही होता है और बध होने से तीसरे भव मे वह निश्चित ही तीर्थंकर बनता है।

Elaboration—*Jnata Sutra* contains description of repeated worship of twenty *sthanak* (auspicious things) that lead to bondage of *Tirthankar naam-gotra karma* These twenty *sthanaks* have been included in the sixteen *bhaavanas* (attitudes or sentiments) mentioned in *Tattvarth Sutra* (Chapter 6) Brief description of the nine great souls in the order of Bhagavan Mahavir mentioned in *Tattvarth Sutra* is as follows—

(1) **Shrenik**—Story of King Shrenik of Magadh is given in *Niryavalika Sutra* His name also finds mention in many other scriptures His complete biography is available in *Trishashti Shalaka Purush Charitra*

(2) **Suparshva**—He was Bhagavan Mahavir's uncle No more details are available

(3) **Udayi**—He was the son of king Konik Detailed story available in *Trishashti Parishishta Parva*, Chapter 6

(4) **Pottila Anagar**—In *Anuttaraupapatik Sutra* there is a mention of *Pottila Anagar* But this *Pottila Anagar* appears to be different No details about him are available

(5) **Dridhayu**—No details about him are available

(6, 7) **Shravaks Shankh and Shatak**—Very brief details only about *Shankh Shravak* are available in *Bhagavati Sutra* (12/1 and 20-21)

(8) **Shravika Sulasa**—She was the wife of *Naag*, a charioteer of king Prasenjit of *Rajagriha* She was a staunch practicer of Jain code of laity She had 32 sons Her story is available in the *Vritti*

(9) **Shravika Revati**—She was one of the important *Shravikas* of Bhagavan Mahavir When Goshalak launched *Tejoleshya* (fire-power) and Bhagavan Mahavir was hurt, it was she who had sent the medicine with Simha Anagar More details are available in *Bhagavati Shatak* 15

All these nine persons will become *Tirthankars* in the coming *Chaubisi* (set of 24) *(for details see Thanam, pp 883-885)* It should be noted that *Tirthankar naam-karma* can only be acquired as a human being and the soul, as a rule, becomes a *Tirthankar* in the third reincarnation from acquiring the bondage

६१. एस णं अज्जो ! कण्हे वासुदेवे, रामे बलदेवे, उदए पेढालपुत्ते, पुट्टिले, सतए गाहावती, दारुए णियंठे, सच्चई णियंठीपुत्ते, सावियबुद्धे अंब [म्म ?] डे परिव्वायए, अज्जावि णं सुपासा पासावच्चिज्जा। आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पण्णवइत्ता सिज्झिहिंति (बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाइहिंति सव्वदुक्खाणं) अंतं काहिंति।

६१. हे आर्यो ! (१) वासुदेव कृष्ण, (२) बलदेव राम, (३) उदक पेढालपुत्र, (४) पोट्टिल, (५) गृहपति शतक, (६) निर्ग्रन्थ दारुक, (७) निर्ग्रन्थीपुत्र सत्यकी, (८) श्राविका के द्वारा प्रतिबुद्ध अम्मड परिव्राजक, (९) पार्श्वनाथ की परम्परा मे दीक्षित आर्या सुपार्श्वा। ये नौ आगामी उत्सर्पिणी मे चातुर्याम धर्म की प्ररूपणा कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिर्वृत और सर्व दु खो से रहित होगे।

61. O Noble ones ! These nine will propagate *Chaturyam dharma* (the four limbed religion) in the coming progressive cycle of time and become perfect (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*), and end all miseries—(1) Vaasudeva Krishna, (2) Baladeva Rama, (3) Udak Pedhalaputra, (4) Pottila, (5) Grihapati Shatak, (6) Nirgranth Daruk, (7) Nirgranthiputra Satyaki, (8) Ammad Parivrajak enlightened by a *Shravika* and (9) Arya Suparshvaa, initiated in the lineage of Parshva Naath

विवेचन–इनमे से १ कृष्ण वासुदेव, २ राम बलदेव का चरित्र तो प्रसिद्ध है। (३) **उदक पेढाल पुत्र**–ये पेढाल के पुत्र थे। भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा मे दीक्षित हुए। इनका वर्णन सूत्रकृताग सूत्र २३वे अध्ययन मे है। (४) **पोट्टिल** का जीवन वृत्तान्त उपलब्ध नही है। (५) **शतक** का वर्णन भी उपलब्ध नही है। (६) **दारुक**–दारुक निर्ग्रन्थ का वर्णन अन्तकृद्दशासूत्र मे आता है। परन्तु वे तो अन्तकृद् केवली हो चुके है। अत ये दारुक कोई अन्य ही होंगे। (७) **निर्ग्रन्थी पुत्र सत्यकी**–इनका भी विशेष वर्णन उपलब्ध नही है। (८) **श्राविका बुद्ध अम्मड़ परिव्राजक**–सुलसा से प्रतिबुद्ध अम्मड परिव्राजक का उल्लेख औपपातिक सूत्र मे आता है, परन्तु वृत्तिकार का कथन है वह अम्मड इनसे कोई अन्य होना चाहिए। (९) **आर्या सुपार्श्वा**–विशेष वर्णन उपलब्ध नही है। *(देखे-ठाण पृष्ठ ८८६-८७)*

Elaboration—The stories of (1) Vaasudeva Krishna and (2) Baladeva Rama are well known (3) Udak Pedhalaputra—He was the son of Pedhal and was initiated in the lineage of Bhagavan Parshva Naath Details about him are available in the 23rd chapter of *Sutrakritanga Sutra* (4) Pottila—no details are available (5) Grihapati Shatak—no details are available (6) Nirgranth Daruk—There is a mention of one Daruk in *Antakriddasha Sutra* but he has already attained omniscience Therefore this Daruk must be some other person, (7) Nirgranthiputra

Satyaki—no details are available (8) Ammad Parivrajak enlightened by a *Shravika*—The mention of Ammad Parivrajak who was enlightened by Sulasa Shravika is available in *Aupapatik Sutra* However, according to the commentator (*Vritti*) this is some other person (9) Arya Suparshvaa, initiated in the lineage of Parshva Naath—no details are available

महापद्म–तीर्थंकर–पद MAHAPADMA TIRTHANKAR-PAD (SEGMENT OF MAHAPADMA TIRTHANKAR)

६२. (क) एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए णरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठितीयंसि णिरयंसि णेरइयत्ताए उव्वज्जिहिति। से णं तत्थ णेरइए भविस्सति–काले कालोभासे (गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए) परमकिण्हे वण्णेणं। से णं तत्थ वेयणं वेदिहिती उज्जलं (तिउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं दिव्वं) दुरहियासं।

से णं ततो णरयाओ उव्वट्टेत्ता आगमेसाए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे णगरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं सा भद्दा भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाण वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण–पडिपुण्ण–पंचिंदिय–सरीरं लक्खण–वंजण–(गुणोववेयं माणुम्माण–प्पमाणपडिपुण्ण–सुजाय–सव्वंग–सुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं) सुरूवं दारगं पयाहिती। जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती, तं रयणिं च ण सतदुवारे णगरे सब्भंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति।

तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते (णिवत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते) बारसाहे अयमेयारूवं गोण्णं गुणणिप्फण्णं णामधिज्जं काहिंति, जम्हा णं अम्हमिमंसि दारगंसि जातंसि समाणंसि सयदुवारे णगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे या रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हमिमस्स दारगस्स णामधिज्जं महापउमे–महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधिज्जं काहिंति महापउमेत्ति।

६२. (क) आर्यो ! श्रेणिक राजा भिम्भसार (बिम्बसार) मरण काल मे मृत्यु प्राप्त कर इसी रत्नप्रभा पृथ्वी के सीमन्तक नरक मे चौरासी हजार वर्ष की स्थिति वाले भाग मे नारक रूप से उत्पन्न होगा।

उसका वर्ण काला, काली आभावाला, अति लोमहर्षक, भयकर उद्वेग जनक और परम कृष्ण होगा। वह वहाँ ज्वलन्त मन, वचन और काय–तीनो की कसौटी करने वाली, अत्यन्त तीव्र, प्रगाढ, कटुक, कर्कश, प्रचण्ड, दु खकारी दुर्ग की भाँति अलघ्य, ज्वलन्त, असह्य वेदना अनुभव करेगा।

वह उस नरक से निकल कर आगामी उत्सर्पिणी मे इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे, भारतवर्ष मे, वैताढ्यगिरि की तलहटी मे 'पुण्ड्र' (विध्याचल के समीप) के शतद्वार नगर मे सन्मति कुलकर की भद्रा नामक भार्या की कुक्षि से पुरुष रूप से उत्पन्न होगा।

वह भद्रा भार्या परिपूर्ण नौ मास तथा साढे सात दिन-रात बीत जाने पर सुकुमार हाथ-पैर वाले, अहीन-परिपूर्ण, पचेन्द्रिय शरीर वाले लक्षण व्यजन और गुणो से युक्त अवयव वाले, मान, उन्मान, प्रमाण आदि से सर्वांग सुन्दर शरीर वाले, चन्द्र की भाँति सौम्य आकृति वाले, कमनीय, प्रियदर्शन और सुरूप पुत्र को जन्म देगी।

जिस रात मे वह बालक को जन्म देगी, उस रात मे समूचे शतद्वार नगर मे भीतर और बाहर, भारप्रमाण और कुम्भप्रमाण पद्म (फूलो) और रत्नो की वर्षा होगी।

उस बालक के माता-पिता ग्यारह दिन व्यतीत हो जाने पर, अशुचिकर्म के निवृत्त हो जाने पर बारहवे दिन उसका यथार्थ गुणनिष्पन्न नाम सस्कार करेगे। "हमारे इस बालक के उत्पन्न होने पर समस्त शतद्वार नगर के भीतर-बाहर भार प्रमाण और कुम्भ प्रमाण वाले पद्म और रत्नो की वर्षा हुई है," अत हमारे बालक का नाम महापद्म होना चाहिए। इस प्रकार विचार-विमर्श कर उस बालक के माता-पिता उसका नाम 'महापद्म' रखेगे।

62. (a) O Noble ones ! After dying at the time of his death, King Shrenik Bhimbhasar (Bimbasar) will reincarnate as a *naarak* (infernal being) in the *Simantak Narak* in this *Ratnaprabha Prithvi* (first hell) in the section with a standard life span of eighty four thousand years

His complexion will be black, a black that is shining, hair-raising, extremely horrifying and dense black There he will suffer an agony that is burning, trying for mind, speech and body, very acute, dense, bitter, harsh, intense, unsurmountable like a tormenting fort, excruciating and intolerable

Coming out of that hell he will take birth from the womb of Bhadraa, the wife of Sanmati Kulakar in Shatadvar city of Pundra state (near Vindhyachal) at the foot of Vaitadhyagiri in Bharat area in Jambudveep continent during the coming *Utsarpini* (progressive cycle)

At the end of nine months and seven and a half days that Bhadraa will give birth to a radiant, lovable, and handsome son with delicate limbs, perfect body endowed with five sense organs and all auspicious signs and marks, perfect and beautiful in all dimensions including weight and size; and an appearance as soothing as the moon

The night she will give birth to the child, there will be showers of large and abundant quantity of flowers (*padma*) and gems inside and outside Shatadvar city

After eleven days are passed and post birth cleansing ceremonies are concluded, on the twelfth day, the parents will perform the naming ceremony and give the child a name suiting his virtues "At the time of the birth of this child there were showers of large and abundant quantity of flowers (*padma*) and gems inside and outside Shatadvar city

Therefore, this boy should be called Mahapadma After such deliberations the parents of the child will name him Mahapadma

६२. (ख) तए णं महापउमं दारगं अम्मापितरो सातिरेगं अट्ठवासजातगं जाणित्ता महता–महता रायाभिसेएणं अभिसिंचिर्हिति। से णं तत्थ राया भविस्सति महता–हिमवंत–महंत–मलय–मंदर–महिंदसारे रायवण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरिस्सति।

तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कयाइ दो देवा महिड्ढिया महासोक्खा सेणाकम्मं काहिंति, तं जहा–पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य।

तए णं सतदुवारे णगरे बहवे राईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठि–सेणावति–सत्थवाहप्पभितयो अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, एवं वइस्संति–जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया (महज्जुइया महाणुभागा महायसा महाबला) महासोक्खा सेणाकम्मं करेन्ति, तं जहा–पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया! महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे देवसेणे–देवसेणे। तते णं तस्स महापउमस्स रण्णो दोच्चेवि णामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति।

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेय–संखतल–विमल–सण्णिकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति। तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतल–विमल–सण्णिकासं चउदंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवार णगरं मज्झं–मज्झेणं अभिक्खणं–अभिक्खणं अतिज्जाहिति य णिज्जाहिति य।

तए णं सतदुवारे णगरे बहवे राईसर–तलवर–(माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठि–सेणावतिसत्थवाह–प्पभितयो) अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, एवं वइस्संति–जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल–विमल–सण्णिकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पण्णे, तं होइ णमम्हं देवाणुप्पिया! देवसेणस्स तच्चेवि णामधेज्जे विमलवाहणे। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चेवि णामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणेति।

६२. (ख) बालक महापद्म को आठ वर्ष से कुछ अधिक आयु का हुआ जानकर उसके माता-पिता उसे महान् राज्याभिषेक के द्वारा अभिषिक्त करेंगे। वह वहाँ महान् हिमालय, महान् मलय, मन्दर और महेन्द्र पर्वत के समान सर्वोच्च राजा होगा।

तब उस महापद्म राजा को अन्य किसी समय महर्धिक, महाद्युति-सम्पन्न, महानुभाग, महायशस्वी, महाबली, महान् सौख्य वाले पूर्णभद्र और माणिभद्र नाम के दो देव राजा महापद्म को सैनिक शिक्षा देगे।

तब उस शतद्वार नगर मे अनेक राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदि एक दूसरे को इस प्रकार सम्बोधित करेगे और इस प्रकार से कहेगे- देवानुप्रियो ! महर्धिक, महाद्युतिसम्पन्न, महानुभाव, महायशस्वी, महाबली और महान् सौख्य वाले पूर्णभद्र और माणिभद्र नामक दो देव राजा महापद्म को सैनिक शिक्षा दे रहे है, अत हमारे महापद्म राजा का दूसरा नाम 'देवसेन' होना चाहिए। तब से उस महापद्म राजा का दूसरा नाम देवसेन होगा।

अन्यथा किसी समय उस देवसेन राजा के निर्मल शखतल के समान श्वेत, चार दाँत वाला हस्तिरत्न उत्पन्न होगा। तब वह राजा देवसेन श्वेत चार दाँत वाले हस्तिरत्न पर आरूढ होकर शतद्वार नगर के बीचोबीच होते हुए बारबार आवागमन करेगा।

तब उस शतद्वार नगर के अनेक राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदि परस्पर एक दूसरे को सम्बोधित कर इस प्रकार कहेगे-देवानुप्रियो ! हमारे राजा देवसेन के पास निर्मल शखतल के समान श्वेत, चार दाँत वाला हस्तिरत्न है, अत. देवानुप्रियो ! हमारे राजा का तीसरा नाम 'विमलवाहन' होना चाहिए। तब से उस देवसेन राजा का तीसरा नाम 'विमलवाहन' होगा।

62. (b) Realizing that child Mahapadma is more than eight years old, his parents will ceremoniously crown him as a king There he will be the loftiest of kings like the great Himalaya, Malay, Mandar and Mahendra mountains

Then, at some other time, two gods, Purnabhadra and Manibhadra, endowed with great opulence, great radiance, great knowledge, great fame, great power and great bliss will impart him military training

At that time many regional kings (*raja*), influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), affluent people (*ibhya*), established merchants (*shreshti*), commanders (*senapati*), caravan chiefs (*sarthavaha*), and others in the city will converse—"Beloved of gods ! Two gods, Purnabhadra and Manibhadra, endowed with great opulence, great radiance, great knowledge, great fame, great power and great bliss are imparting military training to our king Therefore, another name of our king Mahapadma should be Devasen Since that moment the second name of king Mahapadma will be Devasen

At some other time an elephant as white as the inner surface of a white conch-shell and four tusks will appear in his courtyard Then King

Devasen will frequent the middle of the city riding that white four-tusked elephant

At that time many regional kings (*raja*), influential and rich persons (*ishvar*), knights of honour (*talavar*), landlords (*mandavik*), heads of large families (*kautumbik*), affluent people (*ibhya*), established merchants (*shreshti*), commanders (*senapati*), caravan chiefs (*sarthavaha*), and others in the city will converse—"Beloved of gods ! Our king has a gem of an elephant as white as the inner surface of a white conch-shell and four tusks Therefore, the third name of our king should be Vimalavahan Since that moment the third name of king Devasen will be Vimalavahan

६२. (ग) तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापितीहिं देवत्तं गतेहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाते समाणे, उदुंमि सरए, संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतिएहि जीयकप्पिएहिं देवेहिं, ताहिं इट्ठाणि कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगलाहिं सस्सिरिआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुव्वमाणे य बहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिति। से णं भगवं जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता (अगाराओ अणगारियं) पव्वयाहिति तं चेव दिवसं सयमेयमेतारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिहिति–जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति, तं जहा–दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सति–इरियासमिते भासासमिते एवं जहा वद्धमाणसामी तं चेव णिरवसेसं जाव अव्वावारविउसजोगजुत्ते।

तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं वीतिक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं णाणेणं जहा भावणाते केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति। जिणे भविस्सति केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइय जाव पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसमाणे विहरिस्सति।

६२. (ग) तब वह विमलवाहन राजा तीस वर्ष तक गृहस्थ अवस्था मे रहकर, माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर, गुरुजनो और महत्तर परिवार के मुखिया पुरुषो की अनुज्ञा लेकर शरद् ऋतु मे जीताचार का पालन करने वाले, लोकान्तिक देवो द्वारा अनुत्तर मोक्षमार्ग के लिए सबुद्ध होगे। तब वे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन प्रिय, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, माँगलिक श्रीकार-सहित वाणी से अभिनन्दित और सस्तुत होते हुए नगर के बाहर 'सुभूमिभाग' नाम के उद्यान मे एक देवदूष्य रखकर मुण्डित हो अगार से अनगार अवस्था मे प्रव्रजित होगे।

वे भगवान जिस दिन मुण्डित होकर प्रव्रजित होगे, उसी दिन वे स्वय ही इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण करेगे–

"देवता, मनुष्य अथवा तिर्यग्योनिक जीवो द्वारा किसी प्रकार के भी उपसर्ग उत्पन्न होगे, उन सबको मै भली भाँति सहन करूँगा, अहीन भाव से दृढता के साथ सहन करूँगा, तितिक्षा करूँगा और अविचल भाव से सहूँगा।"

तब वे भगवान (महापद्म) अनगार ईर्यासमिति से भाषासमिति से सयुक्त होकर जैसे वर्धमान स्वामी (तपश्चरण मे सलग्न हुए थे, उन्ही के समान) सर्व अनगार धर्म का पालन करते हुए, मन-वचन-काय योग की गुप्ति से युक्त होगे।

उन भगवान महापद्म को इस प्रकार के विहार से विचरण करते हुए बारह वर्ष और तेरह पक्ष बीत जाने पर, तेरहवे वर्ष के मध्य अनुत्तर ज्ञान के द्वारा (भावना अध्ययन के कथनानुसार) केवल वर ज्ञान-दर्शन उत्पन्न होगे। तब वे जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी होकर नारक आदि सर्व लोको के पर्यायो को जानेगे-देखेगे। वे भावना-सहित पाँच महाव्रतो की, छह जीवनिकायो की तथा धर्म देशना करते हुए विहार करेगे।

62. (c) Then that King Vimalavahan, after spending thirty years as a householder, at the death of his parents will seek permission from seniors and heads of the family to prepare for renunciation In the winter season the *Lokantik* gods responsible for *Jitaachar* (the duty of inviting the future *Tirthankar* to take to the path of liberation) will inspire him to take to the matchless path of liberation Being greeted and praised in *isht* (desirable), *kaant* (beautiful), *manojna* (attractive), *manah-priya* (enchanting), *udaar* (kind), *kalyan* (beneficent), *shiva* (propitious), *dhanya* (commendable), *mangalik* (auspicious), *shrikar sahit* (with the respectful prefix *Shri*) he will come out of the city in Subhumibhag garden, retain just one divine-cloth and, abandoning the household, will get initiated as an *anagar* (homeless-ascetic)

On the very day that *Bhagavan* will tonsure his head and get initiated, he will accept a resolve—"I will endure each and every affliction caused by men, gods, or animals with equanimity, tolerance and unwavering mind "

Then that *Bhagavan* (Mahapadma), practicing *Irya samiti* (careful movement) and *Bhasha samiti* (careful speech) and observing all codes of ascetic conduct and austerities (as Vardhaman Swami had done) will accomplish *man-vachan-kaya yoga gupti* (self-restraint related to associations of mind, speech and body)

Moving around this way when twelve years and thirteen fortnights are past, during the thirteenth year that Bhagavan Mahapadma will attain *Keval jnana-darshan* through peerless knowledge (as mentioned

in the *Bhaavana* chapter of *Acharanga Sutra*) Then as a *Jina*, *Kevali*, *Sarvajna* and *Sarvadarshi* (Victor over senses, Omniscient, all knowing and all seeing) he will know and see all modes of all things in all worlds including hell He will lead an itinerant life preaching about five great vows in word and spirit, six forms of life and *dharma* (code of conduct)

६२. (घ) से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं एगे आरंभठाणे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं एगं आरंभठाणं पण्णवेहिति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाण दुविहे बंधणे पण्णत्ते, तं जहा—पेज्जबंधणे य दोसबंधणे य। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पण्णवेहिति, तं जहा—पेज्जबंधणे च, दोसबंधणे च।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं तओ दडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे, वयदंडे, कायदंडे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडे पण्णवेहिति, त जहा—मणोदंडं, वयदंडं, कायदंडं।

से जहाणामए (अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं चत्तारि कसाए पण्णवेहिति, तं जहा—कोहकसायं, माणकसायं, मायाकसायं, लोभकसायं।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दे, रूवे, गंधे, रसे, फासे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंच कामगुणे पण्णवेहिति, तं जहा—सद्दं, रूवं, गंधं, रसं, फासं।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं छज्जीवणिकाया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया, तसकाइया। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं छज्जीवणिकाए पण्णवेहिति, तं जहा—पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए), तसकाइए।

से जहाणामए (अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं) सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—(इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणभए, मरणभए, असिलोगभए)। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सत्त भयट्ठाणे पण्णवेहिति, (तं जहा—इहलोगभयं, परलोगभयं आदाणभयं अकम्हाभयं वेयणभयं मरणभयं असिलोगभयं)।

एवं अट्ठ मयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ, दसविधे समणधम्मे, एवं जाव तेत्तीसमासातणाउत्ति।

६२. (घ) आर्यो ! जैसे मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए एक आरम्भ-स्थान का निरूपण किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए एक आरम्भ स्थान का निरूपण करेगे।

आर्यो ! मैने जैसे श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए दो प्रकार के बन्धनो का निरूपण किया है, जैसे-प्रेयस् बन्धन (राग) और द्वेषबन्धन। इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए दो प्रकार के बन्धन कहेगे। प्रेयसबन्धन और द्वेषबन्धन।

आर्यो ! जैसे मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए मनोदण्ड, वचनदण्ड और कायदण्ड तीन प्रकार के दण्डो का निरूपण किया है। इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए मनोदण्ड, वचनदण्ड और कायदण्ड तीन प्रकार के दण्डो का निरूपण करेगे।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे-क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय और लोभकषाय चार कषायो का निरूपण किया है। इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए चार प्रकार के कषायो का निरूपण करेगे। क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय और लोभकषाय।

आर्यो ! मैने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए जैसे पाँच कामगुणो का निरूपण किया है, जैसे-शब्द, रूप, गन्ध, रस

और स्पर्श। इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पाँच गुणो का निरूपण करेगे। जैसे--शब्द, रूप, गध, रस और स्पर्श।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे-पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक छह जीवनिकायो का निरूपण किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक, छह जीवनिकायो का निरूपण करेगे।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे सात भयस्थानो का निरूपण किया है, इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, वेदनाभय, मरणभय और अश्लोकभय। इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए सात भयस्थानो का निरूपण करेगे, इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, वेदनाभय, मरणभय और अश्लोकभय।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे आठ मदस्थानो का, नौ ब्रह्मचर्य गुप्तियो का, दस प्रकार के श्रमण-धर्मो का यावत् तेतीस आशातनाओ का निरूपण किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए आठ मदस्थानो का, नौ ब्रह्मचर्यगुप्तियो का, दस प्रकार के श्रमण-धर्मो का यावत् तेतीस आशातनाओ का निरूपण करेगे।

62 (d) O noble ones ! As I have defined one kind of *aarambh sthaan* (sinful activity) for *Shraman nirgranths*, in the same way Arhat Mahapadma will define one kind of *aarambh sthaan* (sinful activity) for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have defined two kinds of *bandhan* (bondage) for *Shraman nirgranths,* such as *preyas bandhan* (bondage of attachment) and *dvesh bandhan* (bondage of aversion); in the same way Arhat

Mahapadma will define two kinds of *bandhan* (bondage) for *Shraman nirgranths*, such as *preyas bandhan* (bondage of attachment) and *dvesh bandhan* (bondage of aversion)

O noble ones ! As I have defined three kinds of *dand* (punishment or abuse) for *Shraman nirgranths*, such as *manodand* (mental abuse), *vachan dand* (vocal abuse) and *kaya dand* (physical abuse), in the same way Arhat Mahapadma will define three kinds of *dand* (abuse), such as *manodand* (mental abuse), *vachan dand* (vocal abuse) and *kaya dand* (physical abuse), for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have defined four kinds of *kashaya* (passions) for *Shraman nirgranths*, such as anger, conceit, deceit and greed, in the same way Arhat Mahapadma will define four kinds of passions, for *Shraman nirgranths*, such as anger, conceit, deceit and greed

O noble ones ! As I have defined five kinds of *kaam-guna* (sensual attributes) for *Shraman nirgranths*, such as sound, appearance, smell, taste and touch, in the same way Arhat Mahapadma will define five kinds of sensual attributes for *Shraman nirgranths*, such as sound, appearance, smell, taste and touch

O noble ones ! As I have defined six kinds of *jiva nikaya* (life forms) for *Shraman nirgranths*, such as *prithvikayik* (earth-bodied beings), *apkayik* (water-bodied beings), *tejaskayik* (fire-bodied beings), vayukayik (air-bodied beings), *vanaspatikayik* (plant-bodied beings) and *tras-kayik* (mobile-bodied beings), in the same way Arhat Mahapadma will define six kinds of life forms, such as earth-bodied beings, water-bodied beings, fire-bodied beings, air-bodied beings, plant-bodied beings and mobile-bodied beings, for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have defined seven kinds of *bhaya sthaans* (reasons of fear) for *Shraman nirgranths*, such as *ihalok bhaya* (fear related to this world), *paralok bhaya* (fear related to the other world or next birth), *aadan bhaya* (fear of loosing wealth), *akasmat bhaya* (sudden or causeless fear), *vedana bhaya* (fear of ailment or pain), *maran bhaya* (fear of death), *ashlok bhaya* (fear of infamy), in the same way Arhat Mahapadma will define seven kinds of reasons of fear, such as *ihalok bhaya, paralok bhaya, aadan bhaya, akasmat bhaya, vedana bhaya, maran bhaya* and *ashlok bhaya*, for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have defined eight *madsthaans* (causes of conceit), nine *brahmacharya guptis* (shields of celibacy), ten kinds of *shraman*-religions (ascetic conduct) and so on up to thirty three *ashatana* (disrespect) for *Shraman nirgranths*, in the same way Arhat Mahapadma will define eight madsthaans (causes of conceit), nine *brahmacharya guptis* (shields of celibacy), ten kinds of *shraman*-religions (ascetic conduct) and so on up to thirty three *ashatana* (disrespect) for *Shraman nirgranths*.

६२. (च) से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अच्छत्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णत्ताओ। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं णग्गभावं (मुंडभावं) अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणुवाहणयं भूमिसेज्जं फलगसेज्जं कट्ठसेज्जं केसलोयं बंभचेरवासं परघरपवेसं) लद्धावलद्धवित्ती पण्णवेहिति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं आधाकम्मिएति वा उद्देसिएति वा मीसज्जाएति वा अज्झोयरएति वा पूतिए कीते पामिच्चे अच्छेज्जे अणिसट्ठे अभिहडेति वा कंतारभत्तेति वा दुब्भिक्खभत्तेति वा गिलाणभत्तेति वा वद्दलियाभत्तेति वा पाहुणभत्तेति वा मूलभोयणेति वा कंदभोयणेति वा फलभोयणेति वा बीयभोयणेति वा हरियभोयणेति वा पडिसिद्धे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं आधाकम्मियं वा (उद्देसियं वा मीसज्जायं वा अज्झोयरयं वा पूतियं कीतं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं वा कंतारभत्तं वा दुब्भिक्खभत्तं वा गिलाणभत्तं वा वद्दलियाभत्तं वा पाहुणभत्तं वा मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा) हरितभोयणं वा पडिसेहिस्सति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतिए सपडिक्कमणे अचेलए धम्मे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतियं (सपिडक्कमणं) अचेलगं धम्मं पण्णवेहिति

से जहाणामए अज्जो ! मए समणोवासगाणं पंचाणुव्वतिए सत्तसिक्खावतिए–दुवालसविधे सावगधम्मे पण्णत्ते। एवामेव महापउमेवि अरहा समणोवासगाणं पंचाणुव्वतियं (सत्तसिक्खावतियं दुवालसविधं) सावगधम्मं पण्णवेस्सति।

से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं सेज्जातरपिंडेति वा रायपिंडेति वा पडिसिद्धे। एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सेज्जातरपिंडं वा रायपिंडं वा, पडिसेहिस्सति।

६२. (च) आर्यों ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे नग्नभाव, मुण्डभाव, स्नान-त्याग, अदन्त-धावन, छत्र-धारण-त्याग, उपानह (जूता) त्याग, भूमिशय्या, फलकशय्या, काष्ठशय्या,

केशलोच, ब्रह्मचर्यवास और परगृहप्रवेश कर लब्ध-अपलब्ध वृत्ति (आदर-अनादरपूर्वक प्राप्त भिक्षा) का निरूपण किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए नग्नभाव, मुण्डभाव, स्नानत्याग, भूमिशय्या फलकशय्या, काष्ठशय्या, केशलोच, ब्रह्मचर्यवास और परगृहप्रवेश कर लब्ध-अलब्ध वृत्ति का निरूपण करेगे।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे आधाकर्मिक, औद्देशिक, मिश्रजात, अध्यवपूरक, पूतिक, क्रीत, प्रामित्य, आछेद्य, अनिसृष्ट, अभ्याहृत, कान्तारभक्त, दुर्भिक्षभक्त, ग्लानभक्त, वार्दलिकाभक्त, प्राघूर्णिकभक्त, मूलभोजन, कन्दभोजन, फलभोजन, बीजभोजन और हरितभोजन का निषेध किया है, उसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थोके लिए आधाकर्मिक, औद्देशिक, मिश्रजात, अध्यवपूरक, पूतिक, क्रीत, प्रामित्य, आछेद्य, अनिसृष्टिक, अभ्याहृत, कान्तारभक्त, दुर्भिक्षभक्त, ग्लानभक्त, वार्दलिकाभक्त, प्राघूर्णिकभक्त, मूलभोजन, कन्दभोजन, फलभोजन बीजभोजन और हरितभोजन का निषेध करेगे।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे--प्रतिक्रमण और अचलेतायुक्त (अल्प वस्त्र) पाँच महाव्रतरूप धर्म का निरूपण किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए प्रतिक्रमण और अचेलतायुक्त पॉच महाव्रतरूप धर्म का निरूपण करेगे।

आर्यो ! मैने श्रमणोपासको के लिए जैसे पॉच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार के श्रावकधर्म का निरूपण किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार के श्रावकधर्म का निरूपण करेगे।

आर्यो ! मैने श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए जैसे शय्यातरपिण्ड और राजपिण्ड का निषेध किया है, इसी प्रकार अर्हत् महापद्म भी श्रमण-निर्ग्रन्थो के लिए शय्यातरपिण्ड और राजपिण्ड का निषेध करेगे।

62. (e) O noble ones ! As I have defined *nagnabhaava* (state of being unclad), *mundabhaava* (state of being tonsured), *snana-tyag* (not taking a bath), *adanta-dhavan* (not brushing teeth), *chhatra-dhaaran-tyag* (not using umbrella), *upanaha-tyag* (not wearing shoes), *bhumi shayya* (sleeping on the ground), *phalak shayya* (sleeping on a strip of wood), *kashtha shayya* (sleeping on a wooden plank), *keshaloch* (pulling out hair), *brahmacharya vaas* (practicing celibacy and accepting alms respectfully and disrespectfully from others' homes for *Shraman nirgranths*, in the same way Arhat Mahapadma will define *nagnabhaava, mundabhaava, snana-tyag, adanta-dhavan, chhatra-dhaaran-tyag, upanaha-tyag, bhumi shayya, phalak shayya, kashtha shayya, keshaloch, brahmacharya vaas* and accepting *alms* respectfully and disrespectfully from others' homes for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have prohibited *adhakarmic, auddeshik, mishrajat, adhyavapurak, putik, kreet, praamitya, aachhedya, anishrisht, abhyahrit, kaanatarbhakt, durbhikshabhakt, glaan-bhakt, vardilikabhakt, praghurnikabhakt, mool-bhojan, kanda bhojan, phal bhojan, beej bhojan,*

and *harit bhojan* (kinds of alms already defined) for *Shraman nirgranths*, in the same way Arhat Mahapadma will define *adhakarmic, auddeshik, mishrajat, adhyavapurak, putik, kreet, praamitya, aachhedya, anishrisht, abhyahrit, kaanatarbhakt, durbhikshabhakt, glaan-bhakt, vardilikabhakt, praghurnikabhakt, mool-bhojan, kanda bhojan, phal bhojan, beej bhojan*, and *harit bhojan* for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have defined *dharma* (code of conduct) of five great vows inclusive of *pratikraman* (critical review) and *achelata* (unclad state) for *Shraman nirgranths*, in the same way Arhat Mahapadma will define *dharma* of five great vows inclusive of *pratikraman* and *achelata* for *Shraman nirgranths*

O noble ones ! As I have defined twelve fold *Shravak dharma* (codes for laity) inclusive of five *Anuvrats* (minor vows) and seven *Shikshavrats* (complementary vows), in the same way Arhat Mahapadma will define twelve fold *Shravak dharma* (codes for laity) inclusive of five *Anuvrats* (minor vows) and seven *Shikshavrats* (complementary vows)

O noble ones ! As I have proscribed *Shayyatar pind* (*alms* from the host) and *Raja pind* (alms from the king or state), in the same way Arhat Mahapadma will proscribe *Shayyatar pind* (*alms* from the host) and *Raja pind* (*alms* from the king or state)

६२. (झ) से जहाणामए अज्जो ! मम णव गणा एगारस गणधरा। एवामेव महापउमस्सवि अरहतो णव गणा एगारस गणधरा भविस्संति।

से जहाणामए अज्जो ! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता (अगाराओ अणगारियं) पव्वइए, दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं (बुज्झिस्सं मुच्चिस्सं परिणिव्वाइस्सं) सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सं। एवामेव महापउमेवि अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता (मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं) पव्वाहिती, दुवालस संवच्छराइं (तेरसपक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता), बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिती (बुज्झिहिती मुच्चिहिती परिणिव्वाइहिती), सव्वदुक्खाणमंतं काहिती–

जस्सील–समायारो, अरहा तित्थंकरो महावीरो।
तस्सील–समायारो, होति उ अरहा महापउमो॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

६२. (झ) आर्यो ! मेरे जैसे नौ गण और ग्यारह गणधर है, इसी प्रकार अर्हत् महपद्म के भी नौ गण और ग्यारह गणधर होगे।

आर्यो ! जैसे मै तीस वर्ष तक अगारवास मे रहकर मुण्डित हो अगार से अनगार अवस्था मे प्रव्रजित हुआ, बारह वर्ष और तेरह पक्ष तक छद्मस्थ-पर्याय का पालन कर, तेरह पक्षो से कम तीस वर्षों तक केवलि-पर्याय धारणकर बयालीस वर्ष तक श्रामण्य-पर्याय पालन कर सर्व आयु बहत्तर वर्ष पालन कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त और परिनिर्वृत्त होकर सर्व दु खो का अन्त करूँगा। इसी प्रकार अर्हन् महापद्म भी तीस वर्ष तक अगारवास मे रहकर मुण्डित हो, अगार से अनगार अवस्था मे प्रव्रजित होगे, बारह वर्ष तेरह पक्ष तक छद्मस्थ-पर्याय का पालन कर, तेरह पक्षो से कम तीस वर्षों तक केवलिपर्याय का पालन कर बयालीस वर्ष तक श्रामण्य-पर्याय पालन कर, बहत्तर वर्ष की सम्पूर्ण आयु भोग कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त और परिनिर्वृत्त होकर सर्वदु खो का अन्त करेगे।

(गाथा) जिस प्रकार के शील-समाचार वाले अर्हत् तीर्थंकर महावीर हुए है, उसी प्रकार के शील-समाचार वाले अर्हत् महापद्म होगे।

62. (f) O noble ones ! As I have nine *Ganas* and nine *Ganadhars*, in the same way Arhat Mahapadma will have nine *Ganas* and nine *Ganadhars*

O noble ones ! As I will become perfect (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*), and end all miseries after spending thirty years as householder, getting initiated as a homeless ascetic after tonsuring my head, moving about as a chhadmasth ascetic for twelve years and thirteen fortnights, and living as an omniscient for thirteen fortnights less thirty years completing a total ascetic-life of forty two years and total life span of seventy two years, in the same way Arhat Mahapadma will become perfect (*Siddha*), enlightened (*buddha*), liberated (*mukta*), free of cyclic rebirth (*parinivrit*), and end all miseries after spending thirty years as householder, getting initiated as a homeless ascetic after tonsuring his head, moving about as a *chhadmasth* ascetic for twelve years and thirteen fortnights, and living as an omniscient for thirteen fortnights less thirty years completing a total ascetic-life of forty two years and total life span of seventy two years

Arhat Mahapadma will follow the same ascetic conduct and praxis (*shila-samachar*) as Arhat Tirthankar Mahavir did.

विशेष शब्दो के अर्थ : फलक शय्या—पतले व लम्बे काष्ट की बनी शय्या। **कान्तारभक्त**—लम्बी अटवी आदि की यात्रा मे सार्थवाह श्रमणो के लिए भोजन बनाकर दे देते थे, वह। **दुर्भिक्ष भक्त**—दुर्भिक्ष आदि मे राजा व धनाढ्य व्यक्ति जो भक्त पान देते थे, वह। **ग्लान भक्त**—रोगी के लिए दिया जाने वाला भोजन। **बर्दलिका भक्त**—आकाश मे बादल व घटाएँ छाई हो, ऐसे समय मे श्रमण भिक्षा के लिए नही जा सकते,

तब उनके लिए गृहस्थ विशेष रूप मे बनाकर जो भोजन दे, वह। **प्राघूर्णक भक्त**–अतिथि आदि के लिए बना हुआ भोजन। अथवा भिक्षुओ के लिए बनवाकर दिया जाने वाला भोजन। *(वृत्ति-पत्र ४३८ से ४४४ तक आधाकर्मिक आदि के लिए देखे दशवैकालिक अ ३)*

TECHNICAL TERMS

Phalak shayya—bed made of long strip of wood *Kantar bhakt*—the food prepared by caravan chief and given to ascetics during a long arduous journey *Durbhiksh bhakt*—the food distributed by kings and the rich during a famine *Glan bhakt*—food prepared for the sick *Bardalika bhakt*—food prepared and sent for ascetic when the weather is cloudy, and ascetics cannot go out to seek *alms* *Praghurnak bhakt*—food prepared for some guests or that specifically prepared for ascetics (*Vritti*, leaves 438 to 444) *(For other kinds of food including Adhakarmik refer to Illustrated Dashavaikalik Sutra, Ch 3)*

नक्षत्र–पद NAKSHATRAS-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

६३. णव णक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा पण्णत्ता, तं जहा–

अभिई समणो धणिट्ठा, रेवति अस्सिणि मग्गसिर पूसो।
हत्थो चित्ता य तहा, पच्छंभागा णव हवंति॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

६३. जिन नौ नक्षत्रो का योग चन्द्रमा के पश्चिम भाग से होता है, उनके नाम है–(१) अभिजित, (२) श्रवण, (३) धनिष्ठा, (४) रेवती, (५) अश्विनी, (६) मृगशिर, (७) पुष्य, (८) हस्त, (९) चित्रा।

63. Nine *nakshatras* (constellations) have west-sided conjunction with *Chandrama* (the moon)—(1) Abhijit (Lyrae, the 22nd), (2) Shravan (Alpha Aquilae, the 23rd), (3) Dhanishtha (Belta Delphini, the 24th), (4) Revati (Zeta Piscium, the 28th), (5) Asvini (Beta Arietis, the 1st), (6) Mrigashirsha (Lambda Orionis, the 5th), (7) Pushya (Delta Cancri, the 8th), (8) Hasta (Delta Corvi, the 13th) and (9) Chitra (Spica Virginis, the 14th)

विमान–पद VIMAAN-PAD (SEGMENT OF CLELESTIAL VEHICLES)

६४. आणत–पाणत–आरणच्चुतेसु कप्पेसु विमाणा णव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

६४. आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्पो मे विमान नौ योजन ऊँचे है।

64. The *vimaans* (celestial vehicles) in *Anat, Pranat, Aran* and *Achyut kalp* are nine hundred *Yojans* tall

कुलकर–पद KULAKAR-PAD (SEGMENT OF KULAKARS)

६५. विमलवाहणे णं कुलकरे णव धणुसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था।

६५. विमलवाहन कुलकर नौ सौ धनुष ऊँचे थे।

65. Vimalavahan Kulakar was nine hundred *Dhanush* tall

तीर्थ प्रवर्तन–पद TIRTHA PRAVARTAN-PAD (SEGMENT OF FORD ESTABLISHMENT)

६६. उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे ओसप्पिणीए णवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं वीइक्कंताहिं तित्थे पवत्तिते।

६६. कोशला नगरी मे उत्पन्न अर्हत् ऋषभ ने इस अवसर्पिणी का नौ कोडाकोडी सागरोपम काल व्यतीत होने पर तीर्थ का प्रवर्तन किया।

66. Born in Koshala city, Arhat Rishabh established the religious ford (*Tirtha*) when a period of nine *Kodakodi Sagaropam* had passed since the beginning of this *Avasarpini* (regressive cycle)

अन्तर्द्वीप–पद ANTARDVEEP-PAD (SEGMENT OF MIDDLE ISLANDS)

६७. घणदंत–लट्ठदंत–गूढदंत–सुद्धदंतदीवा णं दीवा णव–णव जोयणसताइं आयाम–विक्खंभेणं पण्णत्ता।

६७. घनदन्त, लष्टदन्त, गूढदन्त और शुद्धदन्त ये द्वीप (अन्तर्द्वीप) नौ–नौ सौ योजन लम्बे–चौडे है।

67. The middle islands named Ghanadant, Lashtadant, Goodhadant and Shuddhadant are nine hundred *Yojans* long and wide each

शुक्रग्रह–वीथी–पद SHUKRA GRAHA-VITHI-PAD (SEGMENT OF ORBITS OF VENUS)

६८. सुक्कस्स णं महागहस्स णव वीहीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–हयवीही, गयवीही, णागवीही, वसहवीही, गोवीही, उरगवीही, अयवीही, मियवीही, वेसाणरवीहो।

६८. शुक्र महाग्रह की नौ वीथियाँ (परिभ्रमण की गलियाँ) है, जैसे–(१) हयवीथि, (२) गजवीथि, (३) नागवीथि, (४) वृषभवीथि, (५) गोवीथि, (६) उरगवीथि, (७) अजवीथि, (८) मृगवीथि, (९) वैश्वानरवीथि।

68. The great planet Shukra (Venus) has nine *vithis* (orbits)—(1) *Hayavithi*, (2) *Gajavithi*, (3) *Naagavithi*, (4) *Vrishabhavithi*, (5) *Gauvithi*, (6) *Uragavithi*, (7) *Ajavithi*, (8) *Mrigavithi* and (9) *Vaishvanaravithi*

विवेचन–वृत्तिकार ने शुक्रग्रह की इन नौ वीथियो के सन्दर्भ मे भद्रबाहु सहिता के श्लोक उद्धृत करके बताया है कि प्रत्येक वीथि मे तीन–तीन नक्षत्र भ्रमण करते है। जब शुक्र ग्रह प्रथम तीन वीथियो मे भ्रमण

करता है, तब वर्षा अधिक, धान्य सुलभ और धन की वृद्धि होती है। मध्यम तीन वीथियो मे विचरण करने पर धन-धान्य आदि भी मध्यम होते है तथा अन्तिम तीन वीथियो मे आने पर लोक मानस पीडित होता है। दुर्भिक्ष पडता है तथा अर्थ नाश होता है। *(वृत्ति पत्र ४४५ । भद्रबाहु सहिता अध्याय १५)*

आचार्य श्री आत्मारामजी म ने विस्तार करते हुए लिखा है-

(१) हय, गज और नाग-इन तीन वीथियो मे क्रमश भरणी-कृतिका-रोहिणी, मृगशिरा-आर्द्रा-पुनर्वसु, पुष्य-आश्लेषा और मघा-ये नौ नक्षत्र शुक्र ग्रह के साथ विचरण करते है। दूसरी वृषभ-गो उरगवीथि मे क्रमश -पूर्वा फाल्गुनी-उत्तरा फाल्गुनी-हस्त, चित्रा-स्वाति-मूल और अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल तथा अन्तिम-अज, मृग-वैश्वानरवीथि मे-पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण नक्षत्र, धनिष्टा, शतभिसग्-पूर्वाभाद्रपदा-और उत्तराभाद्रपदा-रेवती एव अश्विनी नक्षत्र है। *(हिन्दी टीका भाग २ पृष्ठ ६८०)*

Elaboration—Quoting *Bhadrabahu Samhita*, the commentator (*Vritti*) has explained that three constellations move around in each of these nine orbits When Venus moves in the first three orbits it augurs good rains, good crops and increase of wealth When it is in the three middle orbits the rains and produce are medium When in the last three orbits it is painful for people as it augurs famine and loss of wealth *(Vritti, leaf 445, Bhadrabahu Samhita, Ch 15)*

Acharya Shri Atmamarm ji M adds the list of triads of constellations moving in each of the aforesaid orbits—

(1) *Hayavithi*—Bharani (35 Arietis), Krittika (Eta Tauri or Pleiades) and Rohini (Aldebaran), (2) *Gajavithi*—Mrigashira (Lambda Orionis), Ardra (Alpha Orionis) and Punarvasu (Beta Geminorum), (3) *Naagavithi*—Pushya (Delta Cancri), Ashlesha (Alpha Hydrae), and Magha (Regulus), (4) *Vrishabhavithi*—Purva Phalguni (Delta Leonis), Uttara Phalguni (Beta Leonis) and Hasta (Delta Corvi), (5) *Gauvithi*—Chitra (Spica Virginis), Swati (Arcturus) and Vishakha (Alpha Librae), (6) *Uragavithi*—Anuradha (Delta Scorpii), Jyeshtha (Antares) and Mula (Lambda Scorpii), (7) *Ajavithi*—Purva Ashadha (Delta Sagittarii), *Uttara Ashadha* (Sigma *Sagittarii*) and *Shravan* (Alpha Aquilae), (8) *Mrigavithi*—Dhanishtha (Belta Delphini), Shat Bhishag (Lambda Aquarii) and Purva Bhadrapad (Alpha Pegasi), (9) *Vaishvanaravithi*—Uttara Bhadrapad (Gama Pegasi), Revati (Zeta Piscium) and Asvini (Beta Arietis) *(Hindi Tika, part-2, p 680)*

कर्म-पद KARMA-PAD (SEGMENT OF KARMA)

६९. णवविधे णोकसायवेयणिज्जे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा-इत्थिवेए, पुरिसवेए, णपुंसकवेए, हासे, रती, अरती, भये, सोगे, दुगुंछा।

६९. नोकषाय वेदनीय कर्म नौ प्रकार का है, जैसे-(१) स्त्रीवेद, (२) पुरुषवेद, (३) नपुसकवेद, (४) हास्य वेदनीय, (५) रति वेदनीय, (६) अरति वेदनीय, (७) भयवेदनीय, (८) शोक वेदनीय, (९) जुगुप्सा वेदनीय।

69. *Nokashaya vedaniya karmas* are of nine kinds—(1) *Stri-veda* (causing feminine gender), (2) *Purush-veda* (causing masculine gender), (3) *Napumsak-ved* (causing neuter gender), (4) *Hasya vedaniya* (causing laughter), (5) *Rati vedaniya* (causing indulgence), (6) *Arati vedaniya* (causing non-indulgence), (7) *Bhaya vedaniya* (causing fear), (8) *Shok vedaniya* (causing grief) and (9) *Jugupsa vedaniya* (causing disgust)

विवेचन—क्रोध, मान आदि चार कषाय के अनन्तानुबन्धी आदि १६ भेद होते है। इन सोलह कषायो के साहचर्य से जो मानसिक विकार उत्पन्न होते है, वे कषायो के साथ मिलकर अपना फल देते है, उन्हे 'नो कषाय' कहा गया है। नो कषाय के रूप मे अनुभव मे आने वाले कर्म नो कषाय वेदनीय है।

Elaboration—There are 16 categories of passions (anger, etc) including *Anantanubandhi* The consequences of perversions created due to association with these sixteen passions are called *nokashaya* The *karmas* that come to fruition in the form of experience of these *nokashayas* are called *nokashaya vedaniya karmas*

कुलकोटि-पद KULAKOTI-PAD (SEGMENT OF SPECIES)

७०. चउरिंदियाणं णव जाइ-कुलकोडि-जोणिपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता। ७१. भुयगपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं णव जाइ-कुलकोडि-जोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता।

७०. चतुरिन्द्रिय जीवो की नौ लाख जाति-कुलकोटियाँ है। ७१. पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक स्थलचर-भुजग-परिसर्पो की नौ लाख जाति-कुलकोटियाँ है।

70. *Chaturindriya* (four-sensed beings) have nine lac (hundred thousand) species (*jati kulakoti*) in their genuses (*yoni pramukh*) **70.** *Panchendriya tiryanch-yonik sthalachar parisarp* (limbed reptilian five-sensed animals) have nine lac (hundred thousand) species (*jati kulakoti*) in their genuses (*yoni pramukh*)

पापकर्म-पद PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMA)

७२. जीवा णं णवट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा-पुढविकाइयणिव्वत्तिते, (आउकाइयणिव्वत्तिते, तेउकाइयणिव्वत्तिते, वाउकाइयणिव्वत्तिते, वणस्सइकाइयणिव्वत्तिते, बेइंदियणिव्वत्तिते, तेइंदियणिव्वत्तिते, चउरिंदियणिव्वत्तिते,) पंचिंदियणिव्वत्तिते।

एवं-चिण-उवचिण (बंध-उदीर-वेद तह) णिज्जरा चेव।

७२. जीवो ने नौ स्थानो से निर्वर्तित पुद्गलो का पापकर्मरूप से अतीतकाल मे सचय किया है, वर्तमान मे कर रहे है और भविष्य मे करेंगे, जैसे–

(१) पृथ्वीकायिकनिर्वर्तित यावत्, (२) अप्कायिकनिर्वर्तित, (३) तेजस्काग्निकनिर्वर्तित, (४) वायुकायिकनिर्वर्तित, (५) वनस्पतिकायिकनिर्वर्तित, (६) द्वीन्द्रियनिर्वर्तित, (७) त्रीन्द्रियनिर्वर्तित, (८) चतुरिन्द्रियनिर्वर्तित, (९) पंचेन्द्रियनिर्वर्तित पुद्गलों का।

इसी प्रकार उनका उपचय, बन्ध, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, करते है और करेगे।

72. All beings did, do and will acquire (*sanchit*) *karma* particles in the form of demeritorious *karmas* in the past, present and future respectively nine ways—(1) *Prithvikayik nirvartit* (earned as earth-bodied beings), (2) *Apkayiks nirvartit* (earned as water-bodied beings), (3) *Tejaskayik nirvartit* (earned as fire-bodied beings), (4) *Vayukayik nirvartit* (earned as air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik nirvartit* (earned as plant-bodied beings), (6) *Dvindriya nirvartit* (earned as two-sensed beings), (7) *Trindriya nirvartit* (earned as three-sensed beings), (8) *Chaturindriya nirvartit* (earned as four-sensed beings), (9) *Panchendriya nirvartit* (earned as five-sensed beings)

In the same way all beings did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the acquired *karma* particles in the past, present and future respectively in aforesaid nine ways

पुद्गल–पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

७३. णवपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता जाव णवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

७३. नौ प्रदेशी पुद्गल स्कन्ध अनन्त है। आकाश के नौ प्रदेशो मे अवगाढ पुद्गल अनन्त है। नौ समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त है। नौ गुण काले पुद्गल अनन्त है।

इसी प्रकार शेष वर्ण तथा गन्ध, रस और स्पर्शों के नौ गुण वाले पुद्गल अनन्त जानना चाहिए।

73. There are infinite *nau pradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of nine ultimate particles) There are infinite *nau pradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles occupying nine space-points) and so on up to .. There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with nine units of the attribute of black appearance

In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with nine units of each of the remaining attributes of smell, taste, and touch

॥ नवम स्थान समाप्त ॥

● END OF THE NINTH STHAAN ●

दशम स्थान

सार : संक्षेप

प्रस्तुत स्थान मे दस की सख्या से सम्बद्ध विविध विषयो का वर्णन है। सर्वप्रथम लोकस्थिति के १० प्रकार बताये गये है। तदनन्तर इन्द्रिय-विषयो के और पुद्गल-सचलन के १० प्रकार बताकर क्रोध की उत्पत्ति के १० कारणो का विस्तार से विवेचन किया है। अन्तरग मे क्रोधकषाय का उदय होने पर और बाह्य मे सूत्र निर्दिष्ट अन्य कारणो के मिलने पर क्रोध उत्पन्न होता है। अत साधक को क्रोध उत्पन्न करने वाले कारणो से बचना चाहिए। इसी प्रकार अहकार के १० कारणो का और चित्त-समाधि-असमाधि के १०-१० कारणो का निर्देश मननीय है। प्रव्रज्या के १० कारणो से ज्ञात होता है कि मनुष्य किस-किस निमित्त के मिलने पर घर त्याग कर साधु बनता है। वैयावृत्त्य के १० प्रकारो से सिद्ध है कि साधक को आचार्य, उपाध्याय, स्थविर आदि गुरुजनो के सिवाय रुग्ण साधु की, नव दीक्षित की और साधर्मिक साधु की भी वैयावृत्त्य करना आवश्यक है।

प्रतिसेवना, आलोचना और प्रायश्चित्त के १०-१० दोषो का वर्णन साधक को उनसे बचने की प्रेरणा देता है। उपघात-विशोधि और सक्लेश-असक्लेश के १०-१० भेद उपघात और सक्लेश के कारणो से बचने तथा विशोधि और असक्लेश या चित्त-निर्मलता रखने की सूचना देते है।

स्वाध्याय-काल मे ही स्वाध्याय करना चाहिए, अस्वाध्याय काल मे नही, क्योकि उल्कापात आदि के समय पठन-पाठन करने से दृष्टिमन्दता आदि अनेक दोषो की सम्भावना रहती है। नगर के राजादि प्रधान पुरुष के मरण होने पर स्वाध्याय करना लोकविरुद्ध है, इसी प्रकार अन्य अस्वाध्याय कालो मे स्वाध्याय करने पर शास्त्रो मे अनेक दोषो का वर्णन किया है।

धर्म-पद के अन्तर्गत ग्रामधर्म, नगरधर्म, राष्ट्रधर्म और कुलधर्म, लौकिक कर्त्तव्यो के पालन की और श्रुतधर्म, चारित्रधर्म आदि आत्मधर्म पारलौकिक कर्त्तव्यो के पालन की प्रेरणा देते है।

स्थविरो के १० भेद व उनकी विनय और वैयावृत्त्य करने के सूचक है। पुत्र के दस भेद तात्कालिक परिस्थिति के परिचायक है। तेजोलेश्या-प्रयोग के १० प्रकार तेजोलब्धि की उग्रता के द्योतक है। दान के १० भेद भारतीय दान की प्राचीनता और विविधता को प्रकट करते है।

भगवान महावीर के छद्मस्थकालीन १० स्वप्न, १० आश्चर्यक (अछेरे) एव अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण वर्णनो के साथ दस दशाओ के भेद-प्रभेदो का वर्णन मननीय है। इसी प्रकार दृष्टिवाद के १० भेद आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयो का सकलन इस दसवे स्थान मे किया गया है।

TENTH STHAAN (PLACE NUMBER TEN)

INTRODUCTION

This *Sthaan* contains various topics connected with numeral ten It starts with ten attributes of *Lok* (occupied space) After that there is a mention of ten subjects of sense organs and movement of matter followed by detailed description of ten causes of anger Internally anger is produced by fruition of *krodh kashaya* (anger-passion) and externally by the other causes mentioned in the related aphorism Therefore the aspirant should avoid these anger-producing causes In the same way the ten causes of conceit and those of spiritual tranquillity (*chitta samadhi*) and non-tranquillity (*asamadhi*) are worth pondering Ten causes of initiation reveal the inspiring factors that lead to renunciation and initiation Ten reasons of *vaiyavritya* (service) inform us that it is essential for an aspirant to serve ailing, neo-initiate and co-religionist ascetics besides *acharya, upadhyaya, sthavir* and other seniors

The description of ten faults of *pratisevana, alochana* and *prayashchit* inspires the aspirant to avoid them Ten categories of *upaghat-vishodhi* and *sanklesh-asanklesh* inform about avoiding the causes of *upaghat* and *sanklesh* and seek *vishodhi* and *asanklesh*

Studies should be done only during the prescribed time and not otherwise because studies during falling of a comet and other such proscribed periods cause many harms including eye ailments To continue studies during the mourning period on the death of the king or some other prominent person is against social norms Many other faults of studies during proscribed period have been mentioned

The listing of various social duties (*dharma*) including *gram-dharma, nagar-dharma, rashtra-dharma* and *kula-dharma* as well as spiritual duties including *shrut-dharma* and *chaaritra-dharma* provide guidance for performing these duties

The ten categories of *sthavirs* inform about serving them and paying them due respect List of ten kinds of sons reveals the then prevalent social conditions The ten uses of *tejoleshya* explain the intensity of fire power The ten categories of charity convey the variety and antiquity of Indian practice of charity

The details about ten dreams of Bhagavan Mahavir during his *chhadmasth* period, ten miraculous happenings, ten spiritual states (*dasha*) with their sub-categories and other important details are worth contemplating This tenth *Sthaan* also contains ten divisions of *Drishtivaad* (the subtle canon) and many other important topics ●●

दशम स्थान
TENTH STHAAN (Place Number Ten)

लोकस्थिति-पद **LOKASTHITI-PAD (SEGMENT OF STATE OF OCCUPIED SPACE)**

१. दसविधा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा–

(१) जण्णं जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायंति-एवं एगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(२) जण्णं जीवाणं सया समितं पावे कम्मे कज्जति-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(३) जण्णं जीवाणं सया समितं मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जति-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(४) ण एवं भूतं वा भव्वं वा, भविस्सति वा जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा वा जीवा भविस्संति-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(५) ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति थावरा पाणा भविस्संति, थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(६) ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं लोगे अलोगे भविस्सति, अलोगे वा लोगे भविस्सति-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(७) ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं लोए अलोए पविस्सति, अलोए वा लोए पविस्सति-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(८) जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा, जाव ताव जीवा ताव ताव लोए-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(९) जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए ताव ताव लोए, जाव ताव लोगे ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गतिपरियाए एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

(१०) सव्वेसुवि णं लोगंतेसु अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जंति, जेणं जीवा य पोग्गला य णो संचायंति बहिया लोगंता गमणयाए-एवंप्पेगा लोगट्ठिती पण्णत्ता।

१. लोक स्थिति अर्थात् लोक का स्वभाव दस प्रकार का है–

(१) जीव बार-बार मरते है और वही (लोक मे उन्ही मे प्रदेशो पर) बार-बार उत्पन्न होते है।

(२) जीव को निरन्तर प्रतिक्षण पाप कर्म का बन्ध होता रहता है।

(३) जीव प्रतिक्षण मोहनीय पापकर्म का बन्ध करते है।

(४) न कभी ऐसा हुआ है, न ऐसा हो रहा है और न ऐसा कभी होगा कि जीव अपना जीवत्व (जीव सत्ता) छोडकर अजीव हो जाये और अजीव जीव हो जायें।

(५) न कभी ऐसा हुआ है, न ऐसा हो रहा है, और न कभी ऐसा होगा कि त्रसजीवो का सर्वथा अभाव या लोप हो जाये और सब जीव स्थावर हो जाये। अथवा स्थावर जीवो का ससार से लोप हो जाये और सब जीव त्रस हो जाये।

(६) न कभी ऐसा हुआ है, न ऐसा हो रहा है और न कभी ऐसा होगा कि लोक, अलोक हो जाय और अलोक, लोक हो जाये।

(७) न कभी ऐसा हुआ है, न ऐसा हो रहा है और न कभी ऐसा होगा कि लोक अलोक मे प्रवेश कर जाये और अलोक लोक मे प्रविष्ट हो जाय।

(८) जहाँ तक लोक है, वहाँ तक जीव है और जहाँ तक जीव है वहाँ तक लोक है।

(९) जहाँ तक जीव और पुद्गलो का एक छोर से दूसरे छोर तक गतिपर्याय (गमन) है, वहाँ तक लोक है और जहाँ तक लोक है, वहाँ तक जीवो और पुद्गलो का गतिपर्याय है।

(१०) लोक के सभी अन्तिम भागो (लोकान्त) मे अबद्ध पार्श्वस्पृष्ट (अबद्ध और स्पृष्ट) पुद्गल दूसरे रूक्ष पुद्गलो के द्वारा रूक्ष कर दिये जाते है, जिससे जीव और पुद्गल लोकान्त से बाहर गति करने के लिए समर्थ नही होते है। अर्थात् पुद्गलो की रूक्षता तथा धर्मास्तिकाय के अभाव के कारण जीव और पुद्गल लोक के बाहर नही जा सकते।

उक्त दसो बाते लोक मे स्वाभाविक नियम से विद्यमान है। यह लोकस्थिति है।

1. *Lokasthiti* (state of occupied space or universe) is of ten kinds—

(1) *Jivas* (living beings) die again and again and are born again and again there only (at different space points in the *Lok* or universe)

(2) *Jiva* (soul) bonds with *paap karmas* (demeritorious *karmas*) incessantly every moment

(3) *Jiva* (soul) acquires bondage of *Mohaniya* (deluding) *paap karma* every moment

(4) It never happened, is not happening and will never happen that *jiva* (soul) gets deprived of its *jivatva* (state of being the soul entity) and becomes *ajiva* (matter) and *ajiva* (matter) becomes *jiva* (soul)

(5) It never happened, is not happening and will never happen that there is a total absence or extinction of *tras jivas* (mobile beings) and all beings become *sthavar* (immobile) Or there is a total absence or extinction of *sthavar* (immobile beings) and all beings become *tras* (mobile)

(6) It never happened, is not happening and will never happen that *Lok* (universe or occupied space) becomes *Alok* (the space beyond or unoccupied space) and *Alok* becomes *Lok*

(7) It never happened, is not happening and will never happen that *Lok* enters *Alok* and *Alok* enters *Lok*

(8) As far as *Lok* exists *Jiva* does and as far as *Jiva* exists *Lok* does

(9) As far as the *gatiparyaya* (movement or passage) of *Jiva* and *pudgal* (matter) is, exists *Lok* and as far as the *Lok* is, exists *gatiparyaya* (movement or passage) of *Jiva* and *pudgal* (matter)

(10) At all the edges of the *Lok* the rough particles of matter convert all the other *abaddha parshvasprisht* (unattached but touching) particles into rough particles restricting their movement beyond the edge of universe In other words due to the acquired roughness (*rukshata*) and absence of the entity of motion (*Dharmastikaya*) soul and matter can not go beyond the *Lok*

The aforesaid ten conditions exist in the *Lok* due to natural law This is *Lok-sthiti* or state of the occupied space

इन्द्रियार्थ-पद INDRIYARTH-PAD (SEGMENT OF SUBJECTS OF SENSE ORGANS)

२. दसविहे सद्दे पण्णत्ते, तं जहा–

णीहारि पिडिंमे लुक्खे, भिण्णे जज्जरिते इ य।
दीहे रहस्से पुहत्ते य, काकणी खिंखिणिस्सरे॥१॥ (संग्रह-गाथा)

२. शब्द दस प्रकार का है, जैसे (१) **निर्हारी**–घण्टे से निकलने वाला घोषवान् (गूँजने वाला) शब्द। (२) **पिण्डिम**–घोष-रहित नगाडे का शब्द। (३) **रूक्ष**–काक ध्वनि के समान कर्कश शब्द। (४) **भिन्न**–वस्तु के टूटने या छेदन-भेदन से होने वाला शब्द। (५) **जर्जरित**–तार वाले बाजे का शब्द। (६) **दीर्घ**–दूर तक सुनाई देने वाला मेघ गर्जना जैसा शब्द। (७) **ह्रस्व**–सूक्ष्म या थोडी दूर तक सुनाई देने वाला वीणादि का शब्द। (८) **पृथक्**–अनेक बाजो का सयुक्त शब्द। (९) **काकणी**–सूक्ष्म कण्ठो से निकली गीत ध्वनि का शब्द। (१०) **किंकिणीस्वर**–घुँघरुओ की ध्वनि रूप शब्द।

2. *Shabd* (sound) is of ten kinds—(1) *Nirhari*—resonant sound produced by a gong (2) *Pindim*—non-resonant sound produced by a drum (3) *Rooksha*—harsh sound like that of a crow (4) *Bhinna*—breaking or shattering sound (5) *Jarjarit*—sound of a stringed instrument (6) *Deergh*—far reaching sound like thunder of a cloud (7) *Hrasva*—sound covering a short distance like that of a *Vina* (8) *Prithak*—combined sound

of numerous instruments, like orchestral sound (9) *Kakani*—low pitched singing (10) *Kinkinisvar*—tinkling sound of small bells

३. दस इंदियत्था तीता पण्णत्ता, तं जहा—देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु। देसेणवि एगे रूवाइं पासिंसु, सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिंसु। (देसेणवि एगे गंधाइं जिंघिंसु, सव्वेणवि एगे गंधाइं जिंघिंसु। देसेणवि एगे रसाइं आसादेंसु सव्वेणवि एगे रसाइं आसादेसु। देसेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु) सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु।

३. इन्द्रियो के अतीतकालीन विषय (ग्राह्य पदार्थ) दस है, जैसे–(१) जीव ने शरीर के एक (भाग) से भी शब्द सुने थे। (२) अनेक जीवो ने शरीर के सर्वदेश (समस्त भागो) से भी शब्द सुने थे। (३) अनेक जीवो ने शरीर के एक देश से भी रूप देखे थे। (४) अनेक जीवो ने शरीर के सर्वदेश से भी रूप देखे थे। (५) अनेक जीवो ने शरीर के एक देश से भी गन्ध सूघे थे। (६) अनेक जीवो ने शरीर के सर्व देश से भी गन्ध सूँघे थे। (७) अनेक जीवो ने शरीर के एक देश से भी रस चखे थे। (८) अनेक जीवो ने शरीर के सर्व देश से भी रस चखे थे। (९) अनेक जीवो ने शरीर के एक देश से भी स्पर्शो का वेदन किया था। (१०) अनेक जीवो ने शरीर के सर्व देश से भी स्पर्शो का वेदन किया था।

3. There are ten *indriyarth* (subjects of sense organs) related to the past—(1) Some *jivas* (living beings) experienced sounds from one part of the body (*deshatah*) (2) Some *jivas* (living beings) experienced sound from all parts of the body (*sarvatah*) (3) Some *jivas* experienced forms from one part of the body (4) Some *jivas* experienced forms from all parts of the body (5) Some *jivas* experienced odours from one part of the body (6) Some jivas experienced odours from all parts of the body (7) Some *jivas* experienced taste from one part of the body (8) Some *jivas* experienced taste from all parts of the body (9) Some *jivas* experienced touch from one part of the body (10) Some *jivas* experienced touch from all parts of the body

विवेचन—टीकाकार ने 'देशत ' और 'सर्वत ' के अनेक अर्थ किये है। जैसे–बहुत-से शब्दो के समूह मे किसी को सुनना और किसी को न सुनना देशत सुनना है। सबको सुनना सर्वत सुनना है। अथवा देशत सुनने का अर्थ इन्द्रियो के एक देश से अर्थात् श्रोत्र से सुनना है। सभिन्नश्रोतोलब्धि वाला आत्मा सभी इन्द्रियो से शब्द सुनता है। अथवा एक कान से सुनना देशत और दोनो कानो से सुनना सर्वत सुनना कहलाता है।

Elaboration—The commentator (*Tika*) has interpreted the terms *deshatah* and *sarvatah* many ways To hear some sound and not another from a group of sounds is *deshatah* (partially), and to hear all of them is *sarvatah* (fully) To hear some sound from one part of the body is *deshatah* and to hear from all parts of the body is *sarvatah* A person

endowed with the *Sambhinnashrotolabdhi* special power hears from all sense organs Also to hear from one ear is *deshatah* and to hear from both the ears is *sarvatah*

४. दस इंदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता, तं जहा–देसेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति, सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति। (दिसेणवि एगे रूवाइं पासंति, सव्वेणवि एगे रूवाइं पासंति। देसेणवि एगे गंधाइं जिंघंति, सव्वेणवि एगे गंधाइं जिंघंति। देसेणवि एगे रसाइं आसादेंति, सव्वेणवि एगे रसाइं आसादेंति। देसेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंति, सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंति)।

४. इन्द्रियो के वर्तमानकालीन विषय दस है, जैसे–(१) कई शरीर के एक देश से भी शब्द सुनते है। (२) कई जीव शरीर के सर्वदेश से भी शब्द सुनते है। (३) कई जीव शरीर के एक देश से भी रूप देखते है। (४) कई जीव शरीर के सर्वदेश से भी रूप देखते है। (५) कई जीव शरीर के एक देश से भी गन्ध सूँघते है। (६) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी गन्ध सूँघते है। (७) कई जीव शरीर के एक देश से भी रस चखते है। (८) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी रस चखते है। (९) कई जीव शरीर के एक देश से भी स्पर्शो का अनुभव करते है। (१०) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी स्पर्शों का अनुभव करते है।

4. There are ten *indriyarth* (subjects of sense organs) related to the present—(1) Some *jivas* (living beings) experience sounds from one part of the body (*deshatah*) (2) Some *jivas* (living beings) experience sound from all parts of the body (*sarvatah*) (3) Some *jivas* experience forms from one part of the body (4) Some *jivas* experience forms from all parts of the body (5) Some *jivas* experience odours from one part of the body (6) Some *jivas* experience odours from all parts of the body (7) Some *jivas* experience taste from one part of the body (8) Some *jivas* experience taste from all parts of the body (9) Some *jivas* experience touch from one part of the body (10) Some *jivas* experience touch from all parts of the body

५. दस इंदियत्था अणागता पण्णत्ता, तं जहा–देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति, सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति। (दिसेणवि एगे रूवाइं पासिस्संति, सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिस्संति। देसेणवि एगे गंधाइं जिंघिस्संति, सव्वेणवि एगे गंधाइं जिंघिस्संति। देसेणवि एगे रसाइं आसादेस्संति, सव्वेणवि एगे रसाइं आसादेस्संति। देसेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति), सव्वणेवि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति।

५. इन्द्रियो के भविष्यकालीन विषय दस है–(१) कई जीव शरीर के एक देश से भी शब्द सुनेंगे। (२) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी शब्द सुनेगे। (३) कई जीव शरीर के एक देश से भी रूप देखेगे। (४) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी रूप देखेगे। (५) कई जीव शरीर के एक देश से भी

गन्ध सूँघेगे। (६) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी गन्ध सूँघेगे। (७) कई जीव शरीर के एक देश से भी रस चखेगे। (८) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी रस चखेगे। (९) कई जीव शरीर के एक देश से भी स्पर्शों का वेदन करेगे। (१०) कई जीव शरीर के सर्व देश से भी स्पर्शों का वेदन करेगे।

5. There are ten *ındrıyarth* (subjects of sense organs) related to the future—(1) Some *jıvas* (living beings) will experience sounds from one part of the body (*deshatah*) (2) Some *jıvas* (living beings) will experience sound from all parts of the body (*sarvatah*) (3) Some *jıvas* will experience forms from one part of the body (4) Some *jıvas* will experience forms from all parts of the body (5) Some *jıvas* will experience odours from one part of the body (6) Some *jıvas* will experience odours from all parts of the body (7) Some *jıvas* will experience taste from one part of the body (8) Some *jıvas* will experience taste from all parts of the body (9) Some *jıvas* will experience touch from one part of the body (10) Some *jıvas* will experience touch from all parts of the body

अच्छिन्न पुद्गल–चलन–पद ACHCHHINNA PUDGAL-CHALAN-PAD (SEGMENT OF SHIFT OF INTEGRATED PARTICLE)

६. दसहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा, तं जहा—आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा। परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा। उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा। णिस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा। वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा। णिज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा। विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा। परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा। जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा। वातपरिगए वा चलेज्जा।

६. दस स्थानो से अच्छिन्न (शरीर या स्कन्ध के साथ सबद्ध) पुद्गल चलित (स्थानातरित) होता है, जैसे–(१) आहार के रूप मे ग्रहण किया जाता हुआ पुद्गल। (२) आहार के रूप मे परिणत किया जाता हुआ पुद्गल। (३) उच्छ्वास के रूप मे ग्रहण किया जाता हुआ पुद्गल। (४) नि श्वास के रूप मे परिणत किया जाता हुआ पुद्गल। (५) वेद्यमान (जिनका वेदन किया जा रहा है) पुद्गल। (६) निर्जीर्यमाण पुद्गल। (७) विक्रियमाण (वैक्रिय शरीर के रूप मे परिणत होता हुआ) पुद्गल। (८) परिचारणा (मैथुन) के समय। (९) शरीर के यक्षाविष्ट होने पर तथा (१०) वायु से प्रेरित होकर पुद्गल सम्बद्ध स्कध से चलित होता है।

6. For ten reasons *achchhınna pudgal* (matter particle ıntegrated with a body or lump) shifts from ıts place—(1) Particle being eaten (2) Particle being transformed ınto food (3) Particle being ınhaled (4) Particle being exhaled (5) Particle causing sufferance (*karma* particle). (6) Particle being shed (*karma* particle) (7) Particle being transmuted (*vıkrıyaman*). (8) During copulation (9) When a body ıs under the spell of an evil spirit (10) Under the influence of wind.

७. दसहिं ठाणेंहिं कोधुप्पत्ती सिया, (१-२) तं जहा-मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिंसु। अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहरिंसु।

(३-४) मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरइ। अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-(रस-रूव)-गंधाइं उवहरति।

(५-६) मणुण्णाइं मे सद्द-(फरिस-रस-रूव-गंधाइं) अवहरिस्सति। अमणुण्णाइं मे सद्द-(फरिस-रस-रूव-गंधाइं) उवहरिस्सति।

७-८) मणुण्णाइं मे सद्द-(फरिस-रस-रूव)-गंधाइं अवहरिंसु वा अवहरइ वा अवहरिस्सति वा। अमणुण्णाइं मे सद्द-(फरिस-रस-रूव-गंधाइं) उवहरिंसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा।

(९) मणुण्णामणुण्णाइं मे सद्द-(फरिस-रस-रूव-गंधाइं) अवहरिंसु वा अवहरति वा अवहरिस्सति वा, उवहरिंसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा।

(१०) अहं च णं आयरियं-उवज्झायाणं सम्मं वट्टामि, ममं च णं आयरिय-उवज्झाया मिच्छं विप्पडिवण्णा।

७. दस कारणो से क्रोध की उत्पत्ति होती है-

(१) अमुक पुरुष ने (अतीत मे) मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध का अपहरण किया। (२) अमुक पुरुष ने मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध प्राप्त कराये है (इस स्मृति से)।

(३) वह पुरुष (वर्तमान मे) मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध का अपहरण करता है। (४) वह पुरुष मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध को प्राप्त कराता है।

(५) वह पुरुष (भविष्य मे) मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध का अपहरण करेगा। (इस आशका से) (६) वह पुरुष मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध प्राप्त करायेगा।

(७) वह पुरुष मेरे मनोज्ञ शब्द, रस और गन्ध का अपहरण करता था, अपहरण करता है और अपहरण करेगा (इस चिन्तन से)। (८) उस पुरुष ने मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध प्राप्त कराये है। (९) उस पुरुष ने मेरे मनोज्ञ तथा अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध का अपहरण किया है, करता है और करेगा तथा प्राप्त कराये है, कराता है और करायेगा।

(१०) मै आचार्य और उपाध्याय के प्रति सम्यक् व्यवहार करता हूँ, परन्तु आचार्य और उपाध्याय मेरे साथ प्रतिकूल व्यवहार करते है। (इस मिथ्या धारणा से)

7. There are ten reasons for rise of anger—

(Due to recollection) (1) That person deprived me of the sound, touch, taste, smell, vision and smell I liked (2) That person made me experience the sound, touch, taste, smell, vision and smell I disliked.

(3) That person is depriving me of the sound, touch, taste, smell, vision and smell I like (4) That person is making me experience the sound, touch, taste, smell, vision and smell I dislike

(Due to apprehension) (5) That person will deprive me of the sound, touch, taste, smell, vision and smell I like (6) That person will make me experience the sound, touch, taste, smell, vision and smell I dislike

(Due to anxiety) (7) That person did, does and will deprive me of the sound, touch, taste, smell, vision and smell I liked (8) That person did, does and will cause me experience the sound, touch, taste, smell, vision and smell I disliked (9) That person did, does and will deprive me of the sound, touch, taste, smell, vision and smell I liked, and cause me experience the sound, touch, taste, smell, vision and smell I disliked

(Due to misunderstanding) (10) My behaviour with the *acharya* and *upadhyaya* is proper but behaviour of *acharya* and *upadhyaya* with me is not proper

संयम–असंयम–पद SAMYAM-ASAMYAM -PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

८. दसविधे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयसंजमे, (आउकाइयसंजमे, तेउकाइयसंजमे, वाउकाइयसंजमे), वणस्सतिकाइयसंजमे, बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे, पंचिंदियसंजमे, अजीवकायसंजमे।

९. दसविधे असंजमे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयअसंजमे, आउकाइयअसंजमे, तेउकाइयअसंजमे, वाउकाइयअसंजमे, वणस्सतिकाइयअसंजमे, (बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे, पंचिंदियअसंजमे), अजीवकायअसंजमे।

८. सयम दस प्रकार का है, जैसे-(१) पृथ्वीकायिक-सयम, (२) अप्कायिक-सयम, (३) तेजस्कायिक-सयम, (४) वायुकायिक-सयम, (५) वनस्पतिकायिक-सयम, (६) द्वीन्द्रिय-सयम, (७) त्रीन्द्रिय-सयम, (८) चतुरिन्द्रिय-सयम, (९) पचेन्द्रिय-सयम, (१०) अजीवकाय-सयम।

९. असयम दस प्रकार का है, जैसे-(१) पृथ्वीकायिक-असयम, (२) अप्कायिक-असयम, (३) तेजस्कायिक-असयम, (४) वायुकायिक-असयम, (५) वनस्पति-कायिक-असयम, (६) द्वीन्द्रिय-असयम, (७) त्रीन्द्रिय-असयम, (८) चतुरिन्द्रिय-असयम, (९) पचेन्द्रिय-असयम, (१०) अजीवकाय-असयम।

8. *Samyam* (discipline) is of ten kinds—(1) *Prithvikayik samyam* (discipline related to earth-bodied beings), (2) *Apkayik samyam* (discipline related to water-bodied beings), (3) *Tejas-kayik samyam* (discipline related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik samyam*

(discipline related to air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik samyam* (discipline related to plant-bodied beings), (6) *dvindriya samyam* (discipline related to two-sensed beings), (7) *trindriya samyam* (discipline related to three-sensed beings), (8) *chaturindriya samyam* (discipline related to four-sensed beings), (9) *panchendriya samyam* (discipline related to five-sensed beings) and (10) *ajivakaya samyam* (discipline related to non-beings)

9. *Asamyam* (indiscipline) is of ten kinds—(1) *Prithvikayik asamyam* (indiscipline related to earth-bodied beings), (2) *Apkayik asamyam* (indiscipline related to water-bodied beings), (3) *Tejas-kayik asamyam* (indiscipline related to fire-bodied beings), (4) *Vayukayik asamyam* (indiscipline related to air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik asamyam* (indiscipline related to plant-bodied beings), (6) *dvindriya asamyam* (indiscipline related to two-sensed beings), (7) *trindriya asamyam* (indiscipline related to three-sensed beings), (8) *chaturindriya asamyam* (indiscipline related to four-sensed beings), (9) *panchendriya asamyam* (indiscipline related to five-sensed beings) and (10) *ajivakaya asamyam* (indiscipline related to non-beings)

संवर–असंवर–पद SAMVAR-ASAMVAR-PAD (SEGMENT OF BLOCKAGE AND NON-BLOCKAGE OF INFLOW OF KARMAS)

१०. दसविधे संवरे पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियसंवरे, (चक्खिंदियसंवरे, घाणिंदियसंवरे, जिब्भिंदियसंवरे), फासिंदियसंवरे, मणसंवरे, वयसंवरे, कायसंवरे, उवकरणसंवरे, सूचीकुसग्गसंवरे।

११. दसविधे असंवरे पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियअसंवरे, (चक्खिंदियअसंवरे, घाणिंदियअसंवरे, जिब्भिंदियअसंवरे, फासिंदियअसंवरे, मणअसंवरे, वयअसंवरे, कायअसंवरे, उवकरणअसंवरे, सूचीकुसग्गअसंवरे।

१०. सवर दस प्रकार का है, जैसे–(१) श्रोत्रेन्द्रिय–सवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय–सवर, (३) घ्राणेन्द्रिय–सवर, (४) रसनेन्द्रिय–सवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय–सवर, (६) मन–सवर, (७) वचन–सवर, (८) काय–सवर, (९) उपकरण–सवर, (१०) सूचीकुशाग्र–सवर।

११. असवर दस प्रकार का है, जैसे–(१) श्रोत्रेन्द्रिय–असवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय–असवर, (३) घ्राणेन्द्रिय–असवर, (४) रसनेन्द्रिय–असवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय–असवर, (६) मन–असंवर, (७) वचन–असवर, (८) काय–असवर, (९) उपकरण–असवर, (१०) सूचीकुशाग्र–असवर।

10. *Samvar* (blockage of inflow of *karmas* or abstaining from indulgence in subjects of sense organs) is of six kinds—(1) *shrotendriya samvar*, (2) *chakshurindriya samvar*, (3) *ghranendriya samvar*, (4) *rasanendriya samvar*, (5) *sparshendriya samvar*, (6) *manah samvar*

(related to mind), (7) *vachan samvar* (related to speech), (8) *kaaya samvar* (related to body), (9) *upakaran samvar* (related to equipment) and (10) *suchi-kushagra samvar* (the insignificant)

11. *Asamvar* (inflow of *karmas* or indulgence in subjects of sense organs) is of six kinds—(1) *shrotendriya asamvar*, (2) *chakshurindriya asamvar*, (3) *ghranendriya asamvar*, (4) *rasanendriya asamvar*, (5) *sparshendriya asamvar*, (6) *manah asamvar* (related to mind), (7) *vachan asamvar* (related to speech), (8) *kaaya asamvar* related to body), (9) *upakaran samvar* (related to equipment) and (10) *suchi-kushagra samvar* (the insignificant)

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र मे वर्णित आदि के आठ भावसंवर और अन्त के दो द्रव्यसवर है। उपकरणो के सवर को उपकरणसवर कहते है। उपधि (उपकरण) दो प्रकार की होती है—ओघ उपधि और उपग्रह उपधि। जो उपकरण प्रतिदिन काम मे आते है उन्हे ओघ उपधि कहते है और जो किसी कारण विशेष से सयम की रक्षा के लिए ग्रहण किये जाते है उन्हे उपग्रह उपधि कहते है। इन दोनो प्रकार की उपधि का यतनापूर्वक सरक्षण करना उपकरण-सवर है।

कॉटा आदि निकालने या वस्त्र आदि सीने के लिए सूई रखी जाती है। इसी प्रकार कारण विशेष से कुशाग्र भी ग्रहण किये जाते है। इनकी सॅभाल रखना कि जिससे अगच्छेद आदि न हो सके। इन दोनो पदो को उपलक्षण मानकर इसी प्रकार की अन्य वस्तुओ की सार-सँभाल रखना सूचीकुशाग्र-सवर है।

Elaboration—Of the *samvars* mentioned here first eight are *bhaava samvar* (related to thoughts) and the last two are *dravya samvar* (related to physical things) *Upadhi* or ascetic-equipment are of two kinds—*ogh-upadhi* and *upagraha-upadhi* The equipment for everyday use are *ogh-upadhi* and those used for some specific reason to protect ascetic-discipline are *upagraha-upadhi* To use and maintain these equipment carefully is *upakaran samvar*

A needle is kept for sewing as well as for removing a thorn from the body In the same way pointed grass is also taken for some specific use These things should also be kept carefully so that no harm is caused to anybody To keep other possessions, in addition to the stated two, carefully is called *Suchi-kushagra samvar*

अहंकार-पद AHANKAR-PAD (SEGMENT OF CONCEIT)

१२. दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा, तं जहा—जातिमएण वा, कुलमएण वा, (बलमएण वा, रूवमएण वा, तवमएण वा, सुतमएण वा, लाभमएण वा), इस्सरियमएण वा, णागसुवण्णा वा मे अंतियं हव्वमागच्छंति, पुरिसधम्मतो वा मे उत्तरिए आहोधिए णाणदंसणे समुप्पण्णे।

१२. दश कारणो से पुरुष अपने आपको 'अहमंती'-'मै ही सबसे श्रेष्ठ हूँ' ऐसा अभिमान करता है, जैसे-(१) जाति के मद से। (२) कुल के मद से। (३) बल के मद से। (४) रूप के मद से। (५) तप के मद से। (६) शास्त्रज्ञान के मद से। (७) लाभ साधनो की उपलब्धि के मद से। (८) ऐश्वर्य प्राप्ति के मद से। (९) 'मेरे पास नागकुमार या सुपर्णकुमार देव दौडकर आते है', इस प्रकार के भाव से। (१०) 'मुझे सामान्य जनो की अपेक्षा विशिष्ट अवधिज्ञान और अवधिदर्शन उत्पन्न हुआ है' इस प्रकार के भाव से।

12. For ten reasons a person takes pride in considering himself to be the best—(1) *Jati* mad (conceit of maternal lineage), (2) *kula* mad (conceit of paternal lineage), (3) *bal mad* (conceit of strength), (4) *rupa mad* (conceit of appearance or beauty), (5) *tapo mad* (conceit of austerities), (6) *Shrut mad* (conceit of scriptural knowledge), (7) *laabh mad* (conceit of means of gain), (8) *aishvarya mad* (conceit of gaining wealth), (9) with the thought that gods including Naag Kumar and Suparna Kumar come rushing on my call, and (10) with the thought that I have acquired higher degree of *Avadhi-jnana* and *avadhi-darshan* as compared to others

समाधि-असमाधि-पद SAMADHI-ASAMADHI-PAD (SEGMENT OF EQUANIMITY AND ITS ABSENCE)

१३. दसविधा समाधी पण्णत्ता, तं जहा-पाणातिवायवेरमणे, मुसावायवेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, इरियासमिती, भासासमिती, एसणासमिती, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिती, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-जल्ल-पारिट्ठावणिया समिती।

१४. दसविधा असमाधी पण्णत्ता, तं जहा-पाणातिवाते (मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे), परिग्गहे, इरियाऽसमिती, (भासाऽसमिती, एसणाऽसमिती, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेणाऽसमिती), उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-जल्ल-पारिट्ठावणियाऽसमिती।

१३. दस कारणो से आत्मा समाधि भाव को प्राप्त होता है-(१) प्राणातिपात-विरमण, (२) मृषावाद-विरमण, (६) ईयासमिति, (७) भाषासमिति, (८) एषणासमिति, (९) आदाननिक्षेपण (पात्रनिक्षेपण) समिति, (१०) उच्चार-प्रस्रवण-श्लेष्म-सिघाण-जल्ल-परिष्ठापना समिति। इन सबके सम्यक् शुद्ध पालन से।

१४. दस कारणो से आत्मा असमाधि को प्राप्त होता है-(१) प्राणातिपात-अविरमण, (२) मृषावाद-अविरमण, (३) अदत्तादान-अविरमण, (४) मैथुन-अविरमण, (५) परिग्रह-अविरमण, (६) ईर्या-असमिति (गमन की असावधानी), (७) भाषा-असमिति (बोलने की असावधानी), (९) आदान-भाण्ड-अमत्र-निक्षेप की असमिति, (१०) उच्चार-प्रस्रवण-श्लेष्म-सिघाण-जल्ल-परिष्ठापना-असमिति।

13. There are ten reasons for a soul attaining *samadhi bhaava* (equanimous attitude)—(1) *pranatipat viraman* (to abstain from harming or destroying life). (2) *mrishavaad viraman* (to abstain from falsity) (3) *adattadan viraman* (to abstain from acts of stealing) (4) *maithun viraman* (to abstain from indulgence in sexual activities) (5) *parigraha viraman* (to abstain from acts of possession of things) (6) *irya samiti* (proper care in movement), (7) *bhasha samiti* (proper care in speaking), (8) *eshana samiti* (proper care in seeking and collecting alms), (9) *adan-bhand-amatra-nikshepana samiti* (proper care in taking and keeping bowls for food etc) and (10) *uchchar-prasravan-shleshm-jalla-singhad prasthapana samiti* (proper care in disposal of all kinds of excreta including stool, urine, phlegm, and body and nose scum) By properly observing all these

14. There are ten reasons for a soul attaining *asamadhi* (not attaining *samadhi bhaava*)—(1) *Pranatipat aviraman* (not to abstain from harming or destroying life) (2) *Mrishavad aviraman* (not to abstain from falsity) (3) *Adattadan aviraman* (not to abstain from acts of stealing) (4) *Maithun aviraman* (not to abstain from indulgence in sexual activities) (5) *Parigraha aviraman* (not to abstain from acts of possession of things) (6) *Irya asamiti* (absence of care in movement), (7) *bhasha asamiti* (absence of care in speaking), (8) *eshana asamiti* (absence of care in seeking and collecting alms), (9) *adan-bhand-amatra-nikshepana asamiti* (absence of care in taking and keeping bowls for food etc) and (10) *uchchar-prasravan-shleshm-jalla-singhad prasthapana asamiti* (absence of care in disposal of all kinds of excreta including stool, urine, phlegm, and body and nose scum)

प्रव्रज्या–पद PRAVRAJYA-PAD (SEGMENT OF INITIATION)

१५. दसविधा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा–

छंदा रोसा परिजुण्णा, सुविणा पडिस्सुता चेव।
सारणिया रोगिणिया, अणाढिता देवसण्णत्ती॥१॥
वच्छाणुबंधिया। (संग्रहणी–गाथा)

१५. प्रव्रज्या दस प्रकार की है, जैसे–(१) **छन्दाप्रव्रज्या**–अपनी या दूसरो की इच्छा से ली जाने वाली दीक्षा। जैसे भवदत्त ने बडे भाई भावदत्त के कहने से तथा गोविन्दाचार्य ने। (२) **रोषाप्रव्रज्या**–रोष से ली जाने वाली प्रव्रज्या। जैसे शिवभूति मल्ल ने। (२) (३) **परिद्यूनाप्रव्रज्या**–दरिद्रता से ली जाने वाली दीक्षा। जैसे लकडहारे ने सुधर्मा स्वामी के पास। (४) **स्वप्नाप्रव्रज्या**–स्वप्न देखने से ली जाने वाली, या

स्वप्न मे ली जाने वाली दीक्षा। जैसे पुष्पचूला ने। (५) **प्रतिश्रुताप्रव्रज्या**–पहले की हुई प्रतिज्ञा के कारण ली जाने वाली दीक्षा। जैसे मलयकुमार ने। (६) **स्मारणिकाप्रव्रज्या**–पूर्व जन्मो का स्मरण होने पर ली जाने वाली दीक्षा। जाति स्मरण ज्ञान होने या ज्ञान कराने से। जैसे मल्ली भगवती ने छह राजाओ को प्रतिबोध दिया। (७) **रोगिणिकाप्रव्रज्या**–रोग के हो जाने पर ली जाने वाली दीक्षा। जैसे–सनत्कुमार चक्रवर्ती ने। (८) **अनादृताप्रव्रज्या**–अनादर होने पर ली जाने वाली दीक्षा। जैसे नन्दीषेण तथा हरिकेश बल ने। (९) **देवसंज्ञप्तिप्रव्रज्या**–देव के द्वारा प्रतिबुद्ध करने पर ली जाने वाली दीक्षा। जैसे तेतली प्रधान ने तथा मैतार्य ने। (१०) **वत्सानुबन्धिकाप्रव्रज्या**–दीक्षित होते हुए पुत्र के स्नेह निमित्त से ली जाने वाली दीक्षा। जैसे भृगु पुरोहित ने तथा वज्र स्वामी की माता ने। *(हिन्दी टीका पृष्ठ ७०९)*

15. *Pravrajya* (initiation) is of ten kinds—(1) *Chhanda pravrajya*—to get initiated by one's own or others' desire, as Bhavadatt got on advise of elder brother *Bhaavadatt*, also as Govindacharya got (2) *Rosha pravrajya*—to get initiated due anger, as Shivabhuti Malla got (3) *Paridyuna pravrajya*—to get initiated due to poverty, as the wood-cutter got by Sudharma Swami (4) *Svapna pravrajya*—to get initiated by being inspired in a dream or that got in dream, as Pushpachula got (5) *Pratishruta pravrajya*—to get initiated due to promise given in the past, as Malaya Kumar got (6) *Smaranika pravrajya*—to get initiated due to some memories from the past birth In other words, on attaining or inspiring *jati-smaran-jnana*, as Malli Bhagavati enlightened six kings (7) *Roginika pravrajya*—to get initiated due to ailment, as Santkumar Chakravarti got (8) *Anadrita pravrajya*—to get initiated due to being insulted, as Nandishen and Harikeshabal got (9) *Devasanjapti pravrajya*—to get initiated due to being enlightened by some god, as Tetali Pradhan and Maitarya got (10) *Vatsanubandhika pravrajya*—to get initiated due to love for one's son who is getting initiated, as Bhrigu Purohit and Vajra Swami's mother got ***(for more details see appendix-3, Hindi Tika, part-2, p 709)***

श्रमण धर्म–पद SHRAMAN DHARMA-PAD (SEGMENT OF SHRAMAN DHARMA

१६. दसविधे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा–खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे।

१६. श्रमण-धर्म दस प्रकार का है–(१) क्षान्ति (क्षमा धारण करना), (२) मुक्ति (लोभ नही करना), (३) आर्जव (मायाचार नही करना), (४) मार्दव (अहकार नही करना), (५) लाघव (गौरव नही रखना), (६) सत्य (सत्य वचन बोलना), (७) सयम धारण करना, (८) तपश्चरण करना, (९) त्याग (साम्भोगिक साधुओ को भोजनादि देना), (१०) ब्रह्मचर्यवास (ब्रह्मचर्यपूर्वक गुरुजनो के पास रहना।

16. *Shraman Dharma* (religion of Jain ascetic) is of ten kinds—(1) *kshanti* (forgiveness), (2) *mukti* (contentment or absence of greed), (3) *arjava* (honesty or purity of mind) (4) *maardava* (modesty or gentleness), (5) *laghava* (humbleness), (6) *satya* (truth), (7) *samyam* (ascetic-discipline), (8) *tap* (austerities), (9) *tyag* (detachment, offer food and other things to colleague ascetics), and (10) *brahmacharya vaas* (to live with gurus and practice celibacy)

वैयावृत्त्य–पद VAIYAVRITYA-PAD (SEGMENT OF SERVICE)

१७. दसविधे वेयावच्चे पण्णत्ते, तं जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे।

१७. वैयावृत्त्य (सेवा-शुश्रूषा) दस प्रकार की है। जैसे-(१) आचार्य का वैयावृत्त्य, (२) उपाध्याय का वैयावृत्त्य, (३) स्थविर का वैयावृत्त्य, (४) तपस्वी का वैयावृत्त्य, (५) ग्लान का वैयावृत्त्य, (६) शैक्ष का वैयावृत्त्य, (७) कुल का वैयावृत्त्य, (८) गण का वैयावृत्त्य, (९) सघ का वैयावृत्त्य, (१०) साधर्मिक का वैयावृत्त्य। *(विस्तार के लिए देखे ठाण पृष्ठ ९६२)*

17. *Vaiyavritya* (service) is of ten kinds—(1) *acharya vaiyavritya* (service of acharya), (2) *upadhyaya vaiyavritya* (service of upadhyaya), (3) *sthavir vaiyavritya* (service of senior ascetics), (4) *tapasvi vaiyavritya* (service of ascetics observing austerities), (5) *glaan vaiyavritya* (service of ailing ascetics), (6) *shaiksha vaiyavritya* (service of neo-initiates), (7) *kula vaiyavritya* (service of disciples of one *acharya*), (8) *gana vaiyavritya* (service of group of many *kulas*), (9) *sangha vaiyavritya* (service of group of many *ganas*) and (10) *sadharmik vaiyavritya* (service of ascetics following the same praxis) *(for details see Thanam p 962)*

परिणाम–पद PARINAAM-PAD (SEGMENT OF MANIFESTATION)

१८. दसविधे जीवपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—गतिपरिणामे, इंदियपरिणामे, कसायपरिणामे, लेसापरिणामे, जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे, णाणपरिणामे, दंसणपरिणामे, चरित्तपरिणामे, वेयपरिणामे।

१८. जीव का परिणाम दस प्रकार का है-(१) **गति-परिणाम**—नरक आदि गतियों की प्राप्ति, (२) **इन्द्रिय-परिणाम**—पाँच इन्द्रियो की प्राप्ति, (३) **कषाय-परिणाम**—कषायो की परिणति, (४) **लेश्या-परिणाम**—लेश्याओ का स्पर्श करना, (५) **योग-परिणाम**—मन आदि तीनो योगों का व्यापार, (६) **उपयोग-परिणाम**—दोनो प्रकार के उपयोग, (७) **ज्ञान-परिणाम**—पाँच ज्ञान, (८) **दर्शन-परिणाम**—तीनो दर्शन, (९) **चारित्र-परिणाम**—पाँच चारित्र, (१०) **वेद-परिणाम**—तीनो वेद।

18. *Jiva parinaam* (manifestations of soul) are of ten kinds—(1) *Gati-parinaam*—going into genuses including hell, (2) *indriya parinaam*—acquiring five sense organs, (3) *kashaya parinaam*—getting passions, (4) *leshya parinaam*—to manifest leshyas, (5) *yoga-parinaam*—manifestation of action with three associations including mental, (6) *upayog parinaam*—two kinds of indulgences, (7) *jnana parinaam*—five kinds of knowledge, (8) *darshan parinaam*—three kinds of perception, (9) *chaaritra parinaam*—five kinds of conduct, and (10) *veda parinaam*—three kinds of gender

१९. दसविधे अजीवपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा–बंधणपरिणामे, गतिपरिणामे, संटाणपरिणामे, भेदपरिणामे, वण्णपरिणामे, रसपरिणामे, गंधपरिणामे, फासपरिणामे, अगुरुलहुपरिणामे, सद्दपरिणामे।

१९. अजीव का परिणाम दस प्रकार का है–(१) **बन्धन-परिणाम**–पुद्‌गलो का परस्पर सम्बन्ध होना। (२) गति-परिणाम–पुद्‌गलो की गति, (३) **सस्थान-परिणाम**, (४) **भेद-परिणाम**, (५) **वर्ण-परिणाम**–स्निग्धता, रुक्षता के आधार पर, (६) रस-परिणाम, (७) गन्ध-परिणाम, (८) स्पर्श-परिणाम, (९) अगुरु-लघु-परिणाम, (१०) शब्द-परिणाम।

19. *Ajiva parinaam* (manifestations of matter) are of ten kinds—(1) *bandhan parinaam*—mutual bondage of matter particles, (2) *gati parinaam*—movement of matter particles, (3) *samsthan parinaam*—structure of matter, (4) *bhed parinaam*—separation, (5) *varna parinaam*—appearance or colour, (6) *rasa parinaam*—taste, (7) *gandh parinaam*—smell, (8) *sparsh parinaam*—touch, (9) *aguru-laghu parinaam*—not gross but minute form, and (10) *shabd parinaam*—sound

विवेचन–एक रूप को छोडकर दूसरे रूप मे परिवर्तित होना, अथवा विद्यमान पर्याय को छोडकर नवीन पर्याय धारण करना **'परिणाम'** है। द्रव्यार्थिकनय से सभी पदार्थ ध्रुव है, नित्य है तथा पर्यायार्थिकनय से सभी पदार्थ अनित्य है। एक पर्याय को छोडकर दूसरी पर्याय को प्राप्त करना, पदार्थ का स्वभाव है। ससारी जीवो मे गति आदि दस परिणाम पाये जाते है। जीव की तरह जीव रहित पदार्थो मे भी परिणमन होता रहता है। *(ठाण, पृष्ठ ९६४)*

Elaboration—To manifest or transform from one form to another or shift from one mode to another is called *parinaam* According to *dravyarthik naya* (existent material aspect) all substances are constant and permanent and according to *paryayarthik naya* (transformational aspects) all substances are impermanent To shift from one mode to another is intrinsic nature of substance In worldly beings there are ten

such manifestations including shift to genuses Like the living, the non-living is also subject to transformation and ten such transformations have been listed here *(Thanam, p 964)*

अस्वाध्याय-पद ASVADHYAYA-PAD (SEGMENT OF PROHIBITION OF STUDIES)

२०. दसविधे अंतलिक्खए असज्झाइए पण्णत्ते, तं जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, णिग्घाते, जुवए, जक्खालित्ते, धूमिया, महिया, रयुग्घाते।

२०. अन्तरिक्ष (आकाश) सम्बन्धी अस्वाध्यायकाल (स्वाध्याय के लिए वर्जित काल) दस प्रकार का है, जैसे-(१) **उल्कापात**–बिजली गिरने या तारा टूटने पर। (२) **दिग्दाह**–दिशाओ को जलती हुई देखने पर। (३) **गर्जन**–आकाश मे मेघो की घोर गर्जना तथा (४) **विद्युत्**–तडतडाती हुई बिजली चमकने पर, (५) **निर्घात**–मेघो के होने या न होने पर आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गर्जन या वज्रपात के होने पर (६) **यूपक**–सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रमा की प्रभा एक साथ मिलने पर, (७) **यक्षादीप्त**–यक्षादि के द्वारा किसी एक दिशा मे बिजली जैसा प्रकाश दिखने पर, (८) **धूमिका**–कोहरा होने पर, (९) **महिका**–तुषार या बर्फ गिरने पर, (१०) **रज–उद्घात**–तेज आँधी से धूलि उडने पर। *(विस्तार के लिए देखे ठाण पृष्ठ ९६९)*

20. There are ten *asvadhyaya kaal* (period when studies are prohibited) due to reasons related to *antariksh* (space)—(When there is—) (1) *Ulkapaat*—a falling star or a comet is seen (2) *Digdaha*—conflagration in certain direction (3) *Garjana*—loud thunder of clouds in the sky (4) *Vidyut*—frequent lightening (5) *Nirghat*—thunder storm with or without clouds caused by evil spirits (6) *Yupak*— mixing of lights of sun and moon at dusk (7) *Yakshadipt*—demonic glow created by *Yakshas* (8) *Dhoomika*—mist (9) *Mahika*—frost (10) *Rajodghat*—sandstorm

२१. दसविधे ओरालिए असज्झाइए पण्णत्ते, तं जहा—अट्ठि, मंसे, सोणिते, असुइसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराए, सूरोवराए, पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे।

२१. औदारिक शरीर सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का है-(१) अस्थि, (२) माँस, (३) रक्त, (४) अशुचि, (५) श्मशान के समीप होने पर, (६) चन्द्र-ग्रहण, (७) सूर्य-ग्रहण होने पर, (८) पतन–प्रमुख व्यक्ति के मरने पर, (९) राजविप्लव होने पर, (१०) उपाश्रय के भीतर सौ हाथ क्षेत्र मे औदारिक कलेवर के होने पर। इन दस कारणो से स्वाध्याय करने का निषेध है।

21. There are ten *asvadhyaya kaal* (period when studies are prohibited) due to reasons related to *audarik sharira* (gross physical body)—(In proximity of—) (1) bones, (2) flesh, (3) blood, (4) impurities, (5) cremation ground, (and at the time of—) (6) lunar eclipse, (7) solar eclipse, (8) death of some prominent person, (9) disturbance in the state and (10) presence of a corpse within hundred yards of the place of stay

संयम–असंयम–पद SAMYAM-ASAMYAM-PAD
(SEGMENT OF DISCIPLINE AND INDISCIPLINE)

२२. पंचिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स दसविधे संजमे कज्जति, तं जहा–सोतामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। सोतामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। चक्खुमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। घाणामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति। फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति।) फासामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति।

२२. पचेन्द्रिय जीवो का घात नही करने वाले साधक के दस प्रकार का सयम होता है– (१-२) श्रोत्रेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग नही करने तथा दु ख का सयोग नही करने से, (३-४) चक्षुरिन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग नही करने तथा दु ख का सयोग नही करने से, (५-६) घ्राणेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग नही करने तथा दु ख का सयोग नही करने से, (७-८) रसनेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग नही करने तथा दु ख का सयोग नही करने से। (९-१०) स्पर्शनेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग नही करने तथा दु ख का सयोग नही करने से।

22. A being not indulging in harming or killing of five-sensed beings has ten kinds of discipline—That related to not terminating the pleasure derived through and not enforcing the misery experienced through—(1,2) *shrotrendriya* (sense organ of hearing), (3,4) *chakshurindriya* (sense organ of seeing) (5,6) *ghranendriya* (sense organ of smell), (7,8) *rasanendriya* (sense organ of taste) and (9,10) *sparshendriya* (sense organ of touch)

२३. पंचिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स दसविधे असंजमे कज्जति, तं जहा–सोतामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। सोतामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। चक्खुमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। घाणामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति। फासामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवति। फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति।

२३. पचेन्द्रिय जीवो का घात करने वाले व्यक्ति के दस प्रकार का असयम होता है, जैसे– (१-२) श्रोत्रेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग करने और दु ख का सयोग करने से। (३-४) चक्षुरिन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग करने और दु ख का सयोग करने से। (५-६) घ्राणेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग करने और दु ख का सयोग करने से। (७-८) रसनेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग करने और दु ख का सयोग करने से। (९-१०) स्पर्शनेन्द्रिय-सम्बन्धी सुख का वियोग करने और दु ख का सयोग करने से।

23. A being indulging in harming or killing of five sensed beings has ten kinds of indiscipline—That related to terminating the pleasure derived through and enforcing the misery experienced through—(1,2) *shrotrendriya* (sense organ of hearing), (3,4) *chakshurindriya* (sense organ of seeing) (5,6) *ghranendriya* (sense organ of smell), (7,8) *rasanendriya* (sense organ of taste) and (9,10) *sparshendriya* (sense organ of touch)

सूक्ष्म-पद SUKSHMA-PAD (SEGMENT OF MINUTES)

२४. दस सुहुमा पण्णत्ता, तं जहा—पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, (बीयसुहुमे, हरितसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे, लेणसुहुमे), सिणेहसुहुमे, गणियसुहुमे, भंगसुहुमे।

२४. सूक्ष्म दस प्रकार के है। जैसे-(१) **प्राण-सूक्ष्म**-कुन्थुआदि सूक्ष्मजीव, (२) **पनक-सूक्ष्म**-काई आदि, (३) **बीज-सूक्ष्म**-धान्य आदि का अग्रभाग, (४) **हरितसूक्ष्म**-हरे रग के सूक्ष्मतृण आदि, (५) **पुष्प-सूक्ष्म**-वट आदि के पुष्प, (६) **अण्डसूक्ष्म**-चीटी आदि के अण्डे, (७) **लयनसूक्ष्म**-कीडीनगरा, (८) **स्नेहसूक्ष्म**-ओस आदि, (९) **गणितसूक्ष्म**-कुशाग्रबुद्धि से समझने योग्य गणित सम्बन्धी प्रश्न, (१०) **भंगसूक्ष्म**-कुशाग्रबुद्धि से समझने योग्य विभिन्न विकल्प।

24. *Sukshma* (minutes) are of ten kinds—(1) *prana-sukshma* (minute insects like *kunthu*), (2) *panak-sukshma* (lichen or moss), (3) *beej-sukshma* (tip of a cereal), (4) *harit-sukshma* (minute green grass), (5) *pushp-sukshma* (minute flowers, like those of banyan tree), (6) *anda-sukshma* (minute eggs of ants and other insects), (7) *layan-sukshma* (anthill), (8) *sneh-sukshma* (dew etc), (9) *ganit-sukshma* (subtle mathematical questions requiring sharp wit to understand) and (10) *bhang-sukshma* (subtle divisions and alternatives requiring sharp wit to understand)

महानदी-पद MAHANADI-PAD (SEGMENT OF GREAT RIVERS)

२५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगा-सिंधु-महाणदीओ दस महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा—जउणा, सरऊ, आवी, कोसी, मही, सतद्दू, वितत्था, विभासा, एरावती, चंदभागा।

२५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे गगा (नेपाल के पूर्व भाग मे) सिन्धु (कैलाश पर्वत से उद्‌गम) महानदी मे दश महानदियाँ मिलती है-(१) यमुना (हिमालय से), (२) सरयू (घाघरा-घग्घर) (३) आवी (राप्ती-उद्‌गम नेपाल की पर्वतमाला से) (४) कोशी (नेपाल के पूर्व भाग मे), (५) मही (बिहार पटना के पास), (६) शतद्रु (सतलज-पजाब मे) (७) वितस्ता (झेलम), (८) विपाशा (व्यास), (९) ऐरावती (रावी), (१०) चन्द्रभागा (चिनाब)। (इनमे से प्रथम पाँच गगा मे तथा शेष पाँच सिन्धु मे मिलती है)।

25. In Jambu continent, to the south of Mandar Mountain (in Bharat area) ten great rivers join the great rivers Ganga (east Nepal) and Sindhu (Mt Kailash)—(1) Yamuna (from Himalaya), (2) Sarayu (Ghagghar or Ghaghara), (3) Aavi (Rapti from mountains in Nepal), (4) Kosi (east Nepal), (5) Mahi (near Patna in Bihar), (6) Shatadru (Sataluj), (7) Vitasta (Jhelum), (8) Vipasa (Vyas), (9) Airavati (Ravi) and (10) Chandrabhaga (Chenab) (first five join the Ganga and last five the Sindhu)

२६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रत्ता–रत्तवतीओ महाणदीओ दस महाणदीओ समप्पेंति, तं जहा–किण्हा, महाकिण्हा, णीला, महाणीला, महातीरा, इंदा, (इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा), महाभोगा।

२६. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे रक्ता और रक्तावती महानदी मे दश महानदियाँ मिलती है-(१) कृष्णा, (२) महाकृष्णा, (३) नीला, (४) महानीला, (५) महातीरा, (६) इन्द्रा, (७) इन्द्रसेना, (८) सुषेणा, (९) वारिषेणा, (१०) महाभोगा।

26. In Jambu continent, to the north of Mandar Mountain (in Airavat area) ten great rivers join the great rivers Rakta and Raktavati—(1) Krishna, (2) Mahakrishna, (3) Nila, (4) Mahanila and (5) Mahatira, (6) Indra, (7) Indrasena, (8) Sushena, (9) Varishena and (10) Mahabhoga

राजधानी–पद RAJADHANI-PAD (SEGMENT OF CAPITAL CITIES)

२७. जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–

चंपा महुरा वाणारसी य सावत्थि तह य साकेतं।
हत्थिणाउर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि रायगिहं॥१॥ (संग्रहणी गाथा)

२७. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे भारतवर्ष मे दस राजधानियाँ है-(१) **चम्पा**–अगदेश की राजधानी, (२) **मथुरा**–सूरसेन देश की राजधानी, (३) **वाराणसी**–काशी देश की राजधानी, (४) **श्रावस्ती**–कुणाल देश की राजधानी, (५) **साकेत**–कोशल देश की राजधानी, (६) **हस्तिनापुर**–कुरु देश की राजधानी, (७) **कम्पिला** (पाचाल), (८) **मिथिला** (विदेह), (९) **कौशाम्बी**–वत्स देश की राजधानी, (१०) **राजगृह**–मगध देश की राजधानी।

27. In Jambu continent in Bharat area there are ten *rajadhanis* (capital cities)—(1) Champa (of Anga), (2) Mathura (of Surasen), (3) Varanasi (of Kashi), (4) Shravasti (of Kunal), (5) Saket (of Koshal), (6) Hastinapur (of Kuru), (7) Kampill (of Panchal), (8) Mithila (of Videh), (9) Kaushambi (of Vatsa) and (10) Rajagriha (of Magadh).

राज-पद RAJ-PAD (SEGMENT OF KINGS)

२८. एयासु णं दससु रायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता (अगाराओ अणगारियं) पव्वइया, तं जहा—भरहे, सगरे, मघवं, सणंकुमारे, संती, कुंथू, अरे, महापउमे, हरिसेणे, जयणामे।

२८. इन दस राजधानियो मे दस राजा मुण्डित होकर अगार से अनगार धर्म मे प्रव्रजित हुए, जैसे-(१) भरत, (२) सगर, (३) मघवा, (४) सनत्कुमार, (५) शान्ति, (६) कुन्थु, (७) अर, (८) महापद्म, (९) हरिषेण, (१०) जय।

28. In the said ten capital cities ten kings got tonsured and initiated to be ascetics—(1) Bharat, (2) Sagar, (3) Maghava, (4) Sanatkumar, (5) Shanti, (6) Kunthu, (7) Ar, (8) Mahapadma, (9) Harishen and (10) Jai

विवेचन—उक्त १० राजधानियो मे १२ चक्रवर्ती राजा हुए जिनमे से दस ने सयम धारण किया। आवश्यक निर्युक्ति गा २९७ अनुसार ये १० चक्रवर्ती निम्न नगरो मे दीक्षित हुए। १ भरत और सगर-साकेत-अयोध्या मे, मघवा-श्रावस्ती मे, सनत्कुमार, शान्ति, कुन्थु, अर और सुभूम-ये पाँच हस्तिनापुर मे। महापद्म वाराणसी, हरिषेण तथा ब्रह्मदत्त कापिल्यपुर मे। आठवे सुभूम तथा बारहवे ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती दीक्षित नही हुए। *(हिन्दी टीका, भाग २, पृष्ठ ७२४)*

Elaboration—In the aforesaid ten capitals at different times there were twelve *Chakravartis* Out of these ten became ascetics According to *Avashyak Niryukti* (verse 297) these emperors got initiated in the following cities—Bharat and Sagar in Saket (Ayodhya), Maghava in Shravasti, Sanatkumar, Shanti, Kunthu, Ar, and Mahapadma in Hastinapur, Mahapadma in Varanasi, and Harishen and Jai in Kampilyapur The eighth and twelfth *Chakravartis* named Subhum and Brahmadatt respectively did not get initiated *(Hindi Tika, part-2, p 724)*

मन्दर-पद MANDAR-PAD (SEGMENT OF MANDAR)

२९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं, दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

२९. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत एक हजार योजन भूमि मे गहरा है, भूमितल पर दस हजार योजन विस्तृत है, ऊपर पण्डकवन मे एक हजार योजन विस्तृत और सर्व परिमाण से एक लाख योजन ऊँचा है।

29. In Jambu continent the Mandar mountain is one thousand *Yojan* deep in the ground At ground level its expanse is ten thousand *Yojans* At *Pandak* forest on its top the expanse is one thousand *Yojans*. Its overall height is one hundred thousand *Yojans*

दिशा–पद (रुचक प्रदेश क्षेत्र) **DISHA-PAD (SEGMENT OF DIRECTIONS)**

३०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु, एत्थ णं अट्ठपएसिए रुयगे पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तं जहा पुरत्थिमा, पुरत्थिमदाहिणा, दाहिणा, दाहिणपच्चत्थिमा, पच्चत्थिमा, पच्चत्थिमुत्तरा, उत्तरा, उत्तरपुरत्थिमा, उड्ढा, अहा।

३१. एतासि णं दसण्हं दिसाणं दस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–

इंदा अग्गीह जाया य, णेरती वारुणी य वायव्वा।
सोमा ईसाणी य, विमला य तमा य बोद्धव्वा॥१॥

३०. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के ठीक मध्य भाग मे (नौ सौ योजन नीचे जहाँ मध्य लोक समाप्त होता है तथा अधोलोक प्रारम्भ होता है)। रत्नप्रभा पृथिवी के ऊपर क्षुल्लक प्रतर मे गाय के स्तनाकार चार तथा उसके नीचे के क्षुल्लक प्रतर मे गोस्तनाकार चार, इस प्रकार आठ आकाश प्रदेश वाला रुचक कहा गया है। इसी से दसो दिशाओ का उद्गम होता है, जैसे-(१) पूर्वदिशा, (२) पूर्व-दक्षिण-आग्नेयदिशा, (३) दक्षिणदिशा, (४) दक्षिण-पश्चिम-नैर्ऋत्य दिशा, (५) पश्चिम दिशा, (६) पश्चिम-उत्तर-वायव्य दिशा, (७) उत्तर दिशा, (८) उत्तर-पूर्व-ईशान दिशा, (९) ऊर्ध्व दिशा, (१०) अधोदिशा।

३१. इन दस दिशाओ के दस नाम है-(१) इन्द्रा, (२) आग्नेयी, (३) याम्या, (४) नैर्ऋती, (५) वारुणी, (६) वायव्या, (७) सोमा, (८) ईशानी, (९) विमला, (१०) तमा।

30. In Jambu continent in the exact middle of the (perpendicular section of) Mandar mountain (nine hundred *Yojans* below where the middle world ends and lower world starts) just above *Ratnaprabha prithvi* there is a *Ruchak pradesh* (*Ruchak* section) with eight space-sections (*akash pradesh*) at two micro-levels (*kshullak pratar*) of four space-sections each, resembling four teats in udder of a cow, one above the other and facing each other From this core section originate ten directions—(1) East, (2) South-east (*Aagneya*), (3) South, (4) South-west (*Nairritya*), (5) West, (6) North-west (*Vayavya*), (7) North, (8) North-east (*Ishan*), (9) Zenith and (10) Nadir

31. These ten directions have ten names—(1) *Indraa*, (2) *Aagneyi*, (3) *Yamya*, (4) *Nairriti*, (5) *Vaaruni*, (6) *Vayavyaa*, (7) *Somaa*, (8) *Ishani*, (9) *Vimala* and (10) *Tamaa*

गोतीर्थ–पद **GOTIRTHA-PAD (SEGMENT OF SLOPING BANK)**

३२. लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पण्णत्ते।

३२. लवणसमुद्र का दस हजार योजन क्षेत्र गोतीर्थ-रहित (समतल) है।

32. Ten thousand *Yojan* area of Lavan Samudra is without *gotirtha* (slope)

३३. लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते।

३३. लवणसमुद्र की उदकमाला (वेला) दस हजार योजन चौडी है।

33. The *udak-mala* (wave crest) of Lavan Samudra is ten thousand *Yojan* wide

विवेचन—जिस जलस्थान (तालाब-समुद्र आदि) पर गाये जल पीने के लिए उतरती है, वह क्रम से ढलान वाला स्थान आगे-आगे अधिक नीचा होता है, उसे **गोतीर्थ** कहते है। लवणसमुद्र के दोनो पार्श्वों मे, (जम्बूद्वीप तथा धातकीषण्ड से) ९५-९५ हजार योजन भीतर जल स्थान गोतीर्थ के आकार मे है। बीच मे दस हजार योजन तक पानी समतल है, उसमे ढलान नही है, उस समतल भूमि को **'गोतीर्थविरहित'** कहा जाता है।

जल की ऊपर उठती शिखा या चोटी को (जो समुद्र से ऊँची उठी है) उदकमाला कहते है। यह समुद्र के मध्यभाग मे होती है। लवणसमुद्र की उदकमाला दस हजार योजन चौडी और सोलह हजार योजन ऊँची होती है। वेलधर देव इसकी रक्षा करते है।

Elaboration—The sloping area within a water-body, starting from the bank, where cows frequent for drinking water is called *gotirtha* This gradual slope continues to increase towards the middle On both ends of Lavan Samudra (from *Jambudveep* and *Dhatakikhand*) the *gotirtha* is ninety five thousand *Yojans* long In the center the area of level sea bed is ten thousand *Yojans* long This level area devoid of slope (*gotirtha*) is called *gotirtha-virahit*

A wave crest is called *udak-mala* It is in the middle of a sea The wave crest (maximum) of Lavan Samudra is ten thousand *Yojans* wide and sixteen thousand *Yojans* high It is guarded by *Velandhar* gods

पातालकलश-पद PATAL KALASH-PAD (SEGMENT OF PATAL KALASH)

३४. सव्वेवि णं महापाताला दसदसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं पण्णत्ता, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। तेसि णं महापातालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता।

३४. लवणसमुद्र मे चारो दिशाओ मे चार महापाताल कलश है। सभी महापाताल (पातालकलश) एक लाख योजन गहरे है। (उनके नाम है-वलयामुख, केतुक, यूपक और ईश्वर)। ये गोतीर्थ रहित

स्थान पर है। नीचे मूल भाग मे वे दस हजार योजन चौडे है। मूल भाग के विस्तार से दोनो ओर एक-एक प्रदेश की वृद्धि से बढते हुए बहुमध्यदेश भाग मे एक लाख योजन चौडे है। ऊपर मुखमूल मे उनका विस्तार दस हजार योजन है। उन पातालो की भित्तियाँ सर्व वज्रमयी, सर्वत्र समान और सर्वत्र दस हजार योजन चौडी है।

34. There are four *Mahapatal Kalash* (gigantic pitcher shaped areas) in four directions in Lavan Samudra All these *Mahapatal Kalash* are one hundred thousand *Yojans deep* (their names are—*Valayamukh, Ketuk, Yupak* and *Ishvar*) These areas are devoid of slope (*gotirtha*) At the base (sea bed) they are ten thousand *Yojan* wide With a gradual increase in area, with every space-point of height from the sea-bed, they reach a maximum width of one hundred thousand *Yojans* in the middle and then start decreasing Their width at the mouth or surface of the sea is ten thousand *Yojans* The walls of these Paataals are diamond hard, uniform and ten thousand *Yojan* thick

३५. सव्वेवि णं खुड्डा पाताला दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पण्णत्ता, मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, उवरिं मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। तेसि णं खुड्डापातालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता।

३५. लवणसमुद्र की दिशाओ और विदिशाओ मे सभी छोटे पातालकलश एक हजार योजन गहरे है। मूल भाग मे उनका विस्तार सौ योजन है। मूलभाग के विस्तार से दोनो ओर एक-एक प्रदेश की वृद्धि से बहुमध्य देशभाग मे उनका विस्तार एक हजार योजन है। ऊपर मुखमूल मे उनका विस्तार सौ योजन है।

उन छोटे पातालकलशो की भित्तियॉ सर्व वज्रमयी, सर्वत्र समान और सर्वत्र दश योजन विस्तार वाली है। उनकी कुल सख्या ७८८४ है। *(विस्तार के लिए देखे—गणितानुयोग पृष्ठ ३४२ तथा जीवाभिगम)*

35. There are small *Patal Kalash* (pitcher shaped areas) in all cardinal and intermediate directions in Lavan Samudra They are one thousand *Yojans deep* At the base (sea bed) they are one hundred *Yojan* wide With a gradual increase in area, with every space-point of height from the sea-bed, they reach a maximum width of one thousand *Yojans* in the middle and then start decreasing Their width at the mouth or surface of the sea is one thousand *Yojans*

The walls of these *Paataals* are diamond hard, uniform and ten *Yojan* thick Their total number is 7884 *(for more details refer to Ganitanuyog, p 342 and Jivabhigam)*

पर्वत-पद PARVAT-PAD (SEGMENT OF MOUNTAINS)

३६. धायइसंडगा णं मंदरा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं, धरणीतले देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

३७. पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, एवं चेव।

३६. धातकीषण्ड के मन्दर पर्वत, भूमि मे एक हजार योजन गहरे, भूमितल पर कुछ कम दस हजार योजन विस्तृत और ऊपर एक हजार योजन विस्तृत है।

३७. पुष्करवरद्वीपार्ध के मन्दर पर्वत इसी प्रकार भूमि मे एक हजार योजन गहरे, भूमितल पर कुछ कम दस हजार योजन विस्तृत और ऊपर एक हजार योजन ऊँचे है।

36. In Dhatakikhand the Mandar mountain is one thousand *Yojan* deep in the ground At ground level its expanse is slightly less than ten thousand *Yojans* At the top its expanse is one thousand *Yojans*

37. In the same way in Pushkaravar Dveep the Mandar mountain is one thousand *Yojan* deep in the ground At ground level its expanse is slightly less than ten thousand *Yojans* At the top its expanse is one thousand *Yojans*

३८. सव्वेवि णं वट्टवेयड्ढपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठिता, दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

३८. सभी वृतवैताढ्य पर्वत (गोलाई वाले) एक हाजर योजन ऊँचे, एक हजार गव्यूति (कोश) गहरे, सर्वत्र समान विस्तार वाले, पल्य के आकार से सस्थित और दस सौ (एक हजार) योजन विस्तृत है।

38. All *Vaitadhya* mountains are round They are one thousand *Yojans* high, one thousand *Gavyut* (*Kosa*) *deep* in the ground, uniformly wide, silo shaped and ten hundred (one thousand) *Yojan* in expanse

जम्बूद्वीप क्षेत्र-पद JAMBUDVEEP KSHETRA-PAD (SEGMENT OF AREAS IN JAMBUDVEEP)

३९. जंबुद्दीवे दीवे दस खेत्ता पण्णत्ता, तं जहा-भरहे, एरवते, हेमवते, हेरण्णवते, हरिवस्से, रम्मगवस्से, पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा।

३९. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे (मानव-निवास के) दस क्षेत्र है-(१) भरत क्षेत्र, (२) ऐरवत क्षेत्र, (३) हैमवत क्षेत्र, (४) हैरण्यवत क्षेत्र, (५) हरिवर्ष क्षेत्र, (६) रम्यकवर्ष क्षेत्र, (७) पूर्वविदेह क्षेत्र, (८) अपरविदेह क्षेत्र, (९) देवकुरु क्षेत्र, (१०) उत्तरकुरु क्षेत्र।

39. In Jambudveep continent there are ten areas (of human habitation)—(1) Bharat area, (2) Airavat area, (3) Haimavat area,

(4) Hairanyavat area, (5) Harivarsh area, (6) Ramyak-varsh and (7) Purva Videh area, (8) Apar Videh area, (9) Devakuru area and (10) Uttar-kuru area

विविध पर्वत–पद VIVIDH PARVAT-PAD (SEGMENT OF MISCELLANEOUS MOUNTAINS)

४०. माणुसुत्तरे णं पव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पण्णत्ते। ४१. सव्वेवि णं अंजण–पव्वता दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। ४२. सव्वेवि णं दहिमुहपव्वता दस जोयणसताइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठिता, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण पण्णत्ता। ४३. सव्वेवि णं रतिकरपव्वता दस जोयणसताइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दसगाउयसताइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा झल्लरिसंठिता, दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। ४४. रुयगवरे णं पव्वते दस जोयणसताइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। ४५. एवं कुंडलवरेवि।

४०. मानुषोत्तर पर्वत मूल मे दस सौ बाईस (१०२२) योजन विस्तार वाला है। ४१. सभी अजनक पर्वत दस सौ (१०००) योजन गहरे, मूल मे दश हजार योजन विस्तृत और ऊपर दस सौ (१०००) योजन विस्तार वाले है। ४२. सभी दधिमुखपर्वत भूमि मे दस सौ योजन गहरे, सर्वत्र समान विस्तार वाले, पल्य के आकार से सस्थित और दस हजार योजन चौडे है। ४३. सभी रतिकर पर्वत दस सौ (१०००) योजन ऊँचे, दस सौ गव्यूति (कोश) गहरे, सर्वत्र समान, झल्लरी के आकार के और दस हजार योजन विस्तार वाले है। ४४. रुचकवर पर्वत दस सौ (१०००) योजन गहरे, मूल मे दस हजार योजन विस्तृत और ऊपर दस सौ (१०००) योजन विस्तार वाले है। ४५. इसी प्रकार कुण्डलवर पर्वत भी रुचकवर पर्वत के समान है।

40. At its base the expanse of Manushottar Parvat is ten hundred twenty two (1022) *Yojan* **41.** All *Anjanak Parvats* are ten hundred (1000) *Yojan* deep in the ground, ten thousand *Yojans* wide at ground level, and ten hundred (1000) *Yojan* wide at the top **42.** All *Dadhimukh* mountains are ten hundred *Yojan deep* in the ground, uniformly wide, silo shaped and ten hundred (one thousand) *Yojan* in expanse **43.** All *Ratikar* mountains are ten hundred *Yojan* high, ten hundred *Gavyut* (*Kosa*) deep in the ground, uniformly wide, dish shaped and ten thousand *Yojan* in expanse **44.** All *Ruchakavar Parvats* are ten hundred (1000) *Yojan* deep in the ground, ten thousand *Yojans* wide at ground level, and ten hundred (1000) *Yojan* wide at the top **45.** The *Kundalavar Parvats* are also like *Ruchakavar Parvats*

विवेचन–(४०) मानुषोत्तर पर्वत पुष्करवर द्वीप के ठीक मध्य भाग मे कुण्डलाकार है। यही मनुष्य लोक की सीमा बाँधता है। इससे बाहर मानव जाति का निवास नही है। (४१–४५) तेरहवे रुचक द्वीप

के ठीकमध्य भाग मे गोलाकार रुचक पर्वत तथा ग्यारहवे कुण्डल द्वीप मे गोलाकार कुण्डल पर्वत स्थित है। *(विस्तार के लिए देखे–जीवाभिगम सूत्र)*

Elaboration—(40) Manushottar Parvat is located at the center of Pushkaravar Dveep and is ring shaped This forms the boundary of human habitation outside which there is no existence of human beings (41-45) The circular Ruchak Parvat is located at the center of the Ruchak Dveep (thirteenth *Dveep*) The circular Kundal Parvat is located at the center of the Kundal Dveep (eleventh Dveep) *(for details see Jivabhigam Sutra)*

द्रव्यानुयोग–पद DRAVYANUYOGA-PAD (SEGMENT OF DISQUISITION OF ENTITIES)

४६. दसविहे दवियाणुओगे पण्णत्ते, तं जहा–दवियाणुओगे, आउयाणुओगे, एगट्ठियाणुआगे, माउयाणुओगे, एगट्ठियाणुओगे, करणाणुओगे, अप्पितणप्पिते, भाविताभाविते, बाहिराबाहिरे, सासतासासते, तहणाणे, अतहणाणे।

४६. द्रव्यानुयोग दस प्रकार का है-(१) द्रव्यानुयोग, (२) मातृकानुयोग, (३) एकार्थिकानुयोग, (४) करणानुयोग, (५) अर्पितानर्पितानुयोग, (६) भाविताभावितानुयोग, (७) बाह्याबाह्यानुयोग, (८) शाश्वताशाश्वतानुयोग, (९) तथाज्ञानानुयोग, (१०) अतथाज्ञानानुयोग।

46. *Dravyanuyoga* (disquisition of entities) is of ten kinds—(1) *Dravyanuyoga*, (2) *Matrikanuyoga*, (3) *Ekarthikanuyoga*, (4) *Karananuyoga*, (5) *Arpitanarpitanuyoga*, (6) *Bhaavitabhaavitanuyoga*, (7) *Bahyabahyanuyoga*, (8) *Shashvatashashvatanuyoga*, (9) *Tathajnananuyoga*, and (10) *Atathajnananuyoga*

विवेचन–'अनुयोग' का अर्थ है, विषय के अनुसार व्याख्या करना। अनुयोग चार प्रकार का है। जीवादि द्रव्यो की व्याख्या करने वाले अनुयोग को **द्रव्यानुयोग** कहते है। जिसमे गुण और पर्याय पाये जाते है उसे द्रव्य कहते हैं। द्रव्य के सहभागी धर्मों (ज्ञानादि) को गुण और क्रमभावी धर्मो (मनुष्य आदि) को पर्याय कहते है। इन गुणो और पर्यायो वाले द्रव्य का विवेचन द्रव्यानुयोग का विषय है।

(२) **मातृकानुयोग**–इस अनुयोग मे उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप मातृकापद के द्वारा द्रव्यो का विवेचन है।

(३) **एकार्थिकानुयोग**–इसमे एक अर्थ के वाचक अनेक शब्दो की व्याख्या के द्वारा द्रव्यो का विवेचन है। जैसे–सत्त्व, भूत, प्राणी और जीव, ये शब्द एक अर्थ के वाचक है आदि।

(४) **करणानुयोग**–द्रव्य की निष्पत्ति मे प्रयुक्त होने वाले साधक कारण को 'करण' कहते है। जैसे घट की निष्पत्ति मे मिट्टी, कुम्भकार, चक्र आदि। जीव की क्रियाओ मे काल, स्वभाव, नियति आदि साधक है। इस प्रकार द्रव्यो के साधकतम कारणो का विवेचन इस करणानुयोग का विषय है।

(५) **अर्पितानर्पितानुयोग**–मुख्य या प्रधान विवक्षा को अर्पित और गौण या अप्रधान विवक्षा को अनर्पित कहते है। इस अनुयोग मे सभी द्रव्यो के गुण-पर्यायो का विवेचन मुख्य और गौण की विवक्षा से किया गया है।

(६) **भाविताभावितानुयोग**–इस अनुयोग मे दूसरे द्रव्यसे प्रभावित (भावित) या अप्रभावित (अभावित) होने का विचार किया गया है। जैसे–सकषाय जीव अच्छे या बुरे वातावरण से प्रभावित होता है, किन्तु अकषाय जीव नही होता आदि।

(७) **बाह्याबाह्यानुयोग**–इस अनुयोग मे एक द्रव्य की दूसरे द्रव्य के साथ बाह्यता, (भिन्नता या विलक्षणता) और अबाह्यता (अभिन्नता समानता) का विचार किया गया है।

(८) **शाश्वताशाश्वतानुयोग**–इस अनुयोग मे द्रव्यो के शाश्वत (नित्य) और अशाश्वत (अनित्य) धर्मो का विचार किया गया है।

(९) **तथाज्ञानानुयोग**–इसमे द्रव्यो के यथार्थ स्वरूप का जैसा स्वरूप है, वैसा ही विचार किया गया है।

(१०) **अतथाज्ञानानुयोग**–इस अनुयोग मे मिथ्यादृष्टियो के द्वारा प्ररूपित द्रव्यो के स्वरूप का (अयथार्थ स्वरूप का) निरूपण किया गया है।

Elaboration—*Anuyoga* means disquisition based on theme and specific parameters There are four thematic categories of *Anuyoga* related to Jain scriptures The elaboration of *dravya* (entities) like *jiva* (soul) is classified as *dravyanuyoga* That which has *guna* (attributes) and *paryaya* (modes) is called *dravya* The basic properties of a *dravya* are called *guna* (attributes), such as *jnana* (knowledge or sentience) and progressively variant properties are called *paryaya* (modes), such as human being The disquisition of entities having these two, attributes and modes, is called *dravyanuyoga* The remaining *anuyogas* from the aforesaid list are explained as follows—

(2) Matrikanuyoga—this *anuyoga* deals with entities in context of their origin, destruction and permanence (these three terms are known as *matrika pad* or fundamental and magical phrase)

(3) Ekarthikanuyoga—this elaborates entities with the help of synonyms For example *prani* (beings), *bhoot* (organisms), *jiva* (souls), and *sattva* (entities) are synonyms

(4) Karananuyoga—The causes instrumental in manifestation of an entity are called *karan* For example the causes instrumental in manifestation of a pitcher are clay, potter, and wheel Some of the instrumental causes for activities of soul are time, nature and destiny Elaboration of such instrumental causes is the theme of *Karananuyoga*

(5) **Arpitanarpitanuyoga**—The basic or important meaning or property of a word or thing is called *arpit* and the auxiliary or ordinary one is called *anarpit* This *anuyoga* deals with attributes and modes of all entities in context of important and ordinary

(6) **Bhaavitabhaavitanuyoga**—This *anuyoga* discusses the influence or absence of influence of one entity on another For example a soul with passion is influenced by good or bad surroundings, whereas one without passions is not

(7) **Bahyabahyanuyoga**—This *anuyoga* deals with mutual differences among entities or uniqueness of each entity

(8) **Shashvatashashvatanuyoga**—This *anuyoga* deals with the permanent and impermanent properties of entities

(9) **Tathajnananuyoga**—This *anuyoga* elaborates the real forms of entities exactly as they are

(10) **Atathajnananuyoga**—This *anuyoga* deals with unreal forms of entities as propagated by heretics

उत्पातपर्वत–पद UTPATAPARVAT-PAD (SEGMENT OF UTPATAPARVAT)

४७. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिंछिकूडे उप्पातपव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पण्णत्ते। ४८. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। ४९. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पातपव्वते एवं चेव। ५०. एवं वरुणस्सवि। ५१. एवं वेसमणस्सवि।

४७. असुरेन्द्र, असुरकुमारराज चमर का तिगिछकूट (असख्यद्वीप समुद्रो को लाँघकर अरुणवर समुद्र मे स्थित) नामक उत्पात पर्वत मूल मे दस सौ बाईस (१०२२) योजन विस्तृत है। ४८. असुरेन्द्र, असुरकुमारराज चमर के लोकपाल महाराज सोम का सोमप्रभ नामक उत्पातपर्वत दस सौ (१०००) योजन ऊँचा, दस सौ कोश भूमि मे गहरा और मूल मे दस सौ (१०००) योजन चौडा है। ४९. असुरेन्द्र, असुरकुमारराज चमर के लोकपाल यम महाराज का यमप्रभ नामक उत्पातपर्वत सोम के उत्पातपर्वत के समान ही ऊँचा, गहरा और विस्तार वाला है। ५०. इसी प्रकार वरुण लोकपाल का वरुणप्रभ उत्पातपर्वत और ५१. वैश्रमण लोकपाल का वैश्रमणप्रभ उत्पातपर्वत भी जानना चाहिए।

47. Tingichha koot, the *Utpat parvat* of Chamar Asurendra, the king of Asur Kumar gods, (located beyond innumerable islands and seas in Arunavar Samudra) is ten hundred twenty two (1022) *Yojan* wide at its base **48.** Somaprabh, the *Utpat parvat* of Soma, the *lok-paal* of Chamar

Asurendra, the king of Asur Kumar gods is ten hundred (1000) *Yojans* high, ten hundred (1000) *Kosa* deep in the ground, and ten hundred (1000) *Yojan* wide at its base **49.** Yamaprabh, the *Utpat parvat* of Yama, the *lok-paal* of Chamar Asurendra, the king of Asur Kumar gods is as high, deep and wide as the *Utpataparvat* of Soma The same should be read for—**50.** Varunaprabh, the *Utpat parvat* of *Lok-pal* Varun and **51.** Vaishramanaprabh, the *Utpat parvat* of *Lok-pal* Vaishramana.

५२. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पातपव्वते मूले दस बावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पण्णत्ते। ५३. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स एवं चेव, जधा चमरस्स लोकपालाणं तं चेव बलिस्सवि।

५२. वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि का रुचकेन्द्र नामक उत्पातपर्वत मूल मे दस सौ बाईस (१०२२) योजन विस्तृत है। ५३. वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के लोकपाल महाराज सोम, यम, वैश्रमण और वरुण के स्व-स्व नाम वाले उत्पातपर्वतो की ऊँचाई एक-एक हजार योजन, गहराई एक-एक हजार गव्यूति और मूल भाग का विस्तार एक-एक हजार योजन है।

52. Ruchakendra, the *Utpat parvat* of Bali Vairochanendra, the king of Vairochan gods, is ten hundred twenty two (1022) *Yojan* wide at its base **53.** Each of the *Utpat parvats* of Soma, Yama, Vaishraman and Varun, the *lok-paals* of Bali Vairochanendra, the king of Vairochan gods, bearing each one's name respectively, is one thousand *Yojans* high, one thousand *Kosa* deep in the ground, and one thousand *Yojan* wide at their bases

५४. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो धरणप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसताइं विक्खंभेणं। ५५. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररणो कालवालस्स महारण्णो कालवालप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं चेव। ५६. एवं जाव संखवालस्स। ५७. एवं भूताणंदस्सवि। ५८. एवं लोगपालाणवि से, जहा धरणस्स। ५९. एवं जाव थणितकुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं, सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा। ६०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। ६१. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो। जधा सक्कस्स तधा सव्वेसिं लोगपालाणं, सव्वेसिं च इंदाणं जाव अच्चुयत्ति। सव्वेसिं पमाणमेगं।

५४. नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण का धरणप्रभ नामक उत्पातपर्वत दस सौ (१०००) योजन ऊँचा, दस सौ गव्यूति गहरा और मूल मे दस सौ (१०००) योजन विस्तार वाला है। ५५. नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज के लोकपाल कालपाल महाराज का कालपालप्रभ नामक उत्पातपर्वत दस सौ योजन

ऊँचा, दससौ गव्यूति गहरा और मूल मे दस सौ योजन विस्तार वाला है। ५६. इसी प्रकार कोलपाल, शैलपाल और शखपाल नामक लोकपालो के स्व-स्व नाम वाले उत्पातपर्वत की ऊँचाई, गहराई और मूल मे विस्तार जानना चाहिए। ५७. इसी प्रकार भूतेन्द्र भूतराज भूतानन्द के भूतानन्दप्रभ नामक उत्पातपर्वत की ऊँचाई एक हजार योजन, गहराई एक हजार गव्यूति और मूल का विस्तार एक हजार योजन है। ५८. इसी प्रकार भूतानन्द के लोकपाल महाराज कालपाल, कोलपाल, शखपाल और शैलपाल के स्व-स्व नाम वाले उत्पातपर्वतो की ऊँचाई एक-एक हजार योजन, गहराई एक-एक हजार गव्यूति और मूल मे विस्तार एक-एक हजार योजन धरण के समान है। ५९. इसी प्रकार सुपर्णकुमार यावत् स्तनितकुमार देवो के इन्द्रो के और उनके लोकपालो के अपने-अपने नामवाले उत्पातपर्वतो की ऊँचाई, गहराई और मूल मे विस्तार धरण तथा उनके लोकपालो के समान है। ६०. देवेन्द्र देवराज शक्र के शक्रप्रभ नामक उत्पात पर्वत की ऊँचाई दस हजार योजन, गहराई दस हजार गव्यूति और मूल मे विस्तार दस हजार योजन है। ६१. देवेन्द्र देवराज शक्र के लोकपाल महाराज सोम के सोमप्रभ नामक उत्पात पर्वत का वर्णन शक्र के उत्पातपर्वत के समान है। शेष सभी लोकपालो के उत्पातपर्वतो का तथा अच्युतकल्पपर्यन्त सभी इन्द्रो के उत्पातपर्वतो की ऊँचाई आदि का प्रमाण एक ही समान है।

54. Dharanaprabh, the *Utpat parvat* of Dharan Naag-kumarendra, the king of Naag Kumar gods, is ten hundred twenty two (1022) *Yojan* wide at its base **55.** Kaalpaalprabh, the *Utpat parvat* of Kaalpaal, the *lok-paal* of Dharan Naag-kumarendra, the king of Naag Kumar gods is ten hundred (1000) *Yojans* high, ten hundred (1000) *Kosa* deep in the ground, and ten hundred (1000) *Yojan* wide at its base **56** In the same way each of the *Utpat parvats* of the *lok-paals* Kolpaal, Shailpaal, and Shankhpaal, bearing each one's name respectively, have the same height, depth in the ground, and width at their bases **57.** In the same way Bhootanandaprabh, the *Utpat parvat* of Bhootanand Bhootendra, the king of Bhoot gods, is one thousand *Yojan* high, one thousand *Kosa* deep in the ground, and one thousand *Yojan* wide at its base **58.** In the same way each of the *Utpat parvats* of Kaalpaal, Kolpaal, Shailpaal, and Shankhpaal, the *lok-paals* of Bhootanand, bearing each one's name respectively, is one thousand *Yojans* high, one thousand *Kosa* deep in the ground, and one thousand *Yojan* wide at its base **59** In the same way the *Utpat parvats* of the *Indras* of Suparna Kumar to Stanit Kumar gods and their *lok-paals* have the same height, depth in the ground, and width at their bases as those of Dharan and his *lok-pals* **60.** Shakraprabh, the *Utpat parvat* of Shakra Devendra, the king of gods, is ten thousand *Yojan* high, ten thousand *Kosa* deep in the ground, and ten thousand *Yojan* wide at its base **61** The description of Somaprabh,

the *Utpat parvat* of Soma, the *lok-pal* of Shakra Devendra, the king of gods, is same as that of Shakra The dimensions of the *Utpat parvats* of all the remaining *lok-pals* and those of all the *Indras* up to Achyut Kalp are same

विवेचन—अधोलोकवर्ती या ऊर्ध्वलोकवर्ती देव जब मध्यलोक मे आते है, तब प्रथम वे किसी पर्वत पर आकर उत्तर वैक्रिय शरीर का निर्माण करते है, फिर वहाँ से मध्यलोक मे आते है। उन्ही पर्वतो को **'उत्पात पर्वत'** कहा जाता है। उत्पात पर्वत सभी देवो के भिन्न-भिन्न होते है। चमरेन्द्र और बलि वैराचनेन्द्र के उत्पात पर्वत, तिगिछ कूट पर शेष आठ भवनपतियो के १६ इन्द्रो के, उनके लोकपालो के जिस दिशा मे उनकी राजधानी है, उसी दिशा मे उत्पात पर्वत है। वानव्यन्तर और ज्योतिषीन्द्रो के न उत्पात पर्वत है और न उनके लोकपाल है। वैमानिको के १० इन्द्र और प्रत्येक के चार-चार लोकपाल है। उनके ५ के उत्पात पर्वत उत्तर मे, ५ के दक्षिण दिशा मे है। इन उत्पात पर्वतो पर उन इन्द्र आदि के रमणीय प्रासाद भी है, जहाँ वे रुककर उत्तर वैक्रिय करते है। *(हिन्दी टीका, भाग २, पृष्ठ ७४१)*

Elaboration—When the gods from the lower world and the upper world come to the middle world they first arrive at a mountain and create *Uttar-vaikriya sharira* (secondary transmuted body) and only then proceed to the middle world The mountains so used by them are called *Utpat parvat* Each god has a different *Utpat parvat* The *Utpat parvats* of Chamar and Bali are on Tingichha koot Those of the sixteen *Indras* of the remaining eight abode dwelling gods are in the directions of their respective capitals The *Indras* of Vanavyantars and Jyotishks have neither *Utpat parvats* nor *lok-pals* The Vaimaniks have ten *Indras* and each one of them have four *lok-paals* The *Utpat parvats* five are in the north and five in the south On these *Utpat parvats* there are beautiful places and other facilities for sojourn and transmutation *(Hindi Tika, part-2, p 741)*

अवगाहना-पद AVAGAHANA-PAD (SEGMENT OF SPACE OCCUPATION)

६२. बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दसजोयणसयाइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता। ६३. जलचर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता। ६४. उरपरिसप्प-थलचर-पंचिंदियतिरक्खिजोणियाणं उक्कोसेणं (दस जोयणसताइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता)।

६२. बादर वनस्पतिकायिक जीवो के शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना दस सौ (१०००) योजन है। (यह अवगाहना समुद्रवर्ती कमल की नाल की अपेक्षा से है) ६३. जलचर पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो के शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना दस सौ (१०००) योजन है। ६४. उर परिसर्प स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो के शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना दस सौ (१०००) योजन है।

62. The maximum *avagahana* (space occupation) of *vanaspatikayik* beings (plant-bodied beings) is ten hundred (1000) *Yojans* (this relates to the long stem of lotus flower in sea) **63.** The maximum *avagahana* (space occupation) of *Jalachar panchendriya tiryagyonik* beings (five sensed aquatic animals) is ten hundred (1000) *Yojans* **64.** The maximum *avagahana* (space occupation) of *Urparisarp sthalachar panchendriya tiryagyonik* beings (five sensed non-limbed reptilian terrestrial animals) is ten hundred (1000) *Yojans*

तीर्थंकर–पद TIRTHANKAR-PAD (SEGMENT OF TIRTHANKAR)

६५. संभवाओ णं अरहातो अभिणंदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पण्णे।

६५. अर्हत् सम्भव के पश्चात् अभिनन्दन अर्हत् दस लाख करोड सागरोपम समय बीत जाने पर उत्पन्न हुए थे।

65. Arhat Abhinandan was born after ten lac crore (nine trillion) *Sagaropam* of Arhat Sambhava

अनन्त भेद–पद ANANT-PAD (SEGMENT OF THE ENDLESS OR INFINITE)

६६. दसविहे अणंतए पण्णत्ते, तं जहा–णामाणंतए ठवणाणंतए, दव्वाणंतए, गणणाणंतए, पएसाणंतए, एगतोणंतए, दुहतोणंतए, देसवित्थाराणंतए, सव्ववित्थाराणंतए सासताणंतए।

६६. अनन्त दस प्रकार का है, जैसे–(१) **नाम–अनन्त**–किसी वस्तु का 'अनन्त' नाम रखना। (२) **स्थापना–अनन्त**–किसी वस्तु मे 'अनन्त' शब्द की स्थापना करना। (३) **द्रव्य–अनन्त**–परिमाण की दृष्टि से 'अनन्त' का व्यवहार करना। (४) **गणना–अनन्त**–गिनने योग्य वस्तु के बिना ही एक, दो, तीन, सख्यात, असख्यात अनन्त, इस प्रकार गिनना। (५) **प्रदेश–अनन्त**–प्रदेशो की अपेक्षा 'अनन्त' की गणना। (६) **एकतःअनन्त**–एक ओर से अनन्त, जैसे अतीतकाल की अपेक्षा अनन्त समयो की गणना। (७) **द्विधा–अनन्त**–दोनो ओर से अनन्त, जैसे–अतीत और अनागत दोनो काल की अपेक्षा अनन्त समयो की गणना। (८) **देश–विस्तार अनन्त**–दिशा या प्रतर की दृष्टि से अनन्त गणना। (९) **सर्वविस्तार अनन्त**–क्षेत्र की व्यापकता की दृष्टि से अनन्त। जैसे आकाशास्तिकाय के अनन्त प्रदेश है। (१०) **शाश्वत–अनन्त**–शाश्वतता या नित्यता की दृष्टि से अनन्त। जैसे जीव, अजीव आदि द्रव्य अनादि अनन्त है।

66. *Anant* (endless or infinite) is of five kinds—(1) *naam-anant*—whose name is Anant (2) *sthapana-anant*—to install the word *'anant'* in some thing (3) *dravya-anant*—use of the term *anant* in terms of measure (4) *ganana-anant*—counting of numbers from one to infinite in absence of countable things (5) *pradesh-anant*—counting endless space-points. (6) *Ekatah-anant*—unidirectional infinite such as counting

infinite *Samayas* of the past (7) *Dvidha-anant*—bi-directional infinite such as counting infinite *Samayas* of the past as well as the future (8) *Desh-vistar-anant*—the endlessness of the expanse of space in one specific direction (9) *Sarva-vistar-anant*—the endlessness of the overall expanse of space For example *Akashastikaya* has infinite space-points (10) *Shashvat-anant*—eternally infinite, such as entities like soul that are without a beginning or an end

पूर्ववस्तु-पद PURVAVASTU-PAD (SEGMENT OF PURVAVASTU)

६७. उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पण्णत्ता। ६८. अत्थि-णत्थिप्पवायपुव्वस्स णं दस चूलवत्थू पण्णत्ता।

६७. उत्पादपूर्व (प्रथम पूर्व) के वस्तु नामक (बडे अध्ययन) दस अध्ययन है। ६८. अस्ति-नास्तिप्रवादपूर्व (चौथा पूर्व) के चूलावस्तु नामक दस लघु अध्ययन है।

67. The *Vastu* division of *Utpaad Purva* (the first volume of the fourteen volume subtle canon) has ten chapters **68** *Asti-nastipravada Purva* (the fourth *Purva*) has ten small chapters called *Chulavastu*

प्रतिसेवना-पद PRATISEVANA-PAD (SEGMENT OF MISCONDUCT)

६९. दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, तं जहा-

दप्प पमायऽणाभोगे, आउरे आवतीसु य।
संकिते सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा॥१॥ (संग्रहणी गाथा)

६९. प्रतिसेवना दश प्रकार की है, जैसे-(१) दर्पप्रतिसेवना, (२) प्रमादप्रतिसेवना, (३) अनाभोगप्रतिसेवना, (४) आतुरप्रतिसेवना, (५) आपत्प्रतिसेवना, (६) शकितप्रतिसेवना, (७) सहसाकरणप्रतिसेवना, (८) भयप्रतिसेवना, (९) प्रदोषप्रतिसेवना, (१०) विमर्शप्रतिसेवना।

69. *Pratisevana* (misconduct) is of ten kinds—(1) *darp-pratisevana*, (2) *pramad-pratisevana*, (3) *anabhog-pratisevana*, (4) *aatur-pratisevana*, (5) *apatpratisevana*, (6) *shankit-pratisevana*, (7) *sahasakaran-pratisevana*, (8) *bhayapratisevana*, (9) *pradosh-pratisevana*, and (10) *vimarsh-pratisevana*

विवेचन-गृहीत व्रत की मर्यादा के प्रतिकूल आचरण करने को प्रतिसेवना कहते है। प्रतिसेवनाओ का स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

(१) **दर्पप्रतिसेवना**-दर्प या उद्धत भाव से गमन आदि क्रियाएँ करना।

(२) **प्रमादप्रतिसेवना**-विकथा आदि प्रमाद के वश दोष सेवन करना।

(३) **अनाभोगप्रतिसेवना**-विस्मृतिवश अनजाने या उपयोगशून्यता से अयोग्य आचरण करना।

(४) **आतुरप्रतिसेवना**—भूख-प्यास आदि से पीडित होकर अयोग्य वस्तु का सेवन करना।

(५) **आपत्प्रतिसेवना**—आपत्ति आने पर अयोग्य कार्य करना।

(६) **शंकितप्रतिसेवना**—एषणीय वस्तु मे भी शका होने पर उसका सेवन करना।

(७) **सहसाकरणप्रतिसेवना**—अकस्मात् किसी अयोग्य वस्तु का सेवन हो जाना।

(८) **भयप्रतिसेवना**—भय-वश किसी अयोग्य वस्तु का सेवन करना।

(९) **प्रदोषप्रतिसेवना**—द्वेष-वश जीव-घात आदि करना।

(१०) **विमर्शप्रतिसेवना**—शिष्यो की परीक्षा के लिए किसी अयोग्य कार्य को करना।

(इन प्रतिसेवनाओ के अन्य उपभेदो का विस्तृत विवेचन निशीथभाष्य आदि से जानना चाहिए।)

Elaboration—transgressing the discipline of accepted vows is called *pratisevana* (misconduct), details are as follows—

(1) Darp-pratisevana—to indulge in actions, including movement, with arrogance or pride

(2) Pramad-pratisevana—to commit faults out of stupor, such as loose talk

(3) Anabhog-pratisevana—to indulge in misconduct inadvertently or due to lack of enthusiasm

(4) Aatur-pratisevana—to consume harmful things due to torment of hunger and thirst

(5) Apatpratisevana—to indulge in misconduct under dire circumstances

(6) Shankit-pratisevana—to avoid acceptable things due to some doubt

(7) Sahasakaran-pratisevana—accidental use of unacceptable things

(8) Bhayapratisevana—to use unacceptable things out of fear

(9) Pradosh-pratisevana—to kill or harm beings out of animosity

(10) Vimarsh-pratisevana—to indulge in proscribed act in order to test disciples *(More details about these and other kinds of misconduct can be seen in works like Nisheeth Sutra.)*

आलोचना-पद ALOCHANA-PAD (SEGMENT OF SELF-CRITICISM)

७०. दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, तं जहा—

आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, जं दिट्ठं बायरं च सुहुमं वा।
छण्णं सद्दाउलगं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी॥१॥

७०. आलोचना के दस दोष है, जैसे-(१) आकम्प्य या आकम्पित दोष, (२) अनुमन्य या अनुमानित दोष, (३) दृष्टदोष, (४) बादरदोष, (५) सूक्ष्म दोष, (६) छन्न दोष, (७) शब्दाकुलित दोष, (८) बहुजन दोष, (९) अव्यक्त दोष, (१०) तत्सेवी दोष।

70. There are ten faults related to *alochana* (self-criticism) (1) *aakampya* or *aakampit dosh*, (2) *anumanya* or *anumanit dosh*, (3) *drisht dosh*, (4) *badar dosh*, (5) *sukshma dosh*, (6) *chhanna dosh*, (7) *shabdakulit dosh*, (8) *bahuja dosh*, (9) *avyakt dosh*, and (10) *tatsevi dosh*

विवेचन—दोष-विशुद्धि के लिए आलोचना की जाती है, इसलिए आलोचना करने वाले का हृदय वालक के समान सरल और अहकार रहित होना चाहिए। माया सहित की गई आलोचना से आत्म-शुद्धि नही होती। प्रस्तुत सूत्र मे दस कारण बताये है, जिनसे आलोचना करता हुआ भी व्यक्ति आराधक नही हो सकता।

(१) **आकंपइत्ता**—गुरु प्रसन्न होने पर थोडा प्रायश्चित्त देगे, यह सोचकर उन्हे सेवा आदि से प्रसन्न करके फिर उनके पास दोषो की आलोचना करना।

(२) **अणुमाणइत्ता**—दोषो का अनुमान करके आलोचना करना, जैसे कि बिल्कुल छोटा अपराध वताने से गुरु थोडा दण्ड देगे, यह सोचकर अपने अपराध को बहुत छोटा करके बताना।

(३) **जं दिट्ठं**—जिस दोष का सेवन करते हुए गुरु आदि ने देख लिया हो, उसी की आलोचना करना, अन्य की नही।

(४) **बायरं**—बडे-बडे दोषो की आलोचना करना।

(५) **सुहुमं**—छोटे-छोटे दोषो की आलोचना करना। इसके पीछे माया कपट भाव ही रहता है। क्योकि दूसरे यह समझेगे कि जो छोटे-छोटे दोषो की भी आलोचना करता है, वह बडे-बडे दोषो की आलोचना क्यो न करेगा ? यह विश्वास उत्पन्न कराने के लिए सूक्ष्म दोषो की ही आलोचना करना।

(६) **छन्न**—अधिक लज्जा के कारण इस तरह गुनगुनाकर आलोचना करना, जिसे आचार्यादि भली-भाँति सुन न सके।

(७) **सद्दाउलग**—जोर-जोर से बोलकर आलोचना करना, जिस आलोचना को अनधिकारी भी सुन सके।

(८) **बहुजण**—एक ही दोष की आलोचना बहुत से गुरुओ के पास जाकर करना।

(९) **अव्वत्त**—जिसको प्रायश्चित्त-विधान का ज्ञान नही है, उसके पास आलोचना करना।

(१०) **तस्सेवी**—जिस दोष की आलोचना करनी है, उसी दोष का सेवन करने वाले के पास आलोचना करना। *(विस्तार व तुलना के लिए देखे ठाण, पृष्ठ ९७८)*

Elaboration—Self criticism is aimed at atonement of fault. Therefore, the attitude of the atoner should be child-like simple and free of conceit

Deceitful self-criticism does not lead to spiritual purity This aphorism states ten reasons due to which an atoner fails to become a spiritualist—

(1) *Aakampya* or *aakampit dosh*—First to please the guru with the intention that when pleased he will prescribe mild atonement, and then to reveal committed faults before him

(2) *Anumanya* or *anumanit dosh*—to indulge in criticism of imaginary faults, for example using imagination to reduce the gravity of one's faults before the guru with the assumption that for a minor fault he will prescribe a minor atonement

(3) *Drisht dosh*—to do self-criticism only of the faults that the guru has seen committing and avoiding all others

(4) *Badar dosh*—to do self-criticism only of grosser faults and not others

(5) *Sukshma dosh*—to do self-criticism specially of minor faults for the purpose of confidence building that when such minor faults have been taken care of the grosser faults must naturally have been taken into account

(6) *Chhanna dosh*—to whisper while doing self-criticism before the guru so that it is hard for him to hear clearly

(7) *Shabdakulit Dosh*—to do self-criticism in loud voice so that even the unconcerned are able to hear

(8) *Bahujan Dosh*—to do self-criticism of one fault before many gurus

(9) *Avyakt Dosh*—to do self-criticism before a person who has no knowledge of the procedures of atonement

(10) *Tatsevi Dosh*—to do self-criticism before a person who himself indulges in the same fault *(for more details and comparative discussion see Thanam, p 978)*

७१. दसहिं ठाणेहिं, संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोएत्तए, तं जहा—जाइसंपण्णे, कुलसंपण्णे, (विणयसंपण्णे, णाणसंपण्णे, दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे), खंते, दंते, अमायी, अपच्छाणुतावी।

७१. दस स्थानो से सम्पन्न अनगार अपने दोषो की आलोचना करने के योग्य होता है, जैसे (१) जातिसम्पन्न, (२) कुलसम्पन्न, (३) विनयसम्पन्न, (४) ज्ञानसम्पन्न, (५) दर्शनसम्पन्न, (६) चारित्रसम्पन्न, (७) क्षान्त (क्षमासम्पन्न), (८) दान्त (इन्द्रिय-जयी), (९) अमायावी (मायाचार-रहित), (१०) अपश्चात्तापी (पीछे पश्चात्ताप नही करने वाला)।

71. An *anagar* (ascetic) endowed with ten *sthaans* (qualities) is himself qualified to perform *alochana* (criticism and atonement) for his own faults—(1) *Jati sampanna* (of good maternal lineage), (2) *Kula sampanna* (of good paternal lineage), (3) *Vinaya sampanna* (endowed with modesty), (4) *Jnana sampanna* (endowed with knowledge), (5) *Darshan sampanna* (endowed with perception/faith), (6) *Chaaritra sampanna* (endowed with right conduct), (7) *Kshant* (endowed with forgiveness), (8) *Daant* (endowed with absolute control over sense organs), (9) *Amayavi* (free of deceit) and (10) *Apashchatapi* (who does not consequently repent)

७२. दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं, आहारवं, ववहारवं, ओवीलए, पकुव्वए, अपरिस्साई, णिज्जावए, अवायदंसी, पियधम्मे, दढधम्मे।

७२. दस स्थानो से सम्पन्न अनगार आलोचना देने के योग्य होता है, जैसे–(१) **आचारवान्**—जो ज्ञान आदि पच आचारो से युक्त हो। (२) **आधारवान्**—आलोचना के द्वारा बताये हुए अतिचारो को मन मे धारण करने वाला हो। (३) **व्यवहारवान्**—जो पॉच व्यवहारो का ज्ञाता हो। (४) **अपव्रीडक**—आलोचना करने वाले की लज्जा या सकोच छुडाकर उसमे आलोचना करने का साहस उत्पन्न करने वाला हो। (५) **प्रकारी**—अपराधी के आलोचना करने पर उसकी शुद्धि करने वाला हो। (६) **अपरिश्रावी**—आलोचना करने वाले के दोष दूसरो के सामने प्रकट करने वाला न हो। (७) **निर्यापक**—बडे प्रायश्चित्त को भी निर्वाह कर सके, ऐसा सहयोग देने वाला हो। (८) **अपायदर्शी**—सम्यक् आलोचना न करने के दुष्फलो को बताने वाला हो। (९) **प्रियधर्मी**—धर्म से प्रेम रखने वाला हो। (१०) **दृढ़धर्मा**—आपत्तिकाल मे भी धर्म मे दृढ रहने वाला हो।

72. An *anagar* (ascetic) endowed with ten *sthaans* (qualities) is qualified to prescribe *alochana* (criticism and atonement) to others—(1) *Aacharvan*—who is endowed with five limbs of right conduct, namely knowledge, perception/faith, conduct, austerities and potency of perseverance (2) *Aadhaarvan*—who knows about all the transgressions requiring atonement by the one prepared for atonement (3) *Vyavaharvan*—who has knowledge of the five kinds of *vyavahar* (behaviour or conduct), namely *Agam, Shrut, Ajna, Dharana* and *jeet*. (4) *Apavridak*—who is capable of imparting courage to rise above shyness and hesitation in order to perform atonement properly (5) *Prakari*—who can formalize purification after atonement is concluded. (6) *Aprishraavi*—who does not reveal the faults of the defaulter to others (7) *Niryaapak*—who can cooperate even during extended atonement (8) *Apaayadarshi*—who can indicate the

consequences of breach in and improper performance of prescribed atonement (9) *Priyadharmi*—who loves religion (10) *Dridhadharma*—who is resolute in observing codes even under adverse conditions

प्रायश्चित्त–पद PRAYASHCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)

७३. दसविधे पायच्छित्ते, तं जहा–आलोयणारिहे, (पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे), अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे।

७३. प्रायश्चित्त दस प्रकार का है, जैसे–(१) **आलोचना के योग्य**–गुरु के सामने निवेदन करने से ही जिसकी शुद्धि हो। (२) **प्रतिक्रमण के योग्य**–'मेरा दुष्कृत मिथ्या हो' इस प्रकार के उच्चारण से जिस दोष की शुद्धि हो। (३) **तदुभय के योग्य**–जिसकी शुद्धि आलोचना और प्रतिक्रमण दोनो से हो। (४) **विवेक के योग्य**–जिसकी शुद्धि ग्रहण किये गये अशुद्ध भक्त-पानादि के त्याग से हो। (५) **व्युत्सर्ग के योग्य**–जिस दोष की शुद्धि कायोत्सर्ग से हो। (६) **तप के योग्य**–जिस दोष की शुद्धि अनशनादि तप के द्वारा हो। (७) **छेद के योग्य**–जिस दोष की शुद्धि दीक्षा-पर्याय के छेद से हो। (८) **मूल के योग्य**–जिस दोष की शुद्धि पुन दीक्षा देने से हो। (९) **अनवस्थाप्य के योग्य**–जिस दोष की शुद्धि तपस्यापूर्वक पुन दीक्षा देने से हो। (१०) **पाराचिक के योग्य**–भर्त्सना एव अवहेलनापूर्वक एक बार सघ से पृथक् कर पुन दीक्षा देने से जिस दोष की शुद्धि हो।

73. *Prayashchit* (atonement) is of ten kinds—(1) requiring *alochana* (criticism), (2) requiring *pratikraman* (critical review followed by uttering—'may my misdeeds be undone'), (3) *tadubhaya* (requiring both *alochana* and *pratikraman*) (4) requiring *vivek* (sagacity of rejecting the impure), (5) requiring *vyutsarg* (abstainment and dissociation), (6) requiring *tap* (austerities including fasting), (7) requiring *chhed* (termination of ascetic state), (8) requiring *mool* (reinitiation), (9) requiring *anavasthapya* (reinitiation after observing prescribed austerities) and (10) requiring *paranchik* (reinitiation after censuring and summarily expelling once from the *Sangh*)

विवेचन–प्रायश्चित्त एक प्रकार की चिकित्सा है। जिस प्रकार चिकित्सा रोगी को कष्ट देने के लिए नही, अपितु रोग निवारण के लिए की जाती है। उसी प्रकार प्रायश्चित्त चिकित्सा के साथ आचार्यों ने सात प्रयोजन बताये है–(१) प्रमादजनित दोषो का निराकरण, (२) भावो की प्रसन्नता, (३) शल्य रहित होना, (४) अव्यवस्था का निराकरण, (५) मर्यादा का पालन, (६) सयम की दृढता और (७) आराधना। निशीथभाष्य मे बताया है–तीर्थंकर धन्वन्तरि है, प्रायश्चित्त प्राप्त साधु रोगी, अपराध रोग और प्रायश्चित्त औषध है। *(निशीथभाष्य गाथा ६५०७)*

Elaboration—Atonement is a kind of treatment As treatment is given to a patient for curing his disease and not to cause him pain, in the same

way atonement is for spiritual cure *Acharyas* have given seven objects along with cure by atonement—(1) for removing faults caused by stupor, (2) for gaining blissful feeling, (3) for being free of the thorns of sin, (4) for removing disorder, (5) for following discipline, (6) for resoluteness in ascetic practices and (7) for accomplishing spiritual goals (*Tattvarth Vartik*) It is mentioned in *Nisheeth Bhashya* that *Tirthankar* is a doctor, an ascetic requiring atonement is a patient, fault is a disease and atonement is a medicine *(Nisheeth Bhashya, verse 6500)*

मिथ्यात्व–पद MITHYATVA-PAD (SEGMENT OF UNRIGHTEOUSNESS)

७४. दसविधे मिच्छत्ते पण्णत्ते, तं जहा–अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा, उम्मग्गे मग्गसण्णा, मग्गे उम्मग्गसण्णा, अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा, असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा, अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्तेसु अमुत्तसण्णा।

७४ मिथ्यात्व दस प्रकार का है, जैसे–(१) अधर्म को धर्म मानना, (२) धर्म को अधर्म मानना, (३) उन्मार्ग को सुमार्ग मानना, (४) सुमार्ग को उन्मार्ग मानना, (५) अजीव को जीव मानना, (६) जीव को अजीव मानना, (७) असाधुओ को साधु मानना, (८) साधुओ को असाधु मानना, (९) अमुक्तो को मुक्त मानना, (१०) मुक्तो को अमुक्त मानना।

74. *Mithyatva* (unrighteousness) is of ten kinds—(1) to accept *adharma* (misconduct or irreligiosity) as *dharma* (right conduct or religiosity), (2) to accept *dharma* (right conduct or religiosity) as *adharma* (misconduct or irreligiosity), (3) to accept *unmarg* (wrong *path*) as *sumarg* (right *path*), (4) to accept *sumarg* (right *path*) as unmarg (wrong *path*), (5) to accept *ajiva* (non-being or matter) as *jiva* (being or soul), (6) to accept *jiva* (being or soul) as *ajiva* (non-being or matter), (7) to accept *asadhu* (non-ascetic or impious) as *sadhu* (ascetic or pious), (8) to accept *sadhu* (ascetic or pious) as *asadhu* (non-ascetic or impious), (9) to accept *amukta* (non-liberated) as *mukta* (liberated) and (10) to accept *mukta* (liberated) as *amukta* (non-liberated)

तीर्थंकर वासुदेव–पद TIRTHANKAR VAASUDEVA-PAD (SEGMENT OF TIRTHANKAR VAASUDEVA)

७५. चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे प्पहीणे। ७६. धम्मे णं अरहा दस वाससयहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे प्पहीणे। ७७. णमी णं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे प्पहीणे।

७५. अर्हत् चन्द्रप्रभ दस लाख पूर्व की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध यावत् समस्त दु खो से मुक्त हुए। ७६. अर्हत् धर्मनाथ दस लाख पूर्व की पूर्ण आयु भोगकर सिद्ध यावत् समस्त दु खो से मुक्त हुए। ७७. अर्हत् नमि दस हजार वर्ष की पूर्ण आयु भोगकर सिद्ध यावत् समस्त दु:खो से मुक्त हुए।

75. Arhat Chandraprabh became perfect (*Siddha*), and so on up to and ended all miseries after concluding a life span of ten lac (hundred thousand) *Purva* **76.** Arhat Dharmanaath became perfect (*Siddha*), and so on up to and ended all miseries after concluding a life span of ten lac (hundred thousand) *Purva* **77.** Arhat Nami became perfect (*Siddha*), and so on up to and ended all miseries after concluding a life span of ten thousand years

७८. पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालित्ता छट्टीए तमाए पुढवीए णेरयत्ताए उववण्णे।

७८. पुरुषसिह नाम के पाँचवे वासुदेव दस लाख वर्ष की पूर्ण आयु भोगकर 'तमा' नाम की छठी पृथिवी मे नारक रूप से उत्पन्न हुए।

78. Purush Simha, the fifth *Vaasudev*, reincarnated as an infernal being in Tama, the sixth *Prithvi*, after concluding a life span of ten lac (hundred thousand) years

७९. णेमी णं अरहा दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे प्पहीणे।

७९. अर्हत् नेमि के शरीर की ऊँचाई दस धनुष की थी। वे एक हजार वर्ष की आयु पाल कर सिद्ध यावत् समस्त दु खो से मुक्त हुए।

79. Arhat Nemi was ten *Dhanush* tall and he became perfect (*Siddha*), and so on up to and ended all miseries after concluding a life span of one thousand years

८०. कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे।

८१. वासुदेव कृष्ण के शरीर की ऊँचाई दस धनुष की थी। वे दस सौ (१०००) वर्ष की पूर्णायु पालकर 'वालुकाप्रभा' नाम की तीसरी पृथिवी मे उत्पन्न हुए।

80. Vaasudeva Krishna was ten *Dhanush* tall and he reincarnated as an infernal being in Balukaprabha, the third *Prithvi*, after concluding a life span of ten hundred (1000) years

भवनवासि-पद BHAVAN-VASI-PAD (SEGMENT OF ABODE DWELLING GODS)

८१. दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारा जाव थणियकुमारा।

८१. भवनवासी देव दस प्रकार के है, जैसे—(१) असुरकुमार, (२) नागकुमार, (३) सुपर्णकुमार, (४) विद्युत्कुमार, (५) अग्निकुमार, (६) द्वीपकुमार, (७) उदधिकुमार, (८) दिशाकुमार, (९) वायुकुमार, (१०) स्तनितकुमार।

81. *Bhavan-vasi* gods (abode dwelling gods) are of ten kinds—(1) Asur-kumar, (2) Naag-kumar, (3) Suparn-kumar, (4) Vidyut-kumar, (5) Agni-kumar, (6) Dveep-kumar, (7) Udadhi-kumar, (8) Disha-kumar, (9) Vayu-kumar, and (10) Stanit-kumar

८२. एएसि णं दसविधाणं—भवणवासीणं देवाणं दस चेइयरुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—

अस्सत्थ सत्तिवण्णे, सामलि उंबर सिरीस दहिवण्णे।
वंजुल—पलास—वग्घा, तते य कणियाररुक्खे॥१॥ (संग्रहणी—गाथा)

८२ इन दसो प्रकार के भवनवासी देवो के दस चैत्यवृक्ष होते है-(१) **असुरकुमार का**—अश्वत्थ (पीपल)। (२) **नागकुमार का**—सप्तपर्ण (सात पत्ते वाला) वृक्ष विशेष। (३) **सुपर्णकुमार का**—शाल्मली (सेमल) वृक्ष। (४) **विद्युत्कुमार का**—उदुम्बर (गूलर) वृक्ष। (५) **अग्निकुमार का**—शिरीष (सिरीस) वृक्ष। (६) **द्वीपकुमार का**—दधिपर्ण वृक्ष। (७) **उदधिकुमार का**—वजुल (अशोक वृक्ष)। (८) **दिशाकुमार का**—पलाश वृक्ष। (९) **वायुकुमार का**—व्याघ्र (लाल एरण्ड) वृक्ष। (१०) **स्तनितकुमार का**—कर्णिकार (कनेर) वृक्ष।

82. These ten kinds of abode dwelling gods have ten kinds of *Chaityavriskhas* (temple-trees)—(1) *Ashvattha* tree (Ficus religiosa) of Asur-kumar, (2) *Saptaparna* tree (Alstonia scholaris) of Naag-kumar, (3) *Shalmali* tree (silk-cotton, Bombax ceiba) of Suparn-kumar, (4) *Udumbar* tree (Ficus glomerata) of Vidyut-kumar, (5) *Shirish* tree (Acacia) of Agni-kumar, (6) *Dadhiparna* tree of Dveep-kumar, (7) *Vanjul* tree (Ashoka) of Udadhi-kumar, (8) *Palash* tree (Butea monosperma) of Disha-kumar, (9) *Vyaghra* tree (red castor-oil plant) of Vayu-kumar, and (10) *Karnikaar* tree (kaner, oleander) of Stanit-kumar

सौख्य-पद SAUKHYA -PAD (SEGMENT OF JOY)

८३. दसविधे सोक्खे पण्णत्ते, तं जहा—

आरोग्ग दीहमाउं, अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे।
अत्थि सुहभोग णिक्खम्ममेव तत्तो अणबाहे॥१॥

८३. सुख दस प्रकार का है, जैसे—(१) आरोग्य (नीरोगता)। (२) दीर्घ आयुष्य। (३) आढ्यता (धन की सम्पन्नता)। (४) काम (शब्द और रूप का सुख)। (५) भोग (गन्ध, रस और स्पर्श का सुख)।


दस भवनपति देवों के
असुरकुमार
नागकुमार
विद्युतकुमार
उदधिकुमार
दिशाकुमार
स्तनित
कुमार

चित्र परिचय १५	Illustration No. 15

भवनपति देवों के चैत्य वृक्ष और चिह्न

भवनपति जाति के दस देवों के चैत्य वृक्ष (उनके प्रिय वृक्ष) तथा उनके मुकुटों में बने चिह्नों का दिग्दर्शन प्रस्तुत चित्र में है। इनके नाम आदि इस प्रकार है

	नाम	वृक्ष	चिह्न
(१)	असुरकुमार	पीपल	चूडामणि रत्न
(२)	नागकुमार	सप्तपर्ण	नागफन
(३)	सुपर्णकुमार	सेमल	गरुड
(४)	विद्युत्कुमार	उदुम्बर	वज्र
(५)	अग्निकुमार	शिरीष	कलश
(६)	द्वीपकुमार	दधिपर्ण	सिंह
(७)	उदधिकुमार	अशोक	अश्व
(८)	दिशाकुमार	पलाश	हाथी
(९)	वायुकुमार	लाल एरण्ड	मकर
(१०)	स्तनितकुमार	कनेर	सिकोरा

—स्थानांग १० सूत्र ८२ प्रज्ञापना पद २

CHAITYA VRIKSHAS AND SYMBOLS OF BHAVAN-VASI GODS

This illustration presents chaitya vrikshas (the trees each one likes) of ten kinds of Bhavan-vasi gods with their symbols drawn on their crowns. Their names are as follows --

	Gods	Trees	Symbols
(1)	Asur-kumar	Pipal	Chudamani
(2)	Naag-kumar	Saptaparna	Snake hood
(3)	Suparn-kumar	Semal	Garud
(4)	Vidyut-kumar	Udumbar	Vajra
(5)	Agni-kumar	Shirish	Urn
(6)	Dveep-kumar	Dadhiparna	Lion
(7)	Udadhi-kumar	Ashoka	Horse
(8)	Disha-kumar	Palash	Elephant
(9)	Vayu-kumar	Red Erand	Crocodile
(10)	Stanit-kumar	Kaner	Earthen cup

—Sthaan 10 Sutra 82 and Prajnapana verse 2

(६) **सन्तोष**–निर्लोभता (अल्प इच्छा)। (७) **अस्ति**–जब जिस वस्तु की आवश्यकता हो, तब उसकी पूर्ति हो जाना। (८) **शुभभोग**–सुन्दर, रम्य भोगो की प्राप्ति होना। (९) **निष्क्रमण**–प्रव्रजित होने का सुयोग मिलना। (१०) **अनाबाध**–जन्म-मृत्यु आदि की बाधाओ से रहित मुक्ति-सुख।

83. *Sukha* (joy) is of ten kinds—(1) *Aarogya* (good health), (2) *Deergh ayushya* (long life), (3) *Adhyata* (affluence), (4) *Kaam* (joys of sound and beauty), (5) *Bhog* (joys of smell, taste and touch), (6) *Santosh* (contentment), (7) *Asti* (fulfillment), (8) *Shubh-bhog* (pleasures and enjoyments), (9) *Nishkraman* (renunciation) and (10) *Anabadh* (freedom from obstacles of life and death, liberation)

उपघात-विशोधि-पद UPAGHAT-VISHODHI-PAD (SEGMENT OF IMPURITY AND PURITY)

८४. दसविधे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा–उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, (एसणोवघाते, परिकम्मोवघाते), परिहरणोवघाते, णाणोवघाते, दंसणोवघाते, चरित्तोवघाते, अचियत्तोवघाते, सारक्खणोवघाते।

८४. उपघात–(दोष सेवन से होने वाली चारित्र हानि) दस प्रकार का है–(१) उद्‌गमदोष–भिक्षा के उद्‌गम सम्बन्धी दोष से होने वाला उपघात, (२) उत्पादनादोष–भिक्षासम्बन्धी उत्पाद से होने वाला चारित्र का उपघात। (३) एषणादोष–गोचरी के दोष से होने वाला चारित्र का उपघात। (४) परिकर्मदोष–वस्त्र-पत्र आदि के सँवारने से होने वाला चारित्र का उपघात। (५) परिहरणदोष–अकल्प्य उपकरणो के उपभोग से होने वाला चारित्र का उपघात। (६) प्रमाद आदि से होने वाला ज्ञान का उपघात। (७) शका आदि से होने वाला दर्शन का उपघात। (८) समितियो के यथाविधि पालन न करने से होने वाला चारित्र का उपघात। (९) अप्रीति या अविनय से होने वाला विनय आदि गुणो का उपघात। (१०) सरक्षण-उपघात–शरीर, उपधि आदि मे मूर्च्छा रखने से होने वाला परिग्रह-विरमण का उपघात।

84. *Upaghat* (impairment of conduct due to impurity or fault) is of ten kinds—(1) *Udgamopaghat*—impairment of conduct due to faults of accepting alms (2) *Utpadanopaghat*—impairment of conduct due to faults of producing alms (3) *Eshanopaghat*—impairment of conduct due to faults of alms seeking (4) *Parikarmopaghat*—impairment of conduct due to faults related to extra care of garb, bowls and other ascetic equipment. (5) *Pariharanopaghat*—impairment of conduct due to using prohibited equipment (6) *Jnanopaghat*—Impairment of *jnana* (knowledge) due to stupor and other faults (7) *Darshanopaghat*—Impairment of *darshan* (perception/faith) due to doubt (8) *Chaaritropaghat*—Impairment of *chaaritra* (right conduct) due to improper observation of *samitis* (self regulation) (9) *Apriti-upaghat*—Impairment of virtues including *vinaya*

(modesty) due to aversion and immodesty (10) *Sanrakshanopaghat*—Impairment of *parigraha viraman* (vow of non-possession) due to fondness for body and possessions

८५. दसविधा विसोही पण्णत्ता, तं जहा–उग्गमविसोही, उप्पायविसोही, (एसणविसोही, परिकम्मविसोही, परिहरणविसोही, णाणविसोही, दंसणविसोही, चरित्तविसोही, अचियत्तविसोही), सारक्खणविसोही।

८५. विशोधि दस प्रकार की है–(१) **उद्गम–विशोधि**–उद्गम–सम्बन्धी दोषो की विशुद्धि। (२) **उत्पादना–विशोधि**–उत्पादन–सम्बन्धी दोषो की विशुद्धि। (३) **एषणा–विशोधि**–एषणा–सम्बन्धी दोषो की विशुद्धि। (४) **परिकर्म–विशोधि**–वस्त्र–पात्रादि सँवारने से उत्पन्न दोषो की विशुद्धि। (५) **परिहरण–विशोधि**–अकल्प्य उपकरणो के उपभोग से उत्पन्न दोषो की विशुद्धि। (६) **ज्ञान–विशोधि**–ज्ञान के अगो का यथाविधि अभ्यास न करने से लगे हुए दोषो की विशुद्धि। (७) **दर्शन–विशोधि**–सम्यग्दर्शन मे लगे हुए दोषो की विशुद्धि। (८) **चारित्र–विशोधि**–चारित्र मे लगे हुए दोषो की विशुद्धि। (९) **अप्रीति–विशोधि**–अप्रीति की विशुद्धि (१०) **सरक्षण–विशोधि**–सयम के साधनभूत उपकरणो मे मूर्च्छादि रखने से लगे हुए दोषो की विशुद्धि।

85. *Vishodhi* (purification) is of ten kinds (related to faults mentioned in preceding aphorism)—(1) *Udgam-vishodhi*—purification of faults of *Udgam* (2) *Utpadan-vishodhi*—purification of faults of *Utpadan* (3) *Eshana-vishodhi*—purification of faults of due to faults of *Eshana* (4) *Parikarm-vishodhi*—purification of faults of *Parikarm* (5) *Pariharan-vishodhi*—purification of faults of *Pariharan* (6) *Jnana-vishodhi*—Purification of faults related to *jnana* (7) *Darshan-vishodhi*—Purification of faults related to *darshan* (perception/faith) (8) *Chaaritra-vishodhi*—Purification of faults related to *chaaritra* (9) *Apriti-vishodhi*—Purification of faults related to *Apriti* (10) *Sanrakshan-vishodhi*—Purification of faults related to *Sanrakshan*

संक्लेश–असंक्लेश–पद SANKLESH-ASANKLESH-PAD (SEGMENT OF PERTURBED AND UNPERTURBED STATE OF MIND)

८६. दसविधे संकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा–उवहिसंकिलेसे, उवस्सयसंकिलेस, कसायसंकिलेसे, भत्तपाणसंकिलेसे, मणसंकिलेसे, वइसंकिलेसे, कायसंकिलेसे, णाणसंकिलेसे, दंसण–संकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे।

८६. सक्लेश–(मानसिक विक्षोभ व असमाधि) दस प्रकार का है–(१) **उपधि–संक्लेश**–वस्त्र–पात्रादि उपधि के निमित्त से होने वाला। (२) **उपाश्रय–सक्लेश**–उपाश्रय या निवास–स्थान के निमित्त से होने वाला। (३) **कषाय–संक्लेश**–क्रोधादि के निमित्त से होने वाला। (४) **भक्त–पान–**

संक्लेश–आहारादि के निमित्त से होने वाला। (५) मनःसंक्लेश–मन के उद्वेग से होने वाला। (६) वाक्-संक्लेश–वचन के निमित्त से होने वाला। (७) काय-संक्लेश–शरीर के निमित्त से होने वाला। (८) ज्ञान-संक्लेश–ज्ञान की अशुद्धि से होने वाला। (९) दर्शन-संक्लेश–दर्शन की अशुद्धि से होने वाला। (१०) चारित्र संक्लेश–चारित्र की अशुद्धि से होने वाला।

86. *Sanklesh* (perturbed state of mind) is of ten kinds—(1) *Upadhi-sanklesh* (that related to possessions), (2) *Upashraya-sanklesh* (that related to place of stay), (3) *Kashaya-sanklesh* (that related to passions like anger), (4) *Bhakt-paan-sanklesh* (that related to food and water), (5) *Manah-sanklesh* (that related to mind) (6) *Vak-sanklesh* (that related to speech), (7) *Kaya-sanklesh* (that related to body), (8) *Jnana-sanklesh* (that related to knowledge), (9) *Darshan-sanklesh* (that related to perception/faith) and (10) *Chaaritra-sanklesh* (that related to conduct)

८७. दसविधे असंकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा–उवहिअसंकिलेसे, उवस्सयअसंकिलेसे, कसायअसंकिलेसे, भत्तपाणअसंकिलेसे, मणअसंकिलेसे, वइअसंकिलेसे, कायअसंकिलेसे, णाणअसंकिलेसे, दंसणअसंकिलेसे, चरित्तअसंकिलेसे।

८७. असक्लेश–(प्रत्येक स्थिति मे मन की प्रसन्नता) दस प्रकार का है–(१) उपधि-असक्लेश, (२) उपाश्रय-असक्लेश, (३) कषाय-असक्लेश, (४) भक्त-पान-असक्लेश, (५) मन असक्लेश, (६) वाक्-असक्लेश, (७) काय-असक्लेश, (८) ज्ञान-असक्लेश, (९) दर्शन-असक्लेश, (१०) चारित्र असक्लेश।

87. *Asanklesh* (unperturbed state of mind) is of ten kinds—(1) *Upadhi-asanklesh* (that related to possessions), (2) *Upashraya-asanklesh* (that related to place of stay), (3) *Kashaya-asanklesh* (that related to passions like anger), (4) *Bhakt-paan-asanklesh* (that related to food and water), (5) *Manah-asanklesh* (that related to mind) (6) *Vak-asanklesh* (that related to speech), (7) *Kaya-asanklesh* (that related to body), (8) *Jnana-asanklesh* (that related to knowledge), (9) *Darshan-asanklesh* (that related to perception/faith) and (10) *Chaaritra-asanklesh* (that related to conduct)

बल-सूत्र BAL-PAD (SEGMENT OF STRENGTH)

८८. दसविधे बले पण्णत्ते, तं जहा–सोतिंदियबले, (चक्खिंदियबले, घाणिंदियबले, जिब्भिंदियबले), फासिंदियबले, णाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले।

८८. बल दस प्रकार का है–(१) श्रोत्रेन्द्रिय-बल। (२) चक्षुरिन्द्रिय-बल। (३) घ्राणेन्द्रिय-बल। (४) रसनेन्द्रिय-बल। (५) स्पर्शनेन्द्रिय-बल (पाँचो इन्द्रियो की पर्याप्त शक्ति को यहाँ बल कहा है)। (६) ज्ञानबल। (७) दर्शनबल। (८) चारित्रबल। (९) तपोबल। (१०) वीर्यबल।

88. *Bal* (strength) is of ten kinds—(1) *shrotrendriya-bal*, (2) *chakshurindriya-bal*, (3) *ghranendriya-bal*, (4) *rasanendriya-bal*, (5) *sparshanendriya-bal*, (here bal means full capacity of sense organs), (6) *jnana-bal*, (7) *darshan-bal*, (8) *chaaritra-bal*, (9) *tapo-bal* and (10) *virya-bal* (strength of knowledge, perception/faith, conduct, austerities and potency of endeavour)

भाषा–पद BHASHA-PAD (SEGMENT OF SPEECH OR LANGUAGE)

८९. दसविहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा–

जणवय सम्मय ठवणा, णामे रूवे पडुच्चसच्चे य।
ववहार भाव जोगे, दसमे ओवम्मसच्चे य॥१॥ (संग्रहणी गाथा)

८९. सत्य दस प्रकार का है, जैसे–

(१) **जनपद–सत्य**–जिस जनपद के निवासी जिस वस्तु के लिए जो शब्द बोलते है, उसे वहाँ पर बोलना। जैसे–कन्नड देश मे जल के लिए 'नीरू' और तमिल मे 'तण्णी' बोलना।

(२) **सम्मत–सत्य**–जिस वस्तु के लिए जो शब्द रूढ है, उसे ही बोलना। जैसे–जल मे उत्पन्न कमल को पकज बोलते है, किन्तु मेढक को नही।

(३) **स्थापना–सत्य**–निराकार वस्तु मे साकार वस्तु की स्थापना कर बोलना। जैसे–शतरज की गोटो को हाथी, ऊँट, वजीर आदि कहना।

(४) **नाम–सत्य**–गुणरहित होने पर भी जिसका जो नाम है, उसे उसी नाम से पुकारना। जैसे–निर्धन को लक्ष्मीनाथ कहना।

(५) **रूप–सत्य**–किसी रूप या वेष के धारण करने से उसे वैसा बोलना। जैसे–स्त्री वेषधारी पुरुष को स्त्री कहना।

(६) **प्रतीत्य–सत्य**–अपेक्षा से बोला गया वचन प्रतीत्य–सत्य कहलाता है। जैसे–अनामिका अगुली को कनिष्ठा की अपेक्षा बडी कहना और मध्यमा की अपेक्षा छोटी कहना।

(७) **व्यवहार–सत्य**–लोक–व्यवहार मे बोले जाने वाले शब्द व्यवहार–सत्य कहलाते है। जैसे–पर्वत जलता है। वास्तव मे पर्वत नही जलता, किन्तु उसके ऊपर स्थित वृक्ष आदि जलते है।

(८) **भाव–सत्य**–व्यक्त पर्याय के आधार से बोला जाने वाला सत्य। जैसे–काक के भीतर रक्त–माँस आदि अनेक वर्ण की वस्तुएँ होने पर भी उसे 'काला' कहना।

(९) **योग–सत्य**–किसी वस्तु के सयोग से उसे उसी नाम से बोलना। जैसे–दण्ड के सयोग से पुरुष को दण्डी कहना।

(१०) **औपम्य–सत्य**–किसी वस्तु की उपमा से उसे वैसा कहना। जैसे–चन्द्र के समान सौम्य मुख होने से चन्द्रमुखी कहना।

89. *Satya* (truth) is of ten kinds—(1) *Janapad-satya*—to use area specific terminology used by the inhabitants of that area. For example, to use the terms *niru* and *tanni* for water in Karnatak and Tamilnadu respectively

(2) *Sammat-satya*—to use the popular terminology For example the word *pankaj* (mud-born) is popularly used for lotus and not for frog.

(3) *Sthapana-satya*—to use terms where name of a thing with form is installed on formless thing For example chess pieces are called king and queen

(4) *Naam-satya*—to call someone by his name although the name does not bear any resemblance with his virtues For example to call someone by his name Laxmipati (owner of wealth) although he is poor

(5) *Rupa-satya*—to call someone by virtue of his dress or appearance For example to call a man, disguised as woman, a woman

(6) *Pratitya-satya*—to use relative terminology For example to call the ring finger as bigger finger with reference to the little finger and smaller finger with reference to the middle finger

(7) *Vyavahar-satya*—to use common parlance For example 'a burning mountain' is commonly used phrase although what burns is vegetation or something else but not the mountain

(8) *Bhaava-satya*—to speak on the basis of evident or apparent reality For example to call a crow black although it also contains blood, flesh and other things of other colours.

(9) *Yoga-satya*—to use association based terminology For example to call person dandi (staff bearer) because he carries a dand (staff)

(10) *Aupamya-satya*—to use metaphoric terminology For example to call a woman Chandramukhi (moon-faced) because her face is smooth as the moon.

१०. दसविधे मोसे पण्णत्ते, तं जहा–

कोधे माणे माया, लोभे पिज्जे तहेव दोसे य
हास भए अक्खाइय, उवघात णिस्सिते दसमे॥१॥

१०. मृषा (असत्य) वचन दस प्रकार के है–(१) क्रोध के निमित्त से असत्य बोलना। (२) मान के निमित्त से असत्य बोलना। (३) माया के निमित्त से असत्य बोलना। (४) लोभ के निमित्त से असत्य बोलना। (५) राग के निमित्त से असत्य बोलना। (६) द्वेष के निमित्त से असत्य बोलना। (७) हास्य के

निमित्त से असत्य बोलना। (८) भय के निमित्त से असत्य बोलना। (९) आख्यायिका अर्थात् कथा-कहानी को सरस या रोचक बनाने के निमित्त से असत्य मिश्रण कर बोलना। (१०) दूसरो को पीडा-कारक सत्य भी असत्य है। जैसे-काने को काना कहकर पुकारना। उपघात के निमित्त से मृषा या असत् वचन बोलना।

90. *Mrisha vachan* (false statement) is of ten kinds—(1) to tell a lie out of anger, (2) to tell a lie out of conceit, (3) to tell a lie out of deceit, (4) to tell a lie out of greed, (5) to tell a lie out of attachment, (6) to tell a lie out of aversion, (7) to tell a lie out of mirth, (8) to tell a lie out of fear, (9) to tell a lie in order to make a story interesting and (10) telling a hurting truth is also considered a lie For example to call a blind, blind Also to tell a lie with the intention of hurting or damaging some one

९१. दसविधे सच्चामोसे पण्णत्ते, तं जहा-उप्पण्णमीसए, विगतमीसए, उप्पण्णविगतमीसए, जीवमीसए, अजीवमीसए, जीवाजीवमीसए, अणंतमीसए, परित्तमीसए, अद्धामीसए, अद्धद्धामीसए।

९१. सत्यमृषा (मिश्र) वचन दस प्रकार के है-

(१) **उत्पन्न-मिश्रक-वचन**-उत्पत्ति से सबद्ध सत्य-मिश्रित असत्य वचन बोलना। जैसे-'आज इस गाँव मे दस बच्चे उत्पन्न हुए है।' ऐसा बोलने मे एक अधिक या हीन भी हो सकता है।

(२) **विगत-मिश्रक-वचन**-विगत अर्थात् मरण से सबद्ध सत्य-मिश्रित असत्य वचन बोलना। जैसे-'आज इस नगर मे दस व्यक्ति मर गये है।' ऐसा बोलने पर एक अधिक या हीन भी हो सकता है।

(३) **उत्पन्न-विगत-मिश्रक**-उत्पत्ति और मरण से सम्बद्ध सत्य मिश्रित असत्य वचन बोलना। जैसे-आज इस नगर मे दस बच्चे उत्पन्न हुए और दस ही बूढे मर गये है। ऐसा बोलने पर इससे एक-दो हीन या अधिक का जन्म या मरण भी सम्भव है।

(४) **जीव-मिश्रक-वचन**-अधिक जीते हुए कृमि-कीटो के समूह मे कुछ मृत जीवो के होने पर भी उसे जीवराशि कहना।

(५) **अजीव-मिश्रक-वचन**-अधिक मरे हुए कृमि-कीटो के समूह मे कुछ जीवितो के होने पर भी उसे मृत या अजीवराशि कहना।

(६) **जीव-अजीव-मिश्रक-वचन**-जीवित और मृत राशि मे सख्या को कहते हुए कहना कि इतने जीवित है और इतने मृत है। ऐसा कहने पर एक-दो के हीन या अधिक जीवित या मृत की भी सभावना है।

(७) **अनन्त-मिश्रक-वचन**-पत्रादि सयुक्त मूल कन्दादि वनस्पति मे 'यह अनन्तकाय है' ऐसा वचन बोलना अनन्त-मिश्रक मृषा वचन है। क्योंकि पत्रादि मे अनन्त नही, किन्तु परीत (सीमित सख्यात या असंख्यात) ही जीव होते है।

(८) **परीत-मिश्रक-वचन**-अनन्तकाय की अल्पता होने पर भी परीत वनस्पति मे परीत का व्यवहार करना।

(९) **अद्धा-मिश्रक-वचन**-अद्धा अर्थात् काल-विषयक सत्यासत्य वचन बोलना। जैसे-प्रयोजन विशेष के होने पर साथियो से सूर्य के अस्तगत होते समय 'रात हो गई' ऐसा कहना।

(१०) **अद्धा-अद्धा-मिश्रक-वचन**-अद्धा दिन या रातरूप काल के विभाग मे भी पहर आदि सम्बन्धी सत्यासत्य वचन बोलना। जैसे-एक पहर दिन बीतने पर भी प्रयोजनवश कार्य की शीघ्रता से 'मध्याह्न हो गया' कहना।

91. *Satya-mrisha* (mixture of truth and lie) is of ten kinds—(1) *Utpanna-mishrak-vachan*—to tell a lie mixed with truth with regard to origin For example—Ten children were born in this village today In this statement the uttered number could be less or more by one

(2) *Vigat-mishrak-vachan*—to tell a lie mixed with truth with regard to past or death For example—Ten persons died in this village today In this statement the uttered number could be less or more by one

(3) *Utpanna-vigat-mishrak-vachan*—to tell a lie mixed with truth with regard to birth and death For example—Ten children were born and ten persons died in this village today In this statement the uttered numbers of birth and death could be less or more by one or two

(4) *Jiva-mishrak-vachan*—to call a heap of living insects mixed with a few dead ones as a heap of beings

(5) *Ajiva-mishrak-vachan*—to call a heap of dead insects mixed with a few living ones as a heap of non-beings

(6) *Jiva-ajiva-mishrak-vachan*—to tell the number of living and dead beings in a mixed heap of living and dead In such statement the uttered numbers of living and dead could be less or more by one or two

(7) *Anant-mishrak-vachan*—to call bulbous roots mixed with leaves as *anant-kaya* (infinite-bodied) This is because leaves do not have anant (infinite) but *pareet* (countable or uncountable) beings

(8) *Pareet-mishrak-vachan*—to call leaves and other largely *pareet vanaspati* as *pareet kaya* although a few *anant-kaya* are mixed with it

(9) *Addha-mishrak-vachan*—to give mixed statement with regard to *addha* or time. For example to say for some specific purpose that it is night while the sun is still setting.

(10) *Addha-addha-mishrak-vachan*—to give mixed statement with regard to *addha-addha* or divisions of time (parts of day or night) For example to say for some specific purpose that it is noon when only first quarter of the day has passed

दृष्टिवाद-पद DRISHTIVAAD-PAD (SEGMENT OF DRISHTIVAAD)

९२. दिट्ठिवायस्स णं दस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–दिट्ठिवाएति वा, हेउवाएति वा, भूयवाएति वा, तच्चावाएति वा, सम्मावाएति वा, धम्मावाएति वा, भासाविजएति वा, पुव्वगतेति वा, अणुजोगगतेति वा, सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहेति वा।

९२. दृष्टिवाद नामक बारहवे अग के दस नाम है–

(१) **दृष्टिवाद**–अनेक दृष्टियो से या अनेक नयो की अपेक्षा वस्तु-तत्त्व का प्रतिपादन करने वाला।

(२) **हेतुवाद**–हेतु-प्रयोग से या अनुमान के द्वारा वस्तु की सिद्धि करने वाला।

(३) **भूतवाद**–भूत अर्थात् सद्-भूत पदार्थो का निरूपण करनेवाला।

(४) **तत्त्ववाद या तथ्यवाद**–सारभूत तत्त्व का, या यथार्थ तथ्य का प्रतिपादन करने वाला।

(५) **सम्यग्वाद**–पदार्थों के सत्य अर्थ का प्रतिपादन करने वाला।

(६) **धर्मवाद**–वस्तु के पर्यायरूप धर्मो का अथवा चारित्ररूप धर्म का प्रतिपादन करने वाला।

(७) **भाषाविचय या भाषाविजय**–सत्य आदि अनेक प्रकार की भाषाओ का विचय अर्थात् निर्णय करने वाला अथवा भाषाओ की विजय अर्थात् समृद्धि का वर्णन करने वाला।

(८) **पूर्वगत**–सर्वप्रथम गणधरो के द्वारा ग्रन्थित या रचित उत्पादपूर्व आदि का वर्णन करने वाला।

(९) **अनुयोगगत**–प्रथमानुयोग, गण्डिकानुयोग आदि अनुयोगो का वर्णन करने वाला।

(१०) **सर्वप्राण-भूत-जीव-सत्त्व-सुखावह**–सभी द्वीन्द्रियादि प्राणी, वनस्पतिरूप भूत, पचेन्द्रिय जीव और पृथिवी आदि सत्त्वो के सुखो का प्रतिपादन करने वाला।

92. There are ten names of *Drishtivaad*, the twelfth *Anga*—
(1) *Drishtivaad*—that which propagates fundamentals from many angles or *nayas* (stand-points)

(2) *Hetuvaad*—that which establishes things through cause or hypothesis

(3) *Bhoot-vaad*—that which discusses *bhoot* (eternal realities)

(4) *Tattvavaad*—that which propagates basic fundamentals and evident reality

(5) *Samyagvaad*—that which propagates the true meaning of things

(6) *Dharmavaad*—that which propagates the modal properties of things or the codes of conduct

(7) *Bhashavichaya* or *Bhashavijaya*—that which deals with establishing classification and categories of language (for example truthful speech) Also that which describes richness of language

(8) *Purvagat*—that which narrates the primary works by *Ganadhars*, such as *Utpaad Purva*

(9) *Anuyogagat*—that which describes *Anuyogas* like *Prathamanuyoga* and *Gandakanuyoga*

(10) *Sarva-pran-bhoot-jiva-sattva-sukhavah*—that which propagates happiness of all entities, souls and beings, such as two-sensed beings, plant-bodied beings, five sensed-beings, and earth-bodied beings

शस्त्र-पद SHASTRA-PAD (SEGMENT OF WEAPONS)

९३. दसविधे सत्थे पण्णत्ते, तं जहा–

सत्थमग्गी विसं लोणं, सिणेहो खारमंबिलं।
दुप्पउत्तो मणो वाया, काओ भावो य अविरति॥१॥ (संग्रह-गाथा)

९३. शस्त्र दस प्रकार के है–(१) अग्निशस्त्र, (२) विषशस्त्र, (३) लवणशस्त्र, (४) स्नेहशस्त्र, (५) क्षारशस्त्र, (६) अम्लशस्त्र, (७) दुष्प्रयुक्त मन, (८) दुष्प्रयुक्त वचन, (९) दुष्प्रयुक्त काय, (१०) अविरति भाव।

93. *Shastras* (weapons) are of ten kinds—(1) *Agnishastra* (fire), (2) *Vish-shastra* (poison), (3) *Lavan-shastra* (salt), (4) *Snehashastra* (oil), (5) *Kshaar-shastra* (alkali), (6) *Amlashastra* (acid), (7) *Dushprayukta* man (evil intent), (8) *Dushprayukta vachan* (evil speech), (9) *Dushprayukta kaya* (evil action of body) and (10) *Avirati bhaava* (attitude of non-detachment)

विवेचन–हिंसा के साधन को 'शस्त्र' कहते है। वह दो प्रकार का होता है–द्रव्यशस्त्र और भावशस्त्र। सूत्रोक्त १० प्रकार के शस्त्रो मे से आदि के छह द्रव्यशस्त्र है और अन्तिम चार भावशस्त्र है। लवण, क्षार, अम्ल, आदि वस्तुओ के सम्पर्क से सचित्त वनस्पति आदि अचित्त हो जाती है। इसी प्रकार स्नेह–तेल, घृतादि से भी सचित्त वस्तु अचित्त हो जाती है, इसलिए लवण आदि को भी शस्त्र कहा गया है।

Elaboration—Means of violence is *shastra* (weapon) It is of two types—*dravyashastra* (physical weapon) and *bhaavashastra* (mental weapon) Out of the ten weapons listed in the aforesaid aphorism first six are physical weapons and the last four are mental weapons Salt,

alkali and acid destroy living organism turning *sachit* plants to *achit* plants Same is true for oily things That is why these things have been included in weapons

दोष–पद DOSH-PAD (SEGMENT OF FAULTS)

९४. दसविहे दोसे पण्णत्ते, तं जहा–

तज्जातदोसे मतिभंगदोसे, पसत्थारदोसे परिहरणदोसे।
सलक्खण–वक्कारण–हेउदोसे, संकामणं णिग्गह–वत्थुदोसे॥१॥

९४. पारस्परिक तत्त्व चर्चा शास्त्रार्थ या वाद विवाद के दस प्रकार के दोष है। जैसे– (१) **तज्जात–दोष**–वादकाल मे प्रतिवादी से क्षुब्ध होकर उसके वैयक्तिक दोषो को प्रकट करना या चुप रह जाना। (२) **मतिभंग–दोष**–प्रतिपक्षी के आक्षेप का उत्तर न दे पाना या भयादि के कारण तत्त्व को भूल जाना। (३) **प्रशास्तृ–दोष**–सभ्य या सभाध्यक्ष की ओर से होने वाला पक्षपात आदि दोष। (४) **परिहरण–दोष**–वादी के द्वारा दिये गये दोष का छल या जाति से परिहार करना। (५) **स्वलक्षण–दोष**–वस्तु के निर्दिष्ट लक्षण मे अव्याप्ति, अतिव्याप्ति या असम्भव दोष का होना। (६) **कारण–दोष**–कारण-सामग्री के एक अश को कारण मान लेना, या पूर्ववर्ती होने मात्र से कारण मानना। (७) **हेतु–दोष**–हेतु का असिद्धता, विरुद्धता आदि दोष से दोषयुक्त होना। (८) **सक्रमण–दोष**–प्रस्तुत प्रमेय को छोडकर अप्रस्तुत प्रमेय की चर्चा करना। (९) **निग्रह–दोष**–छल, जाति, वितण्डा आदि के द्वारा प्रतिवादी को निगृहीत करना। (१०) **वस्तुदोष–पक्ष** सम्बन्धी प्रत्यक्षनिराकृत, अनुमाननिराकृत आदि दोषो मे से कोई दोष होना। *(विस्तार के लिए देखे–हिन्दी टीका, भाग २ पृष्ठ ७७४। ठाण, पृष्ठ ९८६)*

94. There are ten faults of mutual discussion or debate—(1) *Tajjat-dosh*—to expose personal drawbacks of the opponent during a debate or remain silent when irritated by him (2) *Matibhang-dosh*—inability to counter the charges made by the opponent or to forget the points out of fear (3) *Prashaasrit-dosh*—faults committed by the chairperson or experts (4) *Pariharan-dosh*—to deceitfully evade or neglect the charges made by the opponent (5) *Svalakshan-dosh*—faults of irrelevance, exaggeration and impossibility in the stated attributes of a thing (6) *Kaaran-dosh*—to accept a part of the causal material as the cause or to accept a point as a cause just because of precedence (7) *Hetu-dosh*—faults of reasoning including unauthenticity, irrelevance and antitheticity (8) *Sankraman-dosh*—the fault of shifting from the prescribed topic to some other topic (9) *Nigraha-dosh*—to silence the opponent by deceit, belligerence and other such means (10) *Vastu-dosh*—faults related to the basic theme of the opponent such as apparent fault or conceptual fault

विशेष–पद VISHESH-PAD (SEGMENT OF SPECIAL FAULTS)

९५. दसविधे विसेसे पण्णत्ते, तं जहा–

वत्थु तज्जातदोसे य, दोसे एगट्ठिएति य।
कारणे य पडुप्पण्णे, दोसे णिच्चेहिय अट्ठमे॥
अत्तणा उवणीते य, विसेसेति य ते दस॥१॥

९५. वाद के विशेष दोष दस प्रकार के है, जैसे–(१) **वस्तुदोष–विशेष**–पक्ष सम्बन्धी दोष के विशेष प्रकार। (२) **तज्जात–दोष–विशेष**–वादकाल मे प्रतिवादी के जन्म आदि सम्बन्धी विशेष दोष। (३) **दोष–विशेष**–मतिभग आदि दोषो के विशेष प्रकार। (४) **एकार्थिक–विशेष**–एक अर्थ के वाचक शब्दो की निरुक्ति–जनित विशेष प्रकार। (५) **कारण–विशेष**–कारण के विशेष प्रकार। (६) **प्रत्युत्पन्न दोष–विशेष**–वस्तु को क्षणिक मानने पर कृतनाश और अकृत–अभ्यागम आदि दोषो की प्राप्ति। (७) **नित्यदोष–विशेष**–वस्तु को सर्वथा नित्य मानने पर प्राप्त होने वाले दोष के विशेष प्रकार। (८) **अधिकदोष–विशेष**–वादकाल मे दृष्टान्त, उपनय आदि का अधिक प्रयोग। (९) **आत्मोपनीत–विशेष**–उदाहरण दोष का एक प्रकार। (१०) **विशेष**–वस्तु का भेदात्मक धर्म। *(देखे ठाण, पृष्ठ ९२७। हिन्दी टीका, पृष्ठ ७७८)*

95. There are ten *vishesh dosh* (special faults) of debate—(1) *Vastudosh-vishes*—special faults related to theme (2) *tajjat-dosh-vishes*—special faults related to birth and other personal matters about the opponent during a debate (3) *Dosh-vishes*—special categories of faults like *matibhang* (4) *Ekarthik-vishes*—special faults related to etymology of synonyms (5) *Kaaran-vishes*—special faults related to *kaaran* (6) *Pratyutpanna-dosh-vishes*—special faults related to intentional destruction and unintentional origin caused by accepting a thing as transitory (7) *Nitya-dosh vishes*—special faults due to accepting a thing as absolutely eternal or permanent (8) *Adhik-dosh-vishes*—special faults related to excessive use of examples and quotes during a debate (9) *Atmopaneet-vishes*—a kind of *udaharan dosh* (10) *Vishes*—the disintegrative nature of things or theme

शुद्धवाग्–अनुयोग–पद SHUDDHAVAG-ANUYOGA-PAD (SEGMENT OF INDEPENDENT PHRASES)

९६. दसविधे सुद्धवायाणुओगे पण्णत्ते, तं जहा–चंकारे, मंकारे, पिंकारे, सेयंकारे, सायंकारे, एगत्ते, पुधत्ते, संजहे, संकामिते, भिण्णे।

९६. वाक्य–निरपेक्ष शुद्ध पद का अनुयोग (शुद्ध वाक्यानुयोग) दस प्रकार का है, जैसे–

वाक्य में आये हुए जिन पदो का वाक्यार्थ से कोई विशेष सम्बन्ध नही होता, किन्तु उनके प्रयोग से वाक्यो का अर्थ व्यवस्थित समझा जा सकता है, उन्हे **'शुद्ध वाक्यानुयोग'** कहा जाता है।

(१) **चकार–अनुयोग**–'च' शब्द का अनेक अर्थो मे प्रयोग होता है, जैसे–कही समुच्चय, कही अन्वादेश, कही अवधारण, कही पाद पूरण आदि अर्थों का बोध इससे होता है। जैसे **इत्थीओ सयणाणि यं।**

(२) **मकार–अनुयोग**–'म' शब्द के अनेक अर्थों का विस्तार। जैसे–**'जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव'** आदि पदो मे 'म' का प्रयोग आगमिक है, इससे वाक्य की सुन्दरता बढ जाती है।

(३) **पिकार–अनुयोग**–'अपि' शब्द सम्भावना, निवृत्ति, अपेक्षा, समुच्चय आदि अनेक अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है। जैसे 'चउवीस पि केवली' देवा वि त नमसति आदि।

(४) **सेयकार–अनुयोग**–जैसे–कही 'से' शब्द 'अर्थ' का वाचक होता है, कही 'वह' का वाचक होता है, कही विकल्प, प्रश्न अथवा आरभ। जैसे **से भिक्खू वा, से किं तं नाणं।**

(५) **सायकार–अनुयोग**–'साय' आदि निपात शब्दो के अथ का विचार। जैसे–वह कही सत्य अर्थ का और कही प्रश्न का बोधक होता है।

(६) **एकत्व–अनुयोग**–जहाँ बहुत सी बाते मिलकर एक वस्तु के प्रति कारण हो, जैसे–**'नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं य तवो तहा। एस मग्गुत्ति पन्नत्तो'** यहाँ पर ज्ञान, दर्शनादि समुदितरूप को ही मोक्षमार्ग कहा है।

(७) **पृथक्त्व**–अनुयोग–बहुवचन के अर्थ का विचार। जैसे–**'धम्मत्थिकायप्पदेसा'** इस पद मे बहुवचन का प्रयोग उसके असख्यात प्रदेश बतलाने के लिए है।

(८) **संयूथ–अनुयोग**–एकत्र किये हुए पदो को 'सयूथ' कहते है, जैसे–**'सम्मदंसणसुद्ध'** इस समासान्त पद का विग्रह अनेक प्रकार से किय जा सकता है–

(१) 'सम्यग्दर्शन के द्वारा शुद्ध'–तृतीया विभक्ति के रूप मे, (२) 'सम्यग्दर्शन के लिए शुद्ध'–चतुर्थी विभक्ति के रूप मे, (३) 'सम्यग्दर्शन से शुद्ध'–पचमी विभक्ति के रूप मे।

(९) **संक्रांति–अनुयोग**–जहाँ विभक्ति और वचन बदलकर वाक्य का अर्थ किया जाता है, वह सक्रामित अनुयोग है। जैसे–**'साहूणं वंदणेणं नासति पावं असंकिया भावा'** अर्थात् साधुओ को वन्दना करने से पाप नष्ट होता है और साधु के पास रहने से भाव अशकित होते है। यहाँ वन्दना के प्रसग मे 'साहूण' षष्ठी विभक्ति है। उसका भाव अशकित होने के सम्बन्ध मे पचमी विभक्ति के रूप से सक्रमित किया गया। यह विभक्ति–सक्रमण है तथा **'अच्छंदा जे न भुजंति, न से चाइत्ति वुच्चई'** यहाँ 'से चाई' यह बहुवचन के स्थान मे एकवचन का सक्रामित प्रयोग है।

(१०) **भिन्न–अनुयोग**–क्रमभेद और कालभेद आदि का विचार जिसमे हो, वह। जैसे–'तिविहं तिविहेण' यह सग्रहवाक्य है। इसमे (१) **मणेणं वायाए काएणं**, (२) **न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि न समणुजाणामि** इन दो खण्डो का सग्रह किया गया है। द्वितीय खण्ड **'न करेमि'** आदि तीन वाक्यो मे 'तिविहेण' का स्पष्टीकरण है और प्रथम खण्ड 'मणेण' आदि तीन वाक्याशो मे 'तिविहेणं' का

स्पष्टीकरण है। यहाँ 'न करेमि' आदि बाद मे है और 'मणेण' आदि पहले। यह क्रम-भेद है। काल-भेद का उदाहरण जैसे-सक्के देविंदे देवराया वंदति नमंसति' यहाँ अतीत के अर्थ मे वर्तमान की क्रिया का प्रयोग है।

96. *Shuddhavag-anuyoga* (phrases independent of the sentence) are of ten kinds (a phrase that has no connection with the meaning of the sentence but it is used to impart vividness or beauty to the meaning is called *Shuddhavag-anuyoga*)—

(1) Chakar-anuyoga—the letter *'cha'* is used many ways, such as collective, conjunctive and conceptual

(2) *Makar-anuyoga*—elaboration of numerous meanings of the letter *'ma'* At many places it adds to the beauty of the sentence

(3) *Pikar-anuyoga*—the term *api* is used many ways, such as conveying probability, freedom, expectation, and assimilation

(4) *Seyamkar-anuyoga*—the term *se* is also used many ways, such as meaning, he, alternative, interrogation, and beginning

(5) *Sayamkar-anuyoga*—the term *syam* is used to convey true meaning as well as an interrogative

(6) *Ekatva-anuyoga*—where combination of many terms conveys a single direction or meaning For example the statement that knowledge, perception and conduct lead to liberation

(7) *Prithakatva-anuyoga*—use of plurals

(8) *Samyutha-anuyoga*—combination of many phrases that can be interpreted many ways

(9) *Sankranti-anuyoga*—where meaning is derived by parsing and changing tense

(10) *Bhinna-anuyoga*—where change of sequence and periodicity are used (This aphorism specially relates to Sanskrit grammar, therefore examples loose their meaning in translation)

दान-पद DAAN-PAD (SEGMENT OF CHARITY

९७. दसविहे दाणे पण्णत्ते, तं जहा–

अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणिएति य।
लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे उण सत्तमे॥
धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीति य कतंति य॥१॥

९७. दान दस प्रकार का है, जैसे- (१) **अनुकम्पादान**–करुणाभाव से देना। (२) **संग्रहदान**–सहायता के लिए देना। (३) **भयदान**–भय से देना। (४) **कारुण्यदान**–मृत व्यक्ति के पीछे देना। (५) **लज्जादान**–लोक-लाज से देना। (६) **गौरवदान**–यश के लिए या अपना बडप्पन बताने के लिए देना। (७) **अधर्मदान**–अधार्मिक व्यक्ति को या जिससे हिंसा आदि का पोषण हो उसे देना। (८) **धर्मदान**–धार्मिक व त्यागी व्यक्ति को देना। (९) **कृतमितिदान**–कृतज्ञता-ज्ञापन के लिए देना। (१०) **करिष्यतिदान**–भविष्य मे किसी का सहयोग प्राप्त करने की आशा से देना। *(इनके विस्तार हेतु हिन्दी टीका, पृष्ठ ७८२ तथा वृत्ति पत्र ४७२ देखना चाहिए)*

97. *Daan* (charity) is of ten kinds—(1) *Anukampa daan*—charity with compassion, (2) *Samgraha daan*—charity for help, (3) *Bhaya daan*—charity out of fear, (4) *Kaarunya daan*—charity to honour a deceased person, (5) *Lajja daan*—charity for regard of public opinion, (6) *Gaurav daan*—charity for fame or show of greatness, (7) *Adharma daan*—charity to an irreligious person or to support evil activities, (8) *Dharma daan*—charity to a religious or detached person, (9) *Kritmit daan*—charity to express gratitude and (10) *Karishyati daan*—charity with a hope of cooperation in future *(for more details refer to Vritti, leaf 472 and Hindi Tika, part-2, p 782)*

गति–पद GATI-PAD (SEGMENT OF REINCARNATION)

९८. दसविधा गती पण्णत्ता, तं जहा–णिरयगती, णिरयविग्गहगती, तिरियगती, तिरिय विग्गहगती, (मणुयगती मणुयविग्गहगती, देवगती, देवविग्गहगती), सिद्धगती, सिद्धविग्गहगती।

९८. गति दस प्रकार की है, जैसे-(१) नरकगति, (२) नरकविग्रहगति, (३) तिर्यग्गति, (४) तिर्यग्विग्रहगति, (५) मनुष्यगति, (६) मनुष्यविग्रहगति, (७) देवगति, (८) देवविग्रहगति, (९) सिद्धिगति, (१०) सिद्धि-विग्रहगति।

98. There are ten kinds of *gatis* (reincarnations)—(1) *narak gati* (reincarnation as infernal beings), (2) *narak vigraha gati* (reincarnation with oblique movement as infernal beings), (3) *tiryanch gati* (reincarnation as an animal), (4) *tiryanch vigraha gati* (reincarnation with oblique movement as an animal), (5) *manushya gati* (reincarnation as human beings), (6) *manushya vigraha gati* (reincarnation with oblique movement as human beings), (7) *deva gati* (reincarnation as divine being), (8) *deva vigraha gati* (reincarnation with oblique movement as divine being), (9) *Siddha gati* (reincarnation as *Siddha*) and (10) *Siddha vigraha gati* (reincarnation with oblique movement as *Siddha*)

विवेचन–'विग्रह' शब्द के तीन अर्थ होते है–वक्र या मोड और शरीर तथा आकाश विभाग का अतिक्रमण कर गमन करना। प्रारम्भ के आठ पदों मे से चार गतियो मे उत्पन्न होने वाले जीव ऋजु और वक्र दोनो प्रकार से गमन करते है। इस प्रकार प्रत्येक गति का प्रथम पद ऋजुगति का बोधक है और द्वितीयपद वक्रगति का बोधक है, यह स्वीकार किया जा सकता है। किन्तु सिद्धिगति तो सभी जीवो की विग्रहरहित ही होती है अर्थात् सिद्धजीव सीधी ऋजुगति से मुक्ति प्राप्त करते है। इसी बात को ध्यान मे रखकर टीकाकार ने **'सिद्धिविग्गहगइ' त्ति सिद्धावविग्रहेण–अवक्रेण गमनं 'सिद्ध्यविग्रहगतिः**, अर्थात् सिद्धि–मुक्ति मे अविग्रह से बिना मुडे जाना, ऐसी निरुक्ति करके दसवे पद की सगति बिठलाई है। नवे पद को सामान्य अपेक्षा से और दसवे पद को विशेष की विवक्षा से कहकर भेद बताया है। दसवे भेद मे विग्रहगति शब्द केवल 'पारलौकिक गति' के अर्थ का ही सूचक है।

Elaboration—The terms *Vigraha* has three meanings *'Vakra'* or oblique, *'moad'* or turn and to move transgressing the body and a section of space The first eight statements inform that beings taking birth in four gatis (genuses) have both straight and oblique movement Thus it can be interpreted that the first statement about each genus relates to riju gati (straight movement) and the second relates to vigraha gati (oblique movement) However, reincarnation as *Siddha* is always with straight movement and never with oblique movement Keeping this in view the commentator (*Tika*) has interpreted the tenth statement *'siddha vigraha gati* (reincarnation with oblique movement as *Siddha*)' as *siddhi-avigraha-gati* or reincarnation in state of siddhi without oblique movement. The ninth statement is simple whereas the tenth is with special nuance The tenth statement is thus indicative of supernatural movement

मुण्ड–पद MUND-PAD (SEGMENT OF VICTORS)

९९. दस मुंडा पण्णत्ता, तं जहा–सोतिंदियमुंडे, (चक्खिंदियमुंडे, घाणिंदियमुंडे, जिब्भिंदियमुंडे), फासिंदियमुंडे, कोहमुंडे, (माणमुंडे) मायामुंडे) लोभमुंडे, सिरमुंडे।

९९. यहाँ 'मुण्ड' शब्द से (तत्सम्बन्धी दोषो को दूर करने का भाव प्रकट किया है) दस प्रकार के है, जैसे–(१) **श्रोत्रेन्द्रियमुण्ड**–श्रोत्रेन्द्रिय के विषय का मुण्डन (त्याग) करने वाला। (२) **चक्षुरिन्द्रियमुण्ड**–चक्षुरिन्द्रिय के विषय का त्याग करने वाला, (३) **घ्राणेन्द्रियमुण्ड**–घ्राणेन्द्रिय के विषय का त्याग करने वाला। (४) **रसनेन्द्रियमुण्ड**–रसनेन्द्रिय के विषय का त्याग करने वाला। (५) **स्पर्शनेन्द्रियमुण्ड**–स्पर्शनेन्द्रिय के विषय का त्याग करने वाला। (६) **क्रोधमुण्ड**–क्रोध कषाय का त्याग। (७) **मानमुण्ड**–मानकषाय का त्याग। (८) **मायामुण्ड**–मायाकषाय का त्याग। (९) **लोभमुण्ड**–लोभकषाय का त्याग करने वाला। (१०) **शिरोमुण्ड**–सिर के केशो का मुण्डन करने–कराने वाला।

99. *Mund* (victors over indulgence of sense organs or who have control over sense organs or who are equanimous towards good and bad sensations)

are of five kinds—(1) *shrotrendriyamund*, (2) *chakshurindriyamund*, (3) *ghranendriyamund*, (4) *rasanendriyamund*, (5) *sparshanendriyamund*, (6) *krodh-mund*—victors over anger, (7) *maan-mund*—victors over conceit, (8) *maya-mund*—victors over deceit, (9) *lobh-mund*—victors over greed and (10) *shiro-mund*—who has tonsured his head

संख्यान-पद SANKHYAN-PAD (SEGMENT OF MATHEMATICS)

१००. दसविधे संखाणे पण्णत्ते, तं जहा–

परिकम्मं ववहारो रज्जू रासी कला-सवण्णे य।
जावंतावति वग्गो, घणो य तह वग्गवग्गोवि॥१॥ कप्पो य.॥

१००. जिस उपाय से किसी वस्तु की सख्या या परिमाण का ज्ञान हो वह 'सख्यान' है। सख्यान (गणित) दस प्रकार का है, जैसे-(१) **परिकर्म**-जोड, बाकी, गुणा, भाग आदि से सम्बन्धित गणित। (२) **व्यवहार**-पाटी गणित-प्रसिद्ध श्रेणी व्यवहार, मिश्रक व्यवहार आदि। जैसे १२ के लिए दर्जन। बीस के लिए 'कोडी' यह सब व्यवहार गणित है। (३) **रज्जु**-क्षेत्रगणित, सेटीमीटर, फुट, अगुल, रज्जु आदि की ऊँचाई-लम्बाई-गहराई आदि माप विधि। (४) **राशि**-धान्य आदि के ढेर को नापने का गणित। (५) **कला-सवर्ण**-अशो वाली सख्या समान करना। तथा औषधियो आदि के निर्माण मे रासायनिक द्रव्यो की मात्रा आदि का परिमाण करना। (६) **यावत्-तावत्**-गुणाकार या गुणा करने वाला गणित। (७) **वर्ग**-दो समान सख्याओ का गुणन-फल। जैसे ४ को ४ से गुणा करना। (८) **घन**-तीन समान सख्याओ का गुणन-फल। जैसे ५ × ५ = २५। (९) **वर्ग-वर्ग**-वर्ग का वर्ग। पहली सख्या को उसी वर्ग से गुणा करना। (१०) **कल्प**-लकडी आदि की चिराई आदि का माप करने वाला गणित। *(गणित सम्बन्धी विस्तृत विवेचन के लिए देखे-वृत्ति पत्र ४७१ तथा ठाण, पृष्ठ ९९३-९४)*

100. *Sankhyan* (mathematics) is of ten kinds—(1) *Parikarma-sankhyan*—addition, subtraction, multiplication division, etc (2) *Vyavahar- sankhyan*—lowest common multiple, highest common factor, factors, compounds, etc This also includes popular collective units such as dozen for twelve and *kodi* (score) for twenty (3) *Rajju-sankhyan*—lines and areas (geometry) (4) *Rashi-sankhyan*—squares, cubes, logarithms, etc. This also includes measures of heaps of grain or cereals (5) *Kala-savarn*—fractions and their calculations This also includes proportions of ingredients in a medical formulation. (6) *Yavat-tavat*—multiplication (7) *Varga*—squares (8) *Ghan*—cubes (9) *Varg-Varg*—square of square (10) *Kalp*—calculation of sawn wood *(for more details about mathematics see Vritti, leaf, 471 and Thanam pp 993-994)*

प्रत्याख्यान-पद PRATYAKHYAN-PAD (SEGMENT OF ABSTAINMENT)

१०१. दसविधे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा–

अणागयमतिक्कंतं, कोडीसहियं णियंटितं चेव।
सागारमणागारं परिमाणकडं णिरवसेसं॥
संकेयगं चेव अद्धाए, पच्चक्खाणं दसविहं तु॥१॥

१०१. प्रत्याख्यान के दस प्रकार है, जैसे-(१) **अनागत-प्रत्याख्यान**-आगे किये जाने वाले तप को किसी विशेष परिस्थिति मे पहले ही कर लेना। (२) **अतिक्रान्त-प्रत्याख्यान**-जो तप कारणवश वर्तमान मे न किया जा सका हो, उसे भविष्य मे करना। (३) **कोटिसहित-प्रत्याख्यान**-जो एक प्रत्याख्यान का अन्तिम दिन और दूसरे प्रत्याख्यान का आदि दिन हो, वह कोटिसहित प्रत्याख्यान है। जैसे यवमध्य चन्द्र प्रतिमा आदि। (४) **नियंत्रित-प्रत्याख्यान**-नीरोग या सरोग अवस्था मे नियत्रण या नियमपूर्वक अवश्य ही किया जाने वाला तप। यह तप १४ पूर्वधर, जिनकल्पी आदि के लिए ही होता है। (५) **सागार-प्रत्याख्यान**-आगार या अपवाद के साथ किया जाने वाला तप। जैसे नवकारसी पोरसी आदि। (६) **अनागार-प्रत्याख्यान**-अपवाद या छूट के बिना किया जाने वाला तप। (७) **परिमाणकृत-प्रत्याख्यान**-दत्ति, कवल, गृह, द्रव्य, भिक्षा आदि के परिमाण वाला प्रत्याख्यान। (८) **निरवशेष-प्रत्याख्यान**-चारो प्रकार के आहार का सर्वथा परित्याग। (९) **संकेत-प्रत्याख्यान**-सकेत या चिह्न के साथ किया जाने वाला प्रत्याख्यान। विविध अभिग्रहो के साथ किया जाने वाला। (१०) **अद्धा-प्रत्याख्यान**-मुहूर्त, प्रहर आदि काल की मर्यादा के साथ किया जाने वाला प्रत्याख्यान।

101. *Pratyakhyan* (abstainment) is of ten kinds—(1) *Anagat-pratyakhyan*—to advance, under special circumstances, the observation of some austerity resolved to be observed in future (2) *Atikrant-pratyakhyan*—to postpone for future the observation of some austerity for some specific reason (3) *Kotisahit-pratyakhyan*—the last day of one abstainment and the first day of the immediate next abstainment (4) *Niyantrit-pratyakhyan*—a *tap* (austerity) done with complete control following prescribed rules irrespective of being normal or ailing This is meant only for Fourteen *Purvadhars, Jinakalpi* and other such higher ascetics (5) *Sagaar-pratyakhyan*—austerities done with some relaxations. (6) *Anagaar-pratyakhyan*—austerities done without any relaxations (7) *Parimanakrit-pratyakhyan*—abstainment related to specific quantity or number of things like servings, morsels, houses, things and alms (8) *Niravashesh-pratyakhyan*—abstaining completely from all the four kinds of food (9) *Sanket-pratyakhyan*—abstainment done with specific signs or indications or that done with special resolves (10) *Addha-pratyakhyan*—abstainment done for specific duration such as *Muhurt* (48 minutes), *Prahar* (three hours), etc.

सामाचारी-पद SAMACHARI-PAD (SEGMENT OF ASCETIC-BEHAVIOUR)

१०२. दसविहा सामायारी पण्णत्ता, तं जहा–

इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य णिसीहिया।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य णिमंतणा॥
उवसंपया य काले, सामायारी दसवि हा उ॥१॥ (संग्रह–श्लोक)

१०२. सामाचारी दस प्रकार की है, जैसे–(१) **इच्छा–सामाचारी**–कार्य करने या कराने मे इच्छाकार (आपकी इच्छा हो तो) का प्रयोग। (२) **मिच्छा–समाचारी**–भूल हो जाने पर मेरा दुष्कृत मिथ्या हो **मिच्छामि दुक्कड** बोलना। (३) **तथाकार–समाचारी**–आचार्य के वचन को 'तह' त्ति कहकर स्वीकार करना। (४) **आवश्यक–समाचारी**–उपाश्रय से बाहर जाते समय आवस्सही 'आवश्यक कार्य के लिए जाता हूँ', ऐसा बोलकर जाना। (५) **नैषेधिकी–समाचारी**–कार्य से निवृत्त होकर के आने पर 'निसही' 'मै निवृत्त होकर आया हूँ' ऐसा बोलकर उपाश्रय मे प्रवेश करना। (६) **आपृच्छा–समाचारी**–किसी कार्य के लिए आचार्य से पूछकर जाना। (७) **प्रतिपृच्छा–समाचारी**–दूसरो का काम करने के लिए आचार्य आदि से पूछना। (८) **छन्दना–समाचारी**–आहार करने के लिए साधर्मिक साधुओ को बुलाना। (९) **निमंत्रणा–समाचारी**–'मै आपके लिए आहारादि लाऊँ' इस प्रकार गुरुजनादि को निमन्त्रित करना। (१०) **उपसपदा–समाचारी**–ज्ञान, दर्शन और चारित्र की विशेष प्राप्ति के लिए कुछ समय तक दूसरे आचार्य के पास जाकर उनके समीप रहना। (विशेष वर्णन अनुयोगद्वारसूत्र भाग तथा उत्तराध्ययनसूत्र अ २६ देखना चाहिए)।

102. *Samachari* (ascetic-behaviour) is of ten kinds—(1) *Iccha-samachari*—to seek permission for doing or getting done some work stating—If you desire so (2) *Mithya-samachari*—to utter *michchhami dukkadam* (may my misdeed be undone) with a feeling of repentance for any misdeed committed (3) *Tatha-samachari*—to assent the order or word of the preceptor by uttering *'tahat'* (4) *Avashyaki*—to utter *avassahi* (I am going for some necessary work) in order to inform the guru when going out for any necessary work (5) *Naishedhiki-samachari*—to utter *nisahi* (I am relieved of the work) in order to announce on return after doing some work and before entering the *upashraya* (6) *Apricchaa-samachari*—to seek permission of the guru before doing any work (7) *Pratiprichhaa-samachari*—to seek permission for doing some other person's work (8) *Chhandana-samachari*—to offer acquired things including food to other ascetics of the group (9) *Nimantrana-samachari*—to invite other ascetics of the group to partake in things to be acquired in future saying—May I bring this for you (10) *Upasampad-samachari*—to go and stay with some other senior

ascetic or guru for some time in order to acquire special expertise of knowledge, perception and conduct *(for more details refer to Illustrated Anuyogadvara Sutra, part-1, aphorism-206 and Uttaradhyayan Ch 26)*

दस महा स्वप्न पद (स्वप्न) DAS-MAHA-SVAPNA-PAD (SEGMENT OF TEN GREAT DREAMS)

DREAMS

१०३. (क) समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—

(१) एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे। (२) एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (३) एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (४) एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (५) एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (६) एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (७) एगं च णं महं सागरं उम्मी—वीची—सहस्सकलितं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (८) एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (९) एगं च णं महं हरि—वेरुलिय—वण्णाभेणं णियएणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे। (१०) एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे।

१०३. (क) श्रमण भगवान महावीर छद्मस्थ काल की अन्तिम रात्रि मे (वैशाख शुक्ल नवमी की रात) इन दस महास्वप्नो को देखकर प्रतिबुद्ध हुए, जैसे—

(१) एक महान् घोर रूप वाले, दीप्तिमान् ताड वृक्ष जैसे लम्बे पिशाच को स्वप्न मे पराजित किया, यह देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(२) एक महान् श्वेत पख वाले पुस्कोकिल को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(३) एक महान् चित्र-विचित्र पखो वाले पुस्कोकिल को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(४) सर्वरत्नमयी दो बडी मालाओ को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(५) एक महान् श्वेत गोवर्ग (गायो का समूह) को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(६) एक महान् सर्व ओर से प्रफुल्लित कमल वाले सरोवर को देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(७) एक महान्, छोटी-बडी लहरो से व्याप्त महासागर को स्वप्न मे भुजाओ से पार किया हुआ देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(८) एक महान्, तेज से जाज्वल्यमान सूर्य को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(९) एक महान् हरित और वैडूर्य वर्णवाले अपने आँत-समूह के द्वारा मानुषोत्तर पर्वत को सर्व ओर से आवेष्टित-परिवेष्टित किया हुआ स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

(१०) मन्दर-पर्वत पर मन्दर-चूलिका के ऊपर एक महान् सिहासन पर अपने को स्वप्न में बैठा हुआ देखकर प्रतिबुद्ध हुए।

103. (a) Shraman Bhagavan Mahavır got enlıghtenment after seeıng ten great dreams on the last nıght (*Vaıshakh Shukla* nınth) of his *chhadmasth perıod* (whıle he was short of omnıscıence due to resıdual *karmıc* bondage)—

(1) He got enlıghtened after seeıng a dream that he has defeated a hıdeous and tall *Taal-pıshach* (a demon)

(2) He got enlıghtened after seeıng a *pumsakokıl* (male cuckoo) wıth whıte feathers ın a dream

(3) He got enlıghtened after seeıng *pumsakokıl* (male cuckoo) wıth multı-coloured feathers ın a dream

(4) He got enlıghtened after seeıng two large multı-gem bead strıngs ın a dream

(5) He got enlıghtened after seeıng a large herd of whıte cows ın a dream

(6) He got enlıghtened after seeıng a great pond filled wıth bloomıng lotus flowers ın a dream

(7) He got enlıghtened after seeıng ın a dream that he has swum across a great ocean filled wıth small and large waves

(8) He got enlıghtened after seeıng a brılhant and radıant sun ın a dream

(9) He got enlıghtened after seeıng ın a dream that he has encırcled and enveloped the Manushottar mountaın from all sıdes wıth hıs greenısh cat's-eye colour ıntestınes

(10) He got enlıghtened after seeıng ın a dream that he ıs sıtting on a great throne on the summıt of the Mandar mountain

१०३. स्वप्न-फल।

(ख) (१) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवता महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलओ उग्घाइते।

(२) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं (पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ।

(३) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं (पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे ससमय-परसमयियं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति णिदंसेति उवदंसेति, तं जहा-आयारं जाव दिट्ठिवायं।

(४) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामय (सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पण्णवेति, तं जहा-अगारधम्मं च अणगारधम्मं च।

(५) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे (पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे संघे, तं जहा-समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ।

(६) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं पउमसरं (सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा-भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेमाणिए।

(७) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं सागरं उम्मी-वीची-(सहस्स-कलितं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं अणादिए अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंते संसारकंतारे तिण्णे।

(८) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं दिणयरं (तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे (णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे) समुप्पण्णे।

(९) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं हरि-वेरुलिय (वण्णाभेणं णियएणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवतो महावीरस्स सदेवमणुयासुरलोगे उराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा परिगुव्वंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे।

(१०) जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियाए उवरिं (सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं) पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगते केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेति पण्णवेति (परूवेति दंसेति णिदंसेति) उवदंसेति।

१०३. स्वप्न-फल

(ख) (१) श्रमण भगवान महावीर महान् घोर रूप वाले दीप्तिमान् एक ताल पिशाच को स्वप्न मे पराजित हुआ देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर ने मोहनीय कर्म को मूल से उखाड फेका।

(२) श्रमण भगवान महावीर श्वेत पखो वाले एक महान् पुस्कोकिल को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर शुक्लध्यान को प्राप्त होकर विचरने लगे।

(३) श्रमण भगवान महावीर चित्र-विचित्र पखो वाले एक महान् पुस्कोकिल को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर ने स्व-समय और पर-समय का निरूपण करने वाले द्वादशाग गणिपिटक का व्याख्यान किया, प्रज्ञापन किया, प्ररूपण किया, दर्शन, निदर्शन और उपदर्शन कराया। वह द्वादशाग गणिपिटक आचाराग से यावत् दृष्टिवाद तक का है।

(४) श्रमण भगवान महावीर सर्वरत्नमय दो बडी मालाओ को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपणा की। जैसे- अगारधर्म (श्रावकधर्म) और अनगार धर्म (साधुधर्म)।

(५) श्रमण भगवान महावीर एक महान् श्वेत गोवग को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर का चार वर्ण से व्याप्त सघ हुआ। जैसे (१) श्रमण, (२) श्रमणी, (३) श्रावक, (४) श्राविका।

(६) श्रमण भगवान महावीर सर्व ओर से प्रफुल्लित कमलो वाले एक महान सरोवर को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर ने चार प्रकार के देवो की प्ररूपणा की। जैसे (१) भवनवासी, (२) वानव्यन्तर, (३) ज्योतिष्क और (४) वैमानिक।

(७) श्रमण भगवान महावीर मे एक महान् छोटी-बडी लहरो से व्याप्त महासागर को स्वप्न मे भुजाओ से पार किया हुआ देखकर प्रतिबुद्ध हुए, उसके फलस्दरूप श्रमण भगवान महावीर ने अनादि, अनन्त, प्रलम्ब और चार अन्त (गति) वाले ससार रूपी कान्तार (महावन) या भवसागर को पार किया।

(८) श्रमण भगवान महावीर तेज से जाज्वल्यमान एक महान् सूर्य को स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर को अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, पूर्ण, प्रतिपूर्ण केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त हुआ।

(९) श्रमण भगवान महावीर हरित और वैडूर्य वर्ण वाले अपने ऑत-समूह के द्वारा मानुषोत्तर पर्वत को सर्व ओर से आवेष्टित-परिवेष्टित किया हुआ स्वप्न मे देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर की देव, मनुष्य और असुरो के लोक मे उदार, कीर्त्ति, वर्ण, शब्द और श्लाघा व्याप्त हुई कि श्रमण भगवान महावीर ऐसे महान् है, श्रमण भगवान महावीर ऐसे महान् है, इस प्रकार से उनका यश तीनो लोको मे फैल गया।

(१०) श्रमण भगवान महावीर मन्दर-पर्वत पर मन्दर-चूलिका के ऊपर एक महान् सिहासन पर अपने को स्वप्न मे बैठा हुआ देखकर प्रतिबुद्ध हुए। उसके फलस्वरूप श्रमण भगवान महावीर ने देव, मनुष्यो और असुरो की परिषद् के मध्य मे विराजमान होकर केवलि-प्रज्ञप्त धर्म का आख्यान किया, प्रज्ञापन किया, प्ररूपण किया, दर्शन, निदर्शन और उपदर्शन कराया।

MEANING OF THE DREAM

103. (b) (1) He got enlightened after seeing a dream that he has defeated a hideous and tall Taal-pishach (a demon) This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir uprooting and destroying *Mohaniya karma*

(2) He got enlightened after seeing a pumsakokil (male cuckoo) with white feathers in a dream This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir attaining *Shukla dhyan* (purest of attitude and feelings) and moving about

(3) He got enlightened after seeing pumsakokil (male cuckoo) with multi-coloured feathers in a dream This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir stating (*vyakhyan*), propagating (*prajnapan*), detailing (*prarupan*), explaining (*darshan*), clarifying (*nidarshan*) and simplifying (*upadarshan*) multifaceted knowledge in the shape of *Dvadashang Ganipitak* (twelve limbed canon) from *Acharanga* to *Drishtivad*

(4) He got enlightened after seeing two large multi-gem bead strings in a dream This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir preaching two way religion—*Agaar dharma* (conduct of laity) and *Anagaar dharma* (conduct of ascetics)

(5) He got enlightened after seeing a large herd of white cows in a dream This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir having a large four limbed religious organization including *Shraman, Shramani, Shravak* and *Shravika*

(6) He got enlightened after seeing a great pond filled with blooming lotus flowers in a dream This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir having four kinds of gods in his attendance—*Bhavanavasi, Vaanavyantar, Jyotishk* and *Vaimanik*

(7) He got enlightened after seeing in a dream that he has swum across a great ocean filled with small and large waves This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir crossing the great forest or ocean of beginningless, endless and extensive cycles of rebirth in four genuses

(8) He got enlightened after seeing a brilliant and radiant sun in a dream This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir attaining infinite, matchless, uninterrupted, unveiled, full and complete *Keval Darshan* and *Keval Jnana* (omniscience)

(9) He got enlightened after seeing in a dream that he has encircled and enveloped the Manushottar mountain from all sides with his greenish cat's-eye colour intestines This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir's pious, glory and utterance, glow and fame enveloping the realms of gods, humans and demons 'Shraman Bhagavan Mahavir is so great ! Shraman Bhagavan Mahavir is so great !' this way his fame spread in three worlds

(10) He got enlightened after seeing in a dream that he is sitting on a great throne on the summit of the Mandar mountain This manifested in Shraman Bhagavan Mahavir sitting in the assembly of gods, humans and demons and stating (*vyakhyan*), propagating (*prajnapan*), detailing (*prarupan*), explaining (*darshan*), clarifying (*nidarshan*) and simplifying (*upadarshan*) the sermon of the omniscient

सम्यक्त्व-पद SMAYAKTVA-PAD (SEGMENT OF RIGHTEOUSNESS)

१०४. दसविधे सरागसम्मद्दंसणे पण्णत्ते, तं जहा–

णिसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्तबीयरुइमेव।
अभिगम वित्थाररुई, किरिया-संखेव-धम्मरुई॥१॥ (संग्रहणी गाथा)

१०४. सराग सम्यग्दर्शन दस प्रकार का है, जैसे-(१) **निसर्गरुचि**–बिना किसी बाह्य निमित्त से उत्पन्न हुआ। (२) **उपदेशरुचि**–गुरु आदि के उपदेश से उत्पन्न हुआ। (३) **आज्ञारुचि**–अर्हत्-प्रज्ञप्त सिद्धान्त से उत्पन्न हुआ सम्यग्दर्शन। (४) **सूत्ररुचि**–सूत्र-ग्रन्थो के अध्ययन से उत्पन्न हुआ। (५) **बीजरुचि**–बीज की तरह अनेक अर्थों के बोधक एक ही वचन के मनन से उत्पन्न हुआ। (६) **अभिगमरुचि**–सूत्रो के विस्तृत अर्थ से उत्पन्न हुआ। (७) **विस्ताररुचि**–प्रमाण-नय के विस्तारपूर्वक अध्ययन से उत्पन्न हुआ। (८) **क्रियारुचि**–धार्मिक-क्रियाओ के अनुष्ठान से उत्पन्न हुआ सम्यग्दर्शन। (९) **संक्षेपरुचि**–सक्षेप से कुछ धर्म-पदो के सुनने मात्र से उत्पन्न हुआ। (१०) **धर्मरुचि**–श्रुतधर्म और चारित्र धर्म के श्रद्धान से उत्पन्न हुआ। *(देखे उत्तरा अ २८ गा १६ से २७ तक)*

104. *Sarag samyagdarshan* (righteousness of the attached) is of ten kinds—(1) *Nisarg-ruchi*—acquired without any outside help (2) *Upadesh-ruchi*—acquired through teachings of a *guru* (3) *Ajna-ruchi*—acquired through the doctrines of *Arhat* (4) *Sutra-ruchi*—acquired through study of scriptures (5) *Beej-ruchi*—acquired through contemplation of just one seed-like phrase conveying numerous meanings (6) *Abhigam-ruchi*—acquired through study of elaboration of aphoristic scriptures (7) *Vistaar-ruchi*—acquired through detailed study of logics (*praman* and *naya*) (8) *Kriya-ruchi*—acquired through indulgence in religious rituals and

activities. (9) *Sankshep-ruchi*—acquired through listening to brief religious texts (10) *Dharma-ruchi*—acquired through faith in ascetic religion and conduct *(see Uttaradhyayan Sutra 28/16-27)*

संज्ञा–पद SANJNA-PAD (SEGMENT OF DESIRE)

१०५. दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–आहारसण्णा, (भयसण्णा, मेहुणसण्णा), परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, (माणसण्णा, मायासण्णा), लोभसण्णा, लोगसण्णा, ओहसण्णा।

१०५. सज्ञाएँ दस प्रकार की है, जैसे–(१) आहारसज्ञा, (२) भयसंज्ञा, (३) मैथुनसंज्ञा, (४) परिग्रहसज्ञा, (५) क्रोधसज्ञा, (६) मानसज्ञा, (७) मायासज्ञा, (८) लोभसज्ञा, (९) लोकसज्ञा (विशेष ज्ञानोपयोग), (१०) ओघसज्ञा (कुछ लोग इसे छठी इन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय अथवा इ–एस–पी एक्स्ट्रा सेन्सरी पसेप्सन भी कहते है।)

105. *Sanjna* (desires) are of ten kinds—(1) *ahar-sanjna* (desire for food), (2) *bhaya-sanjna* (desire to run away from fear), (3) *maithun-sanjna* (desire for sex), (4) *parigraha-sanjna* (desire for possessions), (5) *krodh-sanjna* (tendency of anger), (6) *maan-sanjna* (tendency of conceit), (7) *maaya-sanjna* (tendency of deceit), (8) *lobh-sanjna* (tendency of greed) (9) *Lok-sanjna* (general knowledge) and (10) *Ogh-sanjna* (unusual awareness, some people call it sixth sense or ESP/extra sensory perception)

१०६. णेरइयाणं दस सण्णाओ एवं चेव। १०७. एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं।

१०६. इसी प्रकार नारको के दस सज्ञाएँ है। १०७. इसी प्रकार वैमानिको तक सभी दण्डक वाले जीवो को दस–दस सज्ञाएँ है।

106. In the same way *naaraks* (infernal beings) also have ten *sanjnas* **107.** In the same way all beings of all *dandaks* up to *Vaimaniks* also have ten *sanjnas* each

वेदना–पद VEDANA-PAD (SEGMENT OF PAIN)

१०८. णेरइया णं दसविधं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा–सीतं, उसिणं, खुधं, पिवासं, कंडुं, परज्झं, भयं, सोगं, जरं, वाहिं।

१०८. नारक जीव दस प्रकार की वेदनाओं का अनुभव करते रहते है, जैसे–(१) शीत वेदना, (२) उष्ण वेदना, (३) क्षुधा वेदना, (४) पिपासा वेदना, (५) कण्डू वेदना (खुजली का कष्ट), (६) परजन्यवेदना (परतंत्रता का या परजनित कष्ट), (७) भय वेदना, (८) शोक वेदना, (९) जरा वेदना, (१०) व्याधि वेदना। (जहाँ शीत वेदना होती है, वहाँ उष्ण नहीं, जहाँ उष्ण वेदना होती है, वहाँ शीत नहीं होती)।

108. *Naarak jiva* (infernal beings) suffer ten kinds of vedana (pain)—(1) *Sheet vedana* (suffering of cold), (2) *Ushna vedana* (suffering of heat), (3) *Kshudha vedana* (suffering of hunger), (4) *Pipasa vedana* (suffering of thirst), (5) *Kandu vedana* (suffering of itching), (6) *Parajanya vedana* (suffering of dependence or suffering caused by others), (7) *Bhaya vedana* (suffering of fear), (8) *Shoak vedana* (suffering of grief), (9) *Jara vedana* (suffering of dotage) and (10) *Vyadhi vedana* (suffering of disease)

छद्मस्थ-पद CHHADMASTH-PAD (SEGMENT OF CHHADMASTH)

१०९. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं जहा-धम्मत्थिकायं, (अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं), वातं, अयं जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति, अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति।

एताणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा (जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा-धम्मत्थिकायं जाव अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति।

१०९. छद्मस्थ आत्मा दस पदार्थों को सम्पूर्ण रूप से न जानता है, और न देखता है, जैसे-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीरमुक्त जीव, (५) परमाणु-पुद्गल, (६) शब्द, (७) गन्ध, (८) वायु, (९) यह जिन होगा, या नही, (१०) यह सभी दु खो का अन्त करेगा या नही।

किन्तु विशिष्ट ज्ञान और दर्शन के धारक अर्हत्, जिन, केवली उन्ही दस पदार्थों को सम्पूर्ण रूप से जानते-देखते है, जैसे-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) शरीरमुक्त जीव, (५) परमाणु-पुद्गल, (६) शब्द, (७) गन्ध, (८) वायु, (९) यह जिन होगा, या नही, (१०) यह सभी दु खो का अन्त करेगा या नही।

109. A *chhadmasth* (a person in state of karmic bondage) person cannot see or know ten things fully (all their possible modes)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter, (6) *shabd* (sound), (7) *Gandh* (smell), (8) *Vaayu* (air), (9) he will become a *jina* or not and (10) he will end all misery or not

An *Arhat, Jina*, and *Kevali* endowed with right knowledge and perception see and know fully (all their possible modes) these five things—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), (4) disembodied soul, (5) ultimate particle of matter, (6) *shabd* (sound), (7) *Gandh* (smell), (8) *Vaayu* (air), (9) he will become a *jina* or not and (10) he will end all misery or not

दशा-पद DASHA-PAD (SEGMENT OF CHAPTERS

११०. दस दसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, आयारदसाओ, पण्हावागरणदसाओ, बंधदसाओ, दोगिद्धिदसाओ, दीहदसाओ, संखेवियदसाओ।

११०. दस दशा (अध्ययन) वाले दस आगम है, जैसे-(१) कर्मविपाकदशा, (२) उपासकदशा, (३) अन्तकृत्दशा, (४) अनुत्तरोपपातिकदशा, (५) आचारदशा (दशाश्रुतस्कन्ध), (६) प्रश्नव्याकरणदशा, (७) बन्धदशा, (८) द्विगृद्धिदशा, (९) दीर्घदशा, (१०) सक्षेपकदशा।

110. There are ten *Agams* with ten *dasha* (chapters) each—(1) *Karmavipaak Dasha*, (2) *Upasak Dasha*, (3) *Antakrit Dasha*, (4) *Anuttaropapatik Dasha*, (5) *Achaar Dasha*, (*Dashashrutskandh*), (6) *Prashnavyakaran Dasha*, (7) *Bandh Dasha*, (8) *Dvigriddhi Dasha*, (9) *Deergh Dasha* and (10) *Sankshepak Dasha*

विवेचन—'दशा' शब्द तीन अर्थो का सूचक है। जिन-जिन सूत्रो के दस अध्ययन है वे। जो विशेष 'दशा' अवस्थाओ के प्रतिपादक है तथा जिन सूत्रो मे दस-दस अधिकारो का वर्णन है, उन शास्त्रो का नाम 'दशा' है।

Elaboration—The term *dasha* conveys three meanings The scriptures that have ten chapters, those that discuss special conditions (*dasha*), and those that have ten *adhikars* or sections are all called *dasha*

१११. कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

> **मियापुत्ते य गोत्तासे, अंडे सगडेति यावरे।**
> **माहणे णंदिसेणे, सोरिए य उदुंबरे॥**
> **सहसुद्दाहे आमलए,—कुमारे लेच्छई इति॥१॥**

१११. कर्मविपाकदशा-विपाक श्रुत के प्रथम श्रुतस्कध के दस अध्ययन है, जैसे-(१) मृगापुत्र, (२) गोत्रास, (३) अण्ड, (४) शकट, (५) ब्राह्मण, (६) नन्दिषेण, (७) शौरिक, (८) उदुम्बर, (९) सहस्रोद्दाह आमरक, (१०) कुमारलिच्छवी।

111. The first part of *Karmavipaak Dasha* (*Vipaak Shrut*) has ten chapters—(1) *Mrigaputra*, (2) *Gotraas*, (3) *Anda*, (4) *Shakat*, (5) *Brahman*, (6) *Nandishen*, (7) *Shaurik*, (8) *Udumbar*, (9) *Sahasroddaha Aamarak* and (10) *Kumar Lichchhivi*.

विवेचन—उल्लिखित सूत्र मे गिनाए गये अध्ययन दु खविपाक के है, किन्तु इन नामो मे और वर्तमान मे प्रचलित नामो मे निम्न अन्तर है-९ देवदत्ता, १० अजू।

Elaboration—These chapters are from *Duhkha Vipaak* The last two names in modern editions are different—(9) *Devadatta* and (10) *Anju*

११२. उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

आणंदे कामदेवे आ, गाहावतिचूलणीपिता।
सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावतिकुंडकोलिए॥
सद्दालपुत्ते महासतए, णंदिणीपिया लेइयापिता॥१॥

११२. उपासकदशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) आनन्द, (२) कामदेव, (३) गृहपति चूलिनीपिता, (४) सुरादेव, (५) चुल्लशतक, (६) गृहपति कुण्डकोलिक, (७) सद्दालपुत्र, (८) महाशतक, (९) नन्दिनीपिता, (१०) लेयिका (सालिही) पिता।

112. There are ten chapters in *Upasak Dasha*—(1) *Anand*, (2) *Kaam Deva*, (3) *Grihapati Chulinipita*, (4) *Suradeva*, (5) *Chullashatak*, (6) *Grihapati Kundakolik*, (7) *Saddalaputra*, (8) *Mahashatak*, (9) *Nandinipita* and (10) *Leyika* (*Salihi*) *pita*

११३. अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

णमि मातंगे सोमिले, रामगुत्ते सुदंसणे चेव।
जमाली य भगाली य, किंकसे चिल्लए ति य॥
फाले अंबडपुत्ते य एमेते दस आहिता॥१॥

११४. अणुत्तरोववातियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

इसिदासे य धण्णे य, सुणक्खत्ते कातिए ति य।
संठाणे सालिभद्दे य, आणंदे तेतली ति य॥
दसण्णभद्दे अतिमुत्ते, एमेते दस आहिया॥१॥

११३. अन्तकृत्दशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) नमि, (२) मातग, (३) सोमिल, (४) रामगुप्त, (५) सुदर्शन, (६) जमाली, (७) भगाली, (८) किंकष, (९) चिल्वक फाल (१०) अम्बडपुत्र।

११४. अनुत्तरोपपातिकदशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) ऋषिदास, (२) धन्य, (३) सुनक्षत्र, (४) कार्तिक, (५) सस्थान, (६) शालिभद्र, (७) आनन्द, (८) तेतली, (९) दशार्णभद्र, (१०) अतिमुक्त।

113. There are ten chapters in *Antakrit Dasha*—(1) *Nami*, (2) *Matang*, (3) *Somil*, (4) *Ramagupta*, (5) *Sudarshan*, (6) *Jamali*, (7) *Bhagali*, (8) *Kinkash*, (9) *Chilvak Phaal* and (10) *Ambadaputra*

114. There are ten chapters in *Anuttaropapatik Dasha*—(1) *Rishidas*, (2) *Dhanya*, (3) *Sunakshatra*, (4) *Kartik*, (5) *Samsthan*, (6) *Shalibhadra*, (7) *Anand*, (8) *Tetali*, (9) *Dasharnabhadra* and (10) *Atimukta*.

विवेचन–सूत्र ११३-११४ मे अन्तकृद्दशा तथा अनुत्तरोपपातिक दशा के नाम और गणना मे अन्तर है। इसका कारण वाचना-भेद हो सकता है। वर्तमान मे प्रचलित नाम आदि के लिए मूल सूत्र देखे।

Elaboration—There are variations in the names in *Antakrit Dasha* and *Anuttaropapatik Dasha* This could be due to variant readings of original texts For present names refer to the available editions

११५. आयारदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–वीसं असमाहिट्ठाणा, एगवीसं सबला, तेत्तीसं आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसंपया, दस चित्तसमाहिट्ठाणा, एगारस उवासगपडिमाओ, बारस भिक्खुपडिमाओ, पज्जोसवणाकप्पो, तीसं मोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाणं।

११५. आचारदशा (दशाश्रुतस्कन्ध) के दस अध्ययन है–(१) बीस असमाधिस्थान, (२) इक्कीस शबलदोष, (३) तेतीस आशातना, (४) अष्टविध गणिसम्पदा, (५) दस चित्त समाधिस्थान, (६) ग्यारह उपासकप्रतिमा, (७) बारह भिक्षुप्रतिमा, (८) पर्युषणाकल्प, (९) तीस मोहनीयस्थान, (१०) आजातिस्थान।

115. There are ten chapters in *Achaar Dasha* (*Dashashrutskandh*)—(1) Twenty *Asamadhisthaan*, (2) Twenty one *Shabal Dosh*, (3) Thirty three *Ashatana*, (4) *Ashtavidh Ganisampada*, (5) Ten *Chittasamadhi Sthaan*, (6) Eleven *Upasak Pratima*, (7) Twelve *Bhikshu Pratima*, (8) *Paryushana Kalp*, (9) Thirty *Mohaniya Sthaan* and (10) *Ajaitshtaan*

११६. पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–उवमा, संखा, इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं, महावीरभासिआइं, खोमगपसिणाइं, कोमलपसिणाइं अद्दागपसिणाइं, अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं।

११६. प्रश्नव्याकरणदशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) उपमा, (२) सख्या, (३) ऋषिभासित, (४) आचार्यभाषित, (५) महावीरभाषित, (६) क्षौमकप्रश्न, (७) कोमलप्रश्न, (८) आदर्शप्रश्न, (९) अगुष्ठप्रश्न, (१०) बाहुप्रश्न।

116. There are ten chapters in *Prashnavyakaran Dasha*—(1) *Upama*, (2) *Sankhya*, (3) *Rishibhashit*, (4) *Acharyabhashit*, (5) *Mahavir Bhashit*, (6) *Kshaumak Prashna*, (7) *Komal Prashna*, (8) *Adarsh Prashna*, (9) *Angushtha Prashna* and (10) *Bahu Prashna*.

विवेचन–प्रश्नव्याकरण के दस अध्ययनो का वर्णन जो यहाँ दिया है उनका वर्तमान मे उपलब्ध प्रश्नव्याकरण से कुछ भी सम्बन्ध नही प्रतीत होता। सम्भव है कि मूल प्रश्नव्याकरण मे नाना विद्याओ और मंत्रो का निरूपण था, अतएव उसका किसी समय विच्छेद हो गया और उसकी स्थानपूर्ति के लिए नवीन प्रश्नव्याकरण की रचना की गई हो, जिसमे पाँच आस्रवो और पाँच सवरो का विस्तृत वर्णन है। यह रचना कब किसने की यह प्रश्न विचारणीय है।

Elaboration—The names of ten chapters of *Prashnavyakaran* mentioned here have no resemblance with the names in the available editions It is possible that original *Prashnavyakaran* dealt with a

variety of special powers and mantras and that became extinct at some point of time In order to fill the void a new book with the same name could have been written where the subject matter is five *Asravas* and five *Samvars* When and by whom this new work was written is a matter of research

११७. बंधदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

बंधे य मोक्खे य देवड्ढि, दसारमंडलेवि य।

आयरियविप्पडिवत्ती, उवज्झायविप्पडिवत्ती, भावणा, विमुत्ती, सातो, कम्मे।

११७. बन्धदशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) बन्ध, (२) मोक्ष, (३) देवर्धि, (४) दशारमण्डल, (५) आचार्य–विप्रतिपत्ति, (६) उपाध्याय–विप्रतिपत्ति, (७) भावना, (८) विमुक्ति, (९) सात, (१०) कर्म।

117. There are ten chapters in *Bandh Dasha*—(1) *Bandh*, (2) *Moksha*, (3) *Devardhi*, (4) *Dashaar Mandal*, (5) *Acharya-vipratipatti*, (6) *Upadhyaya-vipratipatti*, (7) *Bhaavana*, (8) *Vimukti*, (9) *Saat* and (10) *Karma*

११८. दोगेद्धिदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–वाए, विवाए, उववाते, सुखेत्ते, कसिणे, बायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा, बावत्तरि सव्वसुमिणा।

हारे रामगुत्ते य, एमेते दस आहिता।

११८. द्विगृद्धिदशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) वाद, (२) विवाद, (३) उपपात, (४) सुक्षेत्र, (५) कृत्स्न, (६) बयालीस स्वप्न, (७) तीस महास्वप्न, (८) बहत्तर सर्वस्वप्न, (९) हार, (१०) रामगुप्त।

118. There are ten chapters in *Dvigriddhi Dasha*—(1) *Vaad*, (2) *Vivaad*, (3) *Upapat*, (4) *Sukshetra*, (5) *Kritsna*, (6) Forty two dreams, (7) Thirty great dreams, (8) Seventy two dreams in total, (9) *Haar* and (10) *Ramagupta*

११९. दीहदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

चंदे सूरे य सुक्के य, सिरिदेवी पभावती।
दीवसमुद्दोववत्ती बहूपत्ती मंदरेति य॥
थेरे संभूतिविजए य, थेरे पम्ह ऊसासणीसासे॥१॥

११९. दीर्घदशा के दस अध्ययन है, जैसे–चन्द्र, (२) सूर्य, (३) शुक्र, (४) श्रीदेवी, (५) प्रभावती, (६) द्वीप–समुद्रोपपत्ति, (७) बहुपुत्री मन्दरा, (८) स्थविर सम्भूतविजय, (९) स्थविर पक्ष्म, (१०) उच्छ्वास–नि श्वास।

119. There are ten chapters in *Deergh Dasha*—(1) *Chandra*, (2) *Surya*, (3) *Shukra*, (4) *Shridevi*, (5) *Prabhavati*, (6) *Dveep-samudrotpatti*, (7) *Bahuputri Mandara*, (8) *Sthavir Smbhuavijaya*, (9) *Sthavir Pakshma* and (10) *Uchchhavaas-nihshvaas*

१२०. संखेवियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–खुड्डिया विमाणपविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाते, वरुणोववाते, गरुलोववाते, वेलंधरोववाते, वेसमणोववाते।

१२०. सक्षेपिकदशा के दस अध्ययन है, जैसे–(१) क्षुल्लिकाविमानप्रविभक्ति, (२) महतीविमानप्रविभक्ति, (३) अगचूलिका (आचार आदि अगो की चूलिका), (४) वर्गचूलिका (अन्तकृत्दशा की चूलिका), (५) विवाहचूलिका (व्याख्याप्रज्ञप्ति की चूलिका), (६) अरुणोपपात, (७) वरुणोपपात, (८) गरुडोपपात, (९) वेलधरोपपात, (१०) वैश्रमणोपपात।

120. There are ten chapters in *Sankshepak Dasha*—(1) *Kshullikavimaan-pravibhakti*, (2) *Mahativimaan-pravibhakti*, (3) *Angachulika* (Appendix of *Angas* including *Achaaranga*), (4) *Vargachulika* (Appendix of *Antakriddasha*), (5) *Vivahachulika* (Appendix of *Vyakhyaprajnapti*), (6) *Arunopapat*, (7) *Varunopapat*, (8) *Garudopapat*, (9) *Velandharopapat* and (10) *Vaishramanopapat*

विवेचन–सूत्र ११७-१२० तक मे कथित दशाओ के विषय मे–**बंधदशा**–बन्ध एव मोक्ष आदि को बतलाने वाली जो दशाएँ है, वे बधदशा कहलाती है। वह दशा वर्तमान मे अनुपलब्ध है, किन्तु आचारागसूत्र के २४वे और २५वे अध्ययन का नाम भावना और विमुक्ति है। उनका स्वरूप और विषय गुरु परम्परा से जानना चाहिए।

द्विगृद्धिदसा–वह दशा भी वर्तमान मे अनुपलब्ध है, किन्तु भगवती सूत्र के १६वे शतक मे एक स्वप्न उद्देशक देखा जाता है। उसमे स्वप्नो का विस्तृत वर्णन है।

दीर्घदशा–यह दशा भी स्वरूप से अवगत नही है। फिर भी इसके कितनेक अध्यय निरयावलिका मे देखने को मिलते है, जैसे कि–चन्द्र, सूर्य, शुक्र और बहुपुत्रिका। ये चार अध्ययन पुष्पिता नामक सूत्र के तीसरे वर्ग मे है। श्रीदेवी नाम का अध्ययन पुष्पचूलिका नामक चौथे वर्ग मे है। शेष अध्ययन कही पर भी उपलब्ध नही है।

संक्षेपिक दशा–यह दशा भी वर्तमान मे अनुपलब्ध है, फिर भी नन्दीसूत्र के टीकाकार आचार्य मलयगिरि ने इस विषय में कुछ वर्णन किया है जैसे–क्षुल्लिका विमान-प्रविभक्ति मे आवलिका-प्रविष्ट विमानों तथा पुष्पावकीर्ण लघु विमानो का वर्णन है। महती विमान-प्रविभक्ति में आवलिका प्रविष्ट बडे विमानो का वर्णन है। अग सूत्रो पर जो चूलिकाएँ है, उनका वर्णन जिस अग मे है, वह अंगचूलिका कहलाता है, जैसेकि आचारागचूलिका इत्यादि। जिसमे वर्गों का वर्णन हो, उसे वर्गचूलिका कहते है, जैसे कि ज्ञाता धर्मकथा के दूसरे श्रुतस्कन्ध मे वर्ग है। अध्ययनो के समूह को वर्ग कहते है। व्याख्याचूलिका–

यह भगवती सूत्र की चूलिका है। इन पाँचो दशाओ का ग्यारह वर्ष की सयम पर्याय वाला मुनि ही अध्ययन कर सकता है। *(व्यवहार भाष्य १०/२६)*

अरुणोपपात मे अरुण नामक देव के उपपात का वर्णन है। जब कोई साधु इस सूत्र का अध्ययन उपयोग पूर्वक परावर्तन करता है, अरुण देव उसके समझ उपस्थित हो जाता है।

नन्दीचूर्णि मे एक प्रसग है–एक बार एक श्रमण अरुणोपपात ग्रन्थ का परावर्तन कर रहा था। उस समय अरुणदेव का आसन चलित हुआ। उसने अवधिज्ञान से देखा और शीघ्र अपने दिव्य ऐश्वर्य के साथ मुनि के समक्ष प्रकट हुआ। वन्दना कर, हाथ जोडकर भूमि से ऊपर अधर मे बैठ गया और ग्रन्थ का स्वाध्याय सुनते-सुनते उसका मन वैराग्य से भर गया। ग्रन्थ का स्वाध्याय समाप्त होने पर उसने मुनि से कहा–भगवन् ! आपने बहुत अच्छा स्वाध्याय किया। आप कुछ वर माँगे। मुनि ने कहा–मुझे वर की कोई जरूरत नही ! यह सुनकर वह मुनि को वन्दना कर स्वस्थान पर लौट गया। इसी प्रकार वरुणोपपात, गरुलोपपात, बेलधरोपपात और वैश्रवणोपपात के विषय मे जानना चाहिए। *(नन्दी वृत्ति पत्र २०६। स्थानाग वृत्ति ४८६। हिन्दी टीका, पृष्ठ ८२३)*

Elaboration—(about Dashas listed in aphorisms 117-120)

Bandha Dasha—The scripture that deals with bondage and liberation is called *Bandha Dasha* This scripture is not available now However there are two chapters in *Acharanga Sutra* that deal with these topics—*Bhaavana* (24th) and *Vimukti* (25th) They should be interpreted and understood according to the guru lineage

Dvigriddhi Dasha—This scripture is also not available now However, in *Bhagavati Sutra* (16th *Shatak*) there is a chapter named *Svapna* that has detailed discussion about dreams

Deergh Dasha—This scripture is also not available in its original form However, Some of its chapters can be seen in *Niryavalika* For example—*Chandra, Surya, Shukra* and *Bahuputrika*, these four chapters are in the third section named *Pushpita* and the chapter titled *Shridevi* is in the fourth section named *Pushpachulika* Remaining chapters are not available.

Sankshepak Dasha—This is also an extinct scripture. However, *Acharya Malayagiri,* the commentator (*Tika*), has provided some information in this regard—*Kshullikavimaan-pravibhakti* contains description about *Avalika-pravisht vimaans* (a kind of miniature vimaan) and other small *vimaans* covered with flowers *Mahativimaan-pravibhakti* contains description of larger *vimaans* *Angachulika* contains details about appendices of *Angas* including those of *Achaaranga* *Vargachulika* contains details about *vargas* (sections or

group of chapters) For example the second *Shrut Skandh* of *Jnata Dharma-katha* has sections. Vivahachulika is the appendix of Vyakhyaprajnapti Only an ascetic with a minimum ascetic life of eleven years is qualified to study these five chapters *(Vyavahar Bhashya 10/26)*

Arunopapat contains the description of instantaneous birth of Arun Deva When some ascetic studies it with devotion Arun Deva appears before him

There is an incident narrated in Nandi Churni—Once a Shraman was studying the book Arunopapat reading aloud At that time the throne of Arun Deva trembled The god used his avadhi-jnana and saw the engrossed Shraman The god appeared before the ascetic without any delay and after paying homage sat with joined palms slightly above the ground in the space He continued to listen with rapt attention and while doing so he got overwhelmed with a feeling of detachment When the reading was concluded the god said to the ascetic—Bhagavan ! It was a nice reading Please seek some boon The ascetic replied—I have no need for boons At this the god paid homage to the ascetic and returned to his place The same should be repeated for Varunopapat, Garudopapat, Velandharopapat and Vaishramanopapat *(Nandi Vritti, leaf 206, Sthananga Vritti, p 486 and Hindi Tika, p 823)*

कालचक्र–पद KAAL-CHAKRA-PAD (SEGMENT OF TIME CYCLE)

१२१. दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणीए।

१२२. दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणीए।

१२१. अवसर्पिणी का काल दस कोडाकोडी सागरोपम है।

१२२. उत्सर्पिणी का काल दश कोडाकोडी सागरोपम है।

121. *Avasarpini kaal* (regressive half cycle) is ten *Kodakodi Sagaropam* long

122. *Utsarpini kaal* (progressive half cycle) is ten *Kodakodi Sagaropam* long

अनन्तर–परम्पर–पद ANANTAR-PARAMPAR-PAD (SEGMENT OF ANANTAR-PARAMPAR)

१२३. दसविधा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णा, परंपरोववण्णा, अणंतरावगाढा, परंपरावगाढा, अणंतराहारगा, परंपराहारगा, अणंतरपज्जत्ता, परंपरपज्जत्ता, चरिमा, अचरिमा। एवं—णिरंतरं जाव वेमाणिया।

१२३. नारक दस प्रकार के है, जैसे-(१) **अनन्तर-उपपन्न**-जिन्हे उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ है। (२) **परम्पर उपपन्न**-जिन्हे उत्पन्न हुए दो तीन आदि अनेक समय बीत चुके है। (३) **अनन्तर-अवगाढ**-विवक्षित क्षेत्र से सलग्न आकाश-प्रदेश मे अवस्थित। (४) **परम्पर-अवगाढ**-विवक्षित क्षेत्र से व्यवधान वाले आकाश-प्रदेश मे अवस्थित। (५) **अनन्तर-आहारक**-उत्पत्ति के प्रथम समय मे आहार ग्रहण करने वाले। (६) **परम्पर-आहारक**-दो आदि समयो के पश्चात् आहार ग्रहण करने वाले। (७) **अनन्तर-पर्याप्त**-जिनके पर्याप्त होने मे एक समय का भी अन्तर नही पडा। (८) **परम्पर-पर्याप्त**-दो-तीन आदि समयो के पश्चात् पर्याप्त होने वाले। (९) **चरम**-अन्तिम बार नरकगति मे उत्पन्न होने वाले। (१०) **अचरम**-जो आगे भी नरकगति मे पुन उत्पन्न होगे। इसी प्रकार वैमानिक तक के सभी दण्डको मे जीवो के दस-दस प्रकार है।

123. *Naarak* (infernal beings) are of ten kinds—(1) *Anantar-upapanna*—those who have passed just one *Samaya* after birth (2) *Parampar-upapanna*—those who have passed two, three or more *Samayas* after birth (3) *Anantar-avagadh*—existing in the space-point adjacent to the point of reference (4) *Parampar-avagadh*—existing in a space-point distant from the point of reference (5) *Anantar-aharak*—those who have food intake during the first *Samaya* after birth (6) *Parampar-aharak*—those who have food intake after the first two *Samayas* of birth (7) *Anantar-paryapt*—those who attain full development instantaneously without a lapse of even one *Samaya* (8) *Parampar-paryapt*—those who attain full development after a lapse of two, three or more *Samayas* (9) *Charam*—those who are born in hell for the last time (10) *Acharam*—those who will be born in hell in future as well

नरक-पद NARAK-PAD (SEGMENT OF HELL)

१२४. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए दस णिरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता।

१२४. चौथी पकप्रभा पृथिवी मे दस लाख नारकावास है।

124. In *Pankaprabha Prithvi*, the fourth hell, there are ten lac (one million) infernal abodes

स्थिति-पद STHITI-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN)

१२५. रयणप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता।

१२६. चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

१२७. पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

१२८. असुरकुमाराणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। एवं जाव थणियकुमाराणं।

१२५. रत्नप्रभा पृथिवी मे नारको की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है।

१२६. चौथी पकप्रभा पृथिवी मे नारको की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम कही गई है।

१२७. पाँचवी धूमप्रभा पृथिवी मे नारको की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है।

१२८. असुरकुमार देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है। इसी प्रकार स्तनितकुमार तक के सभी भवनवासी देवो की जघन्य आयु दस हजार वर्ष की है।

125. The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of infernal beings of *Ratnaprabha prithvi* (first hell) is ten thousand years

126. The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of infernal beings of *Pankaprabha prithvi* (fourth hell) is ten *Sagaropam* (a conceptual unit of time)

127. The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of infernal beings of *Dhoom-prabha prithvi* (fifth hell) is ten *Sagaropam*

128. The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of Asur Kumar gods is ten thousand years In the same way the minimum life span of all abode dwelling gods up to Stanit Kumar gods is ten thousand years

१२९. बायरवणस्सतिकाइयाणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता।

१३०. वाणमंतराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता।

१३१. बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

१३२. लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

१२९. बादर वनस्पतिकायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की है।

१३०. वानव्यन्तर देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है।

१३१. ब्रह्मलोककल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

१३२. लान्तक कल्प मे देवो की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है।

129. The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of *badar vanaspatikayik jivas* (gross plant-bodied beings) is ten thousand years

130. The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of *Vanavyantar* gods is ten thousand years.

131. The *utkrisht sthiti* (maximum life span) of gods in *Brahmalok Kalp* is ten *Sagaropam* (a conceptual unit of time)

132. The *jaghanya sthiti* (minimum life span) of gods in *Lantak Kalp* is ten *Sagaropam* (a conceptual unit of time).

१३३. दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—अणिदाणताए, दिट्ठिसंपण्णताए, जोगवाहिताए, खंतिखमणताए, जितिंदियताए, अमाइल्लताए, अपासत्थताए, सुसामण्णताए, पवयणवच्छल्लताए, पवयणउब्भावणताए।

१३३. दस कारणो से जीव **आगामी भद्रता** (आगामीभव मे सुख देने वाले कर्म। जो जीव को देवत्व की प्राप्ति और तदनन्तर मनुष्य भव पाकर मुक्ति-प्राप्ति) के योग्य शुभ कर्म का उपार्जन करते है।

(१) **निदान नहीं करने से**—तप के फल से सासारिक सुखो की कामना न करने से।

(२) **दृष्टिसम्पन्नता से**—सम्यग्दर्शन की सागोपाग आराधना से।

(३) **योगवाहिता से**—मन, वचन, काय की समाधि रखने से तथा स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा आदि मे योगवाहिता से।

(४) **क्षान्ति-क्षमणता से**—समर्थ व शान्तिसम्पन्न होकर के भी अपराधी को क्षमा करने एव क्षमा धारण करने की भावना से।

(५) **जितेन्द्रियता से**—पाँचो इन्द्रियो के विषयो को जीतने से।

(६) **ऋजुता से**—मन, वचन, काय की सरलता से।

(७) **अपार्श्वस्थता से**—चारित्र पालन मे शिथिलता न रखने से।

(८) **सुश्रामण्य से**—श्रमण धर्म का यथाविधि पालन करने से।

(९) **प्रवचनवत्सलता से**—जिन-आगम जिन प्रवचन और जिन शासन के प्रति गाढ अनुराग रखने से।

(१०) **प्रवचन-उद्भावनता से**—आगम और शासन की प्रभावना व गुणोत्कीर्तन करने से।

133. For ten reasons *jiva* (soul) acquires pious karmas leading to future nobility (the *karmas* that bring bliss in future reincarnation. This relates to the souls that reincarnate as gods and then as humans to get liberated)—

(1) By *anidaan*—by not having aspirations of mundane pleasures as fruits of austerities

(2) By *drishtisampannata*—by perfect endeavour for gaining and practicing right perception/faith

(3) By *yogavahita*—by achieving perfect equanimity of mind, speech and action and sincere indulgence in studies, meditation and other such spiritual practices

(4) By *kshantikshamanata*—by having a forgiving attitude and forgiving a miscreant in spite of having authority and power to punish.

(5) By *jitendriyata*—by winning over or having absolute control over pleasures of sense organs.

(6) By *rijuta*—by simplicity of mind, speech and action

(7) By *aparshvasthata*—by avoiding relaxation in observing code of conduct

(8) By *Sushramanya*—by immaculately following ascetic duties

(9) By *pravachan-vatsalata*—by having profound love and faith in *Jina-agam* (Jain scriptures) *Jina-pravachan* (word of the *Jina*) and *Jina-shasan* (order of the Jina)

(10) By *pravachan-udbhaavana*—by spreading Jain canon and influence of the *Jina* and singing in its praise

आशंसा-प्रयोग-पद ASHAMSA-PRAYOGA-PAD (SEGMENT OF HAVING DESIRES)

१३४. दसविहे आसंसप्पओगे पण्णत्ते, तं जहा–इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, दुहओलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामासंसप्पओगे, भोगासंसप्पओगे, लाभासंसप्पओगे, पूयासंसप्पओगे, सक्कारासंसप्पओगे।

१३४. आशसा प्रयोग (इच्छा-का प्रयोग) दस प्रकार का है, जैसे-(१) **इहलोकाशंसा-प्रयोग**-इस लोक-सम्बन्धी सुख-भोग की इच्छा करना। (२) **परलोकाशंसा-प्रयोग**-परलोक सम्बन्धी सुख-भोग की इच्छा करना। (३) **द्वयलोकाशंसा-प्रयोग**-दोनो लोक-सम्बन्धी इच्छा करना। (४) **जीविताशसा-प्रयोग**-चिरकाल तक जीवित रहने की इच्छा करना। (५) **मरणाशंसा-प्रयोग**-सकट आदि आने पर मरने की इच्छा करना। (६) **कामाशंसा-प्रयोग**-काम (शब्द और रूप) की इच्छा करना। (८) **लाभाशंसा-प्रयोग**-धन, सत्ता आदि लौकिक लाभो की इच्छा करना। (९) **पूजाशसा-प्रयोग**-पूजा, ख्याति और प्रशसा प्राप्त करने की इच्छा करना। (१०) **सत्काराशंसा-प्रयोग**-दूसरो से सत्कार पाने की इच्छा करना।

134. *Ashamsa-prayoga* (to wish) is of ten kinds—(1) *Ihalokashamsa-prayoga*—to wish for happiness in this life (2) *Paralokashamsa-prayoga*—to wish for happiness in next life (3) *Dvayalokashamsa-prayoga*—to wish for happiness in both worlds (4) *Jivitashamsa-prayoga*—to wish for immortality (5) *Maranashamsa-prayoga*—to wish for death when tormented. (6) *Kaamashamsa-prayoga*—to wish for physical gratification (sound and beauty) (7) *Bhogashamsa-prayoga*—to wish for physical gratification (smell, taste and touch) (8) *Labhashamsa-prayoga*—to wish for mundane gains like wealth and power (9) *Pujashamsa-prayoga*—to wish for worship, fame and praise (10) *Satkarashamsa-prayoga*—to wish for being honoured and respected by others.

धर्म–पद DHARMA-PAD (SEGMENT OF DHARMA)

१३५. दसविधे धम्मे पण्णत्ते, तं जहा–गामधम्मे, णगरधम्मे, रट्ठधम्मे, पासंडधम्मे, कुलधम्मे, गणधम्मे, संघधम्मे, सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे।

१३५. धर्म दस प्रकार का है, जैसे–(१) **ग्रामधर्म**–गाँव की परम्परा या व्यवस्था का पालन करना। (२) **नगरधर्म**–नगर की परम्परा या व्यवस्था का पालन करना। (३) **राष्ट्रधर्म**–राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य का पालन करना। (४) **पाषण्डधर्म**–पापो का खण्डन करने वाला आचार अथवा सम्प्रदायो का धार्मिक क्रियाकाण्ड। (५) **कुलधर्म**–कुल के परम्परागत आचार का पालन करना। (६) **गणधर्म**–गणतत्र राज्यो की परम्परा या व्यवस्था का पालन करना। (७) **संघधर्म**–सघ की समाचारी, मर्यादा और व्यवस्था का पालन करना। (८) **श्रुतधर्म**–द्वादशाग श्रुत की आराधना या अभ्यास करना। (९) **चारित्रधर्म**–श्रमण धर्म व १७ प्रकार के सयम की आराधना करना, चारित्र का पालन। (१०) **अस्तिकायधर्म**–अस्तिकाय अर्थात् बहुप्रदेशी द्रव्यो का धर्म (स्वभाव)।

135. *Dharma* (duty or religion) are of ten kinds—(1) *Gram-dharma* (village duty)—to follow the village traditions customs and codes (2) *Nagar-dharma* (city duty)—to follow the village traditions customs and codes (3) *Rashtra-dharma* (national duty)—to follow national duties (4) *Pakhand-dharma* (heretic religion)—to follow conduct that does not defy sins, also to observe hollow rituals of heretic sects (5) *Kula-dharma* (family duty)—to follow family traditions and codes (6) *Gana-dharma* (republic duty)—to follow the customs and codes of republic system (7) *Sangh-dharma* (duty of religious organization)—to follow praxis, discipline and codes of the religious organization (8) *Shrut-dharma—to* study and worship the twelve limbed Jain canon (9) *Chaaritra dharma*—to practice and follow Jain religion and 17 kinds of ascetic-discipline, to practice ascetic conduct (10) *Astikaya-dharma*—the properties of *Astikaya* or agglomerative entities

विवेचन–प्रस्तुत सूत्र की भावना को समझाने के लिए आचार्य श्री आत्माराम जी म ने प्रारम्भ मे धर्म की छह परिभाषाएँ दी है–(१) धर्म–वस्तु का अपना स्वभाव, (२) जाति, वर्ण, समुदाय आदि से सम्बन्धित कर्त्तव्य व कार्य व्यवहार, (३) समाज की सुरक्षा व शान्ति के लिए निश्चित किया आचरण व वृत्ति। (४) देश व राष्ट्र से सम्बन्धित व्यवहार, (५) उचित–अनुचित का विचार करने वाला, सम्यक् विवेक। (६) ईश्वर तथा परलोक आदि से सम्बन्धित विश्वास तथा आराधना की विधि। धर्म के इन सभी अर्थों के परिप्रेक्ष्य मे सूत्रोक्त दस धर्म को समझना चाहिए।

Elaboration—In order to elaborate the sentiment of this aphorism Acharya Shri Atmamarm ji M has mentioned six meanings of the term *dharma*—(1) the intrinsic nature of a thing, (2) the duties and code of

conduct related to caste, creed, sect or other social group, (3) the codes and duties defined for security and peace in society, (4) national duties, (5) sagacity to discern right and wrong, (6) belief and method of worship of god, next life etc The aforesaid ten kinds of *dharmas* should be seen in context of all these six meanings

स्थविर–पद STHAVIR-PAD (SEGMENT OF SENIOR PERSON)

१३६. दस थेरा पण्णत्ता, तं जहा–गामथेरा, णगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, संघथेरा, जातिथेरा, सुअथेरा, परियायथेरा।

१३६. स्थविर (ज्येष्ठ या वृद्ध ज्ञानी पुरुष) दस प्रकार के है, जैसे–(१) **ग्राम–स्थविर**–ग्रामका व्यवस्थापक, ज्येष्ठ, वृद्ध और बुद्धिमान् पुरुष। (२) **नगर–स्थविर**–नगर का व्यवस्थापक, ज्येष्ठ, वृद्ध और ज्ञानी पुरुष। (३) **राष्ट्र–स्थविर**–राष्ट्र का व्यवस्थापक, ज्येष्ठ, वृद्ध और ज्ञानी पुरुष। (४) **प्रशास्तृ–स्थविर**–प्रशासन करने वाला प्रधान अधिकारी अथवा धर्मोपदेशक। (५) **कुल–स्थविर**–लौकिक पक्ष मे कुल का ज्येष्ठ या वृद्ध पुरुष। लोकोत्तर पक्ष मे एक आचार्य की शिष्य परम्परा मे ज्येष्ठ साधु। (६) **गण–स्थविर**–लौकिक पक्ष मे गणराज्य का प्रधान पुरुष। लोकोत्तर पक्ष मे साधुओ के गण मे ज्येष्ठ साधु। (७) **संघ–स्थविर**–लौकिक पक्ष मे राज्य सघ का प्रधान पुरुष। लोकोत्तर पक्ष मे साधु सघ का ज्येष्ठ साधु। (८) **जाति–स्थविर**–साठ वर्ष या इससे अधिक आयु वाला वृद्ध। (९) **श्रुत–स्थविर**–स्थानाग और समवायाग श्रुत का धारक। (१०) **पर्याय–स्थविर**–बीस वर्ष की या इससे अधिक की दीक्षा पर्याय वाला साधु।

136. *Sthavir* (senior or experienced person) are of ten kinds—(1) *Gram-sthavir* (village elder)—the senior, elderly and wise leader of a village (2) *Nagar-sthavir* (city elder)—the senior, elderly and wise leader of a city (3) *Rashtra-sthavir* (senior national leader)—the senior, elderly and wise leader of a country (4) *Prashastri-sthavir* (senior administrator)—chief administrative officer or religious preacher (5) *Kula-sthavir* (family senior)—the senior most or eldest person in personal family or in a family or group of ascetics (6) *Gana-sthavir* (leader of a *gana*)—the senior most or eldest person in republic (gana) or in a group (*gana*) of ascetics (7) *Sangh-sthavir* (leader of a *sangh*)—the senior most or eldest person in a federal republic (*sangh*) or in a group (*sangh*) of ascetics (8) *Jati-sthavir* (elderly)—an old man of 60 or more years of age (9) *Shrut-sthavir*—a scholar of *Sthananga* and *Samvayanga Shrut*. (10) *Paryaya-sthavir*—an ascetic with twenty years or more of period of initiation

पुत्र-पद PUTRA-PAD (SEGMENT OF SON)

१३७. दस पुत्ता पण्णत्ता, तं जहा–अत्तए, खेत्तए, दिण्णए, विण्णए, उरसे, मोहरे, सोंडीरे, संवुड्ढे, उवयाइते, धम्मंतेवासी।

१३७. पुत्र दस प्रकार के है, जैसे-(१) **आत्मज**–अपने पिता से उत्पन्न पुत्र। (२) **क्षेत्रज**–नियोग-विधि से उत्पन्न पुत्र। (३) **दत्तक**–गोद लिया हुआ पुत्र। (४) **विज्ञक**–विद्या दान करने वाले गुरु का शिष्य। (५) **औरस**–स्नेहवश स्वीकार किया पुत्र अथवा विवाहिता पत्नी से उत्पन्न। (६) **मौखर**–अपनी वचन-कुशलता या चापलूसी के कारण पुत्र रूप से स्वीकृत। (७) **शौण्डीर**–शूरवीरता के कारण अपने अधीन किये व्यक्ति पुत्र रूप से स्वीकृत। (८) **संवर्धित**–पालन-पोषण किया गया अनाथ पुत्र। (९) **औपयाचितक**–देवता की आराधना से उत्पन्न पुत्र या प्रिय सेवक। (१०) **धर्मान्तेवासी**–धर्माराधन के लिए समीप रहने वाला शिष्य।

137. *Putra* (sons) are of ten kinds—(1) *Atmaj*—father's son (own son) (2) *Kshetraj*—son by *niyoga* process (consented conception by wife from other person or artificial insemination) (3) *Dattak*—adopted son (4) *Vijnak*—son-like student of a teacher (5) *Auras*—accepted as son out of love, also a son by married wife (6) *Maukhar*—accepted as son due to flattery or glib talking (7) *Shaundir*—a conquered person accepted as a son due to his bravery (8) *Samvardhit*—an orphan raised as son (9) *Aupayachitak*—son or beloved servant bestowed by some deity (10) *Dharmantevasi*—a disciple living with a guru for religious practices

अणुत्तर-पद ANUTTAR-PAD (SEGMENT OF MATCHLESS THINGS)

१३८. केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पण्णत्ता, तं जहा–अणुत्तरे णाणे, अणुत्तरे दंसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए, अणुत्तरा खंती, अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे, अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे।

१३८. केवली के दस (अनुपम या सबसे उत्तम) है, जैसे-(१) अनुत्तर ज्ञान, (२) अनुत्तर दर्शन, (३) अनुत्तर चारित्र, (४) अनुत्तर तप, (५) अनुत्तर वीर्य (आत्म शक्ति), (६) अनुत्तर क्षान्ति, (७) अनुत्तर मुक्ति, (८) अनुत्तर आर्जव, (९) अनुत्तर मार्दव, (१०) अनुत्तर लाघव।

138. A *Kevali* has ten *anuttar* (matchless) things—(1) *anuttar jnana* (matchless knowledge), (2) *anuttar darshan* (matchless perception), (3) *anuttar chaaritra* (matchless conduct), (4) *anuttar tap* (matchless austerities), (5) *anuttar virya* (matchless spiritual potency), (6) *anuttar kshanti* (matchless forgiveness), (7) *anuttar mukti* (matchless contentment), (8) *anuttar arjava* (matchless spiritual purity), (9) *anuttar maardava* (matchless gentleness), and (10) *anuttar laghava* (matchless modesty)

कुरा–पद **KURA-PAD (SEGMENT OF KURA)**

१३९. समयखेत्ते णं दस कुराओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पंच देवकुराओ पंच उत्तरकुराओ।

तत्थ णं दस महतिमहालया महादुमा पण्णत्ता, तं जहा–जम्बू सुदंसणा, धायइरुक्खे, महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे, महापउमरुक्खे, पंच कूडसामलीओ।

तत्थ णं दस देवा महिड्ढिया जाव परिवसंति, तं जहा–अणाढिते जंबुद्दीवाधिपती, सुदंसणे, पियदंसणे, पोंडरीए, महापोंडरीए, पंच गरुला वेणुदेवा।

१३९. समयक्षेत्र (मनुष्यलोक) मे दस कुरा है, जैसे–पाँच देवकुरा, पाँच उत्तरकुरा। (जम्बूद्वीप मे १–१, धातकीषण्ड मे २–२, पुष्करार्द्ध द्वीप मे २–२ यो पाँच देव कुरु, पाँच उत्तर कुरु)

वहाँ दस महातिमहान् दस महाद्रुम है, जैसे–(१) (उत्तर कुरु मे) जम्बू सुदर्शन वृक्ष, (२) धातकी वृक्ष, (३) महाधातकी वृक्ष, (४) पद्म वृक्ष, (५) महापद्म ये पॉच महावृक्ष है तथा देव कुरु मे पाँच कूटशाल्मली महा वृक्ष है।

वहाँ महर्धिक, महाद्युतिसम्पन्न, महानुभाग, महायशस्वी, महाबली और महासुखी तथा एक पल्योपम की स्थिति वाले दस देव रहते है, जैसे–(१) जम्बूद्वीपाधिपति अनादृत, (२) सुदर्शन, (३) प्रियदर्शन, (४) पौण्डरीक, (५) महापौण्डरीक। तथा पाँच गरुड वेणुदेव (पाँच कूट शाल्मली वृक्षो पर निवास करते है)।

139. In the *Samaya kshetra* (area inhabited by humans) there are ten *Kuras* (specific section of land)—five *Devakuras* and five *Uttar-kuras* (one each in *Jambudveep*, two each in *Dhatakikhand* and two each in *Pushkarardh Dveep*; thus there are five *Devakuras* and five *Uttar-kuras*)

There are ten best among the best *mahadrums* (great trees) there—(in *Uttar-kuru*) (1) *Jambu Sudarshan* tree, (2) *Dhataki* tree, (3) *Mahadhataki* tree, (4) *Padma* tree, (5) *Mahapadma* tree and in Devakur there are five *Koot-shalmali* great trees

On these trees reside ten gods having great wealth, great radiance, great power, great fame, great strength, great happiness and life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) *Jambudveepadhipati Anadrit Dev*, (2) *Sudarshan*, (3) *Priyadarshan*, (4) *Paundareek*, (5) *Mahapaundareek*, and five *Garud Venu Devas* on five *Koot-shalmali* trees

दुःषमा–लक्षण–पद **DUKHAMA-LAKSHAN-PAD (SEGMENT OF SIGNS OF DUKHAMA)**

१४०. दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तं जहा–अकाले वरिसइ, असाहू पूइज्जंति, साहू ण पूइज्जंति, गुरुसु जणो मिच्छं पडिवण्णो, अमणुण्णा सद्दा, (अणुण्णा रूवा, अमणुण्णा गंधा, अमणुण्णा रसा, अमणुण्णा) फासा।

१४०. दस निमित्तो से विषम दु षमा-काल का आगमन जाना जाता है, जैसे-(१) अकाल मे वर्षा होने से, (२) समय पर वर्षा न होने से, (३) असाधुओ की पूजा होने से, (४) साधुओ की पूजा न होने से, (५) गुरुजनो के प्रति मनुष्यो का मिथ्या या असद् व्यवहार होने से, (६) अमनोज्ञ शब्दो, (७) अमनोज्ञ रूपो, (८) अमनोज्ञ गन्धो के, (९) अमनोज्ञ रसो के और (१०) अमनोज्ञ स्पर्शो के हो जाने से। (अमनोज्ञ शब्द से भयावह, अनिष्ट कारक, दूषित, रोग वर्धक आदि भाव समझना चाहिए।

140. There are ten signs that indicate the coming of *Dukham kaal* (epoch of sorrow)—(1) untimely rains, (2) absence of rains during monsoon season, (3) worship of the impious, (4) avoidance of worship of the pious, (5) misbehaviour with seniors, (6) amanojna shabd (repulsive and hurting words), (7) amanojna rupa (repulsive and hurting scenes or visions), (8) amanojna gandh (repulsive and hurting smells), (9) amanojna rasa (repulsive and hurting tastes) and (10) amanojna sparsh (repulsive and hurting touch) (amanojna includes fearful, harmful, polluted, contaminated etc)

सुषमा-लक्षण-पद **SUKHAMA-LAKSHAN-PAD (SEGMENT OF SIGNS OF SUKHAMA)**

१४१. दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा, तं जहा-अकाले ण वरिसति, (काले वरिसति, असाहू ण पूइज्जंति, साहू पुइज्जंति, गुरुसु जणो सम्मं पडिवण्णो, मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा, मणुण्णा गंधा, मणुण्णा रसा), मणुण्णा फासा।

१४१. दस निमित्तो से सुषमा काल की अवस्थिति जानी जाती है, जैसे-(१) अकाल मे वर्षा न होने से, (२) समय पर वषा होने से, (३) असाधुओ की पूजा नही होने से, (४) साधुओ की पूजा होने से, (५) गुरुजनो के प्रति मनुष्य का सद्व्यवहार होने से, (६) मनोज्ञ शब्दो के, (७) मनोज्ञ रूपो के, (८) मनोज्ञ गन्धो के, (९) मनोज्ञ रसो के, (१०) मनोज्ञ स्पर्शो के होने से।

141. There are ten signs that indicate the coming of *Sukham kaal* (epoch of happiness)—(1) absence of untimely rains, (2) timely rains, (3) avoidance of worship of the impious, (4) worship of the pious, (5) good behaviour with seniors, (6) manojna shabd (attractive and beneficent words), (7) manojna rupa (attractive and beneficent scenes or visions), (8) manojna gandh (attractive and beneficent smells), (9) manojna rasa (attractive and beneficent tastes) and (10) manojna sparsh (attractive and beneficent touch)

कल्प-वृक्ष-पद **KALPAVRIKSHA-PAD (SEGMENT OF WISH FULFILLING TREE)**

१४२. सुसमसुसमाए णं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, तं जहा-

मतंगया य भिंगा, तुडितंगा दीव जोति चित्तंगा।
चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अणियणा य॥१॥ (संग्रहणी–गाथा)

१४२. सुषम–सुषमा काल मे दस प्रकार के वृक्ष उपभोग के लिए सुलभता से प्राप्त होते है, जैसे–

(१) **मदांग**–शरीर के लिए पौष्टिक रस देने वाले। (२) **भृग**–भोजन के लिए आवश्यक पात्र आदि देने वाले। (३) **त्रुटितांग**–मनोरजन के लिए वादित्रध्वनि उत्पन्न करने वाले। (४) **दीपांग**–प्रकाश करने वाले। (५) **ज्योतिरंग**–सूर्य के समान उष्णता उत्पन्न करने वाले। (६) **चित्रांग**–अनेक प्रकार की माला–पुष्प उत्पन्न करने वाले। (७) **चित्ररस**–अनेक प्रकार के मनोज्ञ रस देने वाले। (८) **मणि–अंग**–आभरण प्रदान करने वाले। (९) **गेहाकार**–आश्रय के लिए घर के आकार वाले। (१०) **अनग्न**–नग्नता को ढाकने वाले। (विशेष वर्णन जीवाभिगम तृतीय प्रतिपत्ती)

142. During the *Sukham-sukhama kaal* (period of extreme happiness) ten kinds of *kalp-vriksha* (wish fulfilling trees) were easily available for subsistence—(1) *Madaanga*—providing nutritious juice, (2) *Bhring*—providing pots (etc) for food, (3) *Trutitang*—producing instrumental music for entertainment, (4) *Dipang*—producing light, (5) *Jyotirang*—producing heat (like the sun), (6) *Chitrang*—providing a variety of flowers and garlands, (7) *Chitrarasa*—providing a variety of tasty juices, (8) *Mani-ang*—providing ornaments, (9) *Gehakar*—house-shaped, used as abodes, (10) *Anagnak*—used for covering nudity (providing dress) (more details available in Jivabhigam, third Pratipatti)

कुलकर–पद KULAKAR-PAD (SEGMENT OF CLAN FOUNDERS)

१४३. जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा हुत्था, तं जहा–

सयंजले सयाऊ य, अणंतसेणे व अजितसेणे य।
कक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे॥१॥
दढरहे दसरहे, सयरहे। (संग्रहणी गाथा)

१४४. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगामीसाए उस्सप्पिणी दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा– सीमंकरे, सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहणे, संमती, पडिसुते, दढधणू, दसधणू, सतधणू।

१४३. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे, भारतवर्ष मे, अतीत उत्सर्पिणी मे दस कुलकर उत्पन्न हुए थे, जैसे–(१) स्वयजल (शतजल), (२) शतायु, (३) अनन्तसेन, (४) अजितसेन, (५) कर्कसेन, (६) भीमसेन, (७) महाभीमसेन, (८) दृढरथ, (९) दशरथ, (१०) शतरथ।

१४४. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे, भारतवर्ष मे, आगामी उत्सर्पिणी मे दस कुलकर होगे, जैसे–(१) सीमंकर, (२) सीमन्धर, (३) क्षेमकर, (४) क्षेमन्धर, (५) विमलवाहन, (६) सन्मति, (७) प्रतिश्रुत, (८) दृढधनु, (९) दशधनु, (१०) शतधनु।

143. In Jambu Dveep in Bharat-varsh there have been seven *kulakars* (clan founders or society makers) during the past *Utsarpini* (progressive cycle of time)—(1) *Svayamjal* (*Shatajal*), (2) *Shatayu*, (3) *Anantasen*, (4) *Ajitasen*, (5) *Karkasen*, (6) *Bhimasen*, (7) *Mahabhimasen*, (8) *Dridharath*, (9) *Dasharath* and (10) *Shatarath*

144. In Jambu Dveep in Bharat-varsh there will be seven *kulakars* (clan founders or society makers) during the coming *Utsarpini* (progressive cycle of time)—(1) *Simankar*, (2) *Simandhar*, (3) *Kshemankar*, (4) *Kshemandhar*, (5) *Vimalavahan*, (6) *Sanmati*, (7) *Pratishrut*, (8) *Gridhadhanu*, (9) *Dashadhanu* and (10) *Shatadhanu*

विवेचन–'कुलकर' का अर्थ है, विशिष्ट बुद्धि सम्पन्न, कुल व्यवस्थापक पुरुष। वैदिक परम्परा मे इन्हे 'मनु' कहा गया है। वर्तमान अवसर्पिणी काल का यहाँ उल्लेख नही है। कारण, कही सात व कही पन्द्रह कुलकरो का उल्लेख होने से यहाँ उसका कथन नही किया है।

Elaboration—*Kulakars* are specially endowed clan founders and heads In *Vedic* tradition they are called *Manu* There is no mention of the present regressive cycle of time here This is because at different places different numbers, such as seven or fifteen, have been mentioned

वक्षस्कार–पद VAKSHASKAR-PAD (SEGMENT OF VAKSHASKAR)

१४५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणईए उभओकूले दस वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा–मालवंते, चित्तकूडे, पम्हकूडे, (णालिणकूडे, एगसेले, तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे), सोमणसे।

१४६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणईए उभओकूले दस वक्खारपव्वता पण्णत्ता, तं जहा–विज्जुप्पभे, (अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावसे, चंदपव्वते, सूरपव्वते, णागपव्वते, देवपव्वते), गंधमायणे।

१४५. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे सीता महानदी के दोनो कूलो (उत्तरी व दक्षिणी तट) पर दस वक्षस्कार पर्वत है, जैसे–(१) माल्यवानकूट, (२) चित्रकूट, (३) पक्ष्मकूट, (४) नलिनकूट, (५) त्रिकूट, (७) वैश्रमणकूट, (८) अजनकूट, (९) माताजनकूट, (१०) सौमनसकूट।

१४६. जम्बूद्वीप नामक द्वीप मे, मन्दर पर्वत के पश्चिम मे शीतोदा महानदी के दोनो कूलो (उत्तर दक्षिण) पर दस वक्षस्कार पर्वत, जैसे–(१) विद्युत्प्रभकूट, (२) अंकावतीकूट, (३) पक्ष्मावतीकूट, (४) आशीविषकूट, (५) सुखावहकूट, (६) चन्द्रपर्वतकूट, (७) सूर्यपर्वतकूट, (८) नागपर्वतकूट, (९) देवपर्वतकूट, (१०) गन्धमादनकूट।

145. In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain there are ten *Vakshaskar* mountains on the two banks of great river Sita—

(1) *Malyavan-koot*, (2) Chitrakoot, (3) *Padmakoot*, (4) *Nalinakoot*, (5) *Ekashaila*, (6) *Trikoot*, (7) *Vaishraman-koot*, (8) *Anjan-koot*, (9) *Matanjan-koot* and (10) *Saumanas-koot*

146. In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain there are ten *Vakshaskar* mountains on the two banks of great river Sitoda—(1) *Vidyutprabh-koot*, (2) *Ankavatikoot*, (3) *Pakshmavatikoot*, (4) Ashivish-koot, (5) *Sukhavah-koot*, (6) *Chandraparvat-koot*, (7) *Suryaparvat-koot*, (8) *Naag-parvat-koot*, (9) *Devaparvat-koot* and (10) *Gandhamadan-koot*

१४७. एवं धायइसंडपुरत्थिमद्धेवि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे।

१४७. इसी प्रकार धातकीषण्ड के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे तथा पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध-पश्चिमार्ध मे सीता और शीतोदा महानदियो के दोनो कूलो पर दस-दस वक्षस्कार पर्वत है।

147. In the same way in eastern and western halves of Dhatakikhand and those of Pushkaravaradveepardh there are ten *Vakshaskar* mountains each on both the banks of great rivers Sita and Sitoda

विवेचन–जिन पर्वतो की ऊँचाई, गहराई एव परिधि सम हो तथा जिनकी सुन्दरता व सुरम्यता भी समान हो, उन्हे 'वक्षस्कार पर्वत' कहा जाता है। महाविदेह क्षेत्र मे बीस वक्षस्कार पर्वत है।

Elaboration—The mountains with all the three dimensions—height, depth and circumference—equal and, which are equally beautiful and attractive are called Vakshaskar parvat There are twenty Vakshaskar parvats in Mahavideh area

कल्प–पद KALP-PAD (SEGMENT OF DIVINE REALMS)

१४८. दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पण्णत्ता, तं जहा–सोहम्मे, (ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे, बंभलोए, लंतए, महासुक्के), सहस्सारे, पाणते, अच्चुते। १४९. एतेसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पण्णत्ता, तं जहा–सक्के ईसाणे, (सणंकुमारे, माहिंदे, बंभे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे, पाणते), अच्चुते।

१४८. इन्द्रो से अधिष्ठित कल्प (देव विमान) दस है, जैसे–(१) सौधर्म कल्प, (२) ईशान कल्प, (३) सनत्कुमार कल्प, (४) माहेन्द्र कल्प, (५) ब्रह्मलोक कल्प, (६) लान्तक कल्प, (७) महाशुक्र कल्प, (८) सहस्रार कल्प, (९) प्राणत कल्प, (१०) अच्युत कल्प। १४९. इन दस कल्पो मे दस इन्द्र है, जैसे–(१) शक्र, (२) ईशान, (३) सनत्कुमार, (४) माहेन्द्र, (५) ब्रह्म, (६) लान्तक, (७) महाशुक्र, (८) सहस्रार, (९) प्राणत, (१०) अच्युत।

148. There are said to be ten *Indradhishthit kalps* (the divine realms ruled by *Indras*)—(1) *Saudharma kalp*, (2) *Ishan kalp*, (3) *Sanatkumar kalp*, (4) *Maahendra kalp*, (5) *Brahmalok kalp*, (6) *Lantak kalp*,

(7) *Mahashukra kalp*, (8) *Sahasrar kalp*, (9) *Pranat kalp*, and (10) *Achyut kalp* **149.** There are said to be ten *Indras* (overlords) in these *Kalps*—(1) *Shakra*, (2) *Ishan*, (3) *Sanatkumar*, (4) *Maahendra*, (5) *Brahma*, (6) *Lantak*, (7) *Mahashukra*, (8) *Sahasrar*, (9) *Pranat*, and (10) *Achyut*

१५०. एतेसि णं दसण्हं इंदाणं दस परिजाणिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा–पालए, पुप्फए, (सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते, कामकमे, पीतिमणए, मणोरमे), विमलवरे, सव्वतोभद्दे।

१५०. इन दसो इन्द्रो के पारियानिक (यात्रा पर जाने के लिए) विमान दस है, जैसे–(१) पालक, (२) पुष्पक, (३) सौमनस, (४) श्रीवत्स, (५) नन्द्यावर्त, (६) कामक्रम, (७) प्रीतिमना, (८) मनोरम, (९) विमलवर, (१०) सर्वतोभद्र।

(दस कल्पो के इन्द्र आदि का विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना पद १ तथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि मे है)

150. These ten *Indras* are said to have ten *paariyanik vimaans* (celestial vehicles used for traveling)—(1) *Paalak*, (2) *Pushpak*, (3) *Saumanas*, (4) *Shrivatsa*, (5) *Nandyavart*, (6) *Kamakram*, (7) *Pritimana*, (8) *Manoram*, (9) *Vimalavar* and (10) *Sarvatobhadra* (for more details about *kalps* and *Indras* refer to *Prajnapana*/1 and *Jambudveep Prajnapti*)

प्रतिमा–पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)

१५१. दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेण रातिंदियसतेणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासतेहिं अहासुत्तं (अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया) आराहिया आवि भवति।

१५१. दस–दशमिका भिक्षु–प्रतिमा सौ दिन–रात तथा ५५० भिक्षा–दत्तियो द्वारा यथासूत्र, यथाअर्थ यथातथ्य, यथामार्ग, यथाकल्प तथा सम्यक् प्रकार काय से आचरित, पालित, शोधित, पूरित, कीर्त्तित और आराधित की जाती है। *(विशेष वर्णन अन्तकृद्दशा सूत्र पृष्ठ पर देखे)*

151. The *Dash-dashamika Bhikshupratima* (a specific practice with special codes) is sincerely observed (palit), purified (shodhit, for transgressions), completed (purit), for breaking fast), concluded (kirtit, break the fast) and successfully performed (aradhit) for 100 (10x10) days and nights with 550 bhikshadattis (servings of alms) according to the scriptures (yathasutra), correct interpretation (yatha-arth), prescribed procedure (yathamarg) and code of praxis (yathakalp), perfectly following fundamentals (yathatattva), with equanimity (samata) and touching the body (actually not just conceptually) *(for more details refer to Antakriddashanga Sutra)*

१५२. दसविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयएगिंदिया, अपढमसमयएगिंदिया, (पढमसमयबेइंदिया, अपढमसमयबेइंदिया, पढमसमयतेइंदिया, अपढमसमयतेइंदिया, पढमसमयचउरिंदिया, अपढमसमयचउरिंदिया, पढमसमयपंचिंदिया), अपढमसमयपंचिंदिया।

१५२. ससारी जीव दस प्रकार के है, जैसे–(१) प्रथम समय–जिनको उत्पन्न हुए प्रथम समय ही हुआ है ऐसे एकेन्द्रिय जीव। (२) अप्रथम समय–जिनको उत्पन्न हुए एक से अधिक समय हो चुका है ऐसे एकेन्द्रिय जीव। (३) प्रथम समय मे उत्पन्न द्वीन्द्रिय जीव। (४) अप्रथम समय मे उत्पन्न द्वीन्द्रिय जीव। (५) प्रथम समय मे उत्पन्न त्रीन्द्रिय जीव। (६) अप्रथम समय मे उत्पन्न त्रीन्द्रिय जीव। (७) प्रथम समय मे उत्पन्न चतुरिन्द्रिय जीव। (८) अप्रथम समय मे उत्पन्न चतुरिन्द्रिय जीव। (९) प्रथम समय मे उत्पन्न पचेन्द्रिय जीव। (१०) अप्रथम समय मे उत्पन्न पचेन्द्रिय जीव।

152. *Samsar-samapannak jivas* (worldly living beings) are of ten kinds—(1) *Pratham samaya ekendriya jivas*—one-sensed beings at the first moment of birth (2) *Apratham samaya ekendriya jivas*—one-sensed beings at post birth moments (3) *Pratham samaya dvindriya jivas* (4) *Apratham samaya dvindriya jivas* (5) *Pratham samaya trindriya jivas* (6) *Apratham samaya trindriya jivas* (7) *Pratham samaya chaturindriya jivas* (8) *Apratham samaya chaturindriya jivas* (9) *Pratham samaya panchendriya jivas* (10) *Apratham samaya panchendriya jivas*

१५३. दसविधा सव्वजीव पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया, (आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया), वणस्सइकाइया, बेंदिया, (तेइंदिया, चउरिंदिया), पंचेंदिया, अणिंदिया।

अहवा—दसविधा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयणेरइया, अपढमसमयणेरइया, (पढमसमयतिरिया, अपढमसमयतिरिया, पढमसमयमणुया, अपढमसमयमणुया, पढमसमयदेवा), अपढमसमयदेवा, पढमसमयसिद्धा, अपढमसमयसिद्धा।

१५३. सर्व जीव दस प्रकार के है, जैसे–(१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) तेजस्कायिक, (४) वायुकायिक, (५) वनस्पतिकायिक, (६) द्वीन्द्रिय, (७) त्रीन्द्रिय, (८) चतुरिन्द्रिय, (९) पचेन्द्रिय, (१०) अनिन्द्रिय (सिद्ध) जीव।

अथवा सर्व जीव दस प्रकार के है, जैसे–(१) प्रथम समय–उत्पन्न नारक। (२) अप्रथम समय–उत्पन्न नारक। (३) प्रथम समय मे उत्पन्न तिर्यंच। (४) अप्रथम समय मे उत्पन्न तिर्यंच। (५) प्रथम समय मे उत्पन्न मनुष्य। (६) अप्रथम समय मे उत्पन्न मनुष्य। (७) प्रथम मे समय मे उत्पन्न देव। (८) अप्रथम समय मे उत्पन्न देव। (९) प्रथम समय मे सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध। (१०) अप्रथम समय मे सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध।

153. All beings are of ten kinds—(1) *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *Apkayik* (water-bodied beings), (3) *Tejaskayik* (fire-bodied beings), (4) *Vayukayik* (air-bodied beings), (5) *Vanaspatikayik* (plant-bodied beings), (6) *Dvindriya* (Two-sensed beings), (7) *Trindriya* (three-sensed beings), (8) *Chaturindriya* (four-sensed beings), (9) *Panchendriya* (five-sensed beings) and (10) *Anindriya* (without sense organs, Siddha)

Also all beings are of ten kinds—(1) *Pratham samaya naarak*—infernal beings at the first moment of birth (2) *Apratham samaya naarak*—infernal beings at post birth moments (3) *Pratham samaya tiryanch* (animals) (4) *Apratham samaya tiryanch* (5) *Pratham samaya manushya* (human beings) (6) *Apratham samaya manushya* (7) *Pratham samaya deva* (gods) (8) *Apratham samaya deva* (9) *Pratham samaya Siddha* (liberated beings) (10) *Apratham samaya Siddha*

शतायुष्क दशा-पद SHATAYUSHK-PAD (SEGMENT OF HUNDRED YEARS OF AGE)

१५४. वाससताउयस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-

बाला किड्डा य मंदा य, बला पण्णा य, हायणी।
पवंचा पब्भारा य मुम्मुही सायणी तधा॥१॥

१५४. सौ वर्ष की आयु वाले पुरुष की दस दशाएँ (अवस्था) है, जैसे-(१) बालदशा, (२) क्रीडादशा, (३) मन्दादशा, (४) बलादशा, (५) प्रज्ञादशा, (६) हायिनीदशा, (७) प्रपचादशा, (८) प्राग्भारादशा, (९) उन्मुखीदशा, (१०) शायिनीदशा।

154. There are ten *avasthas* (states) of a hundred year old man—(1) *Baal dasha*, (2) *Krida dasha*, (3) *Manda dasha*, (4) *Bala dasha*, (5) *Prajna dasha*, (6) *Hayini dasha*, (7) *Prapancha dasha*, (8) *Pragbhara dasha*, (9) *Unmukhi dasha*, and (10) *Shaayini dasha*

विवेचन-मनुष्य की पूर्ण आयु सौ वर्ष मानकर, दस-दस वर्ष की एक-एक दशा का वर्णन प्रस्तुत सूत्र मे किया है-(१) **बालदशा**-जन्म से दस वर्ष तक की अवस्था। (२) **क्रीडादशा**-इसमे खेल-कूद की प्रवृत्ति प्रबल रहती है। (३) **मन्दादशा**-इसमे भोग-प्रवृत्ति की अधिकता से विशिष्ट बुद्धि के कार्यों की मन्दता रहती है। (४) **बलादशा**-इसमे मनुष्य अपने बल का प्रदर्शन करने की क्षमता प्राप्त करता है। (५) **प्रज्ञादशा**-इसमे मनुष्य की बुद्धि धन कमाने, कुटुम्ब पालने आदि मे लगी रहती है। (६) **हायनीदशा**-इसमे शक्ति व इन्द्रिय बल क्षीण होने लगता है। (७) **प्रपंचादशा**-इसमे मुख से लार-थूक आदि गिरने लगते है, कफ बढने लगता है। (८) **प्राग्भारदशा**-इसमे शरीर झुर्रियो से व्याप्त हो जाता है। (९) **उन्मुखीदशा**-इसमे मनुष्य बुढापे से आक्रान्त हो मौत के सन्मुख हो जाता है। (१०) **शायिनीदशा**-इसमें मनुष्य दुर्बल, दीनस्वर, होकर शय्या पर पडा रहता है। *(हरिभद्रसूरि कृत दसवे टीका पत्र ८ तथा स्थानाग वृत्ति पत्र ४९३)*

Elaboration—Taking the full life span of man to be one hundred years it has been divided into ten states of ten years each—(1) *Baal dasha*—from birth to ten years of age (2) *Krida dasha*—here the tendency of playfulness is strong (3) *Manda dasha*—due to the strong tendency of carnal pleasures the intellectual activities become dull here (4) *Bala dasha*—here man acquires the capacity to display his power (5) *Prajna dasha*—here man is busy with activities of earning and supporting his family. (6) *Hayini dasha*—here physical strength and capacities start declining (7) *Prapancha dasha*—here salivation and coughing increases (8) *Pragbhara dasha*—here the body gets filled with wrinkles (9) *Unmukhi dasha*—here man is oppressed with dotage and faces death (10) *Shaayini dasha*—here man gets weak, emaciated and is bed ridden *(Dashavaikalik Tika by Haribhadra Suri, leaf 8 and Sthananga Vritti leaf 493)*

तृणवनस्पति–पद TRINAVANASPATI-PAD (SEGMENT OF GRAMINEOUS PLANTS)

१५५. दसविधा तणवणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा–मूले, कंदे, (खंधे, तया, साले, पवाले, पत्ते), पुप्फे, फले, बीये।

१५५. तृणवनस्पतिकायिक जीव दस प्रकार के है, जैसे–(१) मूल, (२) कन्द, (३) स्कन्ध, (४) त्वक्, (५) शाखा, (६) प्रवाल, (७) पत्र, (८) पुष्प, (९) फल, (१०) बीज।

155. Gramineous plant-bodied beings are of ten kinds—(1) *mool* (root), (2) *kand* (bulbuous root), (3) *skandh* (trunk), (4) *tvak* (bark), (5) *shakha* (branch), (6) *praval* (sprout), (7) *patra* (leaf), (8) *pushp* (flower), (9) *phal* (fruit) and (10) *beej* (seed)

श्रेणि–पद SHRENI-PAD (SEGMENT OF RANGES)

१५६. सव्वाओवि णं विज्जाहरसेढीओ दस–दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

१५६. दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर अवस्थित सभी विद्याधर–श्रेणियाँ दस–दस योजन विस्तृत है।

156. Each of the *Vidyadhar* ranges located on *Deergh Vaitadhya* mountain is ten *Yojans* wide

१५७. सव्वाओवि णं आभिओगसेढीओ दस–दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

१५७. दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर अवस्थित सभी आभियोगिक–श्रेणियाँ दस–दस योजन विस्तृत है।

157. Each of the *Aabhiyogik* ranges located on *Deergh Vaitadhya* mountain is ten *Yojans* wide

विवेचन–भरत और ऐरवत क्षेत्र के ठीक मध्यभाग मे पूर्व लवण समुद्र से लेकर पशिचम लवण समुद्र तक लम्बा और मूल मे पचास योजन चौडा एक–एक वैताढ्य पर्वत है। इसकी ऊँचाई पच्चीस

योजन है। भूमितल से दस योजन की ऊँचाई पर उसके उत्तरी और दक्षिणी भाग पर विद्याधरो की श्रेणियाँ (नगर) है। उनमे विद्याधर रहते है, जो कि विद्याओ के बल से आकाश मे गमनादि करने मे समर्थ होते है। वे श्रेणियाँ दोनो ओर दस-दस योजन चौडी है। इन विद्याधर-श्रेणियो से भी दस योजन की ऊँचाई पर दोनो ओर आभियोगिक देवो की श्रेणियाँ है, जिनमे अभियोग जाति के व्यन्तर देव रहते है। ये देव शक्रेन्द्र आदि इन्द्रो व उनके लोकपालो की आज्ञा का पालन करते है। *(विशेष वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति मे)*

Elaboration—At the center of Bharat as well as Airavat areas there is a Vaitadhya mountain fifty Yojan wide at the base stretching from east Lavan Samudra to west Lavan Samudra Its height is twenty five Yojans Ten Yojans above from the ground level there are *Vidyadhar* ranges (group of abodes) on its north and south faces *Vidyadhars* (gods with special powers) capable of flying and performing other such activities live here These ranges are ten Yojan long on both sides Ten Yojans higher than these ranges are ranges of *Aabhiyogik* gods (a kind of *Vyantar* gods) These gods are under the command of Shakra and other *Indras* and their *lok-paals* *(more details in Jambudveep Prajnapti)*

ग्रैवेयक-पद GRAIVEYAK-PAD (SEGMENT OF GRAIVEYAK)

१५८. गेविज्जगविमाणा णं दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

१५८. (नव) ग्रैवेयक विमानो के जितने भी विमान है, उनकी ऊँचाई दस सौ (१०००) योजन है।

158. All the *vimaans* in the sector of *Graiveyak vimaans* are ten hundred (1000) *Yojan* in height

तेजसा-भस्मकरण-पद TEJASA-BHASMAKARAN-PAD (SEGMENT OF BURNING BY FIRE-POWER)

१५९. दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा भासं कुज्जा, तं जहा—

(१) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे परिकुविते तस्स तेयं णिसिरेज्जा। से तं परितावेति, से तं परितावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(२) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। से तं परितावेति, से तं परितावेत्ता, तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(३) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते समाणे परिकुविते देवेवि य परिकुविते ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। ते तं परितावेंति, ते तं परितावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(४) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(५) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(६) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए देवेवि य परिकुविए ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, (ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा) भासं कुज्जा।

(७) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छिंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(८) (केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] देवे परिकुविए तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा।

(९) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, से य अच्चासातिते [समाणे ?] परिकुविए देवेवि य परिकुविए ते दुहओ पडिण्णा तस्स तेयं णिसिरेज्जा। तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिण्णा समाणा तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा)।

(१०) केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा, तेयं णिसिरेज्जा, से य तत्थ णो कम्मति, णो पकम्मति,अंतिअंचियं करेति, करेत्ता आयाहिणपयाहिणं करेति, करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पतति, उप्पतेत्ता से णं ततो पडिहते पडिणियत्तति, पडिणियत्तिता तमेव सरीरगं अणुदहमाणे—अणुदहमाणे सह तेयसा भासं कुज्जा—जहा वा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवे तेए।

१५९. दस कारणो से श्रमण-माहन (अति-आशातना करने वाले को) तेज से (अपनी तेजोलेश्या से) भस्म कर डालता है, जैसे-

(१) यदि कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धि से सम्पन्न) श्रमण-माहन की तीव्र आशातना (अवज्ञा, अवेहलना) करता है, तो वह उस आशातना से पीडित उद्‌वेलित होता हुआ उस व्यक्ति पर क्रोधित होता है। तेजोलब्धि का प्रयोग करता है तब उसके शरीर से तेज निकलता है। वह तेज उस उपसर्ग करने वाले को परितापित करता है और उसे भस्म कर देता है।

(२) यदि कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है, उसकी अत्याशातना करने पर उस श्रमण की सेवा मे रहने वाला कोई देव कुपित होता है। तब उस देव के शरीर से तेज निकलता है। वह तेज उस उपसर्ग करने वाले को परितापित करता है और परितापित कर उस तेज से उसे भस्म कर देता है।

(३) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है। उस असह्य अत्याशातना से परिकुपित हो, वह श्रमण-माहन और परिकुपित देव दोनो ही उसे मारने की प्रतिज्ञा करते है। तब उन दोनो के शरीर से तेज निकलता है। वे दोनो तेज उस उपसर्ग करने वाले व्यक्ति को परितापित करते है और परितापित करके उसे उस तेज से भस्म कर देते है।

(४) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है। वह उस अत्याशातना से परिकुपित होता है, तब उसके शरीर से तेज निकलता है, उससे उस उपसर्ग कर्ता व्यक्ति के शरीर मे स्फोट (फोडे-फफोले) उत्पन्न होते है। वे फोडे फूटते है और फूटते हुए उसे उस तेज से भस्म कर देते है।

(५) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है। उसके अत्याशातना करने पर कोई देव परिकुपित होता है, तब उसके शरीर से तेज निकलता है, उससे उस उपसर्ग करने वाले व्यक्ति के शरीर मे स्फोट (फोडे) उत्पन्न होते है। वे स्फोट फूटते है और उस तेज से वह भस्म हो जाता है।

(६) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है। उसके अत्याशातना करने पर परिकुपित वह श्रमण-माहन और परिकुपित देव, ये दोनो ही उसे मारने की प्रतिज्ञा करते है। तब उन दोनो के शरीरो से तेज निकलता है। उससे उस उपसर्ग कर्ता के शरीर मे स्फोट उत्पन्न होते है। वे स्फोट फूटते है और फूटते हुए उसे उस तेज से भस्म कर देते है।

(७) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है। उससे कुपित होकर वह तेज छोडता है। उससे उस व्यक्ति के शरीर मे स्फोट उत्पन्न होते है। वे स्फोट फूटते है तब उनमे से पुल-(छोटी-छोटी फुसियाँ उत्पन्न होती है। वे फूटती है और फूटती हुई उस तेज से उसे भस्म कर डालती है।

(८) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना करता है। उसके अत्याशातना करने पर कोई देव परिकुपित होता है, तब उसके शरीर से तेज निकलता है, उससे उस व्यक्ति के शरीर मे स्फोट उत्पन्न होते है। वे स्फोट फूटते है, तब उनमे पुल-(फुसियाँ) निकलती हैं। वे फूटती है और फूटती हुई उस तेज से उसे भस्म कर देती है।

(९) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण माहन की अत्याशातना करता है। उसके अत्याशातना करने पर परिकुपित वह श्रमण-माहन और परिकुपित देव दोनो ही उसे मारने की प्रतिज्ञा करते है। तब उन दोनो के शरीरो से तेज निकलता है। उससे उस व्यक्ति के शरीर में स्फोट उत्पन्न होते

हैं। वे स्फोट फूटते है, तब उनमे से पुल (फुंसियाँ) निकलती है। वे फूटती है और फूटती हुई उस तेज से उसे भस्म कर देती है।

(१०) कोई व्यक्ति तथारूप (तेजोलब्धिसम्पन्न) श्रमण-माहन की अत्याशातना अवहेलना करता हुआ उस पर तेज फेकता है। वह तेज उस श्रमण-माहन के शरीर पर आक्रमण नही कर पाता, प्रवेश नही कर पाता है। केवल वह तेज उसके ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आता-जाता है, दाये-बाये प्रदक्षिणा करता है और यह सब करके ऊपर आकाश मे चला जाता है। वहाँ से लौटकर उस श्रमण-माहन के प्रबल तेज से प्रतिहत होकर वापिस उसी फेकने वाले के पास चला जाता है और उसके शरीर मे प्रवेश कर उसे उसकी तेजोलब्धि के साथ भस्म कर देता है, जिस प्रकार मखली पुत्र गोशालक के तपस्तेज ने उसी को भस्म कर दिया था।

159. For ten reasons a *Shraman-mahan* (Jain ascetic) burns a person (who has gravely insulted him) to ashes with his *tej* (*tejoleshya* or fire-power)—

(1) When some person indulges in grave *ashaatana* (disrespect, insult, sacrilege) of a *tatharupa* (endowed with *tejoleshya*) *Shraman*, the *Shraman* gets hurt, agitated and angry at that person He uses his *tejoleshya* and a fire emanates from his body This fire burns the offender and reduces him to ashes

(2) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, some god in attendance of that *Shraman* gets angry at that person Then a fire emanates from the god's body This fire burns the offender and reduces him to ashes.

(3) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, the *Shraman* and the god in his service both get angry due to that intolerable affliction They both resolve to kill the offender Then a fire emanates from the bodies of the two This fire burns the offender and reduces him to ashes

(4) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, the *Shraman* gets hurt, agitated and angry at that person He uses his *tejoleshya* and a fire emanates from his body This fire causes blisters (*sfot*) on the body of the offender These blisters then burst and reduce him to ashes.

(5) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, some god in attendance of that *Shraman* gets angry at that person. Then a fire emanates from the god's body. This fire causes

blisters on the body of the offender These blisters then burst and reduce him to ashes

(6) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, the *Shraman* and the god in his service both get angry due to that intolerable affliction They both resolve to kill the offender Then a fire emanates from the bodies of the two This fire causes blisters on the body of the offender These blisters then burst and reduce him to ashes

(7) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, the *Shraman* gets hurt, agitated and angry at that person He uses his *tejoleshya* and a fire emanates from his body This fire causes blisters on the body of the offender These blisters then burst and produce many small boils (*pul*) These boils then burst and reduce him to ashes

(8) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, some god in attendance of that *Shraman* gets angry at that person Then a fire emanates from the god's body This fire causes blisters on the body of the offender These blisters then burst and produce many small boils These boils then burst and reduce him to ashes

(9) When some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman*, the *Shraman* and the god in his service both get angry due to that intolerable affliction They both resolve to kill the offender Then a fire emanates from the bodies of the two This fire causes blisters on the body of the offender These blisters then burst and produce many small boils These boils then burst and reduce him to ashes

(10) Some person indulges in grave *ashaatana* of a *tatharupa Shraman* and launches fire-power at him That fire fails to attack the *Shraman's* body or enter it This fire only moves up, down and around the *Shraman* and finally goes up in the sky Returning from the sky and repulsed by the tremendous radiance of the *Shraman* it goes back to the launcher, enters his body and reduces him to ashes along with his fire-power This happens in the same way as Mankhali Putra Goshalak was reduced to ashes by his own fire-power

विवेचन—प्रस्तुत सूत्र मे आये तीन शब्दो पर वृत्तिकार ने विशेष प्रकाश डाला है। **श्रमण**—तप प्रधान सयमी जीवन का और **माहन**—अहिंसा करुणा प्रधान त्यागी जीवन का वाचक है। **तेजोलब्धि**—यह विशिष्ट तप साधना के प्रभाव से उत्पन्न होने वाली दाहक शक्ति है, जो दूसरे को जलाकर भस्म कर सकती है। तेजोलब्धि सम्यग् दृष्टि और मिथ्यादृष्टि, दोनो प्रकार के साधको को प्राप्त हो सकती है। यहाँ तथारूप श्रमण-माहन से सम्यग्दृष्टि साधक के लिए सकेत है।

तेजोलब्धि मारक भी होती है और उपकारक भी। मारक तेजोलब्धि जलाकर भस्म कर सकती है उसकी क्षमता कम से कम एक व्यक्ति को तथा अधिक से अधिक सोलह जनपदो (देशो) को जलाकर भस्म कराने की है। उपकारक तेजोलब्धि का प्रयोग शान्त, हर्षोल्लषित व करुणापूरित चित्त से किया जाता है। *(हिन्दी टीका, भाग २, पृष्ठ ८६२)*

Elaboration—the commentator (*Vritti*) has laid special emphasis on three terms used in the aforesaid aphorism *Shraman*—this word signifies a disciplined ascetic life with emphasis on austerities *Mahan*—this word signifies a detached life with emphasis on ahimsa and compassion *Tejolabdhi*—This is a fire-power acquired through practice of special austerities It can burn and reduce others to ashes This power can be acquired both by the righteous as well as the unrighteous Here *tatharupa Shraman-mahan* indicates a righteous aspirant

Tejolabdhi is destructive as well as constructive The destructive *tejolabdhi* can burn and reduce anything to ashes Its capacity ranges from a single person to sixteen states The constructive tejolabdhi is employed by serene, joyful and compassionate mind *(Hindi Tika, part-2, p 862)*

आश्चर्यक–पद ASHCHARYAK-PAD (SEGMENT OF THE MIRACULOUS)

१६०. दस अच्छेरगा पण्णत्ता, तं जहा–

उवसग्ग गब्भहरणं, इत्थीतित्थं अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकंका, उत्तरणं चंदसूराणं॥१॥

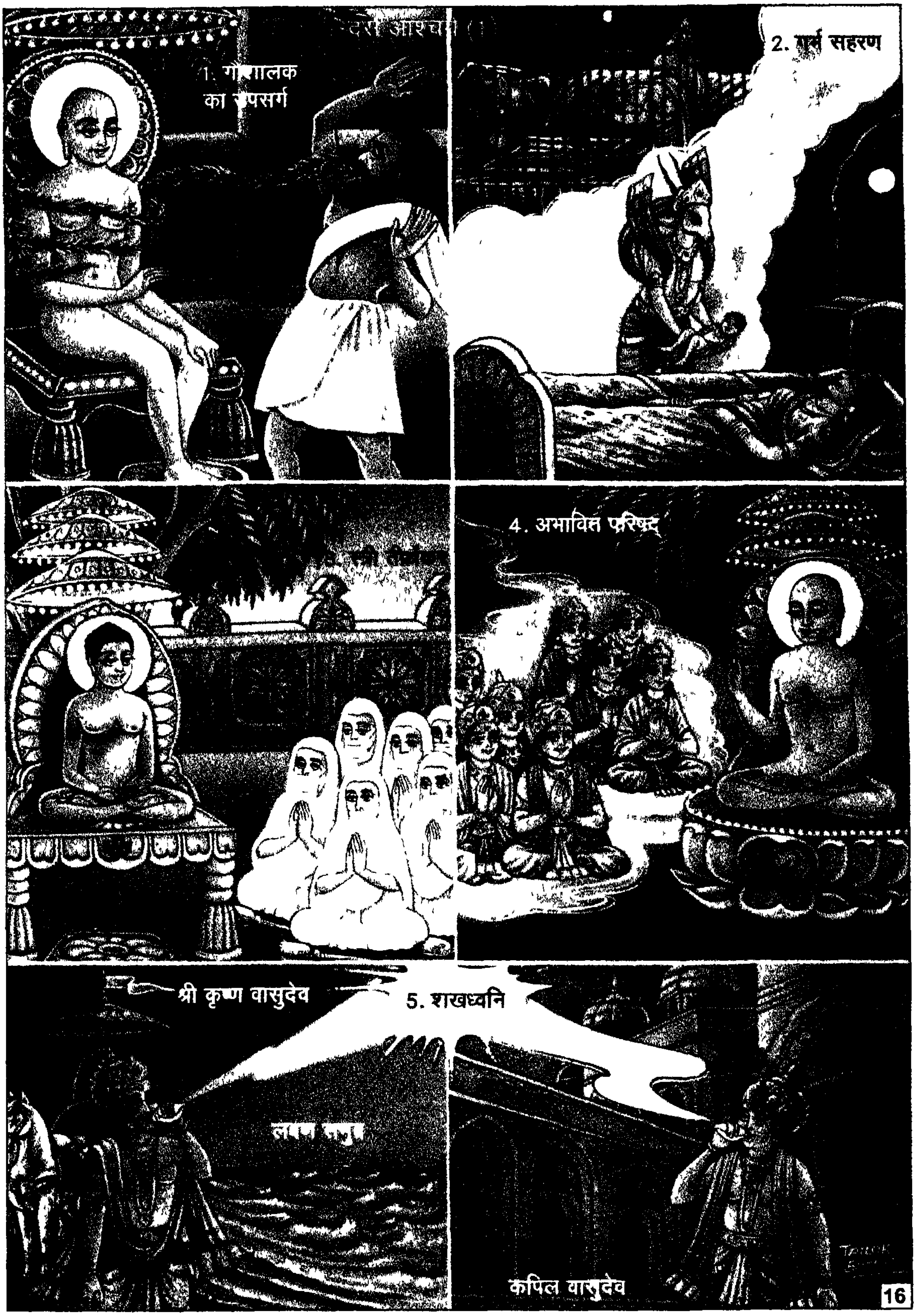
हरिवंसकुलुप्पत्ती, चमरुप्पातो य अट्ठसयसिद्धा।
अस्संजतेसु पूआ, दसवि अणंतेण कालेणं॥२॥

१६०. दस आश्चर्य कहे है, जैसे- (१) **उपसर्ग**–तीर्थकरो के ऊपर उपसर्ग होना। जैसे भगवान महावीर को शूलपाणि, सगम के मारणातिक उपसर्ग हुए। केवलज्ञान होने के पश्चात् गोशालक द्वारा तेजोलब्धि का प्रयोग हुआ। (२) **गर्भहरण**–भगवान महावीर का गर्भापहरण होना। (३) स्त्री का तीर्थकर होना। जैसे १९वे तीर्थंकर भगवती मल्ली। (४) **अभावित परिषत्**–तीर्थंकर भगवान महावीर का प्रथम धर्मोपदेश, वैशाख शुक्ला दसमी के दिन विफल हुआ अर्थात् उसे सुनकर किसी भी श्रोता ने चारित्र अगीकार नही किया क्योकि उसमे श्रोता देव परिषद् थी।। (५) कृष्ण का द्रौपदी को पद्मनाभ राजा के चगुल से छुडाने के लिए अमरकका का नगरी (धातकीषण्ड) मे जाना। यह क्षेत्र कपिल वासुदेव की अधीनता का था। (६) चन्द्र और सूर्य देवो का कौशाम्बी मे विमान-सहित अपने मूल शरीर के साथ भगवान महावीर के दर्शन करने आना। पृथ्वी पर उतरना। (७) हरिवश कुल की उत्पत्ति। जैसे-हरिवर्ष क्षेत्र मे जन्मे युगलिक को देव उठाकर भरतक्षेत्र की चम्पानगरी मे ले आया। वहाँ वह राजा बने। उनसे

हरिवंश कुल की उत्पत्ति हुई। युगलियो का राजा बनना व वंश चलाना आश्चर्य है। (८) चमर का उत्पात–चमरेन्द्र का सौधर्मकल्प मे जाना। (९) एक सौ आठ सिद्ध–इस अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे मे एक समय मे उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक साथ एक सौ आठ जीवो का सिद्ध होना। (१०) इस अवसर्पिणी काल मे असयमी की पूजा बढी। यह भी एक आश्चर्य है।

160. There are said to be ten *ashcharyas* (miracles)—(1) *Upasarg* (affliction)—Afflictions on *Tirthankars* For example Bhagavan Mahavir had to suffer near fatal afflictions at the hands of Shulapani and Sangam After attaining omniscience he had to endure the *tejoleshya* of Goshalak (2) *Garbhaharan*—the transplantation of embryo in case of Bhagavan Mahavir (3) Female becoming a Tirthankar—Bhagavati Malli, the 19th *Tirthankar* (4) *Abhavit Parishat*—The first sermon of Bhagavan Mahavir (*Vaishakh Shukla* tenth) went waste as no listener got initiated after the sermon This was because the assembly consisted of gods only (5) Krishna going to Amarkanka city (in Dhatakikhand) to get Draupadi released from king Padmanabh This area was under the rule of Kapil Vaasudev (6) Descending of gods Chandra and Surya in their original body and with their *vimaans* in Kaushambi to pay homage to Bhagavan Mahavir (7) Origin of the Harivamsha lineage Gods brought twins from Harivarsh area to Champanagari in Bharat area They became rulers and started a lineage Twins becoming rulers and starting a family lineage is a miracle (8) Disturbance created by Chamar by going to Saudharma Kalp (9) One hundred and eight *Siddhas*—Attaining of the *Siddha* status by 108 beings of maximum dimension at once during the third epoch of this regressive cycle (10) The worship of the non-ascetic has been on the rise during this regressive cycle, this too is a miracle

विवेचन–जो घटनाएँ सामान्य रूप से सदा नही होती, किन्तु किसी विशेष कारण से चिरकाल के पश्चात् कभी कभार होती है, उन्हे आश्चर्य-कारक होने से 'आश्चर्यक' या अच्छेरा कहा जाता है। जैनशासन मे भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर के समय तक ऐसी दस अद्‌भुत या आश्चर्यजनक घटनाएँ घटी है। इनमे से पहली, दूसरी, चौथी, छठी और आठवी घटना भगवान महावीर के शासनकाल से सम्बन्धित है। तीसरी घटना भगवान मल्लीनाथ, पाँचवी घटना भगवान अरिष्टनेमि, सातवीं घटना भगवान शीतलनाथ, नवी घटना भगवान ऋषभदेव तथा दसवी घटना भगवान सुविधिनाथ के निर्वाण के पश्चात् भगवान शान्तिनाथ के शासन काल के मध्य मे हुई। इनमे निम्न अच्छेरो का वर्णन सम्बद्ध सूत्रो से जाना जा सकता है–



1. गो?ालक
का ?पसर्ग
2. गर्भ सहरण
4. अभावित परिषद्
श्री कृष्ण वासुदेव
5. शखध्वनि
कपिल वासुदेव

चित्र परिचय १६ | **Illustration No. 16**

दस आश्चर्य (१)

जो घटना चिरकाल के पश्चात् असामान्य रूप से होती है, उसे आश्चर्य कहा जाता है। इस अवसर्पिणीकाल मे दस आश्चर्य निम्न प्रकार हुए -

(१) **उपसर्ग**–तीर्थकरो को उपसर्ग जैसे गोशालक ने भगवान महावीर पर तेजोलेश्या का प्रयोग किया।

(२) **गर्भ–हरण**–भगवान महावीर का देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला माता के गर्भ मे स्थानान्तरण।

(३) **स्त्री–तीर्थकर**–भगवान मल्लीनाथ स्त्री देह मे तीर्थकर हुए।

(४) **अभावित परिषद्**–भगवान महावीर की प्रथम धर्मदेशना मे किसी ने चारित्र ग्रहण नहीं किया।

(५) श्रीकृष्ण वासुदेव का धातकीखण्ड की अपर कंकानगरी मे गमन तथा कपिल वासुदेव के शंख ध्वनि करने पर दोनो वासुदेवो का शंख ध्वनि से मिलन हुआ। एक वासुदेव की सीमा मे दूसरे वासुदेव का जाना आश्चर्य है।

स्थान १०, सूत्र १६०

(क्रमशः अगले पृष्ठ पर)

TEN ASHCHARYAS (MIRACLES)—I

Unusual happenings after a prolonged gap are called *ashcharya* or miracles. The ten miracles of the current regressive cycle are as follows –

(1) Upasarg (affliction)—Afflictions on *Tirthankars*. For example Bhagavan Mahavir had to endure the *tejoleshya* of *Goshalak*.

(2) Garbhaharan—The transplantation of embryo (to be Bhagavan Mahavir) from the womb of Devananda to mother Trishala.

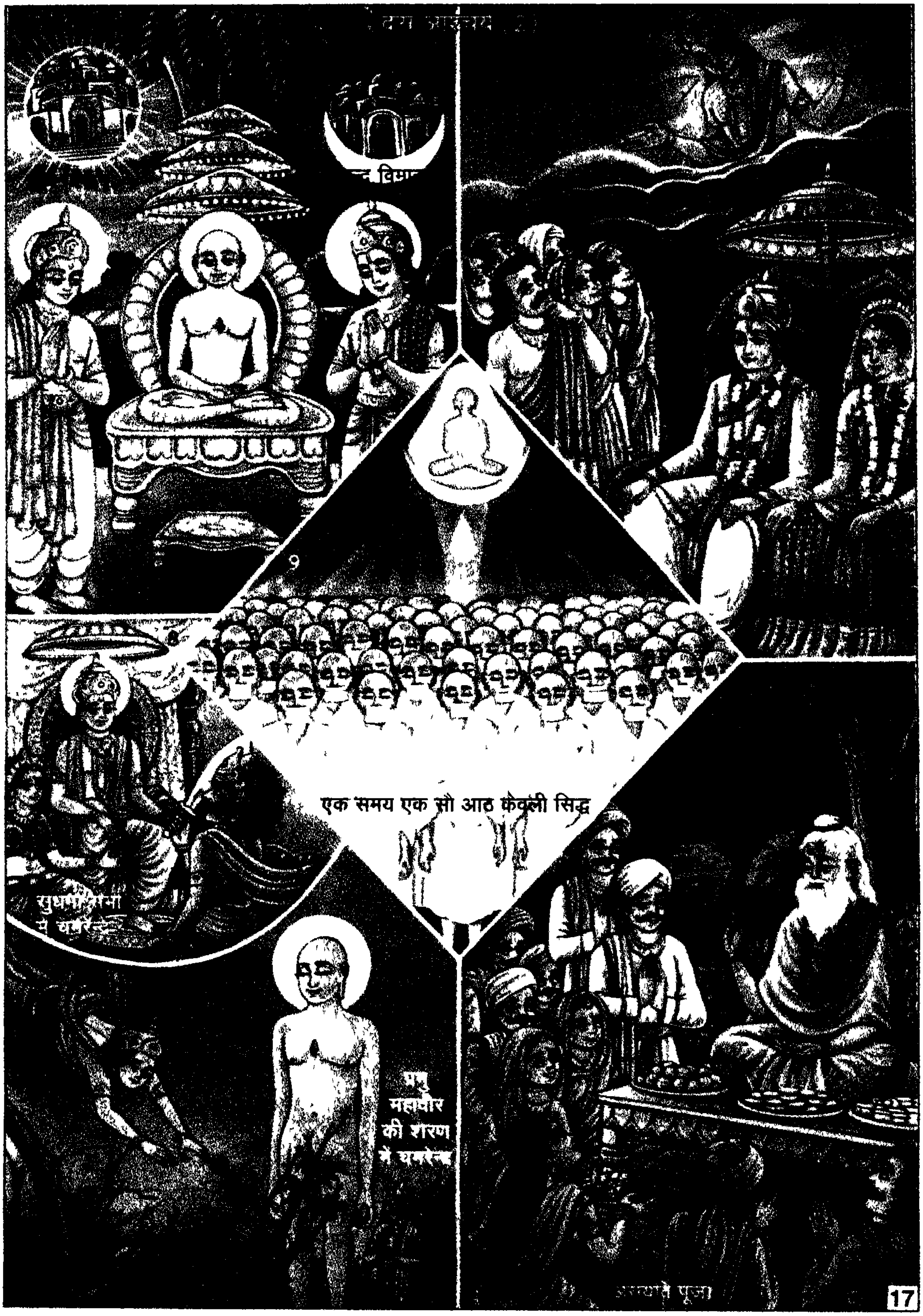
(3) Female Tirthankar—Bhagavan Mallinaath became *Tirthankar* with female body.

(4) Abhavit Parishat—In the first sermon of Bhagavan Mahavir no listener got initiated.

(5) Krishna going to Amarkanka city (in Dhatakikhand) and exchanging of conch-shell sounds with another Vaasudev, Kapil, there. Going of one Vaasudeva in the territory of another is a miracle.

—Sthaan 10, Sutra 160

(continue on next page)


एक समय एक सौ आठ केवली सिद्ध
महावीर
की शरण
पूजा

चित्र परिचय १७

Illustration No. 17

दस आश्चर्य (२)

(६) चन्द्र–सूर्य देव अपने विमान सहित भगवान के दर्शन करने एक साथ समवसरण मे आये।

(७) **हरिवश कुल की उत्पत्ति**–हरिवर्ष मे जन्मे युगलिक को देवता चम्पानगरी मे उठाकर ले आया और वहाँ का राजा बना दिया। जिससे हरिवश कुल की उत्पत्ति हुई।

(८) असुरराज चमरेन्द्र ने शक्र की सौधर्म सभा मे जाकर उत्पात मचाया। शक्र द्वारा वज्र फैकने पर बचने के लिए भागकर ध्यानस्थ श्रमण भगवान महावीर के चरणो मे शरण ली।

(९) तीसरे आरे मे उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक सौ आठ मुनि एक साथ सिद्ध हुए।

(१०) **असयति पूजा**–भगवान सुविधिनाथ के शासनकाल पश्चात असयति जनो की पूजा बढी।

–स्था. १० सू. १६०

TEN ASHCHARYAS (MIRACLES)—II

(6) Descending of gods *Chandra* and *Surya* with their vimaans in the *Samavasaran* together to pay homage to Bhagavan Mahavir

(7) Origin of the Harivamsha lineage—Gods brought twins from Harivarsh area to Champanagari and made them rulers. This was the origin of the Harivamsha clan

(8) *Chamarendra*, the king of *Asurs* came to *Shakra's* assembly and created disturbance. When *Shakra* launched his *Vajra Chamar* flew and took refuge at the feet of meditating Bhagavan Mahavir

(9) One hundred and eight ascetics of largest physique attained the *Siddha* status at once during the third epoch of this cycle

(10) The worship of non-ascetics increased after the period of influence of Bhagavan Suvidhinaath

—Sthaan 10 Sutra 160

(१) ८ अच्छेरा–भगवती सूत्र शतक १५/शतक ३/२।

(२) अच्छेरा–आचाराग २४वाँ अध्ययन आवश्यक निर्युक्ति।

(३) ५ अच्छेरा–ज्ञातासूत्र ८वाँ तथा अध्ययन १६।

(४) ६–७, ९–१० अच्छेरा–स्थानाग वृत्ति, आवश्यक निर्युक्ति, प्रवचन सारोद्धार वृत्ति। *(विवरण के लिए देखे–ठाण पृष्ठ १०१५)*

Elaboration—Unusual happenings are called Achchhera or ashcharya or miracles. In the Jain order from Bhagavan Risabhadeva to Bhagavan Mahavir there are mentions of ten such miracles. Of the aforesaid miracles the first, second, fourth, sixth and eighth incidents are related to Bhagavan Mahavir's period The third incident is related to the period of Bhagavan Malli Naath, fifth to that of Bhagavan Arishtanemi, seventh to that of Bhagavan Sheetal Naath, ninth to that of Bhagavan Risabhadeva and tenth to the period between nirvana of Bhagavan Suvidhi Naath and the period of influence of Bhagavan Shanti Naath The details about some of the miracles can bee seen in the following works—

8th miracle—Bhagavati Sutra (15/3/2)

1st miracle—Acharanga Sutra ch 24th

5th miracle—Jnata Sutra 8th and 16th chapters, Avashyak Niryukti

6, 7, 9 and 10 miracles—Sthananga Vritti, Avashyak Niryukti and Pravachanasaroddhar Vritti *(for details see Thanam p 1015)*

काण्ड–पद KAAND-PAD (SEGMENT OF SECTIONS)

१६१. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कंडे दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते।

१६२. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरे कंडे दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते।

१६३. एवं वेरुलिए, लोहितक्खे, मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलाए, सोगंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलए, रययं, जातरूवे, अंके, फलिहे, रिट्ठे। जहा रयणे तहा सोलसविधा भाणितव्वा।

१६१. इस रत्नप्रभा पृथिवी का पहला रत्नकाण्ड दस सौ (१०००) योजन मोटा है।

१६२. इस रत्नप्रभा पृथिवी का दूसरा वज्रकाण्ड दस सौ योजन मोटा है।

१६३. इसीप्रकार वैडूर्यकाण्ड, लोहिताक्षकाण्ड, मसारगल्लकाण्ड, हंसगर्भकाण्ड, पुलककाण्ड, सौगन्धिककाण्ड, ज्योतिरसकाण्ड, अजनकाण्ड, अजनपुलककाण्ड, रजतकाण्ड, जातरूपकाण्ड, अंककाण्ड, स्फटिककाण्ड और रिष्टकाण्ड भी दस सौ–दस सौ योजन मोटे हैं।

161. The first section of this *Ratnaprabha Prithvi*, the *Ratna-kaand* is ten hundred *Yojan* thick

162. The second section of this *Ratnaprabha Prithvi*, the *Vajra-kaand* is ten hundred *Yojan* thick

163. In the same way the other sections, namely *Vaidurya-kaand*, *Lohitaksha-kaand*, *Masaragalla-kaand*, *Hamsagarbha-kaand*, *Pulak-kaand*, *Saugandhik-kaand*, *Jyotirasa-kaand*, *Anjana-kaand*, *Anjanapulak-kaand*, *Rajat-kaand*, *Jaatarupa-kaand*, *Anka-kaand*, *Sphatik-kaand*, and *Rishta-kaand* (all these are names of various gem stones) are also ten hundred *Yojan* thick

विवेचन–यह रत्नप्रभा पृथिवी एक राजु परिमाण लम्बी (ऊँची) चौडी (विस्तृत) है। इसकी मोटाई एक लाख अस्सी हजार योजन है। इसके तीन काण्ड (हिस्से) है। (१) खरकाण्ड, (२) पक–बहुल काण्ड और (३) जल–बहुल काण्ड। इनमे से से खरकाण्ड सबसे ऊपर है, वह मोटाई मे १६ हजार योजन प्रमाण है। उसके नीचे का दूसरा काण्ड पकबहुल है, जोकि मोटाई मे ८४ हजार योजन है। उसके नीचे का तीसरा जलबहुल काण्ड है, जो मोटाई मे ८० हजार योजन है। खरकाण्ड १६ भागो मे विभाजित है। इनमे एक–एक भाग की मोटाई एक–एक हजार योजन की है। इनमे पहले भाग को रत्नकाण्ड, क्रमश सोलहवे भाग को रिष्ट काण्ड कहते है। ये १६ काण्ड हजार–हजार योजन की मोटाई वाले है। खरकाण्ड मे सोलह प्रकार के रत्न होने से इस पृथिवी का नाम रत्नप्रभा प्रसिद्ध है। *विस्तृत विवर, जीवाभिगम सूत्र से जानना चाहिए। (चित्र देखे)*

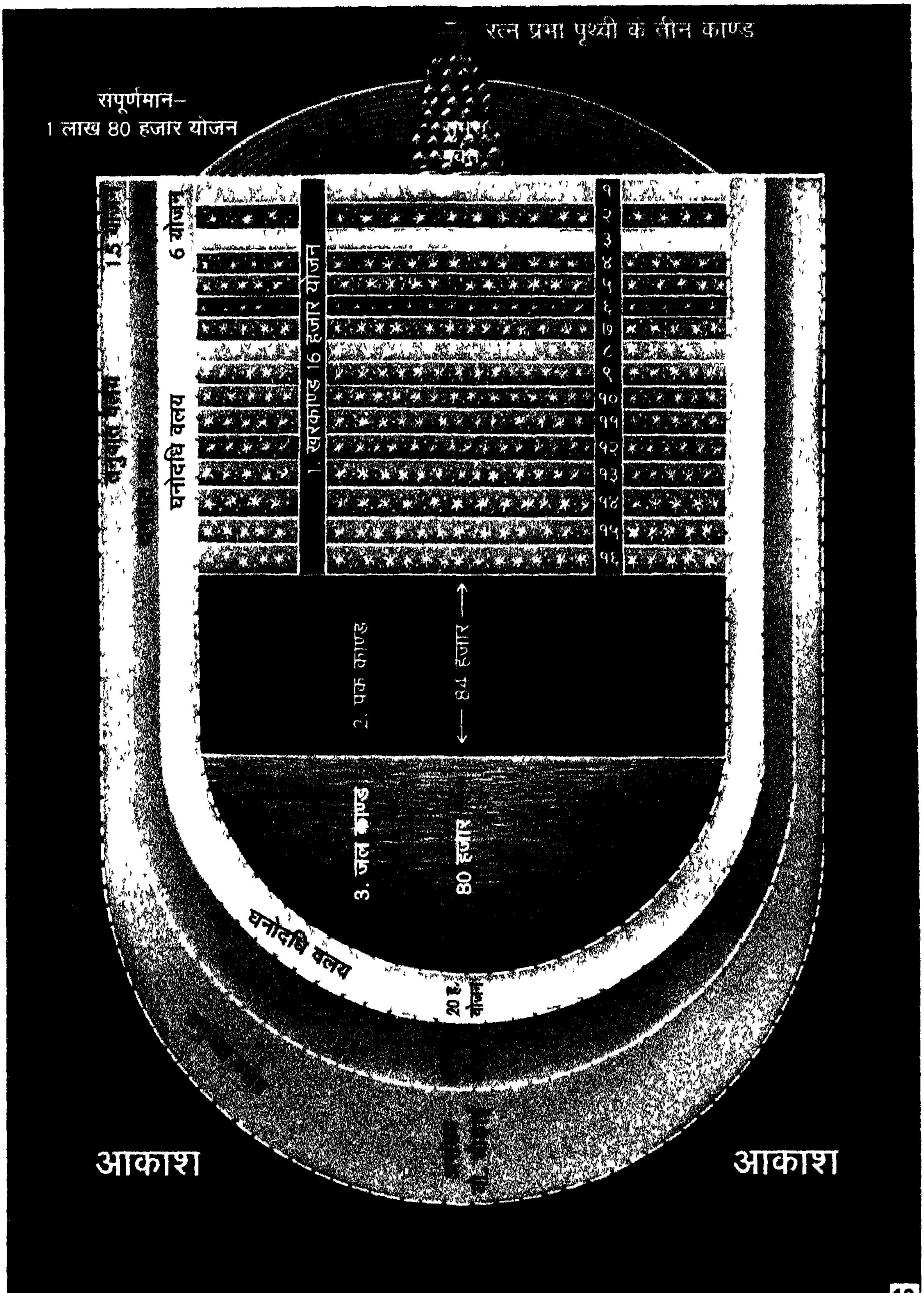
Elaboration—This Ratnaprabha *prithvi* is one *Rajju* long and wide Its thickness is one hundred eighty thousand *Yojans* It has three sections *(kaand) Khar-kaand, Pank-bahul kaand,* and *Jal-bahul kaand Khar-kaand* is the top most section and its thickness is sixteen thousand *Yojans* The section below it is *Pank-bahul kaand* with a thickness of 84 thousand *Yojans* The lowest section is *Jal-bahul kaand* with a thickness of 80 thousand *Yojans. Khar-kaand* is divided into 16 layers with names listed in the aforesaid three aphorisms As *Khar-kaand* is made up of sixteen kinds of gems (*ratna*) this earth is popularly known as Ratnaprabha *(for detailed description see Jivabhigam Sutra, also see illustration)*

उद्वेध–पद UDVEDH-PAD (SEGMENT OF DEPTH)

१६४. सव्वेवि णं दीव–समुद्दा दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

१६५. सव्वेवि णं महादहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

१६६. सव्वेवि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।


रत्न प्रभा पृथ्वी के तीन काण्ड
संपूर्णमान–
1 लाख 80 हजार योजन
6 योजन
घनोदधि वलय
1. खरकाण्ड 16 हजार योजन
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
2. पंक काण्ड
84 हजार
80 हजार
घनोदधि वलय
20 ह. योजन
आकाश
आकाश

चित्र परिचय १८	Illustration No. 18

रत्नप्रभा के तीन काण्ड

रत्नप्रभा प्रथम नरक भूमि की मोटाई एक लाख अस्सी हजार योजन है। इसके तीन खण्ड (भाग) हैं।

सबसे नीचे आकाश है, उस पर तनुवात है, उस पर घनवात और उस पर घनोदधि स्थित है। सबसे नीचे का (१) जलकाण्ड जल बहुल ८० हजार योजन का है। (२) दूसरा पंककाण्ड (कीचड़मय) यह ८४ हजार योजन का है तथा तीसरा खरकाण्ड (रत्नमय) है। खरकाण्ड के १६ भाग हैं, प्रत्येक काण्ड १-१ हजार योजन का है, जो भिन्न-भिन्न रत्नों की प्रभा लिए हुए है। ऊपर से सबसे पहला वैडूर्यकाण्ड है तथा सबसे नीचे १६वां रिष्टकाण्ड है।

—स्थान १०, सूत्र १६१-१६३

THREE SECTIONS OF RATNAPRABHA

This *Ratnaprabha prithvi* (first hell) is one hundred eighty thousand *Yojans* thick. It has three sections (*kaand*).

Lowest is *akash* (space) above which is *tanuvaat*, then *ghanavaat* and then *ghanodadhi*. The lowest section is *Jal kaand* with a thickness of 80 thousand *Yojans*. The second section above it is Pank-bahul kaand with a thickness of 84 thousand *Yojans*. The third *Khar kaand* is the top most section and its thickness is sixteen thousand *Yojans*. *Khar kaand* is divided into 16 layers made up of sixteen kinds of gems (*ratna*). The highest among these is *Vaidurya kaand* and the lowest is *Risht kaand*.

—*Sthaan 10, Sutra 161-163*

१६७. सीता–सीतोया णं महाणईओ मुहमूले दस–दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ।

१६४. सभी द्वीप और समुद्र दस सौ–दस सौ (एक–एक हजार) योजन गहरे है।

१६५. सभी महाद्रह दस–दस योजन गहरे है।

१६६. सभी सलिलकुण्ड (प्रपातकुण्ड) दस–दस योजन गहरे है।

१६७. सीता–शीतोदा महानदियो के मुखमूल (समुद्र मे प्रवेश करने के स्थान) दस–दस योजन गहरे है।

164. All *Dveeps* (continents or islands) and *samudras* (seas) are ten hundred *Yojans* deep

165. All *Mahadraha* (great lakes) are ten hundred *Yojans* deep

166. All *Salil kund* (waterfall-lakes) are ten hundred *Yojans* deep

167. The mouths of Sita and Sitoda great rivers are ten hundred *Yojans* deep

नक्षत्र–पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

१६८. कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मण्डलाओ दसमे मंडले चारं चरति।

१६९. अणुराधाणक्खत्ते सव्वब्भंतराओ मंडलाओ दसमे चारं चरति।

१६८. कृत्तिका नक्षत्र चन्द्रमा के सर्वबाह्य–मण्डल से दसवे मण्डल मे सचार (गमन) करता है।

१६९. अनुराधा नक्षत्र चन्द्रमा के सर्वाभ्यन्तर–मण्डल से दसवे मण्डल मे सचार करता है।

168. Krittika *nakshatra* moves in the tenth orbit counted inwards from the outer most orbit around the moon

169. Anuradha *nakshatra* moves in the tenth orbit counted outwards from the inner most orbit around the moon

ज्ञानवृद्धिकर–पद JNANAVRIDDHIKAR-PAD (SEGMENT OF ENHANCEMENT OF KNOWLEDGE)

१७०. दस णक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पण्णत्ता, तं जहा–

मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्ता य तहा, दस विद्धिकराइं णाणस्स॥१॥ (संग्रहणी गाथा)

१७०. दस नक्षत्र ज्ञान की वृद्धि करने वाले है, जैसे–(१) मृगशिरा, (२) आर्द्रा, (३) पुष्य, (४) पूर्वाषाढा, (५) पूर्वभाद्रपद, (६) पूर्वफाल्गुनी, (७) मूल, (८) आश्लेषा, (९) हस्त, (१०) चित्रा।

170. Ten *nakshatras* are said to be enhancers of knowledge—(1) Mrigashira, (2) Ardraa, (3) Pushya, (4) Purvashadh,

(5) Purvabhadrapad, (6) Purvaphalguni, (7) Mool, (8) Aashlesha, (9) Hast and (10) Chitra

विवेचन—ज्ञान वृद्धि के दस नक्षत्रो का तात्पर्य यह है कि इन दस नक्षत्रो मे से किसी भी नक्षत्र से यदि चन्द्र का योग लगा हो तो उस समय अध्ययन प्रारम्भ करने से वह ज्ञान वृद्धि में सहायक होता है।

Elaboration—The ten knowledge enhancing constellations means that if studies are commenced when any of these constellations is in conjunction with the moon it helps enhancing knowledge

कुलकोटि–पद KULAKOTI-PAD (SEGMENT OF SPECIES)

१७१. चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दस जाति–कुलकोडि–जोणिपमुह–सतसहस्सा पण्णत्ता।

१७२. उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दस जाति–कुलकोडि–जोणिपमुह–सतसहस्सा पण्णत्ता।

१७१. पचेन्द्रिय, तिर्यग्योनिक, स्थलचर चतुष्पद की जाति–कुल–कोटियाँ दस लाख है।

१७२. पचेन्द्रिय, तिर्यग्योनिक स्थलचर उर परिसर्प की जाति–कुल–कोटियाँ दस लाख है।

171. *Panchendriya tiryagyonik sthalchar chatushpad* (five-sensed terrestrial quadruped animals) have ten lac (hundred thousand) species (*jati kulakoti*) in their genuses (*yoni pramukh*)

172. *Panchendriya tiryagyonik sthalchar uraparisarp* (five-sensed terrestrial non-limbed reptilian animals) have ten lac (hundred thousand) species (*jati kulakoti*) in their genuses (*yoni pramukh*)

पापकर्म–पद PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMA)

१७३. जीवा णं दसठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—पढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए, (अपढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयबेइंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयबेइंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयतेइंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयतेइंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयचउरिंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमयचउरिंदियणिव्वत्तिए, पढमसमयपंचिंदियणिव्वत्तिए, अपढमसमय) पंचिंदियणिव्वत्तिए।

एवं—चिण–उवचिण–बंध–उदीर–वेय तह णिज्जरा चेव।

१७३. जीवो ने दस स्थानो से निर्वर्तित पुद्‌गलो का पापकर्म के रूप मे सचय किया है, करते है और करेगे। जैसे–(१) पथम **समय**–एकेन्द्रिय निर्वर्तित पुद्‌गलो का। (२) **अप्रथम समय**–एकेन्द्रिय

निर्वर्तित पुद्गलो का। (३) **प्रथम समय**–द्वीन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलो का। (४) **अप्रथम समय**–द्वीन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलों का। (५) **प्रथम समय**–त्रीन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलो का। (६) **अप्रथम समय**–त्रीन्द्रिय निर्वतिर्त पुद्गलो का। (७) **प्रथम समय**–चतुरिन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलो का। (८) **अप्रथम समय**–चतुरिन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलो का। (९) **प्रथम समय**–पंचेन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलो का। (१०) **अप्रथम समय**–पचेन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गलो का। इसी प्रकार उनका चय, उपचय, बधन, उदीरण, वेदन और निर्जरण किया है, करते है और करेगे।

173. All beings did, do and will acquire (*sanchit*) *karma* particles in the form of demeritorious *karmas* in the past, present and future respectively ten ways—

(1) *pratham samaya ekendriya nirvartit* (earned as one-sensed beings during the first moment of birth), (2) *apratham samaya ekendriya nirvartit* (earned as one-sensed beings after the moment of birth), (3) *pratham samaya dvindriya nirvartit* (earned as two-sensed beings during the first moment of birth), (4) *apratham samaya dvindriya nirvartit* (earned as two-sensed beings after the moment of birth), (5) *pratham samaya trindriya nirvartit* (earned as three-sensed beings during the first moment of birth), (6) *apratham samaya trindriya nirvartit* (earned as three-sensed beings after the moment of birth), (7) *pratham samaya chaturindriya nirvartit* (earned as four-sensed beings during the first moment of birth), (8) *apratham samaya chaturindriya nirvartit* (earned as four-sensed beings after the moment of birth) (9) *pratham samaya panchendriya nirvartit* (earned as five-sensed beings during the first moment of birth) and (10) *apratham samaya panchendriya nirvartit* (earned as five-sensed beings after the moment of birth)

In the same way all beings did, do and will augment (*upachaya*), bond (*bandh*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) the acquired *karma* particles in the past, present and future respectively in aforesaid ten ways

विशेष शब्दो का अर्थ–

चय–कर्म पुद्गलो का ग्रहण। **उपचय**–निषेक–कर्मपुद्गलो द्वारा आत्म–पदेशो पर रचना विशेष। **बंध**–कर्म व आत्मा का दूध–पानी की तरह मिलना। **उदीरणा**–उदय मे आने वाले कर्म पुद्गलो को प्रयत्न करके उदय मे लाकर भोगना। **वेदन**–कर्मो का फल भोगना। **निर्जरण**–जीव–प्रदेशो से कर्मपुद्गलो का पृथक् हो जाना।

TECHNICAL TERMS

Chaya (acquisition)—acquisition of karma particles *Upachaya* (augmentation)—specific patterns made by karma particles on soul-space-points *Bandh* (bondage)—assimilation of karmas and soul like that of milk and water *Udirana* (fructification)—fructification of karma particles, having tendency of fruition, with conscious effort *Vedan* (experience)—to experience the fruits of karmas *Nirjaran* (shedding)—the separation of karma particles from the soul-space-points

पुद्गल–पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

१७४. दसपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता। १७५. दसपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। १७६. दससमयठितीया पोग्गला अणंता पण्णत्ता। १७७. दसगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। १७८. एवं वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं दसगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।

१७४. दस प्रदेशी पुद्गलस्कन्ध अनन्त है। १७५. दस प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त है। १७६. दस समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त है। १७७. दस गुण काले पुद्गल अनन्त है। १७८. इसी प्रकार वर्ण तथा गन्ध, रस और स्पर्शों के दस–दस गुण वाले पुद्गल अनन्त कहे गये है।

174. There are infinite *das pradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of ten ultimate particles) **175.** There are infinite *das pradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles occupying ten space-points) **176.** There are infinite *das samayasthiti pudgal-skandhs* (ultimate particles existing for ten *Samayas*) **177.** There are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with ten units of the attribute of black appearance **178.** In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with ten units of each of the remaining attributes of smell, taste, and touch

॥ दसम स्थान समाप्त ॥

● END OF THE TENTH STHAAN ●

॥ स्थानांग सूत्र समाप्त ॥

● END OF STHAANANGA SUTRA ●

परिशिष्ट-१

आगमों का अनध्यायकाल

(स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमो मे जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रो का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल मे स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियो मे भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायो का उल्लेख करते है। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थो का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या सयुक्त होने के कारण, इनका भी शास्त्रो मे अनध्यायकाल वर्णित किया गया है।

स्थानागसूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या। इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए है, जिनका सक्षेप मे निम्न प्रकार से वर्णन है

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१ **उल्कापात-तारापतन**–यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२ **दिग्दाह**–जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पडे कि दिशा मे आग-सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नही करना चाहिए।

३ **गर्जित**–बादलो के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४ **विद्युत्**–बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास मे नही मानना चाहिए। क्योकि वह गर्जन और विद्युत् प्राय ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नही माना जाता।

५ **निर्घात**–बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६ **यूपक**–शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनो प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

७ **यक्षादीप्त**–कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोडे-थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अत आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

८ **धूमिका-कृष्ण**–कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघो का गर्भमास होता है। इसमे धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध पडती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

९ **मिहिकाश्वेत**–शीतकाल मे श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१० रज–उद्घात–वायु के कारण आकाश मे चारो ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११–१३. **हड्डी, माँस और रुधिर**–पचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दे, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते है।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन–रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एव बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमश सात एव आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४ **अशुचि**–मल–मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५ **श्मशान**–श्मशान भूमि के चारो ओर सौ–सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. **चन्द्रग्रहण**–चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

१७ **सूर्यग्रहण**–सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८ **पतन**–किसी बडे मान्य राजा अथवा राष्ट्र–पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह–सस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ न हो, तब तक शनै –शनै स्वाध्याय करना चाहिए।

१९ **राजव्युद्ग्रह**–समीपस्थ राजाओ मे परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन–रात्रि स्वाध्याय नही करे।

२० **औदारिक शरीर**–उपाश्रय के भीतर पचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पडा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पडा हो तो स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२१–२८ **चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा**–आषाढ–पूर्णिमा, आश्विन–पूर्णिमा, कार्तिक–पूर्णिमा और चैत्र–पूर्णिमा ये चार महोत्सव है। इन पूर्णिमाओ के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते है। इनमे स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९–३२ **प्रात·, साय, मध्याह्न और अर्ध–रात्रि**–प्रात सूर्य उगने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे, सूर्यास्त होने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे, मध्याह्न अर्थात् दोपहर मे एक घडी पहले और एक घडी पीछे एव अर्ध–रात्रि मे भी एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे स्वाध्याय नही करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन–रात्रि मे चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

Appendix-1

INAPPROPRIATE TIME FOR STUDY OF AGAMS

(Quoted from Nandi Sutra edited by Late Acharya Pravar Shri Atmaram ji M.)

Scriptures should be studied only at the appropriate time as prescribed in the *Agams* Study of scriptures at a 'time inappropriate for studies' (*anadhyaya kaal*) is prohibited

Detailed description of *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in *Smritis* (the corpus of *Sanatan Dharmashastra*) like *Manusmriti* Vedic people also mention about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) of the *Vedas* This rule is applicable to other Aryan holy books As Jain *Agams* are sermons of the Omniscient, ensconced by the *devas* and phonetically composed, discussion about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in the scriptures For example

According to *Sthananga Sutra* there are thirty two slots of time defined as *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)—ten related to sky, ten related to the gross physical body (*audarik sharira*), four relating to *mahapratipada* (the date following a specific full moon night), four relating to the date of the said full moon night and four relating to *sandhya* (the four junctions of parts of the day, viz morning, noon, evening and midnight) They are briefly described as follows

RELATING TO SKY

1. Ulkapat or Tarapatan—If a falling star or a comet is visible in the sky, scriptures should not be studied for three hours following the incident

2. Digdaha—As long as the sky looks crimson in any direction, as if there was a fire, then study of scriptures should not be done

3. Garjit—For three hours following thunder of clouds such studies are prohibited

4. Vidyut—For three hours following lightening such studies are prohibited

However, the prohibition related to thunder and lightening is not applicable during the four months of monsoon This is because frequent thunder and lightening is an essential attribute of that season Thus this prohibition is relaxed starting from *Ardra* till *Svati Nakshatra* (lunar mansion or 27/28 divisions of the ecliptic on the path of the moon)

5. Nirghat—For six hours following thunder without clouds (demonic or otherwise) such studies are prohibited

6. Yupak—The conjunction of solar and lunar glows at twilight hour on first, second and third days of the bright half of a month (*Shukla Paksha*) is called *Yupak* During these dates such studies are prohibited during the first quarter of the night

7. Yakshadeepti—Some times there is a lightning like intermittent glow visible in the sky This is called *Yakshadeepti* As long as such glow is visible in the sky such studies are prohibited

8. Dhoomika-krishna—The months from *Kartik* to *Maagh* are months of cloud formation During this period smoky fog of suspended water particles is a frequent phenomenon This is called *Dhoomika-krishna* As long as this fog exists such studies are prohibited

9. Mihikashvet—The white mist during winter season is called *Mihikashvet* As long as this exists such studies are prohibited

10. Raj-udghat—High speed wind causes dust storm This is called *Raj-udghat* As long as the sky is filled with dust such studies are prohibited

RELATING TO GROSS PHYSICAL BODY

11-13. Bone, flesh and blood—As long as bone, flesh and blood of five sensed animals are visible and not removed from sight such studies are prohibited According to the commentator (*Vritti*) if such things are lying up to a distance of 60 yards the prohibition is effective

This rule is applicable to human bones, flesh and blood with the amendment that the distance is 100 cubits and the effective period is one day and night The period prohibited for studies is three days in case of a women in menstruation, seven days in case of male-child birth and eight days in case of a female-child birth

14. Ashuchi—As long as excreta is visible and not removed from sight such studies are prohibited

15. Smashan—Up to a distance of hundred yards in any direction from a cremation ground such studies are prohibited

16 Chandra grahan—At the time of lunar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve or sixteen hours

17. Surya grahan—At the time of solar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve or sixteen hours

18. Patan—On the death of a king or some other nationally eminent person such studies are prohibited as long as he is not cremated Even after that, the period of study is kept limited as long as his successor does not take over

19. Raaj-vyudgraha—During a war between neighbouring states such studies are prohibited as long as peace does not prevail. Studies should be resumed only 24 hours after peace is established.

20. Audarik Sharira—In case a five sensed animal dies or is killed in an *upashraya* (place of stay for ascetics) such studies are prohibited as long as the dead body is not removed. This prohibition also applies if a dead body is lying within 100 yards of the place of stay.

21-28. Four Mahotsavas and four Mahapratipada—*Ashadh, Ashvin, Kartik* and *Chaitra purnimas* (the full moon days of these four months) are called great festival days. The days after these festival days are called *Mahapratipada*. On all these days such studies are prohibited.

29-32. Morning, evening, noon and midnight—During the twenty four minutes preceding and following the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening and midnight such studies are prohibited.

Studies of scriptures or other holy books should be done avoiding all these *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies).

विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नये ज्ञान युग का शुभारम्भ

(जैन आगम, हिन्दी एवं अंग्रेजी भावार्थ और विवेचन के साथ। शास्त्र के भावों को उद्घाटित करने वाले बहुरंगे चित्रो सहित)

१ सचित्र उत्तराध्ययनसूत्र— **मूल्य ५००/—**

भगवान महावीर की अन्तिम वाणी। आदर्श जीवन विज्ञान तथा तत्त्वज्ञान से युक्त मोक्षमार्ग के सम्पूर्ण अगो का सारपूर्ण वर्णन। एक ही सूत्र मे सम्पूर्ण जैन आचार, दर्शन और सिद्धान्तो का समग्र सद्बोध।

२ सचित्र दशवैकालिकसूत्र **मूल्य ५००/—**

जैन श्रमण की अहिंसा व यतनायुक्त आचार सहिता। जीवन मे पद-पद पर काम आने वाले विवेक युक्त, सयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रगीन चित्रो के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

३ सचित्र नन्दीसूत्र **मूल्य ५००/—**

मतिज्ञान-श्रुतज्ञान आदि पाँचो ज्ञानो का उदाहरणो सहित विस्तृत वर्णन।

४ सचित्र अनुयोगद्वारसूत्र (भाग १, २) **मूल्य १,०००/—**

यह शास्त्र जैन दर्शन और तत्त्वज्ञान को समझने की कुजी है। नय, निक्षेप, प्रमाण, जैसे दार्शनिक विषयो के साथ ही गणित, ज्योतिष, सगीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, प्राचीन लिपि, नाप-तौल आदि सैकडो विषयो का वर्णन है। यह सूत्र गम्भीर भी है और बडा भी है। अत दो भागो मे प्रकाशित किया है।

५ सचित्र आचारांगसूत्र (भाग १, २) **मूल्य १,०००/—**

यह ग्यारह अगो मे प्रथम अग है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिसा, सम्यक्त्व, सयम, तितिक्षा आदि आधारभूत तत्त्वो का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। भगवान महावीर का जीवन चरित्र, उनकी छद्मस्थ चर्या का ऑखो देखा वर्णन तथा जैन श्रमण का आचार-विचार दूसरे भाग मे है। दोनो भाग विविध ऐतिहासिक व सास्कृतिक चित्रो से युक्त।

६. स्थानागसूत्र (भाग १, २) **१,२००/—**

यह चौथा अगसूत्र है। अपनी खास सख्या प्रधान शैली मे सकलित यह शास्त्र ज्ञान, विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल-गणित, इतिहास, नीति-आचार, मनोविज्ञान, पुरुष-परीक्षा आदि सैकडो प्रकार के विषयो का ज्ञान देने वाला बहुत ही विशालकाय शास्त्र है। भावार्थ और विवेचन के कारण प्रत्येक पाठक के लिए समझने मे सरल और ज्ञानवर्धक है।

७ ज्ञाताधर्मकथा (भाग १, २) **मूल्य १,०००/—**

भगवान महावीर द्वारा प्रवचनो मे प्रयुक्त धर्मकथाएँ, उदबोधक रूपक, दृष्टान्त आदि जिनके माध्यम से तत्त्वज्ञान सहज ही ग्राह्य हो गया है। विविध रोचक रगीन चित्रो से युक्त। दो भागो मे सम्पूर्ण आगम।

८ सचित्र उपासकदशा एव अनुत्तरौपपातिकदशा **मूल्य ५००/—**

सप्तम अग उपासकदशा मे भगवान महावीर के प्रमुख १० श्रावको का जीवन चरित्र तथा उनके श्रावक धर्म का रोचक वर्णन है। नवम् अग अनुत्तरौपपातिकदशा मे उत्कृष्ट तप साधना करने वाले ३३ श्रमणो की तप ध्यान-साधना का रोमाचक वर्णन है। भावो को स्पष्ट करने वाले कलात्मक रगीन चित्रो सहित।

९. **सचित्र निरयावलिका एवं विपाकसूत्र** **मूल्य ६००/-**

निरयावलिका मे पाँच उपाग है। भगवान महावीर के परम भक्त राजा कूणिक के जन्म आदि का वर्णन तथा वैशाली गणतत्राध्यक्ष चेटक के साथ हुए महाशिलाकटक युद्ध का रोमाचक सचित्र चित्रण तथा भगवान अरिष्टनेमि एव भगवान पार्श्वनाथ के शासन मे दीक्षित अनेक श्रमण-श्रमणियो का चरित्र इनमे है।

विपाकसूत्र मे अशुभ कर्मों के अत्यन्त कटु फल का वर्णन है, जिसे सुनते ही हृदय द्रवित हो जाता है, तथा सुखविपाक मे दान-तप आदि शुभ कर्मों के महान् सुखदायी पुण्य फलो का मुँह बोलता वर्णन है। भावपूर्ण रोचक कलापूर्ण चित्रो के साथ।

१० **सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र** **मूल्य ५००/-**

आठवे अग अन्तकृद्दशासूत्र मे मोक्षगामी ९० महान् आत्म साधक श्रमण-श्रमणियो के तपोमय साधना जीवन का प्रेरक वर्णन है। यह सूत्र पर्युषण मे विशेष रूप मे पठनीय है। विविध चित्र व तपो के चित्रो से समझने मे सरल सुबोध है।

११. **सचित्र औपपातिकसूत्र** **मूल्य ६००/-**

यह प्रथम उपाग है। इसमे राजा कूणिक का भगवान महावीर की वन्दनार्थ प्रस्थान, दर्शन-यात्रा तथा भगवान की धर्मदेशना, धर्म प्ररूपणा आदि विषयो का बहुत ही विस्तृत लालित्ययुक्त वर्णन है। इसी मे अम्बड परिव्राजक आदि अनेक परिव्राजको की तप साधना का वर्णन भी है।

१२ **सचित्र रायपसेणियसूत्र** **मूल्य ५००/-**

यह द्वितीय उपाग है। धर्मद्वेषी प्रदेशी राजा को धर्मबोध देकर परम धार्मिक बनाने वाले महान् ज्ञानी आचार्य केशीकुमार श्रमण के साथ आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म आदि विषयो पर हुई तर्कयुक्त अध्यात्म चर्चा प्रत्येक जिज्ञासु के लिए पठनीय ज्ञानवर्द्धक है। आत्मा और शरीर की भिन्नता समझाने वाले उदाहरणो के चित्र भी बोधप्रद है।

१३. **सचित्र कल्पसूत्र** **मूल्य ५००/-**

कल्पसूत्र का पठन, पर्युषण मे विशेष रूप मे होता है। इसमे २४ तीर्थंकरो का जीवन चरित्र है। साथ ही भगवान महावीर का विस्तृत जीवन चरित्र, श्रमण समाचारी तथा स्थविरावली का वर्णन है। २४ तीर्थंकरो के जीवन से सम्बन्धित सुरम्य चित्रो के कारण सभी के लिए आकर्षक उपयोगी है।

- इस प्रकार १७ जिल्दो मे १८ आगम तथा कल्पसूत्र प्रकाशित हो चुके है। प्राकृत अथवा हिन्दी का साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भी अग्रेजी माध्यम से जैनशास्त्रो का भाव, उस समय की आचार-विचार प्रणाली आदि को अच्छी प्रकार से समझ सकते है। अग्रेजी शब्द कोष भी दिया गया है।
- पुस्तकालयो, ज्ञान भण्डारो तथा सत-सतियो, स्वाध्यायियो के लिए विशेष रूप से सग्रह करने योग्य आगमो का यह प्रकाशन कुछ समय पश्चात् दुर्लभ हो सकता है।
- इस आगम माला के प्रकाशन मे परम श्रद्धेय उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की अत्यन्त बलवती प्रेरणा रही है। उनके शिष्यरत्न जैन शासन दिवाकर आगमज्ञाता उत्तर **भारतीय प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म.** द्वारा सम्पादित है, इनके सह-सम्पादक है प्रसिद्ध विद्वान् श्रीचन्द सुराना। अग्रेजी अनुवादकर्ता है श्री सुरेन्द्र बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन।
- आगामी प्रकाशन सचित्र श्री भगवती सूत्र।

IN THE HISTORY OF JAIN LITERATURE BEGINNING OF A NEW ERA OF KNOWLEDGE FOR THE FIRST TIME IN THE WORLD

(Jain Agams published with free flowing translation in Hind and English. Also included are multicoloured illustrations vividly exemplifying various themes contained in scriptures)

1. **Illustrated Uttaradhyayan Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The last sermon of Bhagavan Mahavir Essence of the ideal way of life and path of liberation based on philosophical knowledge contained in all Angas The pious discourse encapsulating complete Jain conduct, philosophy and principles

2. **Illustrated Dashavaikalik Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The simple rule book of ahimsa and caution based Shraman conduct rendered vividly with the help of multicoloured illustrations Useful at every step in life, even of common man, as a guide book of good behaviour, balanced conduct and norms of etiquette, food and speech

3. **Illustrated Nandi Sutra** **Price Rs. 500/-**

   All enveloping discussion of the five facets of knowledge including Mati-jnana and Shrut-jnana

4. **Illustrated Anuyogadvar Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This scripture is the key to understanding Jain philosophy and metaphysics Besides philosophical topics like Naya, Nikshep and Praman it contains discussion about hundreds of other subjects including mathematics, astrology, music, poetics, ancient scripts, and weights and measures The complexity and volume of this could be covered only in two volumes

5. **Illustrated Acharanga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This is the first among the eleven Angas It contains lucid description of ahimsa, samyaktva, samyam, titiksha and other fundamentals propagated by Bhagavan Mahavir Eye-witness-like description of the life of Bhagavan Mahavir and his pre-omniscience praxis as well as details about ascetic conduct and praxis form the second part Both parts contain multi-coloured illustrations on a variety of historical and cultural themes

6. **Illustrated Sthananga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,200/-**

   This is the fourth Anga Sutra Compiled in its unique numerical placement style, this scripture is a voluminous work containing

information about scriptural knowledge, science, astrology, geography, mathematics, history, ethics, conduct, psychology, judging man and hundreds of other topics The free flowing translation and elaboration make the contents easy to understand and edifying even for common readers

7. **Illustrated Jnata Dharma Katha Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

Famous inspiring and enlightening religious tales, allegories and incidents told by Bhagavan Mahavir presented with attractive colourful illustrations This works makes the abstract philosophical principles easy to understand This is the sixth Anga complete in two volumes

8. **Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupapatik Dasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This book contains the seventh and the ninth Angas The seventh Anga, Upasak Dasha contains the stories of life of ten prominent Shravak disciples of Bhagavan Mahavir with a special emphasis on their religious conduct The ninth Anga Anuttaraupapatik Dasha contains thrilling description of the lofty austerities and meditation done by thirty three specific ascetics With colourful illustrations

9. **Illustrated Niryavalika and Vipaak Sutra** **Price Rs. 600/-**

Niryavalika has five Upangas that contain the story of the birth of King Kunik, a devout disciple of Bhagavan Mahavir This also contains the thrilling and illustrated description of the famous Mahashilakantak war between Kunik and Chetak, the president of the republic of Vaishali Besides these it also has life-stories of many Shramans and Shramanis of the lineage of Bhagavan Parshva Naath

Vipaak Sutra contains the description of the extremely bitter fruits of ignoble deeds This touching description inspires one towards noble deeds like charity and austerities the fruits of which have been lucidly described in its second section titled Sukha-vipaak The colourful artistic illustrations add to the attraction

10. **Illustrated Antakriddasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This eighth Anga contains the inspiring stories of the spiritual pursuits of ninety great men destined to be liberated This Sutra is specially read during the Paryushan period The illustrations related to austerities are specially informative

11. **Illustrated Aupapatik Sutra** **Price Rs. 500/-**

This is the first Upanga This contains lucid and poetic description of numerous topics including King Kunik's preparations to go to pay homage

to Bhagavan Mahavir, Bhagavan's sermon and establishment of the religious order This also contains the description of austerities observed by Ambad and many other Parivrajaks

12. **Illustrated Raipaseniya Sutra** **Price Rs. 500/-**

This is the second Upanga It provides an interesting and edifying reading of the discussions between Acharya Keshi Kumar Shraman and the anti-religious king Pradeshi on topics like soul, next life and rebirth This dialogue turned him into a great religionist The illustrations of the examples showing the difference between soul and body are also instructive

13. **Illustrated Kalpa Sutra** **Price Rs. 500/-**

Kalpa Sutra is widely read and recited during the Paryushan festival It contains stories of life of 24 Tirthankars with more details about Bhagavan Mahavir's life It also contains the disciple lineage of Bhagavan Mahavir and detailed ascetic praxis The illustrations connected with the 24 Tirthankars add to its attraction as well as utility

- Thus till date 18 Agams and Kalpa Sutra have been published in 17 books The English translation makes it possible for those with passing knowledge of Prakrit and Hind to understand the content of Jain Agams including the religious practices as prevalent in ancient times Also included in some of these editions are glossaries of Jain terms with their meanings in English
- Due to its demand by libraries, Jnana Bhandars, ascetics and lay readers this unique series may soon go out of print
- The publication of this Agam series has been inspired by Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji M Its editor is his able disciple **Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj.** His team includes renowned scholar Shri Srichand Surana as associate editor, Shri Surendra Bothara and Sushravak Shri Raj Kumar Jain, as English translators